समर्पण

सेठ छगनमलजी मूथा समाज के एक रत्न हैं। आपकी सरलता, उदारता, धार्मिकता, शिक्षा तथा साहित्य-प्रेम एवं परोपकारवृत्ति समाज के लक्ष्मी-पुत्रों के लिए अनुकरणीय है। इस ग्रन्थ के प्रकाशन में आपका हमेशा सहयोग रहा है। आपके गुणों तथा सहयोग भावना से प्रेरित होकर यह ग्रन्थ आपके कर-कमलों में सादर समर्पित करता हूँ।

—सम्पादक
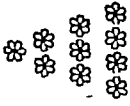
साधु-सम्मेलन
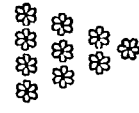
समाज की छिन्न-भिन्न दशा को देखकर धर्मवीर दुर्लभजी भाई जौहरी संगठन के लिये दिशा ढूंढने लगे। जैनाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज ने साधु-सम्मेलन की स्कीम रक्खी। दुर्लभजी भाई ने उक्त स्कीम को उठाया। स्थान की चर्चा चली तो अजमेर के श्री गणेशमलजी बोहरा ने अजमेर में उक्त सम्मेलन करने के लिये प्रयत्न प्रारम्भ किया। प्रयत्न तो ब्यावर आदि अन्य शहरों के श्री सघों का भी था, किन्तु श्री गणेशमलजी बोहरा, मदनचन्दजी बिरदीचन्दजी सेठी, मूलचन्दजी, नवरत्नमलजी सेठ, पन्नालालजी नाहर आदि ने तो उस ओर अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगा दी। तार भेजे, पत्र भेजे, आदमी भेजे तथा शिष्टमण्डल तक गये। मजूरी न मिलने तक उन्होंने चैन नहीं लिया। उनके पुरुषार्थ के कारण उन्हें सफलता भी मिली। सम्मेलन की स्वीकृति अजमेर के लिये हो गई। वे सारे के सारे नवयुवक अपने घर का काम ताक पर रखकर इसी काम के पीछे लग गये। श्री गणेशमलजी में तो यह खूबी भी है। कि वे जिस काम के पीछे लगते हैं उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। सम्मेलन के अन्त तक वे समान उत्साह से लगे रहे। पीछे तो अजमेर के लगभग सभी वर्गों ने हार्दिक सहयोग दिया। बाबू सुगनचन्दजी आदि भी उतर आये। किन्तु दर असल अजमेर सम्मेलन की सफलता का श्रेय यदि दुर्लभजी भाई या उनके साथियों को मिलता है तो हम श्री गणेशमलजी तथा उनके साथियों को भी नजरन्दाज नहीं कर सकते। सम्मेलन की सफलता में बहुत बड़ा हिस्सा अजमेर के बन्धुओं का है। उन्होंने तन, मन तथा धन तीनों इसके पीछे जुटा दिये। पूज्य दुलेभजी भाई ने जिनसे भी सहयोग मांगा, दिया। समाज के बड़े २ नेताओं (नर-रत्नों) ने लम्बे २ प्रवास किये। सेठ ज्वालाप्रसादजी जैसे लक्ष्मी-पति सेठ भैंसों की गाडियों में भी हँसते-हँसते बैठे। देश तथा समाज के नेता श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया, राजमलजी ललवाणी, वेलजी भाई तथा श्री नथमलजी चोरड़िया आदि की सेवायें भी नहीं भुलाई जा सकतीं। दुर्लभजी भाई के दाये बायें भुजा की तरह दिनरात काम में व्यस्त रहने वाले श्री सरदारमलजी छाजेड़ तथा श्री धीरजभाई की सेवाओं को भी नहीं भुलाया जा सकता। रा० ब० सेठ चादमलजी, दी० ब० सेठ मोतीलालजी आदि की सेवायें भी स्तुत्य रही हैं।

यहा हम एक वग की सेवाओ को भी नहीं भूल सकते। वह वर्ग है—साधु वर्ग! साधु-समाज की सेवायें भी प्रशंसनीय रही हैं। मरुधर मुनिवर श्री चौथमलजी म०, छगनलालजी म०, मिश्रीलालजी म० आदि ऋषि सम्प्रदायी श्री मोहन ऋषिजी म० सा० आदि, पूज्य धर्मदासजी की सम्प्रदाय के श्री शौभाग्य-मलजी म० सा० आदि ने दूर २ से आने वाले साधु-समाज के सामने जाकर अपरिचित क्षेत्रों में काफी सहयोग दिया। सम्मेलन के आस-पास के दिनों में अजमेर तो तीर्थस्थान रहा ही था, किन्तु ब्यावर, किशनगढ तथा आस-पास के अन्य क्षेत्र भी तीर्थस्थान बन गये।

सफलता भले जितनी चाहिये, उतनी न मिली हो, किन्तु सम्मेलन व्यर्थ गया, व्यर्थ लाखों रुपये खर्च किये, यह बात जंचने योग्य बात नहीं। मामूली मेलों, तथा उत्सवों में लाखों रुपया खर्च हो जाता

है, जिसका कोई खास उद्देश्य नहीं। फिर तीर्थ यात्रा तथा स्नान आदि का तो कहना ही क्या जिसके पीछे करोड़ों ही नहीं इससे भी ज्यादा रुपया प्रति वर्ष खर्च होता है। सम्मेलन में तो संगठन का बहुत भारी काम हुआ था। संगठन चला भी। और आज भी यत्र तत्र संगठन की ही हवा बहती है तो यह साधु सम्मेलन की कृपा का ही फल है। इसके सिवाय सैकड़ों परम पवित्र मुनिवरों तथा महासतियों के एक स्थान पर दर्शन हो जाना क्या कम बात है। अनेक नेताओं समाज-धर्म तथा देश सेवकों से मिलने उनके वचन सुनने आदि का लाभ प्राप्त करना क्या कम बात थी। मैं तो कहूँगा और कान्फ्रेंस के नेताओं समाज के प्रमुख मुनिवरों से सविनय अनुरोध करूँगा कि वे हर दसवें वर्ष ऐसे सम्मेलनों का आयोजन किया करें। इससे समाज का बहुत बड़ा हित होगा। ऐसी चीज़ों को समझने वाले ही समझ सकते हैं। प्रत्येक व्यक्ति प्रत्येक बात के लाभ हानि को नहीं समझ पाता। आलोचना करना बहुत आसान काम है किन्तु काम करना और उसमें सफलता प्राप्त करना बहुत कठिन काम है। समाज में कार्यकर्त्ता वैसे ही कम है, फिर आलोचक इतने हैं कि उनकी आलोचनाओं को सुन कर नये कार्यकर्त्ता कार्य क्षेत्र में आने का साहस ही नहीं करते।

साधु सम्मेलन यदि नहीं हुआ होता तो साधु समाज में इतनी जागृति भी नहीं मिलती। साधु समाज की स्थिति आज से कहीं ज्यादा बदतर मिलती। यह साधु सम्मेलन की ही कृपा का फल है कि आज हमारे साधु समाज को व्यवस्थित रूप में पाते हैं। समाज एकलविहारियों व स्वच्छन्दचारियों से नफरत करता है। सम्मेलन से पहिले समाज में यह चीज नहीं थी। आज अच्छे से अच्छा एकलविहारी अच्छे शहर या नगर में जाते घबराता है। और यदि कोई नया आदमी पूछ ले कि महाराज कितने ठाणे से पधारे तो फिर देखो उनका चेहरा।

अतः समाज में थोड़ी बहुत भी जागृति मिलती है तो उसका श्रेय साधु सम्मेलन को है।

मेरा निवेदन

बहुत पुरानी बात है। मैं गुरुकुल में गृहपति था तथा पू० दुर्लभजी भाई कुलपति। साधु-सम्मेलन के बाद पू० दुर्लभजी भाई ने अपने जीवन के एक सब से महत्वपूर्ण कार्य का इतिहास तैयार करना आवश्यक समझा। एक दो पडित रक्खे और खुद भी उसमें जुट गये। लगभग एक वर्ष में इतिहास को पूर्ण किया। छपाने के पहिले कोन्फ्रेंस से प्रमाणित कराने की दृष्टि से बम्बई की जनरल कमेटी के समक्ष रक्खा। कुछ सदस्यों ने उसका प्रकाशित करना उचित नहीं समझा। फलस्वरूप वह यों ही रह गया। एक बार पूज्य दुर्लभजी भाई जब कि गुरुकुल का निरीक्षण करने ब्यावर पधारे हुये थे, इतिहास भी उनके साथ था। इतिहास को हमने पढ़ा। पू० दुर्लभजी भाई के प्रति हमारी श्रद्धा थी। अतः पूज्य दुर्लभजी भाई के जीवन के सब से महत्वपूर्ण कार्य साधु-सम्मेलन के इतिहास को येनकेन प्रकारेण प्रकाशित करने का दृढ़ निश्चय किया।

उस समय तो दुर्लभजी भाई इतिहास को साथ में ले गये, कारण कि कुछ लोगों को दिखाना शेष था। इतिहास हमें सन् ३९ में मिला। हमने उसके छपाने का कार्य प्रारम्भ किया। कुछ ही समय के बाद लडाई प्रारम्भ हो गई। कागज का भाव महंगा हो गया। सन ४१ मे व्यक्तिगत सत्याग्रह में तथा ४२ में नजरबन्दी मे कारावास की यात्रा करनी पड़ी, अत उक्त काम मे शिथिलता आ गई।

मेरा निजी प्रेस था, अतः छपाई का जुम्मा मैंने लिया था और कागज़ की जुम्मेवारी एक अन्य सज्जन ने ली थी। उन सज्जन पुरुष ने हकारात्मक इन्कारी का व्यवहार दिखाया, अत' इस कार्य मे ज्यादा देरी लगी। अन्यथा सन ३९ तक समाप्त हो गया होता।

सन् ३९ मे मैं सेठ छगनमलजी से बैंगलोर में मिला। मैंने इसके प्रकाशन के लिये कुछ आर्थिक सहायता की प्रार्थना की। सेठजी ने सहर्ष स्वीकृति दी। सेठजी के सहयोग के बाद यदि जेल-यात्रा नहीं हुई होती तो यह इतिहास बहुत पहिले समाप्त हो गया होता। सन ४३ के अक्टोबर माह में जेल से रिहा होकर आ गया, किन्तु कागज़ प्राप्त होना मुश्किल हो गया, अतः इसके प्रकाशन में देरी होती गई।

हमारी योजना दो पुस्तकें प्रकाशित करने की थी। एक साधु-सम्मेलन का इतिहास और दूसरा स्था० जैन इतिहास। दोनों पुस्तकों खाते कुछ रुपये पेशगी आ गये थे, अत इनका प्रकाशन अनिवार्य हो गया।

दोनों काम प्रारम्भ थे, किन्तु स्थितिवश हमने दोनों को एक साथ निकालने का निश्चय किया कागज़ की महगाई और मिलने की कठिनाई को मद्देनज़र रखते हुये हमने यह निश्चय किया कि साधु-सम्मेलन का इतिहास प्रकाशित कर दिया जाय और उसी में फोटो तथा परिचय छाप दिये जायँ।

अब यह इतिहास प्रगट कर रहे हैं। यहा हम दो बातें लिख देना जरूरी समझते हैं।

१—समस्त सम्प्रदायों के मुखिया मुनिराजों तथा श्रावकों को उनकी सम्प्रदायों का संक्षिप्त परिचय भेजने को लिखा। कुछ सम्प्रदायों का परिचय आया। कुछ का लम्बा था, उसे संक्षिप्त करके प्रकाशित किया। कुछ सम्प्रदायों का परिचय आया ही नहीं, अत' कुछ पंक्तियों में लिखकर समाप्त किया।

२—परिचय भी बहुत विचित्र ढङ्ग के लिखे हुये आये। लम्बे परिचय प्रकाशित करने का तो समय नहीं है, अतः हमने जीवन परिचय सम्बन्धी आवश्यक बातों का ही उल्लेख किया है।

आशा है पाठक तथा सम्प्रदाय के मुखिया क्षमा करेंगे।

जिन ग्राहकों का आग्रह अपना फोटू तथा परिचय स्था० जैन इतिहास ही में देने का है उनका उसी में देने की दृष्टि से रिजर्व रक्खेंगे।

मैं यहां ग्राहकों का आभार माने बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने काफी देरी होने पर भी कभी तकाजा नहीं किया।

पू० दुर्लभजी भाई, सेठ छगनमलजी सा० मुहता पू० पं० शोभाचन्द्रजी सा० भारिल्ल, श्री विनयचन्द भाई भाई चन्दनमलजी जैन श्री मदनलालजी बूगड़ तथा भाई श्री रामनिवासजी शर्मा का भी आभार मानना मेरा कर्त्तव्य हो जाता है, जिन्होंने प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से इसके लेखन प्रकाशन तथा सम्पादन में सहयोग दिया है।
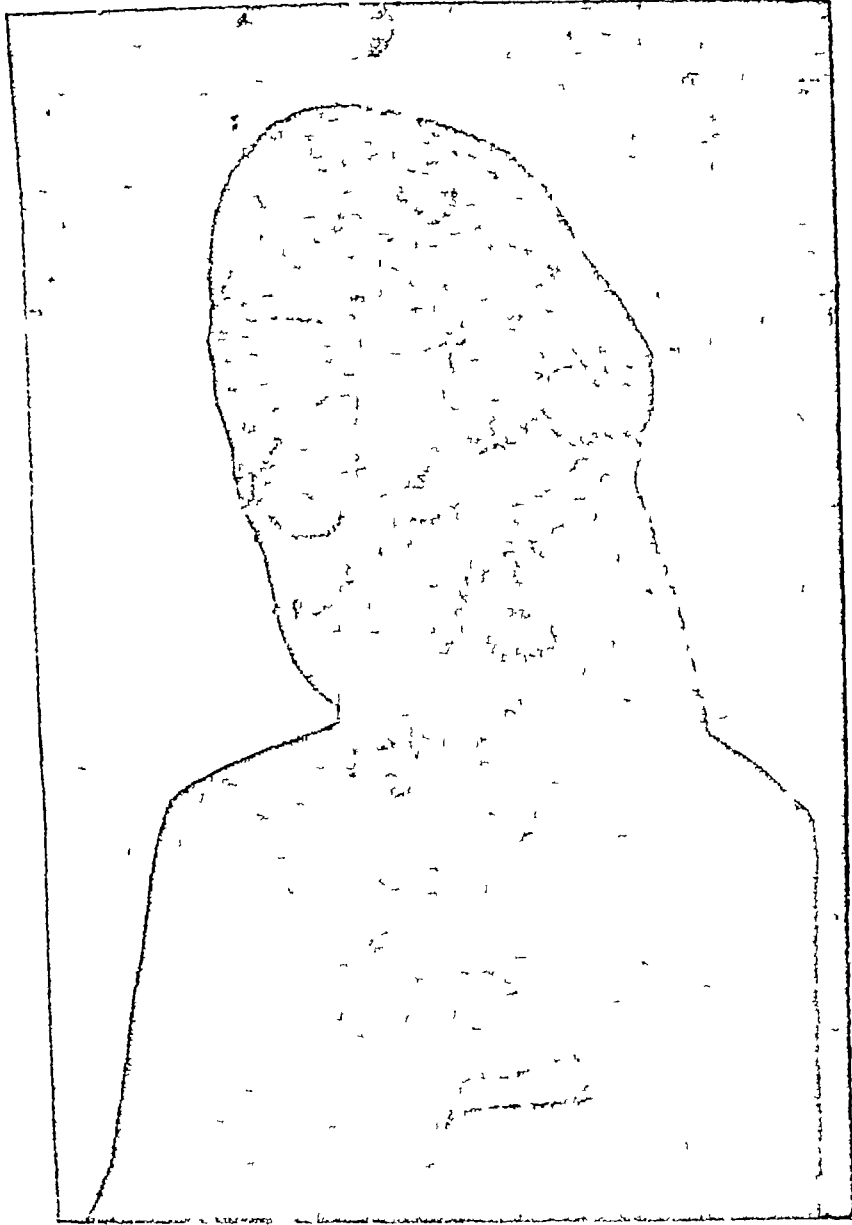
श्रीमान दानवीर सेठ छगनमलजी सा० मुथा, बलुन्दा।

—: सेठ छगनमलजी का परिचय :—

मरुभूमि मारवाड मे मारवाड जक्शन बी० बी० एन्ड० सी० आई० रेलवे का प्रसिद्ध स्टेशन है। यह अहमदाबाद, दिल्ली, उदयपुर, सिन्ध, बीकानेर तथा जोधपुर आदि की दृष्टि से केन्द्र स्थान है। स्टेशन से एक मील के फासले पर एक छोटासा किन्तु सुन्दर गांव है। जहां छोटे २ मकानो के बीच में एक भव्य-भवन है। यही गांव और यही भवन श्री सेठ छगनमलजी का जन्म स्थान है। श्री छगनमलजी के पिता श्री सरदारमलजी का जन्म स्थान मेवाड तथा मारवाड की सरहद पर बसा हुआ छोटासा कस्बा पीपली है। श्री सरदारमलजी का बाल्यकाल इसी ग्राम में बीता। श्री सरदारमलजी के पिताजी का नाम नवलमलजी था। मामूली स्थिति के गृहस्थ थे। उनके तीन लड़के थे—श्री सरदारमलजी, श्री गंगारामजी तथा श्री बालचन्दजी।

गंगारामजी का बाल्यकाल पीपली तथा खारची में बीता। यद्यपि शिक्षा बहुत ही कम पाई थी, तथापि व्यवसाय में बुद्धि अच्छी चलती थी। आप बलून्दा निवासी श्री सेठ शम्भूमलजी के यहां गोद चले गये। अब आप अधिकतर बलून्दा तथा बैंगलोर रहने लगे। बैंगलोर में आपकी बहुत बड़ी फर्म चलती थी। लाखों का व्यवसाय था। बडे २ मारवाड़ी व्यापारी आपके यहा से उधार ले जाते थे इनके सिवाय बैंगलोर छावनी के बडे २ फौजी अफसर तथा बैंगलोर सिटी के अनेक राज्याधिकारियों के भी आपके यहां खाते थे।

फर्म का काम खूब चलता था। आपने लाखो रुपया अपने हाथों से कमाया। धार्मिक प्रवृत्ति भी अच्छी थी। आपने २-३ दीक्षाएँ भी करवाई। धार्मिक कामों में यथाशक्ति खर्च भी करते थे। आपके कोई सन्तान नहीं थी। वृद्धावस्था होने से आपने पुत्र गोद लेने का निश्चय किया। आप ही के कुटुम्ब में याने आपके जेष्ठ-भ्राता श्री सरदारमलजी के दो पुत्ररत्न थे। बडे का नाम श्री छगनमलजी था। अच्छे होनहार प्रतीत होते थे। अत श्री छगनमलजी को दत्तक पुत्र के रूप में रख लिया। सं० १९९२ के जेष्ठ सुदी १४ को आप स्वर्गवासी हुये।

श्री छगनलालजी के पिता का नाम सरदारमलजी था, यह ऊपर पढ ही चुके हैं। श्री सरदारमलजी अच्छे व्यवसाय कुशल गृहस्थ थे।

आपके दो पुत्र तथा एक पुत्री इस तरह तीन सन्तान हुई। श्री छगनमलजी, श्री मूलचन्दजी दो भाई तथा एक पुत्री, जिनका विवाह बलन्दा निवासी श्री जसवन्तराजजी सेठिया के साथ किया। श्री सरदारमलजी से छोटे भाई का नाम श्री बालचन्दजी। आप सरल स्वभाव सज्जन हैं। आराम की जिन्दगी बिताई है तथा बिताते हैं। आपके भी कोई सन्तान नहीं है, अत जोधपुर से दत्तक लाये हैं। नाम भूमरलालजी है। बी० ए० पास कर लिया है। अच्छे विचारों के युवक हैं।

श्री छगनमलजी की प्रारम्भिक शिक्षा खारची तथा बलून्दा में हुई और बाद में बैंगलोर में। आपने पढाई तो मिडिल तक ही की है, किन्तु अनुभव ज्ञान काफी है। आपने बहुत छोटी अवस्था में व्यवसाय को हाथ मे ले लिया और बडी कुशलता के साथ उसका सचालन करने लगे। अनेक नई

दुकानें प्रारम्भ कीं। जिनकी संख्या एक दर्जन से ऊपर होगी। व्यवसाय को आपने काफी बढ़ाया। आपके अनेक मित्रों तथा मिलने वालों ने आग्रह किया कि २-४ मिल्स बनावें। किन्तु आप प्रारम्भ से ही ऐसे व्यवसायों में घुसने के विरुद्ध रहे हैं। आरम्भ से आप काफी डरते हैं। अतः आपने ऐसे किसी व्यवसाय में कदम नहीं बढ़ाया। दुकानों पर भी आपने अनेक नये समवयस्क युवकों को भेजा। उन्हें प्रोत्साहित किया और उन्हें अच्छे सम्पन्न बना दिये।

धार्मिक भावना से भी आप ओत-प्रोत रहे हैं। साधु-समागम, सामायिक आदि क्रियाकांड, चातुर्मास, दीक्षा तथा व्रतादि का कराना, भूखों को आहार देना आदि कार्यों में आपकी प्रारम्भ से ही दिलचस्पी रही है।

मुनि सेवा—

आप प्रति वर्ष जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज, पू० श्री गणेशीलालजी महाराज, कोटा सम्प्रदायी मुनि श्री गणेशीलालजी महाराज पं० मुनि श्री सिरेमलजी महाराज के दर्शन करते रहे हैं। ऐसे तो सभी सम्प्रदायों के प्रति आपका आदर भाव है, किन्तु उक्त मुनिराजों के प्रति आपके पिता श्री के समय से ही विशेष आकर्षण होने से प्रति वर्ष दर्शन करने जाया करते हैं।

अहिंसा प्रचार—

कोटा सम्प्रदायी मुनि श्री गणेशीलालजी म० अधिकतर दक्षिण में विचरते हैं। अहिंसा तथा खादी के प्रखर प्रचारक हैं। दक्षिण प्रदेश में हिंसा का बोलबाला रहता है मन्दिरों में धर्म के नाम पर पशुवध के तायवब-नृत्य दुसरा देखने को मिलते हैं। यह चीज उक्त मुनि श्री को सहन नहीं हो सकी। मुनियों का मार्ग अलग है। व सीमा में रहकर उपदेश दे सकते हैं। आपने हिंसा के विरुद्ध उपदेश देना प्रारम्भ किया। अहिंसा का प्रचार होने लगा। किन्तु यह काम जोर तभी पकड़ सकता था जब कि कुछ प्रतिष्ठित तथा उत्साही गृहस्थ कार्यकर्त्ताओं का सहयोग प्राप्त होता। मुनि श्री ने सेठजी को इशारा किया। सेठजी तुरन्त तैयार हो गये। उन्होंने अपनी ही नहीं अपने मित्रों रिश्तेदारों तथा मुनियों आदि की सम्पूर्ण शक्तियां इस पवित्र कार्य में जुटा दीं।

मुनि श्री उपदेश देते प्रचारक प्रचार करते सेठजी तथा उनके मित्र पैसा खर्च करते थे। अनेक अवसरों पर सेठजी ने अपने साथियों के साथ हिंसा के विरोध में प्रेक्टिस (धरना) तक किया है। हिंसा को रोकने के लिए मन्दिरों में सोने चांदी की मूर्त्तियां बनवाई गरीबों को भोजन कराये। फल स्वरूप आज पहिले से चार आने भर भी हिंसा नहीं रही है। अहिंसा सम्बन्धी कार्य करने के लिये आपके नेतृत्व में एक संस्था भी स्थापित की गई थी जो आज भी पूरे उत्साह के साथ कार्य कर रही है।

चातुर्मास—

आपकी प्रेरणा तथा सहायता से ऐसे तो कई चातुर्मास हुये हैं किन्तु दो चातुर्मास तो आपने ऐसे कराये हैं कि दक्षिण की जनता उन्हें अपने जीवन में शायद ही भूलेगी। दोनों चातुर्मासों में लगभग ४० हजार रुपये खर्च किए होंगे। पहला चातुर्मास संवत १९९२ में कोटा सम्प्रदायी पं० मुनि श्री गणेशीलालजी म० ठा० ७ का तथा दूसरा चातुर्मास सं० ९३ में प्रसिद्ध जैनाचार्य पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रवर्तक मु श्री ताराचन्दजी म , प्रसिद्ध वक्ता पं मुनि श्री कृष्णलालजी महाराज तथा

प० मुनि श्री शोभाग्यमलजी म० ठा० १४ का कराया। दोनो चातुर्मासो मे दीवान सा० सर मिर्जा इस्माईल भी दर्शनार्थ पधारे। दूसरी बार तो उपदेश श्रवण में इतने मशगूल हो गये कि लगभग १-१। घन्टे तक बैठे रहे।

दोनों चातुर्मासों में यात्रियों के लिये ठहरने, खाने-पीने, नहाने-धोने की प्रशंसनीय व्यवस्था थी। घूमने के लिये सेठजी की बहुमूल्य मोटरें तैयार खडी रहती थीं। लगभग ५०-६० यात्री तो हमेशा ही रहते थे। पर्युपण पर्व तथा उसके आसपास के दिनों में तो सैंकड़ों दर्शनार्थी रहे हैं। मैंने देखा है कि स्वय सेठजी, उनके कनिष्ट भ्राता श्री मूलचन्दजी, हैड मुनीम श्री मागीलालजी तथा भँवरलालजी आदि अन्य मुनीम भी दिनभर सेवा-सुश्रुषा में व्यस्त रहते थे। सेठजी ने तो शायद ही कभी एक बजे पहिले भोजन किया होगा। क्योंकि आप अक्सर मुनि श्री को गोचरी कर लेने तथा यात्रियों को जिमाने के पश्चात् ही भोजन करते थे। लगभग ७-८ घन्टे तो आप मुनि श्री की सेवा में ही व्यतीत करते थे। हमेशा सामायिक तथा तिथियों को बराबर प्रतिक्रमण करते थे। तात्पर्य यह है कि चातुर्मास का जीवन एक आदर्श श्रावक की भांति व्यतीत करते थे। पर्युपण पर्व के आठों दिनों में गरीबों को भोजन कराते, जिनकी कुल सख्या ३० हजार से कम नहीं होगी। प्रभावना करवाते, जिनमें पुस्तकें, गिलासे तथा अन्य वस्तुएँ वितीर्ण की जाती थीं। अनेक सस्थाएँ चन्दे के लिये आई। जिनमें आपने दिया और दूसरों से दिलवाया। दोनों चातुर्मासों में नागरिकों ने लगभग ५० हजार रुपया शिक्षा तथा प्रकाशन मे सहायता रूप दिया। दोनों चातुर्मास एक तरह से ऐतिहासिक चातुर्मास हुये हैं।

सेठजी ने दो दीक्षाएँ भी बहुत उत्साह तथा ठाठ के साथ करवाई हैं। खुले दिल से दीक्षाओं मे १०-१२ हजार दर्शनार्थियों का प्रबन्ध किया।

शिक्षा-प्रेम—

आपकी ओर से बैंगलोर, खारची, जैतारण, बलून्दा आदि स्थानों पर शिक्षण-संस्थाएँ चलती हैं। जिनमें सैंकडों छात्र नि शुल्क शिक्षण प्राप्त करते हैं। कई दिनों से आपकी भावना १-२ बड़ी सस्थाएँ स्थापित करने की हैं, जिनका बीजारोपण सम्भवत' बहुत शीघ्र होगा। उच्च अभ्यास करने वाले छात्रों को छात्रवृत्तिया भी देते रहते हैं। इस समय शिक्षाविभाग में लगभग १५-२० हजार रुपया प्रतिवर्ष खर्च होता है। स्थानकवासी समाज की सार्वजनिक शिक्षण-सस्थाओं में शायद ही कोई ऐसी सस्था होगा जिसमें आपकी सहायता नहीं पहुची हो। ऐसे इतर सम्प्रदायी संस्थाओं में आपने काफी रु० दिया है और देते रहते हैं। कई जैनेतर छात्रों को छात्रवृत्तिया भी मिल रही हैं। अनेक जैन संस्थाओं के जन्मदाता सदस्य तथा ट्रस्टी हैं।

उदारता—

शिक्षा के अतिरिक्त अन्य बातों में भी आप काफी खर्च करते हैं। आपकी उदारता सर्वतोमुखी है। आपके पास आया हुआ प्रत्येक मनुष्य प्रसन्न तथा सन्तुष्ट होकर ही लौटता है।

आपकी तरफ से खारची, बलून्दा तथा मेड़ता में तीन औषधालय भी चलते हैं। तीनों औषधालयों में लगभग ५-६ सौ रुपया मासिक का खर्च है। हजारों बीमार लाभ लेते हैं। खारची के दवाखाने में तो बाहर के मरीजों के लिए रहने आदि की भी सुन्दर व्यवस्था है। खारची का जलवायु भी अच्छा है, दवाखाना खुले मैदान में बगीचे के पास है। अत' आधी बीमारी तो वहा रहने से चली जाती है।

औषधियों का भी अच्छा संग्रह रहता है। दवाखानों के सिवाय कई प्रकार की देशी तथा विलायती पेटेन्ट दवाइयां तथा इन्जेक्शन्स आप अपने घर पर भी रखते हैं, जिनका उपयोग परोपकार में होता है। जो इन्जेक्शन्स तथा दवाइयां शहरों में उपलब्ध नहीं होतीं व आपके यहां मिल जाती हैं। लोग बिना पैसे सेवा कर उनका उपयोग करते हैं। आसपास के गांवों में मुफ्त दवा वितीर्ण करवाते हैं। अन्य दवाखानों को दवा तथा पैसे की भी काफी सहायता देते रहते हैं। अपने पैसे से गरीबों तथा सार्वजनिक कार्यकर्त्ताओं के इलाज करवाते हैं। उन्हें हर तरह की सहायता देते हैं।

ओपरेशन—

अभी कुछ समय पहिले ब्यावर के प्रसिद्ध नेत्र चिकित्सक डा० जयदेवप्रसादजी तथा डा० शर्मा से आपने आंखों के ओपरेशन करवाए। लगभग १७५ ओपरेशन हुए। अच्छी सफलता मिली। स्वयं सेठजी तथा सेठानीजी ने बिना छोटे-बड़े या अमीर-गरीब का भेद किए तन, मन, धन से सेवा की। कुछ हरिजनों के भी ओपरेशन हुये थे। उन तक की सेवा करने में उन्होंने पीछे कदम नहीं रक्खा। ओपरेशन के लिए आने वालों के सिवाय साथ में आने वाले तथा दर्शकों तक के लिए भोजन आदि की सुन्दर व्यवस्था की।

सहायता—

मिलने वाले आर्थिक सहायता ले लें उसमें कोई खास बात नहीं। तारीफ तो उसमें है कि बिना परिचय सहायता मिले। ऐसे कई उदाहरण मिलेंगे कि सेठजी ने बिना परिचय के अच्छी २ सहायता दी है। एक उदाहरण यहां रख देना काफी है।

एक युवक आपके पास गया और ५००) रुपये उधार मांगे। सेठजी ने सोचा—इनका मेरे साथ लम्बा परिचय नहीं फिर ये कैसे मांगते हैं? लेकिन साथ ही सोचा—किसी खास आशा से आये होंगे? उन्होंने उससे कई तरह की बातें की और १५००) रु० दे दिये। युवक ने कहा कि मुझे तो ५००) की ही जरूरत है। सेठजी ने कहा कि सब ले जाइये। जरूरत न हो तो लौटा दीजिये। ऐसा कहकर सब दे दिये और कहा कि आप इनका उपयोग कीजिये। जरूरत हो तो और मंगाइये। कीजिए और अपने सुभीते से दीजिये। कोई जल्दी नहीं है। पैसे जितने नवयुवकों को रकम देते हैं, यह समझकर देते हैं कि आखिर तो अपनी शेष खजाने वाले की। बिना कोई खास कारण के आप किसी जैन के विरुद्ध नालिश नहीं करते। उपर्युक्त उदाहरण से पता लग सकता है कि सेठजी में कितनी सहृदयता है।

आपके मुनीमों तथा मिलने वालों में एक दो नहीं किन्तु बीसों ऐसे उदाहरण मिलेंगे कि आपने अपने खर्च से उनके पुत्र पुत्रियों की शादियां की। वो भी मामूली ढंग से नहीं अपितु बड़े ठाठ से। स्वयं उसमें शरीक होते हैं और उसी तरह से काम काज में भाग लेते हैं मानो अपने खुद के बच्चे की शादी हो। मैं खुद भी ऐसी १–२ शादियों में शरीक हुआ हूँ। श्री भीखमचन्दजी छल्लाणी आपके अच्छे मिलने वाले हैं। उनकी पुत्री की शादी में करीब १५ हजार रुपया खर्च करते हुए काफी उत्साह से विवाह का कार्य किया। इसी तरह आपके आस पास के सम्बन्धी जनों के पुत्र पुत्रियों के विवाहों में आप हजारों रुपया खर्च करते हैं तथा शारीरिक परिश्रम भी। इसी तरह श्री रामनिवासजी शर्मा के विवाह में खुले दिल से खर्च किया।

पुस्तक प्रकाशन मे भी आपने समय २ पर काफी खर्च किया है। इस सम्बन्ध मे आपके काफी अच्छे विचार हैं। विधवाओं, गरीबों की सेवा तथा सहायता, प्याऊ तथा खेलियो की व्यवस्था गायों को घास आदि शुभ कार्यों में आपका पैसा लगता ही रहता है।

इस तरह सेठ साहब प्रति वर्ष लगभग ५० हजार रुपया शुभ कार्यों में खर्च कर देते हैं। आप कुशल कार्यकर्त्ताओ की फिराक में हैं। यदि अच्छे सेवाभावी कार्यकर्त्ता मिल गये तो और भी कुछ करने की भावना है। आप चाहते हैं कि छोटे २ गावों में दवाखाने तथा पाठशालायें स्थापित की जाएँ। उनका आधा खर्च सेठ साहब देवें तथा आधे की व्यवस्था उस गाव के रहने वाले करे।

स्वभाव —

सेठ छगनमलजी स्वभाव के सीधे-सादे है, अत्यन्त मिलनसार हैं तथा हँसमुख हैं। आये हुये व्यक्ति का हृदय से स्वागत करना तथा उन्हे आदर देना आपका स्वाभाविक गुण है। छोटे से छोटे आदमी के साथ भी आप बडे प्रेम से मिलते हैं, बातें करते हैं तथा दुःख दर्द की बातें सुनकर उचित सहयोग देते हैं। विचारों के इतने पक्के हैं कि अपने किये हुये काम के लिए यदि कोई कुछ कहता है, अथवा किसी दी हुई सहायता का विरोध करता है तो सेठजी बडे प्रेम से सुनते हैं, किन्तु आगे कुछ नहीं। तात्पर्य यह है कि सुनते सब की हैं, किन्तु करते अपने दिमाग से हैं। अन्य सेठों की तरह कच्चे कान के नहीं हैं। साधारण मे साधारण स्थिति के दीनबन्धु के साथ बैठकर भोजन आदि करने में आप अपूर्व आनन्द मानते हैं।

बैंगलोर प्रान्त में सब से बडी फर्म आपकी है। लगभग करोडपति आसामी हैं, फिर भी इतने सरल, सीधे तथा सादे हैं कि लोग देखकर आश्चर्य करते हैं। थोडासा पैसा हो जाने पर आपे से बाहर हो जाने वाले व्यक्तियो के लिये सेठ छगनमलजी आदर्श हैं। अधिकतर खादी का उपयोग करते हैं। राष्ट्रीय विचार हैं। अनेक राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं के घरों पर गुप्त रूप से आर्थिक सहायता भेज देते हैं। आप अपने किये हुये का कभी प्रचार नहीं चाहते। अनेक खर्च तो आपके ऐसे होते हैं कि देने और लेने वाले के सिवाय किसी को मालूम तक नहीं होता।

आपके छोटे भाई श्री मूलचन्दजी भी वैसे ही हैं, जैसे सेठ छगनमलजी। बहुत सादे तथा सीधे !

सेठ छगनमलजी का विवाह जोधपुर निवासी सेठ चादमलजी मेहता की सुपुत्री उदयकुवर के साथ सवत ८४ के फागुण माह में हुआ था। सौ० उदयकँवर बाई भी बहुत सेवाभावी तथा सीधे सादे हैं। गुणों में सेठजी की तरह हैं।

भगवान् इस जोडी को चिरायुस्य करे।

———

— पूज्य दुर्लभजी भाई —

दुर्लभजी भाई का जन्म सं० १९३३ के चैत्र वद १२ को मोरबी गांव में मोरबासी अमुलख के प्रसिद्ध कुटुम्ब में सांकली बाई की कुक्षि से हुआ था। इनके पिता श्री का नाम त्रिभुवनदास था। ये जवाहिरात का व्यवसाय करते थे। अच्छे कुशल व्यवसायी थे।

दुर्लभजी भाई ने मैट्रिक तक का अभ्यास किया था। मैट्रिक में असफल रहने से पढ़ाई छोड़ दी और अहमदाबाद में आकर एक पत्र के उप सम्पादक बने। एक वर्ष यहां काम करने पर मोरबी लौट आये और जवाहिरात का कार्य प्रारम्भ किया। कुछ समय यहां व्यापार करने के बाद व्यापार बढ़ाने का सोचा। जयपुर जवाहिरात की विशिष्ट मण्डी होने से आपने यहां एक दुकान खोली।

जवाहिरात का व्यापार खूब चला। लाखों रुपया आपने अपने हाथों से कमाया। धीरे २ दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी की फर्म न सिर्फ जयपुर में बल्कि दूर २ तक प्रसिद्ध हो गई। व्यापार में पैसा कमाया, अतः आर्थिक दृष्टि से तो सुखी जीवन हो ही गया, किन्तु कौटुम्बिक दृष्टि से भी आपका जीवन सुखमय रहा है। दुर्लभजी भाई का विवाह संतोकबा के साथ हुआ। संतोक बा बहुत ही सरल तथा सीधी सादी सी है।

संतोक बाई की कुक्षि से पांच पुत्र रत्न हुये —

१—श्री विनयचन्द्र भाई—कुशल व्यापारी हैं मोटू भाई के नाम से प्रसिद्ध हैं। सामाजिक कार्यों में रस लेने का प्रयत्न करते हैं किन्तु समय बहुत कम मिलता है। २—श्री गिरधरलाल भाई सीधे स्वभाव के हैं, मोटू भाई के काम में पूरी मदद करते रहे हैं। जयपुर की दुकान का अधिक काम ये ही सम्भालते रहे हैं। ३—श्री ईश्वरलाल भाई कुशल व्यापारी रहे हैं। बम्बई शाखा का कार्य ये ही संभालते थे किन्तु कुछ समय से बीमारी के कारण व्यवसाय से निवृत्त हैं। ४—श्री शान्तिलाल भाई एक राष्ट्रीय विचारों के सुधारक तथा स्पष्ट वक्ता युवक हैं। मेम्बर हैं राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में अच्छा रस लेते हैं। ५—श्री खेलशंकर भाई अच्छे व्यवसाय कुशल हैं। अधिकतर यूरोप में ही रहते हैं। मिलनसार एवं सरल स्वभाव के हैं। बी कॉम पास किया है।

कान्फ्रेन्स की स्थापना—

अ० भा० श्वा० जैन कान्फ्रेंस की स्थापना का सारा श्रेय पूज्य दुर्लभजी भाई को है। पूज्य दुर्लभजी भाई ने ही घोर परिश्रम कर मोरबी में पहिला अधिवेशन रा० सा० सेठ चांदमलजी रीयां वालों के सभापतित्व में कराया। इस अधिवेशन को सफल बनाने के लिये आपने सारे भारतवर्ष का दौरा किया। स्थापना काल से लेकर अपनी मृत्यु पर्यंत तन मन धन से कान्फ्रेंस की सेवा करते रहे।

साधु-सम्मेलन—

संवत १९८९ में आपने अजमेर में साधु-सम्मेलन करने का बीड़ा उठाया। पूज्य दुर्लभजी भाई के जीवन का यह सब से बड़ा तथा महत्त्वपूर्ण कार्य है। भिन्न २ प्रकृति के २५० मुनियों को अजमेर में लाकर एकत्रित कर देना कोई मामूली चीज नहीं। सम्मेलन के कार्य में भाग लेने वाले लोग जानते

धर्मवीर सेठ दुर्लभजी भाई जौहरी
जयपुर
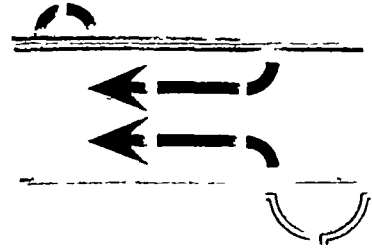
श्री छगनलाल भाई त्रिभुवन जौहरी, जयपुर

श्री नरेन्द्रकुमारजी जोहरी, जयपुर

इस ग्रन्थ के संशोधक

प० शोभाचन्द्रजी भारिल्ल, न्यायतीर्थ

आप एक महान् साहित्यकार तथा लेखक हैं।
श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के प्रधानाध्यापक हैं।

इस ग्रन्थ के सम्पादक तथा प्रकाशक

श्री चिम्मनसिंहजी लोढ़ा

म्युनिसिपल कमिश्नर प्रोप्राईटर महावीर प्रिंटिंग प्रेस तथा डायरेक्टर एण्ड जनरल मैनेजर श्री राजपूताना प्रोविडेन्ट एन्श्योरेंस कम्पनी लिमिटेड ब्यावर।

आप ब्यावर की सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के केन्द्र स्थान हैं।

हैं कि दुर्लभजी भाई के सिवाय किसी की ताकत नहीं थी, जो सम्मेलन करवा सकता। सम्मेलन को सफल बनाने के हेतु आपने लगभग दो वर्ष कठोर परिश्रम किया। दिनरात उसी की चिन्ता में रहते। हजारों कोसो के दौरे किये। प्रकृति के काफी नाजुक होते हुये भी जाडी और कच्ची पूडिया खाकर मुसाफिरी की, तेज धूप तथा कडकडाती सर्दी में दौरे किये। इस तरह साधु-सम्मेलन के कार्य को सफल बनाया। आपके सहायक के रूप में श्री सरदारमलजी छाजेड तथा श्री धीरजलाल भाई ने कार्य किया।

शिक्षा प्रेम—

ऐसे तो आप प्रारम्भ से ही शिक्षण संस्थाओ के कार्य में रस लेते रहे हैं। गरीब छात्रो को छात्रवृत्तिया देते रहे हैं। किन्तु जैन ट्रेनिग कॉलेज को सफल बनाने का श्रेय आप ही को है। यद्यपि स्थापना तथा १-१॥ वर्ष का जीवन धर्मप्राण सेठ भैरूँदानजी सेठिया की देखरेख में सम्पन्न हुआ, किन्तु कुछ ऐसी परिस्थिति पैदा हो गई कि ट्रेनिंग कॉलेज का स्थानान्तर हो गया। जयपुर जाने पर पूज्य दुर्लभजी भाई के मन्त्रित्व में उक्त संस्था कार्य करती रही। पूज्य दुर्लभजी भाई छात्रों को पुत्रवत् रखते। उनके खाने, पीने रहने आदि की व्यवस्था भी पुत्र की तरह करते, यही कारण था कि छात्रगण उन्हें "बापूजी" कहते थे।

छात्रों को वे किस दृष्टि से देखते उसका एक उदाहरण यहा पेश करता हूं।

एक बार एक अध्यापक ने एक छात्र को कह दिया कि तुम मुफ्त का टुकडा खाते हो। छात्र ने बापूजी को शिकायत की। बापूजी फौरन दुकान का काम छोड कर आये और पंडितजी के चरणों में अपनी पगडी रखते हुये कहा, पंडितजी महाराज छात्रों को कुछ भी कहिये किन्तु ऐसी बात न कहिये जिससे उनके सम्मान को ठेस पहुचे।

साधु-सम्मेलन के बाद आपने गुरुकुल की बाकायदा सेवा प्रारम्भ की। समय २ पर ब्यावर पधारते और गुरुकुल की सेवा करते। बच्चों को बैठाकर सुख दुःख पूछते। बच्चों की बातों को बडे ध्यान-पूर्वक सुनते और उचित प्रबन्ध करते थे। बापूजी बच्चों के बापू तथा गुरुकुल के कुलपति थे और मरने तक इस पद पर रहे।

आपकी मृत्यु के पश्चात गुरुकुल ने आपकी स्मृति स्वरूप दुर्लभ स्थायी-कोष की स्थापना की। निश्चयानुसार कुछ ही वर्षों में एक लाख का फण्ड हो गया। आप स्थानकवासी समाज के सर्व-श्रेष्ठ नेता थे।

प्रकृति—
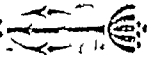
दुर्लभजी भाई प्रकृति के बहुत सरल, सहिष्णु तथा कोमल थे। विरोधियो से भी काम कैसे लेना, इस कला के आप आचार्य थे।

हमेशा आलोचना करने वाले, गालिया देने वाले तथा शुभ कार्यों में बाधक बनने वाले लोगों से भी हमेशा कार्य करवाते रहे हैं। आपके समक्ष आने पर तथा बातचीत करने पर विरोधी अपने विरोध को भूल जाता था।

आपश्री कुशल व्यापारी तो थे ही किन्तु अच्छे लेखक और वक्ता भी थे। पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज का जीवनचरित्र आदि कई पुस्तकें लिखी हैं। व्याख्यानों तो कमाल के थे। जनता के दिलों को पिघलाना दुर्लभजी भाई के बांये हाथ का खेल था।

आपके दिल की बीमारी थी। साधु-सम्मेलन के ठीक ५ वर्ष पश्चात चैत्र शुक्ला १० को आप स्वर्गवासी हुए। आप अपने पीछे लगभग ४० आदमियों का कुटुम्ब छोड़ गये। आपके पीछे श्री विनयचन्द भाई तथा शान्ति भाई सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में यथाशक्ति भाग लेते रहते हैं।

साधु-सम्मेलन के इतिहास के प्रकाशन में भी आपने ५००) रु० दिये और उसके बदले में वाजिब मूल्य पर पुस्तकें ले लेंगे। धन्यवाद!
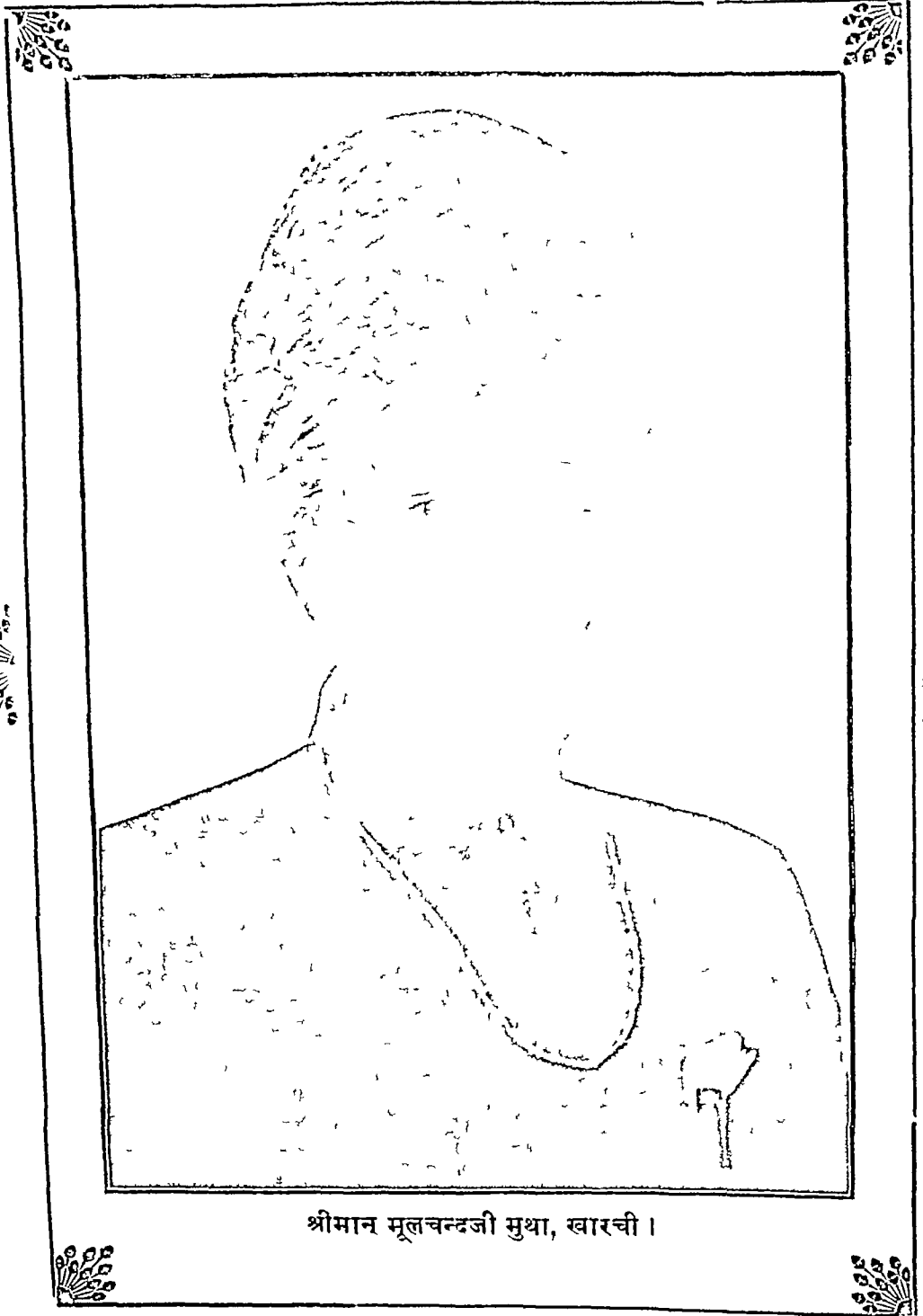
श्रीमान मूलचन्दजी मुथा, खारची ।

श्री चाँदमलजी मारू, मन्दसौर।

श्री बाबू शोभागमलजी जैन सुजालपुर

श्री [illegible] सुजालपुर

मातुश्री किशनलालजी पापरी सुजालपुर
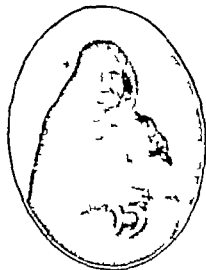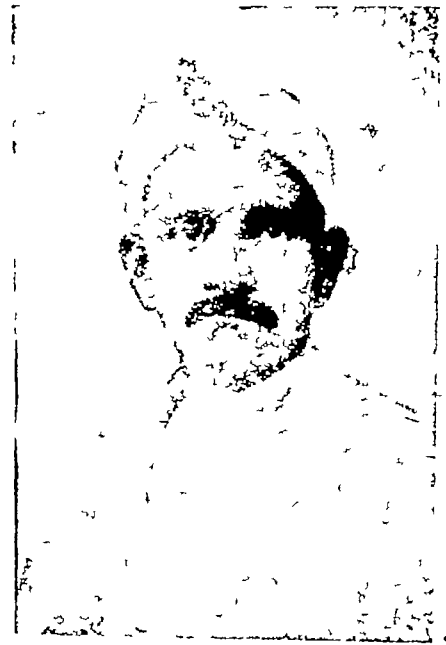
श्री सेठ जुगराजजी लूकड, जलगाव

श्री सेठ सागरमलजी लूकड, जलगाव

श्री भँवरलालजी लूकड
जलगाव।

श्री पुखराजजी लूकड़, जलगाव
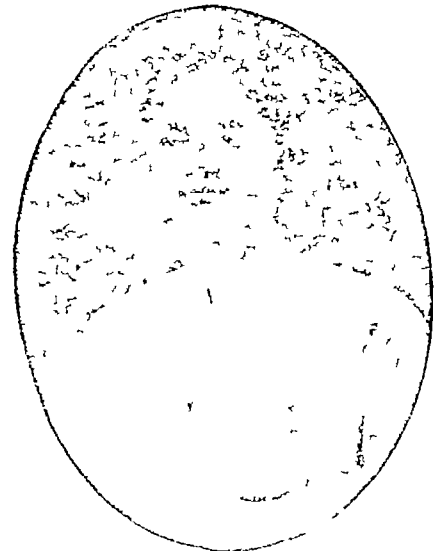
श्री नथमलजी लूकड, जलगाव

अमोलकचंदजी आसकरणजी पनवेल

सेठ चिम्मनलाल पो० शाह घाटकोपर

आर्यंदरामजी बांठिया पनवेल

श्री आशारामजी तथा उनकी धर्मपत्नी पार्वती बाई, पनवेल

सेठ केशरीचन्दजी बांठिया, पनवेल

सेठ हस्तीमलजी कोठारी हींगणघाट

उत्तमचन्दजी झामड खामगांव

मनोहरलालजी पोखरना चित्तौड
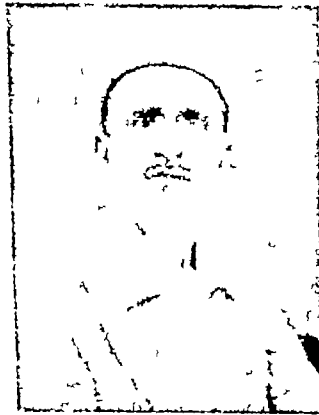
श्री उदयलालजी जैन कानोड

हरखलालजी सुरपुरिया चित्तौड

डॉ० एल० टी० शाह आकोला
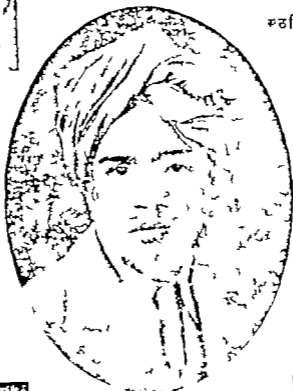
रतनलालजी झामड खामगांव

सेठ हस्तीमलजी दधका औरंगाबाद

सेठ किशनदासजी मुथा अहमदनगर

मोहनलालजी आग्यावत, शोलापुर

मानमलजी भूधरलालजी भाग्रा शोलापुर

कन्हैयालालजी मोतीलालजी लोणावत शोलापुर

श्री सेठ जमनालालजी कीमती इन्दौर

श्री रायबहादुर कन्हैयालालजी भण्डारी इन्दौर

श्री सेठ रामलालजी कीमती इन्दौर

सेठ कुन्दनमलजी फिरोदिया,

महेन्द्रग
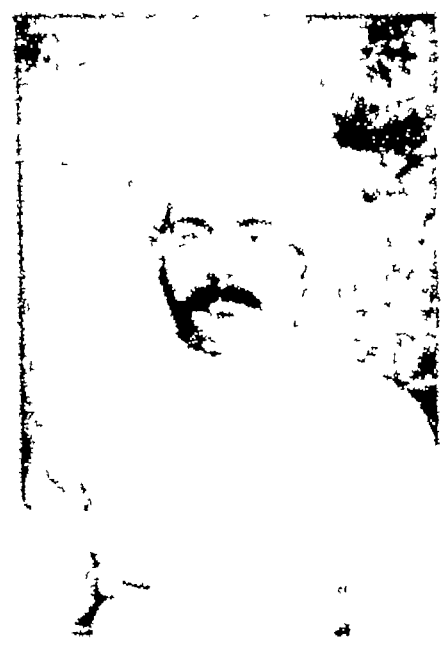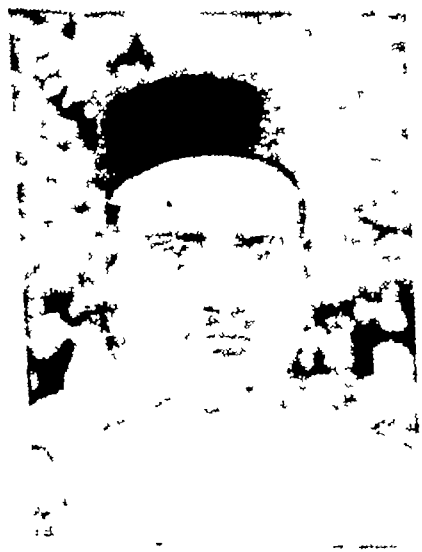
श्री श्रीरजला. .ी

छगनलालजी बैद मीनासर

चम्पालालजी बैद मीनासर

तोलारामजी बांठिया मीनासर

सेठ चम्पालालजी बांठिया भीनासर

श्यामलालजी बांठिया भीनासर

मोहनलालजी बैद मीनासर
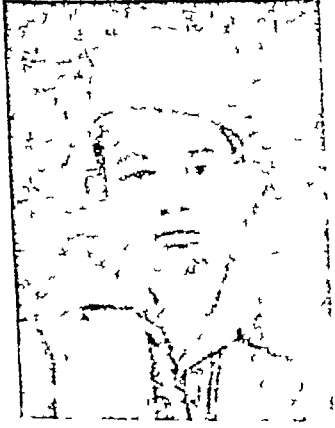
कु० पन्नालालजी वेद फलोधी

मिश्रीलालजी कटारिया देवली

खेतमलजी पारख फलोदी

सेठ मूलचन्दजी पारख फलोदी

फूलचन्दजी खारीवाल देवली

मोहनलालजी खारीवाल देवली

श्री बाबूलालजी चिंचवड

श्री माताजी धोंडीरामजी [illegible]जी
पूना

रतनलालजी दीपचंदजी
पोरवाल उज्जैन

श्री बाबू मदनलालजी दूगड़ नीमच

श्री [illegible] अपने पुत्रों के साथ

श्री रंगरूपचंदजी मेहता मोजत

श्री जौहरीलालजी नाहर अजमेर

श्री पन्नालालजी नाहर अजमेर

कुँ० पारसमलजी नाहर अजमेर
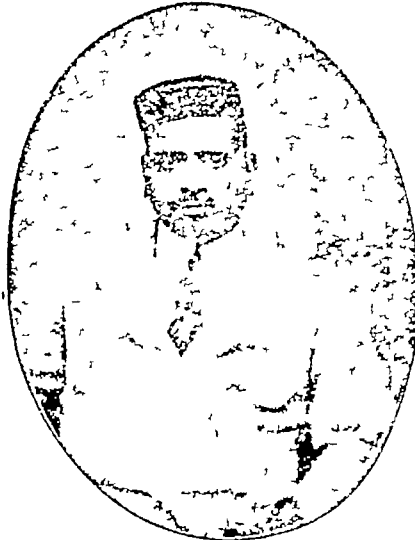
श्री कबूलसिंहजी जैन जालन्धर

श्री मागीलालजी राठोड़ नीमचमीटी
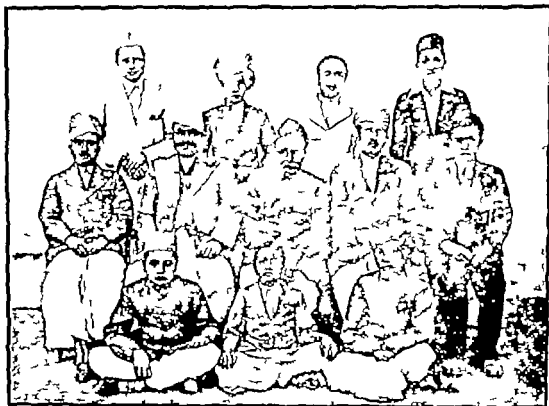
सर भैरोंदानजी जठमलजी सेठिया परिवार सहित

मघराजजी रावतमलजी डागा बम्मीहार

हजारचन्दजी डागा बम्मीहार

भामरलालजी गोलछा धमतरी
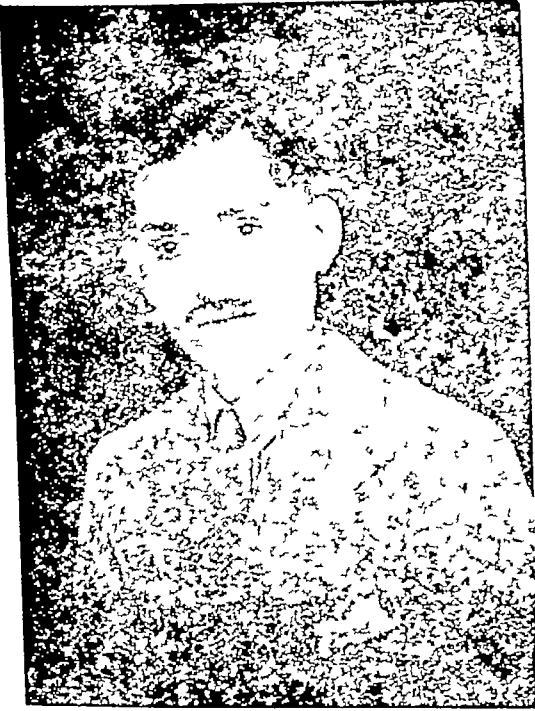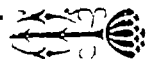
श्री वालचन्दजी मेहता व्यावर

श्री शंकरलालजी गुलेछा खीचन
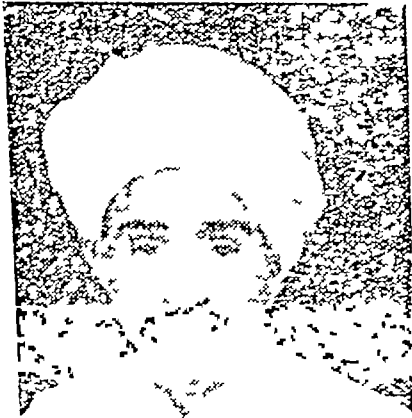
कन्हैयालालजी भटेवरा विजयनगर

गणेशलालजी, बादरमलजी, किसनलालजी लानूर

श्री शोभचन्द भाई रतलाम

श्री रायबहादुर चाँदमलजी नाहर बरेली

श्री रामचन्द्रजी भंसाली मालवा

श्री गिरधीचन्दजी भंसाली ब्यावर

श्री सेठ सरदारमलजी पुंगलिया नागपुर.

श्री सेठ मिश्रीलालजी बाफणा मन्दसौर

श्री सेठ ऊंकारलालजी बाफणा, मन्दसौर

पंडित जोधराजजी सुराणा चित्तौड़गढ़

श्री सेठ कंवरलालजी बाफणा भूसिया
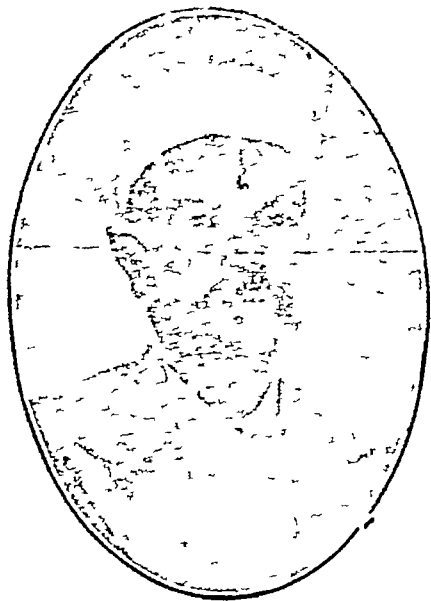
श्री गुलाबचन्दजी भण्डारी, मनमाड.

श्री भीखमचन्दजी ललवाणी, मनमाड़-

श्री माणकचन्दजी बेताला बागलकोट.

श्री हंसराजजी बेताला, बागलकोट

नगर सेठ श्री नवलरामजी लोढ़ा, शिवगंज

श्री हीराचन्दजी कटारिया, बैंगलोर

श्री भंवरराजजी मोलकी सादड़ी

श्री सेठ सेसमलजी बालिया पाली

श्री सेठ नौरतनमलजी रीयां वाले, अजमेर.

श्री बाबू मदनसिंहजी नाहर, आगरा

सेठ किस्तूरचन्दजी मारू, मन्दसौर

शाह मघराज बन्नाजी, बादनवाड़ी

श्री टी जी० शाह, बम्बई

श्री सेठ बहादुरमलजी सा बांठिया भीनासर

श्री महावीर पुस्तकालय, सिरसा।

श्री सेठ मिश्रीमलजी मुणोत, ब्यावर

श्री सेठ कालुरामजी कोठारी ब्यावर,

श्री लक्ष्मीचंदजी मुणोत ब्यावर
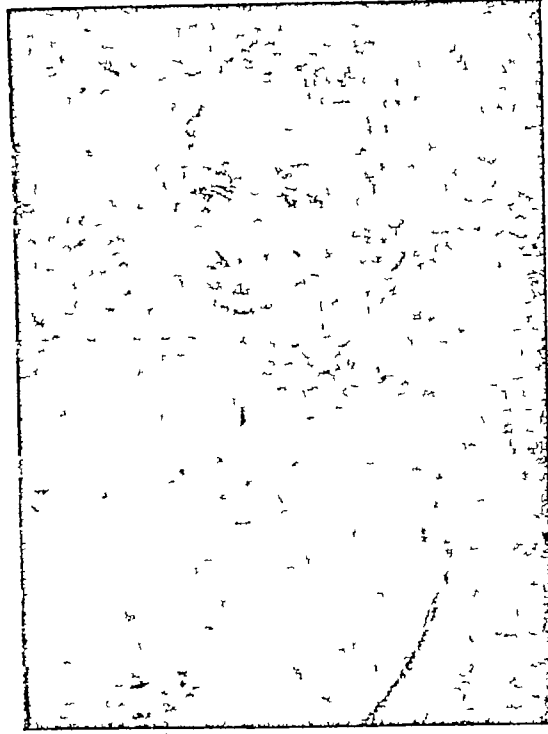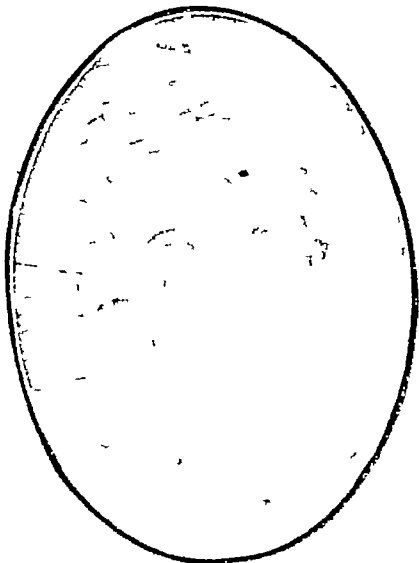
श्री गुलाबचंदजी मुणोत, ब्यावर

श्रीमान सेठ सा० धूलचन्दजी रतलाम

श्री सेठ शोभागमलजी
पोरवाल, थादला।

श्री सेठ केशरीमलजी
नवलखा, खाचरौद।
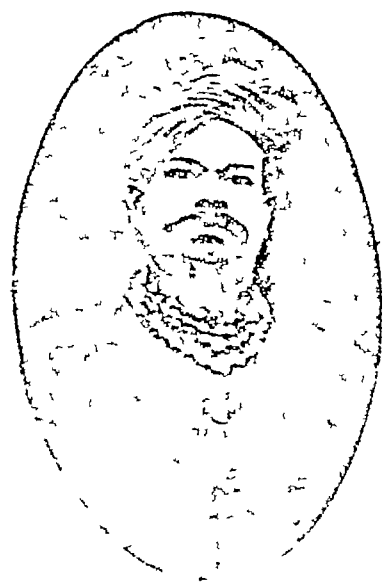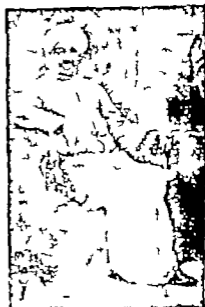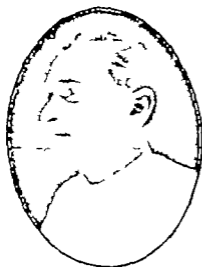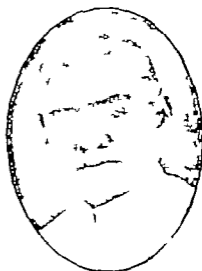
श्री सेठ गोकुलदास प्रेमजी बम्बई

रा ब सेठ श्री जी डाह्या भाई बम्बई

श्री नरोत्तमलाल हरीचन्द बम्बई

श्री चम्पुलाल छगनलाल शाह अहमदाबाद

श्री रूपचन्दजी पुनमिया, सादड़ी.

श्री हुकमीचन्दजी मा० पुनमिया, मादड़ी

श्री हुकमीचन्दजी माड, सादडी

श्री ताराचन्दजी मा० पुनमिया, मादडी.
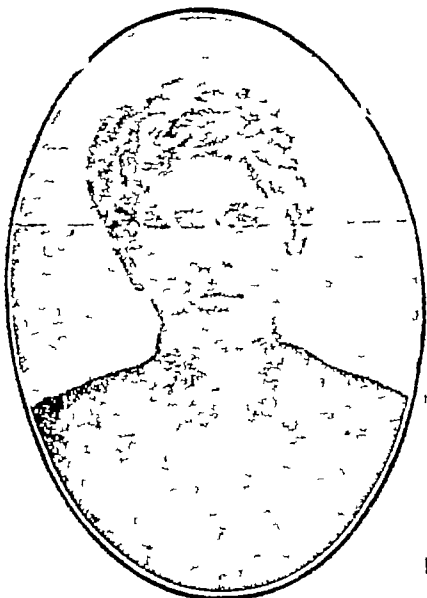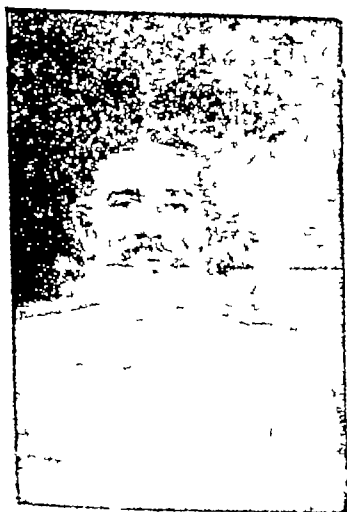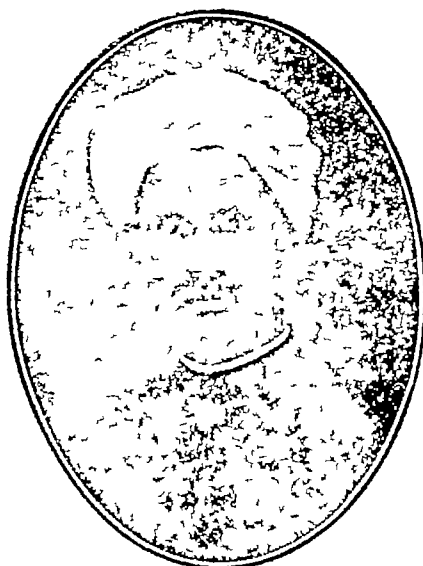
श्री सेठ भैरूंदानजी सेठिया बीकानेर

श्री सेठ रतनचन्दजी बांठिया पनवेल

श्री जेठमलजी सा० सेठिया बीकानेर

श्री सेठ चुन्नीलालजी, पनवेल

श्री सेठ जगराजजी लोढा, हैद्राबाद.

श्री सेठ जीवराजजी कटारिया,
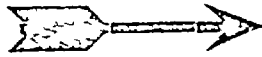
श्री लाला नन्दलालजी जैन (अग्रवाल) हैद्राबाद
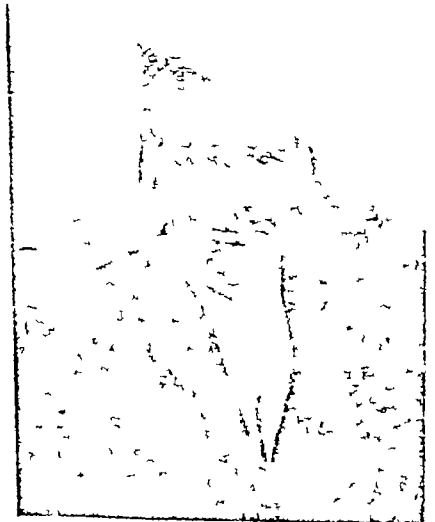
श्री सेठ मुलतानमलजी बरमेचा हैद्राबाद.
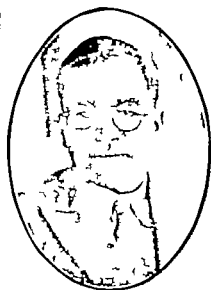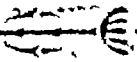
श्री डा॰ राजमलजी जैन पीपलोदा

श्री सेठ चांदमलजी गांधी रतलाम

श्री कंवरसिंहजी वकील, मन्दसौर

श्री फरागीमलजी लालचन्दजी महता सेन्दराबाद

श्री गंभमलजी चौरडिया, मद्रास.

श्री किशनलालजी
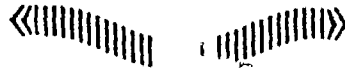
बाबू लालचन्दजी गुलेछा, खींचन

श्री फूलचन्दजी लूणिया, बैंगलोर.
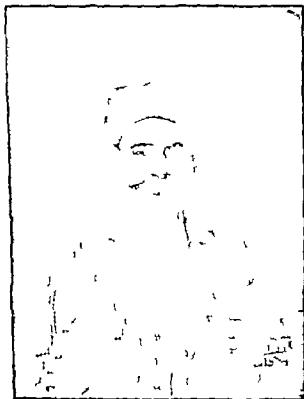
श्री दानवीर सेठ राजमलजी ललवाणी जामनेर

श्रीरायसाहब सेठ लालचन्दजी, गुलबर्गा

श्री सेठ डूँगरराजजी पारीवाल, हैदराबाद

श्री बाबू सुन्दरलालजी [illegible]
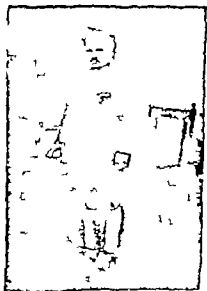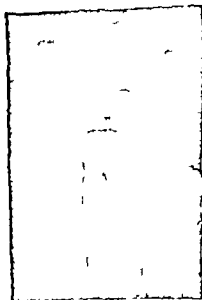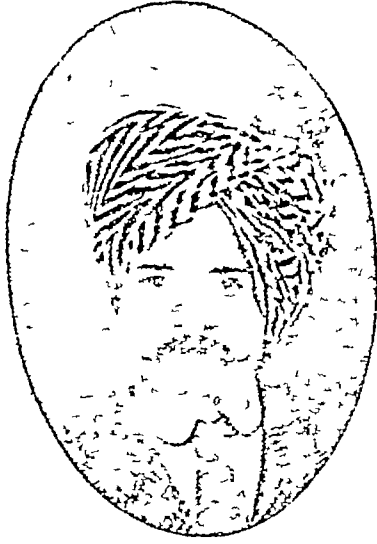
श्री बाबू आनन्दराजजी सुराणा, देहली

श्री सेठ पेमराजजी बोहरा पीपलिया

श्री गणपतराजजी बोहरा पीपलिया

श्री रघुनाथमलजी कोचर अमरावती

श्री भीकमचन्दजी छजाणी मद्रा

श्री मुथा जैन विद्यालय मद्रा

श्री कुं० समर्थसिंहजी टांगोरी

श्री सेठ मिश्रीलालजी वेद

श्री

बाबू भाईलालजी आसकरण मेहता सिटी

श्री सेठ पूनमचंदजी गांधी हैदराबाद

श्री सेठ चांदमलजी बरमेचा, नासिक

श्री केशरीमलजी महता, पेटलावद

श्री गजेन्द्रकुमारजी ढाबरिया गुलाबपुरा

श्री भीषमचन्दजी कोठारी, ढाणकी
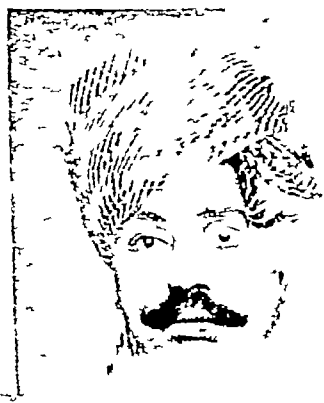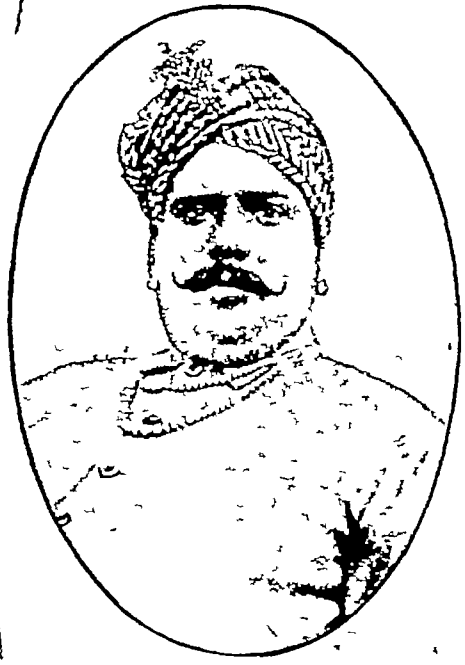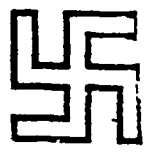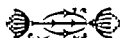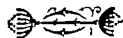
प्रेमचन्दजी लोढा ब्यावर

श्री केसरीमलजी मनावदिया जमुनिया

श्री उत्तमचन्दजी कोठारी, ढाणकी

श्री सेठ केसरीमलजी मूणोत ब्यावर

श्री सेठ चम्पालालजी मालीजार, ब्यावर

श्री सेठ मूलचन्दजी मूणोत ब्यावर

बाबू पन्नालालजी मालीजार ब्यावर

कु० मदनराजजी मुहता, बलूँदा

एम एल जी मुलतानमलजी राका
गढ सिवाना

श्री लौंकाशाह जैन गुरुकुल, सादडी (मारवाड़)

श्री केवलचन्दजी चापड़ा सोजत सिटी

श्री हीराचन्दजी ममसाणी मादड़ी

श्री भेरूंमलजी बरड़िया जोधपुर

श्री सूधीलालजी बरड़िया मादड़ी

श्री सेठ फूलचन्दजी टाटिया, चोपडा

श्री कन्हैयालालजी कोठारी चोपड़ा

फणा-भवन, अमलनेर

श्री सेठ फूलचन्दजी टाटिया, चोपडा

श्री कन्हैयालालजी कोठारी चौपड़ा

श्री बाफणा-भवन, अमलनेर

श्री सेठ जेठमलजी बाफणा, अमलनेर

कुं० भवरलालजी धाडीवाल त्रिनल्लूर

श्री स्था० वीर मण्डल कलकत्ता

बाबू हीरालालजी भावरिया विजयनगर

श्री धनराजजी कटारिया बैंगलोर
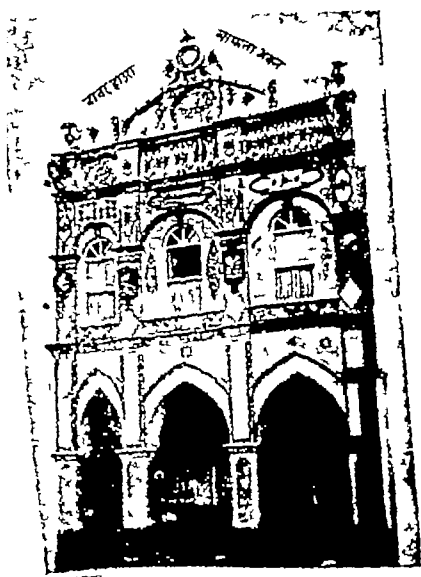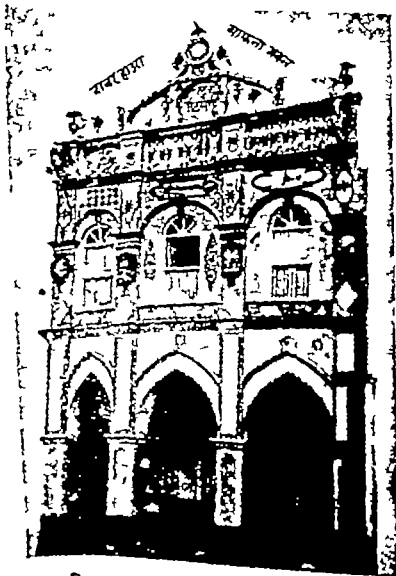
जैन वीर मण्डल पुस्तकालय, केकड़ी

साधु-सम्मेलन का इतिहास

समाज-शान्ति और समाज-सगठन के लिए पर्यूषण और संवत्सरी आदि पर्व का सब स्थानों और सब सम्प्रदायों में एक ही दिन होना बहुत ही आवश्यक था। अब तक परम्परा के नाम पर एक एक दिन के अन्तर से, और अधिक मास होने पर एक एक मास के अन्तर से संवत्सरीपर्व मनाया जाता था। इस प्रथा से श्रावकों में साम्प्रदायिक खींचातानी बढ़ती जा रही थी। बड़े बडे शहरों में आकर रहे हुए भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों के श्रावक, श्रीमान् लोंकाशाह के शिष्य और श्री स्थानकवासी समाज के होते हुए भी, अलग अलग दिन संवत्सरी आदि पर्व मनाते थे, और इसी प्रकार साधुजी भी करते थे। यह क्लेशकारी प्रवृत्ति देख कर श्रीमती कान्फ्रेन्स माता ने, स्थानकवासी या साधु मार्गी कहलाने वाली सब सम्प्रदायों में एक ही रोज संवत्सरी पर्व मनाये जाने की आज्ञा निकाली, और साथ ही कान्फ्रेन्स ने अपने दफ्तर से ही पंचवर्षीय टीप भी निकाली। पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय की टीप, सम्प्रदाय की परम्परा के अनुसार निकल चुकी थी, जिसमें और कान्फ्रेन्स द्वारा निकाली गई टीप में संवत्सरी पर्व एक दिन के अन्तर से बताया गया था, फिर भी इस सम्प्रदाय ने सब सम्प्रदायों से पहले ही कान्फ्रेन्स की आज्ञा स्वीकार की, और दूसरी सम्प्रदायों ने भी ऐसा ही किया। इस प्रकार इस दिशा में महासभा की विजय होती रही लेकिन पंजाब-प्रान्त में, पत्री और परम्परा सम्बन्धी मत भेद बहुत दिनों से चल रहा था। इस मतभेद ने, शनैः शनैः भीषण कलह का रूप धारण किया और पंजाब एक प्रकार से युद्धक्षेत्र बन गया। दोनों ओर से पक्ष बने और अपने अपने पक्ष के समर्थन में लोग अपनी सारी शक्ति लगाने लगे। यह मामला यहां तक बढ़ गया, कि विवश होकर, अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेन्स को इस मामले में हस्तक्षेप करना पड़ा और सम्मानित-सम्मानित गृहस्थों का एक डेपुटेशन, कान्फ्रेन्स द्वारा प्रकाशित टीप को मंजूर करवाने के लिये पंजाब भेजा गया। इस डेपुटेशन ने, कान्फ्रेन्स के रेजीडेण्ट जनरल सेक्रेटरी को जो रिपोर्ट दी, वह यहां ज्यों की त्यों उद्धृत की जाती है।

श्रीमान् रेजीडेण्ट जनरल-सेक्रेटरी,

श्री श्वे० स्था० जैन-कॉन्फ्रेन्स आफिस, बम्बई।

धर्मप्रेमिन् !

निवेदन है, कि कॉन्फ्रेन्स की जनरल कमेटी के प्रस्ताव नं० ११ ता० २९-९-१९२९ के अनुसार, हम डेपुटेशन के निम्नलिखित सभासद, ता० ७ ८, ९ अप्रेल सन् १९३१ को अमृतसर में कॉ० द्वारा प्रकाशित टीप को स्वीकार कराने के अभिप्राय से श्री श्री १००८ श्री पूज्य सोहनलालजी महाराज की सेवा में उपस्थित हुए और स्थानीय गृहस्थों तथा अन्य स्थानों के उपस्थित गृहस्थों की मौजूदगी में श्री जी की सेवा में यथायोग्य नम्रतापूर्वक विनती की कि प्रायः दूसरी सब सम्प्रदायों ने समाज के ऐक्य और हित के विचार से प्रेरित होकर कॉ० की टीप को स्वीकार कर लिया है। यतः आप भी स्वीकार कर सब को कृतार्थ करें जिससे सर्व भारत वर्ष के श्रीसंघ में ऐक्य होकर, श्री जैनधर्म का प्रभाव बढ़े।

उत्तर में श्रीमान्जी ने अत्यन्त दीर्घ-दृष्टि और उदारता से फरमाया कि यद्यपि कान्फ्रेन्स द्वारा प्रकाशित टीप में शास्त्रानुसार कई एक बातें विचारणीय और संशोधनीय हैं तो भी श्रीसंघ की एकता के विचार से हम अपनी सम्प्रदाय को इस टीप के अनुसार कार्य करने की आज से आज्ञा देते हैं। लेकिन कान्फ्रेन्स का यह फर्ज होगा कि अपने ठहराव नं० १० के अनुसार टीप को शास्त्रानुसार बनाने के लिये और अन्य प्ररूपणा साधु-समाचारी इत्यादि के सम्बन्ध में विचार करने के लिये साधु-सम्मेलन किसी ऐसे स्थान पर हो जहां पंजाब के साधु भी सुगमता से पहुंच सकें शीघ्र करने का प्रबन्ध करें। ताकि इन विषयों के बारे में शास्त्रानुसार निर्णय हो जावे और कान्फ्रेन्स की मौजूदा टीप की अवधि समाप्त होने से पहले भविष्य के लिये नई टीप बन सके। उस सम्मेलन में हमारी तय्यार की हुई जैन-ज्योतिष तिथिपत्रिका पर कान्फ्रेन्स की टीप और दूसरी भी किसी तिथिपत्रिका पर जो वहां पेश की जाय, विचार होकर जो टीप आवश्यक संशोधनोपरान्त सम्मेलन की सम्मति में उचित प्रतीत हो उस पर और अन्य स्वीकृत-विषयों पर सर्व सम्प्रदायों से कान्फ्रेन्स में अमल-दरामद करावें। लेकिन अगर एक साल के अन्दर कान्फ्रेन्स की ओर से सम्मेलन सम्बन्धी प्रयत्न न किया जाय तो हम एक साल के बाद टीप को पालन करने के पाबन्द नहीं होंगे"

हम डेपुटेशन के सभासदों की सम्मति में पूज्य श्री का यह फरमान अति उत्तम है और हमने पूज्यश्री को विश्वास दिलाया है कि इस सम्बन्ध में हम आपसे सहमत हैं।

अब हम कान्फ्रेन्स से आग्रहपूर्वक अनुरोध करते हैं कि इस कार्य की पूर्ति के लिये, पूर्ण प्रयत्न से काम प्रारम्भ किया जाय ताकि मौजूदा टीप की अवधि समाप्त होने के पहले ही प्रत्येक बात का निर्णय हो जाय।

ता० ९-४-१९३१ ई०

मेम्बरान डेपुटेशन—

ला० गोकुलचन्दजी	(दिल्ली)	सेठ भण्डारी धूलचन्दजी	(रतलाम)
सेठ० वर्द्धभानजी	(रतलाम)	,, टेकचन्दजी	(झंडियाला)
,, अचलसिंहजी	(आगरा)	,, हीरालालजी	(खाचरोद)
,, केशरीमलजी चोरड़िया	(जयपुर)		

अन्य गृहस्थ—

श्री रतनचन्दजी	जैन	अमृतसर	श्री विशनदासजी	,,	अमृतसर.
,, हरजसरायजी	,,	,,	,, नथुमलजी	,,	,,
,, वसन्तमलजी	,,	,,	,, भगवानदासजी	,,	,,
,, मुन्नीलालजी	,,	,,	,, वल्लीरामजी	,,	,,
,, हंसराजजी	,,	,,	,, लल्लूरामजी	,,	,,
,, दीवानचन्दजी	,,	स्यालकोट	,, मुन्नालालजी	,,	,,
,, त्रिभुवननाथजी	,,	कपूरथला.	,, हंसराजजी	गाढ़िया	,,
,, प्यारेलालजी	,,	मजीठा.	,, बनारसीदासजी	जैन	,,
,, पन्नालालजी	पट्टी	लाहोर	,, चुन्नीलालजी	,,	,,
,, मुंशीरामजी	जैन	,,	,, सन्तरामजी	,,	,,
,, मुल्कराजजी	,,	गुजरांवाला.	,, मस्तरामजी	,,	,,

उपरोक्त रिपोर्ट में वर्णित पूज्य श्री के सन्देश ने ही साधु सम्मेलन की भावना का बीजारोपण किया, जो आगे चल कर एक विशालकाय वृक्ष के रूप में दीख पड़ा। इस वक्तव्य के प्रकाशित होते ही, समाज का ध्यान साधु सम्मेलन करने की ओर गया। कान्फरेन्स के पदाधिकारी इस विषय पर विचार करने लगे और समाज के नेताओं के अहर्निश चिन्तन का विषय यही बात हो पड़ी। परिणामतः साधु सम्मेलन सम्बन्धी विचार जानने के लिए, कान्फरेन्स आफिस ने समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से पत्र व्यवहार किया और मुनिराजों के विचार जानने के लिए एक प्रश्नावली प्रकाशित की। अस्तु !

इन्हीं दिनों आगरे के स्वनाम धन्य नेता तथा समाज के सच्चे सेवक श्रीमान् सेठ अचलसिंहजी का निम्न लेख जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआः—

साधु-सम्मेलन कराने की अत्यन्त आवश्यकता

पिछले जैन प्रकाश के अंक में "कान्फरेन्स भराने की अत्यन्त आवश्यकता" नामक लेख में मैंने यह बात साबित की थी, कि वर्तमान समयानुसार; स्थानकवासी समाज के लिए यह

अत्यन्त आवश्यक है कि वह जल्दी से जल्दी कान्फरेन्स भराने का उद्योग करे। ठीक इसी प्रकार मैं यह प्रतीत करता हूं कि जिस प्रकार गृहस्थों की कान्फरेन्स भराने की अत्यन्त आवश्यकता है, उसी प्रकार शीघ्र से शीघ्र मुनियों के सम्मेलन भराने की आवश्यकता है। जिस प्रकार एक गाड़ी को सुचारु रूप से चलाने के लिए दो पहियों की आवश्यकता है, उसी प्रकार जैन धर्म रूपी गाड़ी को चलाने के लिए, श्रावक श्राविका और साधु साध्वी रूपी दो पहियों की आवश्यकता है।

मैं, साधु सम्मेलन करने के लिए और भी ज्यादा ज़ोर इसलिए देता हूं कि स्थानक वासी समाज के चलाने वाले अर्थात् आधार भूत ये साधु साध्वी ही हैं। अगर साधु साध्वी वर्तमान समयानुसार नहीं हुए तो खास कर स्थानकवासी धर्म को बड़ा धक्का लगेगा। इसलिए श्वेताम्बर स्थानकवासी कान्फरेन्स के कार्यकर्त्ताओं तथा समाज हितैषियों से प्रार्थना करूंगा कि वे अब कान्फ रेन्स भराने का निश्चय करें, तो साथ साथ, अगर होसके तो साधु सम्मेलन भराने का भी प्रबन्ध करें।

इसके अलावा मैं पंजाब, मालवा मारवाड़, कच्छ, गुजरात, काठियावाड़, इत्यादि स्थानों के मुख्य २ पदवीधारी मुनिराजों से प्रार्थना करूंगा कि वे कृपा कर इस सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट करें कि कौन कौन विषय किस ढंग से कहां पर और किस समय विचारे जा सकते हैं। जहां तक मुझे मालूम हुआ है वहां तक कान्फरेन्स ने इस विषय में पत्र व्यवहार करना प्रारम्भ कर दिया है। आशा है, कि हमारे पूज्य मुनिराज व गृहस्थ इस बात पर प्रकाश डालेंगे कि किस ढंग से संगठन होना चाहिए।

मैं अपनी तुच्छ बुद्धि के अनुसार अपने कुछ विचार प्रकट करना चाहता हूं:—

(१) संगठन अर्थात् Constitution किस तरह बनना चाहिए। पहले तो ज़ोन अर्थात् प्रान्त मुकर्रर होने चाहियें। और यह बनना चाहिए कि अमुक प्रान्त में कौन कौनसे ठाणे सम्प्रदाय, गच्छ इत्यादि हैं। व आपस में अपने अपने प्रांत में प्रान्तीय सम्मेलन करें। और भारतवर्षीय सम्मेलन के लिए प्रतिनिधि चुनें। तदेव, साधु सुधार सम्बन्धी खास खास प्रस्ताव पास करें। पच्चीस साधुओं पर एक प्रतिनिधि; पचास पर दो और पचास से ऊपर तीन प्रतिनिधि होने चाहिएं। इसके अलावा निम्नलिखित विषय सम्बन्धी प्रस्तावों पर विचार होना चाहिए। इसके अलावा और जो समाजोन्नति की बातें हों उन पर भी अवश्य विचार होना चाहिये।

१—साधुओं की पढ़ाई का उत्तम प्रबन्ध होना चाहिये

२—काफी परीक्षा लेने के बाद तथा काफी इम्तिहान हासिल करने के बाद दीक्षा देनी चाहिये।

३—उन उन स्थानों में भी विहार करना चाहिए जहां जैन बस्ती नहीं है। अर्थात् नये नये क्षेत्र खोलने चाहिए।

४—समयानुसार उत्तम जैन साहित्य निकलना चाहिये।

५—दीक्षा महोत्सव समयानुसार होना चाहिये।

६—वर्तमान समयानुसार बालक व बालिका को दीक्षित करने के वास्ते क्या ऊमर होनी चाहिये।

७—एक जैन पचांग होना चाहिये।

८—जो कोई नई बात जारी करनी हो, वह सर्व सम्मति से करनी चाहिए।

पूज्य मुनिवरो व गृहस्थो! कुदरत ने यह समय आपको अमूल्य प्रदान किया है कि इस समय महात्मा गांधी जैसी हस्ती द्वारा आपके सिद्धान्तों का प्रचार हो रहा है। अगर आप में थोड़ी भी चतुराई और बुद्धिमत्ता हो, तो आप इस समय से अपूर्व लाभ उठा सकते हैं। और संसार में भगवान् महावीर के सिद्धान्तों को पूरी तरह प्रकट कर सकते हैं। पर यह तो उसी अवस्था में हो सकता है कि आप अपनी निद्रित अवस्था को छोड़ें और बल, वीर्य, पुरुषार्थ तथा पराक्रम को काम में लावें। मुझे पूर्ण आशा है कि आप सेवक की प्रार्थना पर अवश्य ध्यान देंगे तथा इस सुनहरी अवसर से ज्यादा-से ज्यादा लाभ उठावेंगे।

* * * * +

इस लेख के प्रकाशित होजाने के बाद पंजाब सम्प्रदाय के युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज के विचारों का द्योतक निम्न लेख जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआः—

साधु सम्मेलन की आवश्यकता

प्राक्कथन—जैसा कि श्री पंजाब गच्छाधिपति पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज ने, कान्फरेन्स की ओर से डेपुटेशन की प्रार्थना के उत्तर में फरमाया था, अथवा आगरा निवासी सेठ अचलसिंहजी ने अपने लेख में, जो ता० ३१ मई १९३१ के जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआ था—दर्शाया है, निस्सन्देह साधु सम्मेलन की अत्यन्त आवश्यकता है। सहस्रों वर्षों के चक्कर में, जैन जगत में जो परिवर्तन हो चुके हैं, और उन परिवर्तनों तथा परिस्थितियों के कारण जो भिन्न २ समाचारी, दीक्षादि के नियम, शास्त्रों की प्ररूपणा में भेद होगया है और परस्पर मेल, विचार परिवर्तन और सामूहिक कार्य का जो अभाव होगया है, उन सबको एक धारा में प्रवाहित करके सर्व संघ के बल का कारण बनाने का प्रयत्न अनिवार्य हो गया है। इस युग में जब कि संसार भर में, सर्व जातियों को मिला कर एक कर देने का घोर प्रयत्न हो रहा है, ऐसे समय पर जिन धर्मी साधु; कि जिनका सिद्धान्त न केवल मनुष्य मात्र को, वरंच प्राणी मात्र को एक समान मानना है, यदि परस्पर कोई सामाजिक सम्बन्ध—जो उनके अपने आत्म कल्याण और जिन मार्ग दिपाने के कार्य में अत्यन्त लाभदायक हो सकता है, न उत्पन्न करें और पुरानी रूढि के फेर में साम्प्रदायिक मान से प्रभावित हो, एक दूसरे से पृथक रहने में ही कल्याण समझें और हृदयों को विशाल न बना सकें तो अवस्था वास्तव में बड़ी सोचनीय और करुणाजनक होगी। साधु-

सम्मेलन करके, पृथकता के भाव को त्याग कर साधु मुनिराजों को समझ लेना चाहिये कि ये जिन मार्ग के सेवी सब के सब एक ही पथ के पथिक हैं। उन सबका वास्तव में उद्देश्य एक ही है। अर्थात् आत्म कल्याण और परोपकार। फिर यह परस्पर वैमनस्य क्यों ?

स्थान—इससे आगे प्रश्न उत्पन्न होता है, कि साधु सम्मेलन की आवश्यकता को स्वीकार कर किस स्थान पर इसका करना नियत किया जावे। इसके बारे में कई बातें विचारणीय हैं:—

स्थान केन्द्रित होना चाहिए जहां पर प्रत्येक टोले के मुनिराजों को पहुंचना सुगम हो। स्थान ऐसा होना चाहिये जहां आहारादि आवश्यक क्रियाओं की सुविधा हो। स्थान ऐसा चुना जावे कि जहां अनेक धनाढ्य गृहस्थी हों, वे उत्साही भी हों, इस कार्य में श्रद्धा भी रखते हों और यदि सम्मेलन के समय पर दर्शकों की अनिवार्य भीड़ हो जावे तो वे उसके बोझ को आराम से निःसंकोच सह सकें।

जहां निवासस्थान विशाल और हवा तथा प्रकाश के विचार से साताकारी हो और जहा प्रभावशाली स्वधर्मी तथा अन्यधर्मी भी हों कि वहां से किये कार्य को अधिक प्रचार मिल सके।

इन विचारों से तो देहली ही अति योग्य स्थान प्रतीत होता है परन्तु फिर भी स्थान निश्चय करने के लिये साधु-मुनिराजों की सुगमता को जानना और स्थानीय श्रावकों से भी सम्मति लेना आवश्यक है। इसके उपरान्त ही कोई विचार हो सकता है।

समय—समय कि सम्मेलन कब हो, इस विचार पर आश्रित है, कि स्थान नियत हो चुकने के बाद प्रत्येक टोले के साधु प्रतिनिधि कब तक वहां पहुंच सकेंगे। हां यह अवश्य ध्यान रखना चाहिये कि सम्मेलन शीघ्रातिशीघ्र ही होना लाभदायक है और विलम्ब हानिकारक है। यदि होली चातुर्मास से पहले सम्मत हो तो अत्युत्तम होगा। ऋतु भी बसन्त होने के कारण सर्दी, गर्मी का परिषह कम होगा।

विषय—सम्मेलन के लिये टीप और तिथिपत्रिका पर शास्त्र के न्याय से विचार करना तो अनिवार्य है क्योंकि इसी आधार पर तो कान्फ्रेन्स, सर्व भारतवर्ष के विविध टोलों का कुछ काल के लिये ही सही—एक कर सकी है। कान्फ्रेन्स ने अति परिश्रम से एक सवत्सरी और एक पर्वादि का काम सफलता को पहुंचाया है। इस काम को सुरक्षित रखना हमारा धर्म है।

इसके अतिरिक्त, जैसा कि हम प्राक्कथन में निवेदन कर चुके हैं समाचारी दीक्षा श्रद्धा प्ररूपणादि में सामान्यता उत्पन्न करना अनिवार्य है। इसके अभाव से बड़ी हानि हो रही है।

रूप—साधु-सम्मेलन, गोलमेज के रूप में होना अच्छा होगा कि जहां हर गच्छ को समान अधिकार हों। और परस्पर वार्तालाप विचार परिवर्तन द्वारा समझा-बुझाकर सर्वसम्मति से ही निश्चय करना सम्भव होगा। परन्तु यदि किसी अवस्था में ऐसा असंभव होजावे तो बहुमत से काम लिया जावे। ऐसा प्रस्ताव हरएक पर लागू होना चाहिये। यह सर्व माननीय हो।

निमन्त्रण—सर्व भारतवर्ष के सर्व स्थानकवासी गच्छों को,उनके आचार्यों के द्वारा निमंत्रण देना चाहिए। और हर एक गच्छ की ओर से यदि अधिक से अधिक तीन प्रतिनिधि हों तो ठीक होगा। उन प्रतिनिधियों को अपने २ गच्छ के विचारों का स्पष्ट ज्ञान होना चाहिये। ताकि अपने अपने गच्छ का विचार भली प्रकार और थोड़े समय में भी लोगों पर प्रकट कर सकें। सम्मेलन अपना सभापति स्वयं ही समय पर बहुमत से चुन ले और कार्यक्रम का भी फैसला उसी समय कर लेवे।

श्रावक—यदि प्रत्येक गच्छ में से हर एक गच्छ की ओर से; तीन तीन श्रावक प्रेक्षक रूप में उपस्थित हों तो कोई आपत्ति न होगी।

एकलविहारी—यदि किसी स्थान पर कोई ऐसे सदाचारी और विद्वान् साधु मुनिराज हों, जो काल के फेर में अकेले रह गये हों तो उन्हें भी बुलाना आवश्यक है।

* * * * *

कान्फरेन्स आफिस की ओर से साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में पूछे हुए प्रश्नों के उत्तर में उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने अपनी यह सम्मति भेजी थीः—

१—मुनि सम्मेलन होना जरूरी है। उसमें विद्वान् और आगेवान मुनियों को उपस्थित होना चाहिए। संख्या की दृष्टि से ज्यादा उपस्थिति विशेष लाभप्रद नहीं है।

२—सम्मेलन दिल्ली में होना चाहिये।

३—सम्मेलन फाल्गुण मास में हो।

४—साधु समाचारी, दीक्षा, टीप श्रद्धा, प्ररूपणा और शास्त्र आदि का साहित्यिक विचार।

५—समपंक्ति से सम्मेलन होना चाहिये, अर्थात् उसमें छोटे बड़े का विचार न रहे।

६—प्रत्येक सम्प्रदाय के आचार्य या मुख्य या विद्वान् के पास कान्फरेन्स की तरफ से निमंत्रण जाना चाहिए। और उस सम्प्रदाय की तरफ से ज्यादः से ज्यादः तीन प्रतिनिधि आने चाहिएं, जिन्हें कि अपनी सम्प्रदाय की तरफ से बोलने का पूर्ण अधिकार हो अर्थात् उनकी आवाज उस सम्प्रदाय की आवाज समझी जावे। दूसरे अन्य विद्वान् अगर पधारें और उन्हें कुछ सूचना करनी हो तो वे अपने सम्प्रदाय के साधु को लिख कर दे सकते हैं।

७ और ८—सम्मेलन के अध्यक्ष का चुनाव जहां तक हो सके सर्व सम्मति से किया जाय। नहीं तो बहु सम्मति से किया जाय और प्रस्ताव भी सर्व सम्मति अथवा तो बहुसम्मति से किया जाय।

९—हर एक सम्प्रदाय के तीन श्रावकों को प्रेक्षक रूप से बैठने के लिए आमंत्रण दिया जाय। वे मुनि मण्डल की आज्ञा से सम्मेलन में प्रेक्षक रूप में उपस्थित हो सकेंगे।

१०—एकलविहारी साधु को अगर कुछ सूचना भिजवाना हो तो वे किसी सम्प्रदाय के मार्फत अपनी राय भेज सकेंगे या कान्फरेन्स की नियत की हुई कमेटी को भेज सकेंगे। उस पर विचार कर अगर मुनासिब होगा तो कमेटी उसे सम्मेलन में पेश करेगी। बिना आमन्त्रण के सम्मेलन के स्थान पर किसी का आना उचित न होगा।

विशेष सूचना—नं० ४ में कहे गये विषयों के अतिरिक्त साम्प्रदायिक और वैयक्तिक कलह युक्त प्रश्नों को स्थान न दिया जायगा।

+ + + + +

इसी सम्बन्ध में पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज और पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज की निम्न संयुक्त सम्मति प्रकाशित हुई—

आवश्यकता—यह बात स्पष्ट है,कि जहां तक साधु सम्मेलन नहीं होगा वहां तक हजारों सुधार की बातें व्यर्थ ही जांयगी। क्योंकि स्थानकवासी जैन समाज में साधु ही धर्म सयस्व हैं। साधुओं को एकत्रित होकर धार्मिक उन्नति के उपाय और अवनति को दूर करने के उपाय सोचने का अवसर नहीं मिलता है। अलग अलग विचारों से, गतानुगतिकता की ही रक्षा होती है। इसलिये वर्तमान काल के विशेष विमर्शक एवम् दूरदर्शी साधुओं के परस्पर के विचारों से जैन धर्म (समाज) को अवश्य फायदा पहुंचना चाहिये। जमाने हाल को देखते हुए, जबकि तमाम जातियों का संगठन करने का प्रयत्न हो रहा है जैन समाज क्यों इससे वंचित रह जाय अर्थात् सभी सम्प्रदायों को मिल कर जैन धर्म की ध्वजा यानी भगवान महावीर के अहिंसात्मक सिद्धांतों को, संसार के कोने २ तक पहुंचाने का प्रयत्न करना चाहिए। और यह बिना साधु सम्मेलन के संभव नहीं है।

स्थान—स्थान ऐसा होना चाहिये जहां पर भिन्न २ प्रान्तों में विचरने वाले साधुओं को पधारने में सुभीता हो। इसके सिवाय जहां पर हर एक प्रकार की सुविधा हो। ब्यावर नगर ठीक नजर आता है।

समय—माह या फाल्गुन का समय अनुकूल मालूम पड़ता है, क्योंकि दो तीन माह पूर्व पर में विहार के लिये समय बचता है। व उस वक्त न ज्यादा गर्मी न ज्यादा सरदी होती है।

विषय—साधु सम्मेलन में चर्चने के लिये कई विषय हैं, मगर उन सब के पहिले

इस विषय पर विचार करना आवश्यक है, कि स्थानकवासी जैन संप्रदाय की बिखरी हुई शक्तियाँ प्राचीनकाल के समान पुनः संघ शक्ति व गण शक्ति के रूप में परिणत हो जाय।

बैठक--बैठक गोल होनी चाहिये, जिससे हरएक सम्प्रदाय को बराबर हक़ रहे।

निमन्त्रण—सम्मेलन की तरफ से, हरएक संप्रदाय के आगेवान साधुओं को और श्रावकों को आमन्त्रण देना चाहिये।

कार्यक्रम---सम्मेलन की रीति, शास्त्र व लोक से अनुमोदित हो अर्थात् जिस रीति में सावद्य-चर्चा की भीति न रहने पावे। उद्देश की सिद्धि में खामी न रहने पावे। नियम धार्मिक हों। नैतिक व सामाजिक नियम, धार्मिक नियमों में ही बहुत कुछ अन्तर्हित रहते हैं।

सभापति—साधुओं में, जो सर्व सम्मतिसे निष्पक्ष एवं निरभिमानी हों, उन्हें सर्वानुमति से प्रमुख पद दिया जाय। हमारी राय में, उपाध्याय पं० मुनि श्री आत्मारामजी या शतावधानी पण्डित मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज इस पद के लिए सर्वोत्तम हैं।

एकलविहारी—एकलविहारी साधुओं को भी आमन्त्रण होना चाहिये। साधु सम्मेलन में, इस बात का विचार नहीं रखना चाहिये। जैसे, सम्मेलन में गुणवान श्रावकों की उपस्थिति आवश्यक है, वैसे ही उपकारी व विद्वान् एकलविहारी साधुओं की भी उपस्थिति आवश्यक है। क्योंकि यदि सम्मेलन में 'एकलविहार शास्त्रानुकूल है या प्रतिकूल?' इस विषय में चर्चा हो, तो इससे कौन लाभ के भागी बनेंगे? असल बात तो यह है, कि जिन महानुभाव मुनियों ने एकलविहार करते हुए भी जैन धर्म व साधु संप्रदाय का उपकार किया है, उनके प्रति कृतज्ञता प्रदर्शन करना भी आवश्यक है।

विशेष सूचना—जब सम्मेलन होने का निश्चय हो जाय, तब सब के पास खबर दी जाय; फिर विशेष सूचना देना ठीक होगा।

* * * * *

इसी तरह से कान्फरेन्स द्वारा पूछी हुई प्रश्नावली के उत्तर में पूज्य श्री ताराचन्द जी महाराज पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज, मुनि श्री मणीलालजी महाराज, पं० मुनि श्री त्रिलोकचन्दजी स्वामी, मुनि श्री संघजी स्वामी, मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज, मुनि श्री लालचन्दजी महाराज, मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज, स्वामी श्री बुधमलजी महाराज, और शतावधानी पं० श्री रतनचन्द्रजी महाराज द्वारा भेजे हुए पूज्य श्री गुलाबचन्द्र जी महाराज के उत्तर तथा बरवाला सम्प्रदाय, दरियापुरी सम्प्रदाय एवं कोटा सम्प्रदाय के उत्तर आदि सम्मतियां जैन प्रकाश में प्रकाशित हुईं। इन सभी महानुभावों ने सम्मेलन की आवश्यकता पर जोर देकर उसका महत्त्व तथा कार्य प्रणाली बतलाई थी। 'सौ सयाने एक मत' वाली कहावत के अनुसार इन सभी सम्मतियों में साम्य था। अतः कलेवर वृद्धि के भय से उन सबको यहां उद्धृत नहीं किया गया।

इसी प्रश्नावली के उत्तर में पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के हितेच्छु श्रावक मंडल ने पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की ओर से जो उत्तर भेजा वह यों है—

आपका कृपापत्र, श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य महाराज श्री जवाहिरलालजी महाराज सा की सेवा में पेश किया गया था। उस पर श्रीमान् का फरमान हुआ कि साधु सम्मेलन होना जैसा उपयोगी और समाज सुधार का कार्य है वैसा ही कठिन विषय और पूर्णतया विचारणीय भी है। अतः इस सम्बन्ध में सम्प्रदाय के खास श्रावकों (मण्डल के सदस्यों) की जैसी राय हो विचार पूर्वक कॉन्फ्रेंस ऑफिस को उत्तर देना चाहिये। जिससे, कि यह कार्य शांति पूर्वक हो सके और फिर किसी प्रकार की बाधाएं न उपस्थित हों। हमारे तो जिस प्रकार मण्डल इस विषय में विचार पूर्वक राय कायम करेगा उस मुआफिक प्रवृत्ति करने के भाव हैं— इत्यादि। जिस पर से मण्डल की बैठक में विचार करके, जो राय कायम की गई वह निम्न प्रकार है—

(१) मुनि सम्मेलन का प्रश्न साधारण नहीं किन्तु दीर्घ दृष्टि द्वारा अतिशय विचारणीय है। जिस पर पूर्णतया विचार करने के पश्चात् ही कॉन्फ्रेंस को सम्मेलन का निश्चय करना उचित है जिससे कि किया हुआ कार्य सफलता को प्राप्त हो। क्योंकि यदि सर्व महात्माओं की दृष्टि शास्त्रानुकूल, न्यायसङ्गत निष्पक्षतापूर्वक वर्तमान परिस्थिति को दृष्टि में रख कर कार्य या विचार करने की रही तब तो अवश्य समाजोन्नति और धर्मोन्नति का साधनभूत यह सम्मेलन हो सकता है। किन्तु इसके विपरीत किसी एक ही दृष्टि से (शास्त्र अन्यमत) काम लिया गया तो परिणाम विद्यमान परिस्थिति से भी विपरीत आने की सम्भावना है। लाभ ज्यादा या कम प्रमाण में हो उसके लिये कोई चिन्ता नहीं। यदि प्रारंभ में लाभ कम होगा तो भविष्य में अधिक भी हो सकेगा। किन्तु विषमता प्राप्त न हो, इस विषय का पूर्णतया विचार करके सम्मेलन का प्रबन्ध करना चाहिये। साथ ही, कई एक अन्य सम्प्रदायों की अनुमति या मंजूरी अब तक नहीं आई है उन से मंगवा कर तब सम्मेलन की नियुक्ति की जाय।

(२) सम्मेलन के लिए स्थल—राजपूताने में कोई स्थान जिस जगह हर प्रकार की सुविधाएं हों ऐसा या पालनपुर शहर अनुकूलता वाला मालूम होता है।

(३) सम्मेलन का समय माघ या फागुन मास ही सब प्रकार से विशेष उपयोगी है। पर यदि हो सके तो श्री लौंकाशी सम्प्रदाय का सूचनानुसार यह सम्मेलन सं० १९८९ में उपरोक्त मास में किया जावे तो हर तरह से विशेष उपयोगी और लाभप्रद प्रतीत होता है।

(४) सम्मेलन में रेडक तोड़ करने की जो राय कई सम्प्रदायों की तरफ से प्रकट हुई है, वह उचित है।

(५) सम्मेलन में बड़े छोटे आदि के विचार से भेदक नीति रक्खी जाती है तो इस में प्रतिभेद करने की आवश्यकता ही नहीं है और ऐसी [illegible] परस्पर तथा समा

सोसाइटियां गृहस्थों में भी होती हैं, तो यह तो मुनियों की सभा है। इस उपरांत भी सम्मेलन की बैठक में विद्यमान सर्व मुनियों की एक सम्मति से किसी मुनि को प्रेसिडेण्ट बनाना चाहें, तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर रहे, किन्तु प्रेसिडेण्ट बनाने का, आवश्यकीय नियम न रक्खा जाय ।

(६) विषय- मुख्यतः ज्ञान दर्शन चारित्र को उन्नत बनाने वाले व समयोपयोगी समाज सुधारक होने चाहिएं। जो समय पर विद्यमान मुनि महात्माओं के विचार में आवें, उन पर मनन करके निर्णय किया जाय। अलबत्ता, सब से प्रथम भविष्य के लिए पक्खी - सम्वत्सरी की टीप बाबत का विचार होकर निर्णय होना अत्यावश्यक है ।

(७) सम्मेलन में जहां तक होसके, सर्व सम्मति से ही ठहराव किये जांय। किन्तु सर्व सम्मति से न हो सकें तो, बहुमत से ठहराव कर देने का नियम मुकर्रर होना चाहिये जिससे प्रत्येक को कार्य रूप में परिणत करने के लिए बाध्य न होना पड़े। किन्तु,वह शास्त्राज्ञा के प्रतिकूल न होना चाहिए ।

(८) सम्मेलन में, उन मुनि महात्माओं के पधारने की आवश्यकता है, जो अपनी अपनी सम्प्रदाय के मुनियों से व आचार्यश्री से सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व प्राप्त कर सकते हों, कि वे जो ठहराव या नियम करके जायें, तदनुसार सम्प्रदाय व आचार्य श्री पालन करें।

(९) सम्मेलन में प्रतिनिधित्व, प्रत्येक सम्प्रदाय के मुनिराज तथा महासतियों की संख्या के प्रमाण में कायम होना चाहिये और वह संख्या, पांच प्रतिशत से अधिक न होनी चाहिये।

(१०) साधुमार्गी सम्प्रदाय में, ऐसे ऐसे साधु भी हैं, जो सम्प्रदाय से पृथक् विचरते हैं अर्थात् एकलविहारी आदि हैं। उनके सम्बन्ध में, श्री लींम्बडी सम्प्रदाय की तरफ से, पण्डित रत्न शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने जो राय दी है, वही योग्य प्रतीत होती है ।

(११) सम्मेलन के विषय में, यह स्पष्टीकरण कर देना भी अप्रासंगिक न होगा कि, साम्प्रदायिक पृथक्-२ समाचारी एवं नियमों का विचार न करते हुए, केवल धर्म तथा समाजोन्नति के कारण से, खास तौर से इस सम्मेलन में सर्व मुनि उपस्थित होकर विचार विनिमय करें, किन्तु इस प्रवृत्ति का दाखला, भविष्य के वर्ताव सम्भोग में बाधक न हो सकेगा। अलबत्ता जो निर्णय भविष्य के वास्ते सम्मेलन में होगा, तद्नुसार वर्ताव करना प्रत्येक के लिए आवश्यक है । ऐसा होने से, किसी सम्प्रदाय के मुनि महात्मा सम्मिलित होने में सङ्कोच न करेंगे।

इसी प्रश्नावली के उत्तर में पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के हितेच्छु श्रावक मण्डल ने पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की ओर से जो उत्तर भेजा वह यों है—

आपका कृपापत्र, श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य महाराज श्री जवाहिरलालजी महाराज सा की सेवा में पेश किया गया था। उस पर श्रीमान् का फरमान हुआ कि साधु सम्मेलन होना, जैसा उपयोगी और समाज सुधार का कार्य है, वैसा ही कठिन विषय और पूर्णतया विचारणीय भी है। अतः इस सम्बन्ध में सम्प्रदाय के खास श्रावकों (मण्डल के सदस्यों) की जैसी राय हो, विचार पूर्वक कॉन्फ्रेंस ऑफिस को उत्तर देना चाहिये। जिससे कि यह कार्य शांति पूर्वक हो सके और फिर किसी प्रकार की बाधाएं न उपस्थित हों। हमारे तो जिस प्रकार मण्डल इस विषय में विचार पूर्वक राय कायम करेगा उस मुआफिक प्रवृत्ति करने के भाव हैं- इत्यादि। जिस पर से मण्डल की बैठक में विचार करके, जो राय क़ायम की गई वह निम्न प्रकार है—

(१) मुनि सम्मेलन का प्रश्न साधारण नहीं किन्तु दीर्घ दृष्टि द्वारा अतिशय विचारणीय है। जिस पर पूर्णतया विचार करने के पश्चात् ही कॉन्फ्रेंस को सम्मेलन का निश्चय करना उचित है जिससे कि किया हुआ कार्य सफलता को प्राप्त हो। क्योंकि यदि सर्व महात्माओं की दृष्टि शास्त्रानुकूल, न्यायसङ्गत निष्पक्षतापूर्वक वर्तमान परिस्थिति को दृष्टि में रख कर कार्य या विचार करने की रही तब तो अवश्य समाजोन्नति और धर्मोन्नति का साधनभूत यह सम्मेलन हो सकता है। किन्तु इसके विपरीत किसी एक ही दृष्टि से (शास्त्र असम्मत) काम लिया गया तो परिणाम विद्यमान परिस्थिति से भी विपरीत आने की सम्भावना है। लाभ ज्यादा या कम प्रमाण में हो उसके लिये कोई चिन्ता नहीं। यदि प्रारंभ में लाभ कम होगा तो भविष्य में अधिक भी हो सकेगा। किन्तु विषमता प्राप्त न हो, इस विषय का पूर्णतया विचार करके सम्मेलन का प्रबन्ध करना चाहिये। साथ ही, कई एक अन्य सम्प्रदायों की अनुमति या मञ्जूरी अब तक नहीं आई है उन से मंगवा कर, तब सम्मेलन की नियुक्ति की जाय।

(२) सम्मेलन के लिए स्थल--राजपूताने में कोई स्थान जिस जगह हर प्रकार की सुविधाएं हों ऐसा या पालनपुर शहर अनुकूलता वाला मालूम होता है।

(३) सम्मेलन का समय, माघ या फाल्गुन मास ही सब प्रकार से विशेष उपयोगी है। पर यदि हो सके तो श्री लीम्बड़ी सम्प्रदाय का सूचनानुसार यह सम्मेलन सं० १९८९ में उपरोक्त मास में किया जावे तो हर तरह से विशेष उपयोगी और लाभप्रद प्रतीत होता है।

(४) सम्मेलन में बैठक गोल करने की जो राय कई सम्प्रदायों की तरफ से प्रकट हुई है वह उचित है।

(५) सम्मेलन में, बड़े छोटे आदि के विचार से बैठक गोल रक्खी जाती है तो इस में प्रतिबिम्ब करने की आवश्यकता ही नहीं है और ऐसी कई एक घटनाएं तथा उमा

सोसाइटियां गृहस्थों में भी होती हैं, तो यह तो मुनियों की सभा है। इस उपरांत भी सम्मेलन की बैठक में विद्यमान सर्व मुनियों की एक सम्मति से किसी मुनि को प्रेसिडेण्ट बनाना चाहें, तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर रहे, किन्तु प्रेसिडेण्ट बनाने का, आवश्यकीय नियम न रक्खा जाय।

(६) विषय- मुख्यतः ज्ञान दर्शन चारित्र को उन्नत बनाने वाले व समयोपयोगी समाज सुधारक होने चाहिएं। जो समय पर विद्यमान मुनि महात्माओं के विचार में आवें, उन पर मनन करके निर्णय किया जाय। अलबत्ता, सब से प्रथम भविष्य के लिए पक्खी - सम्वत्सरी की टीप बाबत का विचार होकर निर्णय होना अत्यावश्यक है।

(७) सम्मेलन में जहां तक होसके, सर्व सम्मति से ही ठहराव किये जांय। किन्तु सर्व सम्मति से न हो सकें तो, बहुमत से ठहराव कर देने का नियम मुकर्रर होना चाहिये जिससे प्रत्येक को कार्य रूप में परिणत करने के लिए बाध्य न होना पडे। किन्तु, वह शास्त्राज्ञा के प्रतिकूल न होना चाहिए।

(८) सम्मेलन में, उन मुनि महात्माओं के पधारने की आवश्यकता है, जो अपनी अपनी सम्प्रदाय के मुनियों से व आचार्यश्री से सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व प्राप्त कर सकते हों, कि वे जो ठहराव या नियम करके जायें, तदनुसार सम्प्रदाय व आचार्य श्री पालन करें।

(९) सम्मेलन में प्रतिनिधित्व, प्रत्येक सम्प्रदाय के मुनिराज तथा महासतियों की संख्या के प्रमाण में कायम होना चाहिये और वह संख्या, पांच प्रतिशत से अधिक न होनी चाहिये।

(१०) साधुमार्गी सम्प्रदाय में, ऐसे ऐसे साधु भी हैं, जो सम्प्रदाय से पृथक् विचरते हैं अर्थात् एकलविहारी आदि हैं। उनके सम्बन्ध में, श्री लीम्बडी सम्प्रदाय की तरफ से, पण्डित रत्न शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने जो राय दी है, वही योग्य प्रतीत होती है।

(११) सम्मेलन के विषय में, यह स्पष्टीकरण कर देना भी अप्रासंगिक न होगा कि, साम्प्रदायिक पृथक्-२ समाचारी एवं नियमों का विचार न करते हुए, केवल धर्म तथा समाजोन्नति के कारण से, खास तौर से इस सम्मेलन में सर्व मुनि उपस्थित होकर विचार विनिमय करें, किन्तु इस प्रवृत्ति का दाखला, भविष्य के वर्ताव सम्भोग में बाधक न हो सकेगा। अलबत्ता जो निर्णय भविष्य के वास्ते सम्मेलन में होगा, तदनुसार वर्ताव करना प्रत्येक के लिए आवश्यक है। ऐसा होने से, किसी सम्प्रदाय के मुनि महात्मा सम्मिलित होने में सङ्कोच न करेंगे।

(१२) श्रावकों की उपस्थिति की, सम्मेलन के समय आवश्यकता तो नहीं है, तथापि सम्मेलन के समय सलाहकार व सहायक तरीके, पृथक २ सम्प्रदाय के मुख्य मुख्य श्रावकों की उपस्थिति की आवश्यकता प्रतीत होती हो तो, प्रत्येक सम्प्रदाय के मुख्य मुख्य श्रावकों को सूचना करा देवें। पर इनकी संख्या एक सम्प्रदाय के पाँच से अधिक न होना चाहिये।

(१३) कान्फरेन्स आफिस का यह प्रयास सफलता को प्राप्त हो, ऐसा यह मण्डल हृदय से चाहता है। उपरोक्त राय हमारी सम्प्रदाय की तरफ से भेजी जाती है, जिस पर लक्ष्य देकर कार्य करने की विनंती है।

* * * * *

इन सम्मतियों के प्रकाशित होजाने के बाद मुनिराजों की पूरी २ जानकारी प्राप्त करने के लिए अ० भा० श्री श्वे० स्था० जैन कान्फरेन्स आफिस ने साधु डायरेक्टरी के छपे हुए फारम सब जगहों पर भेज कर शनैः २ पूरी डायरेक्टरी तय्यार करने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया। आगे चल कर यह डायरेक्टरी प्रायः पूर्ण होगई और कान्फरेन्स के रिकार्ड में मौजूद है। इसे प्राप्त करने के लिए बड़ा परिश्रम और चिरकाल तक पत्र व्यवहार करना पड़ा था। अस्तु!

इस तरह मुनिराजों की अनुमति और साधु सम्मेलन के प्रति प्रेम देख कर अर्थात् वातावरण की अनुकूलता जानकर कान्फरेन्स के रेजिडेण्ट जनरल सेक्रेटरियों ने प्रत्येक सम्प्रदाय को निम्नलिखित निमन्त्रण पत्र भेजा, और जैन प्रकाश में छपवाया। यह जैनप्रकाश से उद्धृत किया जाता है:—

निमन्त्रण-पत्र

मान्यवर महोदय!

सविनय जयजिनेन्द्र!

अपरंच कान्फरेन्स की तरफ से साधु-सम्मेलन के विषय में सभी सम्प्रदाय के मुनि महाराजों की सम्मति मांगी गई थी और सम्मति के कार्य में सुविधा के लिए एक प्रश्नावली भी निकाली गई थी। तदनुसार बहुत सी सम्प्रदायों के प्रसिद्ध २ मुनि महाराजों की सम्मतियां हमें प्राप्त हुई हैं। जिससे यह बात तो निश्चित होजाती है कि साधु सम्मेलन की आवश्यकता है। परन्तु अब साधु सम्मेलन किस जगह और किस ढंग से किया जाय तथा विचारणीय विषय क्या हो, इत्यादि बातों का निर्णय करना है। कान्फरेन्स की जनरल कमेटी की बैठक १०-११ अक्टोबर १९३१ (गुजराती भाद्रपद कृष्णा १४-३० और मारवाड़ी आसिवन कृष्णा १४-३०) को देहली में होने वाली है। उस समय सभी सम्प्रदाय के मुख्य २ श्रावकों की उपस्थिति आवश्यक है। जिससे ---- सम्मेलन से सम्बन्ध रखने वाली प्रत्येक बात का निर्णय किया जाय। इसलिए आप कृपा कर

लिखिये कि आपकी सम्प्रदाय की तरफ से कौन कौनसे व्यक्ति निमंत्रित किये जांय, जो देहली कमेटी में उपस्थित होकर साधु सम्मेलन के विषय में सम्प्रदाय की सम्मति प्रकट कर सकें। आपकी तरफ से जो नाम आवेंगे, हम उन्हें निमन्त्रण पत्र भेजेंगे। समय थोड़ा है, इसलिए आप शीघ्र ही उत्तर देने की कृपा कीजियेगा।

कदाचित उत्तर देने में देरी हो, तो भी आप अपनी सम्प्रदाय के मुख्य मुख्य व्यक्तियों को निश्चय करके देहली कमेटी में भेजियेगा। और इस पत्र को ही आप निमन्त्रण-पत्र समझें।

आपकी सम्प्रदाय के श्रावकों का आना बहुत जरूरी है। क्योंकि मुनि-सम्मेलन का कार्य बहुत महत्व का है। और वह सभी सम्प्रदायों के सहयोग के बिना नहीं हो सकता है। इसलिए आप अवश्य ही अपनी सम्प्रदाय के श्रावकों को दिल्ली कमेटी में भेजिए। और हो सके तो शीघ्र ही उन श्रावकों के नाम निश्चित करके हमें लिखिये, जिससे हम भी उन्हें निमन्त्रण-पत्र लिख सकें। योग्य धर्मकार्य लिखिये।

भवदीयः—

चतुर्विध संघ सेवक वेलजी लखमसी नपु०

मोतीलाल बालमुकन्द मूथा।

कान्फरेन्स आफिस से प्रकाशित सूचना के अनुसार साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में सलाह देने वाली समिति की बैठक ता० १०-१० ३१ को दिल्ली में चांदनी चौक स्थित श्री महावीर भवन में हुई। यह समिति स्थानकवासी समाज के सभी मनुष्यों के लिए खुली थी, यानी इसमें सभी लोग जाकर अपनी सम्मति दे सकते थे, अतः सैंकडों की तादाद में जनता एकत्रित हुई। इसके दूसरे ही दिन कान्फरेन्स की जनरल कमेटी का अधिवेशन होने वाला था, अतः भारत के मुख्य २ नगरों के प्रधान प्रधान व्यक्ति इस अवसर पर वहां पधारे थे। इसके अतिरिक्त दिल्ली संघ के भी बहुत से सज्जन इसमें सम्मिलित हुए। इस तरह एकत्रित जन समूह से सभा भवन अत्यन्त रम्य प्रतीत होता था। साधु सम्मेलन जैसी अलभ्य वस्तु का नाम सुनते ही लोग आनन्द विभोर हो जाते और बडे उत्साह तथा प्रेम से उस सभा में सम्मिलित होते थे।

निश्चित समय पर सभा की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। श्री नथमलजी चोरड़िया (नीमच) ने प्रस्ताव पेश किया कि इस सभा का सभापति पद श्री सेठ अचलसिंहजी (आगरा) स्वीकार फरमावें। इसका अनुमोदन श्री ला० गोकुलचन्दजी (दिल्ली) तथा श्री अमृतलाल रायचन्दजी जौहरी (बम्बई) ने किया। यह प्रस्ताव सर्व सम्मति से स्वीकृत हुआ और श्री सेठ अचलसिंहजी ने सभापति पद ग्रहण किया।

तत्पश्चात् कान्फरेन्स आफिस के मैनेजर श्री डाह्यालालजी मेहता ने इस सभा के सम्बन्ध में आये हुए सहानुभूति सूचक तार तथा पत्र पढ कर सुनाये। इन सन्देशों में राजा बहादुर लाला ज्वालाप्रसादजी (महेन्द्रगढ़) सेठ कुन्दनमलजी फिरोदिया (अहमदनगर) श्री मोतीलालजी

मुथा (सतारा) श्री चम्पूलाल छगनलाल शाह (अहमदाबाद) श्री मगनलाल पीपटलाल शाह (अहमदाबाद) श्री हंसराजजी लक्ष्मीचन्दजी (अमरेली) श्री दुर्लभलाल भीमचन्द शाह (लींबडी) श्री जीवराज भाई ईश्वर भाई (पालनपुर) श्री लोकमचन्द अमृतलाल (मोरवी) श्री हस्तीमलजी देवडा (औरंगाबाद) श्री जसराज शाह (वीरमगांव) श्री जीवनधनजी सरैया (भावनगर) आदि के सज्जन मुख्य थे। जालन्धर छावनी से आया हुआ श्री धनीरामजी का वह पत्र भी पढ़कर सुनाया गया, जिसमें उन्होंने गणीजी श्री उदयचन्दजी महाराज का आशीर्वाद लिख भेजा था। इसके पश्चात् आफिस के द्वारा इस सम्बन्ध में किये गये प्रयत्नों का वर्णन किया गया एवं सम्मेलन के सम्बन्ध में भिन्न भिन्न सम्प्रदायों ने अपनी अपनी जो सम्मतियां भेजी थीं वे भी पढ़ कर सुनाई गई।

अन्त में इस सभा ने साधु सम्मेलन करने का प्रस्ताव पास किया और इसके लिए कान्फरेन्स की जनरल कमेटी को अपनी सम्मति लिख भेजी। सभापतिजी तथा उपस्थित महानुभावों का आभार मानकर उस दिन की सभा समाप्त हुई।

दूसरे दिन यानी ता० ११ १० ३१ को उसी विशाल महावीर भवन में कान्फरेन्स की जनरल कमेटी की बैठक हुई। इसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे:—

१—श्री लाला गोकुलचन्दजी सा० नाहर दिल्ली
२—श्री सेठ चन्दनमलजी मुथा सतारा।
३— „ लाला नत्थूमलजी सा० अमृतसर
४— „ श्री सेठ वर्धमानजी सा पीतलिया रतलाम
५—श्री सेठ अमरचन्दजी चांदमलजी की तरफ से श्री सेठ वर्धमानजी सा० रतलाम
६—श्री सेठ सुगनीलालजी सा० संकलेचा जयपुर
७— „ सेठ भैरूदानजी जेठमलजी सा० सेठिया बीकानेर
८— , सेठ ताराचन्दजी सा० गेलड़ा मद्रास
९—श्री सेठ हंसराजजी दीपचन्दजी सा० मद्रास
१०—श्री सेठ दुर्लभजी त्रिभुवनदासजी जौहरी जयपुर।
११—श्री जौहरी मैंरूलालजी सा० (सेठ छोटेलाल जी मीमसेन वाले) दिल्ली।
१२—श्रीमती सौभाग्यवती केसरकुंवर बाई अमृत लाल जौहरी बम्बई।
१३— „ आनन्दकुंवर बाई धर्मपत्नि श्री सेठ वर्धमानजी सा० पीतलिया रतलाम
१४— प्रताप कुंवरबाई धर्मपत्नि श्री सेठ नथमलजी सा पीतलिया रतलाम
१५—श्री ला अचलसिंहजी सा० आगरा
१६— सेठ चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट
१७—श्री सेठ आनन्दराजजी सा० सुराणा जोधपुर
१८—श्री ला० छोटेलालजी सा० दिल्ली
१९—श्री ला कुन्दनलालजी सा० (श्री माधसिंग मोतीरामजी वाले दिल्ली)।
२०—श्री अमृतलाल श्री रायचन्दजी जौहरी बम्बई।

उपरोक्त सदस्यों के अतिरिक्त अन्य अनेक शहरों के प्रतिष्ठित स्वधर्मी बन्धु उस समय उपस्थित थे और खास कर अमृतसर, मंडियालागुरु सियालकोट आदि स्थानों के पंजाबी बन्धु पर्याप्त संख्या में पधारे थे। गत दिवस की सभा के लगभग सभी सदस्य इस समय उपस्थित थे। सभा का कार्य प्रारम्भ होने से पूर्व श्री लाला गोकुलचन्दजी नाहर ने सभापति का स्थान ग्रहण किया। तदुपरान्त कान्फरेन्स आफिस के मैनेजर श्री आत्माभाई ने जनरल कमेटी के सम्बन्ध में

आये हुए बाहर के पत्र तथा तार पढ़कर सुनाये इसके बाद पिछले दिन साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में जो सलाहकार कमेटी की बैठक हुई थी, उसकी सिफारिशें जनरल कमेटी के सामने पेश की गई। इन सिफारिशों पर विचार तथा वाद विवाद होकर निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुआः—

प्रस्ताव १—श्री मुनि सम्मेलन के सम्बन्ध में सलाह देने के लिए, जनरल कमेटी के मेम्बरों के अतिरिक्त सभी सम्प्रदायों के सज्जनों को आमन्त्रण दिये गये थे। उस पर से पधारे हुए सब सज्जनों की सलाह कमेटी ने कल ता० १०-१०-३१ को मिल कर विचार कर अपने अभिप्राय लिखित दिये, वह इस कमेटी में सुनाये गये। उस पर विद्यमान सदस्य व दर्शकों के समक्ष विचार विनिमय होकर इस सम्बन्ध में यह कमेटी निम्नलिखित ठहराव करती है:—

(१) मुनि सम्मेलन सम्बन्धी भविष्य की व्यवस्था करने के लिए निम्नोक्त सदस्यों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है, जो व्यवस्था, स्थान, समय आदि का निर्णय कर सब प्रबन्ध करें।

१—श्री सेठ अचलसिंहजी सा० आगरा।
२— ,, ला० गोकलचन्दजी सा० नाहर दिल्ली
३— ,, ,, उमरावसिंहजी सा० दिल्ली
४— ,, सेठ वेलजी लखमसी नपु. B.A LL.B बंबई।
५— ,, ,, अमृतलाल रायचन्दजी जौहरी बंबई
६— ,, ,, अमरचन्दजी वरदभाणजी रतलाम
७— ,, ,, नथमलजी चोरड़िया नीमच
८— ,, ,, धूलचन्दजी भण्डारी रतलाम
९— ,, ,, दुर्लभजी त्रिभुवनदासजी जौहरी जयपुर।
१०— ,, ,, सोभागमलजी मेहता जावरा।
११— ,, ,, बहादुरमलजी बांठिया भीनासर
१२— ,, ,, चुन्नीलाल नागजी वोरा राजकोट
१३— ,, ,, चन्दूलाल छगनलाल शाह अहमदाबाद।
१४— ,, ,, पूनमचन्दजी खींवसरा नयानगर
१५— ,, ,, मोतीलालजी मूथा सतारा।
१६— ,, ला० टेकचन्दजी सा० जंडियाला।
१७— ,, ,, रतनचन्दजी सा० अमृतसर
१८— ,, सेठ आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर।
१९— ,, ,, रतनलालजी मेहता उदयपुर।
२०— ,, ,, किशनदासजी सा० मूथा अहमदनगर
२१— ,, ,, अमरचन्दजी पुंगलिया बीकानेर वाले B. A. LL B. हाल दिल्ली
२२— ,, ,, भवरलालजी मूसल जयपुर
२३— ,, ,, केसरीचन्दजी चोरडिया जयपुर।
२४— ,, ,, छोटेलालजी पोखरणा इन्दौर
२५— ,, ,, प० कृष्णचन्द्रजी अधिष्ठाता, श्री जैन गुरुकुल पचकूला।
२६— , ला० गूजरमलजी प्यारेलालजी लुधियाना
२७— ,, ,, त्रिभुवननाथजी कपूरथला
२८— ,, ,, मस्तरामजी एम० ए० अमृतसर।
२९— ,, ,, सुलतानसिंह जी बड़ौत (मेरठ)
३०— ,, ,, मथुशाह वल्द रूपेशाह सियालकोट
३१— ,, सेठ लछीरामजी सांड जोधपुर।

—o—

इस कमेटी के सेक्रेटरी श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास झवेरी नियुक्त किये जाते हैं। इन के पास, काम करने के लिए, आवश्यकता होने पर, ऑफिस की तरफ से एक क्लर्क भेजा जावे। पत्र व्यवहार और सफर खर्च आदि के लिये रु० ५००) पांचसौ की मजूरी दी जाती है।

(२) इस कमेटी के सदस्यों में से, यदि कोई सज्जन स्वीकार न करें, तो उनके स्थान पर अन्य योग्य सज्जन को नियुक्त करने और आवश्यकतानुसार सदस्य बढ़ाने का अधिकार इसी कमेटी को दिया जाता है। किन्तु सेक्रेटरी नियमानुसार सदस्यों से सम्मति ले लें। (यानि पत्र द्वारा सम्मति मगावें)

(३) इस कमेटी का कोरम ७ का मुकर्रर किया जाता है।

(४) सम्मेलन के सम्बन्ध में, निम्न लिखित नियम निश्चित किये जाते हैं—

(क) सम्मेलन का समय निश्चित हो उन दिनों जिन श्रावकों की सलाह की आवश्यकता होगी, उन्हें उक्त कमेटी की ओर से खास तौर पर निमन्त्रण भेज दिया जावेगा। उनके अतिरिक्त कोई सज्जन दर्शनार्थ या सलाह देने के लिये पधारने का कष्ट न करें। कारण, कि इस में सम्मेलन के कार्य में बाधा उत्पन्न होती है।

(ख) दर्शनार्थ पधारने वालों के लिये प्रथम सम्मेलन का कार्य समाप्त हो जाने के बाद का *समय प्रकाश द्वारा प्रकट कर दिया जावेगा। उस समय जिनकी इच्छा हो वे दर्शनों* का लाभ ले सकेंगे।

(ग) जहां सम्मेलन हो वहां दर्शनार्थ पधारने वाले श्रावकों के लिये केवल उतारे का प्रबन्ध स्थानीय सङ्घ के जिम्मे रहेगा।

(घ) सम्मेलन का समय सं० १९८९ का माघ या फाल्गुन मास नियत किया जावे तथा सम्मेलन का *समय एवं स्थान इसी वर्ष के फाल्गुन मास तक प्रकट कर दिया जाय।* ताकि सम्मेलन होने से पूर्व ही प्रत्येक सम्प्रदाय अपनी सम्प्रदाय या अपने प्रान्त का सङ्गठन करके सम्मेलन में अपनी सम्प्रदाय की तरफ से भेजे जाने वाले प्रतिनिधियों का चुनाव कर लें।

(ङ) सम्मेलन अजमेर जयपुर ब्यावर पालनपुर और दिल्ली इन पांच स्थानों में से अनुकूल स्थान देख कर तथा वहां के श्रीसङ्घ की अनुमति से किया जाय।

नोट :— अजमेर के स्थानीय सङ्घ, मुनि सम्मेलन अजमेर, में करने का निमन्त्रण देने के लिये डेपुटेशन के रूप में उपस्थित हुए हैं इस बात पर कमेटी ध्यान दे।

(च) *सम्मेलन में निम्न लिखित विषयों पर विचार होना आवश्यक* है—

(A) सं० १९९१ से आगे के लिये पक्की संवत्सरी की नई टीप तय्यार करने के सम्बन्ध में—

(B) दीक्षा सम्बन्धी नियमों के विषय में—

(C) मुनियों की शिक्षा के विषय में—

(D) व्याख्यानदाताओं की योग्यता के विषय में--
(E) ग्रन्थ (साहित्य) प्रकाशन के विषय में--
(F) साधु-समाचारी के विषय में--

(ज) सम्मेलन की बैठक गोल और जमीन पर रहे।

(झ) प्रेसिडेण्ट की आवश्यकता नहीं है। तथापि, यदि सम्मेलन में उपस्थित होने वाले प्रतिनिधि-मुनिगण, सभापति बनाना आवश्यक समझें, तो वे विद्यमान प्रतिनिधियों में से सभापति का चुनाव कर सकते हैं।

(ट) मुनियों का, प्रतिनिधि के तौर पर प्रत्येक सम्प्रदाय के साधु तथा साध्वी की संख्या के अनुपात से इस तरह चुनाव होना चाहिये--
एक से दस तक की संख्या वाले एक प्रतिनिधि.
ग्यारह से पैंतीस तक की संख्या वाले दो प्रतिनिधि.
छत्तीस से साठ तक की संख्या वाले तीन प्रतिनिधि.
इकसठ से एकसौ तक की सख्या वाले चार प्रतिनिधि.
और इस से अधिक संख्या वाले केवल पांच प्रतिनिधि

नोट:-- यदि किसी सम्प्रदाय के अधीन प्रवर्तने वाले साधु या साध्वी हों, तो उनकी गणना उसी सम्प्रदाय में की जाय ।

(ठ) सम्प्रदाय से पृथक विचरने वाले तथा अकेले विचरने वाले साधु अपनी २ सम्प्रदाय में मिल जावें या अन्य सम्प्रदाय में मिल जावें। यदि ऐसा न हो सके, तो निम्नानुसार प्रान्तों में विचरने वाले मिल कर, अपने प्रान्त में एक अलग सम्प्रदाय बना लें। ऐसी सम्प्रदायों से, केवल एक एक ही प्रतिनिधि भेज सकते हैं। गुजरात, काठियावाड़, कच्छ आदि में से एक, मालवा, मेवाड़, मारवाड़ आदि में से एक, पञ्जाब यू० पी० आदि में से एक, दक्षिण, खानदेश, बरार आदि में से भी सिर्फ एक ही। इस तरह, कुल चार प्रतिनिधि सम्मिलित हो सकेंगे। किन्तु, प्रतिनिधियों के सम्बंध की मंजूरी उन्हें लेखी भेजनी होगी।

(५) किसी आवश्यक-विषय में परिवर्तन करने का अधिकार, उक्त कमेटी को रहेगा।

यह प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ और फिर अन्य अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास हुए, जिनमें से एक इस वर्ष कान्फ्रेन्स का अधिवेशन करने का भी था।

इस तरह दो दिन तक दिल्ली में जनरल-कमेटी की बैठक होती रही। अस्तु।

जनरल-कमेटी ने, साधु सम्मेलन समिति के मन्त्री पद का भार, श्री० दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी पर रक्खा था, अतः जनरल-कमेटी की बैठक के बाद वे जयपुर आये और वहां से ता० १-११-३१ से, साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में, लोगों से पत्र व्यवहार करने लगे। प्रत्येक सम्प्रदाय के मुख्य मुख्य श्रावकों तथा उन्हीं के द्वारा आचार्यों एवं मुनिराजों से पत्र व्यवहार शुरू होगया।

इधर, जैनप्रकाश में अमरत कमेटी का निवेदन प्रकाशित हुआ और इधर मन्त्रीजी का पत्र व्यवहार प्रारम्भ हुआ। परिणामतः, एक बार सारा ही समाज चिरनिद्रा से चौंक पड़ा। प्रत्येक सम्प्रदाय अपना अपना संगठन करने में संलग्न होगई और जगह जगह साम्प्रदायिक या प्रान्तिक सम्मेलनों की तैयारियां होने लगीं। किन्तु जो लोग वास्तव में साधु न थे, जिन्हें भगवान् महावीर के शासन और धर्मोन्नति की परवाह न थी और केवल उदर पोषण के लिये साधु का वेश पहने घूमते थे उन्हें यह बहुत पहल बहुत ही बुरी मालूम हुई। कारण वे जानते थे कि साधु समाज का सगठन हो जाने तथा संघ द्वारा इस विषय का कोई निश्चित निर्णय हो जाने पर हम जैसे स्वेच्छाचारियों को कोई न पूछेगा। अपने स्वार्थ में, इस तरह बाधा आती देखकर उन्होंने सम्मेलन की प्रवृत्ति का जोरों से विरोध किया। ऐसे ही स्वेच्छाचारी एकल विहारियों में से कुछ लोगों ने मन्त्री जी को भिन्न भिन्न प्रकार की धमकियां दीं, जिन में से एक प्राण ले लेने की भी थी। किन्तु इन सब धमकियों की किंचित् भी परवाह किये बिना, मन्त्रीजी अपना कार्य करते रहे और प्रान्तीय सम्मेलनों की तैयारियां करवाते रहे।

यों तो सभी प्रान्त और सम्प्रदायें अपना अपना संगठन करके सम्मेलन की तैयारियां कर रही थीं किन्तु इन सब से पहले काठियावाड़ प्रान्तीय साधु सम्मेलन होना तय होगया। फलतः श्री० दुर्लभजी भाई काठियावाड़ पधारे और राजकोट के श्रीसंघ से सलाह करके राजकोट में यह सम्मेलन करना तय किया। राजकोट के श्रीसंघ ने इसे अपना अहोभाग्य माना। इन्हीं दिनों जैन प्रकाश में श्री० दुर्लभजी भाई की निम्न सूचना गुजराती में प्रकाशित हुई जिसका हिन्दी अनुवाद यों है:—

कच्छ, काठियावाड़ और गुजरात का प्रान्तिक साधु सम्मेलन

सभी सम्प्रदायों का साधु सम्मेलन हो उस समय उसमें रचनात्मक भाग लेना सम्भव तथा सरल हो जाय इस पवित्र उद्देश्य से प्रान्तिक साधु सम्मेलनों की अनिवार्य आवश्यकता है। सभी सम्प्रदायें अपने अपने गच्छ के मुनिराजों से मिलकर पहले अपना और फिर प्रान्तों का संगठन करके, तब बृहद् साधु सम्मेलन में सम्मिलित हों यही उचित तथा आवश्यक है।

इसी बात को दृष्टि में रखकर कच्छ काठियावाड़ तथा गुजरात के मुनिराजों का प्रान्तिक सम्मेलन करने के लिये राजकोट को उपयुक्त स्थान समझा गया है। राजकोट के श्रीसंघ ने सहयोग तथा सहानुभूति पूर्वक सहर्ष सेवा करने का अपना उत्साह प्रदर्शित किया है। जितने मुनिराजों के दर्शन का सौभाग्य मुझे प्राप्त हुआ है उन सभी ने राजकोट को इसके लिये सर्वोत्तम स्थान स्वीकार किया है। शेष मुनिराजों के दर्शन करके, उनकी सम्मति लेने के बाद प्रान्तीय सम्मेलन की तिथियां भविष्य में प्रकाशित की जायेंगी।

अन्य प्रान्तों के मुनिराजों के प्रान्तिक सम्मेलन करवाने के लिये मैं उन उन प्रान्तों के निवासी साधु सम्मेलन समिति के सभ्यों से प्रार्थना कर रहा हूँ। और मेरा यह दृढ़ विश्वास है,

कि प्रान्तों में, उनके द्वारा किया हुआ प्रयत्न निश्चय ही सफल होगा। मै, इस तरह होनेवाले प्रान्तिक सम्मेलनों की विजय की इच्छा करता हूँ।

दुर्लभजी जौहरी,
मंत्री श्री साधु सम्मेलन समिति

उधर राजकोट में प्रांतीय सम्मेलन होने की तैयारियां हो रही थीं और इधर पाली, होशियारपुर आदि में सम्मेलनों का बीजारोपण हो रहा था। इस प्रवृत्ति के कारण, सारे समाज के वातावरण में एक विचित्रता उत्पन्न होगई थी। जगह जगह साधु सम्मेलन की ही चर्चा थी और विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में, सभी श्रेणी के मनुष्योंके लेख आने लगे थे। इसी तरहके लेखों में, भावनगर से प्रकाशित होने वाले "जैन" के सम्पादक महोदय की एक टिप्पणी यहां उद्धृत की जाती है। इसे देखने से विदित होगा, कि जनता के विशेष प्रतिनिधि तथा सामयिक स्थिति से पूरी तरह भिज्ञ जैन-सम्पादक तक सम्मेलन की हृदय से सफलता चाहते थे, फिर जन साधारण की तो बात ही क्या है? आपकी टिप्पणी का भाषान्तर यों है—

"सम्मेलन या परिषद्, यह पाश्चात्य पद्धति का अनुकरण है, ऐसा यदि कोई कहे या माने, तो वह सत्य नहीं है। शास्त्रीय प्रवचनों के उद्धार तथा संरक्षण के लिये पहले ऐसे सम्मेलन हुए थे और उन सम्मेलनों में प्रभावशाली मुनियों ने भाग लिया था, ऐसे प्रमाणभूत ऐतिहासिक आधार, हम लोगों के यहां अब भी उपलब्ध हैं। मध्यकालीनयुग मेंयह प्रवृत्ति किंवा परम्परा, अराजकता, अंधाधुन्धी या किसी ऐसे ही कारण से लुप्त होगई हो, यह सम्भव है। आज, थोड़ासा प्रयत्न करके ऐसे सम्मेलन किये जा सकते हैं। ऐसी अनुकूल परिस्थिति में, हमारे पूज्य मुनिवर, एक जगह एकत्रित हों और संघ की वर्तमान व्यवस्था तथा उसके सुधार के सम्बन्ध में कुछ मार्गनिर्देश करें, तो शासन तथा संघ को नई शक्ति प्राप्त हो, यह बात एक या दूसरी तरह अनेक बार कही जा चुकी है। यह सब होते हुए भी, अब तक यह विचार परिपक्व नहीं हुआ है। सब से अधिक आश्चर्य इस बात का है, कि ऐसे सम्मेलनों की आवश्यकता तो सभी स्वीकार करते हैं, किन्तु छोटे छोटे मतभेद और प्रतिष्ठा के भूत बड़ी भारी अन्तराय की तरह सामने आकर और मार्ग रोककर खड़े हो जाते हैं। जिस समय, जैन समाज की ऐसी शोचनीय स्थिति है, उस अवसर पर, स्थानकवासी जैन साधु इस प्रयत्न में सफलता प्राप्त करके यशस्वी होंगे। इतना ही नहीं, बल्कि वातावरण से ऐसा आभास मिलता है, कि दूसरे फिरकों के मुनियों के लिये वे मार्ग दर्शक भी बनेंगे। हम, ऐसे सम्मेलन को अत्यन्त आवश्यक और महत्वपूर्ण समझते हैं। और यह भी निश्चित ही है, कि एक बार प्रारम्भ होजाने पर, उनका महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ेगा ही। हम, इस सम्मेलन की योजना को लाभदायक मानते हैं और उसकी पद्धति तथा निर्णय में से, हमारी सम्प्रदाय को भी पर्याप्त प्रकाश मिलेगा, ऐसी आशा करते हैं।"

काठियावाड़ प्रांतीय साधु सम्मेलन के लिये दौरा करते हुए, सम्मेलन के मंत्री श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदास जौहरी ने ता० २०-१२-३१ के जैन-प्रकाश में, यह बतलाते हुए, कि कौन कौन सी सम्प्रदाय के साधु किस तरफ विहार कर रहे हैं और कहां २ सम्मेलन के लिये क्या क्या हो रहा है, एक टिप्पणी लिखी थी। उस में आप ने लिखा था, कि—

"सभी सम्प्रदायें पहले अपने २ सगठन की तैयारी कर रही हैं। जिससे कि प्रांतीय सम्मेलनों का कार्य सम्भव तथा सरल हो जाय। .... काठियावाड़ कच्छ और गुजरात के सभी सघाड़े पहले इसी तरह अपना सगठन कर लेने की बात सोच रहे हैं। जहां मतभेद के कारण अभी फुस्ती ही हो, वहां के समयसूचक श्रावकों को, अपने सघाड़े के गौरव की रक्षा करने के लिये, साधुओं के साथ रह कर मतभेदों का निर्णय कर डालना चाहिये। ध्यान रहे कि— *जो लोग इस समय न जागेंगे यानी स्व धर्म रक्षण के लिए कमर न कसेंगे, वे सदा के लिए सोते ही रहेंगे। इतना ही नहीं, बल्कि पीछे से वे बहुत पछतावेंगे भी।* मैंने अपने प्रवास में यह सत्य सभी साधुओं एवम् श्रावकों को, नम्रता पूर्वक समझाने का प्रयत्न किया है। ......"

मन्त्रीजी की इस सद्भावना तथा सतत प्रयत्न का परिणाम यह हुआ, कि भारत के एक सिरे से दूसरे सिरे तक सभी साधु महात्मा चिन्ताशील हो उठे और उन्हें अहर्निशि सम्मेलन की सफलता का ही ध्यान रहने लगा। उस समय की स्थिति और लोकमत का निम्न उद्धृत पत्र से भली भांति ज्ञान हो सकता है।

पत्र १ का भाषान्तर—

बोटाद—सम्प्रदाय के पूज्य मुनि महाराज श्री माणकचन्दजी स्वामी से साधु सम्मेलन के सम्बन्ध में पूछने पर उन्होंने अपने निम्न विचार प्रकट किये हैं—

साधु सम्मेलन सम्बन्धी आपका कार्य स्तुत्य है। हम भी उस की आवश्यकता स्वीकार करते हैं। और यदि आपके कथनानुसार सुधार हो जाय तो निश्चय ही यह कार्य सफलता पूर्वक पूरा होगा। फिर जैसा मैं समझता हूं *कार्य को विशेष सफल बनाने के लिए, पहले जो भी सम्प्रदायें व्यक्तिगत रूप से विभक्त हो गई हैं उन्हें एकत्रित करने का प्रयास करना चाहिये। और यदि प्रत्येक सम्प्रदाय एकत्रित हो जाय तो फिर प्रान्तवार छोटा सम्मेलन करना चाहिये।* .... इसके लिए योग्य कार्य कर्ताओं की आवश्यकता है जिन्हें कान्फ्रेंस की तरफ से नियुक्त कर के ऐसे प्रत्येक स्थान पर जहां मतभेद हो वहां के श्रावकों की सलाह से वह मत भेद खतम करवा देना चाहिये और उन्हें एकत्रित करने का प्रयत्न करना चाहिये। .... *हमें सम्मेलन की खास तौर पर आवश्यकता जान पड़ती है और, इस संबंध में हम अपनी यथाशक्ति सेवाएं भी देंगे।* सवत्सरी एक कर देने के लिये हमारी सम्मति है।

(प्रेषक—लालचंद जगनाथ नागनेश)

इस तरह चारों तरफ से 'सङ्गठन सङ्गठन' की ध्वनि सुनाई देने लगी। दक्षिण में ऋषि सम्प्रदाय का सगठन करने और आचार्य नियुक्त करने के लिये श्री सेठ किशनदासजी मूथा (अहमदनगर) तथा श्री सेठ मोतीलालजी मूथा (सतारा) सतत प्रयत्नशील रहने लगे। अस्तु।

दिल्ली में होने वाली कान्फ्रेंस की जनरल कमेटी ने यह निर्णय किया था, कि यदि एक मास के भीतर ब्यावर या किसी अन्य श्रीसङ्घ का आमन्त्रण न मिले, तो आगामी ईस्टर की छुट्टियों के लगभग, दिल्ली में, कांफ्रेन्स के ही खर्चे से कान्फ्रेंस का अधिवेशन किया जाय। किन्तु भद्र - अवज्ञा आन्दोलन के कारण, सारे देश का वातावरण बदल रहा था। ऐसी परिस्थिति में कान्फ्रेंस का अधिवेशन करना उचित न जान कर, कान्फ्रेंस के प्रधान मन्त्रियों की सम्मति से रेजिडेण्ट जनरल सेक्रेटरियों ने यह घोषित कर दिया, कि अनिश्चित काल तक के लिये कान्फ्रेंस का अधिवेशन स्थगित किया जाता है। अस्तु।

उधर, काठियावाड़, कच्छ और गुजरात प्रदेश में भ्रमण करते हुए, सम्मेलन के मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई जौहरी, लगभग सभी प्रधान २ मुनि महात्माओं से, सम्मेलन के संबन्ध में विचार विनिमय कर चुके थे और सब की राजकोट में सम्मेलन करने की अनुमति प्राप्त कर चुके थे। इस के बाद प्रान्तीय - सम्मेलन के लिये. जो हृदयस्पर्शी - निमन्त्रण पत्र प्रकाशित हुआ उसका हिन्दी अनुवाद नीचे दिया जाता है-

॥ ॐ अर्हं ॥

श्री श्वेताम्बर-स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस.

All India S. S. Jain Conference

श्री साधु सम्मेलन समिति.

श्री प्रांतिक साधु सम्मेलन—राजकोट.

दुल्लहो मानुस्सो भवो, जइणत्तं पुण दुल्लहं।
दुल्लह मुणित्तं तत्थ, सम्मेलनं खलु दुल्लहं ॥

पुण्य-प्रभावक, शासनप्रिय, दृढ़धर्मी, प्रियधर्मी, स्वधर्मनिष्ठ, श्रमणोपासक, सुश्राव कजी की सेवा में—

मुकाम ·· ....

कान्फ्रेन्स की प्रेरणा — यह बात तो आपको सुविदित ही है, कि हमारी, श्रीमती श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेन्स ने, दिल्ली में, प्रभावशाली स्वधर्मी व्यक्तियों की एक कमेटी एकत्रित करके यह निर्णय किया है, कि सं० १९८९ के फाल्गुण मास में, समस्त साधुवर्ग का एक 'अखिल भारतवर्षीय साधु सम्मेलन' किया जाय। कच्छ, काठियावाड़ और गुजरात की सभी सम्प्रदाएँ, इस शुभ प्रयत्न के प्रति, अपनी शाब्दिक सहानुभूति प्रकट कर चुकी हैं। किन्तु, उस में रचनात्मक भाग लेना सम्भव तथा सरल हो जाय, इसलिये महासम्मेलन में सम्मिलित होने से पूर्व आपस में सलाह कर सकें, इस पुनीत आशय से, राजकोट स्थान पर, मिती माघ कृष्णा ८ ता० १-३-१९३२ मंगलवार से, प्रान्तिक साधु सम्मेलन करना निश्चित हुआ है। और राजकोट के श्रीसंघ ने, उत्साह पूर्वक यह सेवा स्वीकार की है।

आपके यहां और आपके नज़दीक गांवों में विराजमान श्री जिन शासन शृंगार, परम प्रभावक, तरण तारण, आत्मार्थी मुनि महाराजों को, सविधि, सविनय वन्दना कर, और सुखसाता पूछकर यह निमन्त्रण पत्र पढ़वा दीजियेगा। और राजकोट की तरफ विहार करने की प्रार्थना कीजियेगा। इन आदरणीय महात्माओं के पधारने से, श्रीसंघ को अपूर्व आनन्द होगा और सम्मेलन का उद्देश्य भी सफल होगा।

कार्य—कान्फ्रेन्स की दिल्ली कमेटी के निर्णयानुसार निम्नांकित विषयों पर विचार किया जावेगा। यद्यपि, इनका अन्तिम निर्णय तो महासम्मेलन में ही होगा; किन्तु एक ही ध्येय की सिद्धि के लिये परिश्रम करने वाले समूह की व्यवस्था प्रबन्ध तथा चारित्र्य शुद्धि के लिये देशकालानुसार आकर्षक होसके ऐसी संयम संरक्षण की योजना, विचार पूर्वक तैयार करना अत्यन्त आवश्यक है।

—●—

विचारणीय विषय

१—सर्वमान्य पक्खी संवत्सरी की टीप	२—दीक्षा सम्बन्धी नियम
३—मुनियों के लिए शिक्षण प्रबन्ध	४—व्याख्यानदाताओं की योग्यता
५—साहित्य प्रकाशन	६—साधु समाचारी

इसके अतिरिक्त कच्छ काठियावाड़ और गुजरात के मुनिराजों का संगठन तथा महा सम्मेलन विशेष सफल हो इसके लिए खास विषयों पर विचार होगा।

निःशंक-स्थिति—इस मांगलिक परिषद् में किसी भी मुनिश्री अथवा संघाड़े के सम्बन्ध में व्यक्तिगत चर्चा नहीं की जा सकती। बल्कि व्यक्ति तथा समष्टि की एकता के साधक, सामुदायिक और शक्य सुधारों की ही चर्चा होगी। इसलिए आशा निराशा के हिंडोले पर झूलते हुए तथा निश्चेतन बने हुए समाज को प्रोत्साहन देकर चैतन्य के चमत्कार बतलाने के लिए, राजकोट की तरफ पधारने के लिए मुनिराजों से आग्रह कीजियेगा।

कान्फरेन्स की जनरल कमेटी के निर्णयानुसार सम्मेलन की बैठक जमीन पर और गोल रहेगी।

शान्ति के जप जपकर ही बैठ रहने के बदले "वाणी के अनुसार व्यवहार" के इस जमाने में सब मुनिराज सहाय सलाह और ज्ञानबल से मार्ग दर्शन करवाने पूर्ण उत्साह तथा निःशंक भाव से पधार कर शासन को आलोकित करें यही हमारी भावना है।

राजकोट की अनुकूलताएं—राजकोट में स्था॰ जैनियों के एक हजार से अधिक घर हैं। और सब मुनि महात्माओं को अपनी अपनी समाचारी के अनुसार इकट्ठे या अलग अलग रहने की सुविधा प्राप्त होसकती है। इसलिए बिना संकोच किए राजकोट पधार कर महापुण्योदय

के प्रताप से प्राप्त हुए इस अमूल्य अवसर से लाभ उठा, जैन धर्म की ज्योति जगाने की इच्छा से पधारते हुए मुनिराजों का शुभ सवाद हमें शीघ्र लिख भेजने की कृपा कीजियेगा ।

कराल काल हुकार कर रहा है। ऐसे समय में, हमारे मुनिराज सकुचितता को ताक पर रखकर विरोधों को वोसरा कर शीघ्र से शीघ्र तरने तथा तारने के लिए तारनहार बनें, यही भावना है ।

श्रावक वर्ग से प्रार्थना-सम्मेलन के अवसर पर दर्शन सम्बन्धी आकर्षण स्वाभाविक है। किन्तु यह दौड़ धूप इस कार्य में अन्तरायरूप हो सकती है, अतः आमन्त्रित प्रमुख २ सलाहकारों के अतिरिक्त, अन्य सभी भावुक भाई तथा बहनें, देश काल का विचार करके अपने स्थान पर से ही विशुद्ध भावना रख कर इस कार्य की सफलता चाहें ऐसी नम्र प्रार्थना है।

पहले से समाचार—आपके यहां से मुनिराजों का सम्मेलन में पधारने की इच्छा से विहार करने और राजकोट पहुंचने का समय "श्री राजकोट स्था० जैन सघ के सेक्रेटरी" को सूचित करने की कृपा कीजियेगा ताकि राजकोट श्री सघ मुनिवरों का स्वागत करने का सौभाग्य प्राप्त कर सके।

हमारी यह आन्तरिक इच्छा है, कि सभी सम्प्रदायों के सभी मुनिराज सम्मेलन में उपस्थित हों, किन्तु यदि कोई मुनिवर किसी अनिवार्य कारण से न पधार सकें, तो सम्मेलन के प्रति सहानुभूति और सहयोग के सन्देश भेज कर, हमारा उत्साह अवश्य बढावें। यही नम्र प्रार्थना है। किं बहुना ?

श्री जयपुर बसत पचमी
वीर सं० २४५८
विक्रम स० १९८८

श्री सघ सेवक दर्शनातुर—
दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी
मन्त्री

—o—

उपरोक्त निमन्त्रण पत्रिका के साथ साथ विशेष २ व्यक्तियों के लिए एक खास आमन्त्रण-पत्रिका भी भेजी गई थी, जिसका भाषान्तर यों है:—

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फ्रेन्स

श्री साधु सम्मेलन समिति

श्री प्रान्तिक साधु सम्मेलन राजकोट

(खास आमन्त्रण)

श्रीमान् प्रिय स्वधर्मी बन्धु श्री !

इसके साथ भेजे हुए निमन्त्रण-पत्र में वर्णित अपूर्व अवसर पर आपकी अनुभव पूर्ण सलाह उपयोगी और मार्गदर्शक होगी। इसलिये समय निकाल कर अवश्य पधारने की कृपा कीजियेगा ।

दर्द की अपेक्षा उसकी चिकित्सा अधिक जोखिमवाली होती है इसका ध्यान रखकर आपके लिए कथित "अम्मा पिया" पद को सार्थक करने राजकोट पहुंचने का समय सूचित करने की कृपा अवश्य करें ।

इसके साथ जो अधिक निमन्त्रण पत्र भेजे जा रहे हैं वे आपके सघाड़ के मुनिराज जहां जहां विराजमान हो वहां वहां भेज दीजियेगा। यही प्रार्थना है।

श्री जयपुर बसन्त पंचमी
वि० सं० १९८८
वीर सं० २४५८

श्री संघ सेवक दर्शनातुर—
दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी
मन्त्री

उपरोक्त निमन्त्रण पत्रों के प्रकाशित हो जाने के बाद साधु सम्मेलन के मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई जौहरी मारवाड़ पधारे और वहां भी प्रधान २ मुनि महात्माओं से मिलकर पाली (मारवाड़) में मारवाड़ प्रान्तीय साधु सम्मेलन करना तय किया। इस निर्णय के पश्चात् राजकोट सम्मेलन की ही भांति पाली सम्मेलन के लिए भी निम्न प्रकार के दो आमन्त्रण पत्र प्रकाशित हुए—

श्री साधु-सम्मेलन समिति

श्री मारवाड़ साधु सम्मेलन पाली

दुल्लहो मानुस्सो भवो, जइणत्त पुण दुल्लह ।
दुल्लह मुणित्त तत्थ, सम्मेलन खलु दुल्लहं ॥

पुण्य प्रभावक, शासनप्रिय, दृढधर्मी, स्वधर्मनिष्ठ, श्रमणोपासक, सुश्रावकजी की सेवा में सादर जयजिनेन्द्र ! आगे नम्र निवेदन है कि जैन शासन के चतुर्विध सघ में, साधु सघ का पद बड़े ही महत्व का है । शासन का मूल स्तम्भ साधु सघ ही है । सांसारिक सुखों को लात मार कर, विषय कषायों को जीत कर, राग, द्वेषादि मल से आत्मा को शुद्ध बना कर, निजात्मा का कल्याण करते हुए ससार के भूले भटके प्राणियों को धर्मामृत पान कराना, वीर शासन की धर्म ध्वजा को ससार में फहराना, अहिंसा धर्म का सिंहनाद करना और मुक्ति मार्ग को प्रकाश में लाना, इन सब श्रेष्ठ कार्यों का श्रेय साधु संघ को ही है । यदि वास्तव में देखा जाय, तो इस पंचम काल में गृहस्थ का कल्याण साधु सघ के द्वारा ही है ।

इस धर्म प्राण भारतवर्ष में यह नियम सदैव से चला आ रहा है कि यहां का प्रत्येक समाज या मनुष्य अपने उपकारी का हृदय से आभार मानता है और भक्तिवश उसके पवित्र चरणों में श्रद्धाञ्जलि चढाता है ।

आपको सुविदित है कि अपनी कान्फरेन्स ने स० १९८९ के फाल्गुण मास में अखिल भारतवर्षीय साधु सम्मेलन करने का निर्णय किया है और इसके लिए सभी सम्प्रदायों ने अपनी शाब्दिक सहानुभूति भी प्रकट की है । इस महा-सम्मेलन को सफल एव सरल बनाने के लिए परस्पर सलाह व सगठन करने के निमित्त पाली (मारवाड़) में शुभ मिति फाल्गुन शुक्ला ३-४-५ तदनुसार ता० १०, ११, १२ मार्च १९३२ को मरुधर साधु सम्मेलन करना निश्चित हुआ है । इस शुभ कार्य में पाली के श्री सघ ने बड़े उत्साह से सेवा करना स्वीकार किया है ।

आपके यहा और आपके आसपास विराजमान श्री जैन शासन शृंगार, परम प्रभावक तरण तारण आत्मार्थी मुनिराजों के चरणों में सविधि, सविनय वन्दना अर्ज कर और सुख साता पूछकर यह निमन्त्रण-पत्र सुनादें और सुखे समाधे पाली की तरफ विहार करने की अर्ज करें ।

कान्फरेन्स के निर्णयानुसार सम्मेलन की बैठक गोल व जमीन पर रहेगी । पाली में अपनी अपनी समाचारी के अनुसार ठहरने का भी सुभीता है । अतः बिना संकोच पधारें और चारित्र शुद्धि व सयम सरक्षण के लिए विरोधों को वोसराकर इस अमूल्य सुअवसर से लाभ उठावें । मुनिराजों के पधारने का शुभ सवाद पाली श्रीसघ को शीघ्र दें, ताकि मुनिवरो के स्वागत का सौभाग्य वहां का श्रीसघ प्राप्त कर सके ।

इस सम्मेलन पर सिर्फ आमन्त्रित श्रावक महानुभाव ही सलाहकार के तौर पर पधारें अन्य लोगों के पधारने से इस महत्वपूर्ण कार्य में अन्तराय पड़ना सम्भव है। सलाहकारों के अतिरिक्त अन्य सभी श्रावक श्राविका, देश व काल की स्थिति पर विचार करके, अपने स्थान पर ही इस शुभ कार्य की सफलता के लिए विशुद्ध भावना भावें, यह हमारी नम्र प्रार्थना है।

हमारी यह आन्तरिक इच्छा है कि सब मुनिराज इस शुभ कार्य में सम्मिलित हो। किन्तु शारीरिक कारणों से न पधारने वाले मुनिराज, इस सम्मेलन के प्रति सहानुभूति व सहयोग का सन्देश भेज कर हमारा उत्साह बढ़ावें। किं बहुना!

श्री जयपुर माघ पूर्णिमा
वि० सं० १९८८
वीर सं० २४५१

श्री संघ सेवक दर्शनातुर—
दुर्लभजी
मन्त्री

॥ ॐ अर्ह ॥

All India S S. Jain Conference

श्री साधु सम्मेलन समिति

श्री मारवाड़ साधु सम्मेलन पाली

(खास आमन्त्रण)

श्रीमान् प्रिय स्वधर्मी बन्धु श्री !

इस अपूर्व अवसर पर आपकी अनुभवपूर्ण सलाह उपयोगी तथा मार्गदर्शक होगी। अतः आप अवश्य पधारने की मंजूरी फरमावें और पाली पहुँचने का समय सूचित करें।

श्री जयपुर
ता० २२ २-३२

श्री संघ सेवक दर्शनातुर—
दुर्लभजी
मन्त्री

जिस दिन जैन प्रकाश में पहला निमन्त्रण पत्र प्रकाशित हुआ ठीक उसी दिन भावनगर से प्रकाशित होने वाले जैन में इन प्रांतिक साधु सम्मेलनों को लक्ष्य रख कर गुजराती भाषा में निम्नलिखित लेख प्रकाशित हुआ था। पाठकों की सुविधा के लिए यहां उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है—

स्था० साधु समाज सम्मेलन करता है !

जैन मुनियों को ऐसी क्या पड़ी है, कि वे अन्य साधु सन्यासियों अथवा गृहस्थों की भांति सम्मेलन करने की अनावश्यक सरपच्ची करें ? वे तो वायु की भांति अप्रतिबद्ध बिहारी गिने जाते हैं ! वे तो जहां अधिक से अधिक अपना और पराया कल्याण देखेंगे, उसी तरफ अपनी गति घुमावेंगे ! जब साधु सम्मेलन की आवश्यकता बतलाई जाती है, तब दूसरी तरफ से ठीक इसी तरह की युक्तियां दी जाती हैं। किन्तु अब इन युक्तियों में शब्दों के वैभव के अतिरिक्त और कुछ भी सार नहीं रहा। स्था० साधु समाज कुछ अधिक जागृत और सावधान है, अतः उसकी समझ में यह बात शीघ्र आगई है। पदवी प्रतिष्ठा और मानापमान के बवण्डर ने साधु समाज को आज ऐसा छिन्न भिन्न कर डाला है, कि यदि सद्भाग्य से किसी को सम्मेलन करने का विचार सूझे भी तो आसन तथा वन्दन जैसे प्रश्न उसे भड़का देते हैं। ससार को कषाय के कटु परिणाम समझाने वालो पर मानो वे ही कषाय क्रोध पूर्वक हमला किये हों और ब्याज समेत बदला वसूल कर रहे हों, ऐसी स्थिति जान पड़ती है। ऐसे संयोगों में, स्थानकवासी साधुजी, सम्मेलन का मगलाचरण करें, यह जितना उनके अपने समाज के लिए कल्याणकारी और मार्गदर्शक होगा, उतना ही श्वेताम्बर जैन समाज के लिए भी होगा। हम संसार के सिर छत्र और सांसारिक पद्धतियो से अस्पर्शित हैं, इस अभिमान को उन्होंने धीरे २ परित्याग करना प्रारम्भ किया है और पाली तथा राजकोट मुकाम पर स्था० साधु सम्मेलन की जो तैयारियां हो रही हैं, उन्हें देखने से यह आशा होती है कि ये सम्मेलन जैन इतिहास में एक उपयोगी प्रकरण पूरा करेंगे। यदि, ये प्रातिक सम्मेलन सफल हो जाय तो शीघ्र ही अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी साधुओं का एक महासम्मेलन करने का भी उन्होंने निश्चय कर रक्खा है। सबसे अधिक सन्तोप की बात तो यह है कि जिनकी ओर से "पूजा प्रतिष्ठा' का अधिक से अधिक भय प्रदर्शित किया जाता था। उन्होंने स्वय ही सम्मेलन के हितार्थ, इन सब जंजालों का त्याग कर देने का अभय वचन दिया है। .... कुसंप, मतभेद, विपवाद और अनास्था के मुकाबिले किलेबन्दी करने के लिए स्था० साधु समाज आज आलस्य मरोड़ रहा है। हम, उसकी इस लगन की प्रतिष्ठा करते हैं और हमारे अपने समाज पर भी इस प्रयास की अत्यन्त अच्छी छाप पड़ेगी ऐसी आशा करते हैं।

* * * * *

ठीक इसी प्रकार का एक हृदयस्पर्शी लेख जैन प्रकाश में भी गुजराती भाषा में प्रकाशित हुआ था। पाठकों के अवलोकनार्थ, यहां उसका भाषान्तर दिया जाता है —

आज का नहीं तो आगामी कल का– नया इतिहासकार भले ही यह बात लिखे, कि एक तरफ जब साधुओं में मान, पिपासा क्लेश और वितण्डावाद का संघर्ष जारी था, तब दूसरी ओर साधु लोग संयुक्त बल की वृद्धि करने के लिए सम्मेलन कर रहे थे। कैसा वह मनोहर, प्रेरक और समुचित दृश्य होगा कि जब सांसारिक आधि व्याधि तथा उपाधि का त्याग कर चुके हुए त्यागी लोग आपसी मतभेदों को दफनाकर, राग, द्वेष और कषाय के कारणों का वमन करके, प्रेम जिज्ञासा तथा उदारभाव से एकत्रित हुए होंगे और जरा जरा से मतभेदों से पैदा हुए झगड़ों पर समाधानवृत्ति से विचार कर रहे होंगे। महावीर के विजयी शासन को प्राणी मात्र के उद्धार के लिए बहती हुई नदी या विशाल महासागर की भाँति व्यापक बनाने की योजना तय्यार कर रहे होंगे और केवल उपाश्रय में रुके रहने वाले अपने उपदेशों को मुमुक्षु जन-मात्र के लिये प्रकट करने की सुविधा का विचार कर रहे होंगे। यही नहीं संसार में प्रकाश फैलाने के योग्य शिक्षा पद्धति से प्राप्त कर क्षेमें की आवश्यकता पर भी साथ ही साथ विचार कर रहे होंगे। वह दिन कैसा सौभाग्य वान होगा, जब कि 'ये मेरे और वे उसके श्रावक' हम तो ऐसे हैं और वे वैसे हैं इस प्रकार की मोह मान वर्द्धक, बाल चेष्टाओं को बुद्धिमानी पूर्वक बोसरा दिया जावेगा धन्य होगा वह दिन जब कि पवित्रता के वातावरण में आत्म उद्धार और जग उद्धार के ये मशालधारी एकत्रित हुए होंगे। सद्भागी होगा वह शहर और उस शहर का श्रीसंघ, कि जिसके आंगन में ये भव और परभव की मुक्ति के उपासक, अपने सिर ली हुई जोखिम का विचार करने एकत्रित हुए होंगे। अहा! कैसा वह रमणीय दृश्य होगा, कि जिसकी कल्पनामात्र से आज ऐसा अपूर्व आनन्द पैदा होता है, जो अवर्णनीय है अपार है, असीम है!

कभी सुरम्य यह भावना है— साधु सम्मेलन। ऐसा कौन अभागा होगा, जो धर्म समाज और व्यक्ति के विकास के विचार और कार्य के लिये होने वाले इस सम्मेलन से सहयोग न करे! ऐसा कौनसा श्रेष्ठ होगा जो तरण-तारण होने का दावा करके बैठे हुए साधुओं को वह दावा सिद्ध करने का अवसर देने की इच्छा न करे?

ऐसा कौन होगा कि जिसका पेट भर्रा कर गदा हो और सिर का उपचार करे?

सामान्य से हमारे समाज की लगभग सभी सम्प्रदायों ने साधु-सम्मेलन की एक बार नहीं बल्कि अनेक बार आवश्यकता बतलाई है और केवल शाब्दिक सहानुभूति ही नहीं बल्कि यदि सम्मेलन हो तो उसमें हृदयपूर्वक सहयोग करने और रचनात्मक साथ देने का भी विश्वास दिलाया है। अपने समाज के इन मुनि महात्माओं का दीर्घ दृष्टि और उनके हृदय की विशालता के लिये सचमुच ही समाज उनका ऋणी रहेगा। धन्य है उस भाव का यह वह समय, जहाँ से इस विचार का आन्दोलन पैदा हुआ था कि सारे भारतवर्ष के अपने समाज के साधुओं का सम्मेलन यदि हो और उसमें एक ही आचार्य अथवा एक ही युवराज की नियुक्ति होती हो तो अपना युवराजपद तथा अपना शिष्य मंडल आदि सब कुछ अर्पण कर देने को तय्यारता व दिखला सकते हैं! और अभी कल ही की बात है जबकि निर्भय से पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने अपने हृदय की विशालता का परिचय देते हुए कहलाया था कि वे भी भगवान महावीर के शासन की रक्षा के लिये अपनी पूज्य पदवी तक छोड़ देने को

तय्यार हैं। इस उदारता की वायु के, साधु-वर्ग में उत्पन्न हो जाने के पश्चात्, किसे किंचित् भी यह शका रह सकती है, कि साधु-सम्मेलन में सरलता से कामकाज होना कठिन हो जायगा ? यह सत्य है, कि अभिमान के गर्त्त में डूबे हुए अपने शिथिलाचरण के कारण ही दूसरों को बहकाने वाले और अपनी ही बात पूरी करने के दुराग्रह वाले लोगों का एक वर्ग है। किन्तु, यह वर्ग जरा सा है, अशमात्र है। ऐसे थोडे से लोग भले ही, इस तरह अपना पृथक राग गाते हों, किन्तु जब प्रतापी आचार्यगण विराजमान होंगे और अपने तप, चारित्र और तेज के द्वारा प्रभावशाली ज्योत्सना फैला रहे होंगे, तब इस छोटे से वर्ग के नेत्र और उसकी अकल्याणकारी जीभ, बन्द हुए बिना नहीं रह सकती। और यदि 'अपने स्वार्थ या ईर्ष्या' के कारण धूल उड़ाने का प्रयत्न भी करेंगे तो वे अपने आप ससार के सामने अपने विकृत स्वरूप में प्रकट होने की जोखिम उठावेंगे, इस बात को न भूल जानी चाहिये। इस बात को भी अपने हृदय में अंकित कर लेना चाहिये, कि 'सख्या' के झुण्डों की अपेक्षा, 'सत्व' की थोड़ी मात्रा, तेजस्वी वीरों की सी रचनात्मक क्रिया करने में अधिक सफलता प्राप्त कर सकती है। और ऐसे थोड़े से वीर केवल सख्या के झुण्डों को दूर भगाने का प्रभाव धारण कर सकते हैं। जैन समाज को आज यदि आवश्यकता है, तो ऐसे थोड़े से 'तेजस्वी साधु-रत्नों की, जो कि साधुता का प्रकाश फैलाते हुए, मार्ग को प्रशस्त करें। जो परम पवित्र जवाबदारी अपनी और पराये की वे उठाये हुए हैं, उसके पूरे आचरण के प्रामाणिक प्रयत्न करने के लिये उन्हें कटिबद्ध होने को आवश्यकता है। और यह सद्भाग्य की विजय समझनी चाहिये, कि समाज के पवित्र साधुवर्ग ने इस विचार को कार्यरूप में परिणत करने का अवसर अत्यन्त समीप ला दिया है। कदाग्रह, पक्षपात आदि को दूर करके, साधुता तथा जैनत्व की रक्षा को, उन्होंने अपना ध्रुव लक्ष्य माना है और इसी से कान्फ्रेन्स की दिल्ली कमेटी के निश्चयानुसार, पजाब, मारवाड़, गुजरात, कच्छ, काठियावाड़ और दक्षिण के साधुओं का प्रान्तिक सगठन होने की खुशखबरी, आज हम लोगों की जानकारी का विषय बन रही है। राजकोट में कच्छ, काठियावाड़, और गुजरात के साधुओं का प्रान्तिक सम्मेलन होने जा रहा है। पाली में, मारवाड़ की सम्प्रदायें अपना एकतापूर्वक सम्मेलन कर रही हैं और दक्षिण के मुनिराज आपसी भिन्नता छोड़कर, ऋषि सम्प्रदाय की पुनर्रचना करने के लिये कटिबद्ध हैं।

यह सब किसका परिणाम है ? यह सब किसके सूत्रसचालन से शक्य हो सका है ? निश्चय ही यह समाज की जीवित-जागृत 'सद्बुद्धि' का परिणाम है। इसके पीछे के सूत्र-सचालन में, आगामी युग के नये महत्व को समझने की 'सादी-समझ' की फतह है।

राजकोट और पाली कैसे भाग्यवान् नगर हैं, जहां कि समवसरण के सदृश्य पुनीत, महा-साधु सम्मेलन के प्राथमिक शिलारोपणरूपी योजनाओं का महत्त्व पूर्ण मगल-मुहूर्त होगा। वह कैसा अपूर्व अवसर होगा, जब कि जैन समाज की पुनर्रचना की मगल क्रियाएँ होंगी। धन्य है वह प्रसग और धन्य है उस प्रसग को उज्जवल बनाने वाले तथा वहां उपस्थित होने वाले सब मुनिराजों को, कि जिनके प्रयत्नों के कारण, समाज में, नये इतिहास का शुभ प्रारम्भ होगा। यह तो निश्चित ही है, कि जो मुनिराज इस प्रसग पर पधारने में असमर्थ होंगे, उनके आशीर्वाद, पधारे हुए महात्माओं के साथ ही होंगे। शुभकार्यों में, किसका सहयोग नहीं होगा ? और जिस कार्य का प्रारम्भ इतनी अच्छी तरह होगा, उसका परिणाम भी निश्चित रूप से अच्छा होगा, इससे कौन इनकार कर सकता है।

आज का नहीं तो आगामी कल का- नया इतिहासकार भले ही यह बात लिखे, कि एक तरफ जब साधुओं में मान, विद्वत्ता क्लेश और वितण्डावाद का संघर्ष जारी था, तब दूसरी ओर साधु लोग संयुक्त बल की सृष्टि करने के लिए सम्मेलन कर रहे थे। कैसा यह मनोहर, प्रेरक और समुचित दृश्य होगा कि जब सांसारिक आधि व्याधि तथा उपाधि का त्याग कर चुके हुए त्यागी लोग आपसी मतभेदों को दफनाकर, राग, द्वेष और कषाय के कारणों का दमन करके प्रेम जिज्ञासा तथा उदारभाव से एकत्रित हुए होंगे और जरा जरा से मतभेदों से पैदा हुए झगड़ों पर समाधानवृत्ति से विचार कर रहे होंगे। महावीर के विजयी शासन को प्राणी मात्र के उद्धार के लिए बहती हुई नदी या विशाल महासागर की भांति व्यापक बनाने की योजना तय्यार कर रहे होंगे और केवल उपाश्रय में रुके रहने वाले अपने उपदेशों को मुमुक्षु जन-मात्र के लिये प्रकट करने की सुविधा का विचार कर रहे होंगे। यही नहीं संसार में प्रकाश फैलाने के योग्य शिक्षा पद्धति से प्राप्त कर लेने की आवश्यकता पर भी साथ ही साथ विचार कर रहे होंगे। वह दिन कैसा सौभाग्य वान होगा, जब कि 'ये मेरे और वे उसके श्रावक हम तो ऐसे हैं और वे वैसे हैं' इस प्रकार की मोह भाव वर्द्धक, बाल चेष्टाओं को बुद्धिमानी पूर्वक वोसरा दिया जावेगा धन्य होगा वह दिन जब कि पवित्रता के वातावरण में आत्म उद्धार और जन उद्धार के ये भण्डाधारी एकत्रित हुए होंगे। सद्भागी होगा वह शहर और उस शहर का श्रीसंघ, कि जिसके आंगन में ये स्व और परमत की मुक्ति के उपासक, अपने सिर ली हुई जोखिम का विचार करने एकत्रित हुए होंगे। अहा! कैसा वह रमणीय दृश्य होगा, कि जिसकी कल्पनामात्र से आज ऐसा अपूर्व आनन्द पैदा होता है, जो अवर्णनीय है, अपार है असीम है!

कैसी सुरम्य यह भावना है— साधु सम्मेलन! ऐसा कौन अभागा होगा, जो धर्म समाज और व्यक्ति के विकास के विचार और कार्य के लिये होने वाले इस सम्मेलन से सहयोग न करे! ऐसा कौनसा जैन होगा जो तरण-तारण होने का दावा करके बैठे हुए साधुओं को, वह दावा सिद्ध करने का अवसर देने की इच्छा न करे!

ऐसा कौन होगा कि जिसका पेट दर्द कर रहा हो और सिर का उपचार करे!

सौभाग्य से हमारे समाज की लगभग सभी सम्प्रदायों ने साधु-सम्मेलन की एक बार नहीं बल्कि अनेक बार आवश्यकता बतलाई है। और केवल शाब्दिक सहानुभूति ही नहीं बल्कि यदि सम्मेलन हो तो उसमें हृदयपूर्वक सहयोग करने और रचनात्मक भाग लेने का भी विश्वास दिलाया है। अपने समाज के इन मुनि महात्माओं को दीर्घ दृष्टि और उनके हृदय की विशालता के लिये सचमुच ही समाज उनका ऋणी रहेगा। धन्य है पंजाब का वह वृद्ध मानस, जहां से इस विचार का आन्दोलन पैदा हुआ था कि सारे भारतवर्ष के अपने समाज के साधुओं का सम्मेलन यदि हो और उसमें एक ही आचार्य अथवा एक ही युवराज की नियुक्ति होती हो तो अपना युवराजपद तथा अपना शिष्य मंडल आदि सब कुछ अर्पण कर देने को तत्परता व दिखला सकते हैं! और अभी कल ही की बात है जबकि दिल्ली में पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने अपने हृदय की विशालता का परिचय देते हुए बतलाया था कि वे भी भगवान महावीर के शासन की रक्षा के लिये अपनी पूज्य पदवी तक छोड़ देने को

तय्यार है। इस उदारता की वायु के, साधु-वर्ग में उत्पन्न हो जाने के पश्चात्, किसे किंचित् भी यह शंका रह सकती है, कि साधु-सम्मेलन में सरलता से कामकाज होना कठिन हो जायगा ? यह सत्य है, कि अभिमान के गर्त्त में डूबे हुए अपने शिथिलाचरण के कारण ही दूसरों को वहकाने वाले और अपनी ही बात पूरी करने के दुराग्रह वाले लोगों का एक वर्ग है। किन्तु, यह वर्ग जरा सा है, अंशमात्र है ! ऐसे थोड़े से लोग भले ही, इस तरह अपना पृथक् राग गाते हों, किन्तु जब प्रतापी आचार्यगण विराजमान होंगे और अपने तप, चारित्र और तेज के द्वारा प्रभावशाली ज्योत्सना फैला रहे होंगे, तब इस छोटे से वर्ग के नेत्र और उसकी अकल्याणकारी जीभ, बन्द हुए विना नहीं रह सकती। और यदि 'अपने स्वार्थ या ईर्ष्या' के कारण धूल उड़ाने का प्रयत्न भी करेंगे तो वे अपने आप संसार के सामने अपने विकृत स्वरूप में प्रकट होने की जोखिम उठावेंगे, इस बात को न भूल जानी चाहिये। इस बात को भी अपने हृदय में अंकित कर लेना चाहिये, कि 'संख्या' के झुण्डों की अपेक्षा, 'सत्व' की थोड़ी मात्रा, तेजस्वी वीरों की सी रचनात्मक क्रिया करने में अधिक सफलता प्राप्त कर सकती है। और ऐसे थोड़े से वीर केवल संख्या के झुण्डों को दूर भगाने का प्रभाव धारण कर सकते हैं। जैन समाज को आज यदि आवश्यकता है, तो ऐसे थोड़े से 'तेजस्वी साधु-रत्नों की, जो कि साधुता का प्रकाश फैलाते हुए, मार्ग को प्रशस्त करें। जो परम पवित्र जवाबदारी अपनी और पराये की वे उठाये हुए हैं, उसके पूरे आचरण के प्रामाणिक प्रयत्न करने के लिये उन्हें कटिबद्ध होने की आवश्यकता है। और यह सद्भाग्य की विजय समझनी चाहिये, कि समाज के पवित्र साधुवर्ग ने इस विचार को कार्यरूप में परिणत करने का अवसर अत्यन्त समीप ला दिया है। कदाग्रह, पक्षपात आदि को दूर करके, साधुता तथा जैनत्व की रक्षा को, उन्होंने अपना ध्रुव लक्ष्य माना है और इसी से कान्फ्रेन्स की दिल्ली कमेटी के निश्चयानुसार, पंजाब, मारवाड़, गुजरात, कच्छ, काठियावाड़ और दक्षिण के साधुओं का प्रान्तिक संगठन होने की खुशखबरी, आज हम लोगों की जानकारी का विषय बन रही है। राजकोट में कच्छ, काठियावाड़, और गुजरात के साधुओं का प्रान्तिक सम्मेलन होने जा रहा है। पाली में, मारवाड़ की सम्प्रदायें अपना एकतापूर्वक सम्मेलन कर रही हैं और दक्षिण के मुनिराज आपसी भिन्नता छोड़कर, ऋषि सम्प्रदाय की पुनर्रचना करने के लिये कटिबद्ध हैं।

यह सब किसका परिणाम है ? यह सब किसके सूत्रसंचालन से शक्य हो सका है ? निश्चय ही यह समाज की जीवित-जागृत 'सद्बुद्धि' का परिणाम है। इसके पीछे के सूत्र-संचालन में, आगामी युग के नये महत्व को समझने की 'सादी-समझ' की फतह है।

राजकोट और पाली कैसे भाग्यवान् नगर हैं, जहां कि समवसरण के सदृश्य पुनीत, महा-साधु सम्मेलन के प्राथमिक शिलारोपणरूपी योजनाओं का महत्त्व पूर्ण मंगल-मुहूर्त होगा। वह कैसा अपूर्व अवसर होगा, जब कि जैन समाज की पुनर्रचना की मंगल क्रियाएँ होंगी। धन्य है वह प्रसंग और धन्य है उस प्रसंग को उज्जवल बनाने वाले तथा वहां उपस्थित होने वाले सब मुनिराजों को, कि जिनके प्रयत्नों के कारण, समाज में, नये इतिहास का शुभ प्रारम्भ होगा। यह तो निश्चित ही है, कि जो मुनिराज इस प्रसंग पर पधारने में असमर्थ होंगे, उनके आशीर्वाद, पधारे हुए महात्माओं के साथ ही होंगे। शुभकार्यों में, किसका सहयोग नहीं होगा ? और जिस कार्य का प्रारम्भ इतनी अच्छी तरह होगा, उसका परिणाम भी निश्चित रूप से अच्छा होगा, इससे कौन इनकार कर सकता है।

इस समिति की कार्यवाही प्रकाशित हो जाने के पश्चात्, जैन-प्रकाश के विद्वान् सम्पादक ने इतिहास स्वर्णाक्षरों में लिखा जावेगा इस शीर्षक से एक पठनीय लेख जैन प्रकाश में लिखा था। उस लेख का कुछ अंश, यहां उद्धृत किया जाता है। इस अंश को देखकर, पाठक अनुमान लगा सकते हैं, कि समिति के निर्णय से, वातावरण में कैसी प्रसन्नता भर गई थी।

चौदहसौ वर्ष पहले का यह दृश्य जब वल्लभीपुर में, सूत्रों का पठन करने के लिए, मुख्य २ आचार्य एकत्रित हुए थे और केवल कण्ठस्थ करके सुरक्षित रक्खे हुए, भगवान् के उपदेशों को विस्मृति के कारण भूलते जाने से बचाने के लिये लेख बद्ध करने का आयोजन कर रहे थे, तब का यह दृश्य, जैन संसार में आज फिर दृष्टिगोचर होने लगा है। राजकोट और पाली में प्रान्तिक साधु-सम्मेलनों की शुरुआत होने के इस प्रसग पर यह खुश खबरी सुना दी है, कि आगामी वृहद् साधु सम्मेलन के लिये, अजमेर नगर को पसन्द किया गया है। आज सारे भारतवर्ष के स्थानकवासी समाज का ध्यान अजमेर की ओर आकर्षित हो रहा है, जहां कि एक वर्ष के पश्चात्, सारे भारत के स्थानकवासी जैनाचार्य तथा विद्वान मुनिराज जैनत्व एवं साधुता की रक्षा करने वाली योजनाओं की रचना करने एकत्रित होंगे। इस पुनीत प्रसंग को अपने आँगन में आमन्त्रित कर लेने वाला अजमेर नगर, सचमुच ही आज चौदहसौ वर्ष पश्चात् 'वल्लभीपुर होने का गौरव प्राप्त करेगा। कान्फ्रेंस के पहले अधिवेशन के सभापति होने वाले सज्जन का वतन यही अजमेर नगर था। कान्फ्रेंस माता का तीसरा अधिवेशन भी अजमेर में ही हुआ था। आज भी कान्फरेंस माता के प्रति अजमेर श्रीसंघ की भक्ति ज्यों की त्यों कायम है। दिल्ली में जब जनरल कमेटी की बैठक हुई थी तब अजमेर की ओर से, एक डेपुटेशन द्वारा, साधु-सम्मेलन अपने यहां करवाने का आमन्त्रण प्रस्तुत किया गया था। तत्पश्चात् साधु-सम्मेलन समिति के सदस्यों के पीछे पड़कर अजमेर में ही सम्मेलन करने का निर्णय करवाने वाला अजमेर का श्रीसंघ और खासकर वहां का उत्साही युवकवर्ग ही था। कैसा धर्म प्रेम ! कितनी उत्कट लगन ! जाति और धर्म के हित के प्रसंगों को, अपने आँगन में खींच कर लाने की, कैसी भगीरथ स्वार्पण वाली भावना !

इधर राजकोट और पाली में प्रान्तिक सम्मेलनों का आयोजन हो ही रहा था और उधर दक्षिण में मुनिराजों के संगठन के लिये आवकगण प्रयत्न कर रहे थे। ठीक इसी बीच, पंजाब प्रान्तीय साधु-सम्मेलन होना निश्चित हुआ और युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज के सतत परिश्रम के कारण सभी प्रतिष्ठित २ साधु-मुनिराजों ने, सम्मेलन के प्रति अपना अपार अनुराग प्रदर्शित किया। जब अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी समाज को यह विदित हुआ कि ठीक इसी मार्च मास की १८-२ और ५१ तारीखों को जिस मास में कि राजकोट तथा पाली में सम्मेलन होने जा रहे हैं। होशियारपुर में पंजाब प्रान्तीय साधु सम्मेलन होने जा रहा है तब उसके हर्ष की सीमा न रही। इस तरह एक के बाद दूसरा और दूसरे के बाद तीसरे प्रान्तीय सम्मेलन की सूचनाओं ने, अखिल-भारतवर्षीय साधु सम्मेलन में लोगों की श्रद्धा और उसकी सफलता में विश्वास उत्पन्न करवा दिया। अस्तु।

श्री साधु-सम्मेलन समिति के निर्णयानुसार श्री दुर्लभजी भाई झौहरी मन्त्री राजकोट प्रान्तीय सम्मेलन में सम्मिलित होने राजकोट पधारे। आपने वहां पहुँचकर राजकोट श्रीसंघ का जो उत्साह साधु-सम्मेलन की सफलता और उसकी व्यवस्था के लिये देखा उससे आप आश्चर्य में पड़ गये।

दूसरी तरफ श्री जैन शासन की प्रभावना के लिए अपना सर्वस्व लगा देने की उत्कट इच्छा वाले विद्वान् २ मुनिराज साधु सम्मेलन को सफल बनाने के लिये दूर २ से विहार फरमाकर राजकोट पधारने लगे। राजकोट श्री संघ ने, इन पधारने वाले मुनि महात्माओं का, अपनी सारी शक्ति लगाकर स्वागत किया। इस अवसर पर, इन मुनि महात्माओं ने, जिस प्रेम और सहिष्णुता का परिचय दिया और जिस तरह अहंभावना का परित्याग करके एक ही स्थानक में उतरने की उदारता दिखलाई, वह स्थानकवासी समाज के इतिहास में एक विचित्र बात थी। जिन छः संघाड़ों के मुनिराज राजकोट पधारे थे, उनमें से केवल शतावधानी पं० मुनि श्री रतनचन्द जी महाराज अस्वस्थ प्रकृति होने के कारण नदी तट वाले संघवी आरोग्य भवन में उतरे थे, शेष पांचों संघाड़ों के मुनिराज एक ही स्थान में उतरे थे। यही नहीं इन पांचों में पारस्परिक वन्दना, व्यवहार, आदि भी जारी था।

इस अपूर्व प्रसंग पर निम्नलिखित मुनिराज सम्मेलन में सम्मिलित होने की इच्छा से राजकोट पधारे थे।

१—पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि महाराज श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी तथा मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज आदि ठाणा—५।

२—लींबडी बडे संघाड़े की तरफ से मुनि महाराज श्री वीरजी स्वामी, शतावधानी पंडित मुनि श्री रतनचन्दजी महा० आदि—ठाणा ६।

३—लींबड़ी, छोटे संघाड़े की तरफ से मुनि महाराज श्री मणिलालजी महाराज आदि ठाणा—२।

४—गोंडल संघाड़े की तरफ से मुनि महाराज श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी आदि—ठाणा ३।

५—बोटाद सम्प्रदाय की तरफ से मुनि महाराज श्री माणेकचन्द्रजी महाराज आदि ठाणा ३

६—सायला संघाड़े के पूज्य श्री संघजी स्वामी आदि—ठाणा २।

इनके अतिरिक्त निम्न निमन्त्रित श्रावक बन्धु भी उस समय राजकोट पधारे थेः—

१—श्री दामोदरदास जगजीवन दामनगर
२— ,, वीरजीभाई ताराचन्द, जामनगर
३— ,, त्रिकमलाल उगरचन्द अहमदाबाद
४— ,, बालाभाई छगनलाल शाह अहमदाबाद
५— ,, जसराज हरगोवनदास वीरमगांव
६— ,, दलपतराम अभयचन्द कोठारी जेतपुर
७— ,, श्री रेवाशंकर मंगलजी जेतपुर
८—श्री भूदरभाई कचराभाई, मूली
९— ,, जेसंगभाई हरखचन्द, जामनगर
१०— ,, जेठालाल रामजी शाह मांगरोल
११— ,, नथूमूलजी वारिया पोरबन्दर
१२— ,, फतहचन्द गोपालजी थानगढ़
१३— ,, प्रेमचन्दजी भगवानजी अमरेली
१४— ,, लीलाधर प्रेमजी मांगरोल

१५— „ धीरजलाल केशवलाल तुरखिया पालपुर
१६— „ लालचन्द नेमचन्द मांगरोल
१७— „ अमृतलाल रायचन्द जौहरी बम्बई
१८— „ हसराजभाई लक्ष्मीचन्द अमरेली
१९— „ डाह्याभाई कान्फरेन्स आफिस मैनेजर बम्बई आदि आदि

इनके अतिरिक्त श्वे० मूर्तिपूजक भाईयों को भी इस सभा में पधारने का निमन्त्रण दिया गया था और उनकी उपस्थिति भी पर्याप्त मात्रा में होगई थी।

सम्मेलन की इस प्रथम बैठक का प्रारम्भ, वीतराग वाणी की मुनि मण्डल की प्रार्थना के साथ हुआ। तदुपरान्त मंगलाचरण के रूप में, शतावधानी प० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने श्लोकोच्चारण किया। इसके पश्चात् कान्फ्रेंस की ओर से स्वागत करते हुए, कान्फरेंस आफिस के मैनेजर डाह्यालाल मेहता ने, दिल्ली कमेटी का साधु सम्मेलन सम्बन्धी प्रस्ताव तथा राजकोट प्रांतीय साधु सम्मेलन की निमन्त्रण पत्रिका पढ़कर सुनाई। इसके पश्चात् आपने, अपना भाषण यों प्रारम्भ किया।

चैतन्य धर्म के अग्रगण्य धारी मुनि महात्माओं! राजकोट श्रीसंघ के सौभाग्यवान सज्जनगणों! एवं अन्य उपस्थित महानुभावों!

जिस पुनीत-आशय और प्रसंग के कारण आप सब महानुभावों को यहां एकत्रित होने का अवसर आया है और आपके पुण्य दर्शन का लाभ प्राप्त हुआ है वह आज का प्रसंग परम पवित्र है। इस अवसर पर, सारे भारतवर्ष के स्थानकवासी समाज की एक मात्र प्रतिनिधि संस्था, स्थानकवासी कान्फ्रेंस की ओर से आपका स्वागत करते हुए मुझे अत्यन्त हर्ष होता है। कान्फरेन्स के आमन्त्रण को स्वीकार फरमा कर विविध प्रकार की असुविधाओं का मुकाबिला करते हुए तथा अपना अमूल्य समय का बलिदान करके आप यहां पधारे हैं यह अत्यन्त हर्ष की बात है। इस छोटे से दिखाई देने वाले किन्तु व्यापक उपाश्रय में आज मुझे तो ऐसा भान पड़ता है मानों लौंकाशाह के भाव गूंज रहे हैं। जैन धर्म का उसके संकुचित स्वरूप के बदले व्यापक स्वरूप में, जैनत्व का प्रकाश फैलाने साधुता और जैनत्व की रक्षा करने एवं साधु समुदाय को वर्तमान छिन्न भिन्न दशा सुधार कर समृद्ध बल उत्पन्न करने की दिशा में इस सम्मेलन के द्वारा कोई उत्तम मार्ग स्वीकार हो, यही प्रार्थना है।

इसके पश्चात् राजकोट श्री संघ की तरफ से उपस्थित आत्माओं का स्वागत करते हुए, यहां संघ के मन्त्री श्री पुरुषोत्तमजी मावजी बोरा ने कहा कि—कान्फरेन्स की ओर से प्रारम्भ की हुई साधु-सम्मेलन की शुभ प्रवृत्ति के कारण इस सभा में आपका सत्कार करने का जो सुयोग राजकोट श्री संघ को प्राप्त हुआ है उसके लिए मैं कान्फरेन्स का हृदय से आभार मानता हूं। इस सम्मेलन में भाग लेने दूर दूर से विहार करके तथा कष्ट उठाकर मुनि महाराज पधारे हैं। इसी तरह विद्वान् श्रावक बन्धु भी समय का बलिदान करके यहां पधारे हैं। इन सबका स्वागत करते हुए मुझे परम आनन्द होता है। आज हम लोगों को जो यह अलभ्य प्रसंग प्राप्त हुआ है और परस्पर प्रेमपूर्वक मिलन का जो सुन्दर दृश्य हम लोग देख रहे हैं उससे वीर प्रभु के शासन के पुनरुद्धार की कोई सुन्दर योजना अवश्य बनेगी ऐसा मालूम होता है। जो यह भावना आज प्रकट हुई देखी जाती है वह कार्य रूप में परिणित हो यही हमारी आन्तरिक प्रार्थना है।

तत्पश्चात् इस सम्मेलन के प्रति सहानुभूति प्रकट करने वाले जो सन्देश बाहर से आये थे, उन्हें श्री धीरजलालजी तुरखिया ने पढ़ कर सुनाया। उनमें से मुख्य २ ये थे—

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज का सन्देश

सादर जयजिनेन्द्र !

आपकी आमन्त्रण-पत्रिका, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की सेवा में सुनाई। पूज्य महाराज सा० राजकोट में सम्मिलित साधु-संघ की सफलता हृदय से चाहते हैं। विशेष सूचना की बात यह है कि सबसे पहले समाचारी का सुधार अत्यन्त आवश्यक है। कारण कि समाचारी की शुद्धता के प्रभाव से ही पारस्परिक भिन्नता मिट कर भविष्य में सब साधुओं की एक सामान्य-प्रणाली कायम हो सकती है। उस साधु समाचारी में दो बातें मुख्य विचारणीय हैं। (१) शास्त्र प्रमाण, (२) जीत व्यवहार।

शास्त्र प्रमाण से समाचारी की रचना इस तरह करनी चाहिए कि कोई भी प्रतिपक्षी, शास्त्रों से उसमें दोष न दे सके। देश काल का विचार करके शास्त्रीय प्रमाण को बाधा करने वाली बातें समाचारी में न रक्खी जावें। अन्यथा प्रतिपक्षियों के सामने तथा स्वपक्ष के संघ में, सफलता मिलना कठिन होगा और एकता के बदले, विभिन्नता पैदा होने का पूरा पूरा अन्देशा रहेगा।

जीत व्यवहार में ऐसी बातों का समावेश न होने पावे, जो लौकिक या लोकोत्तर से विरुद्ध हों। बल्कि देश काल लौकिक और लोकोत्तर का खयाल रख कर शास्त्रबाधित जीत-व्यवहार से समाचारी का भलीभांति सुधार होना चाहिए। सुज्ञेषु किं बहुना ?

—हितेच्छु मण्डल

* * * * *

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की ओर से—

सादर जयजिनेन्द्र ! राजकोट में होने वाले साधु-सम्मेलन सम्बन्धी आपका विज्ञापन मिला, बड़ी प्रसन्नता का कारण हुआ है। श्री पूज्यजी महाराज की सेवा में उपस्थित कर दिया है। श्री जी ने आपके परिश्रम के लिए सफलता की हार्दिक इच्छा प्रकट की है। आशा है, उसकी कार्यवाही से आप हमें सूचित करेंगे। कोई सेवाकार्य हमारे योग्य हो, सो लिखें।

विनीत—रतनचन्द्रजी

\+ * * * *

पूज्यश्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के पं० मुनि श्री किशनलालजी तथा प्र० व मु० सौभागमलजी और पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० सा० की सम्प्रदाय के आचार्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की ओर से:—

श्रीमान् सेठ दुर्लभजी त्रिभुवनदासजी जौहरी मन्त्री महोदय
श्री साधु सम्मेलन-समिति मु० राजकोट।

जयजिनेन्द्र !

साम्प्रत समय में होने वाले मौलिक साधु सम्मेलन राजकोट सम्बन्धी आमन्त्रण पत्र आपकी तरफ से मिला। यह यहां विराजमान श्रीमान् आचार्यवर श्री १००८ श्री पूज्य रतनचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य श्री १००८ श्री पूज्य हस्तीमलजी महाराज एवं श्रीमज्जैनाचार्य श्री १००८ श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के श्रीमान् पं० मुनि श्री १००८ किशनलालजी सौभाग्यमलजी महाराज आदि मुनियों की सेवा में व्याख्यान में पढ़कर अर्ज करदिया। उपरोक्त श्रीमानों ने इस शुभ प्रयास के प्रति अपनी हार्दिक प्रसन्नता एवं सहानुभूति प्रदर्शित की है। इतना ही नहीं सम्मेलन की पूर्ण सफलता की इच्छा प्रकट की है तथा भगवान महावीर के उपलब्ध शासन को वे महात्मा दिग् दिगन्त तक व्यापक बनाने के लिए सब प्रकार के श्रेष्ठतर कार्य करने में समर्थ बनें ऐसा अनुमोदन (हार्दिक भाव) प्रकट करते हैं। ऐसे शुभ अवसर पर समय के अभाव, तथा द्रव्य क्षेत्र काल एवं भाव की अनुकूलता न होने के कारण उपस्थित होने में असमर्थता मानते हैं। इत्यलम्।

यहां जो विचार विनिमय निश्चित हो उसकी सूचना दीजियेगा।

भवदीयः—
श्री साधु-मार्गी जैन-संघ रतलाम.

* * * * *

श्रीमान् मोहनऋषिजी महाराज साहब की प्रार्थना—

श्री वीर शासन के पूज्य मुनिराजों की सेवा में

सविधि वन्दन पूर्वक नम्र प्रार्थना है कि इस उजड़े हुए वीरान रेतीले और शुष्क मरुभूमि के अरण्य में पधार कर अपने पवित्र पाद-पंकज द्वारा इस भूमि को हरी भरी बना, इस भूमि के स्थान पर हरा बाग बनाइयेगा।

आप पूज्यवरों की वीर शासन के प्रति अपार भक्ति के नमूने के रूप में, आपने साधु सम्मेलन करके विश्व को आदर्शवाद का पाठ सिखलाने के लिए जो शुभ प्रारम्भ किया है उस शुभ प्रारम्भ का मेरा वन्दन है।

वीर के समवसरण में, सिंह, गाय, बाघ, बकरी, चूहे, बिल्ली, गरुड़ और सर्प आदि अनादि के वैरी प्राणी, अपने वैर भाव को भूलकर एक ही जगह पर सुखपूर्वक निवास कर सकते हैं। तब फिर वीर के सपूत एक दूसरे के साथ वार्तालाप करने और समागम करने में छूत होजांय ? इससे अधिक वीर शासन के लिए कौनसा कलक हो सकता है ? वह कलक आप जैसे महारथियों के द्वारा ही दूर हो सकेगा और उसके मगल मुहूर्त के रूप में आज आपने ४०० वर्षों के बाद, मगल प्रभात का बीजारोपण करके, वीर के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखवाने योग्य मंगल प्रसग प्राप्त किया है।

आप श्रीमानों की सरलता, विनीतता और स्पष्टता तमाम साधु समाज के लिए आदर्शरूप है। आपके पधारने से, मरुभूमिका, त्योंही अखिल भारतीय जैन संसार तथा वीर शासन का पुनरुद्धार होना सम्भव है, अतः इस भूमि को पावन करने की कृपा अवश्य कीजियेगा, यही नम्र प्रार्थना है।

शासन नायक देव की छत्र-छाया में, सम्मेलन सफल बनने की भावना करते और आपके दर्शनों की भिक्षा की याचना करते हुए इस भिक्षुक की सन्देश रूप झोली, आपके पवित्र आंगन में भेजी है, उसे स्वीकार करने की कृपा करें।

अजमेर,
ता० २५-२-३२

दर्शनाभिलाषीः—
सन्त, शिष्य की त्रिकाल वन्दना.

पंडित मुनि श्री त्रिलोकचन्द्रजी महाराज का सन्देश—

सघाड़े के ममत्व भाव बिना, छोटे बड़े के अभिमान बिना, अमुक स्थान के अपने माने हुए क्षेत्र के मोह बिना, और भेद-भाव बिना, एक स्थान पर पूर्ण प्रेम, सत्कार और सद्भावना की ऊर्मि से, अमृत से भरपूर हृदय से, मुनिदेव एकत्रित हों, मिलें, ज्ञानगोष्ठि करें, ऐक्य साधें, भेदभाव भूल जांय और वर्त्तमान काल के द्रव्य, क्षेत्र, काल भाव का सम्यक् प्रकारेण, ऊहापोह करें, भावी पन्थ को उज्ज्वल करनेके लिए कटिबद्ध हों, एक दूसरे से सहयोग करें ऐसे २ पवित्र पन्थगामी मुनि महाशयों के पुण्य दर्शन जिस भूमि को हों, वह भूमि भी सुभूमि ही गिनी जायगी।

सब मुनिराजों को उनकी साधुता की साधना के लिए, इस पत्र के लिखने वाले की ओर से सविनय वन्दन है। छोटे बड़ों को वन्दन, आचार्यों, सघनायकों, अन्तेवासियों को वन्दन, ज्ञान-मार्ग पर प्रयाण करने वाले सूत्र-गीतार्थी को वन्दन, स्वाध्याय, तपस्या विनय आदि का सेवन करते हुए, सूत्राज्ञा का अनुसरण करने वालों को वन्दन—भाव पूर्वक वन्दन।

साधु समूह के पुण्य दर्शन का सुलाभ नहीं उठा सका, इसके लिए दुःखी हूं।

साधुगण, इस तरह परिषद् के रूप में एकत्रित हों, उस समय की शोभा भी अवर्णनीय ही गिनी जायगी। किन्तु केवल साधु परिषद् करने मात्र से कृतार्थ नहीं हुआ जा सकता। कृतार्थ तो कुछ संगीन कार्य करके और उसे व्यवहार में ला भविष्य के लिये आदर्श खड़ा कर, अखण्ड-मार्ग से प्रयाण करने में है।

इच्छा तो ऐसी भी है कि क्षेत्र मोह के प्रतिबन्ध को दूर करके अपने पास के पोथी पन्नों को सब मुनियों के लिए खुले रखकर, जैन ट्रेनिंग कालेज में अभ्यास करने योग्य मुनि को अभ्यास करवाये बिना भाव दीक्षाधारी को दीक्षा न देने का प्रतिबन्ध करके, परिषद् द्वारा चुने हुए पांच मुनिराज और कान्फ्रेंस के प्रमुख जब तक प्रमाण-पत्र न दे दें, तब तक दीक्षा के उम्मीदवार को दीक्षा न देने का निश्चय करके एक ही एक पर्युषण निश्चित कर संघ और साधुओं के आन्तरिक कलहों को दूर करने के लिये एक कमेटी की स्थापना करके, कान्फ्रेंस द्वारा चुने हुए पांच श्रावक और वैसे ही तीन मुनिराज जिसे स्वीकार करें, उसी तरह की श्रद्धा, वही आज्ञा और उसी कार्य की योजना करके ऐक्य, ज्ञानवृद्धि, आचरण शुद्धि, वर्द्धमान परिणाम से उत्पन्न हों ऐसे प्रस्ताव पास किये जावें, यही इच्छा है। यही आप सब मुनिराजों की पवित्र सेवा में सादर विनय कर सकता हूं।

इस परिषद् का भावी मुख्य व्यापक और सार्वदेशिक मुनिराजों की परिषद् के लिए, कार्यों की रूपरेखा, प्रतिनिधियों और स्वक्षेत्र या समाज में परिषद् द्वारा निर्मित किये हुए नियमों का पालन करवाने के लिए अभी से यथाशक्ति प्रबन्ध करने की, इस पत्र के लेखक को आपकी सेवा में याचना करनी पड़ती है।

विशेष रचनात्मक कार्य और परिणाम की आशा रखता हुआ—

माउन्ट आबू, देलवाड़ा	आपका मुनिबन्धु— त्रिलोक

• • • • •

श्री दामोदर भाई का सन्देश—

वर्तमान स्थिति से पूर्व के पर्यायों पर यदि विचार किया जावे तो वर्तमान स्थिति के कारण हमें मालूम हो सकते हैं।

गद्दीधरों ने, श्री संघ के सांसारिक वर्गों की अपनी सत्ता के अभिमान के कारण उपेक्षा की और छोटे मनुष्यों ने पतवार अपने हाथ में करके गड़बड़ पैदा की।

श्रीसंघ के सांसारिक-पक्ष ने, अन्धश्रद्धा के कारण यह मान लिया, कि गुरु आदि के दोष देखने ही न चाहिएँ। परिणामतः तू-तू मैं-मैं शुरू होगई।

अन्त में, श्री संघ की व्यवस्था नष्ट होगई।

साधु सम्मेलन के द्वारा यदि फिर से व्यवस्था की रचना की जा सके तो उसे व्यवहार में लाने के लिए पीठबल की कमी है। इस जमाने में पांच में से चार शासन नष्ट होगए हैं और अन्तिम यानी केवल दण्ड ही बाकी रहा है।

धर्म शासन का नाश, न्यायशासन का नाश।

कीर्ति, अपकीर्ति (व्यवहार) का नाश ।

लज्जा का नाश।

शेष रह गया एक-दण्ड शासन। अर्थात् आजकल लोग केवल भय को ही मानते हैं, और किसी को नहीं। ऐसी स्थिति में, बिना पीठबल के प्रस्ताव कागज पर ही लिखे रह सकते हैं।

यह पीठबल श्री संघ के सांसारिक अंग में से पैदा हो, तभी कार्य हो सकता है। और इस अंग को आजकल साधु कहे जाने वालों ने विदीर्ण कर रक्खा है।

आपके शुभ प्रयत्नों में सफलता की इच्छा करता हूं।

सेवकः—
दामोदर का प्रणाम।

* * * * *

वीरवर जीवा भाई का सन्देशः—

मोक्ष मार्ग के प्रवासी मुनिराजों की सेवा मेंः—

आप सब मुनिवरों ने अनुक्रम से परिषद् के रूप में मिलना निश्चित किया है। यह जानकर आप सबकी सेवा में वन्दनपूर्वक यह खुली चिट्ठी लिखकर प्रार्थना करता हूं कि—

आप लोगों ने, परिषद् के रूप में एकत्रित होने की इच्छा से, उग्र विहार करके जो समय उपस्थित किया है, उसके कारण इस लेखक और ऐसे ही अनेक अन्तःकरणों ने, अपने आपको भाग्यशाली समझा है।

आप मुनिगण यहां एकत्रित होकर, अनुगामी मुनियों के लिये, इस नई परिषद् में कुछ शुभ कार्य करके, नवचेतन प्रकट कीजियेगा। मैं भी, वर्तमान समय में आपके लिये मार्ग-प्रदर्शक के रूप में निम्न लिखित बातों का सुधार करने अथवा निश्चय करने की प्रार्थना करता हूं।

मैंने, अपने एक अन्यधर्मी मित्र के सामने, अत्यन्त-हर्ष तथा गर्व पूर्वक, साधु-सम्मेलन होने का समाचार कहा। यह सुनकर, वे तुरन्त ही बोल उठे कि—'अरे भाई साधुओं की परिषद् और वह भी इस काल में? कभी ऐसा सुना भी है?

उनकी यह बात सुनकर मैं समझा, कि सभी धर्मों के साधुओं के प्रति, वर्तमानकाल के नवयुवकों तथा सभी लोगों का क्या ख़याल है। उनकी यह राय, सभी धर्मों के साधुओं पर लागू होती है। इनमें से, हमारा मुनि संघ बचा हुआ है यह बात कभी स्वप्न में भी न सोचनी चाहिये।

ऐसी सम्मति रखने वाले लोग, प्रत्यक्ष देखते हैं, कि साधुओं में थोड़े या अधिक-प्रमाण में आन्तरिक द्वेष मौजूद है, एक संघाड़े और दूसरे संघाड़े के बीच या प्रत्येक क्षेत्र के मुनिराजों के बीच, मनोमालिन्य, निर्बल-प्रेम, ऊँचा मन, सार्वजनिक-भावना, क्षेत्रमोह, शिष्यमोह, पुस्तकादि का उपाधिमोह, शरीरमोह, और अन्यान्य आदि मोह के पहाड़ों की भांति व्याप्त दिखाई देते हैं। इसके लिये खास और प्राथमिक कार्य तो यह आवश्यक जान पड़ता है, कि एक ग्राम में जितने संघाड़ों के स्थानक, उपाश्रय आदि अलग अलग उतरने की जगहें हों उनमें से एक बड़े स्थान को छोड़कर शेष मकानों में शिक्षा प्रचारादि शुभ-कार्य प्रारम्भ कर देने चाहिये। एक ही ग्राम में, दो या अधिक चातुर्मासादि, एक ही स्थान के अतिरिक्त न करने चाहियें। चातुर्मास एक जगह, व्याख्यान एक जगह और उतरने तथा रहने का भी एक ही जगह रखने का प्रस्ताव यदि आवश्यक जान पड़े, तो उसे निश्चित् ही स्वीकार करना चाहिये। इस ज़माने में भिन्न २ संघाड़े भिन्न २ क्षेत्र, भिन्न २ व्याख्यान भिन्न २ निवास स्थान आदि रखना या करना किसी भी तरह व्यवहार में शोभा नहीं देता, और न उचित ही माना जा सकता है। इस लिये जो उचित है वही करना श्रेयस्कर है।

सुदूर-भविष्य में एक और रोग भी उपजता जान पड़ता है। इस रोग से बचने के लिये भी अभी से काफ़ी प्रयत्न करने की आवश्यकता है यह रोग और कुछ नहीं, जड़ पूजा ही है। कच्छ प्रदेश के अनेक ग्रामों में मृत साधुओं के फोटो वन्दन किये जाते हैं। और उनको धूप-दीप आदि किये जाते हैं। तपस्वी मुनि के चरण चिन्हों की पूजा अब किसी से छिपी नहीं है। देव-मुक्त साधुओं के नाम पर, ध्वजादिक का विधान भी देखा गया है। मालवाड़ में पाट की पूजा होती है। कहीं २ साधु के अग्नि संस्कार के बाद, उसी जगह पर समाधि-मन्दिर बनाने या चरण-पादुका की स्थापना करने की बात भी सुनी जाती है। क्या यह सब लोकप्रवाह तथा पूर्वाचार्यों का प्रत्यक्ष अपमान नहीं है ऐसा कोई कह सकता है? अत्यन्त लज्जा की बात है कि हम लोगों की ही आंखों पर पट्टी बांधकर हमें उल्टी दिशा में घुमाया जाता है। इसके लिये साधुओं को यथा सम्भव शीघ्र और यथोचित प्रबंध करना चाहिये।

एक तीसरा कारण और है, जिसका सुधार श्रावकों का करना। तथापि मुनियों को इस समय इस पर भी ध्यान देना चाहिये। वह यह कि आयुष्य कर्म की डोरी समेटते हुए कोई मुनि

यदि काल धर्म को प्राप्त हो, तो उनके शरीर को चार-चार, छः-छः, आठ-आठ, दस दस, बारह-बारह सोलह, अठारह या चौबीस घण्टे किंवा इससे भी अधिक समय तक रख छोड़ा जाता है। जिन्हें तार दिये गये हैं, या आने वाले श्रावक किंवा संघ जब तक दौड़ न आवें, तब तक उनके शरीर का अग्नि संस्कार नहीं हो सकता। जब तक पालकी या विमान ठाठ बाठ से न बन जाय, तब तक उस मृत देह को सुरक्षित रखा जाता है। यह किस सूत्र के किस अधिकार में आदेश दिया गया है, जिसके पालन के लिये ऐसा करना पड़ता है? जीवात्मा मुक्त होजाने के बाद अन्तर्मुहूर्त में समुच्छिम जीव उत्पन्न हो जाते हैं, ऐसा सूत्र पाठ है। ये समुच्छिम जीव उत्पन्न हों, बढ़ें, मृतदेह फूल जाय, बिगड़ जाय, उसमें दुर्गन्ध पैदा हो जाय, तब यदि अग्नि संस्कार हो, तो परिणाम स्वरूप समुच्छिम जीवों का सत्यानाश होता है। इस तरह आडम्बर या असंख्यगुणा होने वाले, पाप को रोकने के लिये, मुनिराजों को इस सम्बन्ध में एक सुधार की घोषणा करके, उसके अनुसार अमल करना हो शोभा दे सकता है।

और एक चौथी बात भी सुधार के योग्य दीख पड़ती है। वह यह कि जहां किसी एक ग्राम में किसी मुनि या साध्वीजी ने संथारा किया, कि लोगों के झुण्ड के झुण्ड अन्य ग्रामों या अन्य प्रान्तों से आना प्रारम्भ हो जाते हैं। आने वाले न समय देखते हैं न संयोग, न पूर्वा पर का विचार ही करते हैं और दौड़ धूप प्रारम्भ कर देते हैं। अनेक स्थानों पर संथारा होजाने के बाद, इस तरह की गड़बड़ से जो क्लेश उत्पन्न होगये, वे अब तक भी नहीं मिट पाये हैं। संथारा करने वाले, अपनी आत्मा की समाधि के लिए संथारा कर रहे हों, उसमें दौड़ धूप करके, स्थानीय संघ को अपार कठिनाई में डाल देना, इसका क्या प्रयोजन है? अब भविष्य के लिये यह पागलपन बिलकुल ही बन्द होजाय, इसके वास्ते इस साधु-परिषद् को एक प्रस्ताव अवश्यमेव पास करना उचित है।

मैने जो कुछ सूचित किया है, वह मेरा अपना विचार है, इसलिए मै आप दयालु देवों के चरणों में, इस सम्बन्ध में जो उचित जान पड़े, वह करने की प्रार्थना करता हूं। आशा है कि मुझे साधुओं का प्रेमी मानकर मेरी प्रार्थना पर ध्यान अवश्य ही दिया जावेगा। मैं निश्वास पूर्वक यह बात कह सकता हूं कि ऊपर सूचित की हुई बातों पर यदि इस समय ध्यान नहीं दिया गया, तो इसी युग और इसी काल में थोड़े दिन बाद ये सभी बातें स्वेच्छापूर्वक नहीं तो विवशता पूर्वक करनी पड़ेगी। यह बात मैं अपने अनुभव से कह सकता हूं।

इस पत्र में जिस तरह से सत्य कथन करना चाहिये, उस तरह यदि मैं न कर सका होऊं तो मुझे क्षमा कीजियेगा।

इस समय इतना ही।

सभी संघाड़ों का श्रावक होते हुए भी, किसी का रजिस्टर्ड नहीं हूं:—

पालनपुर }
गुजरात }

सन्तचरण सेवकः—
जीवा ईश्वर भणसाली की वन्दना।

इस के अतिरिक्त, निम्न महानुभावों के सन्देश और प्राप्त हुए थे—

अमयचन्द्-कालीदास खेतपुर, हरीलाल जीवराज भायाणी भावनगर, वीकमचन्द अमृतलाल अमरशेठ मोरवी, कालीदास नारायणदास हडोमा, लालचन्द डुंगरसी लींबडी, गांधी राय चन्द रतनसी बोटाद, हंसराजभाई लखमीचन्द अमरेली, ठाकरसी मकनजी घीमा जूनागढ, साधुमार्गी जैन-संघ रतलाम, पं० बेचरदासजी दोशी अहमदाबाद, श्रीसंघ करमाला, पालनपुर, मारवाड़ी या, जस्पाजी देवकरण गोंडल, मंगलदास खेसिंहभाई अहमदाबाद विजयमलजी कुंभट जोधपुर, पानाचन्द मायकचन्द महता अहमदाबाद, टी० जी० शाह बम्बई।

निम्न स्थानों से तार आये थे—

बोटाद श्रीसंघ, (स्व० देवीदासजी खेबरियाजी के कुटम्बीजनों की ओर से) पोरबन्दर जस्पाजी गोविन्दजी पोरबन्दर, जीवाभाई मयचालजी पालनपुर।

इन सब सन्देशों का सुनाये जाने के पश्चात्, सम्मेलन के मन्त्री श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी ने, अपना भाषण यों प्रारम्भ किया—

जब सूर्य प्रकाशमान हो तब जुगनू क्या बोले ! और बोलने का तो यह जमाना भी नहीं है, केवल वाणी का विलास करने की अपेक्षा कर्त्तव्य कर दिखलाना ही इस युग के अनुकूल कार्य है। साधु-सम्मेलन की प्रेरणा मुनिप्रवर पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के प्रति आभारी है। इसके बाद आचार्यों में आदर्श गिने जाने वाले पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने दिल्ली में साधुओं तथा समाज की छिन्न भिन्न दशा सुधारने के लिये, सम्मेलन करने की बात पर खूब जोर देकर उत्साह दिखाया था। दूसरे साधुओं से मिलने पर उनके हृदय में भी मैंने बड़ा परिवर्तन हुआ देखा। अतः यह कार्य उन सब की कृपा से प्रारम्भ हुआ है। और आज इस प्रान्तिक सम्मेलन में, हम सब लोग एकत्रे हो सके हैं। जब २ शिथिलता दीख पड़ी है, तब २ उसे दूर करने के लिये लोंकाशाह धर्मदासजी धर्मसिंहजी आदि प्रभावक पुरुष उत्पन्न हुए हैं। उनके पुण्य से आज हमारे साधु-महात्माओं को भी सद्बुद्धि सूझी है, यह प्रसन्नता की बात है। दामोदरदासभाई वीरजीभाई, हंसराजभाई त्रिभुवनलालभाई आदि बुद्धिमान् श्रावक भी यहां पधारे हैं कान्फरेन्स ने जो यह प्रयास किया उसमें पहिला मौका काठियावाड़ को मिला और सम्मेलन के कल्पवृक्ष का बीज आज यहां बोया जाय यह कुछ कम सौभाग्य की बात नहीं है। मुनिराजों से कुछ कहने के योग्य मैं नहीं हूं। किन्तु उनपर स्था नकवासी संघ का बोझा है। वे कप्तान हैं और संघ जहाज है। जहाज पर कोई आकस्मिक विपत्ति पड़े और उस समय कप्तान सोया हो तो जहाज डूबेगा ही। इसी तरह मुनिराजों का भी जागृत रहना आवश्यक है। आज का दिवस शुभ है। और सम्मेलन की शुरूआत भी अच्छे संयोग में हुई है। राज-कोट की भूमि पवित्र है। बेचरजी स्वामी जैसे साधु पुरुष, जो कि जगद्वंद्य पूज्य महात्मा गांधीजी के मार्ग प्रेरक बने थे की जन्म भूमि भी यही है। आज के इस शुभ प्रसंग पर, श्री देवीदासजी खेबरिया की कमी बहुत अखर रही है। मैंने अपने कर्त्तव्य का पालन किया है और मुझे पूर्ण आशा है, कि आप सब महानुभाव, इस शुभावसर का ऐसा सदुपयोग करेंगे कि इतिहास में इस सम्मेलन की स्मृति अमर हो जाय।

आपके भाषण के पश्चात्, शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने अपना भाषण यों प्रारम्भ किया—

आज, यहां आनन्द है। मैं नहीं समझता, कि पिछले पच्चीस या पचास-वर्षों में, ऐसा अवसर आया हो। यह मांगलिक प्रसंग है और दिन भी नवमी का शुभ है। यह दिन ही मांगलिक है। हम लोगों का यदि कोई तीर्थ है तो वह साधु ही है। 'तीर्थ भूताहि साधवः' 'साधूना दर्शन पुण्य'। महावीर स्वामी ने जिस तीर्थ की स्थापना की, उसके साधु साध्वी और श्रावक-श्राविका, यह चार अंग हैं। ये चारों अंग स्थिर होने चाहिएँ। उनमें यदि कुछ कमी हो तो उसे सुधारना आरम्भ करना चाहिये। मुनिवरों की इच्छा है कि आज का व्याख्यान हम लोगों की मूल भाषा—अर्धमागधी में ही हो, यह उचित है। मुझे भी यही श्रेष्ठ जान पड़ता है। अतः मैं आपकी इच्छा से, अपना व्याख्यान अर्द्धमागधी में ही दूंगा। भिन्न भिन्न सम्प्रदायों का मिलना दुष्कर होता है। आज यह शुभ प्रसंग प्राप्त हुआ है। यह देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता होती है।

इसके पश्चात्, श्री शतावधानीजी महाराज, संस्कृत के श्लोक बोल बोलकर, उन पर अर्द्ध-मागधी में प्रवचन करते गये। मूल श्लोक तो प्राप्त हो गये, किन्तु उनको वह प्राकृत व्याख्या न मिल सकी। अतः केवल श्लोक उधृत करके सन्तोष करना पड़ता है।

श्लोकः—

सम्मेलनं तीर्थपतेः सभाया, देवादिक द्वादश पार्षदानाम्।
ख्यातं च तद् गौतमकेशिसत्कं, प्रदेशिकेशीयमपि प्रसिद्धम्॥

सम्मेलन प्राङ्मथुरापुरेऽभू-
यन् माथुरी वाचनया प्रसिद्धम्।
सूरीश देवर्द्धि कृतं द्वितीयं,
सम्मेलनं वल्लभिपत्तनीयम्॥
आचार्य मुख्या मिलिता इहाष्टौ,
कृतं समालोचनमाप्त शास्त्रे।
सूत्राणि सर्वाणि दलांकितानि,
कृत्वा महत्त्व प्रथितं सभायाः॥
सम्मेलनं पञ्च युगाश्रितानां,
कच्छ प्रदेशे क्रियतां मुनीनाम्॥
इदं महत्त्वापि महत्त्वपूर्ण,
बीजं वटस्यास्ति कियन्महद्वा॥
श्री पूज्यपादाः गणिसोहनाभिधा,
पंचाम्बु देश्या गुणिनो गुणाढ्या।

कार्यैक्यमपि भिन्न सम्प्रदाये,
सिद्ध मम येर्मुनिसंघ धीरै ॥
आगामि पर्वे ऽखिल भारतीय,
सम्मेलन पञ्चमवेग्मुनीनाम् ॥
तद्भूमिका निर्मितये प्रवृत्त,
सम्मेलन गूर्जर देशमेतत् ॥
यस्याधरे तन्नगरस्य नूनं
धन्यश्च संघः किल राजपुर्यः ।
यत्रागता साधुजना विभिन्ना
देशात्समासाद्य विहार कष्टम् ॥
प्रथमप्रमोदो मममानसेऽस्ति
तथैव सर्वे मुदिता विभान्ति ।
सम्मेलनं स्यात्सफलं तदा तु,
येषा मपिस्युर्मुदिता नितान्तम् ॥
सकारण आगमनं मुनीनां,
सम्पूर्णता मात्र पुनोति चित्तम् ।
निष्कारणं चागमन तु येषां
सम्पूर्णता तापयतीह चेतः ॥

सम्मेलने फल मुख्यं संघाम मुनि मण्डले ।
भिन्नेषु सम्प्रदायेषु सयुक्तत्व योजनम् ॥
सर्वेषां सम्प्रदायानां शक्तिः क्षीयाम दृश्यते ।
नास्ति संघ बलं सम्यग् येन शैथिल्य वर्धनम् ॥
क्रियाभ्रमाः क्वचिच्चास्ति ज्ञानभ्रमाः क्वचित्क्वचित् ।
क्वचित्स्वच्छन्दतावृद्धिः क्वचिद्भिन्ना परस्परम् ॥
विधर्म्यन्ते क्वचित्क्लेशाः वैमनस्यं क्वचित्क्वचित् ।
एकत्र सम्प्रदायेपि भिन्ना-भिन्ना प्ररूपणा ॥
प्रत्यार्थेपित्स्मीकत्र चान्य-प्रत्यानमन्यतः ।
विज्ञान धर्मयोर्मार्गो भिन्नः स्यादिति मन्यते ॥
एतादृश्यस्थितौ सत्यां कर्तव्य किंच साधुभिः ।
इति पृष्टे मतीम्येतत् संधान क्रियतां मुदम् ॥
समितिः स्थापनीयेका सकल साम्प्रदायिकी ।
तयैव करणीयः स्याच्चातुर्मासादि निर्णयः ॥
प्रायश्चित्तादिकं कार्यं यत्र गच्छे न पार्यते ।
समित्या साधनीय तत् सर्वाधिष्ठित्तसत्तया ॥

इन श्लोकों पर, शतावधानीजी की विस्तृत अर्द्धमागधी-व्याख्या होजाने के पश्चात् मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने अपना भाषण प्रारम्भ किया। आपके कथन का सारांश यों है:—

प्रत्येक मुनिराज यदि एक ही ध्येय रक्खे, तो साधु-सम्मेलन के द्वारा एक संगीन कार्य पूरा हो सकता है। भगवान ने मोक्ष के बीज रूप दो बातें कही हैं। एक तो यह, कि मेरे शिष्य प्रकृति के भद्र और मान ममत्व आदि को दूर करके विजयी हों और दूसरी बात यह, कि जैन-सिद्धान्त का मूल, मान ममत्व दूर करने पर ही है। जहां सरलता है, वहीं विजय है। जान पड़ता है, मानो लोंकाशाह ने तीनसौ वर्षों के पश्चात् यह सन्देश फिर भेजा है। यहां एकत्रित मुनिवर्ग का, मुझे यह भाव जान पड़ता है, कि सब सरल-हृदय से अच्छा कार्य करने की प्रबल-इच्छा रखते हैं। इस समय जो ऐक्य यहां दीख पड़ता है, वह स्थिर रहे और सन्तोषपूर्वक अच्छा एवं निर्वाह होने योग्य कार्य यह समिति करे, यही आवश्यक है। अब उदय होने का समय प्राप्त होगया है। ऐसा शुभ-प्रसंग उपस्थित करने के लिए कान्फरेंस को धन्यवाद है।

* * * * *

तत्पश्चात् मुनि श्री माणिकचन्द्रजी महाराज ने संक्षिप्त भाषण फरमाया, जिसका आशय यह था—

भगवान् ने दो प्रकार का बल कहा है। चारित्र्य बल और ज्ञानबल। जब चारित्र्य में कमी आती है तब शिथिलता, छिन्नभिन्नता और स्वच्छन्दता बढती है। अपने समाज में, आज हम लोग यही देख रहे हैं। इस त्रुटि को दूर करने के लिए ही मुनियों तथा श्रावकों ने यह कार्य प्रारम्भ किया है। भिन्नता, चारित्र्यबल की कमी के कारण पैदा होती है। इस अवसर पर, वे ही कार्य करने चाहिएँ, जिनसे पारस्परिक प्रेम की वृद्धि हो।

* * * * *

आपके बाद, मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज का, निम्नाशय का संक्षिप्त भाषण हुआ:—

जब श्रावक और साधुगण साथ मिलकर कार्य करेंगे तभी कार्य दृढ़ हो सकता है। जिसके हृदय में सच्चा-ज्ञान होगा, उसके हृदय में गरीबी और नम्रता अवश्य होगी। ज्ञान गरीबी और गुरुवचन ये कंचन की तरह हैं। गरीबी हो, तभी मोक्ष का साधन हो सकता है। हम लोग इसी भाव से कार्य करेंगे, तो अवश्य ही आदर्श-कार्य होगा।

* * * * *

तदुपरान्त मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज ने, इस आशय का भाषण फरमाया:—

सत्य और शील से भरपूर ज्ञान, और नीति से अलंकृत, आधि, व्याधि तथा उपाधि से मुक्ति दिलाने वाले भगवान के वचनों का अनुसरण करके हम लोगों को अपना संगठन करना चाहिये। श्रावकों की सहायता के बिना, साधु लोग एक भी कदम आगे नहीं बढ़ सकते। इसलिए

इस कार्य में, श्रावकों के सहयोग की पूर्ण आवश्यकता है। बड़े परिश्रम के पश्चात् प्राप्त हुआ आज का प्रसंग उज्ज्वल एवं पवित्र करने का प्रयत्न होना चाहिये और इस अवसर को प्रमाद में व्यर्थ न जाने देना चाहिये। मुनियों को संगठित रह कर कार्य करना है। बड़ी प्रसन्नता की बात है कि सब का भाव एक समान ही है। मुनिराजों से मेरी प्रार्थना है कि केवल प्रस्ताव पास करके बैठे रहने का युग अब नहीं रहा, बल्कि उन्हें कार्य रूप में परिणत करने की आवश्यकता है।

\+ • • • •

आपका भाषण समाप्त होने पर मुनि श्री फूलचन्दजी मुनि ने अपना वक्तव्य देते हुए कहा—

धर्म ही मंगल है। और धर्म को मंगलमय बनाये रखने में, चारित्र शुद्धि की बड़ी आवश्यकता है। अब ज़माना बदल गया है और क्षत्रियपन बतलाने की आवश्यकता है। चारित्र के बल से ही धर्म की वृद्धि और उद्धार हो सकता है। साधुओं के सुधार की बड़ी आवश्यकता है। आज के ज़माने में, ज्ञान की भी बड़ी आवश्यकता है। और इसमें हम लोग पिछड़े हुए हैं। ज्ञानशून्य-क्रिया का आज कुछ भी अर्थ नहीं है इस लिये साधुओं तथा श्रावकों को, ज्ञान प्राप्त करने के लिये पर्याप्त प्रयत्न करना उचित है।

• • • • •

इसके बाद, मुनि श्री वीरजी स्वामी ने फरमाया—

साधुओं को ज्ञान, बल की बड़ी आवश्यकता है। केवल ज्ञान से या अकेली क्रिया से कार्य नहीं चल सकता। चारित्र-बल में, स्थानकवासी साधुगण खूब आगे हैं। अब यदि ज्ञानबल में भी आगे बढ़ जायँ, तो समाज और धर्म का उद्धार शीघ्र ही हो जाय।

• • • • • • • •

अन्त में, उपसंहार करते हुए, श्री दुर्लभजी भाई ने बतलाया कि आज स्वाति की बूंदें गिर रही हैं। इनका सदुपयोग कीजियेगा और समुद्र में मोती पिरो लीजियेगा तथा अपने चारित्र की रक्षा कीजियेगा। यही प्रार्थना है।

• • • • • • • •

इसके बाद सभा समाप्त हो गई और वहीं दिन रात्रि को बाहर से पधारे हुए निमन्त्रित श्रावकों की प्रथम बातचीत हुई। इस बैठक में प्रान्तवार मुनि महात्माओं से विचार विनिमय करना तय हुआ। तदनुसार ता० [illegible] को गुजरात के मुनिराजों ने श्रावक समिति के सदस्यों से विचार विनिमय किया। तदुपरान्त निश्चय और नियम के अनुसार [illegible] मुनिराजों की प्रारंभिक सभा शुरू हो गई।

इस प्रारंभिक सभा में पढ़े जाने के लिये श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी, मंत्री साधु सम्मेलन समिति ने अपना यह सन्देश भेजा था।

पूज्य मुनि-महात्माओं के चरणों में—

आपकी निजी-सभा में, सदेह हाजिर न हो सकने के कारण, यह प्रार्थना प्रस्तुत करता हू। यद्यपि मेरा शरीर वहां अनुपस्थित है, किन्तु जीव तो वहीं है।

आपको, यहां पधारने के लिये हमने ही ललचाया। आपने हम पर विश्वास रखकर यहां पधारने का परिश्रम उठाया। आपकी आत्मा की शान्ति के साथ, सरलता से सघठन हो, और आपका आदर्श अखिल भारतवर्ष के महा-सम्मेलन की मजबूत नींव गिना जाय, इसके लिये आपको ऐसे ही निर्णय पर पहुंचाने की सद्‌बुद्धि श्री शाशनदेव प्रदान करें, यह मेरी आन्तरिक भावना है। आपकी प्रतिष्ठा का अभी और आगे रक्षण किया जाय, यही मेरा मनोरथ है। सवेरे जो चर्चा हुई है, उससे आपको किंचित् भी न घबराना चाहिये, बल्कि समाज का हृदय कैसा है, यह समझने का, वह आपके लिये एक अच्छा मौका था, यह मानकर आपको अपना भावी मार्ग निश्चित करने में, उस बात-चीत को चेतावनी जानकर, सहन कर लेने की आपकी शक्ति के लिये धन्यवाद देता हुआ मैं, यह प्रार्थना करूंगा कि अब जमाना जागृत हो गया है। इस अवसर पर, समाज के साथ रहने में आपको समयसूचकता से काम लेना चाहिये, यही विवेक गिना जा सकता है, शेष आप किंचित् भी निराश न होइयेगा। घबराने की भी कोई आवश्यकता नहीं है। बैण्ड के सुन्दर शब्दों में, रणढोल के शब्द को कर्ण कठोर न मानना चाहिये। संघों की सम्मति प्राप्त करने निकलने का बोझा, श्रावकों की समिति पर रखना श्रेष्ठ होगा। जहां-जहां आवश्यकता जान पड़े, वहां साधुओं को चेताते रहने का श्रावकों के अधिकार का विवेक भी कार्य में लेना चाहिये। ऐसी सादी योजनाओं से भी, आपके गौरव की वृद्धि ही होगी।

आपकी विजय की इच्छा रखता हुआ और कहने वालों की बातें गिनकर गांठ में न बाधकर, उन पर दया करके अपनी जोखिमदारी का ध्यान रखकर जागृत रहें—इस भावना के साथ दर्शनातुर—

—दुर्लभ

अब प्रतिदिन श्रावक-समिति की बैठकें होतीं और जो बात मुनिमण्डल से प्रार्थना करने के योग्य जान पड़ती, वह प्रार्थना कर दी जाती थी, उधर, मुनि-सम्मेलन हो रहा था, किन्तु उसकी सारी कार्यवाही गुप्त रखी जा रही थी। ता० ६-३ ३८ तक यही दशा रही। जनता, साधु-सम्मेलन का परिणाम जानने को उत्सुक थी, किन्तु मनोवैज्ञानिकों की भांति, मुनिराजों के चहरों का अध्ययन करने के अतिरिक्त, उसके पास और कोई साधन ही न था। इतना होते हुए भी लोगों को लक्षण देख देखकर यह विश्वास हो रहा था, कि साधु सम्मेलन सफल ही होगा, असफल नहीं। अन्त में, साधु सम्मेलन समाप्त हुआ और ता० ७ ३-३८ सोमवार के दिन सम्मेलन की पूर्णाहुति बतलाने वाली सम्मिलित सभा का आयोजन हुआ।

इस सभा में, सम्मेलन का परिणाम प्रकट होने वाला था, अतः सभी मुनिराज तथा साध्वीजी, एव राजकोट श्री सघ और बाहर के आमन्त्रित श्रावकबन्धु इस में पधारे थे। दर्शकों की बहुत बड़ी सख्या थी। इस तरह सभा भवन मनुष्यों से भरा हुआ था। भगवान के कल्पित सम-

वसरण की यह छोटीसी आकृति देख देखकर दर्शकगण मुग्ध हो रहे थे। सब लोगों के हृदय सम्मेलन का परिणाम सुनने को उत्सुक हो रहे थे।

प्रारम्भ में, मंगलाचरण हुआ। इसके बाद, शतावधानी पं० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने सम्मेलन के कार्यों के प्रति अपना सन्तोष प्रकट किया और इस विषय में निर्देश करते हुए निम्न श्लोक कह कहकर इन पर विस्तृत व्याख्या की।

❀ पर्वतिथ्यैक्यम् ❀

एकस्मिन्नेव पक्षे स्यात्संवत्सरी च पक्खिका ।
सर्वेषु सम्प्रदायेषु तदस्त्यत्रसम्मत वरम् ॥ १ ॥

पर्वैक्ये वर्धते शोभा पर्वैक्ये शक्तिवर्धनम् ।
पर्वैक्ये शासनोद्दीप्तिः पर्वैक्ये क्लेशनाशनम् ॥ २ ॥

पर्वभेदे संघभेदस्तस्मिंश्च क्षीयते बलम् ।
क्षीणे बले पराक्रान्तिस्तस्यां न धर्मे पालनम् ॥ ३ ॥

कथमैक्यमिति प्रश्ने चिन्तनीयं महात्मभिः ।
सर्वेषां न्यायदृष्टिश्चेन्नास्ति किञ्चिच्च दुर्घटम् ॥ ४ ॥

प्रत्यक्षेण प्रमाणेन शास्त्रार्थश्चानुभूयते ।
प्रत्यक्षेण विरुद्धस्तु धीमद्भिर्नैव मन्यते ॥ ५ ॥

अन्यथा सत्यतत्त्वज्ञा भिक्षुपुङ्गवसम्मतम् ।
एतन्महात्मना मार्गं स्वीकुर्युर्मिलितास्तथा ॥ ६ ॥

यत्र सत्याग्रहो मिथ्या ममत्वं चापि निष्फलम् ।
सत्यं सिद्धं भवेद्यच्च सत्यं तेनैव नो भवेत् ॥ ७ ॥

योग्य-दीक्षा

वैराग्यवानदीनाङ्गोऽनपराधी निरामयः ।
निष्कलङ्को ऽनृणी धीमान् दीक्षायोग्यो भवेज्जनः ॥ १ ॥

नातिपिष्ठो गरिष्ठो वा स्याच्च योग्य यथास्तथा ।
पित्रादिभिरनुज्ञातो दीक्षा योग्यो भवेज्जनः ॥ २ ॥

परस्परं सहयोगेन महद्भिर्निर्णये सति ।
सर्वेषामायतीस्यन्तां दीक्षितु लभ्यते पुनः ॥ ३ ॥

शिक्षा-प्रबन्ध

विद्याभ्यासं विनान्यत्किं कार्यं स्याद्दीक्षितस्य वा।
मुनयोऽध्यापका यत्र तादृग् गुरुकुलं भवेत् ॥ १ ॥
तस्मिन्विद्यालये शिष्या स्थापनीया गुरूत्तमैः।
संस्कृतं प्राकृतं सूत्र मध्येतव्यं यथामति ॥ २ ॥
शिक्षकाणांच शिष्याणां संभोगोऽस्तु च सर्वथा।
सम्पन्नेऽध्ययने वर्षै स्त्रिभिर्वा पंचसप्तभिः ॥ ३ ॥
परीक्षा मण्डलेदेया तत्रोत्तीर्णो भवेद्यदि।
वक्तृत्व शिक्षणं सम्यग् दातव्यं तद्विशारदैः ॥ ४ ॥

व्याख्यातृ-योग्यता

निपुणः साधदा वक्ता जैनशास्त्र विशारदः।
भाषा विद्देशकालज्ञः समाधि भावना युतः ॥ १ ॥
स्पष्टवक्ता विनम्रस्यान्नात्मश्लाघी न निन्दकः।
एतादृशो ऽधिकारीस्याद् व्याख्यातुं जनमण्डले ॥ २ ॥

साहित्य प्रकाशनम्

साहित्यं द्विविधं प्रोक्तमागमेतर भेदतः।
मुख्यमागम साहित्यं तन्निःशंकं भवेद्यथा ॥ १ ॥
तथा तद्योजना कार्या भिन्न भिन्नानु योगतः।
तत्र प्राधान्य गौणत्वं स्थापनीयं समीक्षतैः ॥ २ ॥
साहित्य रचनाकार्ये मुनीनां नैव बाधनम्।
प्रकाशनं गृहस्थानां समिते कार्य मिष्यते ॥ ३ ॥
प्रकाशन व्यवस्थायां तथा तत् क्रय विक्रये।
मुनीनां स्यात् न सम्बन्धः प्रबन्धोऽभिमतस्तथा ॥ ४ ॥
बुद्धिगम्यं तु साहित्यं प्रसिद्धं यदि नो भवेत्।
अन्य धर्मे प्रवेशः स्यात्केषांचिदिति नो मतम् ॥ ५ ॥

इन श्लोकों पर तथा प्रथक्, शतावधानीजी ने जो व्याख्या की, उसका संक्षिप्त आशय यों है।

आज आम महीमा खतम होता है। चतुर्विध संघ एकत्रित हुआ है। पहले दो अंग थे, आज चार अंग मिले हैं। तीर्थंकर जैसे भी तीर्थ को नमस्कार करते हैं। तीर्थ यानी संघ और संघ का अर्थ है—एकता। सम्मिलित होने पर संघ कहा जाता है। और इसी संगठन के लिये यह सम्मेलन है। सम्मेलन का आज सातवां दिन है। छः दिन तक कामकाज चला है। संघ के संगठन का अर्थ है—श्रमण का हृदय। जैन-धर्म की जैसी प्रतिष्ठा पहले थी, वैसी ही अब फिर हो, इसी एक बात पर विचार करने के लिये इन दिनों खूब प्रयत्न हुआ है। आमन्त्रण पत्रिका में, सात विषय रक्खे गये हैं। उनमें सब से अधिक महत्व का प्रश्न संगठन है। पहले मूल तो एक सम्प्रदाय थी। ये सब शाखायें केवल सवासौ-वर्ष के भीतर ही हुई हैं। इन शाखाओं को संगठित करने का उद्देश्य सफल हुआ है और सम्मेलन का सब से पहला फल संगठन मिला है। यहां पधारे हुए मुनिराज सरल स्वभाव वाले हैं और उनकी सहानुभूति से सब कार्य हो सके हैं। जो सम्प्रदायें यहां नहीं पधारी हैं, उनके मुनि भी यदि पधारे होते तो बड़ा आनन्द होता। किन्तु उनके न पधारने पर भी हमारा ऐसा विश्वास है कि सम्मेलन में जो कार्य हो गया है, उसमें अपनी अनुमति प्रकट करके, वे निश्चय ही संगठन को मजबूत बनाने में सहायक होंगे। इस तरह अनेक सम्प्रदायों का संगठन हो गया है। और समिति के रूप में संगठन एवं नियमादि की रचना हुई है। सभी सम्प्रदायों में संवत्सरी एक ही हो यह आवश्यक है और ऐसा ही होना भी चाहिये, ऐसा हमारा दृढ़ मत है। कारण कि सब का संगठन हो ज्ञान पर बल की वृद्धि हो शोभा की वृद्धि हो फजीता पड़े और संघ में शान्ति की स्थापना हो। दीक्षा देने से पहले यह जान लेना आवश्यक है वैरागी में वैराग्य है या नहीं? और यदि है तो वह ज्ञानगर्भित है या मोहगर्भित?

सम्मेलन का कार्य, सफलता पूर्वक पूर्ण हो गया है। इस सम्मेलन से मुनियों में खूब प्रेम-भाव की वृद्धि हुई है, यह जानकर आप लोगों को बड़ी प्रसन्नता होगी। राजकोट श्री-संघ ने सम्मेलन को अपने आँगन में न्योतकर, जिस रूप का मुकाबिला किया, दुर्लभजीभाई ने जो प्रयास किया उसके कारण यह सफलता मिली और सम्मेलन ने संगठन की नींव डाली है। चतुर्विध-संघ का संगठन हो, यही हमारी भावना है। इसके लिये जो भी परिश्रम करना पड़े वह करने के लिये हम लोग तैयार हैं। आप लोग भी, आत्म-बलिदान करने को तैयार रहिये। यदि आप लोगों की सहानुभूति हो, तो हमारा कार्य सरल हो जाय और सब कठिनाइयां दूर हो जायँ।

* * * * *

आपके विस्तृत-भाषणोपरान्त सम्मेलन के मन्त्री श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी ने, यों कहना आरम्भ किया:—

यह समवसरण देखकर किसे प्रसन्नता न होगी? आज का आनन्द अपूर्व है। इसी प्रसंग के लिये, श्री अमृतलालभाई, श्री दामोदर भाई श्री वीरजी भाई, श्री हंसराजभाई, श्री जेठालाल भाई जैसे श्रावकगण यहां पधारे और हमारा कार्य सफल बना दिया। यह प्रसन्नता की बात है। धारा सभा में बड़ौदा सरकार का निमन्त्रण पाकर भी न जाने वाले श्री दामोदरभाई हम लोगों की भावना से प्रेरित होकर दामनगर से यहां पधारे और हम श्रावकों के कार्य के नायक बनकर अपनी दीर्घ दृष्टि से, सम्मेलन के कार्य में सफलता प्राप्त करवाई, स्वास्थ्य अच्छा न होते हुए भी, श्री गुलाब

ानोजी महाराज ने, खूब परिश्रम उठाया है। इसी तरह सभी मुनिराजों की सरलता एव भला करने ी भावना के कारण, आज यह सुन्दर परिणाम हम लोगों को प्राप्त हो सका है।

काठियावाड़ और गुजरात के अधिकांश अनुभवी मुनिगण राजकोट पधारे हैं। उन्होंने पनी दीर्घ दृष्टि से, भावी सुधार की योजनाओं तथा प्रस्तावों का मसविदा तैयार किया। जो मुनि-ाज यहां नहीं पधार सके हैं, वे भी इस सगठन में सम्मिलित हो सकें, इसलिये तथा और जो महत्व-ूर्ण सूचनाएँ उनकी ओर से प्राप्त हों, उनके अनुसार इस मसविदे का सुधार करने तथा घटाने बढाने ा अवकाश रहे, इस लिये इन प्रस्तावों को एक मास पश्चात् प्रकाशित करना तय हुआ है। यहां प-ारे हुए मुनिराजो ने तो, इन प्रस्तावों को पक्के प्रस्तावों के रूप में ही स्वीकार किया है। जिन्हें ्रस्तावों के रूप में ही स्वीकार किया है। उनका प्रस्तावों का सार निम्नानुसार है।

नोट—इसके बाद श्री दुर्लभजीभाई ने सभी प्रस्तावों का सार बतलाया। किन्तु वे सभी प्रस्ताव आगे चलकर सर्वानुमति से स्वीकृत होकर विस्तृत-रूप में दिये जा रहे हैं। यही कारण है कि उनके द्वारा बतलाया हुआ वह सार यहां नहीं उद्धृत किया जाता।

* * * * * * * *

आपके भाषणोपरान्त, श्री जेठालाल रामजीभाई ने कहा—

मुनिराजों ने लम्बा विहार करके, अपने कर्तव्य के पालन का जो ज्ञान हम लोगों को सिखलाया है, उसके लिये हमें उनका उपकार मानना चाहिये। इस जमाने में, सब लोगों के जागृत रह-ने की आवश्यकता है। केवल साधुओं के ही नहीं, बल्कि श्रावकों के सगठन की भी बड़ी जरूरत है। वर्त्तमान देश-काल का ध्यान रक्खे बिना, उन्नति नहीं हो सकती। जमाने को देखकर विचारों में परि-वर्तन करना चाहिये।

आज, हम लोग, बहुतसी बातों में, विवेक दृष्टि खो बैठे हैं। और इसी कारण वर्तमान-काल में इतने पिछड़े हुए हैं। अब मान और ममत्व को छोड़कर, हम लोगों को जागृत रहना तथा प्रत्येक कार्य उदारतापूर्वक करना चाहिये। केवल प्रस्ताव पास करके बिखर जाने से कार्य नहीं चल सकता।

* * * * * * * *

तत्पश्चात श्री दामोदर भाई जगजीवन ने अपना भाषण देते हुए कहा:—

सम्मेलन में जितना भी कार्य हुआ है, उससे सबको सन्तोष प्राप्त हुआ, यह प्रसन्नता की बात है। सम्मेलन को सफल बनाने में, दो वर्गों की लगन कार्य कर रही थी। एक तो मुनिराजों की और दूसरी श्री दुर्लभजी भाई की। और इसी के परिणाम स्वरूप आज यह सफलता दृष्टिगोचर हो रही है। राजकोट के, श्रीसंघ ने यह सेवा स्वीकार करके मिहमानों का स्वागत करने में भी कोई कसर नहीं रक्खी। संगठन करने की आवश्यकता आज हम लोगों के सामने खड़ी है। यह आवश्यकता क्यों पैदा हुई? लोग यदि ध्येय के सहारे चलते हों और सब का ध्येय

एक ही हो तो संगठन की जरूरत नहीं रहती। आदि काल में इसी तरह बिना संगठन के कार्य चलता था। इसके बाद दूसरा नामी सिद्धान्त-काल आया। इस काल में मनुष्य अपना ध्येय भूल जाता है और स्वय निश्चित किये हुए सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करता है। यहां तक भी खैरियत है। किन्तु, जब सिद्धान्तों को भी भुला दिया जाता है और सब कुछ 'व्यक्ति' पर ही आ जाता है और मेरी-तेरी की हलकी भावना उत्पन्न होजाती है, तब निश्चय ही पूरी तरह अधःपतन होता है। जब ऐसी स्थिति आजाती है तब उसका सुधार करने के लिये संगठन की आवश्यकता उत्पन्न होती है। मुनिराजों ने इस सम्मेलन में, मर्यादा बनाई है—नियमों की रचना की है। किन्तु यहां एक बात कह देना आवश्यक समझता हूं, कि केवल बन्धनों के कारण ही नियमों का पालन नहीं हो सकता। नियमों के प्रति, जब हृदय में सद्भाव होगा, तभी उनका पालन हो सकता है। ऐसी सद्भावना और उत्कट लगन, साधुओं तथा श्रावकों और साध्वियों तथा श्राविकाओं को अपने में पैदा करनी चाहिये। सड़ापन केवल एक ही वर्ग में नहीं बल्कि सब अंगों में है। सब में यह बिगाड़ कैसे पैदा हुआ? अकेले साधुओं या अकेले श्रावकों से ही यह हुआ हो, ऐसी बात नहीं है। जब तक परस्पर एक दूसरे के बिगाड़ का पोषण करने की शिथिलता होगी तभी तक बिगाड़ का अस्तित्व रह सकता है। साधु सम्मेलन के लिये कोई यह कह सकता है, कि इसके द्वारा क्या सुधार हुआ? तो उसको उत्तर दिया जा सकता है, कि वीतराग देव का मार्ग या उसकी अपेक्षा से कुछ सुधरा नहीं यह सत्य है। किन्तु दूसरी अपेक्षा से वर्तमान शिथिलाचरण की दृष्टि से सुधार अवश्य ही हुआ है। निश्चय और व्यवहार का भेद का यह पाठ है।

दूसरा मनुष्य यह कह सकता है कि यह व्यवस्था पालन न होगी टूट जायगी। इसके उत्तर में यह बात कही जा सकती है, कि यदि ऐसा ही होने की भावी होगी तो उसमें हम लोगों का कोई दोष न रह जायगा।

श्री तीर्थंकर-देव ने जिनकल्पी और स्थविरकल्पी ऐसे दो कल्प बतलाये हैं। कोई महात्मा इस सम्मेलन में निश्चित् व्यवस्था से उच्च स्थिति में जाने के इच्छुक हों तो वे बड़ी प्रसन्नता से ऐसा कर सकते हैं। जो व्यवस्था बनाई गई है वह तो Minimum standard न्यूनतम अपेक्षा को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इस व्यवस्था में ऊंचे चढ़ने वालों के लिये कोई रोक नहीं है। किन्तु ऊपर जाने वालों के मन में नीचे वालों के लिये प्रेम बुद्धि होनी चाहिये।

दूसरों की निन्दा के द्वारा अपनी महत्ता स्थापित करने का लक्षण ऊँचे जाने वालों में न होना चाहिये। इस बात का ऊपर उठने की इच्छा रखने वालों को सदा ध्यान रखना चाहिये। जैन की स्याद्वाद-शैली समझना अत्यन्त कठिन है। सत्य मध्य में है। यदि इस बिन्दु को नहीं पकड़ सका तो वह निश्चय ही गिरेगा। आजकल यही स्थिति है और यह अत्यन्त दुखद है। यहां एकत्रित हुए श्रावक-श्राविकाओं से मेरी प्रार्थना है कि साधु-साध्वियों को सुधारने में सहायता पहुंचाओ। साधु यदि अपने नियमों से दूर जा रहे हों तो उन्हें कहना चाहिये चेताना चाहिये छिपाने का प्रयत्न कभी न करना चाहिये। साधुओं और साध्वियों के शिथिलाचरण का पोषण करके हम लोग ही शासन को मैला करते हैं। इस लिये आप समस्त श्रीसंघ से मेरी अर्ज है कि साधु साध्वियों के निमित्त कभी

हुई इस व्यवस्था को पार लगाने और उसका अमल करने के लिये कृत निश्चय बनियेगा। इसी में शासन की शोभा है।

* * * * * * * *

इसके पश्चात् श्री प्राणजीवन मुरारजी ने, यह अपूर्व अवसर राजकोट को प्रदान करने के लिये श्रीमती कान्फरेन्स का और स्वयसेवक बन्धुओं का, राजकोट श्रीसघ की ओर से उपकार माना।

अन्त में, कान्फरेन्स आफिस के मैनेजर श्री डाह्यालाल मेहता ने अपूर्व आतिथ्य के बदले राजकोट श्रीसघ का, दूर दूर से विहार करके पधारे हुए मुनिराजों का, श्री दामोदरदास भाई का तथा बाहर से पधारे हुए अन्य सलाहकार सज्जनों का कान्फरेन्स की ओर से आभार माना।

इसके बाद यह सभा समाप्त हो गई। सब मुनिराजों ने, अपने अपने अनुकूल क्षेत्रों की ओर विहार कर दिया और सम्मेलन के प्रस्ताव अनुपस्थित मुनिराजों की सम्मति के लिये भेज दिये गये। लगभग एक माह बाद राजकोट सम्मेलन के प्रस्तावों सम्बन्धी जो विज्ञप्ति श्री मन्त्रीजी की ओर से प्रकाशित हुई, उसका अनुवाद यहां दिया जाता है—

श्री महावीरायनमः

प्रान्तिक–साधु–सम्मेलन, राजकोट

हाजिरी--सं० १९८८ वीर स० २४५८ माघ कृष्णा ९ मगलवार के दिन, राजकोट मुकाम पर, साधु-सम्मेलन-समिति के आमन्त्रण से, लींबड़ी सम्प्रदाय, दरियापुरी सम्प्रदाय, गोंडल सम्प्रदाय लींबडी छोटी सम्प्रदाय, बोटाद सम्प्रदाय और सायला सम्प्रदाय की ओर से, प्रतिनिधि के रूप में आये हुए ठाणे २१ का सम्मेलन हुआ है। उन ठाणों की विगत यों है—

लींबड़ी बड़ी सम्प्रदाय—महाराज श्री वीरजी स्वामी तथा महाराज श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी ठा० ६

दरियापुरी सम्प्रदाय—महाराज श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी तथा महाराज श्री ईश्वरलाल जी स्वामी आदि ठा० ५।

गोंडल सम्प्रदाय—महाराज श्री कानजी स्वामी तथा महाराज श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी ठा० ३।

लींबडी छोटी सम्प्रदाय—महाराज श्री मणिलालजी स्वामी ठा० २।

बोटाद सम्प्रदाय—महाराज श्री माणेकचन्द्रजी स्वामी ठा० ३।

सायला सम्प्रदाय—महाराज श्री संघजी स्वामी ठा० २।

एक ही हो तो संगठन की जरूरत नहीं रहती। आदि काल में इसी तरह बिना संगठन के कार्य चलता था। इसके बाद दूसरा यानी सिद्धान्त-काल आया। इस काल में मनुष्य अपना ध्येय भूल जाता है और स्वयं निश्चित किये हुए सिद्धान्तों के अनुसार आचरण करता है। यहां तक भी खैरियत है। किन्तु, जब सिद्धान्तों को भी भुला दिया जाता है और सब कुछ 'व्यक्ति' पर ही आ जाता है और मेरी-तेरी की हलकी भावना उत्पन्न होजाती है, तब निश्चय ही पूरी तरह अधः पतन होता है। जब ऐसी स्थिति आजाती है, तब उसका सुधार करने के लिये संगठन की आवश्यकता उत्पन्न होती है। मुनिराजों ने इस सम्मेलन में प्रणाली बनाई है—नियमों की रचना की है। किन्तु यहां एक बात कह देना आवश्यक समझता हूं कि केवल बन्धनों के कारण ही नियमों का पालन नहीं हो सकता। नियमों के प्रति, जब हृदय में सद्भाव होगा, तभी उनका पालन हो सकता है। ऐसी सद्भावना और उत्कट लगन, साधुओं तथा श्रावकों और साध्वियों तथा श्राविकाओं को अपने में पैदा करनी चाहिये। सड़ापन केवल एक ही वर्ग में नहीं बल्कि सब अंगों में है। संघ में, यह बिगाड़ कैसे पैदा हुआ? अकेले साधुओं या अकेले श्रावकों से ही यह हुआ हो ऐसी बात नहीं है। जब तक परस्पर एक दूसरे के बिगाड़ का पोषण करने की शिथिलता होगी तभी तक बिगाड़ का अस्तित्व रह सकता है। साधु सम्मेलन के लिये कोई यह कह सकता है, कि इसके द्वारा क्या सुधार हुआ? तो उसको उत्तर दिया जा सकता है, कि वीतराग देव का मार्ग था उसकी अपेक्षा से कुछ सुधरा नहीं, यह सत्य है। किन्तु दूसरी अपेक्षा से वर्तमान शिथिलाचरण की दृष्टि से सुधार अवश्य ही हुआ है। निश्चय और व्यवहार का जैन का यह वाद है।

दूसरा मनुष्य यह कह सकता है कि यह व्यवस्था पालन न होगी टूट जायगी। इसके उत्तर में यह बात कही जा सकती है, कि यदि ऐसा ही होने की भावी होगी तो उसमें हम लोगों का कोई दोष न रह जायगा।

श्री तीर्थंकर-देव ने जिनकल्पी और स्थविरकल्पी ऐसे दो कल्प बतलाये हैं। कोई महात्मा इस सम्मेलन में निश्चित् व्यवस्था से उच्च स्थिति में जाने के इच्छुक हों तो वे बड़ी प्रसन्नता से ऐसा कर सकते हैं। जो व्यवस्था बनाई गई है वह तो Minimum standard न्यूनतम अपेक्षा को ध्यान में रखकर बनाई गई है। इस व्यवस्था में ऊंचे चढ़ने वालों के लिये कोई रोक नहीं है। किन्तु ऊपर जाने वालों के मन में, नीचे वालों के लिये प्रेम बुद्धि होनी चाहिये।

दूसरों की निन्दा के द्वारा अपनी महत्ता स्थापित करने का लक्ष्य, ऊँचे जाने वालों में न होना चाहिये। इस बात का ऊपर चढ़ने की इच्छा रखने वालों को सदा ध्यान रखना चाहिये। जैन की स्याद्वाद-शैली समझना अत्यन्त कठिन है। सत्य मध्य में है। यदि इस बिन्दु को नहीं पकड़ सकता तो वह निश्चित ही गिरेगा। आजकल यही स्थिति है और यह अत्यन्त दुःखद है। यहां एकत्रित हुए श्रावक-श्राविकाओं से मेरी प्रार्थना है कि साधु-साध्वियों को सुधारने में सहायता पहुँचाओ। साधु यदि अपने नियमों से दूर जा रहे हों तो उन्हें कहना चाहिये चेताना चाहिये छिपाने का प्रयत्न कभी न करना चाहिये। साधुओं और साध्वियों के शिथिलाचरण का पोषण करके हम लोग ही शासन को मैला करते हैं। इस लिये आप समस्त श्रीसंघ से मेरी अर्ज है कि साधु साध्वियों के निमित्त बनी

प्रतिनिधियों की योग्यता

(१) समझदार, निष्पक्षपाती और न्यायदृष्टि वाले मुनि को, सम्प्रदाय वाले प्रतिनिधि चुनें। यदि प्रतिनिधि में वैसी योग्यता न हो, तो उसके स्थान पर दूसरे मुनि को प्रतिनिधि चुनने के लिए, समिति उस सम्प्रदाय को सूचित करेगी।

(२) अध्यक्ष, मन्त्री, और प्रतिनिधिगण तीन तीन वर्षों के लिये चुने जावेंगे। तीन वर्ष के पश्चात् उन्हें ही रखना या दूसरे चुनना, इसका निर्णय समिति तथा सम्प्रदायों की मर्जी पर निर्भर है।

अध्यक्ष का कार्य

समिति के प्रत्येक कार्य पर अध्यक्ष को निगरानी रखनी पड़ेगी। साधु संगठन या क्षेत्र संगठन के कार्य में, किसी भी सम्प्रदाय वाले यदि सहायता मांगें, तो उन्हें प्रत्येक रीति से सहायता करनी होगी। समिति के नियमों के पालन में होने वाली लापरवाही दूर करने के लिये, मन्त्रियों के द्वारा, उन सम्प्रदायों को जागृत करना होगा। खास-बैठक या त्रैवार्षिक-बैठक की सब तरह से व्यवस्था करने में मुख्य-भाग लेना होगा।

मन्त्री का कार्य

मन्त्रियों को अपने अपने कार्य प्रदेश में पर्याप्त देखरेख रखनी पड़ेगी और अपनी सम्प्रदाय में, समिति के नियमों का पालन करवाने के लिये यथाशक्ति प्रयत्न करना होगा। यदि कोई पालन न करे, तो अध्यक्ष अथवा श्रावक समिति के द्वारा उससे अमल करवाना पड़ेगा। अपने २ साधु साध्वियों या क्षेत्रों का संगठन करने में पड़ने वाले विघ्नों को यथाशक्ति दूर करना पड़ेगा। समिति या महासम्मेलन के कार्य में जब अध्यक्ष सहायता मांगे, तब सहायता करनी होगी।

प्रतिनिधि का कार्य

प्रतिनिधि को, अध्यक्ष तथा मन्त्रियों का चुनाव निष्पक्ष भाव से करना, समिति की बैठक में, समय पर हाजिर होना, नये नियमों की रचना और संगठन आदि कार्यों में, न्याय दृष्टि से अपना योग्यमत प्रकट करना, समिति के नियमों का यदि कहीं उल्लंघन हो रहा हो, तो उसे यथाशक्ति रोकना, यदि उनसे न रुके तो मन्त्री से कहना। हां, इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि इस कथन से किसी के साथ अन्याय न हो और फिजूल ही किसी को परेशानी में न पड़ना पड़े।

उपरोक्त ६ सम्प्रदायों के ठाणे २१ इकट्ठे हुए हैं और दूसरी भिन्न भिन्न सम्प्रदायों ने सम्मति भेजी है या भेजने वाली हैं, वे तमाम इस व्यवस्था को स्वीकार फरमाने वाले मुनियों की ओर से शास्त्रपरम्परा और देश-काल के अनुसार नीचे लिखे प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकार किये जाते हैं—

भिन्न भिन्न सम्प्रदायों का संगठन

इस संगठन में सम्मिलित होने वाली सम्प्रदायों की एक संयुक्त-समिति बनाई जाती है। वह इस तरह, कि जिस सम्प्रदाय में दो से १० तक साधु हों, उसका एक प्रतिनिधि ११ से २० ठाणे तक के २ प्रतिनिधि, २१ से ३० तक तीन प्रतिनिधि। इस तरह प्रति १० ठाणे साधु के लिये एक प्रति निधि भेज सकते हैं। आर्याजी चाहे जितने ठाणे हों, उनकी तरफ से एक प्रतिनिधि और जिस सम्प्रदाय में केवल आर्याजी ही हों उस सम्प्रदाय की तरफ से समिति में सम्मिलित चाहे जिस सम्प्रदाय के एक मुनि को प्रतिनिधि बनाकर भेजा जा सकता है।

वर्तमानकाल में, भिन्न २ सम्प्रदायों के साधु-साध्वियों की संख्या निम्नानुसार है—

सम्प्रदाय	साधुजी	साध्वीजी
लींबड़ी बड़ी सम्प्रदाय	२९	६६
दरियापुरी सम्प्रदाय	२१	६०
गोंडल सम्प्रदाय	१५	५२
लींबड़ी छोटी सम्प्रदाय	७	१९
बोटाद सम्प्रदाय	६	नहीं
सायला सम्प्रदाय	४	नहीं
खम्भात सम्प्रदाय	८	१०
बरवाळा सम्प्रदाय	३	२४

शेष सम्प्रदायों की संख्या अब फिर प्रकाशित होगी।

इस हिसाब से वर्तमान मुनि संख्या के प्रमाण तथा आर्याजी की तरफ से एक मुनि प्रतिनिधि जोड़ कर लींबड़ी बड़ी सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि दरियापुरी सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि गोंडल सम्प्रदाय के ३ प्रतिनिधि लींबड़ी छोटी सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि बोटाद सम्प्रदाय १ प्रतिनिधि सायला सम्प्रदाय के १ प्रतिनिधि खम्भात सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि और बरवाळा सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि। इस तरह आठ सम्प्रदायों के १९ प्रतिनिधियों की एक समिति नियुक्त की जाती है। इस समिति में एक अध्यक्ष और जितनी सम्प्रदायें हैं, उतने ही मन्त्री (कार्यवाहक) रहेंगे। अध्यक्ष और मन्त्रियों की पसन्दगी समिति सर्वानुमत या बहुमत से करे और प्रतिनिधियों की पसन्दगी अपनी २ सम्प्रदाय वाले करें।

प्रतिनिधियों की योग्यता

(१) समझदार, निष्पक्षपाती और न्यायदृष्टि वाले मुनि को, सम्प्रदाय वाले प्रतिनिधि चुनें। यदि प्रतिनिधि में वैसी योग्यता न हो, तो उसके स्थान पर दूसरे मुनि को प्रतिनिधि चुनने के लिए, समिति उस सम्प्रदाय को सूचित करेगी।

(२) अध्यक्ष, मन्त्री, और प्रतिनिधिगण तीन तीन वर्षों के लिये चुने जावेंगे। तीन वर्ष के पश्चात् उन्हें ही रखना या दूसरे चुनना, इसका निर्णय समिति तथा सम्प्रदायों की मर्जी पर निर्भर है।

अध्यक्ष का कार्य

समिति के प्रत्येक कार्य पर अध्यक्ष को निगरानी रखनी पड़ेगी। साधु संगठन या क्षेत्र संगठन के कार्य में, किसी भी सम्प्रदाय वाले यदि सहायता मांगें, तो उन्हें प्रत्येक रीति से सहायता करनी होगी। समिति के नियमों के पालन में होने वाली लापरवाही दूर करने के लिये, मन्त्रियों के द्वारा, उन सम्प्रदायों को जागृत करना होगा। खास-बैठक या त्रैवार्षिक-बैठक की सब तरह से व्यवस्था करने में मुख्य-भाग लेना होगा।

मन्त्री का कार्य

मन्त्रियों को अपने अपने कार्य प्रदेश में पर्याप्त देखरेख रखनी पड़ेगी और अपनी सम्प्रदाय में, समिति के नियमों का पालन करवाने के लिये यथाशक्ति प्रयत्न करना होगा। यदि कोई पालन न करे, तो अध्यक्ष अथवा श्रावक समिति के द्वारा उससे अमल करवाना पड़ेगा। अपने २ साधु साध्वियों या क्षेत्रों का संगठन करने में पड़ने वाले विघ्नों को यथाशक्ति दूर करना पड़ेगा। समिति या महासम्मेलन के कार्य में जब अध्यक्ष सहायता मांगे, तब सहायता करनी होगी।

प्रतिनिधि का कार्य

प्रतिनिधि को, अध्यक्ष तथा मन्त्रियों का चुनाव निष्पक्ष भाव से करना, समिति की बैठक में, समय पर हाजिर होना, नये नियमों की रचना और संगठन आदि कार्यों में, न्याय दृष्टि से अपना योग्यमत प्रकट करना, समिति के नियमों का यदि कहीं उल्लंघन हो रहा हो, तो उसे यथाशक्ति रोकना, यदि उनसे न रुके तो मन्त्री से कहना। हां, इस बात का ध्यान अवश्य रहे कि इस कथन से किसी के साथ अन्याय न हो और फिजूल ही किसी को परेशानी में न पड़ना पड़े।

इस वर्ष के लिए पसन्द की हुई साधु समिति

अध्यक्ष

शतावधानी पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

सम्प्रदायवार मन्त्रीगण

लींबड़ी सम्प्रदाय—कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज
दरियापुरी सम्प्रदाय—मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज
गोंडल सम्प्रदाय—मुनि श्री पुरुषोत्तमजी महाराज
लींबड़ी छोटी सम्प्रदाय—मुनि श्री मीठालालजी महाराज
खंभात सम्प्रदाय—मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
बोटाद सम्प्रदाय—मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज
बरवाला सम्प्रदाय—पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज
सायला सम्प्रदाय—पूज्य श्री संघजी महाराज
कच्छी मन्त्रियों तथा सम्प्रदायवार प्रतिनिधि-मुनियों के शेष नाम, अब फिर प्रकट होंगे।

२—इस समिति का नाम 'गुर्जर साधु-समिति' रक्खा जाता है। (गुजराती भाषा बोलने वालों का समावेश, गुर्जर' शब्द में होता है)।

३—इस समिति की बैठकें, तीन २ वर्षों के पश्चात् माघ महीने में की जावें। स्थान और तिथि का निर्णय चार महीने पहले अध्यक्ष तथा मन्त्रियों की सलाह करके कर लेना चाहिये। सभ्यों को आमन्त्रण भेजने आदि का कार्य शान्तिक-सम्मेलन समिति के द्वारा हो सकता है।

४—समिति के एकत्रित होने पर यदि कोई खास प्रसंग उपस्थित हो तो चातुर्मास के अतिरिक्त, चाहे जिस अनुकूल-समय में बैठक की जा सकती है। किन्तु इसके लिये प्रतिनिधियों को दो मास पहले आमन्त्रण पहुँच जाना चाहिये।

५—कम-से कम नौ सभ्यों के उपस्थित होने पर समिति की कार्य-साधक हाजिरी (कोरम) गिनी जावेगी यानि कामकाज चालू किया जा सकेगा। किन्तु अध्यक्ष और मन्त्रियों की उपस्थिति आवश्यक होगी।

६—प्रत्येक बात का निर्णय सर्वानुमति से और कभी बहुमत से हो सकेगा। जब दोनों तरफ समान मत होंगे तब अध्यक्ष के दो मत गिनकर बहुमत से प्रस्ताव पास किया जा सकेगा।

७—कामकाज का पत्र-व्यवहार प्रत्येक सम्प्रदाय के मन्त्री के द्वारा करवाना चाहिये। मन्त्री अध्यक्ष की सम्मति प्राप्त करके उसका निर्णय कर सकेंगे। यदि कोई विशेष कार्य होगा तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रीगण सर्वानुमति से और कभी बहुमत से पत्र द्वारा खुलासा कर सकेंगे।

समिति का कार्य

८—प्रत्येक सम्प्रदायवालों को, जहाँ तक होसके अपनी-अपनी सम्प्रदाय की परिषद् करके साधु-साध्वियों का संगठन करना चाहिये। उसमें भी, खासकर जिस सम्प्रदाय में अलग-अलग भेद पड़े हुए हों, साधु-साध्वी, निरकुश होकर, अपनी २ मर्जी के मुआफिक आचरण कररहे हों, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही परिषद् करके अपना संगठन करना चाहिये। यदि, वह कार्य उस सम्प्रदाय के मन्त्री का किया न हो सके, तो दूसरी सम्प्रदाय के मन्त्री या मन्त्रियों से मदद लेनी चाहिये। यदि ऐसा करने से भी कार्य न चले तो अध्यक्ष तथा सब मन्त्रियों से सहायता मांगनी चाहिये। यदि इससे भी कार्य न पूरा हो, तो समिति की बैठक बुलाई जावे और किसी भी तरह वह मतभेद मिटाकर सन्धि करनी चाहिये।

९—प्रत्येक-सम्प्रदायवालों को, अपने २ क्षेत्रों के मुख्य-मुख्य व्यक्तियों को बुलाकर, क्षेत्रों का संगठन करना चाहिये। इसमें भी, जिस सम्प्रदाय का क्षेत्र पर अकुश न हो, उस सम्प्रदाय को तो अवश्य ही क्षेत्रों के मुख्य व्यक्तियों की परिषद् करनी चाहिये। जो क्षेत्र, सम्प्रदाय के साधुओं में भेद डलवाने में मददगार होते हों, उन्हें समझाकर एक सत्ता के नीचे लाना चाहिये। चौमासे की विनती, प्रत्येक सम्प्रदाय की रीति के अनुसार उन जगहों पर भेजने का प्रबन्ध करवाना और समिति के नियमों का पालन करने की प्रतिज्ञा करवानी चाहिये। यह कार्य यदि उस सम्प्रदाय के मन्त्री न कर सकें, तो उपर कही हुई रीति से दूसरों से मदद मांगने पर दूसरों को उनकी सहायता करनी चाहिये।

१०—एक सम्प्रदाय के क्षेत्र में, समिति की किसी दूसरी सम्प्रदाय के साधुओं को, अपनी जरूरत से या क्षेत्र खाली रहता हो इस दृष्टि से चातुर्मास करने की आवश्यकता पड़े तो चातुर्मास करने वालों को उस सम्प्रदाय के अग्रेसरों की अनुमति प्राप्त करके वहां चातुर्मास करना चाहिये। इस तरह दूसरे क्षेत्र में चातुर्मास करने वालों को, उस सम्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा न करनी चाहिये।

११—दूषितपन के कारण सम्प्रदाय से बाहर निकाले हुए और स्वच्छन्द रीति से विचरने वाले साधु साध्वी को, चातुर्मास के किसी भी क्षेत्र वालों को अपने यहां चातुर्मास नहीं करवाना। यदि कोई ऐसे साधु साध्वियों का चातुर्मास करवावेगा, तो समिति उस क्षेत्र का समाधान होने तक बहिष्कार करेगी।

१२—एकलविहारी या संघाड़े से बाहर निकाले हुए साधु साध्वी चाहे जिस तरह समाधान करके, एक वर्ष के भीतर अपनी सम्प्रदाय में मिल जांय, ऐसा समिति चाहती है। यदि वे एक वर्ष में न मिलें तो इसका बन्दोबस्त करने का कार्य साधु समिति, श्रावक समिति के सुपुर्द करे। अर्थात् समिति को इसके लिए समुचित व्यवस्था करनी चाहिये।

१३—किसी साधु-साध्वी को, अकेले न विचरना चाहिये। यदि किसी कारणवश कहीं जाना पड़े, तो सम्प्रदाय के अग्रेसर की मन्जूरी के बिना न जाना चाहिये। कदाचित् कभी

सहायता देने वाले के अभाव में अकेले ही रहना पड़े तो सम्प्रदाय के अग्रेसर कहें उसी ग्राम में रहना चाहिये। अग्रेसर की आज्ञा के बिना यदि दूसरे ग्राम में जायेंगे, तो संघाड़े से बाहर किये जायेंगे और उनके लिये नियम नं० ११ तथा १२ लागू समझे जायेंगे।

१४—आज्ञा में रहने वाले किसी भी शिष्य अथवा शिष्या को असमर्थ होने या ज्ञान न्यून होने के कारण गुरु पृथक् न कर सकेंगे। यदि अलग कर देंगे तो उन्हें दूसरे नये शिष्य या शिष्या करने के लिये, उस संघाड़े के अग्रेसर लोग स्वीकृति न दे सकेंगे।

१५—बड़ा अपराध करने वाले शिष्य को उस ग्राम में भीतम के अग्रेसरों को साथ रखकर गुरु पृथक् कर सकते हैं। इस तरह से गुरु द्वारा पृथक् किये हुए या भागे हुए साधु को, सम्प्रदाय के अग्रेसरों की मन्जूरी के बिना फिर संघाड़े में नहीं मिलाया जा सकता।

१६—कोई साधु-साध्वी अपना समुदाय छोड़ें, अथवा किसी दोष के कारण सम्प्रदाय वाले उन्हें संघाड़े से बाहर निकालें तो उनका परम्परा सम्बन्धी भण्डार की पुस्तकों पर कोई अधिकार न रहेगा।

१७—इस समिति में सम्मिलित प्रत्येक सम्प्रदाय वालों को बारह व्यवहारों (सम्भोगों) में से तीसरे पांचवें और छठे व्यवहार के अतिरिक्त शेष नौ व्यवहार परस्पर करने चाहियें। उन नौ के नाम नीचे दिये जाते हैं—

(१) उपधि वस्त्र-पात्र का लेना देना।
(२) सूत्र-सिद्धान्त की वांचनी लेनी देनी।
(३) नमस्कार करना या नमाना।
(४) बाहर से आने पर खड़े होना।
(५) वैयावच्च करनी।
(६) एक ही जगह उतरना।
(७) एक आसन पर बैठना।
(८) कथा प्रबन्ध का कहना।
(९) साथ साथ स्वाध्याय करना।

१८—यदि भिन्न भिन्न सम्प्रदायों के विद्यार्थी-मुनियों के लिये कोई संस्था खड़ी हो और उसमें अपनी इच्छानुसार संस्कृत भाषा प्राकृत भाषा तथा सूत्रों का अध्ययन करने के लिये विद्यार्थी मुनि रहें तो वे विद्यार्थी-मुनि तथा अध्यापक मुनि परस्पर जब तक संस्था में रहें, बारहों प्रकार के व्यवहार कर सकते हैं ऐसा यह समिति निश्चित करती है।

१९—किसी के भी दीक्षित शिष्य को, फिर वह चाहे अपनी सम्प्रदाय का हो या दूसरी सम्प्रदाय का हो, बुरी सलाह देकर अलग न करवाना चाहिये। और न उसके गुरु की अनुमति के विना उसे अपने साथ ही रखना चाहिये। निभाने की बात अलग है। ठीक इसी तरह किसी के उम्मेदवार को भी न बहकाना चाहिये।

एक संवत्सरी के सम्बन्ध में—

२०—अष्टमी, पक्खी और संवत्सरी, अपनी सभी सम्प्रदाय वालों को एक ही दिन करनी चाहिये। महा सम्मेलन के समय, सर्वानुमति से जो पद्धति मुकर्रर हो, वह पद्धति हमारी इस समिति को स्वीकार करनी चाहिये।

दीक्षा के सम्बन्ध में—

२०—दीक्षा लेने वाले उम्मीदवार को, उसके अभिभावकों से छिपाकर इधर उधर भगाना नहीं। उम्मीदवार की शारीरिक सम्पत्ति अच्छी तरह देख लेना चाहिये। किसी प्रकार के दोष वाला न हो, कर्जदार या अपराधी भी न हो। प्रकृति अच्छी हो, वैराग्यवान हो, उसके आचरण में कोई ऐव न हो, ऐसे उम्मीदवार को ही पसन्द करना चाहिये। उम्मीदवार को एकाध वर्ष अपने साथ रखकर, प्रकृति तथा वैराग्य का पूर्ण परिचय करने के बाद, जब उसकी योग्यता का निर्णय होजाय तब उसके अभिभावक की लिखित आज्ञा प्राप्त करके, श्रीसंघ तथा सम्प्रदाय के अग्रेसरों की सम्मति प्राप्त करने के बाद ही उसे दीक्षा देनी चाहिये। उम्मीदवार भाई या बाई की उम्र बिलकुल कम या बहुत अधिक नहीं होनी चाहिये, बल्कि योग्य अवस्था होनी चाहिए। अयोग्य दीक्षा पर समिति का अंकुश रहेगा।

शिक्षा-प्रबन्ध

२२—विद्याभिलाषी मुनियों तथा विद्याभिलाषिनी साध्वियों के लिये, भिन्न २ दो संस्थाएँ, स्थल, कल्प आदि का निर्णय करके कायम होनी चाहिये। संस्कृत प्राकृत, थोकड़े और सूत्र का ज्ञान देने के बाद, उपदेश किस तरह देना चाहिये, यह भी सिखलाना चाहिये। तीन वर्ष, पाच वर्ष, या सात वर्ष तक पूरा अभ्यास करके परीक्षा में पास हों, तब तक अपने चेले या चेलियों को, अच्छी देखरेख वाली संस्थाओं में रखना चाहिये। ऐसी संस्थाएँ कायम होजाने के बाद, अलग अलग जगहों पर शास्त्री रखने की प्रणाली बन्द कर देनी चाहिये। आर्याओं को, दूसरी आर्याओं अथवा स्त्रीशिक्षिका के पास अभ्यास करना चाहिये, किंतु पुरुष शिक्षक के पास नहीं।

व्याख्यानदाता की योग्यता

२३—व्याख्यानदाता को, शास्त्रकुशल होना चाहिये, स्वमत और परमत का ज्ञाता होना चाहिए और देशकाल का जानकार होना चाहिये। भीतर ही भीतर मनोमालिन्य पैदा करवाने वाला न होना चाहिये तथा अपनी महत्ता एवं दूसरों की हलकाई बतलाने वाला भी न होना

चाहिये। एकान्त व्यवहार अथवा एकान्त निश्चय दृष्टि से स्थापन उत्थापन करने वाला न होना चाहिये, बल्कि व्यवहार तथा निश्चय इन दोनों नय को मान देने वाला होना चाहिये। ज्ञान का स्थापन करके क्रिया का उत्थापन करने वाला या क्रिया का स्थापन करके ज्ञान का उत्थापन करने वाला न होना चाहिये। सरल समदर्शी धर्म की सच्ची लगन वाला और समाधि भाव में रहने वाला होना चाहिये। ऐसी योग्यता वाले को ही व्याख्यान देने का अधिकार मिलना चाहिये।

साहित्य-प्रकाशन सम्बन्धी

२४—मुनियों को साहित्य प्रकाशन नहीं, बल्कि यदि हो सके तो साहित्य रचना करनी चाहिये। साहित्य के दो भाग हो सकते हैं। आगम साहित्य और आगम के बाद दूसरा धार्मिक-साहित्य। पहले आगम साहित्य का उद्धार होना चाहिये। आगम के सम्बन्ध में होने वाली शङ्कायें निर्मूल हों आगम की सत्यता पूरी तरह प्रमाणित होजाय इस तरह से आगम साहित्य की योजना होनी चाहिए। अभी अथवा महा सम्मेलन के अवसर पर विद्वान मुनियों की एक कमेटी बनाकर द्रव्यानुयोग और चरणकरणानुयोग का पृथक्करण करना चाहिये। मुनियों द्वारा रची हुई पुस्तकों का प्रकाशन करने के लिए विद्वान्-श्रावकों की एक संस्था स्थापित होनी चाहिए। अथवा कान्फरेंस की आन्तरिक सभा को यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए। मुनियों को प्रकाशन-कार्य से कुछ भी सम्बन्ध रखने की आवश्यकता न रखनी चाहिये। यदि रखें तो केवल इतनी ही कि अपने में किसी प्रकार की अशुद्धि न रह जाय इस बात का ध्यान रखना चाहिए। पुस्तकों के क्रय विक्रय के साथ मुनियों का कुछ सम्बन्ध न रहे ऐसी श्रावकों की एक समिति स्थापित होनी चाहिये। निकम्मी पुस्तकें जिनमें कि धार्मिक साहित्य न हो विषयों की योजना न हो, भाषा की शुद्धि न हो और समाज के लिए उपयोगी भी न हों ऐसे साहित्य के प्रकाशन में कान्फ्रेंस को रोक लगानी चाहिये ताकि समाज का पैसा बरबाद न हो। विद्वान् साधुओं और श्रावकों की समिति पास करे वही पुस्तक प्रकाशित होसके ऐसा बन्दोबस्त कान्फ-रेंस को करना चाहिये ऐसी साधु समिति की इच्छा है। शिक्षित समाज को धार्मिक साहित्य के अनुशीलन की बड़ी आतुरता जान पड़ती है किन्तु वैसे साहित्य के अभाव के कारण अन्य धर्मों का साहित्य पढ़ा जा रहा है। परिणामतः बहुत से लोगों की श्रद्धा का झुकाव अन्य धर्मों की तरफ होजाता है। इस स्थिति को रोकने के लिये यह सम्मेलन अच्छे धार्मिक साहित्य की रचना को अत्यन्त आवश्यक समझता है। जिस तरह से बुद्ध चरित्र प्रकाशित हुआ है उस तरह से महावीर चरित्र की अच्छी से अच्छी पुस्तक क्यों न प्रकाशित हो? सम्मेलन की यह भी इच्छा है कि विद्यार्थियों के लिये जैन पाठमाला अच्छे से अच्छे रूप में तैयार की जावे। इसके अतिरिक्त बहुत सा साहित्य तैयार करना है। इस सम्बन्ध में विद्वान् मुनियों तथा विद्वान् श्रावकों को संयुक्त रूप में काम करना चाहिये ऐसी समिति की इच्छा है। साहित्य की रचना करने वाले मुनियों को साहित्य रचना में पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। उसकी पूर्ति साधु समिति को अपने भण्डार से या बाहरी पुस्तकालयों से करनी चाहिये अथवा पुस्तक-प्रकाशक-समिति को वैसे साहित्य की पूर्ति करनी चाहिये।

साधु-समाचारी

(प्राचीन से प्राचीन, जितनी समाचारियां प्राप्त हो सकीं, उन सबको हमने बांचा है और विचार किया है। उन सबको दृष्टि में रखकर, शास्त्रसम्मत और देशकालानुसार शक्य घटा बढ़ी भी की है। समाचारी के बहुत से बोल देश आश्रित, कुछ सम्प्रदाय आश्रित और कुछ बारीक तथा व्यावहारिक हैं। जितने जरूरी समझे गये, उतने ही बोल प्रकाशित किये जाते हैं। बाकी सब मुनियों की जानकारी मात्र के लिये गुप्त रख लिये हैं।)

२५-दीक्षा के समय, समवसरण में पुस्तकों का खरडा न करवाना चाहिये और दीक्षा देने से पूर्व, अजलि में आई वस्तुओं या किसी को अनुराग पूर्वक दी हुई वस्तुओं में से, दीक्षा का पाठ बोल दिये जाने के बाद कुछ भी न लेना चाहिये। पहले से ही पुस्तक लिखने का आर्डर दे दिया गया हो, उसकी तो बात दूसरी है, किन्तु दीक्षा के अवसर पर, दीक्षा वाले के उपकरणों के अतिरिक्त दूसरे साधुओं या आर्याजी के लिये कुछ भी न लेना चाहिये।

२६-साधु-साध्वियों को, दीक्षा में या उसके बाद सब प्रकार के रेशमी-वस्त्र डोरिये शरबती मलमल, वायल आदि पतले वस्त्र न लेने चाहिये। और यदि पुराने हों, तो उन्हें पहन-कर बाहर न निकलना चाहिये। इसी तरह सिन्धी कम्बलों के समान पट्टीवाली चद्दरें या बड़ी रंगीन किनारों वाले टूवालस नये न लेने चाहिये। यदि पुराने हों तो उन्हें भीतर ही भीतर काम में ले लेना चाहिये। (जब तक बन सके, समयधर्म की रक्षा करते हुए वस्त्र वहरने चाहिएँ।)

२७—चातुर्मास के क्षेत्रों में, व्याख्यान अथवा वांचन के समय के अतिरिक्त, साधुजी के उपाश्रय में स्त्रियों को और आर्याजी के उपाश्रय में पुरुषों को, आवश्यक कार्य के बिना न बैठे रहना चाहिए। बाहर ग्रामों से आये हुए लोगों की बात अलग है। किसी आर्याजी को सूत्र की वांचनी देनी हो तो अनुकूल समय पर, दो घण्टे से अधिक वाचनी न देनी चाहिये। और वह भी खुले हाल में बैठकर, एकान्त में बैठकर नहीं।

२८—साधुओं को दो से कम और साध्वीजी को तीन से कम न विचरना चाहिये। यदि किन्हीं आर्याजी के साथ तीसरी आर्याजी विचरने वाली न हों और सम्प्रदाय के अग्रेसर उन्हें स्वीकृति दे दें, तो दूसरी बात है।

* २९—प्रत्यक्ष में अप्रतीतिकारी गिने जाने वाले घर में, साधु-साध्वियों को अकेले न जाना चाहिये।

३०—श्रावकों ने, अपनी धार्मिक क्रियायें करने के लिए जो मकान बनाये हों (फिर उनका नाम चाहे जो हो) उनमें साधु लोग उतर सकते हैं। हां, खास तौर पर मुनियों के लिए ही बनाये गये हों, तो उनमें नहीं उतर सकते।

---

* कच्चे मसविदे की कलम नं० २९ खानगी निश्चयों में रख दी गई है।

चाहिये। एकान्त व्यवहार अथवा एकान्त निश्चय दृष्टि से स्थापन उत्थापन करने वाला न होना चाहिये, बल्कि व्यवहार तथा निश्चय इन दोनों नय को मान देने वाला होना चाहिये। ज्ञान का स्थापन करके क्रिया का उत्थापन करने वाला या क्रिया का स्थापन करके ज्ञान का उत्थापन करने वाला न होना चाहिये। सरल, समदर्शी धर्म की सच्ची लगन वाला और समाधि भाव में रहने वाला होना चाहिये। ऐसी योग्यता वाले को ही व्याख्यान देने का अधिकार मिलना चाहिये।

साहित्य-प्रकाशन सम्बन्धी

२४—मुनियों को साहित्य प्रकाशन नहीं बल्कि यदि हो सके तो साहित्य रचना करनी चाहिये। साहित्य के दो भाग हो सकते हैं। आगम साहित्य और आगम के बाद दूसरा धार्मिक-साहित्य। पहले आगम साहित्य का उद्धार होना चाहिये। आगम के सम्बन्ध में होने वाली शङ्कायें निर्मूल हों आगम की सत्यता पूरी तरह प्रमाणित होजाय इस तरह से आगम साहित्य की योजना होनी चाहिए। अभी अथवा महा सम्मेलन के अवसर पर विद्वान् मुनियों की एक कमेटी बनाकर द्रव्यानुयोग और चरणकरणानुयोग का पृथक्करण करना चाहिये। मुनियों द्वारा रची हुई पुस्तकों का प्रकाशन करने के लिए विद्वान्-श्रावकों की एक संस्था स्थापित होनी चाहिए। अथवा कान्फ्रेंस की आन्तरिक सभा को यह कार्य अपने हाथ में लेना चाहिए। मुनियों को प्रकाशन काय से कुछ भी सम्बन्ध रखने की आवश्यकता न रहनी चाहिये। यदि रहे तो केवल इतनी ही कि छपने में किसी प्रकार की अशुद्धि न रह जाय इस बात का ध्यान रखना चाहिए। पुस्तकों के क्रय विक्रय के साथ मुनियों का कुछ सम्बन्ध न रहे ऐसी श्रावकों की एक समिति स्थापित होनी चाहिये। निकम्मी पुस्तकें जिनमें कि धार्मिक साहित्य न हो विषयों की योजना न हो भाषा की शुद्धि न हो और समाज के लिए उपयोगी भी न हों, ऐसे साहित्य के प्रकाशन में कान्फ्रेंस को रोक लगानी चाहिये ताकि समाज का पैसा बरबाद न हो। विद्वान् साधुओं और श्रावकों की समिति पास करे वही पुस्तक प्रकाशित होसके, ऐसा बन्दोबस्त कान्फ्रेंस को करना चाहिये ऐसी साधु समिति की इच्छा है। शिक्षित समाज को धार्मिक साहित्य के अनुशीलन की बड़ी आतुरता जान पड़ती है किन्तु ऐसे साहित्य के अभाव के कारण अन्य धर्मों का साहित्य पढ़ा जा रहा है। परिणामतः बहुत से लोगों की श्रद्धा का झुकाव अन्य धर्मों की तरफ होजाता है इस स्थिति को रोकने के लिये यह सम्मेलन अच्छे धार्मिक साहित्य की रचना को अत्यन्त आवश्यक समझता है। जिस तरह से बुद्ध चरित्र प्रकाशित हुआ है उस तरह से महावीर चरित्र की अच्छी से अच्छी पुस्तक क्यों न प्रकाशित हो? सम्मेलन की यह भी इच्छा है कि विद्यार्थियों के लिये जैन पाठमाला अच्छे से अच्छे रूप में तैयार की जावे। इसके अतिरिक्त बहुत सा साहित्य तैयार करना है। इस सम्बन्ध में विद्वान् मुनियों तथा विद्वान् श्रावकों को संयुक्त रूप में काम करना चाहिये ऐसी समिति की इच्छा है। साहित्य की रचना करने वाले मुनियों को साहित्य रचना में पुस्तकों की आवश्यकता पड़ती है। उसकी पूर्ति साधु समिति का ज्ञान भण्डार से या बाहरी पुस्तकालयों से करनी चाहिए अथवा पुस्तक-प्रकाशक-समिति का ऐसे साहित्य की पूर्ति करनी चाहिये।

साधु-समाचारी

(प्राचीन से प्राचीन, जितनी समाचारियां प्राप्त हो सकीं, उन सबको हमने वाचा है और विचार किया है। उन सबको दृष्टि में रखकर, शास्त्रसम्मत और देशकालानुसार शब्द घटा बढ़ी भी की है। समाचारी के बहुत से बोल देश आश्रित, कुछ सम्प्रदाय आश्रित और कुछ बारीक तथा व्यावहारिक हैं। जितने जरूरी समझे गये, उतने ही बोल प्रकाशित किये जाते हैं। बाकी सब मुनियों की जानकारी मात्र के लिये गुप्त रख लिये हैं।)

२५-दीक्षा के समय, समवसरण में पुस्तकों का खरडा न करवाना चाहिये और दीक्षा देने से पूर्व, अंजलि में आई वस्तुओं या किसी को अनुराग पूर्वक दी हुई वस्तुओं में से, दीक्षा का पाठ बोल दिये जाने के बाद कुछ भी न लेना चाहिये। पहले से ही पुस्तक लिखने का आर्डर दे दिया गया हो, उसकी तो बात दूसरी है, किन्तु दीक्षा के अवसर पर, दीक्षा वाले के उपकरणों के अतिरिक्त दूसरे साधुओं या आर्याजी के लिये कुछ भी न लेना चाहिये।

२६-साधु-साध्वियों को, दीक्षा में या उसके बाद सब प्रकार के रेशमी-वस्त्र डोरिये शरबती मलमल, वायल आदि पतले वस्त्र न लेने चाहिये। और यदि पुराने हों, तो उन्हें पहनकर बाहर न निकलना चाहिये। इसी तरह सिन्धी कम्बलों के समान पट्टीवाली चद्दरें या बड़ी रंगीन किनारों वाले टूवाल्स नये न लेने चाहिये। यदि पुराने हों तो उन्हें भीतर ही भीतर काम में ले लेना चाहिये। (जब तक बन सके, समयधर्म की रक्षा करते हुए वस्त्र बहरने चाहिएँ।)

२७—चातुर्मास के क्षेत्रों में, व्याख्यान अथवा वांचन के समय के अतिरिक्त, साधुजी के उपाश्रय में स्त्रियों को और आर्याजी के उपाश्रय में पुरुषों को, आवश्यक कार्य के बिना न बैठेरहना चाहिए। बाहर ग्रामों से आये हुए लोगों की बात अलग है। किसी आर्याजी को सूत्र की वांचनी देनी हो तो अनुकूल समय पर, दो घण्टे से अधिक वाचनी न देनी चाहिये। और वह भी खुले हाल में बैठकर, एकान्त में बैठकर नहीं।

२८—साधुओं को दो से कम और साध्वीजी को तीन से कम न विचरना चाहिये। यदि किन्हीं आर्याजी के साथ तीसरी आर्याजी विचरने वाली न हों और सम्प्रदाय के अग्रेसर उन्हें स्वीकृति दे दें, तो दूसरी बात है।

* २९—प्रत्यक्ष में अप्रतीतिकारी गिने जाने वाले घर में, साधु-साध्वियों को अकेले न जाना चाहिये।

३०—श्रावकों ने, अपनी धार्मिक क्रियायें करने के लिए जो मकान बनाये हों (फिर उनका नाम चाहे जो हो) उनमें साधु लोग उतर सकते हैं। हां, खास तौर पर मुनियों के लिए ही बनाये गये हों, तो उनमें नहीं उतर सकते।

---

* कच्चे मसविदे की कलम नं० २९ खानगी निश्चयों में रख दी गई है।

११—मन्त्र-तन्त्र का प्रयोग करके दूसरों को परेशान करना या भविष्य बतलाना यह मुनि धर्म के विरुद्ध है, ऐसा यह समिति निश्चित करती है।

१२—साधु-साध्वी के फोटो खिंचवाना, उन्हें पुस्तकों में छपाना या गृहस्थ के घर दर्शन पूजन के लिए रखना, समाधि स्थान बनाना, पाट पर रुपये रखना पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा, हम लोगों की परम्परा के विरुद्ध है। इसलिए समिति का इसकी रोक करनी चाहिये और श्रावक समिति को इसमें मदद पहुंचानी चाहिए।

१३—संवत्सरी सम्बन्धी कागज न छपवाये जावें और न ऐसे कागज लिखे या लिखवाये ही जावें। छोटे साधु साध्वी को बड़ों की मन्जूरी के बिना कागज न लिखवाने चाहिये। महत्वपूर्ण पत्र संघ के मुख्य व्यक्ति के हस्ताक्षर बिना न भेजने चाहिये।

१४—श्रावक समिति के सभ्यों का चुनाव, साधु समिति की सलाह लेकर करना चाहिए, ऐसी साधु-समिति की इच्छा है।

१५—समिति के मन्त्री अथवा अध्यक्ष के नाम आये हुए महत्वपूर्ण पत्र सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी के पास इस शर्त पर रक्खे जावें कि जब साधु-समिति की बैठक हो अथवा उस विषय पर विचार करने का मौका मिले, तब वे कागज समिति के सामने पेश करें।

१६—उपरोक्त जो नियम सर्वानुमति से बनाये गये हैं उन्हें समिति के प्रत्येक साधु साध्वी को प्रभु की साक्षी से पालना चाहिये। इसमें यदि कोई हस्तक्षेप करेगा या नियम का उल्लंघन करेगा तो समिति उसे उचित दण्ड देगी। अपराधी का कोई पक्षपात न करे। यदि कोई पक्षपात करेगा, तो वह पक्षपाती भी अपराधी माना जावेगा।

उपरोक्त मसविदे में एक मास के भीतर जो २ सूचनायें प्राप्त होंगी वे समिति की दृष्टि से गुजर कर यह मसविदा पक्के के रूप में प्रकाशित कर दिया जावेगा।

श्री गढ़कोट
ता० ७। १। १९३२

इति शुभं भवतु

———•———

पुनश्च—निश्चयानुसार प्राप्त सूचनायें स्वीकार करली गई हैं। सम्मेलन के समय न पधार सकने वाले मुनियों की मंजूरी प्राप्त करने के लिये अहमदाबाद प्रान्तीज अम्बाला आदि स्थानों पर मंत्रीजी पधारे और प्रस्तावों पर मुख्य २ अनुपस्थित मुनिराजों की सम्मति प्राप्त करने के लिये यह प्रकाशित किया जाता है।

मुनिराजों की समिति द्वारा दी हुई सूची,

- कि साधु-समिति को, श्रावक-समिति की कहां २ मदद चाहियेगी ?

जिन २ सम्प्रदायों में, साधु-साध्वियों में दलवन्दी है, वहां मतभेद करने में, साधु-समिति के साथ श्रावक-समिति की आवश्यकता होगी। इसके लिये, सम्प्रदायों के क्षेत्रों में, प्रभावशाली व्यक्तियों की एक कमेटी वनाई जावे और उसकी नियमावली भी वनाली जावे।

एकलविहारी या दूषित-साधुओं को समझाने का कार्य भी श्रावक समिति को करना होगा।

क्षेत्रों का संगठन करने में श्रावक-समिति की सहायता की जरूरत होगी। इस व्यवस्था की रचना के समय नहीं पधारे हुए साधुओं और खास सवों की सम्मति प्राप्त करने में भी श्रावक समिति की आवश्यकता होगी।

साधु-साध्वियों के फोटो पुस्तक में छपते हों या किसी उपाश्रय में रक्खे हों, तो उन्हें नष्ट करवाने तथा समाधि-स्थानों की रचना, पाट पर रुपया रखना या पाट को प्रणाम करना आदि जड़पूजा रोकने का कार्य भी श्रावक समिति को करना होगा।

श्रावक-समिति का प्रस्ताव

मुनिराजो द्वारा रची हुई व्यवस्था और वताई हुई लिस्ट के अनुसार कार्य करने के लिये सम्प्रदायवार श्रावको की एक समिति मुकर्रर करना तय किया जाता है।

इस समिति के प्रधान, सेठ दामोदरदास जगजीवन भाई चुने जाते हैं। इस समिति में, सम्प्रदायवार गृहस्थों के नाम प्राप्त करके, उनमें से सभ्य चुनना निश्चित किया जाता है। इस तरह सम्प्रदायवार सभ्यों के नाम प्राप्त करने के लिए, पत्र-व्यवहार आदि प्रबन्ध करने और प्रमुख श्री की सूचना के अनुसार या उनकी सलाह लेकर कार्य करने को, एक वैतनिक मनुष्य रख लेना निश्चित किया जाता है, और इसके लिए रु० १०००) एक हजार का चन्दा करना तय किया जाता है। जब तक पूरी नई समिति का चुनाव न हो जाय, तब तक श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी और श्री भाईचन्दभाई अनूपचन्द मेहता को, प्रमुख श्री की सहायता का कार्य करने के लिए नियुक्त किया जाता है और इन तीनों महानुभावों की कमेटी को सम्पूर्ण सत्ता दी जाती है।

श्री राजकोट
ता० ७-३-१९३२ ई०

दामोदर जगजीवन
प्रमुख—श्रावक समिति

पुनश्च—सब सम्प्रदाय वालों से, श्रावक समिति के सभ्यों के नाम प्राप्त करके सब निर्णय होजाने पर, सदस्यों की नामावली प्रकट करदी जावेगी। कुछ सम्प्रदायें अभी बाकी हैं।

श्री मोरबी महावीर जयन्ती वीर सं० २४५८	माईचन्द अनूपचन्द मेहता, दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी AS. मन्त्रीगण

राजकोट प्रान्तीय साधु सम्मेलन की यह विज्ञप्ति, यद्यपि एक महीने भर बाद प्रकाशित हुई थी, किन्तु प्रसंगवश इसे यहीं उद्धृत करदी है। अब, हम पाठकों का ध्यान पुनः राजकोट सम्मेलन की समाप्ति के समय पर आकर्षित करते हैं।

उधर राजकोट का सम्मेलन समाप्त हो रहा था और इधर पाली में सम्मेलन की प्रभा निकल रही थी। इस कल्पना को ध्यान में लाते ही ऐसा जान पड़ने लगता है, कि मानों राजकोट सम्मेलन रूपी सूर्य अपनी ज्योत्स्ना से स्थानकवासी समाज को चैतन्य पहुंचा, अपना कार्य पूर्ण हुआ जानकर विश्राम करने अस्ताचल को जा रहा था और पाली-सम्मेलन रूपी सोलह कलायुक्त चन्द्रमा अपनी शीतल किरणों से भक्तों का हृदय शान्त करने के लिये, पाली रूपी पूर्व-दिशा में उदय हो रहा था। पूर्ण दिवस का वह दिव्य प्रकाशमय संयोग वर्णनातीत है उस अवसर के उत्साह की कल्पना गूंगे के गुड़ की तरह मीठी है, जिसका असमर्थता के कारण वर्णन नहीं हो सकता। अस्तु।

राजकोट-सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात् सम्मेलन के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी तो सम्मेलन के प्रस्तावों पर अनुपस्थित मुनिराजों का मत जानने के लिये प्रयत्न करने लगे। और इधर पाली श्री संघ को उनकी जरूरत थी अतः पाली से उन्हें पहले बुलाने का तार दिया गया। इस तार के उत्तर में श्री दुर्लभजीभाई ने श्री धीरजलाल केशवलाल तुरखिया को राजकोट से फौरन ही पाली के लिये रवाना कर दिया। श्री चिम्मनसिंहजी लोढा पहले से वहां कार्य कर ही रहे थे श्री धीरजभाई ने पाली में पहुंचकर पधारने वाले मुनिराजों के स्वागत की व्यवस्था में अत्यधिक सहायता पहुंचाई और समस्त मुनिराजों से मिल-मिलकर पारस्परिक-संगठन के लिये बड़ा प्रयत्न किया। आपके प्रयत्न और भगवान् महावीर के शासन के उद्धार की उत्कट लगन हृदय में होने के कारण मुनिराजों ने सम्मेलन से पूर्व ही परस्पर सच्चे प्रेम का परिचय दिया तथा एक दूसरे से संभोग व्यवहार प्रारम्भ कर दिया। इस तरह सम्मेलन के लिये अनुकूल क्षेत्र तो तय्यार था ही श्री धीरजभाई के प्रयत्न के कारण श्रावक बन्धुओं के साथ ही साथ मुनिराजों के पवित्र हृदय भी सम्मेलन के लिये पूर्ण रूपेण तय्यार होगये।

निश्चित तिथि से पूर्व जब श्री दुर्लभजी भाई जौहरी राजकोट की ओर से पाली पधारे तब उन्हें यहां के वातावरण में भरी हुई प्रसन्नता तथा उत्साह एवं उमंग देखकर बड़ा सन्तोष हुआ। यहां पधारकर आपने भी साधु सम्मेलन की व्यवस्था में भाग लेना शुरु कर दिया। इसके बाद पाली सम्मेलन के सम्बन्ध में निम्न विवरण जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआ था।

राजकोट में होने वाला साधु सम्मेलन का कार्य सफलतापूर्वक पूर्ण होजाने के बाद दूसरा सम्मेलन मारवाड़ की सम्प्रदायों का पाली में होरहा है। भिन्न ९ सम्प्रदायों के मुनिराज

पधार रहे हैं। सब मुनिराज पारस्परिक विरोधों को वोसराकर और कषायों की कैद से छूटकर बाहर से आते हुए मुनिराजों का—फिर चाहे वे अकेले ही हों—स्वागत करके उन्हें ले आने को आगे पधारते हैं। सब मुनिराज एक साथ विराजते हैं, समीप समीप ही सुविधानुसार ठहरते हैं और दिल खोलकर परस्पर प्रेम पूर्वक वार्तालाप करते हैं। कैसा सुरम्य है यह दृश्य ! मानो वर्षों से विछुड़े हुए स्नेही आज हृदय से हृदय मिलाकर हर्षाश्रु बहा रहे हैं, अपनी बीती सुना रहे हैं।

साम्प्रदायिकता के पाश में बंधे हुए श्रावकगण इस दृश्य को देखकर दांतों तले अंगुली दबाते और आश्चर्य करते हैं। वे तो यह दृश्य देखकर ही निष्पक्ष होगये। जिन निराशावादियों का यह ख्याल था, कि पहले तो साधु सम्मेलन होगा ही नहीं और यदि होगा भी तो परस्पर अधिकाधिक झगड़े होंगे तथा बात बात में छोटे बड़े का सवाल उठेगा—उन लोगों की यह आशंका निर्मूल प्रमाणित होरही है।

इस सम्मेलन के सूत्रधार श्री पन्नालालजी महाराज के एक व्याख्यान में, श्रावकों ने यहां तक प्रतिज्ञा की कि—"हम लोग इस सम्मेलन के संगठन में पूर्ण सहयोग देंगे। किसी का पक्षपात न करेंगे और इस संगठन में जो सम्मिलित न होगा, उसका हम बहिष्कार करेंगे।"

यहां पधारे हुए मुनिराजों की सरलता तथा श्रावकों की निष्पक्षता स्तुत्य है।

पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय के ५ मुनि हैं, वे सकारण नहीं पधार सके हैं। उनके अतिरिक्त मारवाड़ की छः सम्प्रदायों के कुल ५० मुनियों में से, ३१ मुनिराज तो पाली में पधार ही गये हैं। पधारे हुए मुनिराजों की तालिका यों है:—

पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्द्रजी, मुनि श्री ताराचन्दजी मुनि श्री नारायणदासजी, मुनि श्री हेमराजजी ठाणा ४। पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री हजारीमलजी मुनि श्री चौथमलजी, मुनि श्री चांदमलजी, आदि ठाणे ११। पूज्यश्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पन्नालालजी आदि ठाणे ३। पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री धीरजमलजी, मुनि श्री चतुर्भुजजी, मुनि श्री मिश्रीलालजी आदि ठाणे ६। पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनलाल जी, मुनि श्री फतेहचंदजी आदि ठाणे ४। पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी आदि ठाणे ३। इस तरह कुल ठाणे ३१ पधारे हैं।

उपरोक्त सम्प्रदायों की महासतियाजी भी अच्छी संख्या में यहां विराजमान हैं।

अजमेर, जोधपुर, ब्यावर सोजत आदि स्थानों से अग्रगण्य श्रावकगण पधार चुके हैं और निमन्त्रित सलाहकार श्रावकगण भी पधार रहे हैं।

पाली में इतना उत्साह भरा हुआ है, कि सारा नगर प्रसन्न दीख पड़ता है। पधारे हुए श्रावक बन्धुओं को भोजन करवाने को मिति फाल्गुण शुक्ला १० तक के लिये एक एक समय

बांठ छिपा गया है। स्वयंसेवकों का दल तैयार होगया है, जिसमें दाढ़ी वाले और सफेद बा वाले बूढ़ों ने भी अपनी सेवायें देने का उत्साह दिखलाया है।

सम्मेलन की कार्यवाही शुरु होने से पूर्व ही सलाह मशविरा प्रारम्भ होगया है और अनेक प्रकार के वैमनस्य दूर होकर संगठन होने लगा है। समाचारी सक्षोपमादि के सम्बन्ध में अपने अपने विचार दूसरों पर प्रकट करके उन पर चर्चा करना शुरु कर दिया गया है। इस प्रकार से प्रेम की वृद्धि होरही है।

* * * * *

प्रथम दिन की कार्यवाही ता॰ १० ३ ३२

नवकार मंत्र और वीर वाणी से मुनियों ने सभा का काय प्रारंभ किया। चतुर्विध-संघ की बड़ी उपस्थिति थी। मण्डप एक लम्बे चौड़े तथा बड़े चौक में, चांदनियां तान कर बनाया गया था। मकान पर एक चौतरे पर सब मुनिराजों ने और दूसरे चौतरे पर सब महासतियों ने अपना स्थान ग्रहण किया था। इनके सामने, श्रावक श्राविकाओं के समूह बैठे हुये थे।

मंगलाचरण के बाद, मु॰ श्री ताराचन्दजी महाराज ने, साधु संगठन तथा क्रिया उद्धार के विषय में व्याख्यान फरमाया। इसके पश्चात्, श्री पी सि तुरखिया ने, सभा में होने वाली कार्यवाही का प्रोग्राम पढ़ कर सुनाया।

आपके बाद कॉन्फ्रेंस आफिस के मैनेजर श्री लालालाल मणिलाल मेहता ने कॉन्फ्रेंस की ओर से यहां पधारे हुये मुनिराजों तथा श्रावक बन्धुओं का स्वागत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता प्रकट की। इसके बाद आमन्त्रण पत्रिका पढ़कर सम्मेलन का उद्देश बतलाया और कहा, कि—

अहिंसा धर्म याने जैनधर्म के इतने त्यागधारी मुनिराज होते हुए भी लोगों की श्रद्धा घटने का कारण पारस्परिक वैमनस्य ही है इस वैमनस्य को मिटावें और धर्मोद्धारक श्री लोंकाशाह के मार्गों को पहचान कर उदारता से कार्य लें।

* * * * *

आपके भाषणोपरान्त पाली श्रीसंघ की ओर से पधारे हुए मुनिराजों एवम् श्रावक बन्धुओं का स्वागत करते हुए श्री गुलाबचन्दजी मुणोत ने कहा कि—

पूज्यपाद मुनि महात्माओं और आगंतुक श्रावक बन्धुओ !

आप सबको भगवान् महावीर के झण्डे के नीचे एकत्रित हुए देख कर मुझे बड़ा आनन्द होता है। यह मानो भगवान महावीर के समवसरण का एक छोटा सा दृश्य है।

इस पुनीत-दृश्य को देख कर किसका हृदय आनन्द से न उछलने लगेगा? आज इस पुण्य प्रसङ्ग का दृश्य श्रीमती कान्फ्रेन्सदेवी की कृपा से देखने को मिला है। उस कान्फ्रेन्स

माता को और उसके सच्चे सेवक श्रीमान् दुर्लभजी भाई जौहरी को मै धन्यवाद देता हूँ।

इस प्राचीन नगर पाली का भी धन्य भाग्य है, जहां ऐसा पवित्र सम्मेलन हो रहा है।

हम लोगों ने, केवल शासन सेवा की भक्ति के कारण सम्मेलन को अपने यहां निमन्त्रित किया है। आप सभी महानुभावों ने, पाली-श्रीसंघ की प्रार्थना को स्वीकार फरमा कर, यहां पधारने का जो कष्ट उठाया है, उसके लिये, पाली श्रीसंघ की ओर से, मै आप लोगों का आभार मानता हूं और आपका हृदय से स्वागत करता हू। साथ ही, नम्रतापूर्वक यह भी अर्ज कर दूं, कि मुनि महात्माओं ने, अनेक कष्ट उठा, और उग्र विहार करके यहा पधारने की कृपा की है। ये मुनिराज और आप विद्वान्-श्रावकगण जो अपने अनेक प्रकार के धन्धे-रोजगार छोड़कर यहां पधारे हैं—मिलकर, संगठन के लिये ऐसी व्यवस्था सोचें, कि आपका परिश्रम सार्थक हो और इस प्राचीन पाली को सुयश की प्राप्ति हो। शासनदेव आपकी सहायता करें और जिन शासन की विजय हो।

*　　*　　*　　*

तदुपरांत श्री० धीरजभाई तुरखिया ने, बाहर से आये हुये, मुनिराजों के, श्रीसंघों के तथा श्रावकों के, सम्मेलन के प्रति सहानुभूति सूचक सन्देश पढ़कर सुनाये, जिनमें मुख्य पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज की ओर से, श्री० सेठ बर्द्धमानजी पीतलिया का भेजा हुआ था। इसके अतिरिक्त, चित्तौड़, ढूंढाड़, पालनपुर और जोधपुर आदि श्रीसंघों के, सम्मेलन की सफलता चाहने वाले सन्देश भी थे। इनके अतिरिक्त, सम्मेलन की कार्यवाही के लिये अनेक सूचनाएं भी थीं।

आपके बाद, एक बालक ने सम्मेलन की सफलता की इच्छा बतलाने वाला गायन गाया।

*　　*　　*　　*

तत्पश्चात् साधु-समिति के मन्त्री श्री० दुर्लभजीभाई जौहरी ने, अपना भाषण प्रारम्भ किया।

आज, मैं समवसरण का दृश्य देख रहा हूँ। आप सबको भी इसे देखकर आनन्द हो रहा होगा। आज से लगभग १४०० वर्ष पूर्व, देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण के समय शायद ऐसा दृश्य हुआ हो। किन्तु, उसके बाद श्री० लोंकाशाह, पूज्यश्री धर्मसिंहजी और पूज्यश्री धर्मदासजी महाराज ने जब क्रिया का उद्धार किया, उस समय तो ऐसा सम्मेलन शायद ही हुआ हो।

जगत के प्राणि-मात्र में मनुष्य श्रेष्ठ है, जिसे 'जन' कहते हैं। जन में श्रेष्ठ जैन है और जैन में श्रेष्ठ मुनि हैं, क्योंकि सबसे उत्कृष्ट त्याग मुनियों का है। ऐसे त्यागी-मुनि हजारों की संख्या में उपदेशक का कार्य कर रहे हैं, फिर भी पिछले १० वर्षों में लगभग तीन लाख जैनी कम होगये, यह कितने दुःख और आश्चर्य की बात है।

हमारे साधुमार्गी-समाज को, साधुओं का ही अवलम्बन है। समाज और धर्म की हानिया वृद्धि सब कुछ उन्हीं के उत्तरदायित्व पर निर्भर है। इसलिये मुनिवरों से मेरी प्रार्थना है, कि हमारा समाज और धर्म आज किस दशा पर पहुंच गया है, इस बात का विचार करके समयो चित कार्य करें। केसरी सिंह के सामने मेरे जैसा मनुष्य क्या बोल सकता है? किन्तु हां यदि केसरी-सिंह जाल में फस जाय तो एक छोटी सी चुहिया भी उसके जाल के बन्धनों को काटने का कारण हो सकती है। ठीक इसी तरह का मेरा यह प्रयास है। मैं, बड़ी नम्रता से आपसे प्रार्थना करता हूं कि रात अब अंधियारी है, गाड़ी पुल पर होकर जाती है, नीचे पानी की बाढ़ है और सब यात्री नींद से सो रहे हैं, ऐसे विकट समय में यदि गाड़ी के ड्राइवर तथा गार्ड लापरवाह रहें, तो गाड़ी तथा यात्रियों की जैसी दुर्दशा हो सकती है ठीक वैसी ही दशा आज हमारे समाज की है। यदि, समाज रूपी गाड़ी और हम यात्रियों को सुरक्षित रखने की आपकी इच्छा हो, तो आप लोग गार्ड तथा ड्राइवर की भांति सावधान एवं जाग्रत रहिये।

साधु समाज में, शिथिलता तथा स्वच्छन्दता की वृद्धि होते देखकर पूज्य श्री सोहनलालजी पूज्यश्री जवाहिरलालजी महाराज आदि २ मुनिराजों ने इसका कुछ इलाज करने की बात सुनाई। दिल्ली में अग्र गण्य श्रावकों की एक मीटिंग हुई और मुझ जैसे वृद्ध तथा निर्बल मनुष्य ने यह सेवा स्वीकार कर ली। यह कार्य ऐसा पवित्र है कि इसको हाथ में लेते ही मेरी बीमारियां दूर होगईं और औषधियों का उपयोग दूर होगया। इस कारण मुझे तो पूर्ण विश्वास हो गया है कि इस पवित्र कार्य का परिणाम अत्यन्त श्रेष्ठ होगा।

माननीय मुनिवरों! यह बात याद रखिये कि आगामी वर्ष अजमेर में होने वाले महा साधुसम्मेलन में आपको बराती बनकर पधारना है। इसलिये इस बरात में सम्मिलित होने का अभी से तैयारी कीजिये यानी अपना संगठन कीजिये। इसी में आपकी प्रतिष्ठा की रक्षा और शक्ति का सदु पयोग तथा महत्व है। देखिये थोड़े बड़े नालों के पानी को एकत्रित करके ही टाटा—पावरहाऊस बनाया गया है जिसकी बिजली की शक्ति से आज कई कल कारखाने और रेलवे आदि चलाये जा रहे हैं। संगठन में कितनी शक्ति है यह बात आप इसी से जान सकते हैं।

मुनिवर आज मोती हैं। इनमें, कहीं [कल्चर] बनावटी मोतियों का मिलान न होजाय इस बात का ध्यान रखना का कार्य, साधु के "अम्मापिया" श्रावक वर्ग का है। श्रावकों को चाहिये कि किसी का झूठा पक्षपात न करके उनकी त्रुटियों को दूर करने का प्रयत्न करें। भगवान् महावीर ने अनेकों पतितों के लिये, अन्त समय तक प्रायश्चित् और शुद्धि बतलाई है भूतकाल की बातों को भूल कर, आप अपनी आत्मशुद्धि का ध्यान रक्खें और शुद्ध चारित्र्य का पैदा करें। श्रावकवर्ग को चाहिये कि मुनियों ने जो सार्वजनिक नियम बनाये हों उनका समर्थन करें। यदि कहीं पारस्परिक वैमनस्य हो तो सलाहकार बनकर समझौता करावें। जो मुनिराज सामान्य नियम से आगे बढ़कर उत्कृष्ट क्रिया का पालन करना चाहें वे भले ही ऐसा करें किन्तु नियम तो वे ही बनाने चाहियें जिनका सभी पालन कर सकें।

पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज फरमाते थे, कि किसी नक्षत्र योग में ज्वार का मोती हो सकता है। उनके कथनानुसार, मुझे तो आज ठीक वही नक्षत्र समय दीख रहा है।

* * * * * * * *

आपका भाषण समाप्त हो जाने के पश्चात, श्री गणेशमलजी अजमेर वाले ने अपना व्याख्यान यों शुरू किया—

पूज्यपाद मुनिवरों और सुज्ञ श्रावक बन्धुओं ! हर्ष की बात है कि पाली में आज आप-सब महानुभाव एकत्रित हुए हैं और जैन शासन के उद्योत का प्रयत्न कर रहे हैं।

यह तो आप सब को सुविदित ही है, कि कान्फरेन्स ने, अखिल भारतीय साधु-सम्मेलन करने का महान् प्रयास करना निश्चित् कर लिया है और इस पवित्र प्रसंग की सेवा का अवसर श्री अजमेर संघ को देने की महती कृपा की है। इसके लिये, हम कान्फरेन्स को अनेकानेक धन्यवाद देते हैं और अजमेर श्रीसंघ का बड़ा सौभाग्य समझते हैं, कि उसे ऐसा पुनीत अवसर प्राप्त हुआ है।

मैं अजमेर श्रीसंघ की ओर से आप सबका आभार मानता हूं, कि आप लोग आगामी वर्ष होने वाले बृहद्-साधु-सम्मेलन के अनुकूल वातावरण तैयार करने का, यहां एकत्रित होकर प्रयत्न कर रहे हैं। आप लोगों के सद्प्रयत्नों के कारण बृहद्-साधु-सम्मेलन के लिये, क्षेत्र की विशुद्धि होना निश्चित् सा है। उस अवसर पर जो कुछ सफलता होगी, उसका आधार आपही श्रीमानों के प्रयास पर निर्भर है। अतः मैं आपसे प्रार्थना करता हूं, कि जैसे दक्षिण में ऋषि सम्प्रदाय ने, राजकोट में प्रान्तिक-साधु सम्मेलन ने और पंजाब में पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज ने संगठन करके, बृहद्-साधु-सम्मेलन के लिये क्षेत्र तैयार किया है, उसी तरह आप भी क्षेत्र तैयार कर दिखलावें।

मकान का आधार, उसकी सुदृढ़ नींव ही है ऐसा जान पड़ता है, मानो बृहद्-साधु-सम्मेलन की, आप सब के द्वारा नींव बन रही है। इसलिये आप संगठन की ऐसी सुदृढ़ नींव बनावें, कि उस नींव पर बृहद्-साधु-सम्मेलनरूपी महल, चिर स्थायी बने। अन्त में, मैं सम्मेलन की सच्चे हृदय से सफलता चाहता हुआ अपना स्थान ग्रहण करता हूं।

* * * * * * * *

आपके बाद, श्री नथमलजी चोरड़िया ने अपना भाषण देते हुए कहा, कि—

इस सम्मिलित सभा को देखकर मुझे बड़ा आनन्द होता है, संसार में आज सत्य और अहिंसा का डंका बज रहा है, तब उन सद्गुणों की प्रधानता वाले जैन धर्म में इतनी सम्प्रदायें क्यों ? श्री० लोंकाशाह के बाद, बाइस बड़े २ आचार्य हुए और हम लोग बाइस टोले कहलाये। आज हम लोग एकत्रित रहने के बदले, बाईस से बत्तीस कैसे हो गये ? यही बड़े आश्चर्य की बात है।

इसका मुख्य कारण, मुनियों की पारस्परिक फूट और प्ररूपणा की भिन्नता ही जान पड़ती है। जब गुरुओं की यह दशा है, तो श्रावकों में भी ऐसा होना स्वाभाविक ही है। हम लोग मु-

नियों के स्वेच्छाचार के अधीन हो गये हैं और उनकी प्ररूपणा के अनुसार हमारी श्रद्धा भी भिन्न २ हो रही है। मोरवी कान्फ्रेन्स के समय हम बीस लाख जैन थे। उसके पश्चात् चार बार की मर्दुम-शुमारी में हम आधे रह गये। यदि आज भी हम न चेते, तो अगली चार मर्दुमशुमारियों में हमारा नाम ही मिट जायगा।

मुनिराज, प्रेम और ऐक्य का उपदेश तो अवश्य देते हैं। प्रेम से सुख और अप्रेम से दुःख होता है, यह भी हम लोग जानते ही हैं। किन्तु फिर भी मुनियों के उपदेश का हम लोगों पर कोई असर नहीं होता, इसका कारण यही है कि, मुनियों में प्रेम और संगठन की कमी है। मेरी यही प्रार्थना है, कि भगवान् महावीर के उपदेशानुसार फूट को दूर कीजिये।

प्रमाद को छोड़कर, ज्ञान तथा क्रिया का उद्धार कीजिये। पाप की निन्दा भले ही की जावे, किन्तु पापी की नहीं। इस सूत्र को जब हम भली भांति समझ लेंगे, तभी रागद्वेष को जीतने वाले बन सकते हैं। वीतराग के मार्ग में, इतना सम्प्रदाय भेद कभी न होना चाहिये। श्रावकों को भी अपना घर देखना चाहिये और साधु तथा श्रावकों को मिलकर समाचारी की रचना करनी तथा धर्म की नींव मजबूत बनानी चाहिये।

* * * * * * * *

आपका वक्तव्य समाप्त होजाने पर मुनि श्री पन्नालालजी महाराज ने फरमाया—

मैं, मुनिमहाराजों से प्रार्थना करता हूं, कि हम लोगों को, भूतकाल की सब बातें भूल जानी चाहियें। अब सुधरने का समय आया है कारण कि संसार में जैनियों की कमी हो रही है। किन्तु इसके साथ ही साथ जैनत्व की वृद्धि हो रही है। आगेचलकर एक ऐसा समय भी आवेगा, जब सारा ही विश्व जैनत्व धारण करेगा। किन्तु यदि जैन न रहे और हम लोगों के सत्य-अहिंसादि सिद्धान्त, लोगों ने दूसरों के नाम से धारण किये, तो यह स्थिति हम लोगों के लिये अत्यन्त खेदजनक होगी। इसमें, धर्मगुरुओं की निर्बलता दिखाई देगी।

शार्दूल—सिंह भी क्या कभी गीदड़ बन सकता है ? यदि नहीं, तो आप महावीर के पुत्र होकर कायर कैसे बनेंगे ? बन्धुओं ! आप महावीर के पुत्र हो, तो वीर तो बनो। सेर के सेर रहिये पाव सेर न बनिये। श्रावकों के बन्धन से छूटिये। ये श्रावक आपके गुरु नहीं, बल्कि आप लोग इन श्रावकों के गुरु हैं। श्रावकों का समूह बाड़े में बन्द करके और बात २ में श्रावकों का बुला-बुलाकर श्रावक भक्त बनने से आपकी व्यवस्था बिगड़ गई है, अतः उसे सुधारिये। आपने सारा संसार छोड़ दिया और केवल आत्मार्थ, संयम का पालन कर रहे हैं। इस कार्य को पूर्ण करने के लिये, मुनियों में जो २ शारीरिक तथा मानसिक विकार घुस गये हों, उन्हें दूर करके विकास की ओर अग्रसर होइये। एक समय वह था, कि जैन मुनि के प्रभाव से जैन तथा अजैन जगत् थर्राता था। आज हम लोगों की निर्बलता की यह दशा है, कि लोग हमारी मजाक उड़ाते हैं। जिनके पूर्वज, श्री हेमचन्द्राचार्य और श्री सिद्धसेन जैसे उच्चकोटि के विद्वान थे, कि जिनके साहित्य का शतांश भी अब अनुपलब्ध है, फिर भी जो कुछ पास है वह इतना श्रेष्ठ है, कि अजैन जनता भी साहित्यावलोकनोपरान्त उन्हें आदर की दृष्टि से देखती है। आज, हम लोगों में ज्ञान की बड़ी कमी है। अब इन तीन दिनों में आप ऐसा कार्य करें

कि जिसके कारण फूट तथा वैमनस्य को सदा के लिये तिलांजलि होजाय और व्यवहार निश्चय शुद्ध बनकर संयम की उन्नति करे।

जो इच्छा से किया जाता है, उसी को त्याग कहते हैं, अनिच्छा से छोड़ा हुआ त्याग नहीं कहलाता।

इस बात को याद रखिये, कि अब संसार में अन्धभक्ति नहीं रही है। आप लोग परस्पर प्रेम पूर्वक निर्णय कर लीजिये, अन्यथा सत्याग्रह होगा। उस समय हम लोगों को मजबूरन सुधरना ही होगा, किन्तु तब हमारी कीमत न रहेगी। हम लोगों को ऐसा कार्य करना चाहिये, कि श्रावक लोगों को बीच में डालने की कोई आवश्यकता ही न रहे।

श्रावकबन्धुओं! आप लोगों ने भी साधुओं को अनुचित रीति से पक्षपात करके, बाड़ाबन्दी में उनके साथ सहयोग किया है। किन्तु आगे चलकर आप ही को नियम न मानने वाले स्वच्छन्द मुनियों की मुंहपत्तियां छीननी पड़ेंगी। यह समय न आने पावे, उससे पूर्व ही आप हम साधु-मुनिराजों को संगठित करने का प्रयत्न कीजिये यानी उसमें बाधा न डालकर अनुकूल वातावरण बनाइये।

आप लोगों को भी अपना व्यवहार सुधारना चाहिये। साधु-समाज की उत्पत्ति भी तो श्रावक समाज से ही है। यदि, श्रावक-समाज आदर्श होगा, तो मुनि-समाज भी आदर्श ही होगा।

दुख है कि दिन में दो बार "खामेमि सव्वे जीवा" का पाठ करने वाले और कीड़ी मकोड़ी की भी रक्षा का ध्यान रखने वाले, परस्पर प्रेम का व्यवहार नहीं कर सकते!

मुनिवरों और श्रावकों! अब मेरी यही प्रार्थना है, कि महा साधु-सम्मेलन के लिये क्षेत्र विशुद्धि कीजिये तथा सुधार का झाड़ू हाथ में लेकर, जहां कहीं फूट और वैमनस्य रूपी कचरा दीख पड़े, उसे साफ कीजिये तथा जैन धर्म को विश्व-धर्म बनाइये।

साधु सम्मेलन, जो एक स्वप्न मात्र समझा जाता था, आज सत्य प्रमाणित हो रहा है। इसलिये, मै श्रीमती कांन्फरेंस तथा उसके सूत्र-संचालक श्री दुर्लभजी भाई जौहरी को धन्यवाद देता हूं। साथ ही, मारवाड़ प्रांतीय साधु सम्मेलन करने के लिये, श्री दयालचन्दजी महाराज और श्री हेमराजजी महाराज ने जो प्रचार कार्य किया है, उसके लिये मैं इन दोनों महानुभावों का आभार मानता हूं।

हर्ष का विषय है कि पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय का संगठन हो गया है तथा पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय का संगठन करने के लिये, श्री दयालचन्द्रजी महाराज, श्री ताराचन्दजी महाराज और श्री नारायणदासजी महाराज से, एक होजाने की प्रार्थना कर रहा हूं। शासनदेव, इस पुण्य कार्य में हमारी सहायता करें। ॐ शान्तिः॥

इस सार्वजनिक सभा की समाप्ति के पश्चात् छहों सम्प्रदायों के मुनिराजों का सम्मेलन दिन को १ बजे से ५ बजे तक होता रहा।

दूसरे दिन की कार्यवाही ता० ११-३-३२ ई०

प्रातःकाल, अग्रगण्य मुनिराजों की विषय विचारिणी समिति अपना कार्य कर रही थी। उस समय साधु सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई जौहरी ने मुनिराजों की अनुमति से, राजकोट साधु सम्मेलन की विस्तृत कार्यवाही पढ़कर सुनाई तथा उस पर उचित व्याख्या की। दूसरी ओर, छोटे मुनिराज व्याख्यान फरमा रहे थे। इस व्याख्यान से स्थानीय तथा बाहर से पधारे हुए हजारों स्त्री पुरुष लाभ उठा रहे थे। इस अवसर पर बाहर से पधारे हुए सज्जनों ने, समयोचित व्याख्यान तथा गायन सुनाये।

दिन को १॥ बजे से ४ बजे तक मुनिराजों की सभा व्यास के मोहरे में होती रही।

रात्रि में ८ बजे से ११॥ बजे तक व्यास के मोहरे के मध्य मैदान में, प्रसिद्ध देशभक्त और समाज सुधारक, श्री नथमलजी चोरड़िया के सभापतित्व में एक सार्वजनिक सभा हुई, जिसमें ८०० से अधिक जनता उपस्थित थी।

सबसे पहले शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज द्वारा राजकोट साधु-सम्मेलन में पढ़े हुए श्लोक तथा उनका भावार्थ श्रीयुत भाई कन्हैयालालजी ने सुनाया। इसके पश्चात् श्रीमान् दुर्लभजी भाई जौहरी ने राजकोट साधु-सम्मेलन की कार्यवाही सुनाई। इसके पश्चात् श्री सभापति महोदय ने पाली श्री संघ से इस साधु सम्मेलन के शुभावसर की यादगार में पाली नगर में जैन पाठशाला की स्थापना करने के लिए प्रार्थना की। आपके समर्थन में श्रीयुत दुर्लभजी भाई जौहरी का जोरदार भाषण हुआ। श्री धीरजलाल भाई और अजमेर निवासी श्री सुगनचन्दजी नाहर के पाठशाला की स्थापना के पक्ष में प्रभावोत्पादक भाषण हुये। आपके पश्चात् श्री केशरीमलजी प्रेम तथा श्री विजयसिंहजी लोढ़ा के शिक्षा के सम्बन्ध में भाषण हुए। तत्पश्चात् ब्यावर निवासी श्री पन्नालालजी रांका का भी समयोचित भाषण हुआ। तदनन्तर श्री सभापतिजी ने शिक्षा और समाज-सुधार पर सार गर्भित भाषण देते हुए पाली श्री संघ से पाठशाला स्थापित करने की जोरदार अपील की। अन्त में जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी के विद्यार्थी श्री सूर्यभानुजी डांगी का जिनवाणी नामक गायन होने के पश्चात् भगवान महावीर के जयघोष के साथ सभा विसर्जित की गई।

* * * * ×

तीसरे दिन की कार्यवाही ता० १२-३-३२ ई०

प्रातःकाल प्रधान प्रधान मुनियों की विषय विचारिणी समिति की बैठक होती रही। दूसरी ओर श्री मिश्रीमलजी महाराज का व्याख्यान हुआ। व्याख्यान में स्थानीय तथा बाहर की जनता बड़ी संख्या में उपस्थित थी। बाहर से पधारे हुए मुख्य मुख्य श्रावकगण ये थे:—

श्री नथमलजी चोरड़िया, श्री दुर्लभजी भाई जौहरी, श्री धीरजलाल भाई, श्री डाह्या भाई मणिलाल मेहता, श्री सुगनचन्दजी नाहर, श्री मीरूलालजी चोपड़ा अजमेर, श्री विजयमल जी कुम्भट, श्री मोतीलालजी रातड़िया, श्री गणेशमलजी सकलेचा जैतारण, श्री दौलतराजजी दफ्तरी जालौर, श्री मूलचन्दजी मोदी ब्यावर, श्री कालूरामजी कोठारी ब्यावर, श्री वस्तीमलजी चालिया ब्यावर, श्री सोभागमलजी लोढा बगड़ी—आदि।

व्याख्यान ही के अवसर पर, पाठशाला की स्थापना के सम्बन्ध में, विद्यार्थी श्री लक्ष्मीचन्दजी का गायन और श्री धीरजलालजी तुरखिया का भाषण हुआ। तदुपरांत, कुछ चन्दा एकत्रित हुआ। फिर, दोपहर को होने वाली बैठक की सूचना देकर सभा विसर्जित होगई।

दोपहर को, २ बजे से ४॥ बजे तक, पाठशाला की व्यवस्था के सम्बन्ध में विचार करने के लिए, पाली श्री संघ के अग्रगण्य कार्यकर्ताओं की मीटिंग हुई।

दिन को १ बजे से ४॥ बजे तक, मुनिराजों की सभा न्यात के नोहरे में होती रही।

रात्रि में ८॥ बजे से ११॥ बजे तक, ता० ११ की ही भांति, न्यात के नोहरे में एक सार्वजनिक सभा, श्री नथमलजी चोरड़िया के सभापतित्व में हुई। प्रारम्भ में जोधपुर निवासी श्री हसराजजी करनावट ने, मंगलाचरण किया। तत्पश्चात् श्री केशरीमलजी जैन का समाज-सुधार पर और श्री चिम्मनसिंहजी लोढा का शिक्षा के सम्बन्ध में प्रभावशाली भाषण हुआ। आप लोगों के बाद, जैन प्रकाश के सम्पादक श्री डाह्यालालभाई का, ज्ञान पर सारगर्भित भाषण हुआ। तदुपरांत विद्यार्थी रूपचन्दजी शिवपुरी पाठशाला तथा विद्यार्थी सूर्यभानुजी जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी के शिक्षा सम्बंधी भाषण हुए। अन्त में सभापति महोदय का शिक्षा तथा समाज सुधार पर अत्यन्त सारपूर्ण एवं प्रभावशाली भाषण होकर, सभा की कार्यवाही समाप्त की गई।

चौथे दिन की कार्यवाही ता० १३-३ ३२

आज, प्रातःकाल एक बड़ी सभा हुई, जिसमें सम्मेलन में पधारे हुए छहों सम्प्रदाय के बत्तीसों मुनिराज पधारे। इस सभा में, श्रावक-श्राविका बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे। सब से पहले, श्री हसराजजी करनावट ने मंगलाचरण किया। इसके बाद, मुनि श्री छगनलालजी महाराज ने पाली-साधु-सम्मेलन के अवसर पर होने वाली मुनिराजों की उदारता तथा श्रावकों के परिश्रम एवं उत्साह के लिये धन्यवाद देते हुए फरमाया, कि इस सम्मेलन के कारण, श्रावकों के हृदयों में, साधुओं के प्रति दृढ़-श्रद्धा हो गई है। यहां, सब मुनि मण्डल एक आसन पर विराजमान हैं, यह श्रीमती कॉन्फ्रेन्स की ही कृपा का परिणाम है। इस सम्मेलन के कारण, पारस्परिक-वैमनस्य, ऊँच-नीच का भेदभाव आदि सब दूर हो गया है। मुनियों ने, जितने भी प्रस्ताव पास किये हैं, वे सब हमको मान्य हैं।

आपके भाषणोपरान्त, मुनि श्री पन्नालालजी महाराज, ने साधुओं के पारस्परिक-प्रेम सम्मेलन की सफलता, श्रीसंघ के उत्साह और इस आनन्दपूर्ण समय का जिक्र करते हुए फरमाया, कि

मूल-सूत्र बत्तीस हैं और-उन्हीं के समान, सामाजिक सूत्ररूपी ये बत्तीस मुनिराज विराजमान हैं। हम लोगों में, परस्पर प्रेम है और हमारी आत्माओं में प्रेम के झरने बह रहे हैं। पाली का सद्भाग्य है, कि इसमें यह पुण्य-कार्य सम्मेलन हुआ। अस्तु।

स्वदेशी वस्तु में पवित्रता होती है, मारवाड़ी साधु-समाज देशी-शक्कर के समान है, जिसने इस सम्मेलनरूपी भट्टी पर चढ़कर अपना सब मैल दूर कर लिया और शुद्ध तथा पवित्र ओले तैयार कर लिये।

पहले साधु समाज सोना था, पर बीच में इसमें रांगा मिल गया। इस मैल को इस सम्मेलन ने दूर कर दिया, जिससे वह फिर सौ-टंच का सोना हो गया है।

साधु-समाजरूपी शेर निद्रा में था और अपनी शक्ति को भूल रहा था। किन्तु अब यही कान्फरेन्स रूपी महादेवी ने उसे सम्बोधन करके कहा—"शेर! सोते क्यों हो? आप तो शेर हैं, जागिये।"

हम लोगों ने, मन को जीता है। एक मन में ४० सेर (शेर) होते हैं। जिन्होंने मन (४० शेर) को जीता है, वे क्यों निद्रित रहें? अब शेररूपी मुनि मण्डल जागृत हो गया है।

प्रिय मुनि-महाराजो! आपने उत्तमोत्तम प्रस्ताव पास किये हैं। जो आनन्द काम को प्रारम्भ करने में है उससे अधिक आनन्द उस कार्य को पूर्ण करने तथा उसका निर्वाह करने में है। मुनिराजो! याद रक्खो, आपने जो २ नियम बनाये हैं, उनको जैसे भी हो सके पालन कीजिये, तभी सम्मेलन की पूर्ण सफलता समझी जावेगी।

अहो! कल समस्त मुनिमण्डल ने प्रीतिभोज किया। जो आनन्द कल के आहार में आया, वैसा आनन्द आजतक न आया था। यों तो प्रतिवर्ष होली होती है किन्तु इस वर्ष की होली में, हमने फूट कलह वैमनस्य और शिथिलाचार आदि का दाम कर दिया है।

इसके पश्चात् आपने सभा में विराजमान साध्वियों को लक्ष्य करके कहा कि मुनि महाराजों ने जो नियम बनाये हैं, उनके विपरीत जो आर्याजी (साध्वीजी) अपने प्रवर्तक मुनि की की आज्ञा या नियम का उल्लंघन करेंगी उनसे असहयोग किया जावेगा। इसके पश्चात् आपने साधुओं से सम्मेलन में पास हुए नियमों का सम्यक् प्रकारेण पालन करने की जोरदार शब्दों में अपील की।

तदनन्तर, आपने पाली श्रीसंघ को, शीघ्रातिशीघ्र पाठशाला की स्थापना करने का उपदेश दिया जिसके कारण पाली श्रीसंघ तथा बाहर से पधारे हुए श्रीमन्तों ने चन्दा एकत्रित किया।

इस समय लगभग १२॥ बज चुके थे इस कारण साधु-सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई ने फरमाया, कि प्रातःकाल ही पाली साधु सम्मेलन के प्रस्ताव सुनाये परन्तु चूंकि अब समय अधिक हो गया है अतः दोपहर को २ बजे से ४ बजे तक साधु-सम्मेलन की कार्यवाही ही सुनाई जावेगी। यह सुनकर, सभा, वीरप्रभु के जयनाद पूर्वक विसर्जित हो गई।

दोपहर को, ढाई बजे से पुनः वैसे ही सभा प्रारम्भ हुई। सब से पहले, छोटी सादड़ी के श्री सूर्यभानुजी ने मंगलाचरण करके साधु-सम्मेलन के सूत्रधार की प्रशंसा में यह गायन सुनाया—

अति दुर्लभ दुर्लभजी के हम दुर्लभ गुण को गावेंगे।
किया परिश्रम अति दृढता से थोड़ासा समझावेंगे॥
खुद होकर संगठित, किया संगठित हमारे गुरुओं को।
दिव्य, अतुल-उत्साह देखकर, जय २ शब्द उचारेंगे॥ १॥
जैन-जाति की लहर चलादी, एक दम साहस को करके।
सब मिलकर सहयोग सदा दे, इनका मान बढावेंगे॥ २॥
राजकोट अरु पाली में, घोर परिश्रम सफल हुआ।
सब मिलकर दें आशीष हृदय से, आप सदा जय पावेंगे॥ ३॥
ऋणी रहेगी जैन जाति, इनकी इनके सुपरिश्रम से।
करें प्रतिज्ञा सब जन मिल, अब इन्हें सहाय दिलावेंगे॥ ४॥
हमको केवल आशा ही नहीं, है विश्वास पूर्णता से।
महासम्मेलन में अब देखो, पूर्ण सफलता पावेंगे॥ ५॥
जैन जाति की घोर-निशा में, दिव्य चन्द्रमा उदित हुए।
सब साथी तारोगण मिलकर, जगमग जाति बनावेंगे॥ ६॥
डांगी सूरजभानु गर्व से कहता मिलकर सुनो सभी।
ऐसे २ विरले जन ही नाम अमर कर जावेंगे॥ ७॥

* * * * * * × ×

इसके पश्चात, श्री धीरजलाल भाई ने कहा, कि मनुष्य के बत्तीस दांत होते हैं। उनके ठीक रहने पर ही मनुष्य पूर्ण स्वस्थ रहता है। जिनवाणी रूपी शरीर को स्वस्थ रखने के लिये यहां विराजित ३२ मुनि महाराज, ३२ दाँतों के समान हैं। पहले दांत, बचपन में गिर जाते हैं। किन्तु फिर जो दृढ़-दांत आते हैं, वे बुढ़ापे तक रहते हैं। बचपन में बत्तीस दाँत गिर पड़े थे, वे इस सम्मेलन में फिर नये तथा दृढ आगये हैं। अब जिनवाणी रूपी शरीर स्वस्थ तथा दृढ रहेगा।

आपके पश्चात् विद्यार्थी लक्ष्मीचन्द ने, सम्मेलन की सफलता पर, मुनियों की प्रशंसा में एक गायन गाया। तदुपरांत, सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई जोहरी ने अपना भाषण देते हुए कहा, कि—

आज का दृश्य, मुझे अपूर्व आनन्द दे रहा है। यह आनन्द, शब्दों के द्वारा कैसे वर्णन किया जा सकता है? माली के लगाये हुए बगीचे में, जब फल लगें तब उन फलों को देख कर उस बागबान को कितनी प्रसन्नता हो सकती है, यह तो वही जाने? लोग पूछते थे, कि कान्फ्रेंस ने, २० वर्षों में क्या २ किया? ऐसे शंकाशीलों से आज कहा जा सकता है, कि बीस-बीस वर्षों के कान्फ्रेंस के सुधार सम्बन्धी प्रयत्नों की सफलता ही इस समय यह परिणाम उत्पन्न कर

सकी है। दीर्घ-काल के श्रम और अटल धैर्य के बाद ही आम का वृक्ष मीठे-मीठे फल दे सकता है। कान्फ्रेंस रूपी जो आम बोया गया था, उसके मीठे फल चखने का समय अब आया है। २० वर्ष का परिश्रम आज सार्थक हो गया। अभी एक गायन गाया गया है, जिसमें मेरी खूब प्रशंसा की गई है। यह प्रशंसा, मेरे लिए मानपत्र नहीं, बल्कि मानपत्र है, ऐसा मैं समझता हूं। मैं अपनी त्रुटियों का भान होने पर जागृत हो रहा हूं। इस सम्मेलन की सफलता का यश यदि किसी को मिल सकता है, तो वह इन मुनिराजों को ही। जिस तरह से कृष्ण ने सुदामा के तन्दुल स्वीकार किए और राम ने शबरी के बेर लिए थे, ठीक उसी तरह से, मुनिराजों ने मेरी नम्र एवं प्रार्थना स्वीकार करके यह बीड़ा उठाया है। वास्तव में, उन्हीं का आभार मानना चाहिए। मुनिराजों ने यह कार्य सफलता पूर्वक पूर्ण कर दिया और चारित्र्य की रक्षा तथा धर्म की वृद्धि के नियम बनाए हैं। इन नियमों के पालन में उनकी सहायता करना, यह हमारा कर्त्तव्य है। मुनिराजों ने तो इनकी लिख दी है अब उसे स्वीकार करना श्रावकों का धर्म है। आप इतिहास देखें तो आपको मालूम होगा कि इस सम्प्रदायवाद का मूल कारण श्रावकों की पक्षापक्षी तथा खींचातानी ही थी। मुनिराजों के साथ तो हमारी धर्म की सगाई है। जहां धर्म हो वहां हम लोगों का वन्दन होना चाहिए। और जहां धर्म न हो वहां फिर हमें पक्षपात करने की भी क्या ज़रूरत है? पक्ष धर्म का लेना चाहिए या अधर्म का? न्याय का या अन्याय का? श्रावक-बन्धुओं से मेरी प्रार्थना है कि पक्षापक्षी का राग द्वेष दूर कीजिए, बस साम्प्रदायिक कलह और ममत्व अपने आप नष्ट हो जायेगा। साधु धर्म के पालन में त्रुटियां बतलाते समय भगवान के समय के दृष्टांत दिए जाते हैं, किन्तु जब तप तथा वस्त्र-त्याग का प्रश्न सामने आता है तब वर्तमान-समय और आधुनिक-परिस्थिति की ओट ली जाती है।

इस ज़माने में अकेले विचरना अनिष्ट है। एकल विहार के जो दुष्परिणाम होते हैं उन्हें बतलाने के लिए कहीं दूर जाने की आवश्यकता नहीं। मुंह पत्ती की ओट में चालाक लोग चोरी करें, चारित्र्य से पतित हों और चतुर्थ-व्रत के खण्डन के किस्से सम्भव बनावें इन बातों के प्रमाण जानने की अब किसे आवश्यता रही? इस स्थान पर यह बात न भूल जानी चाहिए कि एक गृहस्थ की अपेक्षा एक साधु के द्वारा किया हुआ कुकर्म कहीं अधिक भयकर है। कारण कि साधु का कुकर्म त्याग की छाया में होता है। ऐसे अनेक दूषित साधुओं के कुकर्मों के कारण साधु-वर्ग की ओर लोगों की प्रेम या प्रीति कम होगई है। शिक्षित वर्ग इस प्रकार की चारित्र्य भ्रष्टता देखकर, धर्म गुरुओं के प्रति और उसके परिणाम स्वरूप धर्म के प्रति अश्रद्धालु बनता जाता है। इसका भी कुछ विचार करना चाहिये। रशिया में हजारों धर्म गुरुओं को विदा करके धर्मस्थानों में शिक्षण संस्थायें तथा अस्पताल स्थापित किये गये हैं। ऐसी दशा हम लोगों के यहां आवे उससे पूर्व ही धर्मगुरुओं को, धर्ममार्ग को शिथिलाचरण के चोरों से सुरक्षित कर लेना चाहिये और अपने उपाश्रयों को सम्भाल लेना चाहिये। कभी २ यह बात भी सुन पड़ती है कि साधुओं या गुरुओं की बातें खोलनी नहीं चाहिये उनकी निन्दा नहीं करनी चाहिये। ऐसा कहने वालों तथा माननेवालों से मेरी प्रार्थना है कि दुर्गुण तथा शिथिलाचरण की निन्दा करने में कुछ भी बुराई नहीं है। जब रोग हुआ हो तब आपरेशन करने की आवश्यकता पड़ती ही है। सड़े हुए अंग को ढांकने या सेंट से सुगन्धित रूमाल उस पर डालने से उसका सड़ापन नहीं दूर हो

सकता। वलिक वह धीरे २ सारे शरीर को सड़ा कर, जीवन को खतरे में डाल देगा। लोग मुझे डराते थे, कि साधुओं की बात में पड़कर तुमने सांप के मुंह में हाथ घुसेड़ा है। लेकिन मुझे भय नहीं है। यदि, शासन की सेवा करने का मेरा आशय शुद्ध होगा, तो अपनी रक्षा के लिये मै निश्चिन्त हूं। साधुओं ने जो नियम वनाये है, उन्हें पालने और पलवाने की जिम्मेदारी हमलोगों पर है। मेरे हृदय में जो जलन थी, वह मैने प्रकट कर दी। यदि, इससे किसी का चित्त दुखा हो, तो उसके लिये मै क्षमा मांगता हूं।

इसके बाद, आपने पाली सम्मेलन के प्रस्ताव तथा कार्यवाही पढ़कर सुनाई, जो यों है—

श्री मारवाड़ प्रान्तीय स्थानकवासी–जैन साधु-सम्मेलन की पहली बैठक, पाली में स० १९८८ वीर स० २४५८ की शुभ मिती की फाल्गुन शुक्ला ३ गुरुवार से प्रारम्भ हुई। जिसमें निम्न प्रकार से उपस्थिति थी।

(१) पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज ठाणे ४।

(२) पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनिश्री पन्नालालजी म० ठा० ३।

(३) पूज्य श्री स्वामीदास महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री फतेचन्दजी महाराज ठाणे ४।

(४) पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री धीरजमलजी महाराज ठाणे ६।

(५) पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री हजारीमलजी महाराज ठाणे ११।

(६) पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठाणे ४। — कुल ३२ मुनि

उपरोक्त मुनिराजों ने सम्मिलित होकर शास्त्र-परम्परा, देश, काल एवं समयानुकूल निम्न-प्रस्ताव सर्वानुमति से पास किये हैं।

(१) प्रस्तावों का पालन करवाने और सम्प्रदायों की सुव्यवस्था रखने के लिये, एक संयोजक-समिति मुक़र्रर की जाय, जिसका चुनाव इस प्रकार से किया जावे—

जिस सम्प्रदाय में १ से १० मुनि हों, उस सं० के २ प्रतिनिधि
,, ११ से २० ,, ,, ४ ,,
,, २१ से ३० ,, ,, ६ ,,

इस तरह, १० मुनिराजों में से २ प्रतिनिधि लिये जॉय। तदनुसार, पूज्य श्री अमरसिंह जी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्यश्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के ४ प्रतिनिधि, पूज्यश्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि, पूज्यश्री नानगरामजी महाराज की

सम्प्रदाय के १ प्रतिनिधि, पूज्यश्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के २ प्रतिनिधि और पूज्यश्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के १ प्रतिनिधि। इस तरह इन प्रतिनिधियों की समिति मुकर्रर की जाती है।

प्रत्येक-सम्प्रदाय के प्रतिनिधियों में से, एक-एक मन्त्री चुना जायगा।

प्रत्येक-सम्प्रदाय के प्रवर्तक भी उसी सम्प्रदाय के मुनियों के बहुमत से चुने जावेंगे।

इस तरह, इस पक्ष के लिये निम्नानुसार चुनाव किया जाता है—

सम्प्रदाय	प्रवर्तक	मन्त्री
(१) पूज्य अमरसिंहजी महा०	मुनिश्री दयालचन्द्रजी म	मु० ताराचन्द्रजी म०
(२) „ नानकरामजी म०	पन्नालालजी म०	, पन्नालालजी म०
(३) „ स्वामीदासजी म०	फतेहचन्दजी म०	„ छगनलालजी म०
(४) , रघुनाथजी म०	वीरजमलजी म०	मिश्रीलालजी म०
(५) „ जयमलजी म०	„ हजारीमलजी म०	„ चौथमलजी म०
(६) „ चौथमलजी म	, शार्दूलसिंहजी म०	, शार्दूलसिंहजी म०

(१) अध्यक्ष और मन्त्रियों का चुनाव समिति तथा सम्प्रदायवाले करेंगे। प्रतिनिधि अध्यक्ष और मन्त्री, ३ ३ वर्ष के लिए चुने जावेंगे। इस अवधि के बाद इन्हीं को रखना या बदलना, यह बात समिति एवं सम्प्रदाय के मुनियों के अधीन है।

(२) इस संस्था का नाम 'मरुधर साधु-समिति' होगा।

(३) समिति की बैठकें ३-३ वर्षों में करना निश्चित किया जाता है।

बैठक का स्थान और तिथि आदि ४ मास पहिले से अध्यक्ष तथा मन्त्री मिलकर नियत करें और आमन्त्रणादि का कार्य शुरू करें। इसके लिये फाल्गुन मास श्रेष्ठ होगा।

(४) समिति एकत्रित करने योग्य यदि कोई खास-कार्य होगा तो चातुर्मास के अतिरिक्त चाहे जिस समय कर सकते हैं। किन्तु प्रतिनिधियों को २ मास पूर्व आमन्त्रण देना होगा।

(५) समिति का कार्य, उपरोक्त-नियमानुकूल सुचारु-रूप से चलाने और इन नियमों का प्रचार करने के लिये, निम्नोक्त-मुनिवरों के जिम्मे किया जाता है। पत्र-व्यवहार, इन्हीं मुनियों की सम्मति से होगा।

(१) मुनिश्री ताराचन्दजी महाराज
(२) „ पन्नालालजी महाराज
(३) मिश्रीलालजी महाराज
(४) „ छगनलालजी महाराज

(५) मुनि श्री चौथमलजी महाराज.
(६) मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज.
(६) आर्याजी के साथ, कारण विशेष के अतिरिक्त, आहार-पानी का संभोग (लेन देन) बन्द किया जाता है।

(७) व्याख्यान के समय के अतिरिक्त यदि आर्याजी, मुनिराजों के स्थान पर ज्ञानार्थ आवें, तो कम से कम १ स्त्री और १ पुरुष (गृहस्थ) का वहां उपस्थित होना आवश्यक है। तथा खुले स्थान में ही बैठ सकती हैं। यदि कार्यवश आना पड़े, तो खड़ी २ पूछकर वापस लौट जायँ।

(८) मुनिराजों को, आर्याजी के स्थान (निवास) पर न तो जाना ही चाहिये, न वहां बैठना ही चाहिये। यदि, सयारे और पुस्तक प्रतिलेखन के कारण जाना पड़े, तो बिना श्रावक या श्राविका की उपस्थिति के, वहां नहीं बैठ सकेंगे।

(६) मुनिराजों के स्थान पर, बाइयों को व्याख्यान के समय के अतिरिक्त, पुरुषों की उपस्थिति के बिना न जाना और न बैठना ही चाहिये।

(१०) साधुजी २ ठाणे से और साध्वीजी तीन ठाणे से कम, आज्ञा के बिना नहीं विचर सकतीं।

(११) दीक्षा, योग्य-व्यक्ति देखकर तथा शास्त्रानुकूल एवं श्रीसंघ की सम्मति से दी जावेगी।

(१२) साधु-समाचारी, (शास्त्रानुसार दस प्रकार को) नियमित-रूप से की जावे।

(१३) पाक्षिक पत्रिका के अतिरिक्त, तपोत्सव, क्षमापना पत्रिकादि न छपवाई जावें, लेखादि की बात अलग है।

(१४) मन्त्र, यन्त्र, तन्त्रादि अष्टांग निमित्त प्ररूपणा करना, मुनिधर्म से विरुद्ध है। अतः इसका त्याग करें।

(१५) अष्टमी और चतुर्दशी को प्रत्येक-मुनि उपवास, आयबिल, एक ठाना, पांचविगय त्याग आदि तप करें। बाल,वृद्ध और विद्यार्थी की बात अलग है। यदि कारणवश उपरोक्त तप न किये जायँ, तो मास में दो उपवास करें। अथवा सूत्र की ५०० गाथा की सज्झाय करें।

(१६) अप्रतीतिकारी-गृहस्थ के घर पर किसी भी कार्य से मुनिराज न पधारें।

(१७) साधुजी, अपना फोटो न खिंचवावें।

(१८) दीक्षा में अपव्यय तथा अप्रमाणित खर्च को रोकें।

[१६] प्रतिदिन, कम से कम ५०० गाथा का स्वाध्याय करें अथवा कम से कम नमोत्थुणं की ५ माला फेरें। व्याख्यान के अलावा, कम-से कम २ घण्टे तक जिनवाणी का मनन करेंगे। विहार और अस्वस्थ होने की बात अलग है।

(२०) वस्त्र, बहुमूल्य, रंगीन, रेशमी, चमकीले, फैन्सी और बारीक न लेंगे न पहनेंगे। कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो व्याख्यान एक ही होगा।

(२१) उपरोक्त संगठित सम्प्रदायों के साथ ११ संभोगों (आहार के अतिरिक्त) की छूट दी जाती है।

(२२) आर्याजी के विषय में, कमेटी प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री को, ज्ञान क्रिया के सम्बन्ध में नियम बनाने की आज्ञा देती है। जो आर्याजी, उपरोक्त प्रवर्त्तक तथा मन्त्रीजी द्वारा बनाये हुए नियमों का भंग करेंगी उन्हें व्यवहार से बाहर किया जावेगा। इसकी सूचना छहों सम्प्रदायों को दे दी जावेगी और वे ऐसी आर्याजी से कोई व्यवहार न रक्खेंगे।

(२३) जो मुनि, अपनी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा कमेटी द्वारा बनाये हुए नियमों का भंग करेंगे, उनको प्रवर्त्तक तथा मन्त्री सम्भोग (१२ व्यवहारों) से अलग करके, छहों सम्प्रदायों के प्रवर्त्तकों को इस बात की सूचना दे देंगे, ताकि उनसे कोई सम्बन्ध न रक्खें।

(२४) प्रत्येक क्षेत्र में छह का सम्प्रदायों में से एक चौमासा होगा। कदाचित किसी कारणवश दो चातुर्मास हो जावेंगे, तो व्याख्यान एक ही होगा।

(२५) कोई भी मुनि, छः सम्प्रदायों के क्षेत्र में विचरें, तो उस क्षेत्र के अधिष्ठाता-मुनि की सम्प्रदाय की समाचारी के विरुद्ध प्ररूपणा न करेंगे और गुरु आम्नाय भी अपनी नहीं करावेंगे।

(२६) पक्खी और संवत्सरी छहों सम्प्रदाय एक करेंगे। इस सम्बन्ध में, जो विशेष बात बृहत्-सम्मेलन में तय होगी, वह सर्व सम्मति से स्वीकार की जावेगी।

(२७) इन छः सम्प्रदाय के सम्भोगी मुनियों में से यदि कोई मुनि, किसी कारणवश किसी दूसरी सम्प्रदाय में रहना चाहेंगे, तो वे अपने प्रवर्त्तक तथा मन्त्री की आज्ञा लेकर एवं रखने वालों के नाम का आज्ञापत्र प्राप्त करके वहां रह सकते हैं। इस अवस्था में, रास्ते में, आदमी के साथ अकेले जा सकते हैं।

(२८) कोई प्रवर्त्तक-मुनि, अपनी सम्प्रदाय के किसी मुनि से, छहों सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों की आज्ञा प्राप्त किये बिना सम्भोग नहीं तोड़ सकते।

(२९) इन छः सम्प्रदायों के मुनियों में जो मुनि यहां हाजिर नहीं है, उन्हें उस सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री, अपनी सम्प्रदाय में ले सकेंगे तथा छहों सम्प्रदाय के प्रवर्त्तकों को इसकी सूचना दे देंगे।

(३०) जो मकान गृहस्थों ने अपने धर्म-ध्यान के लिये बनाया है उसका फिर चाहे जो नाम रक्खा गया हो—उसमें मुनि ठहर सकते हैं। किन्तु साधुओं के निमित्त बनाये हुए मकान में ठहरने का निषेध है।

राजकोट साधु-सम्मेलन में शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज आदि मुनि वर्यों तथा विद्वान श्रावकों ने, महासम्मेलन की नींव के रूप में तथा हम लोगों के लिये मार्गदर्शक जो कार्यवाही की है, उस पर यह साधु-सम्मेलन अपनी ओर से सन्तोषपूर्वक हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता है।

* * * * * * * *

तत्पश्चात्, श्री० डाह्यालाल मेहता ने, मुनिराजों, बाहर से पधारे हुए सज्जनों तथा पाली श्रीसंघ का उपकार मानते हुए कहा, कि—आप सबका उपकार मानने के इस धन्य-समय पर, ज्ञाता धर्म-सूत्रकार का एक दृष्टांत याद आता है। वह यह, कि जंगल में स्वतन्त्र-रीति से विचरने वाले अकीर्ण-जाति के उत्तमोत्तम अश्वों को, सुगन्धी, मीठे-भोजन, बाजों के मीठे स्वर आदि के लालच में फंसाकर, राजा की हय शाला में ला, परतन्त्र कर दिया गया था। ठीक इसी तरह, मुक्ति के उपासक तथा तरण-तारण साधु-रूपी उत्तमोत्तम अश्वों को, पत्तराग, अच्छे-अच्छे भोजन, अच्छे उतारे, बढ़िया स्वागत आदि के लालच में उलझाकर, हम श्रावकों ने ही परतन्त्र बनाया है। जंगल के निवृत्ति युक्त और सयम-आराधना के स्वतन्त्र-क्षेत्र में से, शिथिला चरण और प्रवृत्ति के परतन्त्र-वातावरण में, हम लोग ही उन्हें खींच लाये हैं। आज का यह दिन धन्य है, कि मुक्ति के उम्मेदवार इन उत्तमोत्तम-अश्वों ने, श्रावकों की अधीनता दूर कर दी और चारित्र्य की शुद्धि तथा संयम की आराधना के नियम बनाये हैं। हम श्रावकों को भी उन्हें, पत्तराग या आगत-स्वागत के लालचों से मुक्ति देनी चाहिये और उन्हें, उनके चारित्र्य धर्म में गतिमान् होने के कार्य में सहायता पहुंचानी चाहिये यही हमारा धर्म है।

यहां विराजमान मुनिराजों—जो दूर २ से विहार का कष्ट उठाकर यहां पधारे हैं—का, पाली श्रीसंघ तथा स्वयसेवक बन्धु—जिन्होंने श्रेष्ठ आतिथ्य करने में हद कर दी है—का तथा बाहर से पधारे हुए सज्जनों का, कांफ्रेंस की ओर से मै उपकार मानता हूं और आप सब लोगों का आभार मानने का जो अलभ्य-समय मुझे प्राप्त हुआ है, उसे मैं अपना परम-सौभाग्य समझता हूं।

* * * *

श्री नथमलजी चोरड़िया ने, पाली श्री संघ तथा स्वयंसेवक बन्धुओं का, बाहर से पधारे हुए सज्जनों की ओर से आभार माना। इसके पश्चात्, स्वयंसेवकों की प्रशंसनीय-सेवा के सम्मान में उन्हें चांदी के पदक देने की घोषणा, श्री दुर्लभजी भाई जौहरी की ओर से, श्री डाह्या लाल मेहता ने की।

पाली में, मुनि सम्मेलन की यादगार में, जैन-पाठशाला की स्थापना हुई तथा उसके नियम, व्यवस्था आदि की रचना भी की गई। पाठशाला के लिए, जो चन्दा पहले एकत्रित हो चुका था, उसके अतिरिक्त लगभग १२००) रुपये का फण्ड और हुआ। अन्त में, भगवान महावीर के जयनाद पूर्वक सभा विसर्जित हुई।

इस तरह, राजकोट और पाली के सम्मेलन सफलता पूर्वक समाप्त हो गये। अब, पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन की बारी थी। जिन श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री १००८ श्री सोहनलालजी महाराज की दया और प्रेरणा से साधु-सम्मेलन का सूत्रपात हुआ था, उन्हीं की सम्प्रदाय का यह सम्मेलन था। निश्चयानुसार, होशियारपुर में साधुगण एकत्रित होने लगे। गणी श्री उदयचन्दजी महाराज और युवाचार्य श्री काशीरामजी आदि पधार गये। जो जो मुनिराज नहीं पधार सके,

उनकी ओर से सम्मति या प्रतिनिधि आ गये। पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज जिनकी आयु लगभग ८२ वर्ष की और प्रवर्तिनीजी श्री पार्वतीजी महाराज, जिनकी आयु ८३ वर्ष की थी, स्थिर वास होने के कारण सम्मेलन में न पधार सकीं।

सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ होने के पूर्व, सम्मेलन-समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी, श्री० आनन्दराज जी सुराणा लाला रतनचन्दजी और राय साहब लाला टेकचन्दजी को साथ लेकर, अमृतसर, पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित हुए। वहां से आशीर्वाद तथा शुभ सूचनाएं प्राप्त करके, जालन्धर स्थित प्रवर्तिनी श्री पार्वतीजी महाराज की सेवा में पधारे। आपका आशीर्वाद तथा समयोचित-सूचनाए प्राप्त करके लुधियाने में श्री उपाध्यायजी महाराज की सेवा मे वह डेपुटेशन पहुंचा। वहां श्री० उपाध्यायजी महाराज से शीघ्र ही होशियारपुर पधार कर सम्मेलन की कार्यवाही में भाग लेने का अनुरोध करके पुनः होशियारपुर लौट आया।

डेपुटेशन के लौट आने पर, होशियारपुर में, मुनिराजों तथा श्रावकों की एक सम्मिलित सभा हुई। सभा-स्थान का दृश्य समवसरण का-सा था। प्रारम्भ में वीतरागवाणी से मंगलाचरण हुआ। इसके बाद, मन्त्री जी ने, राजकोट श्रीसंघ तथा अजमेर श्री संघ के, सफलता की इच्छा रखने वाले तार पढ़ कर सुनाये। फिर सम्मेलन का उद्देश्य बतलाते हुए आपने जोरदार भाषण दिया। आपने बतलाया, कि सम्मेलन की प्रेरणा पहले पंजाब से ही मिली है इसलिये महासम्मेलन की नींव मजबूत करने की सबसे अधिक ज़िम्मेवारी पंजाब वालों पर ही है। इसके पश्चात् राजकोट और पाली सम्मेलन की कार्य वाहियां पढ़कर सुनाई तथा समझाई गई। श्रोतावर्ग पर, इन कार्यवाहियों के सुनने से बड़ा असर पड़ा और उसमें आशा तथा उत्साह का संचार होगया।

उत्साही युवराज श्री० काशीरामजी महाराज ने सिंहनाद-सा करते हुए फरमाया कि इन दोनों सम्मेलनों की कार्यवाही प्रशंसनीय है। किन्तु समाचारी की बहुत-बातें पंजाब-संप्र- की समाचारी में मौजूद है।

इसके बाद, आपने तथा श्री मन्त्रीजी महाराज ने कई विचारणीय-विषयों पर प्रकाश डाला। अन्त में उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी महाराज के होशियारपुर पधार जाने पर ही सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ करने का निर्णय करके जयजिनेन्द्र की ध्वनि के साथ सभा विसर्जित हुई।

इसके बाद श्री० मन्त्रीजी किसी आवश्यक कार्यवश होशियारपुर से लौट गये। इधर होशियारपुर में विराजमान मुनिगण, श्री० उपाध्यायजी की प्रतीक्षा करने लगे। शनिवार को श्री उपाध्यायजी महाराज होशियारपुर पधार गए, अतः रविवार से सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ होगई। कुछ दिन बाद पंजाब प्रान्तीय साधु-सम्मेलन की सफलता बतलाने वाला एक पत्र श्री० लाला बंसीलालजी जैन ने होशियारपुर से श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी मन्त्री साधु सम्मेलन-समिति के नाम भेजा था। जिसका कुछ अं श यों है—

"आपके पुरुषार्थ से, पंजाब-प्रांतीय मुनि-सम्मेलन आनन्द पूर्वक समाप्त हो गया। प्रत्येक मुनि ने, अपनी सहानुभूति और प्रेम का परिचय दिया। सभी प्रस्ताव अपनी सहानुभूति

और प्रेम का परिचय दिया। सभी प्रस्ताव शांति और प्रेम से पास हुए। सभापतिजी श्री गणीजी उदयचन्दजी महाराज की योग्यता और मुनियो की विनीतता के कारण, सब कार्य सफल हुआ। प्रस्तावों की कॉपी, और मुनि-सम्मेलन का सब वृत्तान्त, उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी महाराज अपने साथ लेकर जालन्धर की तरफ पधारे हैं।

'वहाँ, प्रवर्तिनी श्रीमती आर्याजी श्री पार्वतीजी महाराज से मिलकर, सब वृत्तान्त भिजवा दिया जायगा, उसे आप जैन प्रकाश में प्रकाशित करवा दें, इस सम्मेलन की जो कार्यवाही जैन प्रकाश में प्रकाशित हुई थी वह यों है—

[नमोत्थुणं समणस्स भगवओ महावीरस्स]

श्री पँजाब-प्रान्तिक साधु-सम्मेलन, होशियारपुर

विक्रमाब्द १६८८ चैत्र कृष्णा ६ रविवार को, होशियारपुर में, पंजाब-प्रान्तीय साधु-सम्मेलन की पहली बैठक अनुमानतः ८ बजे दिन में प्रारम्भ हुई। इस सभा में, गणिजी श्री उदयचन्द्रजी महाराज, सर्व-सम्मति से सभापति तथा उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी महाराज मन्त्री चुने गये। इसके बाद श्री सभापति महोदय की आज्ञा ले, कवि मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज ने निम्नानुसार मंगलाचरण किया।

(तर्ज—लहर तबील तथा। पूजी साहिब तेरा इकबाल बढ़े॥)

मिल परस्पर में हित प्यार करो। वीरो जैन धर्म प्रचार करो। टेक। जाति वोही बढ़ती जाती है। अनुपम संप बनाती है। जाति वह रसातल जाती है। जिसमें कुसंप विचार करो। मिल०॥ १॥ इक पतंग दीप पर जाता है। झट दीपक उसको जलाता है। यदि सब दीपक पर टूट पड़ें। बुझे दीपक तुम इतबार करो॥ २॥ जब एके दो मिल जाते हैं। ग्यारा की संख्या पाते हैं। जुदा २ एक कहलाते हैं। इस फूट का तिरस्कार करो॥ ३॥ दुक्की के बादशाह ताईं। एके को जीत सके नाहीं। एके से जाते हार सभी। कर एका अपना उद्धार करो॥ ४॥ संतरे की शकल मत दर्शाओ। खरबूजे की मानिंद बन जावो। कर मेल दिली तुम दिखलाओ। झूठी न दिखावा कार करो॥५॥ जब तार-तार मिल जाते हैं। महा हस्ती को बांध पाते है। ऐसा जो संप बनाते हैं। उन सत्पुरुषों का दीदार करो॥ ६ ॥ चारपाये पलंग बनाते हैं। भगवन तीर्थ फरमाते हैं। मिल आपस में यह सुहाते हैं। निश्चा मन में नरनार करो॥ ७॥ देखो बूंद २ मिल जाती हैं। ले शिक्षा अपना उद्धार करो॥ ८॥ काम कैंची न करना भाई बनो सुई की माफिक सुखदाई। काशीराम मेरे गुरु फरमाई। मुनि हरख कथन स्वीकार करो॥ ६॥

इसके बाद मुनि सम्मेलन के अभिनन्दन में, मधुर-स्वर से, पधारे हुये अष्टादश मुनियों के नाम एक सुन्दर भजन गाया।

तर्ज—डंके की—जिन धर्म का डंका आलम में बजवा दिया केवल ज्ञानी ने'॥

साधु सम्मेलन का होना। चारों तीर्थ को मुबारिक हो। मुबारिक कृपालु० जिसमें है। चारों तीर्थ को मुबारिक हो। टेक॥

बहु देर से शुभ यह मौका मिला, रहे नहीं किसीके दिल में गिला। फर्माय वीर प्रभुजी का चारों तीर्थ को मुबारिक हो॥१॥ गच्छाधिपति सोहनलाल गुरु। पजाब सम्मेलन किया शुरु। जो मुनि सम्मेलन में आये देना धन्यवाद मुबारिक हो॥२॥ गणी उदयचन्दजी स्वामी हैं। जो देश देश में नामी हैं। है जीतधार्इ वादी मन पे। चारों तीरथ को मु०॥३॥ महाराजश्री विनेचन्द्रजी। बड़ा प्रेम संयम दिल अन्दर जी। वृद्ध साधु का दर्शन होना। चारों ती॥४॥ श्री उपाध्याय स्वामी हैं। सब मत परमत में नामी हैं।। कई पुस्तक रचकर दिखलाये। चारों ती०॥५॥ श्री नेकचन्द्रजी हैं स्वामी। वैरागी हैं मुक्तिगामी। उत्साह पूर्वक आना हुवा। चारों०॥६॥ खुशालचन्द्र खुशहाल रहें जप तप संजम वैराग रहें। हैं शांत सुमाधिक मुनिवरजी। चारों०॥७॥ गुरु कांसीराम युगपदधारी। चहुं तीर्थ को हैं सुखकारी। हैं विद्वान् क्रियापात्र।॥ चारों०॥८॥ श्री पंडित नरपतराय मुनि व्याख्यान रसिक है मधुर धुनी। धर्म को खूब दिपाते हैं। चारों०॥९॥ श्री पंडित रामस्वरूप मुनि। व्याख्यानी गिने जाते हैं गुणी। सम्मेलन में दाखिल होना। चारों०॥१ ॥ मुनि हरखचन्द्र सरल चाणी। सब साधु हैं उत्तम प्राणी। मोतियन की माला यह सब हैं। चारों०॥११॥ रघुवरचन्द्र वड भागी हैं। मुनि दुर्गादास वैरागी हैं। मुनि मानिकचन्दजी सेवा करे। चारों॥१२॥ मुनि सोमचन्दजी मनमोहे वय चातुरता में सोहे। मुनियों का दर्शन इक जाइये। चारों०॥१३॥ रहते हैं सुखी अमर चंद मुनि। देखें हैं जो कविता में गुणी। गायनका हमको शौक बड़ा। चारों०॥१४॥ मुनि टेकचन्द्र वियावृत करते। सेवा बलदेवजी सर धरते। समता में पारसचंद सोहे। चारों०॥१५॥ प्रतापचन्द्र करते सेवा। सेवा है बड़ोंकी सुखदेवा। अठदस मुनियों का यहां आना। चारों०॥१६॥ सारे प्रांतों से बड़-बड़ के। अब काम दिखावो यहां करके। लिखा आवेगा तारीखों में। चारों०॥१७॥ संवत उन्नीसो अठासी है। वैशाखी पद्मी भाषी है। एकठ होशियारपुरे होना। चारों०॥१८॥ करो सारे निज २ फर्ज अदा। चहुं तीर्थ का हो जावे भला। मुनि हरख दिया है भजन सुना। चारों तीर्थ को मुबारिक हो॥१९॥

तत्पश्चात् कवि मुनिश्री अमरचन्दजी महाराज ने भी उक्त सम्मेलन की सार्थकता विषयक मधुर स्वर में यह भजन गाया—

चाल—कर्मों के देखो सारे कैसे हैं भाजजी

होना आज का सबको मुबारिक हो। करना परस्पर प्रेम का हमको मुबारिक हो॥१॥ बिछुड़े हुए जो थ भला हमरे महात्मा। देना दर्शन उनका सदा हमको मुबारिक हो॥२॥ जैसा हुवा है मेल अब ऐसा रहे सदा। करना प्रभु से विनति हमको०॥३॥ फैली हुई है कीर्ति जिनकी जहां भर में। वो हैं गणि आये यहां हमको०॥४॥ वृद्ध संयमी विनयचन्द्रजी महाराज जानिये। शिक्षा भली देते सदा हमको०॥५॥ रहते सदा स्वाध्याय में मशगूल रातदिन। आये उपाध्याय यहां हमको०॥६॥ महाराज नेकचन्द्र वा खुशहालचन्द्र के। करके दर्शन होती खुशी हमको०॥७॥ युवराज काशीरामजी महाराज हैं गुणी। करते फिकर हैं कौम का हमको०॥८॥ महाराज नरपति राय के चरणों में सर झुका। सेवा करू दिनरात ये हमको॥९॥ मेरे गुरां में गुण घने वर्णन करूं

कया २। करते धर्म प्रचार हैं हमको० ॥ १० ॥ मेरे गुरु महाराज हैं श्री रामस्वरूपजी। शरना चरन का है मिला हमको० ॥ ११ ॥ कविराज हर्षचन्द्रजी महाराज जानिये। प्रीति करें सबसे सदा० ।१२। थोड़े बताए नाम हैं मुनिराज तो घणे। आए सम्मेलन में यहां हमको० ॥ १३ ॥ भूलो सभी पिछले हुए झगड़े जो आपसी। करिये परस्पर संपये हमको० ॥ १४ ॥ हर एक से मोहब्बत करो तज ईर्षा। होवे तरक्की फेर ये हमको० । १५ ॥ डंका बजे जिन धर्म का सारे जहां भर में। प्रेमी बढ़े श्री वीर के हमको० ॥ १६ ॥ होवे समाचारी सभी मुनियों की एक सी। एकसा हो श्रद्धा परूपणा हमको० ।१७। मिलने का सार है यही हो धर्म का उद्योत। हिंसा घटे करुणा वधे हमको० ॥ १८ ॥ नगरी भली होशयारपुर संवत् अठासिया। चैत्र वदि तिथि षष्ठमी हमको० ॥ १९ ॥ करिये फर्ज अपने अदा जिसके भी जो जो हैं। अरजी अमर करता यही हमको० ॥ इति समाप्तं ॥

उपरोक्त दोनों मुनिराजों के भजनों का, सम्मेलन पर, अत्यन्त अच्छा प्रभाव पड़ा। तत्पश्चात्, श्री० सभापतिजी की आज्ञा से, श्री० उपाध्यायजी आत्मारामजी महाराज ने, अपना निम्न सारगर्भित प्राकृत-निबन्ध पढ़कर शांतिपूर्वक सुनायाः—

जयइ जगजीव-जोणी वियाणओ जगगुरू जगाणंदो।
जगणाहो जगबंधू जयइ जगप्पियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयई सुआणं पभवो तित्थयराणं अपच्छिमो जयइ।
जयइ गुरू लोगाणं जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

भद्दं सव्वजगुज्जोयगस्स भद्दं जिणस्स वीरस्स।
भद्दं सुरासुरनमंसियस्स भद्द धुयरयस्स ॥ ३ ॥
जहा ससीकोमुईजोगजुत्तो नक्खत्ततारागण परिवुडप्पा।
खे सोहइ विमले अब्भमुक्के एवं गणी सोहइ भिक्खूमज्झे ॥ ४ ॥

पियभाविअप्पा अणगारा भगवंतो! अयं समओ परमरमणीयो अत्थि। जहा वासासमए पाओ सव्वे वच्छा वा कुसुमा वियसंति तहेव इयाणिं समए पंचनईय अम्हाणं आयरिय सिरिमन्तो सोहनलाल महारायस्सप्पहावो य सिरिमईमहासभाए उज्जोयओ अम्हाणं गणो संवभूओ तस्स णं प्पहावओ अरिस समए अम्हाण-मुनिमण्डल विविहविसयाणं निण्णयस्स अट्ठे हुशीयारपुर नामए नयरे एगत्तभूओ सव्वे नियंठा पसन्नचित्तओ पेमभावणा सायं परोप्परं वत्तालावं वा तक्कं वितक्कं करेंति, सियावायस्स सिद्धतस्सप्पयारट्ठं अणुभव करेंति, सच्चाणा विसए वियारं कुव्वति, केण हेउणा सत्थाणं सव्वत्थ प्पयारं भवेज्जा, साहुसमायारी विसए-मणंमन्त्रं दव्वओ खेतओ कालओ वा भावओ अणुप्पेहा कुव्वेंति। अहो अच्चाणंदो वट्टइ! पुज्जमुणिवरा! भवयाणं अंतिए अहं जइणधम्मस्सप्पयारविसए-किंचि कहिउमिच्छामि-जज्जवियाओ सव्वे निग्गंथा धम्मो वदेसया, सत्थविसारया, समयोचियभासी सति तहावि अहं ससत्तिए नेवपस्संतो-भवयाणं समीवे किंचिमत्त सविसए साहेमि।

उज्जुनिग्गंथा भगवंता! भवतो सईओ पुव्व दसा, वट्टमाणा दसा य वियारं कुवतु भवयाणं सयमेव वियाराओ पईयभवेज्जा। भवयाण जणयाए मज्झे आसीविसनामा आसी, केवल

सामायारी विसए

भिक्खुणो ! भवयाणं सामायारीए एग भविस्सन्तो यओ सव्व मेओ निमूलो भविस्सई-गणस्स गणस्स सद्धिं बारससंभोगाणां विसए किंचि भवयाणं उचिनोऽत्थि विसालहियओ करियव्वो। जइ एगमडलविसए किंचि विवाओ भवेज्जा तया एगे आवस्सए विसए ठिति करित्तए-एगठाणे बक्खाण करित्तए इच्चाइं विसए विवाओ न भवियव्वं किन्तु इयवत्ता तया भविस्सइ जया सामायारीए नियम सुत्ताई सव्वेगणाणं एगो भविस्सति। अओ देसकालस्स पस्संतो सामायारीए नियमसुतं भवयाणं निम्माणं करियव्वो। तहादेसी वा विएसी वत्थाण विसए अवस्समेव तुब्भाणं वियारं करियव्वो सपडिरूव विसए वि वियारं करियव्वो। पत्तेय २ मुणिवराणं जोगविसए (समाहिविसए) सिक्खियव्वो।

तहा ठाणांगसुत्तस्स अणुसाराओ कुलथेरे, गणथेरे, संघ थेरे, विसए वियारियव्वो तप्पउजं अय अत्थि एगो सघ थेरे (मुख्खयायरियो) भवियव्वं। गणे२ मुणिवराणं समिइ-मण्ड लंभवियव्व जस्स दाराओ सव्वप्पयारो सव्वविसयाणं निणणयो भवेज्जा तहा जस्स पयारो अज्जरक्खियसामिणा वा खंधलायरिएण वा देवड्ढिगणिणा अहुवा भिक्खुणाएण सत्थाणं विसए देशकालाणुसारेण कज्जं कओ तहेव सिरिसंघस्स वि अरिहे पुव्वउत्तं कज्जविसए परिस्समं करियव्वो। तहा मुणिवराणं एगभासा भवियव्वा।

भासा विसए

साहवो ! भवयाण जं परोप्पर वत्तालाव भवेज्जा ते सव्वो अद्धमागही भासाए भवेज्जा। भवयाणं अद्धमागही भासा अइस ओजुत्तो अत्थि। सव्वे देवा वा सव्वे तित्थयरा अद्धमागही भासाए वयति जहा विवाहपन्नतीए-पंचमेयए एवं सुत्तमित्थि देवाणं भते कयराए भासाए भासन्ति, कयराए भासा भासिज्जमाणी विसस्सइ" "(गोयमा) देवाणं अद्धमागहीए भासाए भासन्ति सा भासिज्जमाणी विस्ससइ। तहा समवायंगे चउतीसठाणे अतिसयविसए एवं सुत्तमत्थि। गवंचणं अद्धमागही भाषाए धम्ममाइक्खइ इच्चाइ अओ मुणिवरा ! भवयाणं सव्वकिरियाओ वत्तालावस्स वा अद्धमागही भासाए भवियव्वा जया सव्वे मुणिवरा एगभासा भासी भवेज्जा तया परोप्पर पेममावो विसेसो भविस्सइ, तहा सुयस्स अट्ठाणं बोहो विसेसतए भविस्सइ। अओ मुणिवराणं ! अरिहे पुव्वउत्त भासा विसये परिस्समं करियव्वं।

अन्तिम पहणा

नियट्ठा ! मम अन्तिम पहणा भवयाणं पडि इयं अत्थि जस्स पयाराओ रागदो स खवित्ता सिद्धाणं अन्तपएसा परोप्पर संमिलिऊण एगोरूवभविता-सएव काले परमाणंदस्स अणु भवं करेंति–तहेव भवंतो पुव्वभूओ राग दोसं जहित्ता वट्टमाणे एगरूवो भवित्ता-जिणसास—— कडिबध्धो भवेज्जा जस्सण प्पहावओ निव्वाणं पयस्स सपत्ति विणं भवेज्जा।

वीरपुत्ता ! अय समओ रागदोसस्स नत्थि किन्तु अयं समओ परोप्पर सद्धिं जहणमयस्स पयारस्स अत्थि अहं कम्ला करेमि भवंतो, सकयव्वस्स विसए अचस्सं करिस्सति।

[मुनिश्री उपाध्यायजी आत्मारामजी महाराज के इस प्राकृत व्याख्यान का भावार्थ नीचे दिया जाता है। प्राकृत-शब्द अनेकार्थ होनेसे तथा हमारे ध्यान से श्री उपाध्यायजी महाराज के कथन के भाव में कुछ फेरफार होगया हो तो वह भूल क्षन्तव्य है]

— हे प्रिय भव्यात्मा मुनिवरों ! यह समय परम रमणीय है। जिस प्रकार वर्षाऋतु में प्रातःसमय वृक्ष और पुष्प विकसित होते हैं उसी प्रकार हम सब भी पूज्यश्री सोहनलालजी महाराज के प्रभाव से और श्रीमती कॉन्फ्रेंस देवी के परिश्रम से पञ्जाब प्रान्त के अन्तर्गत होशयारपुर नगर में विविध विषयों को निर्णय करने के लिये एकत्रित हुए हैं। इस समय हम सब निर्ग्रंथ प्रसन्न चित्त से प्रेमभाव को प्राप्त करके परस्पर वार्तालाप और तर्क वितर्क कर रहे हैं। स्याद्वाद सिद्धांत के प्रचारार्थ विचार विनिमय कर रहे हैं। शास्त्र विषयक विचार कर रहे हैं कि किस प्रकार जैन धर्म का सर्वत्र प्रचार हो। साधु समाचारी सम्बन्धी आपस में द्रव्य क्षेत्र काल और भाव से विचार कर रहे हैं। अहो ! आज अत्यानन्द है। पूज्य मुनिवरो ! आप सबके समक्ष मैं आज जैनधर्म के प्रचार के बाबत कुछ कहने की इच्छा रखता हूं। हे मुनिवरो ! आप आगमज्ञ सब धर्मोपदेशक शास्त्र विशारद और समयज्ञ हैं तो भी, शक्तिहीन मैं आपके सामने कुछ कहने की आज्ञा लेता हूं।

सरल स्वभावी मुनिवरों ! आप सब प्राचीन तथा अर्वाचीन दशा का विचार करेंगे, तो आपको स्वतः प्रतीत होगा, कि पूर्वकाल में मुनिलोग बहुत समर्थ थे। उसका कारण यह था, कि उनमें उग्र-तप तथा संयम का प्रभाव था। और आधुनिक समय में तो अपनी दशा अति विचारणीय है। और अपनी ऐसी दयनीय दशा परस्पर निंदा के प्रभाव से हुई है। अतः अब निंदा को छोड़कर, परस्पर प्रेमभाव से रहना चाहिये।

प्रेम-भाव के विषय में

हे मुनिवरो ! जागो ! प्रेमभाव से सब कार्य सिद्ध होते हैं प्रेमभाव से सहानुभूति उत्पन्न होती है, प्रेमभाव से भक्ति होती है प्रेम परस्पर का रक्षक है प्रेमभाव से दोष नाश होते हैं। अहो ! प्रेमभाव ही धर्म है। श्रमण भगवान महावीर ने रिपुओं के साथ भी प्रेमभाव दर्शाया था। यथा दरवाथ संगमदेव और चण्ड कौशिकादि के साथ भी प्रेम प्रकट किया था।

किन्तु खेद है कि हम स्वधर्मियों में प्रेम नजर नहीं आता। मुनिवरों ! जैन-धर्म का मूल मन्त्र प्रेम है और उसके होने पर ही ज्ञान और चारित्र की प्राप्ति होती है।

ज्ञान और चारित्र के विषय में

शुद्ध श्रमणो ! सम्यग ज्ञान से धर्म का प्रचार होता है सम्यग् ज्ञान से चारित्र की विशुद्धि होती है सम्यग् ज्ञान से आत्मा निर्मल होता है। अतः साधुशाला में ज्ञानाध्ययन करना चाहिये, तथा धर्मशास्त्र का अभ्यास करना चाहिये। कारण कि स्वाध्याय से ज्ञान पूर्ण होता है सब दुःखों से मुक्ति दिलाने वाला स्वाध्याय ही है, स्वाध्याय से पदार्थों का यथातथ्य स्वरूप समझने में आता है स्वाध्याय से शुद्ध ध्यान होता है और चारित्रकर्म का क्षय होता है।

हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आपही की अत्यन्त कृपा और विचारशक्ति के द्वारा साधु-सम्मेलन का जन्म हुआ है। आपही की कृपा से, ऑल इण्डिया श्वे० स्था० जैन कान्फरेन्स ने जाग्रत होकर बृहत् मुनि सम्मेलन की नींव डाली है। जिसके कारण सभी प्रान्तों में जागृति फैल गई है, जैसा कि जैन प्रकाश से प्रकट है। पंजाब का श्री संघ कुछ अर्से से बिखरा हुआ था, जो आपही की कृपा से पुनः प्रेम सूत्र में बँध गया है। जो पारस्परिक तर्क-वितर्क के लिये कटिबद्ध था, वही आज सहानुभूति पूर्वक जैन धर्म के प्रचार कार्य में लगा दिखाई दे रहा है। आपही की कृपा से काठियावाड, मारवाड़ गुजरात, कच्छ और दक्षिण प्रान्त में जो कई गच्छ बिखरे हुए थे, वे भी प्रेम-सूत्र में बंध गये हैं। इस लिये उपरोक्त महाचार्य के गुणों का अनुभव करते हुए, उनका सच्चे हार्दिक भावों से धन्यवाद करना चाहिये।

यह प्रस्ताव, श्रीमान् प० मुनि रामस्वरूपजी महाराज ने साधु-सम्मेलन के सन्मुख प्रस्तुत किया जो सर्वानुमति से, जयध्वनि पूर्वक स्वीकृत हुआ।

श्री उपाध्यायजी महाराज और प्रवर्तिनी श्रीमती आर्याजी पार्वती महाराज की ओर से निम्न प्रस्ताव उपस्थित किये गये।

(१) ऑल-इण्डिया कान्फरेन्स की ओर से प्रकाशित पत्रीपत्र का प्रतिरूप पत्रीपत्र प्रकाशित करना चाहिये।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) पूज्य श्री मुनि अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए बत्तीस नियमों के अनुसार गच्छ को चलना चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित, हुआ कि पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए, पंजाबी साधु संघ की मर्यादा के जो बत्तीस नियम हैं, वर्तमान में यह मुनि-सम्मेलन उन्हीं को उचित समझता है। अजमेर में होने वाले अखिल-भारतीय साधु-सम्मेलन के पश्चात्, आवश्यकता होने पर पंजाबी साधु संघ एकत्रित होकर फिर विचार कर सकेगा।

(३) पक्षपात के वश होकर, वर्द्धमान, वीरसन्देश आदि पत्रों और विज्ञापनों द्वारा, चतुर्विध संघ के सम्बन्ध में जो गलत लेख प्रकाशित होते रहे हैं, उनके लिये तिरस्कार सूचक प्रस्ताव पास होना चाहिये।

इस प्रस्ताव का गणी श्री मुनि उदयचन्द्रजी महाराज ने, बड़े ही मार्मिक शब्दों में अनुमोदन किया। जिसका वहां उपस्थित कई मुनिराजों ने समर्थन किया।

अन्त में यह प्रस्ताव निम्न स्वरूप में पास हुआ, कि—'यह मुनि मण्डल (साधु-सम्मेलन कुछ वर्ष पूर्व जो विज्ञापन बाजी और जैन आफताब, वर्द्धमान तथा वीरसन्देश के लेखों के द्वारा, दोनों पक्ष के अर्थात् पत्रीपक्ष और परम्परापक्ष के मुनिराजों एवं आर्याओं या चतुर्विध संघ पर राग-द्वेष आदि के वशीभूत होकर, असत्य और व्यर्थ लेख लिखे तथा छापे गये हैं, उन्हें शुद्धान्तःकरण से अत्यन्त शोकप्रद, निन्दनीय, संघ की हानि करने वाले और धर्म के लिये हानिकारक मानता हुआ तिरस्कार की दृष्टि से देखता और निकृष्ट कृत्य समझकर अमान्य मानता है।'

गौतम ! देव, अर्धमागधी भाषा बोलते हैं और उसी से भाषा उत्पन्न होती है'। वैसे ही श्री समवायांग जी सूत्र में चौंतीस ठाणों में अतिशय विषय में ऐसा सूत्र है, कि भगवान अर्धमागधी भाषा में धर्म का उपदेश देते हैं' इत्यादि। इस लिये हे मुनिवरो! वार्तालाप में अर्धमागधी भाषा बोलनी चाहिये। जब हम अर्धमागधी भाषा-भाषी होंगे तब परस्पर विशेष प्रेमभाव तथा सूत्र के अर्थ का विशेष रूप से बोध होगा। इसलिये मुनिवरों! हम सबको इसी भाषा में विशेष परिश्रम करना चाहिये।

अन्तिम प्रार्थना

हे निर्ग्रन्थो! आपके समक्ष मेरी अन्तिम प्रार्थना है कि जिस प्रकार भवि जीव रागद्वेष का क्षय करके सिद्ध गति के अनन्त प्रदेश में परस्पर सम्मिलित होकर एक रूप हो जाता है, और उसी समय परमानन्द का अनुभव करता है, उसी प्रकार हम सबको भी पूर्व के रागद्वेष को छोड़कर, वर्तमान में एक रूप होकर जिन शासन के प्रचार के लिये कटिबद्ध हो जाना चाहिये। जिसके प्रभाव से निर्वाण-पद की शीघ्र प्राप्ति हो।

हे वीरपुत्रो! यह समय राग-द्वेष करने का नहीं है किन्तु परस्पर प्रेमभाव से जैनधर्म के प्रचार करने का है। मुझे आशा है, कि आप उपरोक्त तथ्यों के विषय में अवश्य विचार करेंगे।

इसके पश्चात् पारस्परिक प्रेम सम्पादन के विषय में मुनिराजों की बहुतसी बातें हुईं। समय पूर्ण होजाने के कारण मंगलाचरण के पश्चात सभा दोपहर के लिये स्थगित करदी गई।

दोपहर के दो बजे से फिर मुनि-सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। इस समय श्री सभापतिजी की आज्ञा से, मुनिराजों ने प्रस्ताव उपस्थित किये। उन प्रस्तावों पर तर्क वितर्क पूर्वक तथा निर्णयात्मक-बुद्धि से विचार किया गया। इसी तरह सोमवार की दोनों बैठकों में भी प्रस्तावों पर ही विचार होता रहा। तीसरे दिन यानी मंगलवार को अजमेर-सम्मेलन कैसे सफल हो और पंजाब के श्री सुधर्माचार्यगच्छाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की ओर से कितने तथा कौन २ प्रतिनिधि जाने चाहियें, इस विषय पर नियत समय से अधिक समय होजाने पर भी सभापतिजी की आज्ञा से विचार होता रहा। तदुपरान्त, अजमेर में होने वाले बृहत्साधु-सम्मेलन में रखने योग्य विषयों पर भी विचार शुरू हुआ। समय अधिक हो गया था और विचारणीय विषय लम्बा था अतः सम्मेलन की बैठक दो दिन के लिये और बढ़ा दी गई। अन्त में सम्मेलन ने सर्वानुमति से निम्न प्रस्ताव पास करके अत्यन्त आनन्द तथा जयध्वनि पूर्वक पंजाब प्रान्तीय सम्मेलन समाप्त किया।

इसी समय सम्मेलन की ओर से यह भी घोषित किया गया कि अजमेर में होने वाले साधु-सम्मेलन में प्रवर्तिनी श्री पार्वतीजी महाराज की ओर से उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी महाराज प्रतिनिधि होंगे और अन्तिम वहां जो फैसला करेगा वह प्रवर्तिनीजी महाराज को स्वीकार होगा।

इस सम्मेलन में निम्नलिखित-प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुए—

"श्री सुधर्मागच्छाचार्य श्री मुनि पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज, श्रीसंघ के परम

हितैषी तथा दीर्घदर्शी हैं। आपही की अत्यन्त कृपा और विचारशक्ति के द्वारा साधु सम्मेलन का जन्म हुआ है। आपही की कृपा से, ऑल इण्डिया श्वे० स्था० जैन कान्फरेन्स ने जाग्रत होकर वृहन् मुनि सम्मेलन की नींव डाली है। जिसके कारण सभी प्रान्तों में जागृति फैल गई है, जैसा कि जैन प्रकाश से प्रकट है। पंजाब का श्री संघ कुछ अर्से से बिखरा हुआ था, जो आपही की कृपा से पुनः प्रेम सूत्र में बँध गया है। जो पारस्परिक तर्क-वितर्क के लिये कटिबद्ध था, वही आज सहानुभूति पूर्वक जैन धर्म के प्रचार कार्य में लगा दिखाई दे रहा है। आपही की कृपा से काठियावाड़, मारवाड़ गुजरात, कच्छ और दक्षिण प्रान्त में जो कई गच्छ बिखरे हुए थे, वे भी प्रेम-सूत्र में बंध गये हैं। इस लिये उपरोक्त महाचार्य के गुणों का अनुभव करते हुए, उनका सच्चे हार्दिक भावों से धन्यवाद करना चाहिये।

यह प्रस्ताव, श्रीमान् प० मुनि रामस्वरूपजी महाराज ने साधु-सम्मेलन के सन्मुख प्रस्तुत किया जो सर्वानुमति से, जयध्वनि पूर्वक स्वीकृत हुआ।

श्री उपाध्यायजी महाराज और प्रवर्तिनी श्रीमती आर्याजी पार्वती महाराज की ओर से निम्न प्रस्ताव उपस्थित किये गये।

(१) ऑल-इण्डिया कान्फरेन्स की ओर से प्रकाशित पत्तीपत्र का प्रतिरूप पत्तीपत्र प्रकाशित करना चाहिये।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(२) पूज्य श्री मुनि अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए बत्तीस नियमों के अनुसार गच्छ को चलना चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित, हुआ कि पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के बनाये हुए, पंजाबी साधु संघ की मर्यादा के जो बत्तीस नियम हैं, वर्तमान में यह मुनि-सम्मेलन उन्हीं को उचित समझता है। अजमेर में होने वाले अखिल-भारतीय साधु-सम्मेलन के पश्चात्, आवश्यकता होने पर पंजाबी साधु संघ एकत्रित होकर फिर विचार कर सकेगा।

(३) पक्षपात के वश होकर, वर्द्धमान, वीरसन्देश आदि पत्रों और विज्ञापनों द्वारा, चतुर्विध संघ के सम्बन्ध में जो गलत लेख प्रकाशित होते रहे हैं, उनके लिये तिरस्कार सूचक प्रस्ताव पास होना चाहिये।

इस प्रस्ताव का गणी श्री मुनि उदयचन्द्रजी महाराज ने, बड़े ही मार्मिक शब्दों में अनुमोदन किया। जिसका वहां उपस्थित कई मुनिराजों ने समर्थन किया।

अन्त में यह प्रस्ताव निम्न स्वरूप में पास हुआ, कि—'यह मुनि मण्डल (साधु-सम्मेलन कुछ वर्ष पूर्व जो विज्ञापन बाजी और जैन आत्मनाथ, वर्द्धमान तथा वीरसन्देश के लेखों के द्वारा, दोनों पक्ष के अर्थात् पत्रीपक्ष और परम्परापक्ष के मुनिराजों एवं आर्याओं या चतुर्विध संघ पर राग-द्वेष आदि के वशीभूत होकर, असत्य और व्यर्थ लेख लिखे तथा छापे गये हैं, उन्हें शुद्धान्तःकरण से अत्यन्त शोकप्रद, निन्दनीय, संघ की क्षति करने वाले और धर्म के लिये हानिकारक मानता हुआ तिरस्कार की दृष्टि से देखता और निकृष्ट कृत्य समझकर अमान्य मानता है।'

(४) पहले के निन्दात्मक पत्र फाड़ दिये जावें। भविष्य में, जिस साधु या आर्या के आचार विषयक कोई बात सुनी जावे, उससे कहे बिना किसी गृहस्थ से न कहनी चाहिये। यदि वे न माने तो उनके साथ यथोचित बर्ताव करना चाहिये। यदि कोई, उस व्यक्ति से कहे बिना ही कोई बात लोगों से कहदे, तो उसे भी यथोचित शिक्षा देनी चाहिये। इस नियम की रचना हो जाने के पश्चात यदि किसी मुनि या आर्या के पास, किसी के निन्दात्मक पत्र हों, तो उन्हें फाड़ डालें। भविष्य में न तो अपने पास कोई इस प्रकार के पत्र रक्खें और न ऐसा पत्र लिखने किंवा लिखाने के लिये किसी को उत्तेजना ही दें। यदि कोईगृहस्थ आदि, किसी साधु या आर्याओं के विषय में कोई बात कहे, तो उस मुनि या आर्या से पूछे बिना उस बात पर विश्वास न किया जाय और न जनता के सामने वह अप्रकट बात रक्खी ही जाय। यदि, कोई कोई मुनि या आर्यायें, उपरोक्त नियम का पालन न करें, तो उन्हें यथोचित-शिक्षा दी जानी चाहिये। इस नियम की रचना के पश्चात भी यदि मुनि या आर्यायें इस प्रकार के पत्रों को रक्खेंगी तो वे अपमानित और श्रीसंघ की चोर समझी जाँयगी।

यह प्रस्ताव सर्वसम्मिति से स्वीकृत हुआ।

(५) साधु या आर्यायें, किसी भाई या बहिन को अपने दर्शनों का नियम न करावें।

सर्व-सम्मिति से यह तय हुआ, कि मेरक्षा करके अपना पक्षीय बनाने के लिये ऐसा नियम न करवाया जावे।

(६) सब आचार्यों पर एक मुख्याचार्य होने चाहिए।

सर्व सम्मिति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(७) शंकित प्रश्नों का यथोचित समाधान होना चाहिये अर्थात शास्त्रोद्धार होना चाहिये।

सर्व-सम्मिति से पास हुआ, कि प्रतियों में जो लिखित अशुद्धियाँ हों उन्हें प्राचीन प्रतियों के आधार पर शुद्ध करने का कार्य अखिल भारतवर्षीय साधु-सम्मेलन पर छोड़ दिया जाय जो अजमेर में होने वाला है।

× × × × × × × ×

श्री उपाध्यायजी महाराज के प्रस्ताव—

(१) श्री प्रवर्तिनीजी की आज्ञा के बिना जो आर्यायें हैं वे भी प्रवर्तिनीजी की आज्ञा में की जावें। यदि वे यों न मानें तो गणी आचार्य और उपाध्याय उन्हें समझाकर आज्ञा में करें और फिर प्रवर्तिनीजी से कहा जावे कि वे उन्हें भलिभांति आज्ञा में रक्खें।

निश्चय हुआ कि यह प्रस्ताव वर्तमान आचार्य से सम्बन्ध रखता है।

(२) सब आचार्यों के एकत्रित हो जाने पर, फिर गणी, आचार्य और उपाध्याय, प्रवर्तिनीजी से मिलकर चार गणावच्छेदिकायें नियत करें, जिससे सब आचारों की भलिभांति रक्षा की जा सके।

यह प्रस्ताव भी वर्तमान आचार्य से सम्बन्ध रखता है।

(३) जो साधु या आर्यायें आचार्यजी की आज्ञा में हों, उनके साथ साधु व आर्यायें वन्दना आदि क्रियाओं का यथोचित पालन करें।

सर्वसम्मति से यह पास हुआ, कि जो साधु आर्यायें, श्री पूज्य महाराज की आज्ञा में हैं या हों उनके साथ साधु व आर्यायें, यथोचित वन्दनादि क्रियाओं का यथाविधि पालन करें। स्वेच्छापूर्वक यानी बिना आचार्य महाराज की आज्ञा वन्दनादि व्यवहार न छोड़ें, जिससे संघ में एकता तथा प्रेम की वृद्धि और आज्ञा का पालन होता रहे।

* * * *

युवाचार्य मुनि श्री काशीरामजी महाराज के प्रस्ताव—

(१) दीक्षा से पूर्व, वैरागी को अर्थसहित प्रतिक्रमण सिखाना चाहिये।

सर्वसम्मति से यह पास हुआ कि, जहां तक हो सके, अर्थसहित प्रतिक्रमण सिखलाना चाहिये। यदि उसका कोई बुजुर्ग या मित्र भी साथ ही दीक्षित होना चाहता है, तब उसका प्रतिक्रमण मूलमात्र सम्पूर्ण होना चाहिये।

(२) निश्चित्-कोर्स समाप्त किये बिना, आम जनता में उपदेश न देना चाहिये।

पास हुआ कि एक कमेटी बनाई जाय, जो कोर्स नियत करे। यह प्रस्ताव, वृहत्सम्मे- में भी रक्खा जावे।

(३) प्रत्येक गच्छ में आचार्य होने चाहिये और सब आचार्यों पर एक मुख्याचार्य होने चाहियें, उनके मातहत, मुनियों की एक कौन्सिल होनी चाहिये।

सर्वसम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव वृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(४) सब गच्छों का मुख्य नाम, श्री सुधर्मागच्छ होना चाहिये। उपनाम जो जो हों वही रहें।

सर्वसम्मति से स्वीकृत हुआ।

(५) किसी का साधु, यदि क्लेश करके आगया हो, तो उसे समझाकर फिर वहीं भेज देना चाहिये, अपने पास न रखना चाहिये।

यह भी सर्वसम्मति से मंजूर किया गया।

(६) मुनियों को, आर्याओं के मकान में जाना और बैठना नहीं। यदि, कारणवश जाना पड़े; तो बिना श्रावक और श्राविका की मौजूदगी के वहां न ठहरें। इसी प्रकार से आर्याओं के विषय में भी समझें।

सर्वसम्मति से यह प्रस्ताव भी स्वीकार हुआ।

(७) प्रत्येक प्रान्त में, एक स्थिवर के पास साधुशाला होनी चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित हुआ कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(८) अपनी सम्प्रदाय के एक से निकले हुए साधु को दूसरा कोई साधु दीक्षित न करे।
सर्व सम्मति से पास हुआ।

(९) साधु व आर्यायें, फोटो न खिंचवायें।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव इस रूप में पास हुआ कि उद्दीरणा करके अपनी मान प्रतिष्ठा के लिए फोटो न खिंचवायें। यदि, वैराग्यवर्धनार्थ किसी का फोटो हो तो बात दूसरी है। लेकिन, श्रावकों व भक्तजनों को चाहिए, कि उसकी पूजा न करें। क्योंकि, वह केवल लिबास की यादगार के बतौर है।

(आखिरी निर्णय के लिये बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय)

(१०) भण्डोपकरण, गृहस्थ को देकर अन्य नगर न पहुंचाये जावें।
सर्व सम्मति से यह भी स्वीकृत हुआ।

(११) सब गच्छों की प्रश्नोत्तर-पक्खी एक होनी चाहिये।
सर्व सम्मति से पास हुआ कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(१२) जहांतक हो सके, स्वदेशी-वस्त्र ही लेने चाहियें।
सर्व सम्मति से पास, बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

× × × ×

मुनिश्री रघुवरदयालजी के शिष्य मुनिश्री दुर्गादासजी महाराज के प्रस्ताव—

(१) क्या श्री भगवान् महावीर के सिद्धान्तों का सन्देश प्रत्येक मनुष्य तक पहुंचाना आवश्यक है ?

सर्व सम्मति से निश्चित हुआ कि पहुंचाना जरूरी है।

(२) अगर जरूरी है तो वह सन्देश कैसे पहुंचाया जा सकता है ?

सर्व सम्मति से पास हुआ कि तहरीर व तकरीर द्वारा।

(३) प्रत्येक श्रावक-श्राविका के लिये रात्रि भोजन का त्याग निहायत जरूरी है।

सर्व सम्मति से पास हुआ कि सभी साधु तथा आर्याओं को चाहिये कि इस विषय पर उपदेश करते रहें।

(४) जिस किसी साधु का अपने शहर में चातुर्मास करवाना हो, उस गच्छ की स्वीकृति के बिना न करवाया जावे।

सब सम्मति से निश्चित हुआ कि *

(५) पूज्यश्री अमरसिंहजी महाराज का वार्षिक-दिवस, आषाढ कृष्णा २ को मन चाहिये।

सर्व सम्मति से स्वीकृत।

(६) तीन-वर्ष मे, प्रत्येक प्रात का साधु-सम्मेलन होना चाहिये और दस वर्ष पश्चात वृहत्साधु-सम्मेलन होना चाहिये।

सर्व सम्मति से निश्चित हुआ, कि वृहत्साधु-सम्मेलन में यह प्रस्ताव रक्खा जाय।

(७) जो वर्तमान आचार्य हों, उनका वार्षिक पाटमहोत्सव होना चाहिये।

सर्व सम्मति से स्वीकृत।

(८) मुनि पाठशाला, पंजाब में शीघ्र स्थापित होनी चाहिये।

सर्व सम्मति से पास हुआ, कि शीघ्र होनी चाहिये।

* * *

श्री मुनि नरपतरायजी महाराज के प्रस्ताव—

(१) अन्य प्रात के साधु यदि किसी प्रात मे आवें, तो जिस शहर मे मुनि-महार विराजमान हों, उनकी परीक्षा और स्थानीय-मुनियों की स्वीकृत के बिना उनका व्याख्यान न ह चाहिये।

निश्चित हुआ, कि यह प्रस्ताव महा सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(२) जो मुनि गच्छ से बाहर हों या शिथिलाचारी हों, उनका कोई गृहस्थ आ सत्कार न करे और न चातुर्मास, न व्याख्यान ही करवावे।

सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह भी महासाधु-सम्मेलन मे रक्खा जाय।

(३) पूज्यश्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय का जो कोई साधु अलग घूमता और मुनियों के समझाने से न समझता हो, तथा जिसके कारण सघ एव धर्म की हानि होती उसका इन्तजाम श्रावक वर्ग को शीघ्रातिशीघ्र करना चाहिये।

सर्व सम्मति से पास।

* * *

श्रीमुनि सोमचन्द्रजी महाराज का प्रस्ताव—

(१) दीक्षा किस आयु वाले को दी जावे ?

निश्चित हुआ, कि यह भी महा सम्मेलन मे रक्खा जाय।

श्रीमुनि रामस्वरूपजी महाराज के प्रस्ताव—

(१) आल इण्डिया मुनि-सम्मेलन के लिये चुनाव होना चाहिये।

सर्व सम्मति से स्वीकृत।

(२) समस्त पन्थों के आचार्यों की श्रद्धा प्ररूपणा एक ही अवश्य होनी चाहिये, जिससे जनता को धर्म के भिन्न २ रूप न मालूम हों।

सर्व सम्मति से पास हुआ, कि यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(३) वर्तमान-सूत्रों के आधार पर एक ऐसा ग्रन्थ तैयार होना चाहिये, जिससे अजैन भी सुगमता पूर्वक लाभ उठा सकें।

सर्व सम्मति से पास हुआ, कि बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(४) व्याख्यानदाताओं के लिए, एक ऐसी पुस्तक तैयार होनी चाहिये, जिसके आधार पर व्याख्यान दाता एक ही श्रेणी का उपदेश दे सकें।

सर्व सम्मति से पास हुआ, कि बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

(५) प्रत्येक मुनि को, कम-से-कम आधा घण्टा प्रतिदिन ध्यान करना चाहिये।

यह भी सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ।

(६) पांच-सात ऐसे मोटे २ नियम या विषय चुन लेने चाहियें, जो भी जैन-धर्म में खास महत्व रखते हों। जैसे कि ज्ञान, दर्शन चारित्र ब्रह्मचर्य आदि जिनके द्वारा धर्म का प्रचार सामान्य मुनि भी कर सकें। साथ ही, उन्हें खास २ और विषयों की भी शिक्षा दी जावे।

सर्व सम्मति से यह पास हुआ कि श्रीमुनि उपाध्याय जी के बनाये हुए ६ ७ मार्गों को मुनियों को अच्छी तरह पढ़ लेना चाहिये।

[७] जैन धर्म, केवल जातिगत धर्म न होना चाहिये।

सर्वसम्मति से निश्चित हुआ कि जैन धर्म को विश्वव्यापी-धर्म बनाने के लिये पूरी कोशिश करनी चाहिये। यह प्रस्ताव बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

[८] जैन धर्म से, अछूतों की घृणा दूर होनी चाहिये।

यह निश्चित हुआ कि घृणा हमारे पास नहीं है क्योंकि यह मोहनीय-कर्म प्रकृति है। लेकिन जरूरत को छोड़, समयानुकूल विवेक से वर्तना चाहिये। यह प्रस्ताव भी बृहत्सम्मेलन में रक्खा जाय।

* * * * * * * *

श्री गणीजी महाराज का प्रस्ताव—

[१] भविष्य में, यदि संयम की वृद्धि करने वाले आचार-व्यवहार की भी कोई नई व्यवस्था रखी जावे तो बड़े साधु मतियों की सर्वानुमति के बिना न रखी जावे और न उसका व्यवहार ही किया जावे, जिससे संघ में किसी प्रकार का भेद न पैदा हो।

सर्वानुमति से स्वीकृत।

प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी महाराज का प्रस्तावः—

(१) जो श्रावक लोग वन्दना करते हैं, उन्हें प्रत्युत्तर में एक ऐसा शब्द कहना चाहिए, जो सर्व देशीय और धर्म ध्यान के प्रति उद्योतक हो। इसलिए, मेरे विचार से, वन्दना करने वाले के प्रति धर्म-वृद्धि कहना चाहिये।

सर्व सम्मति से यह प्रस्ताव पास हुआ, कि श्रावक लोगों की वन्दना के प्रत्युत्तर में दयापालो या धर्म-वृद्धि, ये दो शब्द कहे जांय। यह प्रस्ताव वृहत् सम्मेलन में रक्खा जाय।

(२) मुनियों के नामों के साथ प्रत्येक मुनि के नाम से पूर्व 'मुनि' शब्द होना चाहिए।

सर्व सम्मति से पास हुआ,, कि मुनियों के नाम से पूर्व मुनि शब्द लगाया जाय, जैसे कि—प्रवर्तक मुनि श्री विनयचन्द्रजी आदि।

* * * * * *

मुनि श्री नेकचन्द्रजी महाराज का प्रस्तावः—

(१) सब मुनियों को, अपने गुरु और आचार्य आदि पदधारियों की आज्ञानुसार वृद्ध रोगी और निराधारों की सेवा करनी चाहिये।

सर्वानुमति से मन्जूर हुआ।

* * * * * ×

श्री गणी उदयचन्द्रजी महाराज का प्रस्तावः—

(१) यदि वृहत् साधु-सम्मेलन में संवत्सरी आदि का प्रस्ताव सर्व सम्मति से न हो सके, तो क्या किया जाय?

निश्चित हुआ कि यदि सर्व सम्मति से न हो सके, तो बहु सम्मति को स्वीकार किया जाय।

× × × × × ×

अन्त में, सर्व मुनि-मण्डल की ओर से, पजाब प्रान्त की बिरादरियों को निम्न-लिखित सन्देश दिया गयाः—

"जिस प्रकार हमारी सब तरह से एकता होगई है, पक्खी पर्व आदि की धर्म तिथियां एक होगई हैं, उसी प्रकार से आप लोगों को भी उचित है कि पारस्परिक वैमनस्य-भाव को छोड़ कर, धर्म क्रियाओं में एकता धारण करें, जिससे धर्म और प्रेम की वृद्धि हो।

धन्यवाद !

मैं, आलइण्डिया श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन कान्फरेन्स के (आचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के पास) भेजे हुए डेपुटेशन की योग्यता और दीर्घदर्शिता की प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकता, जिसने हमारे गच्छ में एकता स्थापित करवा दी और इस महान् कार्य को प्रारम्भ करके, प्रत्येक प्रान्त में जागृति पैदा करवा दी।

इसके अतिरिक्त, श्री आचार्य महाराज का जितना गुणानुवाद किया जाय कम है, क्योंकि, आप श्री ने ही डेपुटेशन की प्रार्थना पर टीप के अनुसार गच्छ को चलने की आज्ञा देकर शान्ति की स्थापना करवा दी।

साथ ही गणावच्छेदिक मुनि श्री लालचन्द्रजी महाराज, गणावच्छेदिक तथा स्थविरपद विभूषित स्वर्गस्थ मुनि श्री गणपतिरायजी महाराज स्थविरपद विभूषित स्वर्गवासी श्री जवाहिर लालजी महाराज, स्थविरपद विभूषित श्री मुनि छोटेलालजी महाराज तथा प्रवर्तिनी श्री आर्या पार्वतीजी आदि समस्त गच्छ के मुनियों तथा आर्याओं को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिन्होंने श्री आचार्य महाराज से डेपुटेशन की प्रार्थना को स्वीकृत करते हुए, आज्ञा मंगवाली शुरु (प्रारम्भ) कर दी। जिससे आज पूज्य श्री मुनि अमरसिंहजी महाराज का गच्छ एक रूप में दृष्टिगोचर हो रहा है। राजकोट तथा पाली मुनिमण्डल को भी धन्यवाद देना अत्यन्त आवश्यक समझता हूं, कि जिन्होंने अजमेर साधसम्मेलन को सरल तथा सार्थक बनाने में प्रान्तीय सम्मेलन करके पूरा पूरा सहयोग दिया है।

अन्त में यहां उपस्थित प्रवर्तक मुनिश्री विनयचन्द्रजी उपाध्याय मुनि आत्मारामजी, मुनि नेकचन्द्रजी, मुनि खुशालचन्द्रजी, युवाचार्य मुनि काशीरामजी मुनि (पं०) मदनलालजी मुनि (पं) रायस्वरूपजी आदि मुनियों का और गणावछेदिक मुनिश्री छोटेलालजी, प्रवर्तक मुनिश्री बनवारीलालजी (जिन्होंने अपना मत श्री उपाध्यायजी को देकर इस कार्य की पूर्ति की) साथ ही प्रवर्तिनी आर्या श्री पार्वतीजी (जिन्होंने अपना एक सम्मति पत्र उपाध्यायजी के हाथ मुनि मण्डल होशियार पुर में भेजा) तथा आचार्य महाराज (जिन्होंने अपनी ओर से युवराज श्री मुनि काशीरामजी को यहां भेजा) एवं गणावछेदिक श्री लालचन्द्रजी महाराज (जिन्होंने अपनी ओर से मुनि नेकचन्दजी तथा पं० मुनि रामस्वरूपजी को भेजा) गणावछेदिक मुनिश्री जयरामदासजी तथा प्रवर्तक मुनि श्री शालिग्रामजी (जिन्होंने उपाध्यायजी को होशियारपुर मुनि-सम्मेलन में पधारने की आज्ञा दी) आदि को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, क्योंकि यह सब उन्हीं महानुभावों की कृपा का फल है, जो आज होशियारपुर मुनि-सम्मेलन आनन्दपूर्वक अपने कार्य को सफल कर सका है।

(हस्ताक्षर) मुनि उदयचन्द्रजी अध्यक्ष

× × × ×

प्रकाशक की ओर से धन्यवाद !

श्री श्वेताम्बर-स्थानकवासी-जैन बिरादरी होशियारपुर मुनि-महाराजों का हार्दिक

धन्यवाद करती है, जिन्होंने अनुग्रहपूर्वक हमारी प्रार्थना स्वीकारकरके, श्री पंजाब प्रान्तीय साधु-सम्मेलन, होशियारपुर में करना स्वीकार फरमाया और हमे कृतार्थ किया।

होशियारपुर की बिरादरी, अपने आपको धन्य समझती है, कि पंजाब साधु-सम्मेलन सफलतापूर्वक समाप्त हुआ। आशा है कि ऑल-इण्डिया साधु-सम्मेलन भी सफलतापूर्वक समाप्त होगा।

भवदीय—

बन्सीलाल जैन

प्रसीडेण्ट एस० एस०. जैन सभा होशियारपुर

होशियारपुर का सम्मेलन समाप्त होने के कुछ ही दिन बाद, लींबड़ी सम्प्रदाय का सम्मेलन होना निश्चित् हुआ। इसके लिये, जैन प्रकाश में निम्न लिखित आमन्त्रणपत्र प्रकाशित हुआ।

स्वधर्मी-सेवाप्रेमी सुज्ञ आत्मबन्धु !

योग्य श्री लींबड़ी से, सेठ नानजी डूंगरसी आदि समस्त सघ का जयजिनेन्द्र स्वीकार कीजियेगा। विशेष आपको यह तो सुविदित ही है, कि स्थानकवासी मुनिराजों की सभी सम्प्रदायों का जो बृहत्सम्मेलन होना निश्चित् हुआ है और जिसके बीजारोपण के रूप में, राजकोट स्थान पर प्रान्तिक-सम्मेलन हो चुका है। अब उस बीज को सींचने के लिये, त्योंही नूतन रचनात्मक सुधारों के लिये अपना लींबडी साधु-समुदाय-सम्मेलन, सं० १९८८ की वैसाख कृष्ण ९ बुद्धवार ता० २५-५-३२ के दिन यहां होना निश्चित हुआ। इस अवसरपर, सभी साधु-साध्वीजी यहां पधारेंगे। ऐसी दशा में, आप श्रीमान् भी इस मांगलिक-कार्य में, उत्साह बढ़ाने और ऐसे शुभ प्रसग पर सहयोग देने के लिये उपरोक्त तिथि से पहले ही यहां पधारकर, हमें आभारी कीजियेगा।

*   *   *   *   *   *   *   *

इस निमन्त्रणपत्र के प्रकाशित होते ही यह समाचार मिला, कि ता० २७ मई सन् १९३२ ई० को गुजरात काठियावाड़ आदि के श्रावकों की वह संगठित समिति—जिसका आयोजन राजकोट साधु-सम्मेलन के समय, सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन करवाने के लिये पीठबल के रूप में हुआ था। लींबडी मे अपना अधिवेशन करने जा रही है। इसी के साथ, यह स्फूर्तिदायक-संवाद भी मिला, कि इन तारीखों के बाद, शीघ्र ही मरुधर श्रावक समिति की बैठक होने वाली है।

इतना ही नहीं, और भी दो ऐसे संवाद इसी समय प्राप्त हुए, जिनके कारण साधु-सम्मेलन की नींव की मजबूती में लोगों को कुछ भी सन्देह न रह गया और सब लोग भविष्य में उसे सफल होते देखने लगे। उनमें से एक तो यह था, कि भावनगर स्टेट रेल्वे के मैनेजर के सम्माननीय पद पर विराजित, उत्साही और शासनप्रेमी-सज्जन श्रीयुत हेमचन्दभाई मेहता, इस सम्मेलन को सफल बनाने के लिये यथाशक्ति परिश्रम कर रहे हैं। और दूसरा यह, कि मिती वैशाख शुक्ला ५ को

नागौर स्थान पर, पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य, पूज्य श्री जवा हिरलालजी महाराज ने, अपनी सम्प्रदाय का सम्मेलन किया। इस अवसर, पर उक्त सम्प्रदाय के प्रधान प्रधान श्रावकगण भी नागौर में एकत्रित हुए थे। सम्मेलन में विचार विनिमय तो खूब हुआ, लेकिन प्रस्ताव के रूप में कोई कार्यवाही नहीं की गई। सिर्फ इतना ही मालूम हुआ, कि सम्मेलन सफल रहा और बृहत्सम्मेलन की नींव पुष्ट करने में, सहायता देना तय हुआ है। अस्तु।

* * * * * * * *

पूर्व प्रकाशित निमन्त्रणपत्र के अनुसार, लींबड़ी बड़ी सम्प्रदाय का सम्मेलन तथा गुर्जर श्रावक समिति के अधिवेशन, ता० २५, २६, २७ मई सन् १९३२ ई० तदनुसार मिती वैशाख कृष्णा ६-७-८ बुध, गुरु और शुक्रवार को लींबड़ी स्थान पर हुए। इस अवसर पर, पूज्य मुनि श्री गुलाब-चन्दजी महाराज आदि ठाणे २२ वहां विराजमान थे तथा लींबड़ी सम्प्रदाय के भी अनेक प्रतिनिधि पधारे थे।

सम्मेलन के प्रारम्भ में शतावधानी पण्डित मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज एवं कवि वर श्री मुनि नानचन्द्रजी महाराज आदि मुनिवरों ने, वीर स्तुति गाई। इसके पश्चात्, श्री साधु-सम्मे लन समिति के मन्त्री, श्री दुर्लभजी भाई झौहरी ने राजकोट में हो चुके प्रान्तीय सम्मेलन में पास हुए प्रस्ताव वहां उपस्थित लोगों की जानकारी के लिये पढ़कर सुनाये तथा समझाये।

लींबड़ी सम्प्रदाय के इस सम्मेलन ने राजकोट सम्मेलन की कार्यवाही के आधार पर अपनी सम्प्रदाय के लिये विधान की रचना करते हुए निम्नलिखित संशोधन या वृद्धि की और शेष प्रस्ताव, सहानुभूति पूर्वक स्वीकार कर लिये।

सूचित किये हुए संशोधन (गुर्जर-साधु समिति के प्रस्ताव नं० १० से शुरू)

(प्रस्ताव नं० ?) सम्प्रदाय के अगगण्यों की व्याख्या इस तरह समझनी चाहिये।

"सम्प्रदाय के अग्रगण्य के मानी हैं, साधु और श्रावक दोनों, जिन्हें चातुर्मास निश्चित करने का अधिकार हो ।"

राजकोट सम्मेलन में पास हुए प्रस्ताव नं० १० को, इस तरह समझना चाहिये—

लींबड़ी सम्प्रदाय के क्षेत्रों में गुर्जर-साधु समिति की दूसरी सम्प्रदायों के साधुओं को अपनी आवश्यता से या क्षेत्र खाली रहता हो इस दृष्टि से चातुर्मास रहने या रखने की आवश्य कता पड़े तो चातुर्मास रहने वालों और इस क्षेत्र के अग्रेसरों को लींबड़ी सम्प्रदाय के अग्रेसरों की सम्मति प्राप्त करके ही चातुर्मास करवाना चाहिये। साथ ही, चातुर्मास रहने वालों को, उस स म्प्रदाय की परम्परा के विरुद्ध प्ररूपणा न करनी चाहिये।

इसी तरह राजकोट सम्मेलन में पास प्रस्ताव नं० २१ को इस तरह समझना चाहिये—

व्याख्यान और वांचन के समय के अतिरिक्त साधुओं के उपाश्रय में स्त्रियों तथा सा ध्वीओं को तथा आर्याजी के उपाश्रय में पुरुषों एवं साधुओं को आवश्यक-कार्य के अतिरिक्त बैठना न

चाहिये। बाहर से दर्शन के लिये आये हुए लोगों की बात अलग है। किन्तु, उन्हें भी, स्त्री या पुरुष जो भी हों, कम से-कम दो की संख्या में अवश्य होना चाहिये। किन्हीं आर्याजी या गृहस्थ-स्त्री को सूत्र की वांचनी देनी हो, तो अनुकूल-समय पर, दो घण्टे से अधिक वांचनी न देनी चाहिए और वह भी खुले भाग में बैठकर।

प्रस्ताव नं० ३४ (राजकोट-सम्मेलन) को इस तरह समझा जाय—

गूर्जर-श्रावक समिति में भेजे जाने वाले श्रावक प्रतिनिधियों की नियुक्ति, निश्चित-संख्या में, लींबडी-सम्प्रदाय के क्षेत्रों के श्रीसंघ मिलकर करेंगे।

इसके अतिरिक्त, निम्नलिखित नये-प्रस्ताव और पास हुए हैं—

(१) आज से, इस सम्प्रदाय के पूज्यश्री के पद पर, मुनि महाराज श्री गुलाबचन्दजी नियुक्त किये जाते हैं।

(२) आज से, सम्प्रदाय के सामान्य-कार्य, यानी दीक्षा के उम्मीदवार की योग्यता देखकर, दीक्षा की आज्ञापत्रिका मंजूर करना, कच्छ में जाने की इच्छा रखनेवाले साधुजी को रण उतरने की मजूरी देना, दूषित को प्रायश्चित्त देना आदि कार्य, पूज्यश्री साहब तथा सेठ सुखलाल चतुर्भुज मिलकर करें। विशेष कार्य, यानी प्रतिवर्ष चातुर्मास नियत करना, किसी दोषी साधु-साध्वी को उसके दोष के सम्बन्ध में कहना और आहार-पानी अलग या शामिल करना आदि बातें, महाराजश्री रत्नचन्दजी स्वामी तथा महाराज श्री नानकचन्द्रजी स्वामी एव सेठजी मिलकर, पूज्य महाराज के नाम से कार्य करें। यदि इसमें मतभेद पड़े, तो नीचे लिखे हुए मेम्बरगण, बहुमत से कार्य करें। इनमें से, आरोपित-व्यक्ति जिस सघाडे का होगा, उस सघाडे वाले मेम्बर का मत नहीं लिया जायगा। अल्पमत वालों को, अपराधी का पक्षपात न करना होगा।

मेम्बरों के नाम

महाराज श्री धनजी स्वामी, महाराजश्री शिवलालजी स्वामी, महाराजश्री- शामजी स्वामी, महाराज श्री मूलजी स्वामी,

उपरोक्त चार मतों के अतिरिक्त, पूज्य साहब तथा सेठजी का मत मिलाकर, बहुमत से कार्य करना चाहिये।

(३) दीक्षा के निमित्त, एक से अधिक वरघोडे (बनोली) न निकाले जांय। दीक्षा से पहले के दिन या दीक्षा के ही दिन, सुविधानुसार एक ही वरघोडा निकालें।

(४) दीक्षा के अवसर पर, समवसरण में, सूत्रों के लिए चिट्ठा न बनाया जाय। यदि, आगे से चंदा हो चुका हो तो उसकी रकम तथा अजलि में आई हुई रकम, श्री अजरामर-पुस्तक-भण्डार के ज्ञानफण्ड में लगा दी जावे।

(५) साधु-साध्वी के मृत-शरीर को, बाहर से आनेवाले श्रावकों का इन्तज़ार करते हुए, अधिक समय तक न रख छोड़ना चाहिये।

(६) पालकी या विमान में खादी (स्वदेशी) के अतिरिक्त, रेशमी आदि वस्त्र न लगाये जावें और जहांतक होसके, कम-से-कम खर्च तथा सादगी से काम लिया जावे। मृत-शरीर को लौंग न ओढ़ाया जाय।

नोट—उपरोक्त दीक्षा तथा साधु-साध्वी के अन्त्येष्टि-संस्कार आदि में, जैसे बने तैसे, कम-से-कम खर्च करने की बात, श्रावकों को ध्यान में रखनी चाहिये।

(७) लींबड़ी-सम्प्रदाय के कच्छ तथा काठियावाड़ के प्रत्येक-क्षेत्रवालों को, चातुर्मास की विनती, माह सुदी १५ तक सीधी लींबड़ी भेजनी चाहिये।

इस विनती पत्र में, किसी साधु-साध्वी का खासतौर पर नाम न लिखा जाय। इसी तरह खास-खास साधु-साध्वियों से चातुर्मास की स्वीकृति न लेनी चाहिये।

(८) कच्छ काठियावाड़ अथवा किसी अन्य स्थल के साधु-साध्वियों के अपराध सम्बन्धी कोई कागज़-पत्र यदि किसी के पास हों तो उन्हें वे कागज लींबड़ी में सेठजी के पास भेज देने चाहिये। उनका विचार कार्यवाहक लोग करेंगे।

(९) आजतक, अलग-अलग गुरु और अलग-अलग शिष्यों की परम्परा चलती आई है। यह पद्धति अनेक बार क्लेश का कारण हो पड़ती है। यही नहीं भविष्य में भी इस पद्धति के कारण भेदभाव पैदा होना सम्भव है। इसलिये इस पद्धति को रोक कर अब भविष्य में एक ही गुरु के सब शिष्य तथा एक ही प्रवर्तिनी की सब शिष्यायें हों ऐसी व्यवस्था की जावे यह निश्चित किया जाता है।

(१०) दीक्षा की आज्ञापत्रिका प्राप्त करने से पहले दीक्षा के उम्मीदवार को पास करने के लिये लींबड़ी भेजना चाहिये। वहां उसकी योग्यता की जांच करके, उसे पास करने के लिये निम्न-गृहस्थों की एक समिति नियुक्त की जाती है।

१ सेठ सुखलाल चतुर्भुज २ सेठ नागरदास शिवलाल ३ लक्ष्मीदास, सुखलाल, लक्ष्मीदास, ४ लखमी त्रिभुवनदास, छगनलाल ५ शाह मोहनभाई जीवनभाई।

(११) चातुर्मास के क्षेत्रों की तीन श्रेणी बनाकर, उनमें भण्डारों की व्यवस्था की जावे। इनमें से, प्रथम श्रेणी के भण्डारों में पूरी पुस्तकें रहेंगी। दूसरे वर्ग के भण्डारों में मध्यम और तीसरी-श्रेणी के भण्डारों में सूत्रों के अतिरिक्त, खासतौर पर पढ़ने योग्य थोड़ी-थोड़ी पुस्तकें रक्खी जावें।

निम्नलिखित मुनिराजों की एक भण्डार व्यवस्थापक-समिति नियुक्त की जाती है

महाराज श्री वीरजी स्वामी महाराज श्री धनजी स्वामी महाराज श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी महाराज श्री मानकचन्द्रजी स्वामी, महाराजश्री शिवलालजी स्वामी।

उपरोक्त व्यवस्थापक-मुनियों को, जब कभी साथ-साथ रहने का अवसर मिलेगा, तब वे इकट्ठे होकर अथवा अपनी अनुकूलता के अनुसार प्रत्येक-भण्डार का उद्घाटन करके, उन्हें संयुक्त-भण्डार बनाने की व्यवस्था करेंगे। इससे पूर्व, सभी भण्डारों की लिस्टें पेश करनी होंगी। ये लिस्टें, पैक करके सेठजी अपने पास रक्खेंगे।

(१२) नई उपाधि लेने का निषेध किया जाता है।

(१३) भिन्न २ नामों को लाइब्रेरिया और भण्डार खोले गये हैं। उन सबका नाम, अब स्वामीश्री अजरामरजी पुस्तक भंडार रहेगा।

नोट--जो पुस्तकालय (लाइब्रेरिया) मुनिराजों ने, इस प्रस्ताव के पास होने से पूर्व श्री संघ को अर्पण करके श्रीसंघ को उसका स्वतन्त्र आधिपत्य दे दिया हो, उसपर भण्डार सम्बन्धी नियम न लागू होंगे। किन्तु, यदि कोई पुस्तकालय, भण्डार सम्बन्धी नियमों के अनुसार, भण्डार व्यवस्थापक समिति के साथ अपना सम्बन्ध रक्खेंगे, तो उनके साथ नियमानुसार सहयोग किया जावेगा।

(१३) अजमेर महा-साधु-सम्मेलन से वापिस लौटते ही, प्रस्ताव नं० ११ के अनुसार व्यवस्था, भण्डार समिति को प्रारम्भ कर देनी चाहिये और एक वर्ष में काठियावाड़ तथा दूसरे वर्ष में कच्छ, इस तरह कुल दो वर्षों में, प्रस्ताव नं० ११ बतलाये अनुसार क्षेत्रों मे पुस्तकों आदि का व्यवस्थित विभाग करके, साधु-श्रावकों की संयुक्त भण्डार समिति को यह कार्य सौंप देना चाहिये।

नोट–यदि अजमेर न जाना पड़े, तो अभी से दो वर्ष गिनने चाहिये।

(१४) इस सम्प्रदाय के नियम, साधु-साध्वियों को पालन में सरलता हो, चतुर्विध-संघ की व्यवस्था बनी रहे और भण्डार आदि की व्यवस्था ठीक रहे, इसके लिये लींबडी सम्प्रदाय के श्री संघों को लिखा जावे और उनके प्रतिनिधित्व वाली एक 'श्रावक-समिति' की, अनुकुल समय देखकर स्थापना की जावे।

(१५) भण्डार की व्यवस्था के नियमों की रचना करने और जब तक उपरोक्त श्रावक-समिति न बन जाय, तब तक व्यवस्था ठीक रखने के लिये, निम्नलिखित गृहस्थों की एक समिति नियुक्त की जाती है।

१—श्री हेमचन्दजी भाई रामजीभाई मेहता, मोरवी, (मैनेजर भावनगर स्टेट रेल्वे तथा पोर्ट)—प्रमुख

२—श्री जादवजी मगनलाल हाईकोर्ट प्लीडर वढवाण केम्प—मन्त्री

३—श्री कालिदास नागरदास शाह M. A. हेडमास्टर वढवाण।

४—श्री गुलाबचन्द हीराचन्द सघाणी B. A. L. L. B. अहमदाबाद।

५—श्री नागरदास मायचन्द डिस्ट्रिक्ट प्लीडर लींबड़ी।

६—श्री चिमनलाल चकुभाई M. A. L. L. B. लींबड़ी।

७—श्री दीपचन्दभाई गोपालजी सॉलिसिटर थान.

८—श्री धीरजलाल केशवलाल तुरखिया, रायपुर।

९—श्री प्राणजीवन हीरचन्द वोरा, मोरबी।

१०—श्री मगनलाल मोतीचन्द मास्टर बढ़वाण केम्प।

११—श्री पुरुषोत्तम शिवलाल कामदार बढ़वाण केम्प।

उपरोक्त समिति, भण्डार-व्यवस्था की योजना, दीपमालिका तक बनाकर तयार करेगी और इस संघाड़े की साधु-समिति के सम्मुख सूचना प्राप्त करने के लिये पेश करेगी।

उपरोक्त कमेटी का कोरम ४ रहेगा। किन्तु स्थगित की हुई कमेटी के लिये कोरम का बन्धन न रहेगा।

(२२) इस कमेटी का कार्यालय बढ़वाण केम्प, में वकील आत्मजीभाई के पास रहेगा।

(२३) अजमेर में होने वाले बृहत साधु-सम्मेलन के लिये इस संघाड़े के प्रतिनिधि के रूप में, निम्नलिखित मुनिराज चुने जाते हैं।

शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज पं० कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज, तपस्वी मुनि श्री शामजी स्वामी और दो प्रतिनिधि का चुनाव अब फिर होगा।

(२४) गुर्जर प्रान्तीय-साधु समिति को, मन्त्रियों के चुनाव सम्बन्धी प्रस्ताव नं० २ में, निम्नलिखित संशोधन की सूचना दी जाय।

'मन्त्रियों का चुनाव समिति द्वारा सर्वानुमति या बहुमत से करने के बदले, सम्प्रदाय के पूज्य श्री की पसन्दगी के अनुसार मंत्री की नियुक्ति हो।

(२५) उपरोक्त प्रस्तावों को छपवाकर, सम्प्रदाय के सभी क्षेत्रों में भेजना तथा श्री गुर्जर साधु-समिति राजकोट के प्रस्तावों का लींबड़ी सम्प्रदाय के श्री संघों को पहुंचाने की व्यवस्था, श्री सुखलालभाई चतुभुजभाई करें।

(श्री सेठ सुखलालभाई चतुभुजभाई तथा अन्य सत्रह ग्रामों के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर से प्रकाशित)

उपरोक्त प्रस्ताव काठियावाड़ गुजरात और कच्छ से पधारे हुए अखिल गुर्जर श्रावक समिति के सभ्यों के सामने पढ़कर सुनाये गये। इन्हें सुनकर सबने मुनिराजों के त्याग तथा लींबड़ी सम्प्रदाय द्वारा किये हुए समयोचित संगठन एवं शुभ प्रयास के लिये अत्यन्त सन्तोष प्रकट करते हुए मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की। साथ ही, शेष अन्य सभी सम्प्रदायों से इसका अनुकरण करने का आग्रह किया।

सम्मेलन की पूर्णाहुति के दिन, जिस सभा में, सब प्रस्ताव आदि कार्यवाही सुनाई गई थी उस सभा में पण्डित प्रवर श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी ने लींबड़ी के सद्गृहस्थ श्रमणोपासकों तथा बाहर से पधारे हुए सज्जनों के सम्मुख भाषण देते हुए फरमाया कि—

हम लोगों को यहां आये १६ दिन हो गये। इन सोलह दिनों की साधु-समिति की बैठकों में, जो २ विधान बनाये गये, वे आपको सुना दिये गये।

इसके बाद, आपने यह बतलाया, कि पुस्तक परित्याग की साधुओं की भावना में क्या रहस्य है। तदुपरान्त, पूज्य श्री अजरामरजी स्वामी के समान प्रखर पण्डित और चारित्र्यशील व्यक्ति को आकर्षित करने वाली, सेवा, प्रेम और श्रद्धा की त्रिपुटी से अलंकृत लींबडी का यशोगान गाकर और ऐसे मंगल प्रसंग में उसका उत्तम सहयोग है, इस बातको हृदय से स्वीकार करके, प्रासंगिक विषय पर आ, आपने पूज्य श्री गुलाबचन्द्रजी महाराज के जीवन का वर्णन किया। इस वर्णन में, पूज्य श्री के अक्षरों की सुन्दरता और उनकी उद्योगिता के सम्बन्ध मे आपने बतलाया कि, इन दोनों गुणों का उनमें खूब विकास हुआ है। अन्त में, सम्प्रदाय के कल्याण की अपनी उत्कट-अभिलाषा प्रकट करते हुए, उन्होंने अपना प्रवचन समाप्त किया।

आपके बाद, कार्यक्रम के अनुसार, मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी स्वामी ने, संस्कृत भाषा में अपना प्रवचन फरमाया, जिसका सार यों था—

लींबड़ी सम्प्रदाय के गौरव की वृद्धि करने वाले जिन रत्नों की ख्याति, पजाब, मारवाड, मेवाड आदि के कोने २ में फैली हुई है, उन रत्नों की रत्नाकार लींबड़ी-सम्प्रदाय का स्थान, लींबडी के गौरव की महान् निशानी है। पूर्वाचार्यों तथा श्री पूज्यों ने, इस गौरव की रक्षा का सदैव सुप्रयास किया है और अब भी यही हो रहा है। आज का मगल प्रसग भी, उसी पाट की प्रभुता का सूचक है। आज, पूज्य पदवी पर आरूढ़ होने के लिये, श्री गुलाबचन्द्रजी स्वामी पधारें, यह कैसा रमणीय दृश्य है। किन्तु मैं कहना चाहता हू, कि यह जितना रम्य स्थान है, उतना ही जिम्मेदारी वाला है—कठिन है। उनका शासन, निष्पक्षपातभाव से न्याय दृष्टि पूर्वक चले, विजयी हो, यही हमारी सतत इच्छा है। इस सम्प्रदाय के कार्यवाहक के रूप में, पण्डित प्रवर श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी, तथा कविवर श्री नानचन्द्रजी स्वामी, सम्प्रदाय की सेवा करें, यह कितनी प्रसन्नता की बात है। अन्त में, सम्प्रदाय की वृद्धि हो, शांति फैले और क्लेश का नाश हो, यह आशीर्वाद देकर, मैं अपना भाषण समाप्त करता हू।

आपका भाषण समाप्त हो जाने पर, कविवर श्री नानचन्द्रजी स्वामी ने गुरुस्तुति गाकर फरमाया, कि—मैंने सुना था, कि लींबड़ी के प्रेम के झरने सूख गये। किन्तु मैं समझता हू, कि वे सूखे नहीं, बल्कि रुक गये हैं। जिस कारण से वे रुक गये हैं, उस कारण का नाश करने के लिये हमने यथाशक्ति प्रयत्न किया है और करेंगे। हम लोगों को, यह कार्य पूर्ण करने में, आप लोगों ने सहायता दी, यह प्रथम मगल है। दूसरा मगल मुनिराजों का शुभागमन। तीसरा मंगल, शान्ति पूर्वक, निर्विघ्न तथा सन्तोषकारक एव इच्छानुसार कार्य हुवा सो और चौथा मगल आर्याजी द्वारा पुस्तक-परित्याग में प्रत्यक्ष दिखलाई हुई सरलता है। अब तो, जब ये पास किये हुए प्रस्ताव व्यवहार में आवें, तब महामगल हुआ समझना चाहिये।

इस तरह मङ्गल के विषय पर विवेचन करते हुए, मङ्गल की ध्वनि एवम् आनन्द की लहरों के साथ, कविवरजी का प्रवचन समाप्त हुआ।

आपके बाद, तपस्वी मानजीस्वामी ने अपना भाषण देते हुए बतलाया, कि-

ज्ञान के दो भेद हैं। द्रव्यज्ञान और भावज्ञान। भावज्ञान ही आत्मकल्याण-साधक है। यह जिसमें होता है, उसी का चरित्र आदर्श होता है। ऐसे ही भाव ज्ञान तथा चारित्र, से श्री० अमरामरजी स्वामी उज्ज्वल थ। उन महानुभाव की भावना के आन्दोलन, आज भी इस बात के लिये साक्षी देते हैं।

इस तरह, श्री अमरामरजी स्वामी का गुणगान कर के उन्होंने अपना वक्तव्य समाप्त किया।

* * * * * *

आपके पश्चात्, श्री० ज्येष्ठमलजी स्वामी ने अपना वक्तव्य देते हुए फरमाया, कि—

हमारी यह सम्प्रदाय, मार्गीविद्या के समान है। उसमें नव-भास्कर की भांति मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी का उदय हो रहा है। उनका प्रवचन सुन कर, मेरे अंग २ में आज आनन्द हो रहा है। मेरी इच्छा है, कि ऐसे रत्न इस सम्प्रदाय में पुनः पुनः उत्पन्न हों।

इस तरह आशीर्वाद देते हुए तथा सम्प्रदाय का गुणगान करते हुए आपका प्रवचन समाप्त हुआ।

* * * * *

आपके भाषणोपरान्त श्री हीराचन्द्रजी महाराज ने भगवान महावीर की प्रार्थना गाई और इस मंगलमय-दिवस के आनन्द की प्रशंसा करते हुए एक ही गुरु के सभी शिष्य होवें अर्थात् सम्प्रदाय के एक्य की प्रवृत्ति ग्रहण करने की बात पर बार बार जोर दिया। साथ ही, पुस्तकों की व्यवस्था आदि के लिये बनाये हुए नियमों पर अपना हर्ष प्रकट किया।

अन्त में ११ बजे पूज्य महाराज श्री गुलाबचन्द्रजी स्वामी को कविवर श्रीनाग चन्द्रजी स्वामी ने हर्ष-पूर्वक पछेवड़ी ओढ़ाई और जय नाद किया जिसके साथ ही चतुर्विध श्री-संघ ने जय जय कार किया। तदुपरांत, पं० रत्न शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के मांगलिक उच्चार के साथ ही यह सभा और लींबड़ी साधु सम्मेलन दोनों ही सम्पूर्ण हो गये।

पहले बतलाया जा चुका है कि इस सम्मेलन के साथ ही साथ लींबड़ी में गुजरात समिति की भी बैठक हुई थी। इस समिति में साधु-सम्मेलन के प्रस्तावों को, कार्य रूप में परिणत करने के लिये जो कार्यवाही हुई थी वह यों है—

इस अवसर पर, यहां जो गृहस्थ एकत्रित हुए हैं, वे, केवल साधुजी द्वारा पसंद किये हुए जिन लोगों को आमन्त्रण दिया गया था, उनमें से हैं। ये लोग, किसी ग्राम के संघ की ओर से किंवा किसी सम्प्रदाय की ओर से भेजे हुए प्रतिनिधि नहीं है। आज की सभा में, दो, मन्त्रियों के अतिरिक्त, केवल ग्यारह आमन्त्रित गृहस्थ हाजिर हैं। ऐसी स्थिति में, कार्य हाथ में लेना चाहिये या नहीं, इस बात पर पहले विचार किया गया। अन्त में, इस दृष्टि से कि लींबडी बड़ी सम्प्रदाय के साधु सम्मेलन के कारण पधारे हुए, बाहर के अन्य श्रावक बधुओंके विचारों तथा अनुभवों से भी इस समय लाभ उठाया जा सकेगा, सभा के स्थानापन्न सभापति श्री दीपचन्दभाई गोपालजी (जो श्री दामोदरभाई की अनुपस्थिति के कारण चुने गये थे) की ओर से, निम्न लिखित प्रस्ताव उपस्थित किया गया—

प्रस्ताव

इस सभा के लिये आमन्त्रित गृहस्थों में से, यहां आए हुए गृहस्थ यह निश्चित करते हैं, कि इस समय इस सभा में उपस्थित सभी गृहस्थों— फिर चाहे वे आमन्त्रित हो या न हो— की एक काम चलाऊ समिति मान कर, उसमें राजकोट साधु सम्मेलन द्वारा तय्यार किये हुए मसविदे पर विचार कर के, जैसा उचित जान पड़े, वैसा संशोधन या वृद्धि सूचित कर, तथा गुर्जर श्रावक समिति के विधान का एक कच्चा मसविदा तय्यार कर, प्रत्येक सम्प्रदाय के प्रत्येक मुख्य ग्राम के श्रीसंघ तथा सम्प्रदाय के मुख्य-मुनिराज के पास भेज देना और उस पर उनकी सम्मति मंगवानी चाहिये।

यह प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ। इस के बाद बन्धारण का मसविदा बनाने के लिये एक कमेटी मुकर्रिर की गई, जिसने बंधारण का मसविदा तय्यार करके पेश किया। वह यों है—

श्रीगुर्जर-श्रावक–समिति के विधान का मसविदा

१— इस समिति का नाम, श्री गुर्जर श्रावक-समिति होगा।

२—इस समिति के उद्देश्य, निम्नानुसार होंगे—

(क) श्री स्थानकवासी जैन समाज की उन्नति करना।

(ख) चतुर्विध-संघ की व्यवस्था के लिये नियमों की रचना करना और उनमें समयानुसार परिवर्तन करना।

(ग जहां जहां श्रीसंघ की सम्पत्ति हो, वहां उस की व्यवस्था के लिये नियम बनाना।

(घ) समाज की उन्नति के लिये, साहित्य का संशोधन करना तथा उसका प्रकाशन करना एवं करवाना।

(ख) साम्प्रदायिक भावना और मताग्रह कम कर के जिस तरह भी हो सके, समस्त संघ में ऐक्य की वृद्धि हो ऐसे ढंग से संगठन करना।

(ग) उपरोक्त उद्देश्यों को कार्यरूप में परिणत करने के लिये, और जो जो कार्य करने पड़ें, वे।

३—इस समिति में कच्छ, काठियावाड़ और गुजरात के समस्त श्रावक-श्राविकाओं का समावेश किया जायगा। और नीचे लिखी हुई व्यवस्था के अनुसार, वे सभी इस समिति के सदस्य माने जावेंगे।

४—इस समिति में अभी आठ सम्प्रदायें सम्मिलित हुई हैं।

५—इस समिति की एक जनरल कमेटी बनाई जाय जिसका विधान निम्नानुसार हो।

६—वह आठ सम्प्रदायों को, अपने यहाँ के श्रावकों की संख्या के हिसाब से अपने प्रतिनिधि चुनने चाहिये जो जनरल कमेटी के सभ्य माने जावें।

७—प्रत्येक सम्प्रदाय को अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करते समय जहाँ तक हो सके निम्न नियमों का पालन करना चाहिये।

अपने प्रत्येक क्षेत्र के स्थानीय श्रीसंघों से उन श्रीसंघों के श्रावकों की संख्या के अनुसार प्रतिनिधि लेने और ऐसे प्रतिनिधियों की साम्प्रदायिक-समिति बनानी।

प्रत्येक साम्प्रदायिक-समिति को, अपने सभ्यों में से एक अध्यक्ष और एक मन्त्री चुनना चाहिये। साम्प्रदायिक-समिति के नियम और इस व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक साम्प्रदायिक-समिति के सदस्यों की संख्या, यदि उस सम्प्रदाय को जनरल कमेटी में प्राप्त प्रतिनिधित्व से अधिक हो, तो उस साम्प्रदायिक-समिति को अपने में से, अपनी जनरल-कमेटी के लिये प्रतिनिधि चुनने चाहिये और इसकी सूचना जनरल कमेटी के मन्त्री को दे देनी चाहिये।

८—जनरल कमेटी तथा साम्प्रदायिक-समिति का चुनाव करना।

९—जनरल कमेटी को अपने सभ्यों में से एक अध्यक्ष और दो मन्त्रियों की नियुक्ति करनी चाहिये, जो दो वर्ष तक उन पदों पर रहें।

१०—जनरल कमेटी में चुने गये प्रत्येक सदस्य को अपना मत देने का अधिकार रहेगा और नीचे बतलाये हुए कार्यों के अतिरिक्त जनरल कमेटी का सब कार्य बहुमत से होगा। जब दोनों पक्षों में बराबर २ मत होंगे तब प्रमुख के दो मत मानकर बहुमत से कार्य होगा।

११—जनरल कमेटी का चुनाव हो जाने के बाद जनरल कमेटी को अपने सभ्यों में से एक कार्य-कारिणी समिति बनानी चाहिये जिसके सभ्यों की संख्या और नियुक्ति के नियम भी जनरल कमेटी ही बनावे।

१२—जनरल कमेटी के अध्यक्ष और मन्त्री, अपने पद के कारण कार्यकारिणी समिति के सभ्य और क्रमानुसार अध्यक्ष तथा मन्त्री माने जावेंगे।

१३—जनरल कमेटी की मीटिङ्ग, कम से कम प्रतिवर्ष एक बार होनी चाहिये।

१४—कार्यकारिणी-समिति की मीटिङ्ग, प्रतिवर्ष कम से कम चार बार होनी चाहिये।

१५—जनरल कमेटी अथवा कार्यकारिणी-समिति में, जो सभ्य हाजिर न हो सकेंगे अपना प्रतिनिधित्व (मत) कार्यकारिणी-समिति के सभ्य को ही दे सकेंगे। और इस तरह जिस स ने अपना मत दे दिया हो, उसकी कोरम की दृष्टि से हाजिरी गिनी जावेगा।

१६—साम्प्रदायिक जनरल तथा कार्यकारिणी समितियों एवं उसके अध्यक्षों मन्त्रियों का फिर से चुनाव न हो, तब तक वे नियमित गिने जावेंगे एवं उन्हें कामकाज करने का अधिकार रहेगा।

१७—प्रत्येक वार्षिक-मीटिंग में, कार्यकारिणी-समिति को, अपने कार्य को अपने व का विवरण, जनरल कमेटी के सामने पेश करना होगा।

१८—जनरल कमेटी का हेडऑफिस तथा दफ्तर, कार्यवाहक-समिति जहाँ निश्चि करे वहां रहेगा।

१९—इस व्यवस्था में यदि कोई परिवर्तन करना हो, तो जनरल-कमेटी के तीन सभ्यों की सम्मति से ही हो सकेगा।

२०—जनरल-कमेटी द्वारा पास किये हुए प्रस्ताव तथा नियमावली में, कार्यवा समिति को कुछ भी परिवर्तन करने का अधिकार न होगा। इसके अतिरिक्त, सभी चालू कामकाज ने का, कार्यकारिणी समिति को अधिकार रहेगा।

२१—किसी भी आवश्यक कार्य के लिये, जनरल अथवा कार्यकारिणी-समिति आमन्त्रि करने की, अध्यक्ष और मन्त्री दोनों ही को आवश्यकता जान पड़े, तो वे ऐसा कर सकेंगे। किन्तु, मन्त्रण-पत्र में, मीटिंग बुलाने का स्पष्ट कारण अवश्य बतलावेंगे।

२२—जनरल अथवा कार्यवाहक समिति के एक से तीन तक सभ्य यदि लिखित अाग्रह करें, तो अध्यक्ष तथा मन्त्री को वह समिति आमन्त्रित करनी पड़ेगी। ऐसी समिति एकत्रित व में, आग्रहकार ने क्या कारण बतलाया है, यह बात आमन्त्रण पत्र में स्पष्ट बतलानी चाहिये।

२३—कोरम के अभाव में स्थगित की हुई किसी भी मीटिंग का कार्य, दूसरी मीटि में, कोरम के अभाव में भी किया जासकेगा। किन्तु, इस तरह स्थगित की हुई मीटिङ्ग में, जिस का लिये आमन्त्रण दिया गया होगा, वही कार्य दूसरी मीटिङ्ग में हो सकता है, नया नहीं।

२४—साधु-सम्मेलन, जो प्रस्ताव पास करना चाहे, निश्चित-रूप से मंजूर करने पहले, उनकी नकल गुर्जर श्रावक-समिति को भेजे और उस समिति का उस प्रस्तावों पर मत तथा जब तक होसके, उस समिति के मत को स्वीकार करें।

२५—इसी तरह यह समिति, यदि साधुओं के सम्बन्ध में कोई प्रस्ताव पास क चाहे, तो उन्हें निश्चित-रूप से मन्जूर करने से पहले, उनकी नकल श्री साधु-सम्मेलन-समिति मन्त्री को भेजे और उन पर साधु-समिति का मत मांगे तथा यथा सम्भव उस मत को स्वीकार क

उपरोक्त दोनों प्रस्तावों के विषय में, यदि साधु-सम्मेलन-समिति तथा इस समिति के बीच कोई मत भेद रहे, तो उस पर विचार करने और उस मत भेद को दूर करने के लिये, साधु-सम्मेलन तथा इस समिति की कार्य-वाहक समिति के सभ्यों में से चुने हुवे दो सभ्यों का एक बोर्ड नियुक्त किया जाय।

जिन २ सम्प्रदायों के साधु, साधु-सम्मेलन में न सम्मिलित हुये हों, वे सब सम्मिलित हों इसके लिये यथा शक्ति प्रयत्न करना, उन सम्प्रदाय वालों का कर्त्तव्य माना जावेगा। और यदि इस कार्य में आवश्यकता पड़े, तो उन सम्प्रदायों को जनरल कमेटी अथवा कार्यकारिणि समिति से सहायता लेनी चाहिये।

पहिले के प्रस्ताव के अनुसार इस सभा द्वारा तयार किये हुवे गुर्जर श्रावक समिति के विधान के मसविदे और राजकोट साधु-सम्मेलन में तयार किये हुवे मसविदे के संशोधन की सूचनाओं तथा अन्य पास किये हुवे प्रस्तावों को सशोधन या वृद्धि की सूचना प्राप्त करने के लिये प्रत्येक सम्प्रदाय को भेजने और विधानानुसार समितियां नियुक्त हों तब तक इसके सम्बन्ध में सब काम करने के लिये, यह सभा निम्न लिखित एक काम चलाउ कमेटी मुकर्रिर करती है और उसे ऐसा करने का अधिकार देती है—

श्री दामोदरभाई जगजीवन— प्रमुख
श्री प्रेमचन्द भूराभाई सभ्यी
श्री माईचन्द अनूपचन्द मेहता— मन्त्री
श्री दुर्लभजी त्रिभुवन— मन्त्री

यह कार्यवाही हो चुकनेके बाद गुर्जर-श्रावक समिति का कार्य समाप्त हुआ। अस्तु।

— ——o—— —

पहले बतलाया जा चुका है कि अखिल-भारतीय साधु-सम्मेलन की घोषणा होने के पश्चात् सारे भारतवर्ष के स्थानकवासी समाज में एक प्रकार की विद्युत् का प्रवाह फैल गया। प्रत्येक प्रान्त और प्रत्येक सम्प्रदाय अपना अपना संगठन करने लगी और फिर निद्रा से जाग कर श्रावकों का समूह भी दत्तचित्त हो संगठन में सहयोग देने लगा। इस पुनीत प्रभाव से सुप्रसिद्ध ऋषि सम्प्रदाय क्यों वंचित रहती? परिणामतः अनेक श्रावक बन्धुओं के सतत परिश्रम एवं मुनिराजों की उत्कट लगन के कारण राजकोट पाली होशियारपुर, नागौर और लींबड़ी में हुए सम्मेलनों के बाद ही शुभ मिती ज्येष्ठ शुक्ला ४ गुरुवार सं० १६८८ को इन्दौर मुकाम पर इस सम्प्रदाय का सम्मेलन होना निश्चित हुआ। इस अवसर पर मारवाड़, महाराष्ट्र, खानदेश तथा बरार में विचरने वाले निम्न मुनिराज इन्दौर पधारे और सम्मेलन में सम्मिलित हुवे थे।

१ आगमोद्धारक बाल ब्रह्मचारी (वर्तमान) पूज्य श्री १००८ श्री अमोलकऋषिजी महाराज

२. तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी महाराज
३. शान्तमूर्ति श्री सखाऋषिजी महाराज
४. पंडित रत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज
५. आत्मार्थी प्रभाविक मुनि श्री मोहनऋषिजी महाराज
६ विनय विवेकसंपन्न मुनि श्री विनयऋषिजी महाराज
७. वैयावच्ची मुनि श्री मनसुखऋषिजी महाराज
८. विद्याभिलाषी मुनि श्री उत्तमऋषिजी महाराज
९. उग्र तपस्वी मुनि श्री तुलाऋषिजी महाराज
१०. विद्याभिलाषी मुनि श्री कल्याणऋषिजी महाराज
११. प्रधान वैयावच्ची मुनि श्री मुलतानऋषिजी महाराज
१२ लघु तपस्वी मुनि श्री समरथऋषिजी महाराज
१३ शान्त स्वभावी मुनिश्री जयवन्तऋषिजी महाराज
१४- विद्याभिलाषी मुनि श्री शांतिऋषिजी महाराज

उपरोक्त चौदह मुनिराजों के अतिरिक्त, कई मुनिराज वृद्धावस्था तथा अस्वस्थता के कारण, सम्मेलन में उपस्थित हो सकने में असमर्थ रहे। उन्होंने अपनी सहानुभूति तथा सम्मति अन्य मुनिराजों के द्वारा सम्मेलन में भेज दी। श्रीमान् कालूऋषिजी महाराज और श्रीमान् दौलत-ऋषिजी महाराज आदि ६ मुनिवरों ने, तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी महाराज के द्वारा, श्रीमान् उदयऋषिजी महाराज ने, पं० रत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराजके द्वारा और श्रीमान लक्ष्मीऋषिजी महाराज ने, आत्मार्थी प्रभाविक मुनि श्री मोहनऋषिजी महाराज के द्वारा अपनी अपनी सम्मतियां भेजी हैं। इस तरह, उपस्थित तथा अनुपस्थित कुल २२ मुनिरत्नों की सम्मति का यह सम्मेलन हुआ।

इस शुभ अवसर पर, श्रीमती रत्नकुंअरजी आदि महासतियांजी भी वहां उपस्थित थीं और दक्षिण में विचरने वाली महासतियांजी श्री रामकुंअरजी, श्री रम्भाकुंअरजी, श्री राज-कुंअरजी तथा श्री श्रेयकुमरजी ने, अपनी सम्मति, पं० रत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराज के द्वारा भेज दी थी।

प्रारम्भिक मंगलाचरण के पश्चात्, प्रस्ताव सम्बन्धी कार्यवाही शुरू हुई और सब मिला कर १०५ प्रस्ताव पास हुए। इन प्रस्तावों में से जो जो प्रस्ताव गोपनीय समझे गये, वे रख कर, शेष कार्यवाही प्रकाशित की गई, जो यों है—

सबसे पहिले पं० रत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज ने, सम्प्रदाय की नवनिर्मित-समाचारी का स्वयं पालन करने और सम्प्रदाय के अन्य साधु साध्वियों से पालन करवाने का उचित प्रबन्ध करने तथा सम्प्रदाय की सारी व्यवस्था करने के लिये, एक कमेटी बनाने का प्रस्ताव रक्खा। इस प्रस्ताव का, पूज्य श्री १००८ श्री अमोलकऋषिजी महाराज तथा आत्मार्थी प्रभाविक मुनि श्री मोहनऋषिजी महाराज ने अनुमोदन किया। अन्त में, सर्वानुमति से, निम्न

लिखित ४ मुनिराजों की एक कमेटी बनाई गई—

१— पूज्य श्री १००८ श्री अमोलकऋषिजी महाराज
२— तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी महाराज
३— पण्डित रत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराज
४— आत्मार्थी मुनिश्री मोहनऋषिजी महाराज

इसके अतिरिक्त प्रथम दिन की बैठक में, और निम्न लिखित प्रस्ताव सर्वानुमति से पास हुये—

(१) ऋषि-सम्प्रदाय में, किसी भी प्रकार के परिवर्तन का अधिकार, यह सम्मेलन उपरोक्त कमेटी को देता है।

(२) किसी भी साधु या साध्वी को, यदि कोई विशेष प्रायश्चित देना हो तो वह कमेटी की राय से दिया जाय।

(३) बृहद् साधु-सम्मेलन के लिये यह सम्मेलन ऋषि-सम्प्रदाय की ओर से पूज्य श्री १००८ श्री अमोलकऋषिजी महाराज तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी महाराज पंडितराज श्री आनंदऋषिजी महाराज आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी महाराज तथा मुनि श्री विनयऋषिजी म० को अपनी तरफ से प्रतिनिधि चुनता है।

(४) साधु सम्मेलन के जन्मदाता, पूज्य श्री १००८ श्री सोहनलालजी महाराज साहब का, यह सम्मेलन हार्दिक उपकार मानता है।

(५) राजकोट पाली होशियारपुर आदि स्थानों में जिन २ सम्प्रदायों ने अपने सम्मेलन किये हैं उन्हें यह सम्मेलन धन्यवाद देता है।

(६) ऋषिसम्प्रदाय का सम्मेलन करवाने के लिये श्रीमती कान्फ्रेंस की साधु-सम्मेलन समिति की प्रेरणा से श्री किशनलालजी मूथा अहमदनगर श्री मोतीलालजी मूथा सतारा लाला जी श्री ज्वालाप्रसादजी हैदराबाद (दक्षिण) श्री सरदारमलजी पुगलिया नागपुर श्री सौभागमलजी महता जावरा श्री जमनालालजी रामलालजी कीमती इन्दौर श्री रूपचन्दजी नाहावत प्रतापगढ़ आदि तथा श्री संघ इन्दौर ने जो अविश्रान्त परिश्रम उठाये हैं वे सराहनीय हैं।

(७) यह सम्मेलन निश्चित करता है कि मालवे में विचरने वाली ऋषि सम्प्रदाय की आर्याओं का चातुर्मास के बाद प्रतापगढ़ में सम्मेलन किया जाय।

(८) यह सम्मेलन निश्चित करता है कि वर्तमान काल में विचरने वाले ऋषि सम्प्रदाय के साधु साध्वियों की एक लिस्ट तैयार की जावे।

(९) पूज्य श्री १००८ श्री लवजीऋषिजी महाराज तथा तृतीय पाटाधिपति पूज्य श्री १००८ श्री कानजीऋषिजी महाराज साहब की, परम्परा से प्रचलित ऋषि सम्प्रदायी साधु-समाचारी को बाल ब्रह्मचारी पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज तथा पंडित रत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज ने वर्तमान द्रव्य क्षेत्र काल और भाव के अनुसार पूर्तिपा में संशोधन किया था। यह

संशोधित समाचारी, इस ऋषि-सम्प्रदायी साधु-सम्मेलन में पढ़ कर सुनाई गई। इसका, तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी महाराज ने अनुमोदन किया और शेष मुनिराजों के द्वारा समर्थन किये जाने पर, सर्वानुमति से यही समाचारी मंजूर कर ली गई।

(१०) इस समाचारी में से, निम्न लिखित कुछ नियम प्रकाशित कर देने का प्रस्ताव, आत्मार्थी श्री मोहनऋषिजी महाराज ने रक्खा—

१— श्री जैन शासन की उन्नति करने के उपायों में, सबको यथोचित सहायता करना।

२— जिस कार्य से सम्प्रदाय की उन्नति हो, ऐसी सूचना या कथन चाहे जिस व्यक्ति का हो, उसे यथोचित रीति से स्वीकार करना।

३— अन्य सम्प्रदाय के किसी भी साधु को, उनके बड़े साधुओं की आज्ञा के बिना, अपनी सम्प्रदाय में नहीं मिलाना।

४— किसी अन्य के वैरागी को, उनकी आज्ञा के बिना अपने पक्ष में नहीं करना।

५— किसी भी वैरागी को, तीन महीने अपने पास रक्खे बिना दीक्षा नहीं देना और जिस ग्राम में दीक्षा दी जाय, वहां के श्रीसंघ की सम्मति प्राप्त कर लेनी चहिये।

६— दूसरी सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों की लघुता नहीं करना।

७— बड़ों (साधुओं) के पास से विहार करने के बाद, उन से फिर मिलने तक, जो वस्त्र, पात्र पुस्तकादि किये या छोड़े हों, उनकी आलोचना की जाय।

८— वैरागी की, सांसारिक अवस्था की आलोचना सुनने के बाद, उसकी योग्यता का विचार किया जाय।

९— पक्खी और संवत्सरी, महासभा द्वारा निश्चित की हुई ही की जाय।

१०— एकसौ कोस के आस पास विचरने वाले मुनिराजों को, तीन वर्ष में एक बार आचार्य श्री की सेवा में पधारना चाहिये और सम्प्रदाय के नियमों के विषय में संशोधन के विषय में, विचार विनिमय करना चाहिये। विशेष आवश्यक हो, तो आचार्य श्री की आज्ञा होने पर सेवा में हाजिर हों।

११— त्रिकाल में, सुखे समाधे यथा शक्ति ध्यान करना।

१२— श्रावकों के, धर्म ध्यान के लिये बनाये हुये मकान में या अन्य प्रासुक मकान में उतरना, फिर लोक व्यवहार में वह चाहे जिस नाम से पुकारा जाता हो।

१३— किसी भी साधु-साध्वी को किसी भी गृहस्थ पुरुष किंवा स्त्री को, अपने दर्शनार्थ आने के सौगन्ध न कराने चाहिये।

१४— श्री सदाचारांग और श्री निशीथ सूत्रों का ज्ञान किये बिना, स्वतन्त्र चातुर्मास न करने चाहिये।

१५— अयोग्य व्यक्ति को, यदि कोई लोभ वश दीक्षा दे, तो उसमें सहयोग नहीं देना चाहिये।

१६— दीक्षा महोत्सव में, शुद्ध स्वदेशी कपड़ों के अतिरिक्त अन्य कपड़े काम में न लिये जांय।

१७— एक गांव में वहीरखा करके दूसरा व्याख्यान न बांचा जावे।

१८— चातुर्मास के लिये, एक से अधिक गांव वालों को आश्वासन न दें।

१९— समान आचार तथा शुद्ध व्यवहार वाले मुनिराजों के साथ व्याख्यान बांचना, ज्ञान ध्यान सीखना और सिखाना वैयावच्च करना सत्कार तथा सम्मान करना इत्यादि इत्यादि व्यवहार (सम्भोग) की वात्सल्यता का सम्बन्ध रक्खा जाय।

इस प्रस्ताव का, तपस्वीराज श्री देवजी ऋषिजी महाराज ने अनुमोदन किया और पण्डितरत्न श्री आनन्दऋषिजी महाराज तथा अन्य मुनिवरों के समर्थन करने पर, सर्वानुमति से पास हुआ।

इतना कार्य हो चुकने पर, सम्मेलन की बैठक कल के लिये स्थगित कर दी गई।

दूसरे दिन की कार्यवाही, ज्येष्ठ शुक्ला ६ शुक्रवार

सम्मेलन की आज की बैठक में आत्मार्थी श्री मोहनऋषिजी महाराज द्वारा तैयार की हुई 'सर्वमान्य समाचारी' पर पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी महाराज पण्डितरत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज और मुनि श्री विनयऋषिजी महाराज आदि मुनिवरों ने विचार विनिमय किया। विचारोपरान्त, इस समाचारी की नकल समस्त साधुमार्गी मुनिरत्नों की सेवा में विचारार्थ भेजना तय हुआ।

सर्वमान्य-समाचारी

(१) अपनी २ आत्मा की साक्षी से, अपने गुरु या आचार्य के सन्मुख भूतकाल की आत्म शुद्धि करना (५महाव्रत आदि सम्बन्धी)।

(२) श्रावकों के, धर्मध्यान के निमित्त बने हुए मकानों में उतरना, किन्तु लोकव्यवहार में उसका नाम जो नाम हो।

(३) भण्डार जिस शहर में हों उसी शहर के श्रीसंघ की निश्रायमें कर देना।

(४) वस्त्र शुद्ध-स्वदेशी या खादी के उपयोग में लाना। वस्त्र साधुजी ७२ हाथ से और साध्वीजी ९६ हाथ से अधिक न रक्खें। रोगादि कारण पर आगार वस्त्र धोने में साबुन काम में न लाया जावे सोडा आदि अन्य पदार्थ अल्प मात्रा में काम में ले सकते हैं। वस्त्र पाडियारा रात्रि को न रक्खा।

(५) आहार पानी के निमित्त, चार से अधिक पात्र न रक्खें। यदि रोगादि अन्य कारण हों तो पुराने या मिट्टी के पात्र काम में ला सकते हैं। पात्रों को हराहतल रंग सिवाय न रंगा जाय।

(६) वस्त्र पात्र मकान या अन्य आवश्यक वस्तु यदि साधु के निमित्त मोल या भाड़े से ली हो, तो उसे काम में न ले।

(७) देश और समाज सुधार सम्बन्धी उपदेश देना और वस्तु स्वरूप समझाना किन्तु, आदेश नहीं देना तथा इन विषयों में क्रियात्मक भाग भी नहीं लेना।

(८) एक प्रहर रात्रि बीत जाने के बाद व्याख्यान नहीं देना तथा व्याख्यान स्थान के निमित्त यदि दीपकादि लगाये गये हो, तो वहां नहीं जाना। अपने स्थान से ५० कदम दूर जाकर व्याख्यान देना या सुनना नहीं।

(९) गृहस्थों को, हाथ से लिख कर पत्र नहीं देना। साधुओं को अन्य प्रश्नोत्तर की इच्छा हो, तो हाथ से लिख कर दे सकते हैं। पोस्टकार्ड टिकट आदि अपने पास नहीं रखना, न गृहस्थों से मांगना और न मोल ही मंगवाना।

(१०) धातु के फ्रेम के चश्मे, फाउण्टेन पेन, स्टील, पिन, सुई, कैंची, सरौता, चाकू या धातु के पात्र तथा अन्य धातु की वस्तुए, रात्रि को अपनी नेश्राय में नहीं रखना।

(११) औषधि, तमाखू, चूर्ण, मलहम, खाद्य या सूंघने किंवा लगाने के पदार्थ, रात्रि को अपनी नेश्राय में नहीं रखना।

(१२) गोचरी, आहार आदि के पदार्थ, रोगी अथवा वृद्ध या तपस्वी आदि के कारण के अतिरिक्त, रोज एक ही घर से न लिये जावें। धोवन और गरम पानी रोज ला सकते हैं।

(१३) साधु के स्थान पर आर्याजी, श्रावक तथा श्राविका दोनों की साक्षी से बैठ सकते हैं और आर्याजी के स्थान पर, अनिवार्य प्रसंग हो तो साधु, श्रावक तथा श्राविका दोनों की साक्षी से बैठ सकते हैं।

(१४) चातुर्मास करने के बाद, साधुजी एक वर्ष बाद शेषकाल पधार सकते हैं और दो वर्ष बाद फिर चातुर्मास के लिये पधार सकते हैं। शेषकाल रहने के बाद दो शेषकाल और चातुर्मास के बाद एक वर्ष पहले पधारना हो, तो दो रात्रि से अधिक नहीं रह सकते हैं। किन्तु, नहीं पधारे हुए वहां की नेश्राय में रह सकते हैं तथा वैयावच्च के कारण से भी पधार सकते हैं।

(१५) पक्खी और सवत्सरी, कान्फरेन्स की टीप के अनुसार की जावे।

(१६) गृहस्थ से वैयावच्च न करवाई जावे और पाटपाटले भी न उठवाये जावें। वस्त्र न धुलवाये जावें, हाथ पैर न दबवाये जावें, बोझा न उठवाया जावे तथा अन्य भी कोई व्यक्तिगत शारीरिक कार्य न करवाया जाये।

(१७) साधुजी दो से कम और आर्याजी तीन से कम न विचरें। यदि वैयावच्च के कारण विहार करना पड़े, तो आगार है, किन्तु जहांतक बन सके, जल्दी से जल्दी सम्भोगी साधु से मिल जावें।

(१८) वस्त्र, पात्र, मकान, पुस्तकादि नित्योपयोगी वस्तुओं का, दिन में दो बार प्रतिलेहण करना।

(१९) जो मुनि, अपनी नेश्राय में जितने शास्त्र-पुस्तकादि उठावें, उनका पूर्ण अध्ययन दो साल में होजाना चाहिये।

(२०) पण्डित के वेतन के लिये, श्रीसंघ द्वारा चन्दा न इकट्ठा करवाया जावे। ज्ञान-प्रचारक समिति से स्थानीय संघ द्वारा उसकी व्यवस्था करवाई जावे।

(२१) पुस्तक आदि छपवाने के लिये श्रीसंघ द्वारा चन्दा न इकट्ठा करवावें और अपने नाम से पुस्तक, लेख, कविता आदि न छपवावें। पुस्तक प्रचारक-समिति से, स्थानीय संघ द्वारा ऐसी व्यवस्था होनी चाहिये।

(२२) नौ वर्ष से कम उम्र वाले, बालक या बालिका को दीक्षा न दी जावे तथा इससे कम उम्र वाले, बालक या बालिका का पोषण भी न किया जावे।

(२३) माता पिता और सगे-सम्बन्धियों की आज्ञा होने पर भी श्रीसंघ की आज्ञा के बिना दीक्षा न दी जावे।

दीक्षा महोत्सव में, वैरागी के भण्डोपकरण आदि उपाधि के लिये १००) एक सौ रुपये से अधिक न खर्च किये जावें। शास्त्र आदि की बात अलग है।

(२४) दीक्षा महोत्सव, तपोत्सव संथारा महोत्सव, चातुर्मास आदि में दर्शनार्थ आने वालों को सादा और अल्पारम्भी भोजन खिलाना स्वीकार करें, इसी क्षेत्र में चातुर्मास की विनती मंजूर फरमाने का ध्यान रक्खा जाय।

(२६) जो मुनि जिस क्षेत्र में विचरते हों उस क्षेत्र में यदि कोई नवीन मुनि पधारें, तो उन मुनि के विरुद्ध प्ररूपणा न करें और मूल सम्प्रदाय की समकित भी न पलटावें।

(२७) आर्याजी से कोई कार्य न करवाया जावे। रोग और वृद्धावस्था आदि में आगार है।

(२८) विहार में साथ रहने वालों से आहार न ग्रहण किया जावे तथा दर्शनार्थी से भी ४ दिन पहले आहार न ग्रहण किया जाय।

(२९) रात्रि में, साधुजी स्त्री के साथ और आर्याजी पुरुष के साथ बात-चीत न करें।

(३०) साधुजी श्राविकाओं की सभा में श्रावकों की उपस्थिति बिना व्याख्यान न बांचें।

(३१) इसी तरह आर्याजी पुरुषों की सभा में श्राविकाओं की उपस्थिति के बिना व्याख्यान न बांचें।

(३२) कुल ३२ शास्त्रों के मूल से मिलते हुए अर्थ तथा टीका से, आगम प्रमाण न जिनवाणी मानना।

(३३) गृहस्थ के यहां रोगादि कारण के अतिरिक्त न बैठना चाहिये तथा मंगलिक के सिवाय और कुछ सुनना न चाहिये।

(३४) विलायती दवाई-सुधा पीने के काम में न लेनी चाहिये, चुपड़ने और मालिश की दवा का आगार।

(३५) साधु या साध्वी को, अपने नाम से पत्र, बुकपोस्ट पेपर, रजिस्ट्री वी० पी० आदि न मँगवाना चाहिये।

(३६) मन्त्र, तन्त्र, जन्त्र धागा, डोरा भविष्य आदि न बतलाया जावे।

(३७) फोटो उतरवाना नहीं और न समाधि स्थान ही बनाना।

—

(३८) आपत्तिकाल में यदि कोई प्रवृत्ति सेवन करनी पड़े, तो अपनी सम्प्रदाय के आचार्य तथा साधु-सम्मेलन-समिति की आज्ञा ले लें।

(३९) आचार्य, गुरु या अन्य किसी की नेश्राय के अतिरिक्त, स्वच्छन्द-वृत्ति से विचरने वाले को सम्मेलन समिति की आज्ञा के बाहर गिने जांय।

(४०) अन्योन्य-टीकायुक्त ट्रैक्ट छपवाने वाले और उसको भला जानने वाले, सम्मेलन-समिति से बाहर गिने जांय।

(४१) प्रतिवर्ष, वृहत् साधु सम्मेलन की जयन्ती मनाकर, उसमें सम्मेलन के नियमों का बोध करवाया जाय।

नोट—नं ३, १९, २१, २४, २९ के सर्वमान्य होने में सन्देह है, इसलिए इन नियमों का निर्णय करने के लिए विशेष विचार किया जाय।

उपरोक्त सब नियमों को व्यवहार में लाने के लिये, प्रत्येक सम्प्रदाय के साधुजी एवं साध्वीजी से नम्र प्रार्थना है। जो इन नियमों का पालन करते हैं, उनके साथ व्याख्यान, सत्कार-सन्मान करना, साता पूछना, वैयावच्च करना, शास्त्र की वांचनी लेना देना तथा विहार से पधारते समय सामने जाना, पहुँचाने जाना आदि व्यवहार जारी करें, ऐसी प्रार्थना है।

एक साथ मकान में उतरना, वन्दना करना या आहार पानी का सम्भोग करना या नहीं करना, यह मुनिराजों की अनुकूलता पर निर्भर है।

उपरोक्त विचार-विनिमय तथा निर्णय के बाद, समिति की कार्यवाही अगले दिन के लिये स्थगित कर दी गई।

तीसरे दिन की कार्यवाही, मिती ज्येष्ठ शुक्ला ७ शनिवार

सम्मेलन की आज की बैठक में, आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी महाराज द्वारा तैयार की हुई "ऋषि सम्प्रदाय की ओर से वृहत् साधु सम्मेलन में पेश किये जाने वाले विषयों की सूची" पर पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज, तपस्वीराज श्री देवजी ऋषिजी महाराज, पण्डित रत्न मुनि श्री आनन्द ऋषिजी महाराज और मुनि श्री विनय ऋषिजी महाराज आदि मुनिवरों ने विचार विनिमय किया, और अन्त में, निम्न सूची, वृहत् साधु-सम्मेलन में रखना सर्वानुमति से निश्चित हुआ।

१ दीक्षा

दीक्षा देते समय जाति, आयु, अभ्यास और योग्यता का निर्णय।

२ मुनि संख्या

मुनि कम-से-कम दो और आर्याजी कम-से-कम तीन विचरें और इसी तरह अधिक से अधिक संख्या का भी बन्धन होना चाहिये, ताकि अन्य क्षेत्र खाली न रहें, जिससे जैन अजैन होने से बचें।

३ साधु

साधु-साध्वियों के नाम, ग्राम, आदि आयु, दीक्षा-समय, सम्प्रदाय, योग्यता आदि का पूर्ण परिचय।

४ निर्वासन

कोई साधु, सम्प्रदाय से अकेला निकलकर विचरे या अकेला ही हो तो उसे सम्मिलित करने का प्रयत्न, जाँच कमेटी के द्वारा जाँच करवा कर एवं यथायोग्य आलोचना करवा कर किया जाय। सर्वथा अयोग्य होने पर वेशभूषा से निर्वासित करने की घोषणा कर दी जाय।

चातुर्मास

(अ) एक क्षेत्र में अधिक-से-अधिक कितने चातुर्मास हों और किन संयोगों में ? बीमारी या अन्य कारणों से ?

(ब) चातुर्मास के योग्य क्षेत्रों की लिस्ट तैयार करना।

(क) प्रान्तिक प्रवर्तक-मुनिराज अपने-अपने क्षेत्र में चातुर्मास का प्रबन्ध करें। जहाँ तक चातुर्मास हो, वहाँ दूसरा चातुर्मास नियत न करें, ताकि अन्य क्षेत्र खाली न रहें और राग द्वेष की वृद्धि भी न होने पावे।

६ व्याख्यान

(अ) व्याख्यान के विषय नियत करना तथा वर्तमान समयानुकूल कौन-कौन से शास्त्र तथा ग्रन्थादि समाज में अधिक उपयोगी हैं इसका निर्णय करना।

(ब) एक साथ व्याख्यान किन संयोगों में और किनके साथ बाँचना या नहीं बाँचना ? साधुमार्गियों के अतिरिक्त, अन्य जैन मुनियों के साथ व्याख्यान बाँच सकते हैं, या नहीं ?

(क) साधन के अभाव में खड़े होकर भी व्याख्यान दे सकते हैं या नहीं ?

(ड) सामयिक सामाजिक-आन्दोलनों में कहाँ तक भाग ले सकते हैं ?

(इ) व्याख्यान देने का अधिकारी कितनी योग्यता वाला और कौन हो ?

७ पर्व तिथि

[अ] शुक्ल पंचमी अष्टमी, एकादशी पक्खी चौमासी सम्वत्सरी आदि तिथियों के ऐक्य का निर्णय।

[ब] श्रावक-प्रतिक्रमण और कायोत्सर्ग के लोगस्स आदि का निर्णय करना।

८— वस्त्र निर्णय

अल्पारम्भी स्वदेशी वस्त्र जैसे खादी आदि का उपयोग प्रत्येक साधु साध्वी को करने के लिए नियम।

९— समाचारी

आचार विचार वस्त्र मर्यादा आदि समा—
जिससे सबमें एकता का भाव उत्पन्न हो और भारती

१०— साहित्य

(अ) साधुमार्गी सम्प्रदाय की मान्यता का एक स्वतन्त्र ग्रन्थ रचा जावे, जो जैन गीता की भांति हो।

(ब) समाज में जो भी साहित्य प्रकाशित हो, वह विद्वान् मुनि समाज की उपसमिति की आज्ञा प्राप्त होने पर ही हो।

(क) जैन फिर्कों में, पारस्परिक द्वेषाग्नि फैलाने वाला साहित्य न प्रकाशित हो, ताकि उस प्रकार का उपदेश या प्ररूपणा भी न हो सके।

११— ऐक्य

(अ) सर्वोपरि, एक सर्व सम्मत तथा निष्पक्ष आचार्य की नियुक्ति हो और वे आपसी कलह का निष्पक्ष निर्णय करके जो फैसला दे, वह दोनों पक्षों को मान्य हो।

(ब) बड़े २ आचार्यों में जब साम्प्रदायिक मत भेद पड़ जांय, तो उनकी जांच तथा फैसले के लिये योग्य सभा का चुनाव हो। इस सभा में अधिक से अधिक तीन निष्पक्ष मुनिराज हों।

१२— शिक्षा

(अ) एक सिद्धान्त शाला कायम की जाय, जिसके अध्यापक मुनिगण ही हों। इसके पाठ्यक्रम, स्थान तथा नियमावली की रचना की जाय। मुनि में पूर्ण योग्यता न उत्पन्न हो जाय, तब तक पंडित से पढ़ने के लिये भी व्यवस्था की जाय।

(ब) प्रान्तिक सिद्धांत शालाएं खोली जांय। मारवाड़ प्रान्त में जोधपुर या ब्यावर में, मालवे में रतलाम में, मेवाड में चित्तौड़ या उदयपुर में, गुजरात में पालनपुर या अहमदाबाद में, काठियावाड़ में राजकोट या बढवाण शहर में, दक्षिण में अहमदनगर में, पंजाब में सियालकोट या लुधियाने में, कच्छ में मांडवी या अंजार में।

१२— पतित

कोई साधु या साध्वी, दीक्षा छोड़ कर गृहस्थी हो जाय, तो छोड़ने के कारण की जांच करके रिपोर्ट पेश करनी चाहिये।

१४— सम्मेलन

बृहत्साधु-सम्मेलन पांच वर्ष में हो या सात वर्ष में, इसका निश्चय हो।

१५— पदवियां

आचार्य, उपाध्याय, गणावच्छेदक, प्रवर्तक, गणी तथा प्रवर्तिनी आदि पदवियां, पदवीधारियों की योग्यता, शिक्षा, दीक्षा आयु आदि का, जांच कमेटी के द्वारा निश्चय हो जानेपर श्रीसंघ प्रदान करने का प्रबंध करे। इसमें, यदि जाति का कोई बंधन न रहे, तो उत्तम हो।

१६— प्रकाशन

(अ) विकट समस्या उपस्थित होने पर चित्र (फोटो) खिंचवाना लेख तथा पुस्तक प्रकाशन में नाम एवम् सहयोग देना तथा अपने हाथ से स्वयं पत्र व्यवहार करना आदि कार्य मुनिराज कर सकते हैं या नहीं ?

(ब) तीनों फिरकों के अन्तर तथा इस समाज की विशेषता का दिग्दर्शन कराने वाला एक ग्रन्थ प्रकाशित होना।

१७— व्यय

दीक्षा महोत्सव तप महोत्सव लोच महोत्सव प्रभावना क्षमापना पत्रिका स्वामि वात्सल्य (दर्शनार्थ आने वाले सज्जनों के लिये भोजन) आदि कार्यों में अधिक से अधिक कितना खर्च किया जाय ?

१८— श्रावक वर्ग

श्रावक वर्ग को एक स्थिति पर चलाने के लिये उचित नियमों की व्यवस्था बनाई जाय।

नोट:— ये ३ ४ ५ (अ) १ (ब) ११, १५ १८ आदि विस्तृत कार्यों के लिये उचित नियमों की व्यवस्था बनाई गयी।

धन्यवाद—

सम्मेलन में उपरोक्त कुछ आवश्यक विचार विनिमय हो जाने के बाद आचार्य श्री ने, निम्न लिखित धन्यवाद का प्रस्ताव रक्खा जो सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ।

"तपस्वीराज श्री देवजीऋषिजी पंडित रत्न श्री आनन्दऋषिजी आत्मार्थी मुनिश्री मोहनऋषिजी तथा महासतीजी श्री हमीरांजी श्री रामकुंवरजी श्री रम्भाकुंवरजी श्री रतनकुंवरजी श्री राजकुंवरजी तथा श्री प्रेमकुंवरजी आदि मुनिराजों एवं महासतियों ने ऋषि सम्प्रदाय के संगठन तथा सम्मेलन में सहयोग देकर, उदारता एवम् सरलता से इस कार्य को सफल बनाया है अतः मैं उन्हें हार्दिक धन्यवाद देता हूं।"

अभीष्ट चिन्तन

ऋषि सम्प्रदाय के सभी मुनि तथा महासतियांजी ऐसे अनुभवी शास्त्र विशारद आगमोद्धारक बाल ब्रह्मचारी श्री अमोलकऋषिजी महाराज साहब को आचार्यपद से सुशोभित करने में अपना अहोभाग्य प्रतिष्ठा तथा गौरव मानते हैं। श्रीजी ने ऐसी वृद्ध अवस्था में भी सम्प्रदाय का बोझा उठाने का जो अनुग्रह किया है उसके लिये ऋषि सम्प्रदायी सब मुनि व महासतियांजी श्रीमद् की दीर्घायु की भावना करते हुए सम्मेलन की कार्यवाही समाप्त करते हैं।

सम्मेलन की समाप्ति के पश्चात् बाल ब्रह्मचारी आगमोद्धारक मुनि श्री अमोलकऋषिजी महाराज को ऋषि सम्प्रदाय का आचार्य पद शुभ मिती ज्येष्ठ शुक्ला १२ को इन्दौर में ही बड़ी धूमधाम से दिया गया। इस अवसर पर देश विदेश से हजारों जनता इन्दौर आई थी।

इस पुनीत-अवसर पर पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज आदि एवं पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शेषमलजी महाराज आदि मुनिराज समीप ही विराजमान थे। ऐसे अनुपम प्रसंग पर, ये मुनिराज समीप ही विराजमान होते हुए भी वहां पधारकर सम्मिलित न हों, यह बात कई महानुभावों को खटकने लगी और उन्हें सम्मिलित करने का प्रयत्न प्रारम्भ हुआ। इस शुभ-प्रयत्न में, उस सम्प्रदाय के मुख्य २ श्रावकों की सिफारिश प्राप्त करने की इच्छा से, राजाबहादुर लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी एवं साधु-सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी, रात ही रात मे १०० मील के लगभग रतलाम को मोटर द्वारा गये और बड़े साहस तथा खतरे की जोखिम उठाकर वहां के श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रधान श्रावकों की सिफारिश प्राप्त करके वापिस लौट गये। इस प्रवास में, एक स्थान पर, मोटर ड्राइवर की असावधानी के कारण मोटर एक पुल की दीवार पर चढ गई, जहाँ से नीचे गिरने पर मोटर तथा सवारी सब को हानि पहुंच सकती थी। किन्तु, उपरोक्त दोनों महानुभाव जिस पुण्य-भावना से प्रेरित होकर यह सद्प्रयत्न करने गये थे, उसके प्रताप से मोटर गिरने न पाई और दूसरे ही क्षण वह खतरे से बाहर आगई। इस प्रकार से, अत्यन्त साहस एवं जोखिम उठाकर जो सिफारिश प्राप्त की गई थी, वह सफल हुई और उपरोक्त मुनिराजों ने भी दीक्षा-महोत्सव में पधारकर उस पुण्योत्सव की शोभा बढ़ाई। अस्तु।

इन्दौर मे होने वाले, ऋषि-सम्प्रदाय के साधु-सम्मेलन के बाद ही, जैन प्रकाश में, श्री दुर्लभजीभाई जौहरी का निम्न लेख गुजराती भाषा में प्रकाशित हुआ था, जिसका हिन्दी अनुवाद पाठकों की सुविधा की दृष्टि से यहां दिया जाता है।

यह लेख, केवल गुजरात-प्रान्तीय मुनिराजों को लक्ष्य में रखकर लिखा गया था। किन्तु, इसमें वर्णित बातें सभी सम्प्रदायों तथा प्रान्तों के लिये समानरूप से उपयोगी एवं आवश्यक थीं, इसी लिये यहां दिया जाता है।

साधु-शूरों को, सम्मेलन-समिति के मँत्री की पुकार.

दिशाएं, सम्मेलन की मंगलध्वनि से गूंज रही हैं।

पधारो! शासन को प्रदीप्त करने वाले जगमगाते तारागण! पधारो!

अजमेर के पन्थ में प्रयास प्रारम्भ करो।

"लीधूँ स्वेच्छाए आवत जीवन नुं पूर्ण करवुं:
मल्यो मोको केवो! संघ ने चरणे शिर धरवुं:

कया मोगी इच्छा ममत्व सुख मे त्यां तजी जउं।
मने मागे मागे मळग डग भेदाम धपडुं '

[श्री मोतिलीचन्द्र के काव्य के आधार पर]

वीर युग ना प्रधान पुरुष
मंच मे डोलावनार महावीर ना सुपुत्र '
मोक्षमार्ग ना प्रवासी भाग्यशाली नरोत्तम !
सिद्धच वृक्ष मे जीरवनार कलकपाल,
फुंफाड़ा मारता विषधरो ने,
शान्त करनार बाहोश आबूगर !
संकटो मे बीधी दोड़नारा
सिद्धशिला ना ना उम्मेदवार ! ! ! '

[श्री संती]

पधारो, प्रयाण प्रारम्भ करो !

"कायर मे पड़े भूलवी
मूरा चढ़े रे संग्राम"

महा-साधु-सम्मेलन के लिये आमन्त्रण देते समय, मल्हार सूचक नगाड़ों की ध्वनि, शहनाई के सुस्वर के बीच सुनाई दे रही है। काश्मीर सियालकोट और अमृतसर से पंजाबी मुनिगण दिल्ली के नजदीक पधार रहे हैं। नागपुर नासिक आदिक दक्षिण-प्रदेशीय नगरों से ऋषि राजगण इन्दौर तक आ चुके हैं। कच्छ काठियावाड़ और गुजरात की गुर्जर-साधु-समिति भी पालनपुर की ओर प्रयाण करने की सलाह कर रही होगी। इस प्रसंग पर, आपको अपने ही समझकर दिल खोल कर और ऐसे मौके पर अन्तिम और सत्य २ मञ कर देना मैंने उचित समझा।

युद्ध के प्रसंग पर, शहनाई की आवाज सुन कर शूरवीर तो सोते रह ही नहीं सकते। यदि कोई गहरी नींद में बेहोश सा होकर पड़ा हो तो उसके स्नेही तथा शुभेच्छुक लोग उसे जगाते हैं। बेहोशी दूर करने के लिये, बेहोशी की दवाई करवा डालते हैं किन्तु पराक्रम बतलाने के शुभ प्रसंग को फिजूल नहीं खोने देते।

मातृभूमि के मोह के कारण नहीं, बल्कि स्थानकवासी साधुमार्गी-समाज के उद्धारक की जन्मभूमि, हमारे मुखनायक श्रीमान् लोंकाशाह एवं क्रियोद्धारक श्री धर्मसिंहजी महाराज श्री धर्मदासजी महाराज एवं श्री लवजी ऋषिजी महाराज की जन्मभूमि उद्धारभूमि-गौरव की पात्र पवित्र गुर्जर-भूमि में उत्पन्न होने के नाते, हम लोगों को आगे बढ़ने का सर्वाधिकार स्वाधीन है। ऐ शासनो द्धारक उपकारी के सच्चे उत्तराधिकारियों ! अपने पूर्वजों के श्रम को भूल मत जाइयेगा। [illegible]

हुए परिश्रम का स्मरण करके, इस मार्ग से विचरने का विचार करो।

धर्मसुधार के इस धर्मयुद्ध में, मोर्चे पर डटे रहने का अपना अधिकार कायम रखियेगा। लोंकाशाह की लाज रखने के लिये, उनके उत्तराधिकारियों का रक्त, कभी तो पर्याप्त उष्ण एवं गतिमान होना चाहिये।

भोले भोगियों ने, जंगल के योगियों को, खाट के खटमल बना डाला है। पुरुष-सिंहों को, ढीले ढाले बनिये बना दिया है। किन्तु यदि अप्रतिबद्धविहारी-पक्षीगण, अपने पंखों की शक्ति खो दें, तो उनका क्या हाल हो? वनराजों को बन्धन कैसे? बन्धन और जंजीरें तो गुलामों के पैरों में होती हैं।

सम्राट् श्री पंचम जार्ज, जिस समय शैक हैण्ड करने के लिये हाथ बढ़ावें, उस समय यदि महात्माजी अपना हाथ पीछे खींच लें, तो आप अपने दिल में क्या सोचेंगे? ठीक इसी तरह, इस समय अग्रगण्य समझे जाने वाले आचार्य गण, आप लोगों को अपनाने, यहीं यहीं, आपको अपनी बगल में बैठाने और आपकी सलाह एवम् आपको अनुभव सुनने को आमन्त्रित कर रहे हैं। ऐसे अपूर्व प्रसङ्ग पर बहाना बतलाने को, गृहस्थ लोग अपनी भाषा में, 'लक्ष्मी तिलक करने आवे, तब मुंह छिपाना' समझेंगे। ऐसा होने पर, आपके भक्तों के हृदय के सद्भावों में वृद्धि होगी या कमी, इस बात का भी विचार कीजियेगा।

हां, यह बात अवश्य है, कि असुविधाएं सामने आती होंगी। किंतु यह तो अपवाद प्रसङ्ग है। आपत्तिकाल में, असुविधाओं को पकड़ कर नहीं बैठा जा सकता। परीषहों के पाठ, पुस्तकों के पन्नों से उठा कर जब अपने पसीने से संयुक्त कर दिये जायगे, तब ये कल्पित कष्ट लतिकायें अपने आप मुरझा जावेंगी। यदि हिम्मत हार जाइयेगा, तो पंद्रहसौ वर्षों के पश्चात् प्राप्त होने वाले इस प्रसङ्ग से लाभ नहीं उठाया जा सकेगा।

सुविधाओं एवम् सुखों को अपनाने के अभ्यस्त मुनिराजों को, इस समय असुविधाओं को भी अपनाना पड़ेगा। चाह दूध के बदले, दही और छाछ की आवन डालनी पड़ेगी। पतले और गरम फुलकों के बदले मोटी २ ज्वार की रोटियों का नाम सुन कर घबराने की आवश्यकता नहीं है। झूठे भय से भड़कने की भी जरूरत नहीं है। पानी के बदले, मौका पड़ने पर धोवन का उपयोग करने से घृणा न उत्पन्न होनी चाहिये। अब तो देश विदेश में भ्रमण करने वाले श्रावक गण, समयसूचक बन गये हैं। यह विहार भी कुछ विकट नहीं है। पालनपुर से अजमेर तक, मोटर चलने योग्य पक्की सड़क है। अनेक स्थानों पर, दोनों ओर वृक्षों की श्रेणी के कारण छाया रहती है। पालनपुर से अजमेर तक, पानी भी सरलता पूर्वक प्राप्त हो सकता है। अलबत्ता आहार देश-देश का पृथक होगा, तो यह समझ लेना चाहिये, कि वैद्यराज ने परहेज बतलाया है। शरीर के साधारण रोग के लिये भी परहेज पाला जाता है, तो यह तो भवरोग की राम बाण औषधि है, इसके लिये जितना भी कठिन से कठिन परहेज पालना पड़े, वह कम है।

द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव के अनुसार, समयसूचक बना जा सकता है। पंडित

चेचरदासजी ने, जेल से, अपनी माताजी को लिखा था कि, 'यहां तो आयंबिल की श्रेणी की श्रेणी पूरी होती है और उणोदरी आदि तपस्याओं के लाभ प्राप्त होते हैं'। बिना लक्ष्य का व्यवहार शुष्क रह जाता है। वैराग्य का अर्थ है— विराग। राग रहित होने को ही वैराग्य कहा जाता है। संसार की ऋद्धि सिद्धि छोड़ने वाले त्यागी गण थोड़ी सी सुविधाओं का त्याग नहीं कर सकते, यह विचार भी उन महानुभावों के प्रति होने वाले पूर्ण सम्मान की कमी घोषित करता है। कष्ट के काल यानि कसौटी के प्रसङ्ग पर कष्ट सहन करने की तालीम ली जाय, यह रिहर्सल विचित्र आत्मानन्द उत्पन्न करता है।

परिषहों की परीक्षा में पास होने वालों ने, अनेक प्रसंगों पर चवैना या भुने हुए चने खा कर पानी पी लिया है। सूखे आटे को पानी में घोल कर पी जाने और फिर स्वाध्याय स्तवन में रत होजाने वाले साधुओं को मैंने अपने नेत्रों से देखा है। ऐसे कष्ट तो इस विहार में नहीं हो सकते। सुविधाजनक विहार स्थलों की व्यवस्था हो जायगी और सेवाभावी स्वयंसेवक मुनिराज भी चातुर्मास उठने के बाद सामने आकर सत्कार करेंगे तथा साथ २ विहार करके सुविधा पहुंचावेंगे।

हिम्मत के हथियार सजिये। महा सम्मेलन में सम्मिलित होने का दृढ़ निश्चय कर के केसरिया कीजिये और प्रतिनिधि मुनियों का चुनाव कर के प्रस्थान कीजिये। अपूर्व आनन्द प्राप्त करने के लिये अपूर्व परिश्रम भी कीजिये। यश प्राणों के बदले प्राप्त होता है। मान प्राप्त कर के बैठे रहने वालों को मात करवाने वाले ऐसे कीर्ति का मूल्य चुकाने के इस शुभ प्रसंग का स्वागत कीजिये। स्वराज्य के धर्मयुद्ध में मोर्चे पर रही है— गर्वी गुर्जर भूमि और श्री शासनोद्धार के लिये होनेवाले साधुसम्मेलन के मोर्चे पर रहेगी गुर्जर साधु-समिति। हृदयसे स्वागत है आपका !

अजमेर में एक मास तक आपकी सेवा में हाजिर रहने वालों की चहल पहल से तथा मुनिराजों के साथ ज्ञानगोष्ठी में रत रहने के कारण आपको कभी जरा भी यह नहीं जान पड़ने पावेगा कि आप परदेश में हैं। और कहां आपने अपनी ही प्रांत के लिये मुनि जीवन रजिस्ट्री करा लिया है ! जहां विशेष उपकार दिखाई दे वहां विचरने का तो आपका निश्चय ही है। यदि श्री धर्मदासजी महाराज के शिष्य न विचरे होते तो क्या कभी इतना विस्तार हो सकता था !

श्री साधु सम्मेलन के संचालक शतावधानीजी शरीर से स्वस्थ न होते हुए एवम् राजकोट के पक्षाघात द्वारा पराधीन बनाये हुवे होने पर भी अजमेर के लिये मोर्चे पर खड़े होने का उत्साह बतला रहे हैं। हम आशा करते हैं कि पूज्य श्री उत्तमचन्द्रजी महाराज पूज्य श्री छग-नलालजी महाराज मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० मुनि श्री ईश्वर लालजी म० मुनि श्री मणिलालजी म० मुनि श्री कानजी स्वामी मुनि श्री शामजी स्वामी पंडित श्री हर्षचन्द्रजी म०, कवि श्री नानचन्द्रजी म० योगी श्री त्रिलोकचन्द्रजी म० पंडित श्री देवचन्द्रजी म०, पंडित श्री नागचन्द्रजी म० श्री धनजी मुनि श्री श्री छोटालालजी मुनि श्री. मूलचन्द्रजी मु० श्री जीवराजजी मुनि श्री प्राणलालजी मुनि श्री नानचन्द्रजी मुनि श्री, [illegible] श्री शिवलालजी मुनि आदि महाराज यूथ बना कर गुर्जर साधु-समिति [illegible] शोभित करेंगे।

वहाना और किसी प्रसंग पर बतलाया जा सकता है। यह तो सारे प्रान्त की प्रतिष्ठा का प्रश्न है। श्री संघ के उत्कर्ष के लिए, आज तक पाट पर बैठे-बैठे ही उपदेश दिया जाता था। और यह श्रीमान् लोंकाशाह के मिशन के लिये मर्दानगी बतलाने का समय है। "हमे अकेले ही रहने दो हमें इसके बीच मे नहीं पड़ना है, हमें तो अपनी आत्मा के लिये ही करना है।" यह बहाना बहादुरों के मुँह से शोभा नहीं देता। हाँ, निर्जन श्मशानों में या एकान्त में, काउसग्ग करके रहने तथा मौनव्रत धारण करके बस्ती से अलग रहने वाले ऐसी दलील दे सकते हैं और समाज विनम्र भाव से उसे स्वीकार भी करेगा। किन्तु बस्ती मे रहते हुए तथा पाटों पर बैठे-बैठे अपने ही श्रावकों को बोध देने वाले आत्मार्थी, पहले यदि अपने लिङ्गधारी साधुओं को सुधारें—सुधारने के लिये सम्भव प्रयत्न करें, तो कैसा सुन्दर परिणाम हो? साथ ही कितना, निकम्मा-कूड़ा-कचरा निकल जाय? शक्ति वालों से समाज ऐसी ही आशा रखता है। यह नहीं कि बहाने बतलाकर दूर रहें या चौंक कर भागें। जैनों तथा अजैनों की मिश्र-परिषद् में चाबुक मारने की अपेक्षा, मुख्य-मुनिराजों के बीच बैठकर शंका समाधान करना अधिक शोभा देगा। वैद्यों की विद्या की कसौटी, वैद्यों के बीच ही हो सकती है। वैद्य यदि रोगी को बातों से ही घबरा दे, तो वह न घर का रहे न घाट का, न संसारी रहे न साधु; ऐसी स्थिति में डाल देगा। अनेक रोगों की अमूल्य औषधियों से औषधालय की अलमारियां भरी हैं। फिर भी घबराये हुए एवं बेसमझ-रोगी को, उस औषधालय मे से इच्छानुसार औषधि ले लेने की सलाह जो वैद्य देता है, वह रोगी का शत्रु है। ऐसा रोगी यों चाहे देर से मरता, लेकिन इच्छानुसार मात्रा लेने पर शीघ्र ही श्मशान पहुँच जावेगा। लक्ष्यहीन बाण, दुश्मन के बदले चलाने वाले के इकलौते बेटे के भी प्राण ले सकता है। राग के खिलौनों को खिलाने या बेचने में कुछ भी करामात नहीं है।

शरीर निर्बल हो, तो आत्मबल से आगे बढ़ने का निश्चय करो। सुविधायें तो हैं ही क्या चीज़, नाशवान्-शरीर का बलिदान करके भी श्रीसंघ का श्रेय करने के दृढ-निश्चय वाले ही अमर हो सकेंगे। एक शायर ने कहा है:—

"मरना भला है उसका जो अपने लिये जिये।
जीता है वह जो मर चुका इन्सान के लिये॥"

अपने तन्दुरुस्त शरीर है, अनेक रोगों के उपचार के इन्जेक्शन लगवाकर, एक अपने शरीर का बलिदान करके, अनेकों के आराम का आशीर्वाद प्राप्त कर जाने वाला युवक, आज भी अमर है।

वृद्ध-गुरु या बीमार-शिष्य को छोड़ कर कैसे आ सकते है? इस शङ्का के समाधान के लिये एक ही दृष्टान्त काफी है। छयासी (८६) वर्ष के वृद्ध पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज, श्री संघ के श्रेय के निमित्त, अपने पाटवी-शिष्य- युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज को, आठ सौ मील दूर भेज रहे हैं। शारीरिक सम्पत्ति शिथिल होते हुये भी, उत्साही उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी महाराज कितनी दूरी से अजमेर पधार रहे हैं। हमारे गुजरात के आत्मारामजी श्रीमान् धर्मसिंहजी महाराज

मेघराजजी ने, जेल से, अपनी माताजी को लिखा था कि, 'यहां तो आयंबिल की ओली की ओली पूरी होती हैं और उपोवरी आदि तपस्याओं के लाभ प्राप्त होते हैं'। बिना लक्ष्य का व्यवहार शुष्क रह जाता है। वैराग्य का अर्थ है— विराग। राग रहित होने को ही वैराग्य कहा जाता है। संसार की ऋद्धि सिद्धि छोड़ने वाले त्यागी गण थोड़ी सी सुविधाओं का त्याग नहीं कर सकते, यह विचार भी उन महानुभावों के प्रति होने वाले पूर्ण सम्मान की कमी घोषित करता है। कष्ट के काल यानि कसौटी के प्रसङ्ग पर कष्ट सहन करने की तालीम ली जाय, यह रिहर्सल विचित्र आत्मानन्द उत्पन्न करता है।

परिषहों की परीक्षा में पास होने वालों ने, अनेक प्रसंगों पर चवेना या भुने हुए चने खा कर पानी पी लिया है। सूखे आटे को पानी में घोल कर पी जाने और फिर स्वाध्याय ध्यान में रत होजाने वाले साधुओं को मैंने अपने नेत्रों से देखा है। ऐसे कष्ट तो इस विहार में नहीं हो सकते। सुविधात्मक विहार स्थलों की व्यवस्था हो जायगी और सेवाभावी स्वयंसेवक मुनिराज भी चातुर्मास उठने के बाद सामने आकर सत्कार करेंगे तथा साथ२ विहार करके सुविधा पहुंचायेंगे।

हिम्मत के हथियार सजिये। महा सम्मेलन में सम्मिलित होने का दृढ़ निश्चय कर के केसरिया कीजिये और प्रतिनिधि मुनियों का चुनाव कर के मंगलारम्भ कीजिये। अपूर्व आनन्द प्राप्त करने के लिये अपूर्व परिश्रम भी कीजिये। यश लाखों के खर्चे प्राप्त होता है। मान प्राप्त कर के बैठे रहने वालों को मान करवाने वाले ऐवम् कीर्ति का मूल्य चुकाने के इस शुभ अवसर का स्वागत कीजिये। स्वराज्य के धर्मयुद्ध में मोर्चे पर रही है— गर्वी गुर्जर भूमि और श्री आलमगीर के लिये होनेवाले साधु सम्मेलन के मोर्चे पर रहेगी गुर्जर साधु-समिति। हृदयसे स्वागत है आपका!

अजमेर में एक मास तक आपकी सेवा में हाजिर रहने वालों की बतला पहल से तथा मुनिराजों के साथ ज्ञानगोष्ठी में रत रहने के कारण आपको कभी ज़रा भी यह नहीं जान पड़ने पायेगा कि आप परदेश में हैं। और कहां आपने अपने ही प्रांत के लिये मुनि जीवन रजिष्ट्री करा लिया है! जहां विशेष उपकार दिखाई दे वहां विचरने का तो आपका निश्चय ही है। यदि श्री धर्मदासजी महाराज के शिष्य न विचरे होते तो क्या कभी इतना विस्तार हो सकता था?

श्री साधु सम्मेलन के संचालक शतावधानीजी शरीर से स्वस्थ न होते हुए एवम् राजकोट के पक्षाघात द्वारा पराधीन बनाये हुवे होने पर भी अजमेर के लिये मोर्चे पर खड़े होने का उत्साह बतला रहे हैं। हम आशा करते हैं कि पूज्य श्री उत्तमचन्दजी महाराज पूज्य श्री छग-नलालजी महाराज मुनि श्री माणेकचन्द्रजी महाराज मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० मुनि श्री ईश्वर लालजी म० मुनि श्री मणिलालजी म० मुनि श्री कानजी स्वामी मुनि श्री शामजी स्वामी पंडित श्री हर्षचन्द्रजी म०, कवि श्री नानचन्द्रजी म० योगी श्री त्रिलोकचन्द्रजी म० पंडित श्री देवचन्द्रजी म० पंडित श्री नागचन्द्रजी म० श्री रत्नजी मुनि श्री श्री छोटालालजी मुनि श्री. मूलचन्द्रजी मु० श्री जीवराजजी मुनि श्री माणलालजी मुनि श्री माधवचन्द्रजी मुनि श्री बालाजी श्री शिवलालजी मुनि आदि महाराज एक बना कर गुर्जर साधु-समिति को आलोकित करेंगे।

चाहिये आन्तरिक उल्लास, अन्तर की इच्छा, आत्मजागृति Where there is will there is a way देवता लोग जयदुन्द भी बजा रहे हैं, शासनरक्षक देवगण जयध्वनि कर रहे हैं। साधुमार्गी-श्रीसंघ, आपका हृदय से सत्कार करने के लिये एक वीर के वक्ष तय्यार खड़ा है। आप कमर बांधिये और मैं बधाई देने के लिये पहुंचता हूँ—अजमेर।

दर्शनातुर—
दुर्लभ

* * * * * * *

इस लेख के प्रकाशित होने के बाद ही, मारवाड़ श्रावक-समिति की ब्यावर में होने वाली बैठक की निम्नानुसार रिपोर्ट जैन प्रकाश में प्रकाशित हुई।

ता० १७-६-३२ को श्री मारवाड़ श्रावक-समिति की बैठक जैन-स्थानक ब्यावर में हुई। डॉ० मिश्रीलालजी अजमेर वालों ने सभापति-पद ग्रहण किया। श्रीमान् दुर्लभजीभाई जौहरी का प्रासंगिक एवं सारगर्भित-भाषण हुआ। तत्पश्चात् पाली-सम्मेलन के प्रस्ताव सुनाये गये और उन पर चर्चा की गई।

ता० १८-६-३२ को समिति की दूसरी बैठक हुई। श्री फूलचन्दजी सा० कोठारी भोपाल वालों ने सभापति का आसन ग्रहण किया और निम्नलिखित प्रस्ताव सर्वानुमति से पास हुए—

(१) कमेटी का चुनाव—

मरुधर-श्रावक-समिति का चुनाव निम्न प्रकार से किया जाय। जिस सम्प्रदाय के जितने साधु प्रतिनिधि हों, उनसे चौगुने मेम्बर गिने जायँ। पाली-सम्मेलन के समय हरएक सम्प्रदाय के २—२ मेम्बर चुने गये हैं, उन्हीं मेम्बरों को अपनी सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक तथा मन्त्री की सलाह से बढ़ाकर निम्नप्रकार से चुन लें—

पू० अमरसिंहजी म० सा० की सम्प्रदाय के ८ श्रावक प्रतिनिधि
पू० जयमलजी म० सा० की सम्प्रदाय के १६ श्रावक प्रतिनिधि.
पू० स्वामिदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के ६ श्रावक प्रतिनिधि.
पू० नानकरामजी म० सा० की सम्प्रदाय के ४ श्रावक प्रतिनिधि.
पू० रघुनाथजी म० सा० की सम्प्रदाय के ८ श्रावक प्रतिनिधि
पू० चौथमलजी म० सा० की सम्प्रदाय के ४ श्रावक प्रतिनिधि.
पू० शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के ४ श्रावक प्रतिनिधि.

(२ पू० शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के मुनियों को इस सगठन में मिलाकर उनके प्रवर्त्तक-मन्त्री तथा श्रावक-समिति के सभ्य चुनने का कार्य शीघ्र करने को यह सभा इस समिति के मन्त्रीजी से साग्रह विनती करती है।

(३) पाली-सम्मेलन के प्रस्तावानुसार सभी सम्प्रदायों के प्रवर्त्तक व मन्त्री मुनिवरों से, पत्र-व्यवहार द्वारा या किसी को भेजकर निम्नलिखित कार्य करवाये जावें।

(क) आर्याओं के लिये नियमोपनियम बनवा लें।
(ख) जो साधु-साध्वीजी नहीं मिलें हैं, उन्हें मिलालें।

जी-सम्प्रदाय के शिरोमणि पण्डित श्री हर्षचन्द्रजी हैं। इन दोनों के नामों एक-से शरीर, एक ही प्रकार की मुख मुद्रायें और जैसे एक ही मूर्ति के दो स्वरूप हों। बड़े-से-बड़ा कारण होते हुए भी आगे बढ़ने के साहस, यह भाव दिखाने का कार्य, दरियापुरी सम्प्रदाय के श्रावकों का है।

अजमेर में सभी सम्प्रदायों के सत्कार-सम्मान की रक्षा होगी। सम्मेलन स्थान प्राप्त करने वाले ममता के सागर विनय विवेक से उभरायेंगे जिन्होंने मान माया को बोसरा दिया है उन्हें इस वमन किये हुये विष को फिर से ग्रहण करने की इच्छा ही क्यों करनी चाहिये ! विनय और विवेक में लेने वाले की अपेक्षा देने वाले की शोभा बढ़ते हैं अवसर प्राप्त होने पर, इस आभ्यन्तर तप की साधना किये बिना त्यागी लोग कैसे रह सकते हैं ! दिखाई देने वाले द्रव्य-सत्कार की अपेक्षा हृदय शुद्धि और संयम-शुद्धि के आन्तरिक भावों से भीगे होने पर, भाव सत्कार, आपको अत्यधिक आनन्ददायक होगा।

क्या करें ! उड़कर पहुंचने की लब्धि प्राप्त नहीं है और हमारे आत्म में क्षेत्र के लिये काल-स्वरूप आज्ञा नहीं देता। इसलिये विवश होकर आपसे पत्रियों के दिग्दर्शन के लिये प्रार्थना करनी पड़ती है। आपके आचार को सहज भी शिथिल न होने देने की पूर्व-जागृति के साथ ही हमारी प्रार्थना है यदि कहीं शिथिलता की ज़रा भी दरार नज़र आवेगी तो उसे बन्द कर देने की भलीभांति व्यवस्था की जायगी। आपके लिये विशेष सुविधा की व्यवस्था की जाय, ऐसा शिथिलाचार आपके आदर्श क्रियाकाण्ड के लिये बिल्कुल अनुपयुक्त होगा, अतः आप अपनी शक्ति से ही तरो यह दृश्य हमें अधिक सन्तोष देगा।

सूत्रों की बत्तीसी को मान्य समझने वाली आज की हम दोनों की बत्तीस-सम्प्रदायों में के सर्वश्रेष्ठ-साधुओं का एक ही स्थान पर मिलना यह किसी महान् पुण्य का फल समझिये। सैकड़ों वर्षों की तपस्या के बाद भी जो न मिले यही नहीं जीवन भर में जिसका स्वप्न भी नहीं आ सकता ऐसे अपूर्व-अवसर पर आलस्य करके या शीत के मारे कर न करके जो इस अलभ्य-प्रसंग को खो देगा, वह जीवन की सार्थकता का अमूल्य लाभ प्राप्त करने में अभागा बनेगा। ज्ञान-चर्चा शंका समाधान संघ के लिये भविष्य की श्रेयकारी योजनाओं योगियों तपस्वियों और मौनव्रत धारियों आदि अनेक अमूल्य प्रसंगों एवं अमूल्य-अवसरों के सत्समागम का सुयोग फिर कब प्राप्त हो सकता है !

स्वदेश के लिये सभी ऋद्धि सिद्धियों का बलिदान करके जेल-यातना सहन करने वाले बन्धुओं के दृष्टान्त हम लोगों की आँखों के सामने मौजूद हैं। स्वधर्म श्रेय तथा आत्मोन्नति के लिये बाईस परीषह सहन करने की प्रतिज्ञा करके आगे बढ़े हुए अणगारों एवं आत्मार्थियों ! थोड़े से परीषहों का सामना करके मनोनिग्रह का परिचय देने के इस सुन्दर-सुयोग का स्वागत कर लीजिये। प्रतिज्ञा पालन के लिये कोल्हू में डालकर पेले गये जीवित ही चमड़ी उधड़वा दी नदी के किनारे पाँच-सौ शिष्यों सहित संथारा किया किया, शिष्य के संथारे में गुरु सोये किन्तु प्राण प्रसंगों में प्रतिज्ञा की रक्षा की। प्राणों की अपेक्षा प्रतिज्ञा को अधिक-प्रिय समझा। 'प्राण जाय पर प्रण नहिं जाई' इसे सिद्ध कर दिखलाया। महा-सम्मेलन में सम्मिलित होने में तो ऐसे परिषहों का अंश भी बाधक नहीं हो सकता।

भिन्न २ अनुभवों और सम्मतियों से परिचित हो कर, साधु-सम्मेलन-समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई जौहरी ने, मुनिराजों की सम्मति जांचने के लिये, २० बीस प्रश्नों की एक प्रश्नावली तय्यार करके छपवाई और जहां २ आचार्यगण या प्रधान मुनिराज विराजमान थे, वहां के श्रीसंघों को' उन प्रश्नों के उत्तर मुनि श्री से पूछ कर लिख भेजने को भेज दी। इस प्रश्नावली फार्म के साथ जो छपा हुआ पत्र भेजा गया था, कि— मुनिवरों के व्यक्तिगत विचार जानने के लिये ही यह प्रयास है। इस के उत्तर हम लोगों की जानकारी के वास्ते ही है। इन्हें प्रकट नहीं किया जायगा, इसका विश्वास रक्खें। ' इसके अनुसार सम्मेलन होने तक ये उत्तर प्रकाशित नहीं किये गये। हां, सम्मेलन के अवसर पर, प्रतिनिधि मुनिराजों के अवलोकनार्थ भीतर अवश्य भेज दिये गये थे। अब जब सम्मेलन समाप्त हो चुका है और सारा इतिहास प्रकाशित किया जा रहा है, तब ख़ास खास प्रश्नों के उत्तर भी यहां उद्धृत किये जाते हैं, ताकि समाज को तात्कालीन वातावरण एवं सत्य स्थिति का ज्ञान रहे। अस्तु।

प्रश्न नं० १

"साधु सम्मेलन किस तरह सफल होवे ?"

उत्तरावली—

पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की संप्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्यश्री सोहनलालजी म० पंजाबी —

'इस अवसर की अमूल्यता को अनुभव कर, इससे शासन और चतुर्विध संघ के होने वाले कल्याण और सम्भवनीय उन्नति तथा उद्धार से प्रेरित हो कर दत्तचित्त इस कार्य को सफल बनाने के ही केवल अभिप्राय से शामिल होने और वैसा वहां समय पर आचरण करने से।'

* * * * *

पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म०—

'सब सम्प्रदायों की एक प्रवृत्ति और एक आचार्य होने पर'।

* * * * ० ०

पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री सुखलालजी महाराज—

"प्रत्येक सम्प्रदाय वाले मुनि, अपनी २ मान प्रतिष्ठा को छोड़ कर तथा उन्नति के इच्छुक बन कर, वात्सल्य भावना को सन्मुख रख कर कार्य करें तो आशा है शीघ्र सफल हो सकता है'।

× × × × × ×

(ग) मिले हुए साधु-साध्वियों की सम्प्रदायवार डिरेक्टरी तय्यार करना।
(घ) मरुधर साधु समिति के प्रमुख और महामन्त्री का चुनाव करें।
(ङ) बृहत्सम्मेलन में पधारने वाले प्रतिनिधियों का सम्प्रदायवार चुनाव करें।

(४) जो मुनिराज पाली सम्मेलन में सगठित हुए थे, उन में से जो अकेले विचरने लग गये हों या अन्य प्रस्तावों का पालन न करते हों, उनके प्रवर्तक या मन्त्रीजी से खुलासा मांगा जाय और सुधार के लिये उचित प्रबन्ध किया जाय।

(५) इस समिति का कार्यालय जोधपुर में रक्खा जाय और मन्त्रि के पद पर श्री मिश्र चमनजी कुंभट तथा श्री मोतीलालजी रातड़िया को नियुक्त करके उनसे बाक़ायदा कार्य शुरू करने का आग्रह किया जावे। यदि वे स्वीकार न करें, तो कार्यालय बदलने या अन्य चुनाव करने की सत्ता श्री दुर्लभजीभाई जौहरी को दी जाती है।

(६) कार्यालय के प्रारम्भिक व्यय के लिये मासिक रु० २२) बाईस तक खर्च करने की स्वीकृति दी जाती है।

(७) खर्च के लिये, मरुधर साधु-समिति के मुख्य मुख्य क्षेत्रों के श्री संघों से चन्दा एकत्रित किया जाय।

(८) निम्न श्री संघों की ओर से इस तरह रुपये चन्दे में लिखाये गये, जो साभार स्वीकार किये गये।

ब्यावर श्रीसंघ	अजमेर श्रीसंघ	पाली श्रीसंघ	बगड़ी श्रीसंघ
२५)	२५)	२५)	२५)

(९) अजमेर में होने वाले बृहत्सम्मेलन से, यह समिति, निम्न प्रकार का प्रस्ताव लाने के लिये साग्रह विनती करती है—

'साधुमार्गी जैन दीक्षा लेने वाले साधु-साध्वी से सरकारी कागज़ पर बाज़ाब्ता (इक़रार नामा) लिखवाया जाय। यदि वह साधुमार्गी सम्प्रदाय को बाधक और बृहत्सम्मेलन के नियम विरुद्ध महाव्रतों को तोड़ने के (नई दीक्षा आवे ऐसे) कार्य यानी अपराध करे तो प्रत्येक साधु मार्गी श्रीसंघ को अधिकार होगा कि वे साधु-मार्गी सम्प्रदाय का वेश (मुंहपत्ति रजोहरण आदि) उतरा कर साधु पन से पृथक कर सकें।

(१०) प्रमुख सा० तथा पधारे हुए गृहस्थों को सफलता पूर्वक कार्यवाही पूर्ण करने के लिये धन्यवाद दिया जाता है।

द० फूलचन्द कोठारी प्रमुख

इसके पश्चात् भिन्न २ पत्र पत्रिकाओं में और खासकर जैनप्रकाश में साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में बहुत से लेख प्रकाशित हुए। इन लेखों में से कुछ लेख पठनीय एवम् मननीय भी हैं। किंतु इस विवरण का कलेवर आशातीत बढ़ जाने के भय से हम उन सब को या उन में से कुछ को यहां उद्धृत नहीं कर सकते। अधिकांश पाठकों ने उनमें से बहुत से लेख देखे ही होंगे, ऐसी हमारी मान्यता है। अस्तु।

बनाने से'

o o o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

"यदि सभी सम्प्रदायें राग-द्वेष छोड कर एक हो जायँ और शुद्ध अन्तःकरण-पूर्वक कार्य करें और श्रावक भी निष्पक्षपात से कार्य करें, तो सम्मेलन सफल होने की सम्भावना है।"

o o o o

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज—

साधु-सम्मेलन करने से महालाभ है। यदि सभी साधु एक ही आमना वाले बन जायँ और सबकी सम्मति मिलाकर कार्य करें, तो धर्म की महा प्रभावना कर सकते हैं।"

o o o o

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज—

"जिन-जिन सम्प्रदायों में अन्तर-कलह हो, उसकी शीघ्र शान्ति होने की आवश्यकता है।"

o o o o

पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

"अपने अपने साम्प्रदायिक व व्यक्तित्व की मनोमालिन्यता मिटाकर मुनिराज पधारें तो।"

o o o o

पूज्य श्री नानगरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

"मारवाड़ी, गुजराती आदि प्रत्येक प्रान्त के संगठन मज़बूत करके, आपस के मतभेद को हटा कर फिर वृहत् सम्मेलन में प्रवेश करावें। कदाचित् प्रान्तिक या साम्प्रदायिक-झगड़े आपस में नहीं तय हुए हों तो मुख्य-मुख्य मुनियों का डेपुटेशन बनकर, बैठक की टेम के सिवाय उभय पक्ष को कोशिश करके फिर बैठक में लावें। जिससे विशेष हल्ला नहीं होवे। एक एक सम्प्रदाय के रगड़े बैठक में नहीं रक्खे जावें। बैठक में सिर्फ संगठन का मजबूत बनाने का ही काम रहेगा। बैठक में प्रतिनिधि-मुनियों के सिवाय और नहीं जाना चाहिये। प्रतिनिधियों से भी यह प्रतिज्ञा कराई जावे कि जहाँ तक कार्य पूर्ण न हो, वहां तक कमेटी की कार्यवाही जाहिर न करें।

* * * * * *

पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

'प्रायः ६ सम्प्रदाय के साधु तो एकता के सूत्र में कटिबद्ध हो ही गये। अब मुन्नालालजी और जवाहिरलालजी एकता कर लें, तो सफलता में कोई बाधा नहीं।'

× × × × × ×

पूज्य श्री जयमलजी महाराज की संप्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'अपने अपने सम्प्रदाय और व्यक्तित्व की मनोमालिन्यता मिटा कर सर्व मुनिराज पधारें तो।'

o o o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

'सर्व सम्प्रदाय के मुनिगण, अपनी २ सम्प्रदाय की खेंचातानी मेरा तेरा छोड़ निष्पक्ष भाव से और इस प्रेरणा से आवें, कि हम जैन समाज की उन्नति करने आ रहे हैं, और ऐसा करने ही से अपनी तथा दूसरे की भलाई है। यदि इसी भाव से प्रेरित होकर एकत्रित होंगे, तो अवश्य सफलता होगी।'

× × × × × ×

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

'प्रेम व एकता की बुद्धि से व हृदय पलटने से'।

* * * * * *

इसी सम्प्रदाय के प्र० वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'सर्व मुनियों में परस्पर वात्सल्य भाव का प्रसार हो कर श्रद्धा प्ररूपणा, फरसना एक सरीखी होने पर, सर्व प्रकार से सब संगठन के कार्य सफल हो सकते हैं'।

• • ० ० ० ०

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री सूरजमलजी महाराज—

सर्व मुनियों की श्रद्धा प्ररूपणा, फरसना एक होने पर, सर्व प्रकार के सर्व कार्य सफलीभूत हो सकते हैं'।

० ० ० ० ० ०

पूज्य श्री कानजीऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनिश्री आनन्दऋषिजी महाराज—

'सम्प्रदायों में जो ग्रन्थियां हैं उनको छुड़ाने का प्रयत्न करना और यह ग्रन्थियां तभी छूट सकती हैं कि हरएक सम्प्रदाय के मुख्य श्रावक स्वच्छ अन्तःकरण से इस विषय में प्रयत्न करें'।

० ० ० ० ० ०

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज की सेभाय में विचरने वाले मु श्री सुखीलालजी म० ठेतम्य—

'अहंकार— मैं बड़ा, ममकार— मेरी सम्प्रदाय ये दो दोष छूटने पर साधु-सम्मेलन सफल हो सकता है'।

० • • ० ०

पूज्यश्री रत्नचन्द्रजी महाराज की संप्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्यश्री हस्तीमलजी महाराज—

'समाज के मुनियों व श्रावकों के हृदय में जो मैं बड़ा और मेरी सम्प्रदाय बड़ी' ऐसी भावना मौजूद है उसको दूर कर इस स्थान में 'हम सब महावीर के पुत्र हैं और सभी हमारे बान्धव हैं' ऐसे सद्भाव हों तो ही सम्मेलन सफल होगा।

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज कोटा सम्प्रदाय के मुनि श्री रामकुमारजी महाराज—

'सम्पूर्ण संप्रदाय सम्मेलन के पहिले ही संगठन करने से या प्रान्तिक सम्मेलन पूरा

लींबड़ी छोटी सम्प्रदाय के पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज—

"संगठन-बल थी।"

o o o o

लींबडी बडी-सम्प्रदाय के कविवर मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज—

"सम्प्रदाय ना जवाबदार अग्रसरों जे ओ समाज ना हितचिन्तको अने सम्मेलन माटे भोग आपवा नी धगसवाला होय, ने जेओ समाज नी नाड परखी होय, तेमज उदार प्रकृतिवाला अने आधुनिक-विचारशील होय, तेवा मुनिवरोनुं ज सम्मेलन न थाय : भले संख्या ओछी थाय। परन्तु तेवी योग्यता ने ज सुस्थान अपाय वली नाना-मोटा ना भेद सिवाय दरेक ने स्वतन्त्र-विचारों नी आपवा नी समान छूट अपाय, ते मां बहुमते जे ठरावो नी चुँटणी थाय, तेवो स्वीकार करवो-अने श्रावक समिति नो ते मां पूर्ण-सहकार होय, तो सम्मेलन नी सफलता तुरत थाय."

o o o o

दरियापुरी सम्प्रदाय के मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

"एक बीजा ना भातृभाव करी पक्षापक्षी न करे तो अने एक बीजा ना आचार नी सरसाई न करे, तो जल्दी सफल थाय."

o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

साधुवर्ग नी सारी संख्या मां हाजरी थाय ने जे आशय छे, तेने अमल मां मूकवामां आवे तो सफल छे"।

o o o o

कच्छ के बड़े पक्ष के पं० नागचन्द्र जी महाराज—

"मुनिराजो ना पारस्परिक उदार-भाव होय अने श्रावकों नी खेंचाताणी मूकाई जाय तो"

o o o o

गोंडल सम्प्रदाय के मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

"साधु सम्मेलन-समिति अने श्रावक-समिति बन्ने पक्षापक्षी नहीं करता खरा जीगर थी एकमते संपी ने कार्य करे, तो सफल थाय"

o o o o

बोटाद सम्प्रदाय के मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—

"साधु-सम्मेलन-समिति अने श्रावक-समिति बन्ने एकत्र थई एकमते कार्य करे, तो सफल थाय. पण जो श्रावक पक्षापक्षी करे तो मुश्किल छे."

o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री माणेकचन्द्रजी स्वामी—

"साधु-सम्मेलन समिति अने श्रावकसमिति बन्ने एकत्र थई, पक्षापक्षी न करतां एकमते कार्य करे, तो सफल थाय"

o o o o

खम्भात-सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनरामजी स्वामी—

"श्रावक की एकता होने से"।

o o o o

पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज (मारवाड़ी) की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज—

'सबकी एकमतता होने से व पक्षपात रागद्वेष निंदा मिटने से ।

o o o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'आपस में सब मुनि प्रेम पूर्वक सबकी सम्मति से कार्य करने से । यह साधु सम्मेलन के पहिले सब सम्प्रदायों के मुनियों की एक मिलन सभा की जावे, उस में सब सम्प्रदायों के मुनियों की आपस में जान पहिचान हो जाने से प्रेम पूर्वक कार्य से सफलता होगी ।

o o o o o o

पूज्य श्री मोतीचन्दजी तेजसिंहजी म० की सम्प्रदाय के मुनि श्री शीतमलजी हजारीलालजी—

'जैन शास्त्रानुसार और न्यायमार्ग के साथ आगे ऐसे झगड़े पैदा नहीं आवें ।

o o o o o o

पूज्य श्री रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री मदनदासजी महाराज—

निष्पक्ष होकर जैन शास्त्रानुसार न्यायमार्ग पर सब का एकमता से चलना हो तो सफलता होवे ।'

o o o o o

पूज्य श्री मनोहरदासजी महाराज की सम्प्रदाय के पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

भ्रातृभाव रखने और संगठन होने से । हार्दिक वैमनस्य हटा देने से । शासन नियन्त्रण मजबूत होने से ।

o o o o o

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री जोधराजजी महाराज—

'सब सम्प्रदायों के मुनि एकत्रित होकर पक्षपात छोड़ने से ।'

o o o o

पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनिश्री कजोड़ीमलजी महाराज—

'राग द्वेष मिटाकर एकमता के भाव से संगठित होवें तो सफल हो सकता है' ।

o o o o o

पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री रतनचन्दजी महाराज—

शास्त्रानुसार तथा शास्त्रानुकूल सर्व बातें सम्मेलन में पधारने वाले और सम्मति भेजने वाले पूज्य मुनिवर मंजूर कर लेवें तो यह सम्मेलन सफल होने की आशा है ।

o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री सिरेमलजी महाराज—

शास्त्रानुसार तथा शास्त्रानुकूल सर्व बातें सम्मेलन में पधारने वाले और सम्मति भेजने वाले पूज्य मुनिवर मंजूर कर लेवें तो सम्मेलन सफल होने की आशा है ।

o o o o o

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

साधुओं की कौन्सिल बनावी बधु कार्य तेमना मार्फत थाय ।

o o o o o o

विचार परिवर्तन के अवसरों का अधिक संख्या में प्राप्त होना। दूसरे प्रान्तों में, दूसरी-सम्प्रदायों के साधुओं का अधिक आना-जाना और उस सम्बन्ध में चातुर्मास करने की प्रेरणाओं का होना।"

० ० ० ०

पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज—

"इस विषय की योजना बना रक्खी है, जो मोका होने पर साधु सम्मेलन में पेश की जावेगी।"

० ० ० ०

पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री सुखलालजी महाराज—

"सब प्रतिनिधियों की एक सम्मति द्वारा सम्मेलन सफल होने में कोई कठिनाई न होगी और शीघ्र सफलीभूत होना सम्भव है"।

० ० ० ०

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

"हर एक सम्प्रदाय में से प्रति दस साधुओं में से एक साधु का चुनाव प्रतिनिधि की तरह किया जाय और उन प्रतिनिधियों के द्वारा कार्य सुवाद-रूप में हो। यही संगठन होने का सरल मार्ग है"।

० ० ० ०

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

"परस्पर सम्मति मिल जाने से और कुछ सम्भोग चालू करने से"।

० ० ० ०

इसी सम्प्रदाय के वक्तामुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"जब प्रथम-कलम के उत्तररूप का यथोचित बन्धारण हो जाय, तब फिर सौधर्मगच्छ सहज ही हो सकता है"।

० ० ० ०

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री खूबचन्दजी महाराज—

'कलम पहिली का उत्तर जो है, उसका यथावस्थित पालन होने पर सब कुछ हो सकता है। इसका विचार आगे पर हो। जब श्रद्धा-प्ररूपणा और फरसणा एक हो जायगी, तब सुधर्म गच्छ बनने में कुछ भी कठिनाई न होगी। सरल उपाय यही है।

० ० ० ०

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज—

'हां, हो सकता है। यदि सब सम्प्रदायों के आचार्य और मुख्य-मुनिवर अपने २ पक्ष का मताग्रह परित्याग कर एकत्र मिल जायँ तो हो सकता है। किन्तु, यह कार्य शीघ्रता से होना कठिन दीखता है।'

० ० ० ०

पूज्य श्री कानजीऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज—

'भिन्न २ सम्प्रदायों का संगठन और संतों में पारस्परिक प्रेमभाव करना चाहिये।'

० ० ० ०

सायला-सम्प्रदाय के मुनि श्री संघजी स्वामी—

"प्रथम शुद्धाचारी तथा शिथिलाचारी नो भेद मटी जाई ने मिश्राचारी नो सहकार बधे अने बन्ने एकज चक्र नी गति मां आवे तोज सम्मेलन सफल थवानो आशय छे"

• ० ० ०

"लींबडी बड़ी सम्प्रदाय के मुनि श्री लालजी स्वामी और शतावधानी पं० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज—

"बधा सम्प्रदाय ना मुख्य मुख्य साधुओ एकत्र थई प्रेम थी वार्तालाप करे. मूल गुण मां बाधक न होय तेवा न्हाना न्हाना भेद भाव भूली जई एक साथे बेसी शास्त्र अने न्याय दृष्टि थी द्रव्य, क्षेत्र काल भावनी अनुसार निर्णय करवो सर्वमान्य थई शके तेवी समाचारी बनाववी अने तेने अमल मां मूके श्रावकगण पण एना पालन मां सहानुभूति पूर्वक सहयोग आपे

० • • ०

पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"अटल-परिश्रम व प्रेमपूर्वक-सहयोग से निश्चय ही सम्मेलन सफल बन सकता है। इस योजना के लिये विशाल और निःस्वार्थ सेवा भाव से आत्मभोग देकर प्रत्येक प्रान्त के स्वधर्मी-बन्धुओं का सहयोग लेकर, प्रबल आन्दोलन द्वारा समाज को सम्मेलन की आवश्यकता समझाकर समस्त साम्प्रदायिक-मुनियों को डेलीगेट रूप में व श्रावकवर्ग को सापक रूप में जितनी अधिक संख्या में अजमेर पहुँचाया जायगा उतना ही सम्मेलन को सफल बनाने में विशेष आवश्यक होगा। जहां तक हो, आन्दोलन लेखिक के अतिरिक्त मौखिक किया जाय, तो विशेष आवश्यक होगा।"

• • •

बरवाला सम्प्रदाय के मुनि श्री मोहनलालजी स्वामी—

"परस्पर प्रेम-भावना सहित वचन व्यवहार जालने और मीठीभाव रखने से"

० ० • ०

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

शास्त्रानुसार तथा शास्त्रानुकूल सर्व बातें सम्मेलन में पधारने वाले और सम्मति भेजने वाले पूज्य मुनिवर मंजूर कर लें, तो सम्मेलन सफल होने की आशा है"।

• • • •

पांचवां प्रश्न

'भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों का एक संगठन कैसे करना चाहिये ?'

उत्तरावलि

पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज (पंजाबी)—

एक संवत्सरी, एक समाचारी परस्पर सुख साता पृच्छा परस्पर मिलन वार्तालाप

विचार परिवर्तन के अवसरों का अधिक संख्या में प्राप्त होना। दूसरे प्रान्तों में, दूसरी-सम्प्रदायों के साधुओं का अधिक आना-जाना और उस सम्बन्ध में चातुर्मास करने की प्रेरणाओं का होना।"

o o o o

पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज—

"इस विषय की योजना बना रक्खी है, जो मौका होने पर साधु सम्मेलन में पेश की जावेगी।"

o o o o

पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री सुखलालजी महाराज—

"सब प्रतिनिधियों की एक सम्मति द्वारा सम्मेलन सफल होने में कोई कठिनाई न होगी और शीघ्र सफलीभूत होना सम्भव है"।

o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

"हर एक सम्प्रदाय में से प्रति दस साधुओं में से एक साधु का चुनाव प्रतिनिधि की तरह किया जाय और उन प्रतिनिधियों के द्वारा कार्य सुचारु-रूप में हो। यही संगठन होने का सरल मार्ग है"।

o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

"परस्पर सम्मति मिल जाने से और कुछ सम्भोग चालू करने से"।

o o o o

इसी सम्प्रदाय के वक्तामुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"जब प्रथम-कलम के उत्तरका का यथोचित बन्दोबस्त हो जाय, तब फिर सौधर्मगच्छ सहज ही हो सकता है"।

o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री खूबचन्दजी महाराज—

'कलम पहिली का उत्तर जो है, उसका यथावस्थित पालन होने पर सब कुछ हो सकता है। इसका विचार आगे पर हो। जब श्रद्धा-प्ररूपणा और फरसणा एक हो जायगी, तब सुधर्म गच्छ बनने में कुछ भी कठिनाई न होगी। सरल उपाय यही है।

o o o o

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज—

'हां, हो सकता है। यदि सब सम्प्रदायों के आचार्य और मुख्य-मुनिवर अपने २ पक्ष का मताग्रह परित्याग कर एकत्र मिल जायँ तो हो सकता है। किन्तु, यह कार्य शीघ्रता से होना कठिन दीखता है।'

o o o o

पूज्य श्री कानजीऋषिजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज—

'भिन्न २ सम्प्रदायों का संगठन और संतों में पारस्परिक प्रेमभाव करना चाहिये।'

o o o o

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज की सम्प्रदायान्तर्गत मुनि श्री सुखीलालजी महाराज—

'शरीर के सब रोगों का मूल पेट का विकार है। इसी प्रकार से साधु-समाज के विकारों का मूल व्यावहारिकज्ञान का अभाव है, इस देश-काल में क्या करना आवश्यक है, इसका बोध हो, तो हमारा अहंकार ममकार छूटकर संगठन हो सकता है।'

पूज्य श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज—

'सम्प्रदाय के एक संगठन के लिये अनेक बातों की जरूरत है जिनमें मुख्य ये हैं-समाचारी की एकता, प्ररूपणा में अभिन्नता, अन्य सम्प्रदाय के शिष्यों को नहीं अपनाना, परस्पर प्रेम रखना यथोचित मान देना आदि।'

पूज्य श्री दौलतरामजी महाराज कोटा सम्प्रदाय के मुनि श्री रामकुंवरजी महाराज—

'सभी सम्प्रदायें सम्मेलन में पधारकर कषायरहित होकर पक्ष को छोड़ें।

इसी सम्प्रदायों के मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

'सभी सम्प्रदायों का संगठन होना चाहिये और छोटी २ सम्प्रदाय वाले निकटवर्ती सम्प्रदाय में मिल जांय या सभी मिलकर अपना एक आचार्य पूज्य स्थापन करें।'

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज—

"सर्व समाचारी तय्यार करके"

पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

"साम्प्रदायिक भेद भाव मिटा करके"।

पूज्य श्री नानकरामजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

"प्रथम पूर्ण सम्बन्ध साम्प्रदायिक संगठन, फिर प्रान्तिक संगठन होने से पूर्ण संगठन हो सकता है"।

पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

"सम्प्रदाय के मुखियों को एक सूत्र में बांधना चाहिये।'

पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"साम्प्रदायिक-भेदभाव को मिटा करके"।

पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज मारवाड़ी की सम्प्रदाय के मुनि श्री दयालचन्द्र—

"आपस में जो सम्भोग बंद हैं वे आपस में खुले हो जावें

सी सम्प्रदाय के मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

"इसका विचार साधु-सम्मेलन में किया जायगा"।

o o o •

पूज्य श्री मोतीचन्दजी तेजसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री जीतमलजी हजारीमलजी महा०—

बाईसो सम्प्रदायों में सब पर्व एक दिन होने चाहिए। जैसे कि संवत्सरी, पक्खी, चौमासी, आवश्यक आदि। एक ही तरीके मे अलबत्ता सर्व पूज्यों में एक महापूज्य कायम किया जावे तो जल्द ही होने की उम्मेद है।"

o o o •

पूज्य श्री रामरतनजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री अचलदासजी महाराज—

'पक्खी, सवत्सरी, चौमासी आदि विभिन्न क्रियाओं के एक होने से संगठन हो सकता है'।

o o o o

'पूज्य श्री मनोहरदासजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान आचार्य पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

"एक प्रधान आचार्य मुकर्रर किया जाय, जो कि तीन २ वर्ष के वास्ते, सभी सम्प्रदायों के मुनिवरों की सम्मति से नियुक्त किया गया हो और समाचारी सब की एक हो"।

o o o •

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री जोधराजजी महाराज—

'हरएक सम्प्रदाय के मुनि व आचार्य इकट्ठे होने से'।

o o o •

पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री कजोडीमलजी महाराज—

'समाचारी व सम्भोग; जहांतक हो सके एक ही होना चाहिये। आपस का रागद्वेष मिटाकर सब कार्य एकसा होना चाहिये'।

o o o •

पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज—

'भूतकाल सम्बन्धी दोषों की आलोचनादि के द्वारा शुद्धि कराकर, भविष्य के लिये शास्त्रानुसार मुख्य २ बातों की एक प्रधान समाचारी बनवाकर उसका पालन करना सबको मंजूर कराकर ही एक संगठन कराना चाहिये'।

o o o o

इसी सम्प्रदाय के मुनि श्री सिरेमलजी महाराज—

'भूतकाल सम्बन्धी दोषों की, आलोचनादि के द्वारा शुद्धि कराकर, भविष्य के लिये शास्त्रानुसार मुख्य २ बातों की एक प्रधान समाचारी बनवाकर उसका पालन करना सबको मंजूर कराकर ही एक संगठन कराना चाहिये'।

o o o o

पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

साधु-समाचारी, पक्खी, सवत्सरी एक थवा थी संगठन थई शकशे'।

o o o o

लींबडी सम्प्रदाय के पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—

'क्यारे हवे पहला जुदा ? सम्प्रदायो मा परस्पर संभोग खोलवायी अने एक देशना मुनि बीजा देश मां विचरवायी अने श्रावकों मा साम्प्रदायिक मतभेदो दूर करवायी एक संगठन थई शके'।

लींबडी बड़ी सम्प्रदाय के मुनि श्री कविवर नानचन्द्रजी महाराज—

'जुदा,जुदा सम्प्रदायों नु संगठन हृदय ना प्रेम थी तथा परस्पर नो विश्वास सह कार अने साहाय्य थी थई शके'

o o • o

दरियापुरी सम्प्रदाय के मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

'मे बेना सम्प्रदायो घोड़ाक वर्षों थी जुदा पड़ेला होय अने आचारमां कड़काई मे लईने जुदा पड़ेला होय तो ते मांयसो एक-बीजा साथे दीर्घ-दृष्टि थी—शुद्ध हृदय थी भेगा मलीशके तो ठीक'

• • o

ईसी सम्प्रदाय के मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

"भिन्न भिन्न सम्प्रदायो, पोत-पोताना मण्डल मां मग्न रहे, पण बीजा सम्प्रदाय साथे विवेक, मिठाश ने सत्कार साथे वर्ते ये इष्ट छे आ पण निराभिमान ने साचा दिल थी करे आ प्रमाणे संगठन इष्ट छे"

o o o o

कच्छ बड़े-पक्ष के पं० नागचन्द्रजी महाराज—

"विचारो नी भिन्नता दूर करी ने श्रावको नो दुराग्रह छोड़ावी ने तिथिपत्रक-साधु समाचारी वगैरे सर्वमान्य बनावी ने उपाधि वगैरे नी निश्चित मर्यादा करीने, प्रतिक्रमण मारे एकता करवा नो विचार करीने एक प्रकार नी प्ररूपणा विचारी ने, सचित्तासचित्त अने कल्पती अकल्पती चीजों नो निर्णय वगैरे बाबतो सम्मेलन मां विचारी ने सर्वमान्य बनावबी जोइए."

• ७ •

गोंडल सम्प्रदाय के मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

'दरेक सम्प्रदायो, वीतराग ना वचनो अंगीकार करी प्रभु ना बांधेला धारा प्रमाणे वरते तो एकज थाय छतां आत्मभाव तो दरेक सम्प्रदाय राखवा धारे तो राखी शके"।

o o o o

बोटाद सम्प्रदाय के मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी —

"भिन्न-भिन्न सम्प्रदायवाला, मिथ्या ईर्ष्या,अभिमान, वेरझेर छोटाई मूकी जिन आज्ञा ऊपर दृष्टि राखी विचरे तो एक संगठन थाय ते पण श्रद्धा प्ररूपणा फरसणा तेम संवत्सरी-पाखीनी टीप विगेरे नु एक संगठन थाय पण बधारे घणु मुश्केल छे"

o o o •

बोटाद-संप्रदाय के मुनि श्री माणेकचन्द्रजी स्वामी—

"पोत पोता नी मत छोड़ो वे ईर्ष्या मिथ्या तजी समभाव मां आवो सरधा, फरसणा, समसरी-पाखीनी टीप नु संगठन थई शके तो"।

कमाल संप्रदाय के मुनि श्री छगनरामजी स्वामी—

"घणु मुश्केल छे"

o •

सायला संप्रदाय के श्री संघजी स्वामी—

"जुदा-जुदा संप्रदाय ना संगठन माटे एक कायदो होय अने गाम ना नामे ओलखाता सम्प्रदाय मटी एक सनातन पुरुषो ना नाम थी सम्प्रदाय ओलखाय, तो परस्पर भेदभाव मटी एक संगठन मा आववानी आशा छे."

o o o o

लींबडी बड़ी स० के श्री सामजी स्वामी तथा शतावधानी प० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज—

"अखिल साधु-समुदाय नी वहेंचणी आ प्रमाणे होवीजोइए के अमुक मुनिराजो ए अमुक देश मां अमुकमुद्दत रहेवानो निर्णय करवो जोइए. जेथी क्षेत्र मोह अने वाडाबंधी छूटी जाय. विहार करी शके एवा मुनियो नी अण-अण वरसे फेरबदली थवी जोइए."

o o o o

पूज्य श्री जयमलजी महाराज की संप्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"सर्व सम्प्रदायों के मुनियों की श्रद्धा व प्ररूपणा व आचार एक होने से भिन्न-भिन्न सम्प्रदायों का संगठन हो सकता है। इसके सिवाय यह बँधारण भी होना आवश्यक है—

(क) हरेक सम्प्रदाय के आपस में कम से कम नौ संभोग अवश्य खुलने चाहिएँ।

(ख) किसी भी सम्प्रदाय के निकले हुए साधु को, अन्य सम्प्रदाय के मुनि, उसकी सम्प्रदाय के प्रवर्तक की व श्री संघ की आज्ञा के बिना अपने शामिल न करें।"

o o o o

बरवाला सम्प्रदाय के मुनि श्री मोहनलालजी स्वामी—

'समभावयुक्त किसी की हेलना निन्दना नहीं करने से"

o o o o

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

"भूतकाल सम्बन्धी दोषों की आलोचनादि के द्वारा शुद्धि कराकर, भविष्य के लिये शास्त्रानुसार मुख्य-मुख्य बातों की एक प्रधान समाचारी बनवाकर, उसका पालन करना सबको मंजूर कराकर ही एक सङ्गठन कराना चाहिये।"

o o o •

छठा-प्रश्न

"छोटे छोटे सम्प्रदाय, निकटवर्ती बड़े-सम्प्रदायों में मिल सकते हैं या नहीं ?"

उत्तरावलि

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज पंजाबी—

"यदि समाचारी की अनुकूलता हो, तो एकयता सुगम है। छोटी-बड़ी सम्प्रदायों की इच्छा जानना भी आवश्यक है।"

o o o o

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज—

मिलने और मिलाने वालों के विचारों पर निर्भर है।"

• o o •

मुनि श्री सुखलालजी महाराज—

"अवश्य मिल सकती है, परन्तु वात्सल्य भाव वास्तविकतया हृदय में हो तो"।

o o • •

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

"अवश्य मिल सकती है और मिलना ही चाहिए"।

o o o o

मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

"यह उनकी अनुकूलता पर निर्भर है। वैसे तो अपने को कोई छोटा नहीं समझता।"

o o o •

मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"मिल सकती हैं पर वात्सल्यभाव की पूरी-पूरी इसमें जरूरत रहती है"।

o o • o

मुनि श्री सूरजमलजी महाराज—

"मिलना चाहें शीघ्र से मिल सकते हैं। प्रेम वात्सल्यता की आवश्यकता है। एक मिलने में अनेक गुण हैं। हृदय पलटने की आवश्यकता है।"

o o • •

मनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज—

"साधु-संख्या की दृष्टि से, जो सम्प्रदाय छोटी गिनी जाती हो, वह अपनी सम्प्रदाय का नाम मिटाकर दूसरी सम्प्रदाय में मिल सके, यह सम्भव नहीं दीखता"।

o • • •

मुनि श्री चुन्नीलालजी महाराज—

"सब एक हो सकते हैं, रोग एक ही है"।

o o o o

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज—

"छोटी सम्प्रदाय, निकटवर्ती बडी-सम्प्रदाय से मिल सकती है। किन्तु, यह सम्मेलन तब होगा, जब बडी सम्प्रदाय अपने बड़प्पन का खयाल न रखते हुए आचार की समानता से मिलने वाली छोटी-सम्प्रदाय को भी यथोचित-सम्मान दें।"

मुनि श्री रामकुंवारजी महाराज—

'निकटवर्ती बडी सम्प्रदाय से एक समाचारी होने पर मिलना चाहिये'।

o o o o

मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

'जरूर मिल सकते हैं'।

o o o o

मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज—

'समान आचार और समान समाचारी वालों के साथ मिल सकते हैं'।

o o o o

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

हरएक वस्तु युक्ति से हरएक वस्तु में मिल सकती है। बड़ी छोटी में और छोटी बड़ी में'।

o o o o

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

'परस्पर के मतभेद दूर होने पर मिल सकते हैं'।

o o o o

मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

'सहर्ष मिल सकते हैं।

o o o o

मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'हरएक वस्तु युक्ति से हरएक वस्तु में मिल सकती है। बड़ी छोटी में और छोटी बड़ी में'।

o o o o

मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज—

'सम्प्रदाय मिल सकती हैं'।

o o o o

मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'इसमें कोई हरज नहीं दीखता है। फिर सबकी सम्मिति होगी वही होगा'।

o o o o

मुनि श्री जीतमलजी हजारीमलजी महाराज—

'हां मिल सकते हैं। बशर्ते कि समाचारी संभोग सम होने से व वीतराग के फरमाये हुए वचनों की पाबन्दी करने से'।

मुनि श्री अचलदासजी महाराज—

'मिल सकते हैं, मगर अनुकूल-बर्ताव करें तो। मिलना परम-आवश्यक भी है'।

• •

मुनि श्री मोतीरामजी महाराज—

'जिसकी इच्छा मिलने की हो, वे मिल सकते हैं'।

○ ○ • •

मुनि श्री ओघराजजी महाराज—

"जिसका शुद्ध-व्यवहार है, वे मिल सकते हैं"।

○ ○ • •

मुनि श्री कजोड़ीमलजी महाराज—

"मिल सकते हैं।"

• • • •

मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज (मारवाड़ी)

'मिलने वालों की और जिसमें मिलते हैं, उनकी समाचारी एक सरीखी होवे, तथा न होवे तो जिसकी समाचारी प्रधान हो उसके अनुसार दूसरे हिस्से वाले बना लेवे और दोनों की इच्छा भी परस्पर मिलने की होजावे, तो मिल सकते हैं।"

• ○ • •

मुनि श्री [illegible]मलजी महाराज—

"मिलने वालों की और जिसमें मिलते हैं, उनकी समाचारी एक सरीखी होवे, तथा न होवे तो जिसकी समाचारी प्रधान हो, उसके अनुसार दूसरे हिस्से वाले बना लेवें और दोनों की इच्छा भी परस्पर मिलने की हो जावे, तो मिल सकते हैं।।"

○ • • •

मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

"सम्प्रदाय नो मोह छोड़े तो मली शके।"

• • •

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—

"कच्छ काठियावाड़, गुजरात ना छः कोटी संप्रदायों तात्कालिक एकत्र थई जाय, तो प्रथम प्रशस्य छे अने बाकी रहेला बधीये संप्रदाय एकत्र थाय तो खास इच्छवा योग छे"।

• • •

मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज—

'प्रतिष्ठित सम्प्रदायो परस्पर साचा प्रेम थी आन्तरिक संगठन साधे अने नाना सम्प्रदायो ने आकर्षक रूप बने, तो मली जवा नो संभव घटे

• •

मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

'नाना सम्प्रदायो पोताना साधुओ होवा थी ते जो मोटा सम्प्रदाय मां मली शके, तो वधारे ठीक कहेवाय'।

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

'निकट ना सम्प्रदाय अन्दर भाग लइ शके छे एटले जेओ जेमां थी भिन्न पड्या छे, ते मूल-सम्प्रदाय मां मली शके छे'।

o o • •

पं० श्री नागचन्द्रजी महाराज—

'उदार-भावना थी गच्छ-ममत्व छोड़ी शके, तो थई शके'।

o ४ o •

मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

''पोतपोताना मत नो आग्रह छोड़े तोज थाय'।

o o o •

मुनि श्री मूलचन्द्रजी स्वामी—

'छोटे-छोटे सम्प्रदाय निकटवर्ती वड़े सम्प्रदाय मां मली शके. पण बन्ने सम्प्रदाय निंदा, ईर्ष्या, झेरवेर, अभिमान मोटाई मूकी जिन आज्ञा ऊपर दृष्टि राखी विचरे तो मली शके, पण मुश्केल छे.'

o o o •

मुनि श्री माणेकचन्द्रजी स्वामी—

'कोई नहीं मली शके. मलशे तो रहेशे नहीं.'

o o o •

मुनि श्री संघजी स्वामी—

'नाना सम्प्रदायो मोटा सम्प्रदायो मां मली जाय एना माटे त्यां आवेला साधु प्रतिनिधियों अने श्रावक प्रतिनिधियो नी एक स्पेशियल कमिटी नीमवी. पछी ते नो निर्णय करवो अने निर्णय माटे लांवा विचारोनी आपले करवा नी खास जरूर छे. टुंका मां पति जाय एम समजवातु नथी.'

o o • o

मुनि श्री लालजी स्वामी तथा शतावधानी प० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज—

'आनो उत्तर पाँचमा मां आवी जाय छे.'

o o o o

पूज्य श्री जयमलजी म० की सं० के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'यदि पांचवां प्रश्न हल होगया और आपस में प्रेमपूर्वक बर्ताव हो, तो निकटवर्ती छोटे सम्प्रदाय बड़े के साथ मिल सकते हैं'।

o o o •

मुनि श्री मोहनलालजी स्वामी—

'ऐसा बनना मुश्केल लगता है'।

o o o •

मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

'मिलने वालों की और जिसमें मिलते है उनकी समाचारी एक सरीखी होवे

होवे तो जिसकी समाचारी प्रधान हो, उसके अनुसार दूसरे हिस्से वाले चला लेवें और दोनों की इच्छा भी परस्पर मिलने की होवे, तो मिल सकते हैं'।

सातवां प्रश्न

'एक संगठन के वास्ते कौन २ से नियम बनाने जरूरी हैं ?'

उत्तरावली--

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज—

'समग्र श्री शासनदेव महावीर स्वामी की किसी भी साधु द्वारा दी हुई एक समझी जावे और भावरोप हो। संवत्सरी चातुर्मास चार पक्खी आदि एक हों। परस्पर मिलने, रहने सहने के सम्बन्ध, हृदय और विचारों की उदारता'।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज—

'देखो उत्तर नं० ५

मुनि श्री पूनमचन्दजी महाराज—

'परस्पर समस्त मुनि मिलकर एकयता की भावना से एकमत हो, कम-से कम तो संभोग कर लें, तो। तथा सदैव सबको वात्सल्यता रखनी चाहिये।'

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

'नियमावली साधु-परिषद् में होना ही अच्छा है'।

मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

'संगठन होने पर विचार करना चाहिये'।

'मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'सभी मुनि परस्पर मिलकर एकमत से समाचारी बनावें और कम-से-कम तो संभोग कर लें।

मुनि श्री खूबचन्दजी महाराज—

'सब मुनि मिलकर एक समाचारी तैयार करें और कम से कम नौ-दस सभोग शामिल कर उसपर अमल करने पर सब नियम पूरे हो जाते हैं।'

o o o o

मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज—

'जिस समय सम्प्रदाय के प्रमुख साधु-श्रावक एकत्रित होंगे, तब इस प्रश्न का निश्चय हो सकता है। देखो ऋषि-सम्प्रदाय की रिपोर्ट में सर्वमान्य-समाचारी'।

o o o o

मुनि श्री चुन्नीलालजी महाराज—

'व्यावहारिक ज्ञान साधु-साध्वी में फैलाना'।

o o o o

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज—

'व्याख्यान, अवस्थान, यथायोग्य-सम्मान, वाचन, पाठन आदि क्रियाएँ समसमाचारी वाले, मुनि करें'।

o o o o

मुनि श्री रामकँवरजी महाराज—

'पक्खी, संवत्सरी, पर्यूषण एक होने के नियम बनाने चाहिएँ।'

o o o o

मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

'प्रत्यक्ष-समागम बिना कोई निश्चित नहीं कर सकते हैं'।

o o o o

मुनि श्री ताराचन्द्रजी महाराज—

'ऋषि-सम्प्रदाय की रिपोर्ट में छपे हुए नियम कुछ ठीक प्रतीत होते हैं।'

o o o o

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

'सर्वमान्य-समाचारी होने, व पक्खी, सवत्सरी, लोगस्स और स्थानकादि वैमनस्यता पैदा करने वाली बातें सर्व मुनियों की सम्मति से बन्द होवें।'

o o o o

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

'श्रद्धा प्ररूपणा एक होना, फरसणा के जघन्य-नियम बनाये जायँ, वे भी सभी के लिये एक से हों। इसके सिवाय, उच्च-फरसणा करने वाला, जघन्य फरसना वाले से घृणा न करें'।

o o o o

मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

'पारस्परिक निष्कपटरूपो नियम'।

o o o o

मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'सर्वमान्य समाचारी होवे। पक्खी, संवत्सरी, लोगस्स स्वाध्यायिक वैमनस्य पैदा करने वाली बातें सर्व मुनियों की सम्मति से बन्द होवें।

° ° ° °

मुनि श्री दयाचन्द्रजी महाराज—

'सोचकर पीछे जवाब लिखा जायगा'।

• ° • •

मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'सब मुनियों की एक ही प्ररूपणा होनी चाहिये व देशी परदेशी सन्तों का झगड़ा उड़ जाना चाहिये। और नियमों का सम्मेलन में विचार किया जावेगा।

• ° •

मुनि श्री मगनदासजी महाराज—

'एक कार्यकारिणी-कमेटी नियुक्त की जावे। सबको एकता के सूत्र में बांधे जावें। बाद में द्वेषभाव पैदा करने वाले कार्य न किये जावें। अगर किसी से हो जावे या कोई कर बैठे, तो उस का यथोचित दूर करने का प्रबन्ध कार्यकारिणी कमेटी करे, ताकि विशेष द्वेष न बढ़ने पावे।

° ° ° •

पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

'साधु समाचारी की ऐक्यता। यथा सम्भव संभोग खुले हों। प्रेम वात्सल्यता का संचार होना'।

° ° ° °

मुनि श्री जोधराजजी महाराज—

'सभास्थान इकट्ठे होने के बाद जो-जो खास नियम रक्खा जाय'।

° ° ° •

मुनि श्री कजोड़ीमलजी महाराज—

'पक्खी-संवत्सरी एक होनी चाहिये। जहां तक हो सके सम्भोग एकसा होना चाहिये।

• ° ° °

मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज मारवाड़ी—

'सिर्फ बातचीत की शर्त पर ही मुनिवर्ग मिल करके संभोग (कितने व किस प्रकार करना उस) का निर्णय तथा शास्त्रों के साथ मिलान करते और तर्क-वितर्क करते हुए आत्मा की उन्नति करने वाले प्रधान विद्या और चरणधर्म सम्बन्धी कतिपय नियमों की नियमावलि बनाना जरूरी है।'

• •

मुनि श्री सिरेमलजी महाराज—

सिर्फ बातचीत की शर्त पर ही मुनिवर्ग मिल करके संभोग (कितने व किस प्रकार करना उस) का निर्णय तथा शास्त्रों के साथ मिलान करते और तर्क वितर्क करते हुए आत्मा की उन्नति करने वाले प्रधान विद्या और चरणधर्म सम्बन्धी कतिपय नियमों की नियमावलि बनाना जरूरी है'।

मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—
'एक समाचारी'

× × × × × ×

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—
'द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव जोई समाचारी एक थाय, तो संगठन मजबूत थाय' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज—
'आत्मिक-विकास मां आवरण रूप अने महाव्रतो ने बाधक रूप एवा अनाचारो तथा केवल (पोतानी सरसाइज 'बाह्य' बतावबा खातर पलाता) आचार नी ज्ञान शून्य अति मात्रा तजाय अने पंच महाव्रत ने एकान्त पुष्ट करे तेवीज मध्यम समाचारी घड़वा नी खास जरूर छे' ।

* * * * * *

मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—
'दीर्घ दृष्टि थी, सर्वे थी पली शके तेवो कायदो थवा नी जरूर छे, जे कायदो अगर ठराव करो, ते पाली शके तेम न होय तो कायदा करवा निरर्थक ज छे कारण, कायदो पाली शकाय नहीं, तो दुनिया मां हलकाई देखाइ आवशे जेना हृदय मां वैराग्य हशे, तेनेज कायदो पालवो छे. पण वैराग्य सिवाय नो ते तो कांई करी शकशेज नहीं ।'

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—
'त्यां आवनार पूज्य महाराज के प्रवर्तकोए वार्ता नो निर्णय करी शके' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री प० नागचन्द्रजी महाराज—
'प्रेमभाव, उदार वृत्ति, मताग्रह त्याग, सहिष्णुता अने पांचमी कलम ना उत्तर मां जणावेल बाबतो नो निर्णय करी नियमो बनाववा' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—
'भगवान नी आज्ञा नी अपेक्षा सहित नियम करवा नी जरूर छे' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—
'एक संगठन माटे घणा नियम नी जरूर छे. पण खरी वाते जिन आज्ञाए विचरनार मुनि ने एक पण नियम नी जरूर नथी. संगठन ए अमारो धर्म छे. अमारूं खरूं कर्त्तव्य छे. एवुं जाणे तो सुखे थी थई शके तमारे दृष्टान्त तमारे भाने आपणो समुदाय वरते, तो निरवद्य ने एक संगठन सुखे थी थई शके' ।

० ० ० ०

मुनि श्री माणेकचन्दजी स्वामी—
'घणा नियम नी जरूर छे तेनी चरचा सम्मेलन वखते थई शकशे.'

मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'सर्वमान्य समाचारी होवे। पक्खी, संवत्सरी, लोगस्स स्वाध्यायादिक वैमनस्य पैदा करने वाली बातें सब मुनियों की सम्मति से बन्द होवें।'

० ० ० ०

मुनि श्री दयाचन्द्रजी महाराज—

'सोचकर पीछे जवाब दिया जायगा'।

० ० • •

मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'सब मुनियों की एक ही प्ररूपणा होनी चाहिये व देशी परदेशी सन्तों का झगड़ा उठ जाना चाहिये। और नियमों का सम्मेलन में विचार किया जावेगा।

• ० •

मुनि श्री अचलदासजी महाराज—

'एक कार्यकारिणी-कमेटी नियुक्त की जावे। सबको एकयता के सूत्र में बांधे जावें। बाद में द्वेषभाव पैदा करने वाले कार्य न किये जावें। अगर किसी से हो जावे या कोई कर बैठे तो उस का यथोचित दूर करने का प्रबन्ध कार्यकारिणी-कमेटी करे, ताकि विशेष द्वेष न बढ़ने पावे।

० ० • •

पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

'साधु समाचारी की ऐक्यता। यथा सम्भव संभोग खुले हों। प्रेम वात्सल्यता का संचार होना'।

० ० ० ०

मुनि श्री जोधराजजी महाराज—

'समाचारी इकट्ठे होने के बाद जो जो काम नियम रक्खा जाय'।

० ० • •

मुनि श्री कजोड़ीमलजी महाराज—

'पक्खी-संवत्सरी एक होनी चाहिये। जहां तक हो सके सम्भोग एकसा होना चाहिये।

० ० ० ०

मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज मारवाड़ी—

'सिर्फ बातचीत की शर्त पर ही मुनिवर्ग मिल करके संभोग (कितने व किस प्रकार करना उस) का निर्णय तथा शास्त्रों के साथ मिलान करते और तर्क-वितर्क करते हुए आत्मा की सम्मति करने वाले प्रधान विधा और चरणधर्म सम्बन्धी कतिपय नियमों की नियमावलि बनाना जरूरी है।'

• ०

मुनि श्री सिरेमलजी महाराज—

सिर्फ बातचीत की शर्त पर ही मुनिवर्ग मिल करके संभोग (कितने व किस प्रकार करना उस) का निर्णय तथा शास्त्रों के साथ मिलान करते और तर्क वितर्क करते हुए आत्मा की सम्मति करने वाले प्रधान विधा और चरणधर्म सम्बन्धी कतिपय नियमों की नियमावलि बनाना जरूरी है।

मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

'एक समाचारी'

× × × × × ×

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—

'द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव जोई समाचारी एक थाय, तो संगठन मजबूत थाय' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज—

'आत्मिक-विकास मां आवरण रूप अने महाव्रतो ने बाधक रूप एवा अनाचारो तथा केवल (पोतानी सरसाइज 'बाह्य' बतावबा खातर पलाता) आचार नी ज्ञान शून्य अति मात्रा तजाय अने पंच महाव्रत ने एकान्त पुष्ट करे तेवीज मध्यम समाचारी घड़वा नी खास जरूर छे' ।

* * * * * *

मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

'दीर्घ दृष्टि थी, सर्व थी पली शके तेवो कायदो थवा नी जरूर छे, जे कायदो अगर ठराव करो, ते पाली शके तेम न होय तो कायदा करवा निरर्थक ज छे कारण, कायदो पाली शकाय नहीं, तो दुनिया मां हलकाई देखाइ आवशे जेना हृदय मां वैराग्य हशे, तेनेज कायदो पालवो छे. पण वैराग्य सिवाय नो ते तो कांई करी शकशेज नहीं ।'

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

'त्यां आवनार पूज्य महाराज के प्रवर्तकोए वार्ता नो निर्णय करी शके' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री पं० नागचन्द्रजी महाराज—

'प्रेमभाव, उदार वृत्ति, मताग्रह त्याग, सहिष्णुता अने पांचमी कलम ना उत्तर मां जणावेल बावतो नो निर्णय करी नियमो बनाववा' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

'भगवान नी आज्ञा नी अपेक्षा सहित नियम करवा नी जरूर छे' ।

० ० ० ० ० ०

मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—

'एक संगठन माटे घणा नियम नी जरूर छे. पण खरी वाते जिन आज्ञाए विचरनार मुनि ने एक पण नियम नी जरूर नथी. संगठन ए अमारो धर्म छे. अमारूं खरूं कर्त्तव्य छे. एवुं जाणे तो सुखे थी थई शके तमारे दृष्टान्त तमारे भावे आपणो समुदाय वरते, तो निरवद्य ने एक संगठन सुखे थी थई शके' ।

० ० ० ०

मुनि श्री माणेकचन्दजी स्वामी—

'घणा नियम नी जरूर छे तेनी चरचा सम्मेलन वखते थई शकशे.'

मुनि श्री जगनरामजी स्वामी—

'बराबर है ।

° • ° °

मुनि श्री संघजी स्वामी—

एक संगठन माटे सबी अमे जूदी समाचारी नु दोहन करी ने एकज समाचारी थी वर्ती सर्व सम्प्रदाय वर्ते एवी विधी विधी ने कलमो डांकवी एमां सम्प्रदाय ना मतभेदो न थाय ए ध्यान मां राखवुं' ।

° ° ° °

मुनि श्री श्यामजीस्वामी तथा शतावधानी पं० श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी—

'सर्व मुनिराजो एकत्रित थशे त्यारे ए नियमो बनी शकशे ।

° • • • ° °

पूज्य श्री जयमलजी महाराज के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

इसका उत्तर पांचवें उत्तर में आ गया है । इसके अलावा और भी जो आवश्यक नियम हों बनाये जा सकते हैं । जैसे कि—

(१ पहिले के आपसी मिन्दास्पद लेखों पत्रों को फाड़ दिया जावे— आगे के लिये पुनः स्मृति नहीं की जावे और नये किसी के खिलाफ कोई (Direct) सीधा आक्षेप नहीं करे । यदि कोई विपरीत बात नजर आवे तो, जो कमेटी मुकर्रिर हो, उसके पास सब सबूत के लिख कर भेज दी जावे । वह इसका उचित प्रबन्ध करे ।

(२) अनेक सम्प्रदायों के खास २ मुनियों की एक कमेटी बनाई जावे जो कि आपस के झग डे तय करे' ।

° ° ° ° ° °

मुनि श्री मोहनलालजी स्वामी—

'सो विवेकी मुनि महाराज जाणे

° ° • ° ° °

मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

'सिर्फ बातचीत की शर्त पर ही मुनिगण मिल करके सम्भोग (कितने व किस प्रकार करना उस) का निर्णय तथा शास्त्रों के साथ मिलान करते और तर्क वितर्क करते हुए, आत्मा की उन्नति करने वाले प्रधान विद्या और चरण धर्म सम्बन्धी कतिपय नियमों की नियमावली बनाना जरूरी है ।

आठवाँ प्रश्न

'संप्रदायों का पारस्परिक भेद भाव किस तरह मिट सकता है ?'

उत्तरावली

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज पंजाबी—

'सम्प्रदायों की हदबन्दी तोड़ कर एक जैसी सम्प्रदाय समझने से। और जो आपस में भेद के कारण हों, उनको दूर करने से।'

० ० ० ० ०

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज—

'देखो उत्तर नं० ५'

० ० ० ० ०

मुनि श्री सुखलालजी महाराज—

'उन्नति इच्छुक बनकर एक्यता की भावना युक्त वात्सल्यता रखने से, पारस्परिक भेदभाव स्वयं ही नष्ट हो सकता है'।

० ० ० ० ०

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

'मान प्रतिष्ठा छोड़ने से और समभाव रखने से'।

० ० ० ० ०

मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

'सबों की इच्छानुसार हो जाने से'।

० ० ० ० ०

प्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'उत्तर रूप में जो बातें बताई गई, उसके अनुसार बरताव करने पर पारस्परिक भेद भाव मिट सकता है'।

० ० ० ० ०

मुनि श्री खूबचन्दजी महाराज—

'ऊपर बताई बातों का पालन करने पर परस्पर का भेदभाव आपोआप अदृश्य हो जावेगा'।

० ० ० ० ०

मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज—

'एक सम्प्रदाय की पहिले दी हुई समकित दूसरे संप्रदाय के साधु न पलटावें और परस्पर प्रेम भाव रक्खें, तो भेदभाव मिट सकता है'।

मुनि श्री खुशीलालजी महाराज—

'वर्तमान जीवन उपयोगी विषयों का ज्ञान हमें देना चाहिये'।

o o o o o

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज—

संगठन होने से आप ही भेद भाव दूर हो जायगा, संगठन के उपाय ऊपर लिखे जा चुके हैं'।

o • o o o

मुनि श्री रामकुंवरजी महाराज—

'उपरोक्त नियम बनने से सम्प्रदाय के मतभेद मिट सकते हैं'।

o o o o o

मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

'अभिमान छोड़ने से और शास्त्रानुसार वर्तन रखने से'।

o o o o o

मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज—

'एक समाचारी होने से'।

o o o o •

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

"पारस्परिक मुनियों की प्रेमवृद्धि होने से"।

o o o o o

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

'श्रद्धा प्ररूपणा एक होने से, परस्पर प्रेम व वात्सल्यता रखने से भेदभाव मिट सकता है"।

o o o o o

मुनिश्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

सब सम्प्रदायों की राय से एक मुखिया को स्थापन करने से'।

o • o o o

मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

पारस्परिक मुनियों की प्रेम वृद्धि होने से ।

o o o o o

मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज—

'एकमात्र संघ के उपदेश से ।

o o o •

मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'धारणा में उतरना या नहीं उतरना, इसकी निन्दा नहीं होनी चाहिये। सब मुनि शुद्ध चारित्र रखने से और किसी की निन्दा नहीं करने से'।

मुनि श्री जीतमलजी हजारीमलजी—

'अपनी अपनी समुदाय की प्राचीन अलग अलग रूढ़ियां प्रचलित हैं, उनको तोड़ कर मुआफिक कानून साधु सम्मेलन पावन्दी रक्खी जावे'।

o o o o o

मुनि श्री अचलदासजी महाराज—

'सम्भोग व समाचारी सबकी जहां तक अनुकूल हो वैसे कायम कर लिये जावें। प्राचीन रूढी की खेंच न की जा कर उन पर अमल करें, तो भेद भाव मिट सकता है।'

o o o o o

पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

'श्रावकों का पक्षपात छूटने से और मुनि महात्मा का हृदयपलटा होने से भेदभाव की कमी होना संभवता है'।

o o o " o

मु० श्री जोधराजजी महाराज—

'परस्पर पक्षपात नहीं करने से'।

o o o o o

मु० श्री कजोड़ीमलजी महाराज—

(१) सम्भोग व समाचारी एक होने से (२) कोई आक्षेप भरा हुआ लेख नहीं छपवावें और न छपवाने में सहायता दें।

o o o o o

मु० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज मारवाड़ी—

'कतिपय संभोग करें तथा न करें तो भिन्न २ आचार्य रह कर ही पक्खी, संवत्सरी और समाचारी शास्त्रानुसार एक होना और यदि सब सम्भोग करें, तो यह विशेषता हो कि संप्रदाय के नामों के स्थान में 'वर्धमान संघ व सौधर्म गच्छ तथा साधुमार्गी-श्रमणसंघ' आदि नामों में से कोई एक नाम रखना तथा समकितादि उसी नाम से होना चाहिये। इत्यादि कार्य करने से भेद भाव मिटने की सम्भावना है।'

o o o o o

मुनि श्री प्रेमलजी महाराज—

'कतिपय सम्भोग करें तथा न करें, तो भिन्न २ आचार्य रह कर ही पक्खी, संवत्सरी और समाचारी शास्त्रानुसार एक होना और यदि सब सम्भोग करें, तो यह विशेषता हो कि सम्प्रदाय के नामों के स्थान में वर्धमान संघ व सौधर्म गच्छ तथा साधुमार्गी श्रमणसङ्घ आदि नामों में से कोई एक नाम रखना तथा समकितादि उसी नाम से होना चाहिये। इत्यादि कार्य करने से भेद भाव मिटने की सम्भावना है।'

o o o o o

मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

'श्रावकों नी आंखों मां थी राग द्वेष ओछो थाय'।

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—

'बृहत्-साधु-सम्मेलन नो विचार करवा नो आवशे" ।

∘ ∘ • •

मुनि श्री मानचन्द्रजी महाराज—

"हृदय ना शुद्ध प्रेम थी, दिल नी विशालता थी अने परार्थ बुद्धिओने अटकी करवा थी सम्प्रदायो नो भेद मटी शके" ।

• • • •

मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

"वास न बनी सके एवा भेदभाव छेज नहीं" ।

• • ∘

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

"माटे ज्यां-त्यां क्षेत्र माटे के श्रावक साथे द्वेष, ईर्ष्या ने खटपटो चलावी रह्या छे ते को उमदादिल थी बीजा ना क्षेत्र के श्रावकों ने पोतामावत मानी ने तेमो आक्रमण नहिं करतां पोतानो प्रेम स्नेह अने मीठाश थी वर्ते तो पारस्परिक भेद मटी शके.'

∘ • •

मुनि श्री पं० नागचन्द्रजी महाराज—

"एक समाचारी, एक सूत्रवाचना अने कलम ६-१-७ मुजब कार्यवाही थाय तो मटी शके"

• ∘ ∘ •

मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

"जो हृदय नी सरलता करे अने पोता नो ममत्व भाव मूके तो '

• • •

मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—

"सम्प्रदाय ना भेदभाव जिन आज्ञा ऊपर दृष्टि राखी विचरे तो मटी शके तेम छे"

• • • •

मुनि श्री माणेकचन्दजी स्वामी—

"आन्तरिक प्रेम राखवा थी अने मोटाई ने ईर्ष्या छोड़वा थी'

• • •

मुनि श्री छगनरामजी स्वामी—

"आहार-पाणी सिवाय बीजो भेदभाव ओछो थई शकशे'

• • •

मुनि श्री संपतजी स्वामी—

"सर्व ना मतभेद दूर करवाने माटे एक सरल रस्तो छे ते एके हवे थी परस्पर निन्दा त्याग मैत्रीभाव वधे एवा माटे सम्मेलन अमुक नियमो तैयार करे."

• • •

मुनि श्री रामजी स्वामी तथा शतावधानी पं श्री रत्नचन्द्रजी म०

"धर्मदास राखी, मूलशास्त्र अने मूल पुरुष माटे गौरव राखी ने पारस्परिक पेटा भेदो नुं न्यायदृष्टि अने शास्त्र दृष्टिए अथवा मध्यस्थ-कमिटी नीमी तेनी मारफते फड्चो करे. व्यक्तिगत द्वेषभाव न राखे"

o o o o

पू॰ श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी महाराज--

"लघुता व गुरुता आदि के अभिमानपूर्ण-भावों को छोडकर, सब के साथ प्रेमपूर्वक बर्ताव करने से व कमेटी के नियमानुसार चलने से आपसिक भेदभाव मिट सकता है।"।

o o o o

मुनि श्री मोहनलालजी स्वामी—

"एक धर्म की श्रद्धा होने से"।

o o o o

मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

"कतिपय सभोग करें तथा न करें, तो भिन्न-भिन्न आचार्य रहकर ही पक्खी, संवत्सरी और समाचारी शास्त्रानुसार एक होना और यदि सब सम्भोग करें, तो यह विशेषता हो, कि सम्प्रदाय के नामों के स्थान में 'वर्द्धमान् सघ व सौधर्म-गच्छ तथा साधुमार्गी-श्रमण संघ' आदि नामों में से कोई एक नाम रखना तथा समकित आदि उसी नाम से होना चाहिये। इत्यादि कार्य करने से भेदभाव मिटने की सम्भावना है।"

o o o o

उन्नीसवां प्रश्न

पूर्ण-प्रयत्न करने पर भी कोई सम्प्रदाय साधु-सम्मेलन में सम्मिलित नहीं होवे, तो ऐसी परिस्थिति में क्या करना चाहिये ?"

उत्तरावलि

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज—

"ऐसी परिस्थिति में भी काम को न रोका जावे। साधु-सम्मेलन अवश्य हो। इसके साथ ही उनसे अन्तिम-तोडना न की जावे, उनको समझाने का प्रयत्न जारी रहे।"

o o o o

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज—

'इस विषय का विचार इस समय क[illegible] है।

मुनि श्री सुखलालजी महाराज—

'अपने को उत्साह से कार्य करते रहना चाहिये। यदि कोई इस सम्मेलन में शामिल नहीं हुआ तो भविष्य में अवश्य प्रयत्न से होंगे।'

o o • •

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

'अपने को आशावादी रहना चाहिये और उत्साह से कार्य करते रहें। इस समय यदि ये मुनि सम्मिलित नहीं हुए, तो सम्मिलित होने वाले मुनि व श्रावकवर्ग उन्हें सम्मिलित करने का भरसक प्रयत्न करें। आशा है, कि दूसरे सम्मेलन में अवश्य सम्मिलित होंगे।

o • o •

मुनि श्री नन्दलालजी महाराज—

'समय की अवधि देकर उन्हें समझाने का प्रयत्न रखना चाहिये।

o o o •

वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'बृहत् सम्मेलन में जो इस प्रश्न का निकाल होगा, वह हमें भी स्वीकार है। पर यह प्रश्न सम्मेलन ही में हल होगा, अन्यथा नहीं।

o o o •

मुनि श्री सुखचन्द्रजी महाराज—

'सर्व मुनियों के सम्मेलन में जो इस प्रश्न का निकाल करेंगे, वह हमारे लिये भी मान्य होगा। इस प्रश्न का निकाल सम्मेलन में ही होगा। अन्यथा सर्वमान्य होना असम्भव है।

o o • •

मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज—

'इस विषय का अधिकार श्रावक संघ को है।

मुनि श्री चुन्नीलालजी महाराज—

नम्रता से उनके प्रति सद्भावना रखते हुए कार्य करना।

o • • o

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज—

'उदासीनता ही दिखानी पड़ेगी।

o o o o

मुनि श्री रामकँवरजी महाराज—

'बृहत्-सम्मेलन से नक्की होना चाहिये।

o o o •

मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

'सर्वानुमति से बहिष्कार कर डालना चाहिये'।

• • • •

मुनि श्री ताराचन्दजी महाराज—

इस विषय को बृहत् सम्मेलन में रक्खा जावे'।

o • • •

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

'इसका प्रत्युत्तर पूर्ण-संगठन होने से बृहत्-सम्मेलन में आप पूछेंगे तो दिया जायगा'।

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

'उन मुनियों को मुनिमण्डल व श्रावकों की तरफ से सख्त हिदायत होनी चाहिये, कि अमुक समय तक समय दिया जाता है कि आप अपना सगठन करें। फिर भी आप नहीं सुधरें, तो समग्र समाज व चतुर्विध-संघ आपसे असहयोग करेंगे। तथा आपके जरिये समाज संगठन न हुआ, तो समग्र समाज के पतन के कारण आप ही समझे जावेंगे। नहीं आने वालों को ऐसी सूचना होनी चाहिये।'

o o o •

मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

'जो सब को मंजूर हो'।

o o o o

मुनि श्री चीतमलजी महाराज—

'इसका प्रत्युतर सगठन होने से वृहत्सम्मेलन मे आकर पूछेंगे, तो दिया जायगा'।

o o o o

मुनि श्री दयालचन्द्रजी महाराज—

'सर्वांक (श्रावक) लोग इकट्ठे होकर सक्रियता व्यवहार बन्द करें और बहुत से मुनिशामिल होकर सत्याग्रह करें।'

o o • o

मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'वृहत्साधु-सम्मेलन में सबकी सम्मति हो जैसे।'

o o o o

मुनि श्री जीतमलजी हजारीमलजी महाराज—

'जैसा पूज्यवर्ग व नेताओं को मुनासिब है।'

o o o o

मुनि श्री अचलदासजी महाराज—

'कुछ नहीं कह सकते। जो सम्मेलन में तय होगा वह माननीय है।'

o • o o

पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

'जो कोई कारणवशात् नही पधार सकें, तो उनको सम्मेलन का नियम पलाने का प्रयत्न करना चाहिये'।

o o o o

मुनि श्री जोधराजजी महाराज—

'सर्वानुमतिसार'।

o o o o

मुनि श्री कजोडीमलजी महाराज—

'जो वृहत्साधुसम्मेलन से निश्चित होगा, वह मान्य होगा'।

o o o o

मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज मारवाड़ी—

'कारण से न आते हों तो उनकी सम्मति आनी चाहिये और निष्कारण रुकते हों तो उनके प्रति माध्यस्थ भाव रखते हुए सम्मेलनमें दिव्य काम करना, जिससे सम्मेलन का फल भी मिले और उनका दिल भी आकर्षित होकर शायद भविष्य में कभी न कभी संगठन में शामिल हो जावें।'

o o o o

मुनि श्री सिरेमलजी महाराज—

'कारण से न आते हों तो उनकी सम्मति आनी चाहिये और निष्कारण रुकते हों, तो उनके प्रति माध्यस्थ भाव रखते हुए सम्मेलन में दिव्य काम करना, जिससे सम्मेलन का फल भी मिले और उनका दिल भी आकर्षित होकर शायद भविष्य में कभी न कभी संगठन में शामिल होजावें'

o o o o

मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

'अनिवार्य कारणे कोई सम्प्रदाय न पहोंची शके पण सम्मेलन ना ठरावो ने मान आपे अने ते प्रमाणे वर्ते तो संगठन मां सामेल गणाय'।

• o • •

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—

बृहत्सम्मेलन मां जो ठराव थाय ते'।

• o •

मुनि श्री मानचन्द्रजी महाराज—

'सव मुरब्बेनी ने सार आ एकज प्रश्न मां छे यथार्थ संगठन थाय, तो अलग रहेवा वालो सम्प्रदाय आपोआप निस्तेज थई जशे० अथवा महासम्मेलन नी छाया माँ आववानी फरजवालो बनशे बधो आधार सम्मेलन नी संगीनता अने सच्चाई पर रहेल छे

• o o

मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

'तो खास ए ऊपर हुकम थई शके नहीं एमनी मरजी हाथ लेम बने

• • • o

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

'साधु-सम्मेलन मां भाग लेवो इष्ट छे पण कोई न ले ए बनवा संभव छे. एटले एकेके सुधी आववामां के पोतानी प्रकृति रीतभात साथे अनुकूलता न लागतां न आवी शके तो तेना ऊपर शु पगलां थई शके छे नहिं ज० कोई व्यक्ति के मण्डल पोतानी रीतभात सारी राखे नहिं ने भाग ले नहिं तो तेनी साथे सम्मेलन के समाज असहकार करी शके०

o o •

पं० श्री नागचन्द्रजी महाराज—

'दरेक सम्प्रदायोनी हाजरी जरूरी छे. बधा ने एकत्र करवा माटे पूर्ण-प्रयत्न करवो जरूरी छे तेम छतां न आवी शके तो कारण तपासी ने सम्मेलन बनते योग्य विचार करवो

• • • •

मुनि श्री पुरुषोत्तमदासजी स्वामी—

'महाभाग्यशाली अने डाह्या माणसो ने योग्य लागे तेम.'

० ० ० ०

मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—

'पूर्ण प्रयत्न कर्या छतां कोई पण सम्प्रदाय, कोई पण एकलिया, कोई पण दुराग्रही कोई पण खोटी श्रद्धा वाला, कोई पण सम्मेलन ना विरोधी विगेरे सम्मेलन मां समत ना थाय, त्यारे साधु-श्रावको ए यह विचार करी संघ मां असमाधी न थाय, धर्म मां नुकसान न थाय, तेम वरतवुं अथवा तेओने बहिस्कार करवो गच्छ बहार करवो, जरूर पड़े तो वेस पण खेंची लेवो, अपासरा मां उतरवा न देवा, व्याख्यान वाणी न सांभलवी, चोमासु के सेखाकाल न राखवा, वंदणा व्यवहार विगेरे कोई जात नो आहार करवो नहिं. तेनो साथे आलाप-संलाप पण करवो नहिं, अरे तेओनी छाया पण लेवी नहिं. कोई साधु-श्रावक पक्षपात करे, तेने सम्मेलन नो द्रोही अने शासन नो वेरी समजवो ते प्रमाणे अमल करतां संघ मां असमाधी थाय' धर्म मां नुकसान थाय, तो मौन साधवुं. ते अवसर जवा अथवा जे श्रेयकर होय ते आदरवुं पण संघ मां असमाधी थाय, धर्म मां नुकसान थाय, तेवुं करवुं ज नहिं'

० ० ० ०

मुनि श्री माणिकचन्द्रजी स्वामी—

'महाभाग्यशाली अने डाह्या माणसो जेम योग्य लागे तेम'.

० ० ० ०

मुनि श्री छगनरामजी स्वामी—

'ते श्रावको नी सत्ता ऊपर आधार छे'.

० ० ० ०

मुनि श्री संघजी स्वामी—

'जे साधुओ साधु-सम्मेलन मां संमत न थाय, तेने माटे सर्व सम्प्रदायो जे ठरावे, पसार करे, ते अमारा सम्प्रदाय ने मान्य छे.'

० ० ० ०

मुनि श्री सामजी स्वामी तथा शतावधानी पं० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

'सम्मेलन मां पधारती वखते पूज्य श्री या प्रवर्तक श्री नी आज्ञा अने सम्मतिपूर्वक पधारे'.

० ० ० ०

पूज्य श्री जयमलजी म० की सं० के मुनि श्री चौथमलजी म०—

'सम्मेलन के पश्चात् भी जहां तक हो सके, परिश्रम करके उन्हें शामिल करने का प्रयत्न निश्चित् समय तक किया जावे। यदि इस पर भी नहीं हों, तो जैसा कमेटी में निश्चय किया जावे, किया जाय।'

० ० ० ०

मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

'कारण से न आते हों, उनकी सम्मति मानी चाहिये और निष्कारण रुकते हों तो उनके

प्रति माध्यस्थ-भाव रखते हुए सम्मेलन में दिव्य काम करना, जिससे सम्मेलन का फल भी मिले और उनका दिल भी आकर्षित होकर शायद भविष्य में कभी न कभी संगठन में शामिल हो जावें।"

बीसवां प्रश्न

'साधु सम्मेलन सम्बन्ध में विशेष सूचना आप क्या २ करते हैं ?'

उत्तरावली--

पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज--

'हमारे करने योग्य जो कार्य थे वह करते रहे हैं और भविष्य में भी आवश्यकतानुसार करते रहने की आशा है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज--

'कुछ सूचनायें डेप्युटेशन को की हैं और विशेष यह है, कि सम्मेलन में कोई किसी के विचारों को बदलने के लिये सत्याग्रह करके या और किसी तरह दबाव न डालें।

मुनि श्री सुखलालजी महाराज--

'निष्पक्ष और बहुत सावधानी से पहले के रगड़े झगड़े का त्यागकर न्याय की गद्दी पर रहकर धर्मनीतिपूर्ण कार्य होगा तो विशेष सफलता होने की सम्भावना है।'

मुनि श्री छगनलालजी महाराज--

'निष्पक्ष और बहुत सावधानी से पहले के रगड़े झगड़े को छोड़कर धर्म, नीति और न्याय की गादी पर रहकर कार्य होगा तो विशेष सफलता होने की सम्भावना है।

मुनि श्री नन्दलालजी महाराज--

'बालक-बालिकाओं की सम्यक्त्व दृढ़ रखने के लिये मन्दिर व बाळीवालों से और ऐसी चर्चा की बातें तैयार करनी चाहिएं। और यहां सम्मेलन में श्रावकों का निरोध होना चाहिये

वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज--

'यह सम्मेलन मुनियों का है अतः इस सम्मेलन में मुनियों के सिवा गृहस्थ का समावेश

नहीं हो तो अति उत्तम है। क्योंकि विद्वान् २ मुनि एकत्रित होंगे, अतः जैसी उन्हें योग्य-योजना प्रतीत हो, वैसी करें। अवशेष बातें समय पर स्मरण करावेंगे।'

मुनि श्री खूबचन्दजी महाराज—

'सम्मेलन मुनियों का है। मुनियों के सिवा सम्मेलन में गृहस्थ कोई नहीं होगा तो अती-व श्रेष्ठ है। सब मुनि लिखे पढे हैं। जैसी मुनासिब समझें वैसी योजना करें, बाकी समय पर जो होगा दिखाया जायगा।'

° ° ° •

मुनि श्री चुन्नीलालजी महाराज—

'एक योग्य मुनियों की समिति पहले से शीघ्र मिलकर चर्चने के विषय व करने के सु-धार सम्बन्धी निर्णय करे। व उत्तम विचार का साहित्य प्रचार किया जाय।'

° ° • °

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज—

'विशेष-जटिल बातों के लिये विद्वान् मुनियों की एक कमेटी होनी चाहिये। यह कमेटी जो निर्णय करे व विचारणीय-विषयों में जो उचित उपाय सूचित करे, उसे शिक्षित अशिक्षित मुनिवर अंगीकार करके साम्प्रदायिक सुधार करें। क्योंकि जब तक मुनियों के व श्रावकों के हृदय प्रेमपूर्ण व व्यापक न बनजायँ, तब तक श्रम की सफलता होनी कठिन है। विशेष सूचना हमारीयही है, कि साधु-सम्मेलन में जो विरोधी चर्चा अशान्ति उत्पन्न करे, वैसी चर्चा नहीं हो। हो सके, उन बातों को पहले तय कर लें। जिससे समय पर विरोध खड़ा न हो। "उपायाश्चिन्तयन् प्राज्ञस्तथापायांश्च चिन्तयेत्" (उपायों के साथ ही अपायों का विचार भी कर लेना चाहिये) इस नीति पर आपका ध्यान होगा, ऐसी आशा है।

° • • °

मुनि श्री रामकँवरजी महाराज—

'सर्व सम्प्रदाय के मुनियों के साथ श्रावकों के भाव पक्ष छोड़कर एक-सा भाव होना चाहिये'।

° ° ° °

मुनि श्री प्रेमराजजी महाराज—

'साधुओं को अपने तथा अन्य मुनियों के तथा तीर्थङ्करों के फोटो आदि छपाना तथा पुस्तकें आदि छपाना नहीं चाहिये। इसी में प्रथम महाव्रत नहीं रहता है।'

° ° ° °

मुनि श्री ताराचन्द्रजी महाराज—

'देखो उत्तर नं० १ तथा इसके सिवा सर्व सम्प्रदायों में पारस्परिक प्रेम और समान समाचारी होनी चाहिये।'

° • ° °

मुनि श्री छगनलालजी महाराज—

बृहत्-साधु सम्मेलन में हमारी विशेष सूचना यही है, कि प्रत्येक साधु रोगी बन कर न आवे, बल्कि डाक्टर बन कर आवे'।

• • • °

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज—

'पंजाबी मुनियों की परम्परा व दूसरे पक्ष का आपस का मतभेद और पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय का मतभेद ये दोनों वृहद्-सम्मेलन के पहले निबटना जरूरी है। इसका निबटारा बिना संगठन पायेदार नहीं बनेगा।"

° ° ° °

मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज—

'सब सम्प्रदायों के ऊपर एक निष्पक्षपाती पुरुष की स्थापना'।

° ° ° °

मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

'बृहत्-साधु-सम्मेलन में हमारी विशेष सूचना यही है, कि प्रत्येक साधु रोगी बनकर न आवे बल्कि डाक्टर बनकर आवे'।

मुनि श्री दयालचन्दजी महाराज—

'बहुमत में हम भी सम्मिलित हैं'।

° ° ° °

मुनि श्री नारायणदासजी महाराज—

'विशेष सूचना, सम्प्रदाय के सन्तों से मिलने से होगी।

° ° ° °

मुनि श्री चौथमलजी हजारीमलजी—

'आपसका और श्रुतपति आम समाज में एक होना चाहिये। जैसी विष्णु में क्या है और साधु विष्णु-पंचांग क्यों रखते हैं, जैन ज्योतिष पर अमल क्यों नहीं करते हैं।

° ° ° °

मुनि श्री अचलदासजी महाराज—

'कोई विशेष-सूचना नहीं है।

° ° ° °

पूज्य श्री मोतीरामजी महाराज—

'श्रावकों का सुधार करना अति आवश्यक है। श्रावकों के सुधार से ही साधु-समाज की विशेष शोभा है'।

° ° °

मुनि श्री जोधराजजी महाराज—

'सम्मेलन इकट्ठा होना हमको वाजबी लगता है'।

° ° °

मुनि श्री कजोड़ीमलजी महाराज—

'कुछ नहीं'

° ° ° °

मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज मारवाड़ी—

'जिस जगह सम्मेलन हो, उस जगह साधुओं के लिये मकानादि का कोई सदोष प्रबन्ध न

होना चाहिये। तथा हर एक बात के निर्णय में शान्ति सहित व पक्ष रहित शास्त्र को ही प्रधान रखना।

o o o o

मुनि श्री प्रेमलजी महाराज—

'जिस जगह सम्मेलन हो, उस जगह साधुओं के लिये मकानादि का कोई सदोष प्रबन्ध न होना चाहिये' तथा हरएक बात के निर्णय मे शान्तिसहित व पक्षरहित शास्त्रों को ही प्रधान रखना।'

o o o o

मुनि श्री मोतीलालजी महाराज—

'रागद्वेष नी वृद्धि थाय, एवी वात न करवी. भूतकालनी बात भूली जवी.

o o o o

पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज—

'दूर थी पधारेल मुनि प्रत्ये प्रेमदृष्टि जोडे परसपरस सहाय करे'

o • o o

कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज—

'मोटाई नो मोह छोडी शासन ना उदय माटे प्रेम अने उदारता प्रगटाववा सम्मेलनरूप महायज्ञ मां विवेक पुरःसर आत्मभोगनी आहुति आपवा जवाबदार मुनि ओज कटिबद्ध थाय. त्यारेज सम्मेलन नी भावी सफलता अनुभवाय ए अमारु नम्र मन्तव्य छे'

o o o o

मुनि श्री ईश्वरलालजी महाराज—

'मारो तो एकजमत छे के कलमो करवी ए कई काम नी न थी. कारण प्रभुना सिद्धान्त ते सर्व कलमोज छे पण आपणो ते पाली शकता न थी. अने जुदी कलमो बाँधवी ते एक ढोलज छे. कारण, क्रिया तो कोई बत्ती ओछी करे, पण क्रिया थी ज मोक्ष न थी. कारण, क्रिया करी जीव नवग्रैवेक सुधी जई आव्यो पण अभविकपणा ने लई ने हृदय ने चारित्रभाव आव्यो नहिं. तेथी कोई गरज सरी न थी माटे चारित्र पालवु ते कषाय ने मन्द करवा माटे छे आम लुगडां मेलां राख्या ने आम उजला राख्या पण हृदय कालु राख्यु, ते थी जीव ने कांई सार्थक थतु नही कारण, के सर्वे जीव नवग्रैवेक सुधी जइ आव्या ते साधु थई ने गया छे पण हृदय थी मेला गया- आगल ना साधुओं अने सर्व-सम्प्रदाय वाला सो-सो कलमो बसो-बसो कलमो करी-करीने पोथी मां राखी ने लोको ने बचावी. 'छाटली कलमो होय तेनी जोगा आहार-पाणी करता, पण अमल करो शक्या न थी ऊपर नी सर्वे कलमो उपरान्त सर्व श्रावक-साधु ने सरलता, भद्रिकता करी ने काम करशे, तो परिणाम सारु आवशे

o o o o

मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज—

'साधु सम्मेलन मां सौ कोई हा पाडे ने भाग ले, तेथी सम्मेलन नु कार्य पूर्ण थतु न थी. परस्पर भेद मटवा माटे सौ कोई कदाच हा पाडे, पण भावी सुयोग्यता हृदय मां क्यां कोईए उत्पन्न करी छे? सौ कोईनी आंखें रागद्वेष नी रमतो आजे ज्यां-त्यां रमाती देखाय छे. मानवना महाराजो हशे त्यां वधारे घोंघाट थतो हशे जुना वखत मां मथुरा मां वल्लभीपुर मां साधु सघ मल्योहतो ते ओना पोतानी जेम योग्यता आजे क्यां छे? आजेक्यां कोई ने कोई नी महत्ता प्रति मान, सत्कार [illegible] करे छे? ए वस्तु न देखाय, न देखाय त्यां केवी रीते ए आशा फलीभूत थाय [illegible]

श्रावकों ने पूछो क तमने कोई मा प्रति मान छे, सिवाय पोताना दरा के प्रेम हाथ लेवा मा छतां वस्तु प छे के मो कार्य मा हृदय मां गयी वस्तु मो पकडो थाय मे ज लरा छे, तेनो अमल थाय, तो सम्मेलन थयु सफल छे म इय छे'

० ० ० ०

पं० श्री नागचन्द्रजी महाराज—

'सम्मेलन नी तिथि नक्की करी मा मे खबर आपवा, मुनिओने विहार कराववा, साधु स्वयंसेवकोए अपरिचिता नी मुश्केलीओ दूर करवी वगेर'।

० ० ०

मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

'गोंडल सम्प्रदाय ना साधुओ एकमता थया था सम्मेलन श्रेष्ठ थश'

० ० ० ०

मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—

'भाग्यवान् मुनिराजो अने श्रावको सम्मेलन मां पधारशे त्यां सम्मेलन सम्बन्धी अमारे कोई पण सुचना करवानी जरूर रहेश नहिं ए चोकस छे'

० ० ० ०

मुनि श्री माणेकचन्द्रजी स्वामी—

'योग्य लागे ते सम्मेलन वखते सुचना नी जरूर हशे ते करीश

० ० ०

मुनि श्री छगनरामजी स्वामी—

अग्रेसर साधुओं ने पूछो

० ० ०

मुनि श्री संघजी स्वामी—

'अमारा सम्प्रदाय नी एवी इच्छा छे के सर्व ठेकाणे संवत्सरी एक थाय, पुस्तक साधु साध्वियों माटे एक ज शीत पाठ्यक्रम थाय सर्वे समिति ना कायदा मुजब वर्ते अने भविष्य मां कोनफरेन्स एकता कायदा परिपूर्ण रीते अमल मां मूकाय शान्ति थी सम्मेलन पसार थाय एज अमो इच्छीए छीए.'

० ० ०

मुनि श्री श्यामजी स्वामी तथा शतावधानी पं० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज—

'प्रतिनिधि मुनिराज के जे सम्मेलन मां पधारे तेमने सम्मेलन ना सब नियमो पालन करावया जोशे अने पोताना सम्प्रदाय ना अन्य साधुओ पासे पण पालन करावयु जोशे सम्मेलन मां ठरावो श्रावको ए पण मंजूर राखवा जोइये अने विरोधपणु न करे'।

सम्मेलन मां पधारती वखते पूज्य श्री या प्रवर्तक श्री नी आज्ञा अने सम्मति-पूर्वक पधारे.

० ०

पू० श्री० जयमलजी म० की सम्प्रदाय के मुनि श्री चौथमलजी महाराज—

"वर्तमान प्रयास अभी काफी नहीं है। अभी बहुत कुछ प्रयास अविश्रान्तरूप से करने की अति आवश्यकता है। वर्तमान वायुमण्डल स्वच्छ नहीं हुआ है। इसको हर प्रकार की कोशिशों से सबका सहयोग लेकर स्वच्छ करके आगामी पथ स्वच्छ करना जरूरी है।

(१) सम्मेलन में योजना अ० भा० कांग्रेस की तरह से बहोत विशाल की जानी चाहिये। कार्य शीघ्रता से होना जरूरी है।"

o o o o

मुनि श्री पूरणमलजी महाराज—

"जिस जगह सम्मेलन हो, उस जगह साधुओं के लिये मकानादि का कोई सदोष प्रबन्ध न होना चाहिये। तथा हरएक बात के निर्णय में शान्ति सहित व पक्षरहित शास्त्र को ही प्रधान रखना।"

o o o o

श्री मरुधर श्रावक-सम्मेलन

जब, चारों ओर संगठन की ध्वनि सुनाई दे रही थी, तब भला मारवाड़-प्रान्तीय श्रावक बन्धु ही क्यों निश्चेष्ट बैठे रहते? फलतः उन्होंने भी अपना प्रान्तीय श्रावक सम्मेलन करना तय किया और निम्नानुसार निमन्त्रणपत्रिका प्रकाशित की—

श्री मरुधर श्रावक सम्मेलन।

श्रीमान् धर्म प्रेमी बन्धु श्री!

निवेदन है, कि श्री मरुधर-साधु-सम्मेलन मिती आसोज सुदी १२-१३ तदनुसार ता० ११, १२-१०-३२ मंगलवार, बुधवार को बगड़ी-सज्जनपुर (मारवाड) में होगा।

पाली के मरुधर-साधु-सम्मेलन के कार्य को रचनात्मक-गति देने में आप लोगों के सहकार की पूर्ण आवश्यकता है। हर्ष की बात है, कि इस मौके पर नजदीक में चातुर्मास विराजते प्रवर्तक मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज ठा० ३ सोजतरोड से, प्रवर्तक मुनि श्री धैर्यमलजी महाराज ठा० ४ सेवाज से, मत्री मुनि श्री चौथमलजी महाराज ठा० २ सोंडिया से, मत्री मुनि श्री छगनलालजी महाराज ठाणे ५ बगडी में ही विराजमान हैं। इस तरह चार सम्प्रदाय के चौदह-मुनिराजों के दर्शन (नजदीक होने से कल्पानुसार मुनिराजों से बगडी पधारने की अरज की गई है) होंगे। आवश्यकता पडने पर मुनिवरों की सलाह सूचना मिलती रहेगी।

अर्थात् यह सम्मेलन, साधु-श्रावकों का सयुक्त होगा। जिन शासन की भावी-उन्नति, चारित्रवृद्धि और धर्मोन्नति के कई विचार और कार्य होंगे।

शादी जैसे व्यावहारिक-प्रसंगों में आप जैसा प्रेम रखकर कई दिन बिताते हैं, यह लोकोत्तर धर्मोन्नति के वास्ते दो दिन पधारकर धर्म प्रेम दिखलावें। हमें पूर्ण आशा है, कि इस सुअव-

श्रावकों ने पूछो के तमने कोई ना प्रति मान छे, सिवाय पोताना दृष्टा के प्रेम होय तेवा ना छतां वस्तु ए छे के सौ कोई ना हृदय मां एवी वस्तु नो पलटो थाय ने ज सत्य छे, तेनो अमल थाय, तो सम्मेलन थयु सफल छे ने इष्ट छे

० ० ० ०

पं० श्री नागचन्द्रजी महाराज—

'सम्मेलन नी तिथि नक्की करी नां ने खबर आपवा, मुनिओने विहार कराववा, साधु स्वयंसेवकोए अपरिचितो नी मुश्केलीओ दूर करवी वगेरे'।

० ० ० ०

मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी—

'गोंडल सम्प्रदाय ना साधुओ एकमता थवा थी सम्मेलन श्रेष्ठ थशे'

० ० ० ०

मुनि श्री मूलचन्दजी स्वामी—

'भाग्यवान् मुनिराजो अने श्रावको सम्मेलन मां पधारशे त्यां सम्मेलन सम्बन्धी अमारे कोई पण सूचना करवानी जरूर रहेता नहिं ए चोकस छे'

● ० ० ०

मुनि श्री माणकचन्द्रजी स्वामी—

'योग्य लागे ते सम्मेलन वखते सूचना नी जरूर हशे तो करीश

● ० ● ०

मुनि श्री छगनरामजी स्वामी—

'अग्रेसर साधुओं ने पूछो

० ● ० ०

मुनि श्री संघजी स्वामी—

'अमारा सम्प्रदाय नी एवी इच्छा छे के सर्व ठेकाणे संवत्सरी एक थाय पुनाम साधु साध्विओं माटे एक स्थिर पाठशाला स्थपाय सर्व समिति ना कायदा मुजब वर्ते अने भविष्य मां कोन्फरन्स पण आ कायदा परिपूर्ण रीते अमल मां मूकाय शान्ति थी सम्मेलन पसार थाय एज अमो इच्छीए छीए'

० ● ०

मुनि श्री मामजी स्वामी तथा शतावधानी पं श्री रत्नचन्द्रजी महाराज—

'प्रतिनिधि मुनिराज के जे सम्मेलन मां पधारे तेमणे सम्मेलन ना सब नियमो पालन करावदा जोइये अने पोताना सम्प्रदाय ना अन्य साधुओ पासे पण पालन करावयुं जोइये सम्मेलन ना ठरावो श्रावको ए पण मंजूर राखवा जोइये अने विरोधपक्ष न करें'।

'सम्मेलन मां पधारती वखते पूज्य श्री या प्रवर्तक श्री नी आज्ञा अने सम्मति-पूर्वक पधारे.

० ● ● ●

निम्न प्रस्ताव पास किये गये--

श्री मरुधर-श्रावक-सम्मेलन (बगड़ी)

(ता० ११-१२ अक्टूबर आसोज सुदी १२-१३ पास हुए प्रस्ताव)

(१) श्रीमती कान्फ्रेन्स ने साधु-सम्मेलन भरने का जो स्तुत्य-प्रयास शुरू किया है, उसको यह सम्मेलन हार्दिक अनुमोदन देता है और इस शासन-सेना के पुण्य-यज्ञ में हर प्रकार की यथाशक्ति सेवा देने का मुनिराजों से और जैन-बन्धुओं से आग्रह करता है।

(प्रमुख स्थान से)

(२) श्री वृहत्साधु-सम्मेलन होने के पहले ही पहले गुज्जंर साधु-सम्मेलन राजकोट, मरुधर श्रावक-साधु-सम्मेलन पाली, पजाब साधु-सम्मेलन होशियारपुर, लींबड़ी सम्प्रदाय-साधु-सम्मेलन लींबड़ी, ऋषि-सम्मेलन-इन्दौर आदि जो-जो प्रान्तिक एव साम्प्रदायिक-सगठन हुए हैं, उन्हें यह सम्मेलन सम्मानपूर्ण-दृष्टि से देखता है और वहां पर हुए कार्य के प्रति अपना सन्तोष प्रकट करते हुए वृहत्साधुसम्मेलन की नींव दृढ करने वाले इन कार्यों को सफल बनाने वाले मुनिवरों एवं श्रावक-बन्धुओं को यह सम्मेलन धन्यवाद देता है। (प्रमुख स्थान से)

(३) मरुधर साधु-सम्मेलन पाली में जो-जो प्रस्ताव हुए हैं, वे चरित्र-शुद्धि एव संयम-रक्षा के वास्ते समयोचित एव महत्वपूर्ण हुए है। इस पर गम्भीर परामर्श करके यह सम्मेलन निश्चय करता है, कि पाली में हुए सगठन को दृढ करना, बढाना, प्रस्तावों का पूरा-पूरा पालन करना-कराना बहुत ही आवश्यक है। अतः इन प्रस्तावों का प्रचार करने और पालन कराने के वास्ते, मरुधर-श्रावक-समिति सर्व-प्रकार से प्रयत्न करे।

इस सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधि, अपने-अपने गांवों में बराबर पालन कराते रहेंगे और समिति के कार्य में सदा सहयोग देते रहेंगे।

प्रस्तावक—श्री० मोतीलालजी सा० रातडिया, जोधपुर
अनुमोदक—श्री० अमोलक चन्दजी सा० मूथा कामदार, रायपुर.

(४ अ) पाली के प्रस्ताव न० १० के अनुसार अकेले साधु व आर्याओं का विचरना निषेध किया है। तो भी इस चतुर्मास तक प्रवृत्ति में अधिक सुधार नहीं हुआ है। अतः सम्मेलन उन साधु-साध्वियों को पुनः पुन. चेतावनी के साथ आग्रह करता है, कि वे अकेले साधु या दो आर्या से विचरना छोड़ कर इसी मार्गशीर्ष सुदी १५ तक समुदाय में मिल जायें।

(४ ब) एक से अधिक मुनिवर जो-कि सगठन में अभी तक नही मिले हैं उनको अपने-अपने सम्प्रदाय से शीघ्र सगठित हो जाने को यह सम्मेलन आग्रह-पूर्वक प्रार्थना करता है।

(५) यह सम्मेलन, सगठित-सम्प्रदायों के प्रवर्तक एव मंत्रियों से विनती करता है, कि अपने-अपने सम्प्रदाय के अकेले या संगठित नहीं हुए मुनियों और दो-दो विचरती या आज्ञा से बाहर रही हुई आर्याओं को सगठित करने का भरसक प्रयत्न करें। यदि श्रावक-समिति के सहकार की आवश्यकता हो, तो सहायता लें मगर इसी पौष सुदी १५ तक सगठन कर लें।

प्रवर्त्तकों और श्रावक-समिति के प्रयत्न करने पर भी जो नही मिले या दोष के कारण मिलाने योग्य न हों, तो उसकी यथार्थ-रिपोर्ट वृहत्साधु-सम्मेलन-समिति के मन्त्री को भेजें और मन्त्री

घर पर पधार कर आप जैनधर्म तरफ का अपना पूर्ण प्रेम बतावेंगे।

ता०२५ ६ १६३० लि० बगड़ी श्री संघ

o o • •

इस आमन्त्रणपत्र के प्रकाशित होजाने के बाद, जगह-जगह उत्साह और आनन्द का प्रवाह बहने लगा। सारे ही मारवाड़ के श्रीसंघों का ध्यान, बगड़ी में होने वाले श्रावक-सम्मेलन की ओर आकर्षित हो गया। परिणामतः, निश्चित समय पर यह सम्मेलन हुआ, जिसमें मारवाड़ और मेवाड़ के लगभग ४५ ग्रामों की ओर से ४५० गृहस्थ सम्मिलित हुए। इस सम्मेलन की निम्न रिपोर्ट जैन-प्रकाश में प्रकाशित हुई थी

श्री मरुधर-श्रावक-सम्मेलन आसोज सुदी १२-१३ ता० ११-१२ मंगल बुधवार अक्टू बर १९३२ को बगड़ी सज्जनपुर (मारवाड़) में हुआ। श्री महावीर जैन पाठशाला के भवन में सादगी से आकर्षक रीति से मण्डप तयार किया गया था। मारवाड़ मेवाड़ के करीब ४५ गांव तथा शहरों से लगभग ४५० श्रावक पधारे थे।

सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष श्री लक्ष्मीचन्दजी सा० धारीवाल तथा मंत्री श्री० अमोलक चन्दजी सा लोढ़ा थे। सम्मेलन के प्रमुख श्रीमान् सरदारमलजी सा छाजेड़ (न्यायाधीश शाहपुरा स्टेट) थे।

बगड़ी के हाकिम साहब सर्किल इन्सपेक्टर आदि राजवर्गीय लोग भी सम्मेलन में पधारे थे। बाहर के व स्थानीय सभासद करीब ७०० स्त्री पुरुष थे।

श्री० दुर्लभजी भाई जौहरी जयपुर से श्री० नथमलजी सा० चोरड़िया नीमच से, श्री आनन्दराजजी सुराणा देहली से श्री० छगनीरामजी लोढ़ जोधपुर से, श्री कानूरामजी कोठारी ब्यावर से, श्री० धीरजलालजी तुरखिया ब्यावर से इत्यादि मुख्य मुख्य अन्य-सम्प्रदायों के सज्जन भी पधारे थे।
भोजन प्रबन्ध, सादे भोजन का ही किया था। स्वागताध्यक्ष प्रमुख श्री श्री० चोरड़ियाजी श्री सुराणाजी आदि के मार्गदर्शक-व्याख्यान हुए। नजदीक के मुनि श्री धीरजमलजी महाराज मुनि श्री मिश्रीमलजी महाराज मुनि श्री शार्दूलसिंहजी महाराज आदि पधारे थे। चार सम्प्रदाय के १२ मुनि-वरों ने दर्शन तथा मार्गदर्शक-व्याख्यानों का लाभ दिया।

पहले दिन दोनों प्रमुखों के भाषण साधु सम्मेलन समिति के सहायक-मन्त्री का भाषण मरुधर श्रावक-समिति के मन्त्री का निवेदन, प्रतिनिधियों की लिस्ट, सब्जैक्ट कमेटी का चुनाव आदि कार्य हुए। रात्रि को ७। से १ बजे तक सब्जेक्ट-कमेटी का कार्य चलता रहा। दूसरे दिन सुबह भी बैठक हुई और मरुधर-श्रावक समिति के एक वर्ष के खर्चे के लिये पधारे हुए श्रीसंघों से अपील की गई। फलस्वरूप ३० जगह के श्रीसंघों ने करीब ८५०) रु० दिये।

भोजन के बाद सम्मेलन का कार्य शुरू हुआ।

निम्न प्रस्ताव पास किये गये--

श्री मरुधर-श्रावक-सम्मेलन (बगड़ी)

(ता० ११-१२ अक्टूबर आसोज सुदी १२-१३ पास हुए प्रस्ताव)

(१) श्रीमती कान्फ्रेन्स ने साधु-सम्मेलन भरने का जो स्तुत्य-प्रयास शुरू किया है, उसको यह सम्मेलन हार्दिक अनुमोदन देता है और इस शासन-सेना के पुण्य-यज्ञ में हर प्रकार की यथाशक्ति सेवा देने का मुनिराजों से और जैन-बन्धुओं से आग्रह करता है।

(प्रमुख स्थान से)

(२) श्री वृहत्साधु-सम्मेलन होने के पहले ही पहले गुर्ज्जर साधु-सम्मेलन राजकोट, मरुधर श्रावक-साधु-सम्मेलन पाली, पजाब साधु-सम्मेलन होशियारपुर, लींबड़ी सम्प्रदाय-साधु-सम्मेलन लींबड़ी, ऋषि-सम्मेलन-इन्दौर आदि जो जो प्रान्तिक एव साम्प्रदायिक-सगठन हुए हैं, उन्हें यह सम्मेलन सम्मानपूर्ण-दृष्टि से देखता है और वहा पर हुए कार्य के प्रति अपना सन्तोष प्रकट करते हुए वृहत्साधुसम्मेलन की नींव दृढ करने वाले इन कार्यों को सफल बनाने वाले मुनिवरों एवं श्रावक-बन्धुओं को यह सम्मेलन धन्यवाद देता है।

(प्रमुख स्थान से)

(३) मरुधर साधु-सम्मेलन पाली में जो-जो प्रस्ताव हुए हैं, वे चरित्र-शुद्धि एव सयम-रक्षा के वास्ते समयोचित एव महत्वपूर्ण हुए हैं। इस पर गम्भीर परामर्श करके यह सम्मेलन निश्चय करता है, कि पाली में हुए संगठन को दृढ करना, बढ़ाना, प्रस्तावों का पूरा-पूरा पालन करना-कराना बहुत ही आवश्यक है। अतः इन प्रस्तावों का प्रचार करने और पालन कराने के वास्ते, मरुधर-श्रावक-समिति सर्व-प्रकार से प्रयत्न करे।

इस सम्मेलन में पधारे हुए प्रतिनिधि, अपने-अपने गांवों में बराबर पालन कराते रहेंगे और समिति के कार्य में सदा सहयोग देते रहेंगे।

प्रस्तावक—श्री० मोतीलालजी सा० रातडिया, जोधपुर

अनुमोदक—श्री० अमोलक चन्दजी सा० मूथा कामदार, रायपुर

(४ अ) पाली के प्रस्ताव न० १० के अनुसार अकेले साधु व आर्याओं का विचरना निषेध किया है। तो भी इस चतुर्मास तक प्रवृत्ति मे अधिक सुधार नहीं हुआ है। अतः सम्मेलन उन साधु-साध्वियों को पुनः पुन. चेतावनी के साथ आग्रह करता है, कि वे अकेले साधु या दो आर्या से विचरना छोड कर इसी मार्गशीर्ष सुदी १५ तक समुदाय में मिल जायँ।

(४ ब) एक से अधिक मुनिवर जो-कि सगठन में अभी तक नही मिले हैं उनको अपने-अपने सम्प्रदाय से शीघ्र सगठित हो जाने को यह सम्मेलन आग्रह-पूर्वक प्रार्थना करता है।

(५) यह सम्मेलन, सगठित-सम्प्रदायों के प्रवर्तक एव मंत्रियों से विनती करता है, कि अपने-अपने सम्प्रदाय के अकेले या संगठित नहीं हुए मुनियों और दो-दो विचरती या आज्ञा से बाहर रही हुई आर्याओं को सगठित करने का भरसक प्रयत्न करें। यदि श्रावक-समिति के सहकार की आवश्यकता हो, तो सहायता लें मगर इसी पौष सुदी १५ तक सगठन कर लें।

प्रवर्त्तकों और श्रावक-समिति के प्रयत्न करने पर भी जो नही मिले या दोष के कारण मिलाने योग्य न हों, तो उसको यथार्थ-रिपोर्ट वृहत्साधु-सम्मेलन समिति के मन्त्री को भेजें और मन्त्री

बहिष्कार के वास्ते जो सूचना देंगे, वह मरुधर के श्रावकों को मान्य होगी। कोई गांव का श्रीसंघ इस बहिष्कार को न माने, तो वहां पर मरुधर-सम्प्रदायों के कोई साधु-साध्वीजी पधारेंगे नहीं। यदि ऐसा क्षेत्र विहार के रास्ते में आता हो, तो मात्र एक दिन ठहरेंगे, मगर व्याख्यान नहीं देंगे।

बृहत्साधु-सम्मेलन-समिति के मन्त्रीजी के मार्फत, सभी साधुमार्गी-सम्प्रदायों को भी ऐसे बहिष्कृत-क्षेत्र की सूचना दी जाय और वे भी ऐसे क्षेत्रों में चातुर्मास न करें, ऐसी प्रार्थना की जाय।

(६) अकेले विचरते मुनियों को सम्प्रदाय में मिलाने की गरज से कोशीश करने को यह सम्मेलन निम्न सज्जनों की एक समिति कायम करता है—

१— श्री जसराजजी सा० डागा जयतारण
२— श्री अमोलकचन्दजी सा० मूथा, रायपुर.
३— श्री मूलचन्दजी सा० मोदी ब्यावर
४— श्री पूनमचन्दजी सा० रेड जोधपुर
५— श्री चिम्मनसिंहजी सा० लोढ़ा ब्यावर
६— श्री मीठालालजी सा चोपड़ा अजमेर हर प्रकार की सहायता के लिये

वह कमेटी प्रयास करके कार्तिक सुदी पूर्णिमा तक अपना कार्य पूर्ण करे और परिणाम की रिपोर्ट साधु सम्मेलन समिति के मन्त्री को जयपुर भेजे। खर्च समिति की तरफ से दिया जायगा।

—प्रमुख स्थान से

(७) पाली सगठन के प्रस्ताव तथा संगठन का भंग करने वाले और शिथिलाचारी समूह में विचरने वाले मुनिवरों को भी यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि वे अपनी शुद्धि करके नियमानुसार बर्ताव रक्खें। ऐसे किसी सम्प्रदाय के नियम भंग या शिथिलाचार की शिकायत किसी गांव के श्री संघ से अथवा कान्फ्रेंस के प्रचारक से आवेगी तो श्रावक-समिति यथोचित जांच कर के, मरुधर साधु समिति के प्रवर्तक व मन्त्रियों से परामर्श करके उचित प्रबन्ध करेगी।

प्रस्तावक— श्री पूनमचन्दजी सा० सुराणा पीपाड़
अनुमोदक— श्री कालूरामजी सा० कोठारी ब्यावर

(८) यह सम्मेलन मरुधर मुनिवरों से साग्रह प्रार्थना करता है कि वे पुस्तकादि भंडार रखने की या श्रावकों के पास रखाने की प्रथा बंद कर दें। अपने अपने भंडार का परिग्रह (ममत्व) छोड़ कर उसे मरुधर श्रावक समिति के सिपुर्द कर दें। ताकि मरुधर श्रावक समिति सभी भंडारों से सुभीते के स्थान पर या जहां स्थान में व्यवस्थित शास्त्र भंडार कायम कर सके।

(प्रमुख स्थान से)

(९) एक दो मुनिराज व वैरागी के पीछे अलग २ पंडित रखने की प्रथा बन्द करके यह सम्मेलन चाहता है कि एक सिद्धांत शाला स्थापित हो। जहां पर सभी विद्यार्थी मुनि और वैरागी रह कर अभ्यास करें। इस सिद्धांतशाला के वास्ते मरुधर-श्रावक-समिति निम्न प्रकार करे—

मरुधर-मुनियों और वैरागियों में कितने और क्या २ अभ्यास करते हैं ? कितने किस योग्यता के, कितने वेतन पर और किसकी तरफ से पण्डित रक्खे गये हैं ? अब कितने वर्ष तक मुनि या वैरागी को पढ़ाने के भाव हैं ?

उपरोक्त बातों की तलाश कर के इसी पौष सुदी १५ तक रिपोर्ट तैयार कर के वृहत्साधु सम्मेलन के मन्त्री को देवे ।

रिपोर्ट मिलने पर अभ्यासक्रम बनवाने की ओर अन्य साधन प्राप्ति के लिये कोशीस की जाय ।

ऐसी सुविधा साध्वियों के वास्ते भी जरूरी है ।

प्रस्तावक— श्री लक्ष्मीचन्दजी सा धारीवाल, बगड़ी
अनुमोदक— श्री चिम्मनसिंहजी लोढ़ा, ब्यावर.

(१०) यह सम्मेलन चाहता है कि दीक्षा की योग्यता की जांच करने के बाद ही दीक्षा दी जाय । अतः निश्चित किया जाता है, कि पांच समयज्ञ एवं शास्त्रज्ञ श्रावकों की 'वैरागी योग्यता-परीक्षक समिति' बनाई जाय । वैरागी वैरागिनि को दीक्षा देने के पहिले उनकी गुरु की सम्मति पूर्वक जहां पर दीक्षा दिलाना हो, वहा का श्रीसंघ वैरागी की उम्र, अभ्यास, नैतिक जीवन, शारीरिक एवम् मानसिक हालत, कौटुम्बिक आज्ञा पत्र, गुरु ने व श्री संघ ने कितनी मुद्दत तक पास रख कर अनुभव किया ? इन बातों की जांच कर लिखित रिपोर्ट के साथ उक्त परीक्षक-समिति के सामने वैरागी को भेजकर, सम्मति आने पर दीक्षा दी जाय । दीक्षा देने के पहिले, बालिग वैरागी से, गवर्नमेण्ट स्टाम्प पर कानूनन इकरारनामा लिखा लिया जाय । बिना ऐसी कार्यवाही के दीक्षा नहीं दी जाय ।

वैरागी - योग्यता- परीक्षक समिति

१— श्री सरदारमलजी सा० छाजेड, जज साहब शाहपुरा
२— „ नाहरमलजी सा० पारेख, जोधपुर„
३— „ धूलचन्दजी सा० सुराणा, पीपाड़
४— „ अमोलकचन्दजी सा० लोढ़ा, बगड़ी
५— „ शेषमलजी सा० बालिया, पाली.

समिति का कोरम तीन का रहेगा ।

प्रस्तावक— श्री विजयमलजी सा कुम्भट, जोधपुर
अनुमोदक— श्री जालमचन्दजी सा० बाफना, बड़लु

(११ यह सम्मेलन निश्चय करता है, कि दीक्षा के पहिले एक बिनौली, दीक्षा के रोज जुलूस से अधिक आडम्भर न किया जाय और उपकरण, जीमण, प्रभावना समेत अधिक से अधिक रु० ५००) तक खर्च किये जाय । इससे भी कम करने की कोशीस की जाय, किन्तु ज्यादा खर्च न करें ।

प्रस्तावक—श्री तिलोकचन्दजी रूठिया, जोधपुर
अनुमोदक— श्री मागी लालजी सा० डोसी

(१२) यह सम्मेलन निश्चित करता है, कि मुनियों के दर्शनार्थ पधारने वाले दर्शनार्थियों का आवश्यक हो तो सादे भोजन से स्वागत करे और मिश्री आदि किसी तरह की प्रभावना न कराई जाय। यदि कोई मिष्टान्न भोजन देवे, तो जीमना नहीं।

प्रस्तावक श्री मथमलजी सा० बोरदिया नीमच
अनुमोदक— श्री आनन्दराजजी सुराना, जोधपुर

(१३) यह सम्मेलन निश्चित करता है कि, तपस्यादि महोत्सव पर दर्शनार्थियों को बुला कर आडम्बर व फिजूल खर्च न किया जाय। उसी शहर में अहिंसा, ज्ञान ध्यान दान तपादि से प्रभावना की जाय।

(प्रमुख स्थान से)

(१४) यह सम्मेलन निश्चित करता है कि साधु साध्वी की मृत देह का अग्नि-संस्कार यथा शीघ्र कर दे और पालकी चन्दनकाष्ठ उछालनी आदि में रुपये १००) तक खर्च लगावें अधिक खर्च न करें।

प्र०— फूलचन्दजी सा बरलोटा ब्यावर
अ०— श्री लालचन्दजी कोठारी शिवगञ्ज

(१५) धर्म ध्यान और कर्त्तव्य भाव के वास्ते हर जगह पर वाचनालय और जैन पाठशाला की अनिवार्य आवश्यकता है। अतः हरएक श्री संघ को वाचनालय और रोज एक घण्टे भर धार्मिक शिक्षण दिलाने को जैन पाठशाला शुरू कराने का यह सम्मेलन आग्रह करता है। जहां पर वाचनालय और पाठशाला शुरू कराने का यह सम्मेलन आग्रह करता है। जहां पर यदि वाचनालय और पाठशाला शुरु कराने के अपूर्ण साधन या बाधाएं हों तो श्री मरुधर श्रावक समिति से सहयोग मांगे।

(प्रमुख स्थान से)

(१६) मेड़ता पट्टी मारवाड़ पट्टी और सोजत पट्टी के सुभीते के स्थान पर जैन बालकों को रहने व अभ्यास करने के सुभीते वाले विद्यालय या बोर्डिंग की आवश्यकता है। अतः यह सम्मेलन मरुधर श्रावक समिति से आग्रह करता है कि बगड़ी की व पाली की पाठशालाओं के साथ छात्रावास (बोर्डिंग) शुरू करने का तथा मारवाड़ मेड़ता के बीच में कोई साधन सम्पन्न विद्यालय मय छात्रावास के खोलने का प्रबन्ध करें।

(प्रमुख स्थान से)

(१७) यह सम्मेलन मरुधर जैन बन्धुओं से आग्रह पूर्वक प्रार्थना करता है कि वे अपनी सन्तान (बालक बालिकाओं) को धार्मिक और व्यावहारिक माध्यमिक शिक्षण अनिवार्य तौर पर दिलाते रहें।

प्र — श्री अमीलकचन्दजी सा० बोहरा, बगड़ी
अनु०— श्री धीरजलालजी तुरखिया ब्यावर

(१८) यह सम्मेलन मानता है, कि पूज्य श्री रतनचन्द्रजी महाराज की संप्रदाय, पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की संप्रदाय तथा पूज्य श्री नाथूरामजी महाराज की सम्प्रदाय भी मरुधर सम्प्रदायों में से है। अतः उक्त तीनों सम्प्रदायों को, संयुक्त छहों मरुधर सम्प्रदायों से संगठित करने को, निम्न सज्जनों की एक कमेटी नियुक्त की जाती है।

१— रायसाहिब श्री मोतीलालजी सा० मुथा, सतारा.
२— राय० ब० श्री चांदमलजी सा० नाहर, बरेली
३— श्री नथमलजी सा० नागौरी, भीलवाड़ा.
४— श्री सरदारमलजी सा० छाजेड जज शाहपुरा
५— श्री किशनदासजी सा० मूथा, अहमदनगर.
६— श्री शेषमलजी सा० वालिया, पाली

पत्र व्यवहार प्रमुख श्री की आज्ञा से आफिस मंत्री करेंगे।

नोटः- दो सज्जनों के नाम पूज्य श्री नाथूरामजी महाराज के साधुओं से लिये जायंगे।

(प्रमुख स्थान से)

(१९) यह सम्मेलन मरुधर मुनिवरों से विनती करता है, कि वे अपनी अपनी सम्प्रदाय के वृद्ध ग्लान साधु साध्वियों की तरफ से प्रार्थना आने पर उनको शुद्ध करके उनकी सेवा करने का व निभा लेने का प्रबन्ध करें। (प्रमुख स्थान से)

(२०) धर्म के शुद्धाचरण के वास्ते ज्ञान और क्रिया की आवश्यकता है। इसकी प्रवृत्ति बढ़ाने को यह सम्मेलन प्रत्येक जैन से आग्रह करता है, कि हरएक जैन प्रतिदिन दो घड़ी तक स्वाध्याय समझ पूर्वक ज्ञानाभ्यास [सामायिक के साथ] तथा प्रति मास कम से कम एक पौषध करने को प्रतिज्ञा बद्ध हों।

प्रस्तावक— श्री कालूरामजी सा० कोठारी, ब्यावर
अनुमोदक— श्री पन्नालालजी सा० रांका, ब्यावर.

(२१) साधु साध्वियों की सेवा और लाभ छोटे बड़े सभी स्थानों को मिलता रहे, तो धर्म जागृति व प्रचार हो सकता है। अतः यह सम्मेलन, मरुधर साधु साध्वियों से प्रार्थना करता है, कि वे तीन मुनिराज या पांच आर्याजी से अधिक संख्या में न विचरें। [विद्यार्थी, रोगी, वृद्ध तपस्वी के कारण आगार। और छोटे गांवों में भी कुछ दिन अवश्य ठहरते रहें। तथा एक ही शहर में अधिक चौमासे न करते हुए जहां किसी का चौमासा न हो वहां की विनती स्वीकारें। चातुर्मास की विनती प्रवर्त्तकों से ही की जाय।

प्र० श्री मूलचन्दजी सा० मोदी ब्यावर.
अनु० श्री आलमचन्दजी सा० बाफणा

(२२) यह सम्मेलन सभी सज्जनों से विनती करता है कि वे किसी साधु या साध्वी के विरुद्ध प्रवर्त्तकजी को सूचित किये बिना और उनका जवाब हासिल किये बिना अखबार में कुछ न छपावें।

प्र० श्री पन्नालालजी सा रांका ब्यावर
अनु० श्री कानूरामजी सा कोठारी ब्यावर

(२३) यह सम्मेलन साधु साध्वियों से विनती करता है कि साधु-श्रावक सम्मेलन के प्रस्तावों का पालन करने कराने का जोरदार उपदेश देते रहें। (प्रमुख स्थान से)

(२४) यह सम्मेलन निश्चय करता है, कि धार्मिक उत्सवों पर सादगी और शुद्ध स्वदेशी का उपयोग किया जाय। मुनिराज और उपदेशक लोग इसका अधिक प्रचार करते रहें।
(प्रमुख स्थानसे)

(२५) यह सम्मेलन सगठित मरुधर सम्प्रदायों से प्रार्थना करता है कि, वे अपना एक मुख्य प्रवर्तक (आचार्य) बना लें और अधिक निकट सम्बन्ध कर लें।

प्र० श्री अमोलकचन्दजी सा० लोढ़ा बगड़ी
अनु० श्री पुखराजजी सा० नाहर, पाली

(२६) मरुधर सगठन को सुदृढ़ बनाने व पाली सम्मेलन के प्रस्तावों का पूर्णतया पालन कराने तथा इस सम्मेलन के कार्य को गति देने आदि रचनात्मक कार्यों के वास्ते सभी संप्रदायों के प्रतिष्ठित ४० सज्जनों की समिति चुनी जाती है।

पूज्य श्री स्वामीदासजी महाराज की सम्प्रदाय के आठ प्रतिनिधि —

(१) श्री सरदारमलजी छाजेड़ जज साहब शाहपुरा स्टेट
(२) श्री केशरीमलजी रांका ब्यावर
(३) श्री इन्द्रमलजी महेता, हरमाड़ा पो० किशनगढ़
(४) श्री जालिमसिंहजी मेड़तवाल बी० ए० केकड़ी
(५) गुलाबचन्दजी मूलचन्दजी छाजेड़ केकड़ी
(६) शिवराजजी कोठारी ब्यावर
(७) गोपीलालजी भमरचन्दजी छाजेड़ किशनगढ़
(८) , केशरीमलजी चोरड़िया जयपुर

पूज्य श्री चौथमलजी महाराज की सम्प्रदाय के ४ चार प्रतिनिधि—

(१) श्री धूलचन्दजी सुराणा पीपाड़ सिटी
(२) सुखीलालजी श्रीश्रीमाल पाली
(३) , सागमलजी पारख जोधपुर
(४) , सुखीलालजी बांठिया सोजत सिटी

पूज्य श्री मानकचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के चार ४ प्रतिनिधि—

(१) श्री सौभाग्यमलजी बाथेल ब्यावर

(२) „ सुगनचन्दजी नाहर, अजमेर.
(३) „ उगमसिंहजी कोठारी मसूदा.
(४) फतेहमलजी धाड़ीवाल, भीलवाड़ा,

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की सम्प्रदाय के ८ आठ प्रतिनिधि—

(१) श्री शेषमलजी बालिया, पाली.
(२) „ मोतीलालजी रातड़िया, जोधपुर
(३) „ जसराजजी डागा, जैतारण.
(४) „ तेजराजजी धोका सोजत.
(५) „ तेजराजजी लूंकड़, जोधपुर.
(६) „ अमोलकचन्दजी लोढ़ा, बगड़ी.
(७) „ अनूपचन्दजी पूनमिया, सादड़ी.
(८) „ उदैराजजी मुणोत, पीपाड़.

पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सं० के सौलह १६ प्रतिनिधि—

(१) श्री मूलचन्दजी मोदी, ब्यावर.
(२) „ मिश्रीमलजी मुणोत, ब्यावर.
(३) „ आनन्दराजजी सुराणा, जोधपुर.
(४) „ भँवरलालजी जालोरी, जोधपुर.
(५) „ हस्तीमलजी सुराणा, पाली.
(६) „ लखमीचन्दजी लोढ़ा, नागौर.
(७) „ हंसराजजी प्रेमराजजी कांकरिया, हरसोलाव.
(८) „ रावतमलजी सुराणा, कुचेरा.
(९) „ मोहनमलजी चोरड़िया, मद्रास.
(१०) „ शम्भूमलजी मूथा, मद्रास.
(११) „ दुलराजजी बोहरा, बेंगलौर.
(१२) „ चुन्नीलालजी कटारिया, रालेगांव.
(१३) „ केसरीमलजी नाहटा, सोजत.
(१४) „ मिलापचन्दजी लोढ़ा, नागौर.
(१५) „ तेजमलजी पारख, तिंवरी
(१६) „ किशनलालजी मूथा, अहमदनगर.

नोट — ४ सम्प्रदायों के नाम आए हैं। अन्य सम्प्रदायों से नाम हासिल करके नियमानुसार बढ़ाने का मन्त्री को हक होगा।

यदि कोई सभ्य सेवा न देना चाहें या न कर सकें, तो प्रमुख श्री व प्रवर्त्तक मुनिश्री की राय से दूसरे सभ्य चुने जा सकेंगे।

उक्त समिति का आफिस फिलहाल जोधपुर में ही रक्खा जावे।

प्रमुख— श्री सरदारमलजी सा० छाजेड़ अज. शाहपुरा
खजांची— " , ,
मन्त्री— श्री० मोतीलालजी रातड़िया, जोधपुर
सहमन्त्री— श्री विजयमलजी कुम्भट जोधपुर

आवश्यकता होने पर इन तीनों की सम्मति से उपरोक्त कमेटी बुला कर या पत्र द्वारा कार्य करेंगे। कोरम ५ का रहेगा।

सभी पत्र व्यवहार पेड मन्त्री के द्वारा और प्रवास आदि का काम मन्त्री द्वारा होगा पेड मन्त्री, ऑनररी मन्त्री की आज्ञा में रहेगा। प्रथम वर्ष के खर्च का बजट रु० ८०) नक्द स्वीकार किया जाता है।

(प्रमुख स्थान से)

(२७) यह सम्मेलन, मुनि श्री मिश्रीलालजी से विनती करता है कि वे जो सत्याग्रह करना चाहते हैं, वह बृहत्साधु सम्मेलन होने तक स्थगित कर दें। इस समय से पहले अपनी सम्मति राय में मिल जायँ।

प्रस्तावक श्री० विजयमलजी कुंभट जोधपुर
अनुमोदक—श्री किस्मनसिंहजी लोढ़ा ब्यावर.

(२८) यह सम्मेलन सभी शहर व गांवों के श्रीसंघों से विनती करता है कि इस श्रावक-समिति के प्रचार के वास्ते स्थान-स्थान पर समिति के ऑफिस चालू करें

(प्रमुख स्थान से)

(२९) यह सम्मेलन श्रीमान् प्रमुख सा० को, बाहर से पधारे हुए गृहस्थों को, स्वागत कारिणी-समिति के सभी कार्यकर्ताओं को और महावीर जैन-पाठशाला के स्वयंसेवक दल को साभार धन्यवाद देता है।

प्रस्तावक—श्री दुर्लभजी भाई त्रि० जौहरी.
अनुमोदक—श्री धीरजलालजी के० तुरखिया

उपरोक्त २९ प्रस्ताव, इस सम्मेलन में हम लोगों के सामने सर्वसम्मति से पास हुए हैं वे सब हमें मंजूर हैं।

(सभी आगत-सज्जनों के हस्ताक्षर असल-कॉपी में हैं।)

इस तरह से, बगड़ी का यह महत्वपूर्ण सम्मेलन समाप्त हुआ।

इस अध्याय को समाप्त करने से पूर्व भीलवाड़े (मेवाड़) में हुए पूज्य श्री मुन्नालाल जी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि-सम्मेलन का वर्णन करना भी आवश्यक है।

अखिल-भारतीय साधु सम्मेलन का नाम सुनकर, उत्साह जीवन और धर्म प्रेम की जो लहर चली थी, वह सारे भारत को अपने प्रभाव से प्रभावित करने में सफल हुई। ऐसी स्थिति में उपरोक्त सम्प्रदाय अपना सम्मेलन करने से क्यों चूकने लगती ? परिणाम यह हुआ कि अखिल भारतीय साधु-सम्मेलन से कुछ ही समय पूर्व भीलवाड़ में यह सम्मेलन सम्पन्न हुआ, जिसकी निम्न रिपोर्ट जैनप्रकाश में प्रकाशित हुई—

भीलवाड़े में पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय का मुनि-सम्मेलन

वातावरण में अपूर्व आनन्द

पूज्य श्री अमोलखऋषिजी का सफलसन्देश

मेवाड के प्रसिद्ध नगर भीलवाड़े में ता० २६ २-३३ को पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनिवरों का सम्मेलन होने से, इस सम्प्रदाय के क़रीब ३६ मुनिराज पधारे थे। पूज्य श्री अमोलखऋषिजी महाराज ने ठाणा ६ से पधारने की कृपा की थी। सतियाँ भी उस समय विराजित थी। इस प्रकार, बहुत-से मुनिगण व सतियों के विराजने से, नगर में बडे ही आनन्द की लहर पैदा हो गई थी। बहुत से गांवों के प्रतिष्ठित-महानुभावों ने भी पधारने की कृपा की थी। प्रात काल व्याख्यानों में, एक समवसरणसा दृश्य हो रहा था। व्याख्यान, पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज पूज्य श्री अमोलखऋषिजी महाराज, प० मुनि श्री खूबचन्द्रजी महाराज और प्रसिद्ध वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज फरमाते थे। व्याख्य नों में, नगर के सहस्रों मनुष्यों का जनसमूह उमड़ा था। दृश्य बडा रोचक व आनन्दायी था। मि० फाल्गुन शुक्ला द्वितीया को दो बजे मुनियों का सम्मेलन तथा श्री जैनोदय-पुस्तक प्रकाशक-समिति की कार्यवाही हुई। प्रथम मंगलाचरण हुआ, उसके बाद पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज व प० मुनि श्री खूबचन्दजी महाराज ने सम्प्रदाय का परिचय दिया। तत्पश्चात्, प्रसिद्ध-वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने, 'सम्मेलन कैसे सफल हो' इस पर विवेचन किया। बाद में, मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज ने, निम्नलिखित प्रस्तावों को पढ़ सुनाया, जो मुनियों ने अपनी तीन-रोज की मीटिंगों में निश्चित किये थे।

सम्मेलन में पास हुए प्रस्ताव —

(१) यह सम्मेलन, अजमेर में होने वाले बृहन् मुनि-सम्मेलन के सफलीभूत होने की हार्दिक-भावना रखता है।

(२) गुर्जर, पजाब, मालवा, मेवाड, मरुधर, महाराष्ट्र आदि प्रान्तों से परिश्रम उठाकर, पूज्य मुनिराज अजमेर महासम्मेलन में पधार रहे हैं, उन मुनिराजों के प्रति यह सम्मेलन हार्दिक धन्यवाद प्रकट करता है।

(३) यह सम्मेलन, इन्दौर, पाली, राजकोट, होशियारपुर, महेन्द्रगढ़, लींबड़ी, ब्यावर, प्रतापगढ,कलोल आदि स्थानों में जो साम्प्रदायिक संगठन एव प्रान्तिक-सम्मेलन हुए हैं, उन पर सन्तोष प्रकट करता है।

(४) अखिल-भारतवर्षीय महा-सम्मेलन अजमेर में सम्मिलित होने के लिये वे प्रतिनिधि उपस्थित होंगे, जिनके लिये पूज्य श्री हुक्म फरमावेंगे। क्योंकि पूज्य श्री की तबियत अस्वस्थ है। अतः उनके ब्यावर पधारने पर जैसा निश्चित होगा, वैसा पालन किया जायगा।

(५) पूज्य श्री हुकमीचन्दजी महाराज की दोनों सम्प्रदायों को एक करने के विषय में,

इस सम्प्रदाय के विद्यमान आचार्यश्री ने, मुनि श्री मिश्रीलालजी की प्रतिज्ञापूर्ति करने के लिये जो अभिवचन दिया है, उसकी पूर्ति करने के लिये यह सम्मेलन हार्दिक भावना प्रकट करता है।

(६) इसी अभिवचन की पूर्ति करने के हेतु यह सम्मेलन, आचार्य श्री की शारीरिक-अस्वस्थता विशेष होने से अपने कन्धों पर उठाकर मन्दसौर से भीलवाड़ा तक लाये हैं। जिससे मुनियों को इस शीतकाल में कई प्रकार के कष्ट सहन करने पड़े। इसी कारण से पूज्य श्री, माघ सुदी १४ गुरुवार को भीलवाड़े पहुंच सके। आचार्य श्री की शारीरिक अस्वस्थता विशेष होने के कारण, मन्दसौर श्रीसंघ की तरफ से मिती माघ शुक्ला ३ को ही, पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज सा० की सेवा में, "श्री हुक्मीचन्दजी हितेच्छु श्रावक मण्डल" 'मन्त्री, साधु सम्मेलन समिति" जयपुर, स्वागत कमेटी व कान्फरेन्स-आफिस और समाचारपत्र आदि के मारफत लिखित-सन्देश भिजवा दिया गया था कि पूज्य श्री की अस्वस्थता विशेष होने के कारण माघ सुदी १५ तक ब्यावर के निकटवर्ती भीलवाड़े तक पहुंच सकेंगे। वास्ते पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज भी भीलवाड़े तक पधार जायें ताकि नियत मिती पर एकता सम्बन्धी विचार-विनिमय होजावे। परन्तु किसी भी तरफ से कोई उत्तर नहीं मिला और न पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज भी इधर पधारे फिर भी यह मुनि-मण्डल निश्चय करता है कि आचार्य श्री को हर प्रकार से कष्ट सहन करते हुए भी करीब १५ दिन के लगभग ब्यावर पधार्पण कराने की भरसक कोशिश करेंगे।

(७) सच्चरित्र चूड़ामणि क्रियापात्र घोर तपस्वी पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय में समय-समय पर ज्ञान दर्शन, चारित्र की वृद्धि के हेतु जो नियमोपनियम बनाये गये हैं उनका इस सम्प्रदाय में यथाविधि पालन होता है। फिर भी उन्हीं नियमों व उपनियमों पर विशेष लक्ष्य रख कर, पालन करने की, यह सम्मेलन, इस सम्प्रदाय के सब साधुओं के प्रति भलामण करता है।

(८) पंचवर्षीय-टीप जो इस समस्त स्थानकवासी कान्फ्रेंस की ओर से प्रकट हुई है उसी को बहुमान देकर इस सम्प्रदाय की तरफ से पालन होता रहा है। आगे भी महा-सम्मेलन में जो सर्वानुमति से इस सम्बन्ध में निर्णय होगा, उसे यह सम्प्रदाय स्वीकार करेगा।

(९) सम्प्रदाय की उन्नति करने के लिये जो भी योजना भविष्य के लिये की जाय, उसके लिये यह सम्मेलन निम्नलिखित-मुनियों की कमेटी कायम करता है—

१—मुनि श्री शंकरलालजी महाराज।
२—तपस्वी श्री मोतीलालजी महाराज।
३—मुनि श्री कस्तूरचन्दजी महाराज।
४—पं० मुनि श्री हजारीमलजी महाराज।
५—पं० मुनि श्री प्यारचन्दजी महाराज।
६—पं० मुनि श्री कमलालजी महाराज।
७—मुनि श्री सिरेमलजी महाराज।

(१०) यह मुनि-मण्डल, शासनाधीश से यह प्रार्थना करता है कि यह महान्-मुनि-धर्म्म सम्मेलन का महत्वपूर्ण कार्य सफल हो। सब की सफलता, कारसता एक हो। सब एकमता के सूत्र में बंधे

और आपसी मनोमालिन्य को मिटाकर, धर्मोन्नति कर भगवान् के मार्ग को दीपावें। ऐसी प्रार्थना है और मुनियों से अनुनय-विनय है कि उपरोक्त सुअवसर करीब १२०० वर्ष की लम्बी-प्रतीक्षा के बाद प्राप्त हुआ है, अतएव इसका लाभ अवश्य उठावे।

(११) यह सम्मेलन, स्था० जैन सम्प्रदाय की बत्तीसों सम्प्रदायों से वात्सल्यभाव रखने का, अपने मुनि-मण्डल से आदेश करता है।

उपरोक्त प्रस्तावों के अतिरिक्त, दो प्रस्ताव और पेश हुए थे। किन्तु उन पर सम्मेलन के बाद विचार करने का ठहराया गया है।

बाद में आगमोद्धारक पूज्य श्री अमोलखऋषिजी महाराज ने जो वक्तव्य दिया, उसका कुछ सार इस प्रकार है :—

"आज, सम्मेलन की जो कार्यवाही हुई, उसे देखकर मुझे प्रसन्नता है। यह कार्यवाही मुझे खात्री करता है कि बृहत्सम्मेलन पूर्ण-सफल होगा। हमारी सम्प्रदाय में जो गच्छ भेद हो गये हैं, उसका कारण मतभेद ही है। भावी-सम्मेलन विद्यमान खामियों को दूर कर देगा। आज, इस सम्प्रदाय के आचार्य के समान शास्त्रवेत्ता, मुझे साधुमार्गी-समाज में क्वचित ही नजर आते हैं। आपके पास शास्त्रों का खजाना भरा है। पूज्य श्री के सभी सन्तों में यह खूबी है, कि वे जैनधर्म की बहुत प्रभावना कर रहे हैं। इस सम्प्रदाय के सन्तों में जो संगठन है, वह पास किये हुए प्रस्तावों से बखूबी जाहिर है। भविष्य में, इस सम्प्रदाय की हम उन्नति चाहते हैं।"

आपके बाद ही साधु सम्मेलन-समिति की तरफ से पधारे हुए, समिति के उपमंत्री श्री० धीरजभाई का भाषण हुआ। आपके बाद, श्रावकों की तरफ से प्रस्तावादि हुए अन्त में भीलवाड़ा श्री संघ की तरफ से, कुँवर मगनमलजी कुहाल ने, आगत, बन्धुओं का अभिनन्दन करते हुए धन्यवाद प्रकट किया।

इस तरह, यह साम्प्रदायिक-सम्मेलन भी समाप्त होगया।

॥ इति पूर्वार्द्ध समाप्त ॥

साधु-सम्मेलन अभी, या फिर

श्री साधु-सम्मेलन समिति के मन्त्री, श्रीयुत दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी का, मुनिराजों को उत्साहित करने वाला जो लेख पहले उद्धृत किया जा चुका है उसके प्रकाशित होने के कुछ दिन बाद ही, शतावधानी पं० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की, निम्न लेखमाला, धारावाही रूप से जैन प्रकाश में प्रकाशित हुई थी। मूल लेख भी गुजराती में है, अतः यहाँ उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है।

महासम्मेलन की नींव कैसे मजबूत हो ?

जैन प्रकाश के, ता० १८ जून के अंक में सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई ने गुर्जर-साधु-समिति को लक्ष्य करके, उत्साहवर्धक शौर्योत्पादक जागृतिजनक यह घोषणा की है कि-

'प्रसूतिसमय प्राप्त, सन्तो जागृत जागृत

'दिल्ली में (पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के समक्ष) सम्मेलन के बीजारोपण के समय को नौ महीने बीत चुके हैं। अतः सम्मेलन की प्रसूति का समय नजदीक आ पहुंचा है। इस लिये हे सन्तो! जागो, जागो शीघ्र जागो। अजमेर की ओर प्रस्थान करो, भव्य सम्मेलनरूपी बालक से मुलाकात करो और उसे श्रृंगार पहनाओ आदि। इस तरह से गुजरात के सन्तों को उत्साहित किया है। दक्षिण के मुनिराज, मालवे के आँगन में एकत्रित हुए वहाँ आकर उन्हें आमन्त्रण दिया है। सारांश यह है कि सारे भारतवर्ष के साधु समाज को जागृत करने के लिये रणसिंगा बजाया है। यद्यपि यह लेख जोश से परिपूर्ण और कायर में भी शौर्य उत्पन्न कर देने वाला है तथापि, उसमें विचार के लिये अवकाश है। भर्तृहरि कहते हैं कि—

> गुणवदगुणवद्वा कुर्वता कार्यमादौ
> परिणतिरवधार्या यत्नतः पण्डितेन।
> अतिरभसकृतानां कर्मणामाविपत्ते
> भवति हृदयदाही शल्यतुल्यो विपाकः॥'

अर्थात्—गुणवाला या दोषवाला छोटा या बड़ा कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से पहले, चतुर मनुष्य को यत्नपूर्वक उस कार्य के परिणाम का अच्छी तरह से निर्णय कर लेना चाहिये। अत्यन्त शीघ्रता से किये हुए कार्य का परिणाम कभी २ विपत्तिरूप हो पड़ता है, जिससे कारण हृदय जलकर राख हो जाता है।

भर्तृहरि का यह कथन, उपेक्षणीय नहीं कहा जा सकता। कहावतें मशहूर हैं, कि 'उतावलेपन से आम नहीं पकते' 'उतावला सो बावला, धीरा सो गम्भीरा' आदि। मन्त्रीजी ने, महासम्मेलन के प्रचार को गर्भरूप मान, उसके जन्म काल की शीघ्र ही सम्भावना जानकर यह हांकल की है। किन्तु हमारा ऐसा विश्वास है, कि महासम्मेलन, यह एक कल्पवृक्ष या दिव्य-भवन है। वृक्ष की जड़ें जितनी गहरी जाती हैं और मकान की नींव जितनी ऊंडी होती है, उतनी ही उसकी मजबूती अधिक हो जाती है। देखिये न, एरण्ड के वृक्ष की जड़ें गहरी न होने के कारण वह शीघ्र सूख जाता है, जबकि आम और खिरनी के वृक्षों की जड़ें अधिक गहरी होने के कारण वे बहुत वर्षों तक ज्यों के त्यों टिके रहते हैं। गीता में कहा है, कि—

'कर्मण्येवाधिकारस्ते, मा फलेषु कदाचन।'

काम करने का तुम्हारा अधिकार है, लेकिन उसके फल की ओर देखने की आवश्यकता नहीं। फल, भले ही देर से आवें। खिरनी (रायण के फल) जितने ही देर से आते हैं, उतनी ही उनमें मधुरता अधिक होती है। जो इमारत नींव के बिना शीघ्रता से तैयार की जाती है, वह शीघ्र ही गिर भी जाती है। ठाणांगसूत्र के चौथे ठाणे में, चार प्रकार के वृक्ष बतलाये हैं—

'उन्नए नाम मेगे उन्नए, उन्नए नाम मेगे पणए।
पणए नाम मेगे उन्नए, पणए नाम मेगे पणए॥'

एक वृक्ष, द्रव्य से उन्नत और भाव से भी उन्नत। अर्थात्, दीखने में तो उन्नत है ही लेकिन फल में भी उन्नत है। दूसरी प्रकार के वृक्ष, दीखने मे तो उन्नत हैं, लेकिन परिणाम और फल में अवनत हैं। तीसरे प्रकार के वृक्ष, दीखने में तो अवनत हैं, लेकिन फल में उन्नत हैं। और चौथी तरह के वृक्ष, दीखने में अवनत और फल में भी अवनत ही होते हैं। सबसे श्रेष्ठ, पहली जाति के वृक्ष समझे जाते हैं। महासम्मेलनरूपी वृक्ष, भी दोनों प्रकार से उन्नत होना चाहिये।

संगठित हुई बत्तीसों सम्प्रदाय के बुद्धिमान्-प्रतिनिधियों की पूरी उपस्थिति हो, सब के नेत्रों से अमृत के झरने झरते हों, एक का मस्तिष्क, दूसरे को ऊंची से ऊंची विचारधारा में निमग्न करता हो, कदाग्रह और क्लेशभाव लेशमात्र भी उपस्थित न हो, इस तरह से क्षेत्र की विशुद्धि की गई हो, व्यक्तिगत भेद और साम्प्रदायिक भेदभाव का किला ज़मींदोज़ कर देने की तैयारी करली गई हो और अखिल भारतवर्ष का साधुसमाज, एक शासन के झण्डे का स्वागत करने के लिये तैयार हो, तभी महा-सम्मेलनरूपी वृक्ष, द्रव्य और भाव अथवा स्वरूप एवं परिणाम से उन्नत हुआ गिना जा सकता है। ऐसी स्थिति प्राप्त करने के लिये, केवल थोड़े दिनों का सहवास ही काफी नहीं है। बल्कि महीने के महीने इस विचार कार्य में व्यतीत कर देने पड़ेंगे। सब साधुगण नहीं, तो मुख्य २ विद्वान और बुद्धिमान तथा दीर्घदर्शी, निष्पक्षपाती, गीतार्थ एवं न्यायदृष्टि वाले सन्त, वल्लभीपुर के भूतकालीन-सम्मेलन की भांति, भिन्न २ दिशाओं से एकत्रित हो, एक जगह चातुर्मास रहकर, भविष्य के लिये गहरा विचार करें, शास्त्रों का संशोधन करें, ऐक्य स्थापित करने के लिये एक समाचारी की सड़क बनावें और पक्खी तथा संवत्सरी के सम्बन्ध में ऊहापोह करके, एक मार्ग ढूंढ निकालें।

चातुर्मास के चारों महीनों मे, व्याख्यानादि इतर कार्यों को बन्द रखकर, केवल ऊपर बतलाये हुए मार्ग का अन्वेषण कर किसी एक निर्णय पर पहुंच जाने के बाद ही महा-सम्मेलन की

बैठक की जाय तो, महा-सम्मेलनरूपी भवन की नींव मजबूत हुई समझी जा सकती है । इस भवन के फिर गिरने का किंचित् भी भय नहीं रह सकता ।

अब, प्रश्न यह है, कि यदि सं १९८९ के फाल्गुण मास में महासम्मेलन करना निश्चित हो, तो ऊपर बतलाई हुई बातों का विचार करने को अवकाश नहीं रह जाता है। इस वर्ष, किसी एक जगह पर मुख्य-मुख्य मुनिराजों का चातुर्मासिक-सम्मेलन होना चाहिये था । वह तो अनेक-कारणों से हो नहीं सका । अनेक स्थलों पर, प्रान्तिक-सम्मेलन भी हुए, लेकिन वे अब तक अपने पैरों के बल पर नहीं खड़े हो पाये हैं उनका कार्य दृढ़ बनाने के लिये, सिंचन की आवश्यकता है । पंजाब जैसे दूरस्थ-प्रदेश के सम्मेलन की सद्भावना वाले विद्वान् मुनिराज, अभी तक सब दिल्ली भी नहीं पहुंच पाये हैं। उनका तथा दूसरों का महा सम्मेलन के समय के सम्बन्ध में क्या अभिप्राय है, यह बात, कितने ही आये हुए पत्रों पर के आधार पर इस लेख में प्रकट की जावेगी। काठियावाड़ के मुनिगण, पालनपुर तक पहुंच गये होते तो अजमेर सरलता-पूर्वक पहुंच सकते थे। पालनपुर वालों की अजमेर जाने वाले मुनिमण्डल के लिये आग्रह भरी प्रार्थना थी। फिर भी दुर्योगवश कोई मुनि वहां नहीं पहुंच सके। केवल मारवाड़ के मुनियों को ही अजमेर समीप रह जाता है इस लिये उनके वहां शीघ्र पहुंचने की व्यवस्था सुविधापूर्वक हो सकती है। किन्तु पांचसो सातसो और आठसो मील दूर के मुनिवरों के सम्बन्ध में भी विचार करना चाहिये या नहीं ! साधुओं का पादविहार रेल्वे विहारी गृहस्थों की तरह सरल नहीं है। श्री दुर्लभजीभाई, प्रान्तिक सम्मेलनों की ऊपराऊपरी दौड़धूप में, रेल्वे विहार के होते हुए भी अनेक बार थक जाते हैं और हाथ में लिये हुए काम को स्थगित कर देते हैं । राजकोट का ही उदाहरण लीजिये। राजकोट सम्मेलन का काम मज़बूत बनाने के लिये एक अठवाड़े तक उनके रुकने की आवश्यकता थी । किन्तु, इसी बीच पाली सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ हो गया। वहां भी उन की ही आवश्यकता थी। क्या सारे स्थानकवासी समाज में, पांच-दस दुर्लभजी भाई नहीं निकल सकते ! फिर, एक ही व्यक्ति पर क्यों यह सारा बोझा ! इस वृद्धावस्था में, वे अकेले कहां कहां पहुंच सकते हैं ! राजकोट में उनके एक अठवाड़ा और न रुक सकने के कारण, जो कार्य शेष रह गया, वह अब यदि महीनों में भी पूरा हो जाय, तो सद्भाग्य मानना चाहिये ।यद्यपि, साधु सम्मेलन समिति का कार्य पूरा हो गया किन्तु अन्य अनेक कार्यों में श्रावकसमिति को मदद की आवश्यकता थी, वह आवश्यकता आजतक ज्यों की त्यों बनी है। कारण, कि श्रावक-समिति की बैठक लींबड़ी में होने पर भी गुर्जर श्रावक-समिति तो अभीतक गर्भ की गर्भ में ही है। अभी तो बन्धारण ही रचा गया है। जन्म कब होगा, यह बात तो मन्त्रीगण दुर्लभजीभाई या मोहनलाल भाई जानें या फिर कोई भविष्यवक्ता ज्योतिषी हो तो वह भले ही जाने। सारांश यह, कि जिस वर्ग में, काम करने वाले और तनमन से बलिदान करने वाले बहुत से मनुष्य न हों, उस वर्ग में यदि शीघ्रता से कोई कार्य करने का प्रयत्न किया जावे तो एक भी कार्य सिद्ध नहीं हो सकता। और उसमें भी यदि चरणविहारी मुनिवर्ग से काम लेना हो, तो शीघ्रता से क्या लाभ हो सकता है !

महासम्मेलन, चाहे जिस तरह हो जल्दी एकत्रित होकर शीघ्र ही बिखर जाय, इसकी अपेक्षा भले ही वह एक वर्ष बाद हो किन्तु संगीन, प्रारूपक और आदर्श हो यह बात सभी स्वीकार करेंगे। भगवत जिन की स्तुति करते हुए उपाध्याय श्री यशोविजयजी कहते हैं, कि प्रभु के साथ रंग लगाना हो तो मजीठ या किरमज का रंग लगाओ। पतंग का रंग किस काम का ! वह, आज तो चमचमा-

ढ करेगा, लेकिन उड़ जायगा। ऐसा रंग अनावश्यक है। ठीक इसी तरह, यदि महासम्मेलन को ग लगाना हो, तो किरमज का रंग लगाओ। भले ही वह रंग बनाने में अधिक परिश्रम पड़े या अधिक मत लगे, किन्तु टिकाऊ तो होजायगा।

महासम्मेलन को अच्छे रंगवाला और टिकाऊ बनाने का उपाय यह है, कि बत्तीसों सम्प्रदाय का आन्तरिक और पारस्परिक-संगठन मज़बूत हो। महासम्मेलन सम्बन्धी आन्दोलन शुरू हुए, तभी से संगठन की शुरूआत हो चुकी है। किन्तु अभी तक थोड़ा हुआ है और अधिक बाक़ी है। संगठन का शुभारम्भ, पंजाब सम्प्रदाय ने किया है। उस सम्प्रदाय में जुड़ने योग्य बड़ी सी दराड़ पड़ गई थी। सवत्सरी और चातुर्मास के काल की मान्यता के सम्बन्ध में, बड़ा मतभेद पैदा हो गया था, एवं खुल्लमखुल्ला दो भाग हो गये थे। महासम्मेलन के बीजारोपण के साथ ही वह दराड़ जुड़ गई, मतभेद दफना दिये गये, वर्षों से बन्द हुआ आहारपानी का व्यवहार और वन्दना-व्यवहार फिर प्रारम्भ हुआ और शिष्य-गुरु-भाव की वृद्धि हुई, इस सम्बन्ध में, पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज आदि अग्रेसर मुनिगण और सतीजी पार्वतीजी आर्याजी को जितना धन्यवाद दिया जाय, वह कम है।

सगठन का दूसरा नम्बर, गुर्जर-साधु-समिति को प्राप्त होता है, इसमें, गुजरात-काठियावाड़ की अधिकाश सम्प्रदायों का समावेश हो जाता है। दूसरे शब्दों में यों कहना चाहिये, साधुमार्गी सम्प्रदाय के मुख्य तीन-विभाग गिने जाते हैं। उनके सस्थापक, मुख्य तीन महापुरुष हुए। धर्मसिंहजी मुनि लवजी ऋषिजी और धर्मदासजी महाराज। इन तीनों का समीकरण, गुर्जर-साधु-समिति में हो जाता है। कारण, कि धर्मसिंहजी महाराज का एक दरियापुरी संप्रदाय है। वह अधिकांश में सुव्यवस्थित है। उसमें आन्तरिक सगठन है। हां, कुछ एकलविहारी भी हैं, किन्तु, वे श्रावक-समिति के प्रयास से एकत्रित हो जावेंगे ऐसा सभव है। लवजीऋषिजी का, गुजरात में एक खभात सम्प्रदाय है। वह भी आन्तरिकसगठन युक्त है। कच्छ काठियावाड़ की शेष संप्रदायें, धर्मदास जी महाराज की हैं। उनमें से, लींबडी सम्प्रदाय का आन्तरिक सगठन कुछ तो पहले से था ही और कुछ अब होगया है। बोटाद और गोंडल सम्प्रदाय का सगठन बाकी है। इस अवसर पर यह बात भी कह देनी चाहिये, कि बोटाद-सम्प्रदाय के कानजी मुनि—जो कि अच्छे व्याख्याता और काठियावाड़ में ख्याति प्राप्त हैं:—से समिति में सम्मिलित होने के लिये बहुत कहा गया, लेकिन उन्होंने अभी तक पूर्ण-रूपेण सहयोग नहीं दिया है यदि, उनका सहयोग प्राप्त होजाय, तो बोटाद तथा गोंडल सम्प्रदाय का आन्तरिक संगठन तुरन्त हो जाय। इस संबध में उनके अनुयायियों का ध्यान आकर्षित करना, अप्रासगिक नहीं कहा जा सकता।

प्रसगवश, इतना कह चुकने के बाद, अब मूल विषय पर आते हैं। गुजरात काठियावाड की आठ सम्प्रदायों का पारस्परिक सगठन, राजकोट मुकाम पर हुआ है। किन्तु, उसे परिपक्व बनाने के लिये शीघ्र ही और एक बैठक होने की जरूरत है।

संगठन का तीसरा नम्बर, पाली-सम्मेलन को मिला है। मारवाड़ की छः सम्प्रदायों का उसमें समावेश होता है। मारवाड़ की इन सम्प्रदायों ने, आशा से कहीं अधिक परिमाण में उत्साह बतलाकर, वर्षों से पड़ी हुई मतभेद

की गुत्थियों को सुलझाया। एकलविहारियों को सम्प्रदाय में मिलाया है और महासम्मेलन के लिये, बहुत कुछ तैयारी कर ली है।

इसके बाद, पंजाब में प्रान्तिक सम्मेलन हुआ। किन्तु, पंजाब, का संगठन हो चुका था। उस संगठन को मजबूत बनाने और पूर्व के स्नेह से, हृदय को जोड़ने के लिये इस सम्मेलन की आवश्यकता थी।

संगठन का चौथा नम्बर, दक्षिण की ओर विचरने वाली ऋषि-सम्प्रदाय को प्राप्त हुआ है। अनेक वर्षों से छूटे हुए मुनिराज इन्दौर मुकाम पर एकत्रित हुए और आदर्श उत्सव एवं आदर्श संयमरक्षक-नियमों से, पक्की पदवी एवं संगठन, समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया और समाज ने उस अनुरूप आदर्शों को अपना लिया है।

ऊपर कहे अनुसार, बत्तीस में से पन्द्रह सोलह सम्प्रदायों का आन्तरिक किंवा बाह्य संगठन हो चुका है और इतनों ही सम्प्रदायों का संगठन बाकी रहा है। इनमें भी, मुख्यतः पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय है। थोड़े समय से ही इसके दो भाग हो गये हैं। दोनों की आन्तरिक व्यवस्था संभव है ठीक हो। किन्तु दोनों का पारस्परिक-संगठन चाहिये वैसा नहीं जान पड़ता। पंजाब में पड़ी हुई दरार को जिस तरह से कान्फ्रेन्स की ओर से गया हुआ डेपुटेशन जोड़ आया, उसी तरह से, क्या इस दरार को नहीं जोड़ा जा सकता? प्रयत्न करने पर क्या नहीं हो सकता। कहा है कि-

उद्योगिनं पुरुषसिंहमुपैति लक्ष्मी
दैवं प्रधानमिति कापुरुषा वदन्ति।
दैवं निहत्य कुरु पौरुषमात्म शक्त्या
यत्ने कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः॥'

प्रयत्न करने पर भी यदि फल की प्राप्ति न हो तो फिर देखना चाहिये, कि प्रयत्न में किसी जगह त्रुटी रह गई है। एक कीड़ी दीवाल पर चढ़ने के प्रयत्न में १०७ बार गिर गई। किन्तु उसने प्रयत्न बन्द नहीं किया। परिणामतः १०८ वीं बार वह अपने निश्चित स्थान पर पहुँच गई और अपना कार्य पूरा किया।

पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज सरल-स्वभावी सूत्र-सिद्धान्त के गहन अभ्यासी और आत्मार्थी-साधु हैं। दूसरी ओर, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज जैन-समाज में प्रखर-विचारक, *प्रभावशाली और आदर्श-पुरुष* हैं। इन दोनों विचारकों का शुद्ध-वातावरण में समागम होना चाहिये। कदाग्रही और अन्धश्रद्धालु-श्रावकों को बीच में न आने देना चाहिये। कारण कि महापुरुषों के निर्मल वातावरण को जब अन्धश्रद्धा की धूल लग जाती है तब परिणाम बुरा होता है।

संयुक्त-कुटुम्ब विभक्त हो जाय इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं। किन्तु विभक्त कुटुम्ब में स्पर्धा के बदले जब ईर्ष्या का प्रचार हो जाता है तब उसका परिणाम, वैर-भाव की वृद्धि साथ साथ मारकाट के उदाहरण तक अनेक स्थलों पर देखने को मिले हैं। महापुरुषों में ऐसी दुर्वृत्ति नहीं होती। किन्तु अन्धश्रद्धालु लोग, अपने भीतर की वैरवृत्ति, वातावरण में फैलाकर
के बीच वैमनस्य उत्पन्न करवा देते हैं। इसी के परिणामस्वरूप विषबेलि बढ़ती जाती है

सी चिटकन बढ़कर बड़ी दराड का स्वरूप ग्रहण कर लेती है। ऐसी प्रवृत्ति के ही कारण, सम्प्रदायों के बीच में खाई पड़ी हुई देखी जाती है। अनेक बार, लेख और पैम्फलेट भी किसी छोटी सी रेखा को दराड के रूप में परिणित कर देते हैं। अभी, थोड़े ही दिन पूर्व जैनप्रकाश में एक लेख छपा था। उसी की प्रतिध्वनि के रूप में, कड़वा साहित्य सामने आया। परिणामतः, शान्त-वातावरण में तूफानी-लहरें उठने लगीं। जो काला-धुआँ अदृश्य हो गया था, भूतकाल में मिल गया था, वह फिर दृष्टिगोचर हुआ।

इस उफान को दबाने के लिये, नीमच की समिति ने प्रयत्न किया। किन्तु, उसे भी छठा प्रस्ताव पास करके हाथ समेट लेना था। सातवाँ-प्रस्ताव, उस सभा की अनावश्यक-उतावल का सूचक है। बहुत से आक्षेप, प्रमाणों से नहीं सिद्ध हो सकते। ऐसा करने का प्रयत्न ही, पारस्परिक-ईर्षाद्वेष को उत्तेजित करके भविष्य, को भयकर बना देता है, इसलिये, मेरी तो नम्र-सलाह यह है, कि समिति की दूसरी-मीटिंग को सातवां-प्रस्ताव रद्द करके आक्षेपों का न्याय करने के बदले, संगठन के पवित्र कार्य के सम्बन्ध में प्रयास करना चाहिये।

समर्थ-व्यक्तियों में सगठन होगा, तो समाज को बड़ा लाभ पहुंचेगा। पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज, थली के विकट-प्रदेश में—तेरापन्थीय प्रदेश में—चातुर्मास रहे। तेरापथियों के हमले के सामने कटिबद्ध हो अड़े रहे और अपना प्रभाव उन पर डाला। यह उनका दृढ़-साहस, धन्यवाद के योग्य है। किंतु एक ही मनुष्य, कितनी जगह पहुँच सकता है? इस समय, यदि उन्हीं की सम्प्रदाय के पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज के परिवार के अन्य विद्वान्-मुनिराजों की सहायता उन्हें मिलती, और वहाँ एक के बाद एक मुनिमण्डल का सतत आवागमन रहता, तो उसका फल कितना अच्छा हो सकता था? संयुक्त-बल से, क्या २ नहीं हो सकता? और विभक्त-बल से कितनी क्षति होती है, यह बात, पाण्डवों और कौरवों के युद्ध के समय, अर्जुन द्वारा पूछे हुए प्रश्न के उत्तर स्वरूप एक श्लोक से सरलतापूर्वक समझी जा सकती है। वह श्लोक यों है—

> 'अन्यै सार्कं विरोधेन, वयं पचोत्तर शतम्।
> परस्पर विरोधेन, वयं पंच च ते शतम्॥'

अर्थात्—यदि, हमारा किसी दूसरे से विरोध हुआ होता, तो उसके सामने खड़े होने को हम १०५ थे। किन्तु, हम लोगों में परस्पर विरोध होने पर, इधर हम लोग ५ हैं और दूसरी तरफ वे सौ। पांच और सौ के परस्पर विरोध का क्या परिणाम हो सकता है, इसकी कल्पना करना कुछ कठिन नहीं है।

पूज्य श्री हुकमीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय का विभक्त-बल, फिर सयुक्त और सुरक्षित होकर, एक दूसरे के कार्य में सहानुभूति रक्खे, यही हमारी इच्छा है।

इन सब कार्यों को पूर्ण करने के लिये, यदि महा-सम्मेलन को एक वर्ष आगे बढ़ जाना पड़े, तो वह निष्फल नहीं, बल्कि सफल ही होगा।

मालवा और मारवाड़ की तरफ, पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की अनेक सम्प्रदायें हैं और साधु साध्वी का बड़ा परिवार है। उनका भी, अभीतक, जैसा चाहिये वैसा संगठन नहीं हुआ है। रतलाम स्थित धर्मदास मित्र मण्डल के उत्साही कार्यकर्तागण, अबतक इस दिशा में कोई कार्य

क्यों नहीं कर सके ? अस्तु, उनके संगठन के लिये भी समय की आवश्यकता है।

जैसा कि सुना जाता है, अजमेर श्रीसंघ की भी यही इच्छा है कि सम्प्रदायों का एक संगठन हो जाने के बाद ही बृहत्-साधु-सम्मेलन हो तो विशेष सुन्दर एवं संगीन कार्य हो सकता है। मूलप्रश्न की, किसी भी सम्प्रदाय की कोई बात सम्मेलन में न आने पावे, ऐसी उनकी इच्छा उचित ही है। अजमेर, ऑपरेशन करने का अस्पताल न बने बल्कि भविष्य के सुधार का सेनीटोरियम बने, यह उनकी भावना सफल हो, इसी शर्त पर सम्मेलन-समिति को प्रयत्न करना है।

बुद्धिमान् वर्ग, इस बात को स्वीकार करेगा कि साधु मार्गी समाज की कुल बत्तीसों सम्प्रदाय का आन्तरिक संगठन तो अवश्य ही होजाना चाहिये। मुख की बत्तीसी का प्रत्येक दाँत मज़बूत होगा, तभी भलीभांति चबाया जा सकता है। और तभी भलीभांति पाचन हो सकता है। ठीक इसी तरह से, जब बत्तीसों सम्प्रदायें अपना २ संगठन करके मज़बूत होगई होंगी तभी महासम्मेलन के सयुक्त विचारों को पचा सकेंगी। जो सम्प्रदायें, स्वयमेव अपना संगठन न कर सकें, उन्हें उनकी पड़ोसी सम्प्रदाय या दूसरी बड़ादी की सम्प्रदाय वालों की सहायता मिलनी चाहिए। इसके अतिरिक्त, ऐसे कार्य में कान्फरेन्स को भी सहायता करनी चाहिये। जहां २ एक् ढीले पड़ गये हों वहां उन्हें मज़बूत करके और सब पुर्ज़े व्यवस्थित करके नाव को सागर में डालें तभी तर और तार सकते हैं। नहीं तो दोनों डूब जायेंगे। सम्प्रदाय के संगठन का तात्पर्य यह है, कि सम्प्रदाय में, कार्यकर्त्ता नेता मुकर्रर हो जाने चाहियें। कुटुम्ब, जाति, समाज या सम्प्रदाय में, एक बुद्धिमान नेता हो तभी वह सुरक्षित रह सकती है। कहा है कि—

'सर्वेऽपि यत्र नेतारः सर्वे पण्डितमानिनः।
सर्वे महत्त्व मिच्छन्ति तद् वृन्दमवसीदति ॥

अर्थात्—यदि समाज का प्रत्येक व्यक्ति नेता बन बैठे, सब लोग अपने आपको पण्डित मान बैठें, सब लोग बड़प्पन की इच्छा रक्खें तो वह समाज अवश्य छिन्न भिन्न होकर नष्ट हो जाता है।

जहां, प्रजासत्तात्मक—राज्य होता है वहां भी एक प्रेसीडेन्ट अवश्य चुना जाता है। बिना व्यवस्था के समाज की गाड़ी एक कदम भी आगे नहीं चल सकती।

जिस तरह से पूज्य सम्प्रदाय ने अनेक-वर्षों से छिन्न-भिन्न हुई स्थिति को ठीक करके एक प्रमुख के अधीन सम्प्रदाय की व्यवस्था की है उसी तरह से बत्तीसों सम्प्रदाय की व्यवस्था होनी चाहिये। शास्त्रानुसार आचार्य उपाध्याय प्रवर्तक, गणी और गणावच्छेदक की योजना करके, सम्प्रदाय को आदर्श सम्प्रदाय बनाना चाहिये। दो-दो और चार चार साधुओं की सम्प्रदाय न होनी चाहिये। जिस सम्प्रदाय में साधुओं की संख्या कम हो गई हो, और आचार्य उपाध्याय आदि की योजना न हो सकती हो तो उस सम्प्रदाय को अपने समीपस्थ सम्प्रदाय से मिलाकर, तदनुकूल व्यवस्था करनी चाहिये। छोटी छोटी सम्प्रदाय मिलकर बड़ी सम्प्रदाय बनें और बड़ी सम्प्रदाय एक रूप होकर, अभिमत साधुमार्गी एक ही सम्प्रदाय हो जाय, तभी महासम्मेलन का उद्देश्य सफल हुआ समझा जायगा। इसलिये, ऐक्य शृंखला तय्यार करने से पूर्व उसकी कड़ियां मज़बूत तय्यार करनी चाहिये। इस तरह, यदि प्रत्येक सम्प्रदाय का संगठन हो जाय तो एक भी शिथिलाचारी या स्व

च्छन्द विचरने वाला न दीख पड़े। इतना कार्य तो महा सम्मेलन से पूर्व ही हो जाना चाहिये। और यदि यह हो जाय, तो महासम्मेलन का तीन चौथाई कार्य पूरा होगया समझा जायगा।

प्रतिक्रमण करने से पूर्व, जिस तरह से क्षेत्रशुद्धि की आवश्यकता होती है, उसी तरह से, महासम्मेलन से पहले भी क्षेत्र विशुद्धि नेताओं के हृदय की विशुद्धि की आवश्यकता है। किसान, खेत को साफ करने के बाद ही उसमे बीज बोता है। इसी तरह से, हम लोग भी पहले हृदय को विशुद्ध करके, सम्प्रदाय को व्यवस्थित बना, महासम्मेलन मे जाकर, शास्त्रविचार और शास्त्रोद्धार के बीजों को बोवेंगे, तो उसमें कल्पवृक्ष के-से फल मिलेंगे, ऐसा कहा जावे, तो कुछ अतिशयोक्ति न होगी।

सीढ़ी २ चढ़ना शुरू करें तो दूसरी मंजिल पर पहुंच सकते हैं। यदि, एकदम कूदकर चढ़ने का प्रयत्न करें, तो आकस्मिक दैवयोग से भले ही कभी ऊपर पहुंच जायँ, अन्यथा गिरना तो निश्चित है ही। और कभी मौका पडे इस तरह गिर सकते हैं, कि फिर कभी अच्छे होने का समय ही न आवे। इस लिये—

'शनैः पन्थाः, शनैः कन्थाः, शनैः पर्वतमस्तके।
शनैर्विद्या, शनैः वित्तं पञ्चैतानि शनैः शनैः॥'

हम लोगों को महासम्मेलनरूपी पर्वत की चोटी पर चढ़ना है। हजारों मील का मार्ग तय करके अजमेर पहुचना है। औरों का तो ठीक, लेकिन स्वय महासम्मेलन की प्रेरणा करने वाले पजाब के मुनिवरों की अनुकूलता तथा प्रतिकूलता का विचार करना है। उन्हें अजमेर पहुंचने के लिये कितने समय की आवश्यकता है और तत्काल पहुंचने में कितनी कठिनाई हैं, यह बात नीचे के पत्र से जानी जा सकती है।

'अब, मौसम ग्रीष्म तेज हो गई है। धूप भी बड़ी तेज हो गई है, हवा भी गरम हो गई है। ऐसी गर्मी की हालत में, ज्यादा विहार करना, मेरे विचार में बहुत कठिन है। मुनिसम्मेलन, अजमेर मे होना निश्चित हो चुका है। साधु-मुनिराज, अजमेर से बहुत दूरी पर विचर रहे हैं। चातुर्मास पूर्ण होने के पश्चात्, मार्गशीर्ष, पोष, माघ ये तीन महीने विचरने के रह जाते हैं, जो अजमेर पहुंचने के लिये, ऐसे मुनियों के लिये कठिन है; जो ५०० माइल या इससे भी अधिक फासले पर हैं। इस लिये अगर आपको उचित मालूम हो, तो आप अच्छे योग्य विद्वान् महानुभावों की सम्मति लेकर, यदि सब सहमत होजायँ, तो जैसे ठाणांगसूत्र के पांचवें स्थान, दूसरे उद्देशे के सूत्र ४१३ में वर्णन किया गया है, ५ कारणों से साधु चातुर्मास में भी विहार कर सकता है। जैसे—(१) ज्ञान प्राप्ति के लिये (२) दर्शन प्राप्ति के लिये (३) चारित्र की रक्षा के लिये (४) आचार्य व उपाध्याय के काल कर जाने के लिये (५) आचार्य उपाध्याय की आज्ञा द्वारा वैयावच्च करने के लिये इत्यादि। और इसी सूत्र के १० वें स्थान पर, वैयावच्च दश प्रकार से बतलाई गई है, जिससे कुल गणसंघ भी वैयावच्च मे ही गिना गया है। तो यह अजमेर में होने वाला मुनि-सम्मेलन भी, सघसेवा के लिये ही एकत्रित हो रहा है। इस चातुर्मास में ही, सवत्सरी के पश्चात् आश्विनमास में जो साधु-मुनिराज अजमेर पधारने वाले हैं। और ४०० या इससे ज्यादा माइल के फासले पर हों, वे अजमेर के लिये विहार कर सकते हैं। इस प्रकार की, ऑल इण्डिया कान्फरेन्स की तरफ से घोषणा निकाल दी जावे, तो दूर २ से पधारने वाले मुनियों के वास्ते, बडा सुभीता हो सकता है। तो इस विषय में, आप स्वय विचार कर लें और जैसा आपका विचार हो, उत्तर मे कृतार्थ करें।'

क्यों नहीं कर सके ? अस्तु, उनके संगठन के लिये भी समय की आवश्यकता है ।

जैसा कि सुना जाता है, अजमेर श्रीसंघ की भी यही इच्छा है कि सम्प्रदायों का एक संगठन हो जाने के बाद ही बृहत्-साधु-सम्मेलन हो तो विशेष सुन्दर एवं संगीन कार्य हो सकता है। भूतकाल की, किसी भी सम्प्रदाय की कोई बात सम्मेलन में न आने पावे, ऐसी उनकी इच्छा उचित ही है। अजमेर, ऑपरेशन करने का अस्पताल न बने, बल्कि भविष्य के सुधार का सेनीटोरियम बने यह उनकी भावना सफल हो इसी शर्त पर सम्मेलन समिति को प्रयत्न करना है।

बुद्धिमान् वर्ग, इस बात को स्वीकार करेगा, कि साधु मार्गी समाज की कुल बत्तीसों सम्प्रदाय का आन्तरिक संगठन तो अवश्य ही होजाना चाहिये। मुख की बत्तीसी का प्रत्येक दाँत मज़बूत होगा, तभी भलीभांति चबाया जा सकता है। और तभी भलीभांति पाचन हो सकता है। ठीक इसी तरह से जब बत्तीसों सम्प्रदायें अपना २ संगठन करके मज़बूत होगई होंगी तभी महासम्मेलन के संयुक्त विचारों को पचा सकेंगी। जो सम्प्रदायें स्वयमेव अपना संगठन न कर सकें, उन्हें उनकी पड़ोसी सम्प्रदाय या दूसरी मध्यस्थ सम्प्रदाय वालों की सहायता मिलनी चाहिये। इसके अतिरिक्त, ऐसे कार्य में कान्फरेन्स को भी सहायता करनी चाहिये। जहां २ स्क्रू ढीले पड़ गये हों, वहां उन्हें मज़बूत करके और सब पुर्ज़े व्यवस्थित करके नाव को सागर में डालें तभी तर और तार सकते हैं। नहीं तो दोनों डूब जायेंगे। सम्प्रदाय के संगठन का तात्पर्य यह है, कि सम्प्रदाय में, कार्यकर्त्ता नेता मुकर्रर हो जाने चाहियें। कुटुम्ब जाति, समाज या सम्प्रदाय में, एक बुद्धिमान नेता हो, तभी वह सुरक्षित रह सकती है। कहा है कि—

'सर्वेऽपियत्र नेतारः सर्वे पण्डितमानिनः ।
सर्वे महत्त्व मिच्छन्ति तद् वृन्दमवसीदति ॥

अर्थात्—यदि, समाज का प्रत्येक व्यक्ति नेता बन बैठे, सब लोग अपने आपको पण्डित मान बैठें सब लोग बड़प्पन की इच्छा रक्खें तो वह समाज अवश्य छिन्न भिन्न होकर नष्ट हो जाता है।

जहां प्रजासत्तात्मक—राज्य होता है, वहां भी एक प्रेसीडेन्ट अवश्य चुना जाता है। बिना व्यवस्था के समाज की गाड़ी एक कदम भी आगे नहीं चल सकती।

जिस तरह से ऋषि सम्प्रदाय ने अनेक वर्षों से छिन्न-भिन्न हुई स्थिति को ठीक करके, एक प्रमुख के अधीन सम्प्रदाय की व्यवस्था की है उसी तरह से बत्तीसों सम्प्रदाय की व्यवस्था होनी चाहिये। शास्त्रानुसार आचार्य उपाध्याय प्रवर्तक, गणी, और गणावच्छेदक की योजना करके, सम्प्रदाय को आदर्श-सम्प्रदाय बनाना चाहिये। दो-दो और चार चार साधुओं की सम्प्रदाय न होनी चाहिये। जिस सम्प्रदाय में साधुओं की संख्या कम हो गई हो और आचार्य उपाध्याय आदि की योजना न हो सकती हो, तो उस सम्प्रदाय को अपने समीपस्थ-सम्प्रदाय से मिलाकर उपर्युक्त व्यवस्था करनी चाहिये। छोटी छोटी सम्प्रदाय मिलकर बड़ी सम्प्रदाय बनें और बड़ी सम्प्रदाय एक रूप होकर, अविभक्त साधुमार्गी एक ही सम्प्रदाय हो जाय, तभी महासम्मेलन का उद्देश्य सफल हुआ समझा जायगा। इसलिये, ऐक्य शृंखला तय्यार करने से पूर्व उसकी कड़ियां मज़बूत तय्यार करनी चाहिये। इस तरह यदि प्रत्येक सम्प्रदाय का संगठन हो जाय तो एक भी शिथिलाचारी या स्व

इन सब पर विचार करने से इतना तो स्पष्ट ही जान पड़ता है, कि हम उस तरफ के देशों से किंचित् भी वाकिफ नहीं हैं। इसी तरह, सम्प्रदायों के तीव्र भेदभावों से भी सर्वथा अनभिज्ञ हैं। यदि, इन भेदभावों को कमजोर अथवा निर्मूल किया जा सकता हो, तो उसके लिये नम्र प्रयास करना चाहिये। किन्तु, यह सब, यदि अगले फाल्गुण में ही सम्मेलन करने का आग्रह स्थिर रक्खा जाय, तो कैसे हो सकता है? साधुओं का मार्ग है। पैरों से मुसाफिरी, ४२ और ९६ दोषरहित आहार पाणी लेकर, अपरिचित-देश के हवा पानी और खुराक को पचाकर, भिन्न स्वभाव वाले श्रावकों एवं साधुओं के साथ धर्मचर्चा करना और बहुत दिनों से जमे हुए हठाग्रह को हिलाना-डुलाना, यह सब तो, शासनदेव की सहायता से ही हो सकता है। हमारे जैसे बीमार और अपरिचित क्या कर सकते हैं? किन्तु हां, भावनाओं की लहरें आती रहती हैं, कि महासाधु-सम्मेलन को सफल बनाने के लिये, यथाशक्ति प्रयत्न करना।

ज्योतिष की दृष्टि से, अगला वर्ष सिंहस्थ है, इस लिये कुछ लोग शंकाशील हैं। यद्यपि धार्मिक कार्य में, 'समय गोयम मा पमायए' वाक्य है, परन्तु 'यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नादरणीयं' को भी नहीं भूल जाना चाहिये।

सम्मेलन समिति, इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करे और जनरल कमेटी बुला, कार्य की विशालता पर विचार कर, एक वर्ष और प्रचार कार्य करे, तो उत्साह भग और शिथिलता नहीं होगी बल्कि उत्साह की वृद्धि होगी। कारण, कि सभी सम्प्रदाय प्रगति के पन्थ पर बढ़ चुकी होंगी।

इस विषय के सम्बन्ध में, अन्य मुनिराजों एव विद्वान् श्रावकों को भी अपना अपना अभिप्राय प्रकाश में प्रकाशित करवाना उचित है। इत्यलम् विस्तरेण—

ॐ शान्ति! ॐ शान्ति!! ॐ शान्ति!!!

श्री शतावधानीजी का उपरोक्त लेख प्रकाशित होजाने के बाद, साधु-सम्मेलन में दिलचस्पी रखने वाले लोगों में एक प्रकार की खलबली पैदा होगई। इस बात को व्यक्त करने वाला, श्री धीरजलालजी तुरखिया का निम्न लेख श्री शतावधानीजी की लेखमाला समाप्त होजाने के कुछ समय बाद ही जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआ था। मूल लेख गुजराती मे है, अतः यहां उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है—

इस पत्र से जाना जा सकता है कि पंजाब के मुनियों को अगले फाल्गुन मास में अजमेर पहुँचने में कितनी कठिनाई होगी। इस कठिनाई का मुकाबिला करने के लिये, चातुर्मास में अमुक अपवाद से विहार करने में शास्त्र में जो उल्लेख है, उससे लाभ उठाया जा सकता है या नहीं यह प्रश्न उन्होंने कान्फरेन्स के सामने रक्खा है। यह एक विचारणीय विषय है। ठाणांग के पांचवे ठाणे में, चातुर्मास में विहार करने के, पांच कारण बतलाये हैं। उसमें, महासम्मेलन के प्रसंग का समावेश नहीं हो सकता। कारण, कि उसमें ज्ञान के लिये दर्शन के लिये चारित्र के लिये आचार्य उपाध्याय काल कर गये हों और किसी दूसरे गच्छ का आश्रय लेना हो या आचार्य उपाध्याय की वैयावच्च करनी हो, इन पांच कारणों से विहार करने का बतलाया है। इसमें गच्छ या संघ की बात नहीं है। यद्यपि संवत्सरी का निश्चय करने पर चारित्र की आराधना होगी, इस एक कारण का उसमें समावेश हो सकता है किन्तु वह तब उसके लिये दूसरा और कोई उपाय न शेष रहा हो। अभी तो दूसरा उपाय है। अगले साल नहीं, तो उसके एक साल बाद भी सम्मेलन हो सकता है। इससे स्पष्ट है, कि इस प्रकार के अपवादों का सेवन करने की अपेक्षा सम्मेलन को एक वर्ष आगे बढ़ा देना अधिक हितकर है। इस समय यदि अपवाद का अवलम्बन लिया जायगा, तो उससे भविष्य में चातुर्मास में विहार करने का उदाहरण बतलाकर, शिथिलता को पोषण मिलेगा।

हृदयशुद्धि से संयम संरक्षण की भावना पत्र करती है। ऐसी दशा में, ऐसे जोड़ लगा लगाकर काम चलाने की अपेक्षा प्रारम्भ से अन्त तक क्रमवार मजबूत नींव पर काम होगा तो वह अधिक दृढ़ होगा। इस लिये सम्मेलन की अवधि बढ़ा देने से, पंजाबियों की कठिनाई दूर हो सकेगी। केवल, एक युवराज श्री काशीरामजी महाराज दिल्ली तक पहुंच सके हैं। शेष सभी दूर २ हैं। उनकी सुविधा का भी हम लोगों को विचार करना चाहिये।

फिर, कुछ लोगों की ऐसी सम्मति है, कि सम्मेलन होने से पूर्व, मुख्य २ मुनिराज एकत्रित रहकर, एक दूसरे की प्रकृति का परिचय प्राप्त करके, समाचारी और शास्त्रों के सम्बन्ध में विचार करें, तभी सम्मेलन सफल हो सकता है। पढ़िये यह पत्र।

'वादविवाद के बाद यह तय पाया, कि साधु-सम्मेलन होने से पहले, मुख्य २ साधु एक जगह एकत्र हो जायें और नीचे लिखी बातों पर बहस मुबाहसा कर, किसी योग्य निर्णय पर आ जायें।

(१) मौजूदा प्रवृत्ति व जुदा २ समाचारी को ध्यान में लेकर, व उत्तम, मध्यम साधुओं का ख्याल करके, साधु-सम्मेलन किस ढंग से किया जावे, कि सुफल निकले।

(२) सब ही साधु एक सूत्र में बंधकर एक शासन के नीचे आ सकेंगे या नहीं, यो ऐसा होने से समाज का कहां तक लाभ हानि होगी।

(३) एक सूत्र में बंध जाने से *उस नवीन साधु-समाज की समाचारी की क्या रूपरेखा* होगी कि जिसका सबको पालन करना पड़ेगा।

(४ और भी जरूरी २ बातों पर बातचीत हो जायेगी अगर मुख्य-साधुओं का सम्मेलन न कर, सब ही का पहले २ ही इकट्ठे कर लिये जायेंगे, तो यकीन कि मानिये कि फल सिवाय कलह के और कुछ नहीं निकलेगा। अगर आपको यह राय पसन्द हो तो लिखियेगा।

इन सब पर विचार करने से इतना तो स्पष्ट ही जान पड़ता है, कि हम उस तरफ के देशों से किंचित भी वाकिफ नहीं हैं। इसी तरह, सम्प्रदायों के तीव्र भेदभावों से भी सर्वथा अनभिज्ञ हैं। यदि, इन भेदभावों को कमजोर अथवा निर्मूल किया जा सकता हो, तो उसके लिये नम्र प्रयास करना चाहिये। किन्तु, यह सब, यदि अगले फाल्गुण में ही सम्मेलन करने का आग्रह स्थिर रक्खा जाय, तो कैसे हो सकता है? साधुओं का मार्ग है! पैरों से मुसाफिरी, ४२ और ६६ दोषरहित आहार पाणी लेकर, अपरिचित-देश के हवा पानी और खुराक को पचाकर, भिन्न स्वभाव वाले श्रावकों एवं साधुओं के साथ धर्मचर्चा करना और बहुत दिनों से जमे हुए हठाग्रह को हिलाना-डुलाना, यह सब तो, शासनदेव की सहायता से ही हो सकता है। हमारे जैसे बीमार और अपरिचित क्या कर सकते हैं? किन्तु हां, भावनाओं की लहरें आती रहती हैं, कि महासाधु-सम्मेलन को सफल बनाने के लिये, यथाशक्ति प्रयत्न करना।

ज्योतिष की दृष्टि से, अगला वर्ष सिंहस्थ है, इस लिये कुछ लोग शंकाशील हैं। यद्यपि धार्मिक-कार्य में, 'समय गोयम मा पमायए' वाक्य है, परन्तु 'यद्यपि शुद्धं लोकविरुद्धं नाचरणीयं नादरणीयं' को भी नहीं भूल जाना चाहिये।

सम्मेलन समिति, इस महत्वपूर्ण प्रश्न पर विचार करे और जनरल कमेटी बुला, कार्य की विशालता पर विचार कर, एक वर्ष और प्रचार कार्य करे, तो उत्साह भंग और शिथिलता नहीं होगी बल्कि उत्साह की वृद्धि होगी। कारण, कि सभी सम्प्रदाय प्रगति के पन्थ पर बढ़ चुकी होंगी।

इस विषय के सम्बन्ध में, अन्य मुनिराजों एवं विद्वान् श्रावकों को भी अपना अपना अभिप्राय प्रकाश में प्रकाशित करवाना उचित है। इत्यलम् विस्तरेण—

ॐ शान्ति! ॐ शान्ति!! ॐ शान्ति!!!

श्री शतावधानीजी का उपरोक्त लेख प्रकाशित होजाने के बाद, साधु-सम्मेलन में दिलचस्पी रखने वाले लोगों में एक प्रकार की खलबली पैदा होगई। इस बात को व्यक्त करने वाला, श्री धीरजलालजी तुरखिया का निम्न लेख श्री शतावधानीजी की लेखमाला समाप्त होजाने के कुछ समय बाद ही जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआ था। मूल लेख गुजराती में है, अतः यहां उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है—

बृहत्साधुसम्मेलन, अगले फाल्गुन में या उसके बाद

साधु-सम्मेलन-समिति के महा मन्त्री श्री दुर्लभजी भाई झौहरी के बुलाने पर ता० ११ जुलाई को मैं ब्यावर पहुंचा। इस समय स्था० जैन समाज के नाम मात्र पं० रत्न शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज की लेखमाला 'जैन प्रकाश' में प्रकाशित हो रही थी। शतावधानी जी की युक्तियां प्रमाण पूर्ण थीं, और थी साधु सम्मेलन की सफलता को चिर काल तक टिकाने के उद्देश्य वाली, इसमें किंचित् भी सन्देह नहीं किन्तु केवल एक ही सम्मेलन में सब कुछ हो जाय ऐसी कोई बात नहीं है। प्रथम मिलने से प्रेमभाव की जागृति होगी और परस्पर सद्भाव उत्पन्न होगा। एक ही महावीर के परिवार में जो असमानता बढ़ती जाती है उसे एक केन्द्र (समाचारी) में केन्द्रित किया जावे और परस्पर भगवान का बतलाया हुआ प्रेम सम्बन्ध (संभोग) अमुक प्रकार से किया जावे। अनेक चर्चास्पद विषय जैसे— स्थानक प्ररूपणा साहित्य प्रकाशन दीक्षा सचित्ताचित्त निर्णय प्रतिक्रमण की एकता आदि विषयों पर ऊहापोह हो और उसके सम्बन्ध का सम्पूर्ण कार्य विद्वान् मुनियों की एक समिति बना कर उसके निर्णय पर छोड़ दिया जावे। आचार्यों तथा प्रवर्तकों की एक जनरल कमेटी और उसमें से एक कार्यकारिणी समिति (वर्किंग कमेटी) चुनी जावे और प्रत्येक समिति के कार्य क्षेत्र तथा समिति के एकत्रित होने का समय निश्चित कर दिया जावे तथा ५ वर्ष पश्चात् फिर महा सम्मेलन करने का आयोजन किया जावे। इतना कार्य यदि इस समय हो जाय तो कम नहीं है। गुजरात काठियावाड़ से पधारने वाले मुनिराजों के सामने पधार कर पालनपुर से अजमेर तक उनके साथ रह उन्हें प्रकृति के अनुसार खानपान स्थान संयोग प्राप्त करवाने तथा वृद्धपुरुष श्रावकों को गुरु पूजा का पाठ पढ़ाने के लिये मारवाड़ और मालवे के बहुत से मुनिराज तैयार हैं। उदाहरणार्थ— मेवाड़ के मुनिराज पूज्य माधवमुनिजी के मुनिवर ऋषि सम्प्रदायी मुनिगण पूज्य मुन्नालालजी महाराज के मुनिगण आदि महा पुरुषों ने तो वचन दिये हैं।

इसी तरह से पंजाब की ओर से पधारने हुये मुनिवरों के सामने पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज साहब के सन्त एवम् अन्य मुनिवर पधारेंगे। इस तरह से, गुजरात एवं पंजाब के मुनियों के लिये, अपरिचित मारवाड़ सरलता पूर्वक परिचित हो जायगा और सदा के लिये सभी क्षेत्र सभी मुनिवरों के लिये सुख जायेंगे ऐसी आशा है।

स्व-धर्म प्रेम में डूबे हुए मरुधर श्रावकों ने जिस तरह से परदेशी (मालवे के) मुनियों के मारवाड़ में पधारते ही उनका स्वागत कर लिया है, उसी तरह पंजाब और गुजरात के [illegible] भी वे स्वागत कर लेंगे और यदि अधिक नहीं तो एक चातुर्मास, खास खास मुनिवर

ब्यावर क्षेत्र में साथ साथ रह कर, सम्मेलन द्वारा सौंपा हुआ शेष कार्य, लगभग पूरा कर सकेंगे।

श्री शतावधानीजी के प्रति समाज के हृदय मे जो आदर है, उनकी लेखनी में जो शक्ति है और युक्तियों में जो हृदयग्राहीपन है, वह किसी से छिपा नहीं है। ब्यावर नीमच, मन्दसौर, प्रतापगढ़, इन्दौर, महीदपुर, शुजालपुर, भोपाल आदि स्थलों के प्रवास से यह स्पष्ट विदित हो गया है। शतावधानीजी महाराज की लेखमाला से, साधु-सम्मेलन संबन्धी उत्साह की बाढ़ उतरती जान पड़ती है। सम्मेलन होगा भी या नहीं, इस सम्बन्ध में सभी लोग शंकाशील हैं। यदि, अभी सम्मेलन न होगा, तो उत्साह घट जायगा और आज तक हुए सङ्गठन ढीले पड़ जायेंगे। सम्मेलन में सम्मिलित होने के लिये, दूर २ से समीप पधारे हुए मुनिराज शायद फिर लौट जांय— आदि तर्क वितर्क समाज में फैल रहे है।

श्री शतावधानीजी की लेखमाला के लिये भी, मैने यह स्पष्टीकरण किया है कि, ये तो व्यक्तिगत स्वतन्त्र विचार है। इन्हें समाज के सन्मुख रक्खा गया है। इसी तरह से और लोग भी अपने अपने विचार प्रदर्शित कर सकते हैं। इस लेखमाला से, सबसे बड़ा लाभ यह हुआ है कि मारवाड़ के श्रावकों एवं मुनियों को, अन्य देशों से पधारने वाले मुनिराजों से कैसा बर्ताव करना चाहिये इसका कर्त्तव्य भान हुआ और पधारने वाले मुनिराजों का रास्ता सरल बना। अब आतिथ्य सेवा की तैयारी और श्रावकों में सिंचन करके, मार्ग साफ करने के कार्य में लगकर, मारवाड़ तथा मालवे के मुनिराज, कर्त्तव्यरत हो जावेंगे।

श्री शतावधानीजी से नम्रता पूर्वक प्रार्थना है, कि निम्न लिखित वार्त्तालापों और प्रसंगों, अभिप्रायों का ध्यान पूर्वक मनन कर के अगले फाल्गुन मास में ही सम्मेलन करने और उसके लिये क्या २ तैयारिया करनी चाहिये, यह मार्ग प्रदर्शन करने की कृपा करें। ताकि सम्मेलन की सामग्रिया तैयार करने में, चतुर्विध संघ लग जाय।

मारवाड़ और मालवे की संप्रदायों के ऐक्य के लिये, श्री शतावधानीजी का जो इशारा है, वह भी आवश्यक है। और यह तो पारस्परिक हृदय परिवर्तन से होने वाला कार्य है। दोनों ही पक्ष समझदार हैं, अतः मिलने पर समाधान होजाना कुछ भी कठिन नहीं है।

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के मुख्य दो फिरके १५ और १३ संतों के हैं। दोनों पक्ष सरल है। दोनों ही मिलने की इच्छा वाले हैं। केवल श्रावकों का हस्तक्षेप ही मतभेद को बनाये हुए है। यह पराधीनता छूट जाय, यानी श्रावकगण सरल हो जांय, तो आज ही ऐक्य की स्थापना हो जाय। मै मानता हूं कि श्री धूलचन्दजी भंडारी रतलाम वाले, अकेले ही यह ऐक्य करवा सकते हैं। केवल सरलता पूर्वक ऐक्य की भावना चाहिये।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी और पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज दोनों ही विचक्षण पुरुष हैं, जैन समाज की दिव्य विभूतिया हैं। उनके साधु और श्रावकगण अपने पूज्यों पर विश्वास करें और रतलाम में सं० १९८२ की फाल्गुण शुक्ला १५ को हुए फैसले को, कार्य रूप में परिणित करने का निश्चय करें, तो फिर अधिक कुछ करने योग्य नहीं रह जाता। श्री वर्धमानजी सा० की समयसूचकता और बुद्धिमानी तथा श्री० सौभागमलजी सा० का उछलता हुआ युवक हृदय, दिल से दिल मिला कर, उभय पूज्यों से प्रार्थना करेंगे ऐसी आशा है।

दोनों पक्ष सम्मेलन की प्रशंसा करने वाले हैं और सम्मेलन में पधारने तथा सर्व समाचारी एवं व्यवहार (संभोग) खुले करके तदनुसार भविष्य में वर्तने को तैयार हैं। श्री वर्धमानजी सा० ने अपनी समस्त शक्तियों एवं साधनों का लाभ देना स्वीकार किया है।

अब रही बात कोटा सम्प्रदाय, मेवाड़ (पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० सा० की) सम्प्रदाय, यमुनापार की पूज्य रतनचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय पूज्य तेजसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय, इत्यादि की। इन सम्प्रदायों में से, अनेक मुनि, अन्यान्य बड़ी सम्प्रदायों के आज्ञावर्ती हैं और शेष को भी ऐसा ही करना चाहिये अथवा अपना संगठन कर लेना चाहिये।

अब मुलाकात के समय प्राप्त हुए जो भिन्न २ अभिप्राय मुझे बतलाने हैं, वे भिन्न मुनिवरों एवं गृहस्थों के हैं।

प्रवर्तक श्री हर्षचन्द्रजी महाराज प्रवर्तक श्री हजारीमलजी महाराज मुनि श्री चुन्नीलालजी महाराज श्री पं० रत्न आनन्दऋषिजी महाराज पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज वयोवृद्ध मुनि श्री नन्दलालजी महाराज, आत्मार्थी मुनि श्री मोहन ऋषिजी महाराज, व्याख्यानी मुनि श्री शोभमलजी महाराज, वयोवृद्ध मुनिश्री ताराचन्दजी महाराज आदि, मुनि श्री इन्दरमलजी महाराज, तपस्वी मुनि श्री देवऋषिजी महाराज पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज इत्यादि मुनिवरों तथा—

प्रो० नथमलजी सा० चोरड़िया श्री० वर्द्धमानजी सा० पीतलिया श्री अमनालालजी कीमती आदि श्रावकों के अभिप्राय, आगे दिये जाते हैं। किन्तु एकन्दर में लगभग सभी के अभिप्राय साधु सम्मेलन इसी फाल्गुन में ही करने के पक्ष में हैं। और जनरल कमेटी के इस प्रकार के प्रस्ताव को ध्यान में रख कर ही युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज अपने वृद्ध गुरु को छोड़ कर दिल्ली पधारे हैं। पंडित म० वक्ता मुनि श्री चौथमलजी महाराज ने दूर के चातुर्मास छोड़ कर जितना भी हो सके नजदीक (मनमाड़ में) और पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज ने, मन्दसौर में चातुर्मास किया है।

अजमेर में भी तैयारियां चल रही हैं और सब लोग सम्मेलन की शोभा बढ़ाने का प्रयत्न कर रहे हैं। इसलिये सबको सावधान हो जाना चाहिये। ट्रेन डिब्बे जुड़ कर तैयार खड़ी है। अब साधु सम्मेलन समिति हरी झंडी बतला कर लाईन क्लीयर दे बस इतनी ही देर है। सावधान! धैर्य पूर्वक तथा शांति से अपना २ काम सम्भालिये।

ब्यावर भीलवाड़ा प्रतापगढ़ मन्दसौर रतलाम इन्दौर उज्जैन महिदपुर, शुजालपुर और भोपाल के प्रवास में मुनिवरों तथा आगेवान श्रावकों के साथ साधु-सम्मेलन समाचारी संगठन सामाजिक-स्थिति प्रत्येक श्रीसङ्घ का कर्त्तव्य अकेले और स्वेच्छापूर्वक विचरने वाले साधु-साध्वियों का उपद्रव कम कर के उन्हें सुधारने का उपाय सम्मेलन में क्या २ करना चाहिये शास्त्रोद्धार की श्रीदसराजभाई की योजना सम्मेलन का समय आदि२ अनेक विषयों पर वार्त्तालाप और विचार विनिमय हुआ। इन सभी बातों के विस्तार में न उतर कर केवल सम्मेलन के समय के संबन्ध में इन सब के क्या अभिप्राय हैं यही बात यहाँ बतलाई जाती है।

ब्यावर—

प्रवर्त्तक श्री मुनिश्री हर्षचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि सम्मेलन शीघ्र होना अच्छा है। हमने पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज को सर्व-सर्वा मान लिया है। आप (पूज्य श्री) जैसा चाहें वैसा करें।

प्रवर्त्तक मुनि श्री हजारीमलजी महाराज तथा मुनि श्री छगनलालजी महाराज, (पूज्य श्री जयमलजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक मन्त्रीजी) ने फरमाया, कि जिस भरोसे पर प्रान्तिक साधु-सम्मेलन किये हैं और फाल्गुण मास में, अजमेर में सम्मेलन होना लक्ष्य में रखकर चातुर्मास करने का जाहिर किया था, ठीक उसी समय सम्मेलन होना चाहिये, वरना शिथिलता होजायगी। फिर, प्रान्तिक-सम्मेलन का संगठन भी शिथिल हो जायगा।

वक्ता मुनि श्री चुन्नीलालजी महाराज ने फरमाया,-कि पं० रत्न शतावधानीजी महाराज की दलीलें, विचारणीय तो अवश्य हैं, किन्तु इस तरफ के संयोग, 'गरम लोहे पर घाट गढ़ लेने' के योग्य हैं। गुर्जर-मुनियों को, आहार, आदर आदि की प्रत्येकअनुकूलता होजायगी। हम उन महापुरुषों के स्वागतार्थ सामने जाकर, साथ रहने को तैयार हैं। इसी फाल्गुण में सम्मेलन हो, यह आवश्यक है। हां, शेष रहा हुआ संगठन कार्य, यथासम्भव शीघ्रता से पूरा कर लेने को, कार्यकर्त्ताओं को, शीघ्रता पूर्वक श्रम करना, आवश्यक गिना जा सकता है।

बगड़ी मज्जनपुर—

प्रवर्त्तक श्री शार्दूलसिंहजीमहाराज के मंत्री मुनि श्री ने फरमाया, कि श्री शतावधानीजी महाराज तो १ वर्ष पश्चात् सम्मेलन करने को लिखते हैं। यदि, इस तरह विलम्ब होगा तो लोगों की श्रद्धा कम हो जायगी और प्रांतिक सम्मेलनों का संगठन मज़बूत होने के बदले ढीला हो जायगा। गुर्जर मुनियों को, हम लोग मारवाड़ में साथ रह कर, किसी प्रकार की प्रतिकूलता न होने देंगे।

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की संप्रदाय के प्रवर्त्तक मुनि श्री धैर्य्यमलजी म० सा० तथा मन्त्रीजी मिश्रीमलजी महाराज (सेवाज) का फरमाना है कि, श्री शतावधानीजी महाराज, सम्मेलन को देर से करने को लिखते हैं, यह ठीक नहीं है। संगठन के शेष कार्य चातुर्मास में कर लिये जावें, लेकिन सम्मेलन तो इस फाल्गुन में ही होना चाहिये। अन्यथा, जो कार्य हो चुके हैं, वे भी नहीं हुये जैसे हो जाएंगे और आज तक का श्रम निष्फल हो जायगा। गुर्जर मुनियों की, हम लोग स्वयंसेवक बन कर, सभी अनुकूल सेवाएं करेंगे।

श्री० अमोलकचन्दजी सा० लोढ़ा तथा श्री हीराचन्दजी सा० धाड़ीवाल आदि ने कहा, कि बड़े कठिन परिश्रम से इतना कार्य हुआ है, तो सबको श्रद्धा भी हो गई है। इसी विश्वास पर इसी फाल्गुण में सम्मेलन होने से, स्थानकवासी जैन समाज में अपूर्व जागृति आकर, प्रभाव बढ़ जायगा। वरना शायद पिछड़ना होगा।

नीमच—

समाज सुधारक श्री नथमलजी सा. चोरड़िया का कथन है कि, दिल्ली कमेटी के समय से जो निश्चय हुआ है और आज तक दृढ होता आया है, उसे बदलने के पूर्व, बहुत कुछ विचार कर लेने की आवश्यकता है। इस समय कार्य में ढील डालना, मानों काम को बिगाड़ना है। ऐसे एक ही सम्मेलन से, सब कुछ नहीं हो जायगा। बल्कि, इस प्रकार के बहुत से सम्मेलन करने

पड़ेगे, तभी पूर्णरूपेण सुधार हो सकेगा। इस लिये यह सम्मेलन तो इसी फाल्गुण में होना आवश्यक है।

प्रतापगढ़—

पं० रत्न मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज ने फरमाया, कि इसी फाल्गुण में सम्मेलन होगा, इस विश्वास पर हम दक्षिण छोड़ कर इस तरफ आये। हमारे इधर आजाने पर पीछे से तेरापन्थी लोग दक्षिण के भोलेभाले श्रावकों के दिल, डांवाडोल कर रहे हैं। यदि, सम्मेलन इस फाल्गुण में नहीं होगा तो हम लोग तो फिर दक्षिण चले जांयगे।

मन्दसौर—

श्री मरुधैमाचार्य शास्त्र विशारद पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज ने फरमाया कि सम्मेलन इसी फाल्गुण में हो, इसमें कुछ भी हानि नहीं दीखती। मेरा शरीर वृद्ध है, इसलिये वहां तक पहुंच सकूंगा या नहीं यह एक प्रश्न है। किन्तु यथा शक्ति सहयोग देने और पहुंचने की भावना है।

शतावधानीजी स्थानकवासी जैन समाज के प्राण भानु हैं। ऐसे गुर्जर भाग्यवान मुनियों के चाल्याचार से कोई मारवाड़ी अछूता नहीं रह सकता। मैं जितने कहो उतने अपने साधुओं को सामने भेज कर मारवाड़ी समाज को इन शासन के अमूल्य रत्नों की कीमत करवाने तथा यथा संभव प्रत्येक अनुकूलता कर देने को तैयार हूं।

रतलाम—

श्री मरुधैमाचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज तथा मुनि श्री सुजानमलजी महाराज ने फरमाया कि हम लोग सम्मेलन के लिये तैयार हैं। शतावधानीजी महाराज की लेखमाला से हमें और लोगों को नाना प्रकार के तर्क वितर्क हो रहे हैं। बारह मास की ढील करने के बदले इसी फाल्गुन में सम्मेलन होना जरूरी है।

स्थविर मुनि श्री नन्दलालजीमहाराज की शिष्य मण्डली से वार्त्तालाप होने पर भी इसी फाल्गुन महीने में साधु-सम्मेलन होना इष्ट बतलाया।

सुप्रसिद्ध एवं प्रसिद्ध नेता सेठ० श्री वर्धमानजी सा पीतलिया ने फरमाया कि सम्मेलन का कार्य यथासम्भव शीघ्र होना आवश्यक है। पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा की तरफ की सम्मेलन सम्बन्धी अनुकूलता एवं पूर्ण शांति के लिये मैं अपनी शक्ति एवं साधनों का उपयोग करूंगा। पूज्य श्री की ओर से निश्चिन्त रहो एवं सम्मेलन की तैयारी करो। हमारी ओर से किसी तरह की आतुरता रखने की आवश्यकता नहीं है। यदि आवश्यक जान पड़े तो श्री शतावधानीजी को भी यह खबर दे दीजियेगा।

(सेठजी की समयज्ञता और उत्साह हम लोगों की निराशाओं को उड़ा दे देता है। विचक्षण पुरुषों की बलिहारी है।)

इन्दौर—

बड़ा मुनि श्री शोभमलजी महाराज ने फरमाया कि श्री शतावधानीजी की लेखमाला से सम्मेलन के विषय में तर्क वितर्क हो रहा है। शतावधानीजी महाराज या अन्य किसी को

पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की दोनों सम्प्रदाय के निमित्त करके विचार होता होगा। लेकिन जैसे अन्य ३० सम्प्रदाय के मुनि पधारेंगे, वैसे ही इन दो संप्रदायों के मुनि भी पधारेंगे। वहां सर्वानुमति से जो तय होगा, वह सभी स्वीकार करेंगे। इन दोनों संप्रदायों का फैसला तो, रतलाम में सं० १९८२ की फाल्गुन शुक्ला १५ को हुआ था, उसके बाद कोई नई बात नहीं हुई है। हा अमल कम हुआ है, सो होने लग जाय और मुनिगण अपने २ श्रावकों को परस्पर सद्भाव रखने का जोर से उपदेश करें, यही सर्वोत्तम मार्ग है। सम्मेलन तो नियत समय पर होना जरूरी है।

आत्मार्थी, बालब्रह्मचारी श्री मोहनऋषिजी महाराज ने निम्न लिखित सन्देश दिया है—

साधु सम्मेलन की गर्जना, पंजाब के केशरीसिंह, पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज ने की है। उसकी प्रतिध्वनि करने वाले, जैन समाज के चमकते हुए जवाहिर, दीर्घ दर्शी पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज समर्थ हैं। पूज्य श्री ने समाज में, नवचेतन का प्राण फूंका है। यदि समाज तय्यार हो, तो उसे गगन विहारी बना सकें, ऐसी पुज्य श्री की शक्ति है, समाज उन पर गर्व कर सकता है। ऐसे प्रतापी पुरुषों के समाज में होते हुए भी, साधु-सम्मेलन ढील में पड़े या सफल न हो तो अनेक युगों के बाद भी यह कार्य होना अशक्य है।

फिर, सौभाग्य से पूज्य श्री के श्रावकमंडल के सूत्रधार, रत्नपुरी के नर रत्न, भाई वरदभाणजी दीर्घ अनुभवी, कार्य दक्ष और समयज्ञ एवं विचारक तथा सलाह देने योग्य हैं। यह स्वर्ण और सुगंध का योग है। पूज्य श्री की जीवन ज्योति का, समाज को तत्काल ही लाभ उठा लेना चाहिये।

साधु-सम्मेलन रूपी ट्रेन के, पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज ड्राइवर हैं। स्था० जैन सम्प्रदाय रूपी डिब्बे (प्रांतिक एवं पृथक् २ सम्मेलनों द्वारा) जुड कर ट्रेन तय्यार खड़ी है। केवल पूज्य श्री जैसे सावधान गार्ड की लाइन क्लीयर की सीटी सुनने और सुख रूप कुशलता की हरी झंडी देखने की प्रतिक्षा है। आशा है, पूज्य श्री जैसे समर्थ गार्ड, साधु-सम्मेलन रूपी ट्रेन के गार्ड बन कर, एकांत अनैक्य के स्टेशन से उसे चला कर, अनेकान्त एवं ऐक्य के टर्मिनस पर, बिना किसी बाधा के पहुंचा, अपने परम पवित्र कर्त्तव्य का पालन कर, भावी समाज के लिए अमर यादगार रख, वर्तमान और भावी समाज की आशिष की पुष्पांजली ग्रहण करेंगे।

उज्जैन—

स्थविर मुनि श्री पूज्य पाद ताराचन्दजी महाराज तथा पं० मुनि श्री सोभागमलजी महाराज ने फरमाया, कि हम, श्री शतावधानीजी महाराज आदि गुर्जर मुनियों के, पूर्ण अनुकूलता पूर्वक सामने जाकर, उनके साथ विचरने को तैयार हैं। उन श्रीमान् की वात्सल्य भावना, हमारे स्मरण में ताजी है। उनकी आवश्यकताओं तथा अनुकूलताओं का हमें अनुभव है।

सम्मेलन, इसी फाल्गुन मास में हो, यही आवश्यक है। महीदपुर से मुनियों के भाव मालूम पड़े तो हम लोग पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की संप्रदाय का संगठन करने को तैयार हैं।

महीदपुर—

मुनिश्री इन्दरमलजी महाराज ने फरमाया, कि साधु-सम्मेलन अत्यन्त आवश्यक है। उत्साह बढ़ रहा हो, उस समय में जो कार्य होता है वह सफल होता है।

शुजालपुर—

तपस्वीराज श्री देवजी ऋषिजी महाराज ने फरमाया, कि साधुसम्मेलन इसी फाल्गुण में होना चाहिये कारण, कि बरार और सी पी० की तरफ हमारी आवश्यकता है, इसलिये हम अधिक दिनों तक इधर नहीं रुक सकते। खासतौर पर सम्मेलन के लिये ही हम मालवे में आये हैं। उधर युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज, अपने वृद्ध गुरु को छोड़कर दिल्ली पधारे हैं। श्री० पं० मुनि श्री चौथमलजी महाराज यथासम्भव-समीप यानी मनमाड़ तक पधार चुके हैं। फिर, यदि सब इधर-उधर चले जावेंगे, तो सम्मेलन में खामी पड़ जायगी इसलिये, निश्चित किये हुए समय पर साधुसम्मेलन होना आवश्यक ज्ञात पड़ता है।

रा० ब० सेठ चांदमलजी सा० नाहर सागरवालों ने फरमाया, कि साधुसम्मेलन इसी फाल्गुण में होना अत्यन्त आवश्यक है। हां इतना परमावश्यक है कि पूज्य श्री हुकमीचन्दजी महाराज की दोनों सम्प्रदायों में मेल होजाना चाहिये। और पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज तथा पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज के रूबरू मिलने से इसमें कोई देरी न होगी मेरे लायक जो कुछ सेवा हो, वह मैं भी करने को तैयार हूं; मगर साधु-सम्मेलन तो शीघ्र और अवश्य होना चाहिये।

भोपाल—

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज का अभिप्राय—

श्री शतावधानी पं० रत्न मुनि श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी आदि मुनिवर बारह महीने जैसे दीर्घकाल तक 'बृहत्सम्मेलन' आगे बढ़ाने के लिये सूचना करते हैं यह एक तरह से तो ठीक है किन्तु अपने समाज की स्थिति आपसे कुछ छिपी नहीं है। बृहत्साधुसम्मेलन का कार्य शिथिल पड़ेगा तो अभी जो उत्साह है वह रहना कठिन है। और उत्साहपूर्ण समय में जो कार्य होसकता है वह सुस्त होजाने के बाद होना भी अशक्य ज्ञात पड़ता है। ताजे घाव पर औषधि बहुत असर करती है। अभी लगभग ७५ प्रतिशत मुनिगण इस कार्य (बृहत्-साधुसम्मेलन) को इसी वर्ष करने के लिये अत्यन्त उत्सुक ज्ञात पड़ते हैं और इसके लिये वे तैयारियां भी कर रहे हैं। ऐसा बृहत्साधु-सम्मेलन अपूर्व समागम—प्रेम से पूर्ण विशेष साधुओं के संयोग से ही होना चाहिये। जो थोड़े से साधु पृथक् ज्ञात पड़ते हैं वे भी अवश्य मिल जायेंगे ऐसा भरोसा है। प्रथम सम्मेलन में ही सब कार्य होना तो असम्भव है। अभी तो बिछुड़े हुए प्रेम का संगठन करके भविष्य में वह प्रेम वृद्धि पाता रहे ऐसे नियम बना प्रेम के पन्थ पर चलने के लिये सभी मुनिगण तैयार हो जायें तो समझना चाहिये कि प्रयास सफल हुआ। और अभी जो उत्साह है, उसे देखते हुए ऐसा होना सम्भव है।

भविष्य में तीन या पाँच वर्ष पश्चात् दूसरा बृहत्सम्मेलन करके इस कार्य की सिद्धि प्राप्त हो सकेगी। इसके लिये हमें तो, इसी फाल्गुण में बृहत्साधुसम्मेलन होना अच्छा ज्ञात पड़ता है। आगे जो भविष्य होगा, सो होगा। इस सारे समाज के परमोत्तम सुधारे के लिये शक्ति से अधिक पराक्रम उठाकर इस कार्य को सिद्ध करना चाहिये। यह भारतवर्ष के सभी साधुओं का, अत्यन्त आवश्यक और परम कर्तव्य है। इसके लिये अभी से साधु प्रेरक तथा प्रवर्तक-साधुओं को यह कार्य भली भांति सफल हो, इसके लिये सम्मति और जोर देकर अवश्य ही प्रेरणा करनी चाहिये और

समय पर सम्मेलन में उपस्थित हो, कार्य को सफल बनाना चाहिये। इसी तरह, सम्मेलन के कार्य को सफल बनाने के लिये जिन २ श्रावकों ने प्रयत्न किया है और अपने समय तथा द्रव्य का बलिदान करके स्थान २ पर प्रेरणा कर रहे हैं, उनका तथा दूसरे जो जो मुख्य श्रावक हैं, कि जिनका वचन-कथन सन्त महात्मा मान्य करते हैं, उनका भी खास कर्तव्य है, कि ऐसे परमोत्तम वातावरण के प्रसंग में मानापमान को एक किनारे रख, सम्मेलन को सफलता मिले, उसकी फतह हो, इसी तरह से पूरी २ कोशिश करने के लिये प्रयत्नशील और प्रचारक बनना चाहिये। जो साधुगण न मानें उन्हें नरम गरम दोनों तरह से मनाना चाहिये और कार्य को पूर्णरूपेण सफल बनाना चाहिये। इस परमोत्तम अवसर का अत्यन्त श्रेष्ठ लाभ उठाने, या यों कहें, कि तीर्थंकर पद उपार्जन जैसा परमोत्कृष्ट कार्य करने के लिये, इस समय कोई भी समदृष्टि, किंचिन्मात्र भी आनाकानी न करेगा। बल्कि, अपने सर्वस्व का यथोचित बलिदान करके, बृहत्साधुसम्मेलन को इच्छित रीति से सफल करेगा, ऐसी आशा और भरोसा है इत्यलम्। मुमुक्षु किमधिक।

× × × ×

उपरोक्त सम्मतियाँ प्रकाशित होजाने के बाद, कच्छदेश पावनकर्त्ता पूज्यपाद युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी स्वामी की, साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध, में निम्न सम्मति प्रकाशित हुई थी—

परमपूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज!

हमारे कच्छी-मुनियों का सम्मेलन, अनेक कारणों से अभीतक नहीं हो पाया है। वह चातुर्मास के बाद होगा। इन कारणों से, अगले वर्ष अजमेर में होने वाले बृहत्साधुसम्मेलन में नहीं पहुंचा जा सकता। हां, यदि सम्मेलन एकाध वर्ष के लिये बढा दिया जाय तो पहुँच सकते हैं। कारण कि एक तो रास्ता लम्बा है और वह भी विकट तथा अपरिचित क्षेत्र। जनसमूह भी अपरिचित और खानपान भी नवीन। इन सब कारणों से, लम्बी मुसाफिरी में बड़ी असुविधाएँ होंगी। आप लोग मारवाड के मुनि, मन के मज़बूत हैं और गुजरात, काठियावाड़ तथा कच्छ के मुनि कुछ निर्बल हैं, जिससे उन्हें अधिक विकट जान पडता है। इसके अतिरिक्त, परिचयवाले और अपरिचित श्रावकों तथा क्षेत्रों में जाने में बड़ा अन्तर है। ऐसे ही अनेक कारणों से, हम लोगों का इसी वर्ष अजमेर पहुंचना अत्यन्त कठिन है। ठीक इसी तरह, गुजरात और काठियावाड़ की तरफ विचरते हुए मुनिगण भी इस वर्ष वहाँ पहुँच सकें, ऐसा नहीं दीखता। इसी तरह के, पंजाब के मुनियों की तरफ के भी समाचार हैं, कि चातुर्मास उतरने के बाद, फाल्गुण मास तक उनका अजमेर पहुँचना असम्भव है। जैन प्रकाश में, इसी आशय का एक बडा सा लेख श्री शतावधानीजी का आया है। ऐसी अनेक बातों को ध्यान में रखकर बृहत्सम्मेलन अगले फाल्गुण तक होना कठिन जान पड़ता है। फिर जैसे संयोग होंगे, उन्हीं के अनुसार कार्य होगा। आपके साथ के सुसन्तों से, भली भांति साता पूछियेगा।

× × × ×

आपकी सम्मति प्रकाशित हो जाने के बाद, सुप्रसिद्ध उत्साही समाजसेवक श्री बाबू आनन्दराजजी सुराणा दिल्ली निवासी की, साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में निम्न सम्मति प्रकाशित हुई थी।

साधु-सम्मेलन, इसी वर्ष में होना चाहिये। यदि सम्मेलन इसी वर्ष नहीं हुआ, तो फिर निश्चय ही सम्मेलन न होगा। क्योंकि, इस वर्ष सम्मेलन न होने से, पंजाब से पधारे हुए सन्त पुनः

लौट जावेंगे और साधु-सम्मेलन के उत्साही साधुओं तथा कार्यकर्त्ताओं में शिथिलता पड़ जावेगी। अंग्रेजी में एक कहावत है कि—Strike the Iron, while it is hot. अर्थात्—गरम लोहे को जिधर चाहो, उधर मोड़ सकते हो। इसी कहावत के अनुसार, हमें साधु-सम्मेलन इसी वर्ष कर लेना चाहिये। यदि इस साल साधु-सम्मेलन नहीं किया, तो अन्त में यह कहावत चरितार्थ होगी, कि—

'अब पछताये होत क्या जब चिड़ियां चुग गई खेत'।

इस वर्ष सम्मेलन का न करना ही दूर से पधारे हुए मुनिराजों को साधु-सम्मेलन से वंचित रखना है। इस समय साधु सम्मेलन करने में जो आपत्तियां प्रतीत होती हैं वे तो पीछे से करने में भी प्रतीत होंगी। क्या ही अच्छा हो, कि बड़े २ मुनिराज, साधु सम्मेलन की निश्चित तिथि से कुछ दिन पूर्व किसी एक क्षेत्र में विराजकर जो २ विचार विभिन्नता हों उन्हें दूर कर, साधु-सम्मेलन के मार्ग को सरल बना दें। महान् कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व, चारों ओर से महान् आपत्तियां आती हैं। उन आती हुई आपत्तियों से न डरकर, यदि निस्वार्थ बुद्धि से कार्य किया जाय, तो निश्चय ही विजय है।

मेरा तो दृढ़ विश्वास है, कि साधुसम्मेलन के इस महान् कार्य में शासनदेवी का हाथ है और निश्चय ही इसमें विजय है। अतः मेरा सब मुनिराजों और उत्साही कार्यकर्त्ताओं से सप्रेम अनुरोध है कि वे शीघ्रातिशीघ्र अजमेर पधारकर, इस महान् कार्य को सरल बनाने में अपना हाथ, बंटावें।

ठीक इसी समय किशनगढ़ में चातुर्मासस्थित मुनि श्री पन्नालालजी महाराज की निम्न सम्मति जैन प्रकाश में छपी।

(१) साधुसम्मेलन आगामी फाल्गुन या चैत्र तक अवश्य होजाना चाहिये। क्यों कि, समस्त स्थानकवासी-समाज के हृदय में, साधु-सम्मेलन के लिये उत्कंठा हो रही है। यह समय टालने देने से, बहुत व्यक्तियों का उत्साह मन्द हो जायगा। प्रथम सम्मेलन अवश्य हो जाना चाहिये। इस सम्मेलन में कोई कार्य की त्रुटि रहेगी तो फिर आगे के सम्मेलन में निकल जायगी। क्योंकि यह न समझिये कि समग्र-सुधार इसी सम्मेलन में हो जायगा। (बहुत से मुनिराजों की सम्मति सम्मेलन इसी साल में करने की है।)

(२) साधु-सम्मेलन के बाद पण्डित-पण्डित मुनि एक स्थान में चातुर्मास करके सब त्रुटियां निकाल कर पूर्ण सुधार करें।

(३) प० मुनि श्री शतावधानीजी महाराज की राय सम्मेलन ठहर कर करने की है। यह राय कीमती अवश्य है किन्तु श्रेष्ठ कार्यों में बहुत विघ्न होते हैं इसलिये शतावधानी से प्रार्थना कर, सम्मेलन शीघ्र होने की सम्मति लें।

* * * ०

इसी तरह की साधुसम्मेलन अभी करने या न करने के सम्बन्ध में और भी अनेक सम्मतियां प्रकाशित हुई जिनमें साधु सम्मेलन इसी फाल्गुन मास में करने के पक्ष में अत्यधिक बहुमत था। इस प्रकार का लोकमत देखकर प्रो० शतावधानीजी महाराज ने अपनी सम्मति पर जोर नहीं दिया। यदि कोई साधारण मनुष्य होता, तो शायद अपनी बात पर अड़ जाता लेकिन शतावधानी जी जैसे प्रकाण्ड पण्डित ऐसा क्यों करने लगे! उन्होंने अपनी अकाट्ययुक्तिसंगत-सम्मति समाज के सामने रख दी। इस सम्मति का परिस्थिति के कारण लोग अपना नहीं सके, और बहुमत उस

सम्मति के विपक्ष में था, इसलिये, श्री० शतावधानीजी ने, बहुमतको मान देकर, अपनी सम्मति स्थगित कर दी। शतावधानीजी का यह विचार, श्री० मणिलालजी त्रिभुवनजी के उस पत्र से प्रकट होता है, जो उन्होंने कान्फ्रेन्स के तात्कालिक प्रेसीडेण्ट श्री० ला० गोकुलचन्दजी जौहरी को लिखा था। मूल पत्र गुजराती भाषा में है, अतः यहां उसका हिन्दी अनुवाद दिया जाता है—

रा० रा० सेठ साहेब लाला शादीराम गोकुलचन्दजी
जौहरी, चांदनी चौक दिल्ली।

वांकानेर से लि० सेठ त्रिभुवन हरजीवन का जयजिनेन्द्र वाचियेगा।

विशेष समाचार यह है, कि निम्नलिखित सन्देश, शतावधानीजी रत्नचन्द्रजी महाराज लिखवाते हैं, इसे एकत्रित होनेवाली कमेटी मे प्रस्तुत कर दीजियेगा।

साधु-सम्मेलन होने से पूर्व बत्तीसों सम्प्रदाय का आन्तरिक संगठन होने की आवश्यकता है। यह कार्य, जाति के अग्रेसर, डेपुटेशन के रूप में जिन जिन सम्प्रदायों में संगठन की कमी हो वहां २ जाकर उन सम्प्रदायों के नेताओं को समझा, समाधान करवाकर, सम्मेलन में सम्मिलित होने का आमन्त्रण दे आवें। साथ ही होने; वाले सुधारों की रूपरेखा दर्शा आवें, तो समझा जाय कि सम्मेलन की आधी या तीन चौथाई सफलता हो गई। यह कार्य करने के लिये अभी अवकाश है। कार्तिक शुक्ला १५ तक साधुओं का चातुर्मास एक जगह रहता है, इस लिये डेपुटेशन का कार्य, सरलता पूर्वक हो सकता है।

जैन प्रकाश का पिछला अङ्क पढ़ने से मालूम होता है; कि अनेक सम्प्रदायें संगठन की तैयारी में हैं। केवल हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय का उल्लेख नहीं है। सं० १६८२ के साल में रतलाम मुकाम पर, दोनों पूज्यों के बीच जो ठहराव हुए हैं, उन्हीं को अभी डेपुटेशन मान्य करावे और शेष कार्य सम्मेलन पर छुड़वा दे, तो भी अभी कार्य चल सकता है। मारवाड़ के अनेक मुनियों और श्रावकों की इच्छा, अगले फाल्गुण मास में ही बृहत्सम्मेलन करने की है, इस लिये उनके उत्साह का अनुमोदन करना श्रेयस्कर जानकर महाराज श्री लिखवाते हैं कि इस ओर के साधुओं का थोड़े ही समय में अजमेर पहुंचना यद्यपि कठिन है, फिर भी शासन के श्रेय के निमित्त, उस कठिनाई को झेलकर जहां तक सम्भव होगा आगामी फाल्गुण मास में वहां पहुंच जाने का साहस करेंगे। इसके लिये मैं उनको समझाऊंगा। किन्तु, सम्मेलन में किसी तरह का खटपट पैदा करने वाला तत्व खड़ा न हो और आन्तरिक झगड़े सम्मेलन में न आने पावे, इसके लिये पहले से ही वचन ले लेने चाहिये और यह कार्य डेपुटेशन को करना पड़ेगा। सुज्ञेषु किंबहुना ?

• • • •

यह पत्र, शतावधानीजी महाराज की ओर से, उसी फाल्गुण मास में सम्मेलन करने की मानों स्वीकृति था। इसके प्रकाशित होजाने पर, यह प्रश्न हल होगया और सब लोग फिर इसी निर्णय पर पहुंच गये, कि साधु-सम्मेलन इसी फाल्गुण मास में होगा। इसके बाद, इस सम्बन्ध में, श्री० जी० छ० सघवी का, निम्न लेख जैन प्रकाश में प्रकाशित हुआ, जो अत्यन्त उपयोगी तथा उत्साह से पूर्ण होने के कारण, हिन्दी भाषान्तर करके यहां दिया जाता है—

विलम्ब किस लिये ?

जैन प्रकाश में साधुसम्मेलन के सम्बन्ध में, आज कितने ही दिनों से, अनेक प्रकार की विचारप्रणालियां सामने आ रही हैं। विद्वान मुनिगण, उत्साही श्रावक लोग विचारक वयोवृद्ध आदि अपने अपने अभिप्राय समाजोन्नति की इच्छा से व्यक्त कर रहे हैं। संघ के चारों तीर्थों की यह आन्तरिक भावना है कि महासम्मेलन हो। इस लिये केवल इसी प्रश्न की चर्चा होती रहती है कि कब और किस स्थिति में सम्मेलन होना चाहिये। कोई कहता है कि साधु-समाज के मतभेद और मम त्व को दूर करने के बाद हो, कोई कहता है कि पहले श्रावकों को सुधारो और किसी का कथन है, कि कृपा करके सम्मेलन को स्थगित न करो। इन सब सम्मतियों पर विचार कर चुकने के बाद मेरे व्यक्तिगत अधिकार के रूप में और संघ के सुधार की उत्कट भावना का अवलम्बन ग्रहण कर, आज अपने विचारों को प्रस्तुत करने का प्रयत्न करता हूं।

आज हमारे सारे समाज की स्थिति अस्तव्यस्त हो गई है। राग, द्वेष पक्षापक्षी, मतभेद अहंकार, मान आदि दुर्गुणों ने, सर्वश्रेष्ठ गिने जाने वाले जैनधर्म के अनुयायियों में तेजी से घर कर लिया है, यह कहने में अत्युक्ति न होगी। एक ग्राम में एक सम्प्रदाय वाले रहते हों और समय के प्रवाह के साथ वहां किसी दूसरी सम्प्रदाय के अनुयायी पहुंच जाय तो वे मताग्रह के वश होकर वहां अपनी सम्प्रदाय की स्थापना करने का प्रयत्न करने लगते हैं जिसके परिणामस्वरूप अनेक प्रकार के झगड़े उत्पन्न हो जाते हैं। ऐसे झगड़ों में दोनों सम्प्रदायों के साधु और श्रावकगण जवाबदार समझे जाने चाहिये। यदि ऐसा न होता तो उस प्रकार के झगड़े बुद्धिमान् श्रावकलोग निबटा सकते थे या विद्वान मुनिराज उनका शमन करवा सकते थे। इस तरह विषवाद का एक कारण सम्प्रदायों के पारस्परिक संघर्ष से उत्पन्न हो जाता है। दूसरा कारण साधु-समाज की आन्तरिक भिन्नता, कुसम्प, द्वेष बुद्धि और मताग्रह से उत्पन्न हुआ समझा जाता है और तीसरा कारण धर्मज्ञान के अभाव में परमार्थ बुद्धि वाले निरभिमानि सत्पनिष्ट, और सच्चे श्रावकों की कमी है। इसी कारण श्रावकों में अमुक मुनि मेरे और) अमुक तेरे यही भावना बलवती हो गई है। इस भावना ने समाज को इतना अधिक नुकसान पहुंचाया है कि चारों तीर्थों में भिन्नता मतभेद और कुसम्प के बीज लग गये हैं।

अब इस सारी दुःखद स्थिति से छुटकारा कैसे मिले ? शासननायक प्रभु महावीर द्वारा स्थापित जैनसंघ इन सब से सुरक्षित कैसे रहे यही हम लोगों को सोचना शेष रहा है। जिस परम-पुरुष भगवान् महावीर की छत्रछाया में गौतम गणधर आदि १४०० मुनिवर थे चन्दन बाला आदि ३६०० साध्वियां थीं,शंख पोखली शतकजी जैसे १५६ ० श्रावक थे और सुलसा रेवतीजी आदि जैसी ३१८० ० उच्चकोटि की श्राविकायें थीं। इतनी अधिक संख्या होते हुए भी मतभेद के झगड़े, कुसंप या मतभेद न था। किन्तु आज समय बदल गया है। पूर्वकाल के सदृश न तो मुनिराज रहे और न श्रावक हो। आज चारों ही तीर्थों में थोड़ा या अधिक अंश में शिथिलता व्याप्त हुई दृष्टिगो-

घर होती है। जिसका यह स्पष्ट अर्थ है, कि हम लोग दुर्भाग्यवश पंचम काल में उत्पन्न होकर, चौथे काल की बात करने बैठें, तो वह सदा ही आकाश कुसुमवत् समझी जायगी। फिर भी साधु या श्रावक आदि तीर्थ, मूलभाव को न भूलें। उसे, प्रभु की आज्ञानुसार, भली-भांति हृदय में धारण करके रक्खें। और आज जो मूलभूत-सिद्धान्तों-आचरणों का क्रमशः लोप होता जाता है। उन सिद्धान्तों को जारी रखने, सुदृढ बनाने और स्थिर करने के लिये, हमें अपने श्रीसंघ को मजबूत करना चाहिये। इस सम्बन्ध में, यथाशक्ति परिश्रम करने की आवश्यकता है। कुछ ही वर्षों पूर्व, जो जैन समाज लाखों नहीं, बल्कि करोड़ों की संख्या में था, वही समाज आज अंगुलियों पर गिना जा सके, इतनी संख्या में संकुचित होगया है, जैन-सिद्धान्त के जो तत्व, अखिल विश्व को मान्य एवं मननीय थे, उन तत्वों के प्रति, अन्य समाज तो क्या, स्वयं अपना ही समाज कितनी-उदासीनता दिखलाता है, यह बात आज प्रत्यक्ष देख सकते हैं। और इसका कारण भी स्पष्ट है। वीर भगवान के अगाध और अखण्ड-चरित्रबल के सामने, करोड़ों मनुष्यों को सिर झुका देना पड़ता था। आज, विश्ववन्द्य महात्मा गांधीजी के, अपूर्व चरित्रबल के कारण, सारे विश्व को नम्र बनना पड़ा है। ठीक इसी तरह से, अपने संघ के प्रबल चारित्रवान्-मुनियों के आकर्षण से, समस्त जैन समाज एकाकार हो सकेगा। किन्तु, आज हमारे प्रत्येक के पृथक्-पृथक् विचार, विभिन्नता, मतभेद कुसंप, पक्षापक्षी आदि बातों की कल्पना होते ही हृदय अकुलाता है घबराता है।

साधु-सम्मेलन में, उत्साह पूर्वक सहयोग देने के लिये पंजाबी और मारवाड़ी मुनिराज, प्रसन्नता पूर्वक आगे बढ़ रहे हैं। इस के विरुद्ध कोई मुनिराज, 'अभी समय की देर है' यों कह कर अपना वह उत्साह भङ्ग करते हैं। इन श्रीमान के ये विचार, अनिवार्य नहीं जान पड़ते। उनका कथन है कि पहले स्व-सम्प्रदाय का सुधार करो और फिर दृढ़ता पूर्वक आगे बढ़ो तो कार्य आलोकित हो उठेगा। उनका यह कथन भी असत्य तो नहीं है। तो फिर अब क्या किया जाय? यदि साधु सम्मेलन स्थगित कर दें तो अन्य उत्साही मुनिवरों को आघात पहुंचेगा और एक धर्मप्रेमी सज्जन के कथनानुसार, यह कार्य बंद रहा, तो फिर यह स्थिति लाने में कठिनाई होगी। इसका यह अर्थ है, कि एक विषम स्थिति उत्पन्न हो गई है। सुज्ञ विचारक गण, इसका कोई उपाय सोचेंगे ही, लेकिन 'विलम्ब किमालये' कार्य, जहां एक बार ढीला पड़ा, तहां पड़ा। उत्साह की बाढ जहां कम हो गई, तहां उसे फिर बढ़ते देर तो लगेगी ही न? और उस समय तक की प्रतीक्षा करने की अपेक्षा, 'समयं गोयम मा पमायए' इस सूत्र कथन का अभी ही अवलम्बन क्यों न ले लिया जाय? 'धर्मस्य त्वरिता गतिः' इस सूत्र के अनुसार, धर्म के कार्य में ढील कैसी? हिम्मत, श्रद्धा और आत्म बल से, आगे क्यों न बढा जावे? जहां सच्ची भावना, सच्ची लगन, सच्चा हृदय बल और सच्चा चारित्र बल होगा, वहां अवश्य ही अपनी विजय है। इस में, बाह्य विचारों का खेद किसलिये? एक के बाद एक बात की खोज करते रहने पर, इस पञ्चम काल के मानव दूषणों का, यों साधारणतया कैसे अन्त मिल सकता है? यह सब होते हुए भी, करने योग्य कार्यों को तो, भारतवर्ष के अपने साधु समाज ने, बहुत अंशों में पूर्ण किया है। मारवाड़ सम्मेलन हो गया, पञ्जाब सम्मेलन हुआ, राजकोट सम्मेलन हुआ और लींबड़ी सम्मेलन हुआ। इस तरह, अनेक सम्मेलन, (प्रान्तीय विचार विनिमय के लिये) हो गये। कुछ श्रावक सम्मेलन भी हुये और शेष लोगों को यदि अब भी करना हो, तो कौन अवकाश की कमी है।

दरियापुरी सम्प्रदाय का सम्मेलन कार्तिक पूर्णिमा से लगा कर, कार्तिक अमावस्या तक अहमदाबाद नगर में हो सकने का सुयोग्य और सरल प्रसंग है। सभी मुनिराज, अत्यन्त सरलता पूर्वक, पन्द्रह दिन में अहमदाबाद पहुंच सकते हैं और वहां सभी विषयों पर विचार कर सकते हैं। इसके बाद, यदि निश्चित तिथि पर अजमेर पहुंचना तय हो, तो यह भी बहुत कठिन नहीं है।

ऐसा ही सुयोग्य अवसर, खम्भात-सम्प्रदाय को भी है। उक्त सम्प्रदाय के गच्छाधिपति पूज्य श्री अहमदाबाद में ही विराजते हैं और उस सम्प्रदाय के अन्य मुनिराज भी नजदीक ही हैं। इसलिये यदि चाहें तो वे भी इस कार्य को पूर्ण कर सकते हैं। इसके बाद, अजमेर के मार्ग में जाते हुए मुनिराज, पालनपुर मुकाम पर, गुर्जर मुनिमण्डल एकत्रित कर सकते हैं। केवल इच्छा शक्ति (*Will Power*) और श्रद्धा (*Confidence*) पर सब कुछ निर्भर है। समय, धीरता धारण करवा देता है। दृढ़ निश्चय से कार्य करने वाले गोंडल और बोटाद सम्प्रदाय के भी संगठन करवा सकते हैं।

इसके अतिरिक्त, यह भी सम्भव नहीं है कि महा सम्मेलन में जो प्रस्ताव पास हों उसके दूसरे ही दिन सब जगह अमल होता हम देख सकें। कारण कि महासम्मेलन में जो जो प्रस्ताव पास हों उन्हें आधार बना कर अपनी २ सम्प्रदाय को पुनः एकत्रित करके उन प्रस्तावों को अमल में लाने का प्रयत्न हो सकता है। किन्तु छोटे २ साम्प्रदायिक सुधारों के लिये, बृहद् सम्मेलन का कार्य स्थगित कर देना कदापि उचित नहीं है। यह बात मेरे अन्तर में मानली है। भारतीय संस्थाएं और महा सभायें सम्मेलन में प्रस्ताव पास करती हैं उसके बाद ही उस प्रस्ताव को अमल में लाने के लिये प्रचार कार्य की आवश्यकता होती है। इसी तरह बृहद् साधु सम्मेलन और उसके साथ २ श्रावक-सम्मेलन में पास हुए प्रस्ताव बाद में साम्प्रदायिक मिलन से हमलोग कार्य रूप में परिणत कर सकेंगे और यह होते हुए भी जो त्रुटियां रह जावेंगी उनके लिए सांप्रदायिक या अन्य समितियां नियुक्त हुई रहेंगी वे उसका योग्य निराकरण करेंगी। इसलिये यह एक विशाल और भव्यतम महा सम्मेलन का कार्य स्थगित न करके आत्म विश्वास और साहस पूर्वक आगे बढ़ाने में कल्याण ही निहित है। आगे ऐसा विद्वान और विचारक सुज्ञात्माओं को सूझे, सो ठीक है। मैंने तो अपना आन्तरिक मनोभाव इस तरह व्यक्त कर दिया है। इस लेख में यदि किसी आत्मा को जरा भी खेद हो तो मैं क्षमा मांग कर अन्य विचारक वर्ग की आत्मध्वनि सुनने के सुन्दर सुयोग की प्रतीक्षा करता हुआ अपनी लेखनी बन्द करता हूं।

× × × × ×

कहना न होगा कि इस लेख के प्रकाशित होने से पूर्व ही शतावधानी पं० मु० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज अभी फाल्गुन में साधु-सम्मेलन करने की सम्मति दे चुके थे और इस तरह यह प्रश्न हल हो चुका था।

दरियापुरी संप्रदाय का सम्मेलन

जब भारतवर्ष के विभिन्न प्रान्तों में, प्रान्तीय साधु सम्मेलन एवं सांप्रदायिक सम्मेलन हो रहे थे, तब दरियापुरी संप्रदाय ही क्यों शांत बैठती ? फलतः उस संप्रदाय का भी साधु-सम्मेलन हुआ, जिसकी रिपोर्ट जैन प्रकाश में यों प्रकाशित हुई—

कलोल में, दरियापुरी संप्रदाय के साधु-साध्वियों का सम्मेलन, ता० ५-६ दिसम्बर १९३२ सं० १९८९ की मार्गशीर्ष शुक्ला ८-९ सोम तथा मङ्गलवार को हुआ था। बाहर के गांवों से सैंकड़ों की तादाद में श्रावक श्राविका भी दर्शनार्थ आये थे ।

उपस्थिति— पूज्य श्री उत्तमचन्द्रजी म० मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० मुनि श्री ईश्वरलालजी म० मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म० मुनि श्री भायचंद्रजी म० आदि कुल ठाणा १५ तथा महासतीजी श्री महाकोरबाई स्वामी, श्री विजयकुंवरि बाई स्वामी, श्री छवलबाई स्वामी, आदि ठा० ११ एकत्रित हुए थे।

राजकोट में हुए साधु-सम्मेलन के प्रस्तावानुसार, दरियापुरी संप्रदाय के साधु-साध्वियों ने दो दिन तक विचार विनिमय करने के पश्चात् निम्न लिखित प्रस्ताव पास किये थे।

(१) साधु साध्वियों को चातुर्मास पूर्ण होने पर, कार्तिक कृष्णा १ (अपनी जैन तिथि के अनुसार) को विहार करना चाहिये

(२) दीक्षा सम्बंधी नियम—

(क) दीक्षा के निमित्त सूत्र का खरड़ा न किया जाय ।

(ख) दीक्षा लेने वाले व्यक्ति के अतिरिक्त, अन्य कोई साधु-साध्वी दीक्षा में बेहरें नहीं।

(ग) दीक्षा लेने वाली स्त्री अथवा पुरुष, आवश्यकता से अधिक वस्त्र न बेहरें। (रेशमी तो बिल्कुल लें ही नहीं)

(घ) दीक्षा का पाठ पढ़ाने के बाद, अपने निमित्त खरीदी हुई वस्तु न बेहरी जाय।

(ङ) दीक्षा लेने वाले की आयु, १५ वर्ष से कम नहीं होनी चाहिये ।

(च) दीक्षा लेने वाले के कुटुम्बी की स्वीकृति के बिना दीक्षा नहीं दी जा सकेगी।

(छ) जिस जगह दीक्षा दी जावे, वहां के श्रीसंघ की सम्मति लेना आवश्यक है।

(ज) दीक्षा देने से पूर्व, किसी स्त्री से भिक्षा न करवाई जावे और यदि बिना आज्ञा के कोई स्वेच्छापूर्वक भिक्षा करे, तो उसे दीक्षा न दी जाय।

(झ) दीक्षा लेने वाला पुरुष भिक्षा करे तो, वेश उतार कर और वरघोड़ा निकाल कर दीक्षा न दी जाय। यह पुरुष यदि लोगो की राय के बिना, अपनी मर्जी से वरघोड़ा निकाले, तो उसकी इच्छा।

(२) कर्जदार मनुष्य को अथवा रुपये देकर दीक्षा न दी जाय।

(३) रेशमी वस्त्र बेहरना, आज से सदा के लिये बंद किया जाता है। (अभी जो पास हैं उनकी बात अलग है)

(४) चातुर्मास के क्षेत्र में व्याख्यान तथा वांचन के समय के अतिरिक्त आर्याजी अथवा बाइयों को, उपाश्रय में साधुजी के पास नहीं बैठना चाहिये। वांचन का समय दो पहर को दो बजे से चार बजे तक रक्खा जावे और वांचन भी व्याख्यानशाला अथवा खुले हॉल में ही जानी चाहिये। मेहमानों की बात अलग है किन्तु उन्हें भी खुले हॉल में बैठना चाहिये।

(५) साधुओं तथा पुरुषों को साध्वियों के उपाश्रय में अकेले न बैठना चाहिये। इसी तरह से साध्वियों को भी साधुओं अथवा श्रावकों के पास कलम नं० ४ में बतलाये हुए समय पर भी अकेली न बैठना चाहिये। रोगादिक कारण होने की छुट्टी है।

(६) लोगों में अप्रीतिकारी गिने जाने वाले घरों में साधु-साध्वियों को अकेले न जाना चाहिये।

(७) साधु-साध्वी अपने फोटो न खिंचवावें।

(८) पाट पर रुपये रखवाने अथवा पाट को प्रणाम करवाने की भूल कोई न करें।

(९) संवत्सरी संबंधी कागज न लिखे जांय और न छपवायें जांय।

(१०) साध्वियां बारीक कपड़े पहन कर तथा ओढ़ कर, स्थान से बाहर न निकलें।

(११) साधु साध्वी रोग तथा वायु से विकल (म्लान) हो गये हों तो उन्हें सम्प्रदाय से बाहर न निकाला जाय।

(१२) साधुओं को दो और साध्वियों को तीन से कम न रहना चाहिये। निरुपाय स्थिति में, यदि तीसरी आर्याजी न हो तो आज्ञा से दो भी रह सकती हैं।

(१३ साध्वियां गोचरी की आज्ञा देवें तो जावें लेकिन गोचरी त्रिकसाल न जावें।

(१४) गृहस्थ से हाथ से तथा मशीन से कपड़े न सिलवाये जावें। यदि कोई ऐसा करे, तो वह प्रायश्चित्त का भागी है।

(१६) सामान्य-कारण से तथा ज्ञान की न्यूनता के कारण यदि कोई गुरु अपने शिष्य तथा शिष्या को अलग करेगा, तो उसे नये शिष्य अथवा शिष्या करने का अधिकार न रहेगा।

(१७) यदि कोई साधु साध्वी अपना सम्प्रदाय छोड़ अथवा किसी दोष के कारण सम्प्रदाय वाले उसे संघाड़े से बाहर निकालें तो उसका भण्डार पर कोई अधिकार न रहेगा।

(१८) अन्य संघाड़े के साधु-साध्वी को, अपने संघाड़े में मूल संघाड़े की आज्ञा के बिना न लिया जाय और दूसरे संघाड़े के वैरागी को मूल-सम्प्रदाय की आज्ञा के बिना दीक्षा न दी जाय।

(१९) किसी भी सम्प्रदाय के साधु साध्वी या संघ पर, द्वेष बुद्धि से आक्षेप करके, आक्षेपात्मक लेख या अपनी सम्प्रदाय की मान्यता के विरुद्ध लेख समाचार पत्रों में न भेजा जाय। इसी तरह अपने नाम से पत्र भी न भेजे जांय।

(२०) साधुगण, पुस्तकों के क्रय विक्रय में न पड़ें।

(२१) भण्डार की तमाम छपी हुई पुस्तकें भिन्न-भिन्न ग्रामों में दो बड़ी की अपनी डेरी या आश्रम को सौंप दी जावें।

(२२) पूज्य श्री रघुनाथजी स्वामी के साधु-साध्वियों का, एक भण्डार कर दिया जाय। पूज्य श्री हीराचन्दजी स्वामी के साधु-साध्वियों का एक भण्डार कर दिया जाय तथा पूज्यश्री अमीचन्दजी स्वामी के साधु-साध्वियों का भी एक ही भण्डार कर दिया जाय। इन भण्डारों में, केवल हस्तलिखित-पुस्तकें ही रक्खी जायँ। जिस ग्राम में भण्डार हों, वहीं एकत्रित कर दिये जायँ। सम्प्रदाय के सभी साधु तथा साध्वियों को समस्त भण्डारों से, पढने के लिये पुस्तकें लेने की स्वतन्त्रता है।

(२३) प्रत्येक क्षेत्र के श्रीसंघ को, चातुर्मास की विनती के पत्र, मार्गशीर्ष कृष्णा २ से लगाकर, माघ कृ० २ तक, पूज्य श्री जिस तरफ विचरते हों, उस तरफ के बड़े ग्राम मे भेजने चाहिए। इस वर्ष, शाह वाडीलाल डाह्याभाई छीपापोल अहमदाबाद के पते पर पत्र भेजे जावें। पूज्य श्री, फाल्गुण शु० २ से चैत्र सुदी २ तक जहां विचरते होंगे, वहां से चातुर्मास निश्चित करके सूचना भिजवा देंगे।

(२४) गुर्जर-साधु-समिति की सभी सम्प्रदायों के बारह, व्यवहारों (सभोगों) में से ३, ५, ६, व्यवहार छोडकर, शेष नौ व्यवहार परस्पर किये जावें।

(२५) साध्वियां, साधुजी के दर्शन करने के निमित्त, समीप के नगर अथवा ग्राम को न जावें। जाते आते यदि कहीं इकट्ठे हो जायँ, तो दो दिन से ज्यादा न रुकें।

(२६) साधुगण भी, शरीर के खास कारण के अतिरिक्त, आर्याजी को दर्शन देने के लिये नजदीक के किसी ग्राम में न जायँ।

(२७) साधु-साध्वी, अपने अथवा अपने शिष्य-शिष्याओं के गुजराती-शिक्षण के लिये वैतनिक अध्यापक न रखवावें।

(२८) साध्वियां, वायल जैसा बारीक तथा रंगीन किंवा छपा हुआ कपड़ा नया न वहरें और यदि पुराना हो, तो पहनकर बाहर न निकलें।

(२९) साधुओं को, श्राविकाओं के उपाश्रय में और साध्वियों को श्रावकों के उपाश्रय में भण्डोपकरणादि कुछ भी स्थायी रूप से न रखना चाहिये।

(३०) साधुजी, आर्याजी तथा श्राविकाओं के नाम तथा साध्वीजी, साधुजी एवं श्रावकों के नाम, अपने हाथ से पत्र न लिखें। यदि किसी खास कारण से लिखना ही पड़े, तो खुले कुए पोस्टकार्ड में, गृहस्थ के पते पर लिखें। यदि, किसी साधु साध्वी को प्रायश्चित आदि कारणों से बन्द लिफाफा भेजना पड़े, तो संघ की सम्मति से लिखा जाय।

(३१) गृहस्थ के यहां उपकरण अथवा पुस्तकें न रक्खें।

(३२) कोई साधु साध्वी अकेले न विचरें। यदि, कारणवश कहीं जाना ही पड़े, तो सम्प्रदाय के अग्रेसर-मुनि की मंजूरी के बिना न जायँ। यदि, सहायता के अभाव में कहीं अकेले रहना पड़े, तो सम्प्रदाय के अग्रेसर बतलावें, उस ग्राम में, सहायता मिलने तक रहें।

(३३) दरियापुरी सम्प्रदाय के साधु-साध्वी, अन्य क्षेत्र में गये हों और उस क्षेत्र मे चातुर्मास रहना हो, तो उस क्षेत्र के अग्रेसर की स्वीकृति प्राप्त करके रहें।

(३४) अन्य क्षेत्र के साधु तथा साध्वी को, यदि दरियापुरी सम्प्रदाय के क्षेत्र में चातुर्मास करने की इच्छा हो, तो अग्रेसर साधु की स्वीकृति प्राप्त करके चातुर्मास तक रहें और क्षेत्र के नियमानुसार वर्ताव करें।

१—श्री जयकुँवरिजी, २—श्री हेमकुँवरिजी, ३—श्री गुलाबकुँवरिजी ३१+३=३४.

ठाणा ३१ का संगठन हो गया। ठा० ३ का सम्बन्ध फिलहाल पूज्य श्री के साथ रक्खा है। आगे देखा जायगा।

कारणवश शुजालपुर और शाजापुर से, आर्याजी ठाणा ७ यहां नहीं पहुंच सकी हैं। उनके मिलने पर, प्रवर्तिनी-मण्डल यथोचित करेगा। दक्षिण की आज्ञावर्तिनी सतियों से भी ११ संभोग जाहिर किये हैं। शेष सभी सतियों के १२ सम्भोग खुले हैं।

मालवे की धर्मप्रचारिका, महासतीजी श्री० हमीरांजी महाराज के नेतृत्व में, सभी सतियों ने खूब विचार विनिमय करके, अपना सफल संगठन किया। पूज्य श्री द्वारा उपस्थित की हुई ११७ बोल की समाचारी को सब ने पालने की स्वीकृति दी। संगठन का अन्तिम कार्य पूर्ण करके, सती-शिरोमणि हमीरांजी ता० २ को संलेहणादि से शुद्ध पण्डितमरण को शरण हुई। महासतीजी का शरीर जिस अग्नि से जलाया गया, वह अग्नि, उनकी मुँहपत्ती और चोलपट्टे के कुछ भाग को न जला सकी। यह उनकी क्रियापात्रता का चिन्ह समझा जाता है।

महासतीजी के वियोग के खेद को शान्त करके, पौष शुक्ला १३ ता० ९-१-३३ सोमवार को, प्रातःकाल ६ बजे से श्रीसंघ की जाहिर सभा, गोपीगंज के धर्मस्थानक के बाहर की गई। तीनों फिरकों के जैन एवं जैनेतर (वैष्णव मुसलमान आदि) जनता अच्छी संख्या में उपस्थित थी, सभा का कार्य, दोपहर को १॥ बजे तक चला, किन्तु फिर भी जनता भली-भांति, शान्तिपूर्वक जमी रही।

सभा का प्रारम्भ, आचार्य श्री ने, नवकारमन्त्र के मंगलोच्चारण से किया। तत्पश्चात् मुनिराजों ने मंगलस्तोत्र फरमाया, साध्वीमण्डल ने, पूज्य श्री लवजीऋषिजी म० की ऐतिहासिक लावनी सुनाई। तदुपरान्त, पूज्य श्री एवं तपस्वीराज ने, 'संगठन के महत्व, पर क्रमशः व्याख्यान फरमाये। पण्डितरत्न आनन्दऋषिजी महाराज ने, ऋषिसम्प्रदाय का संक्षिप्त इतिहास बतलाया। इसके बाद, कार्य प्रारम्भ करने से पूर्व, मन्त्रीमण्डल ने गुरुवन्दन किया। आचार्य श्री ने आशीर्वाद दिया। महासतीजी श्री रत्नकुँवरिजी महाराज तथा श्री हगामाजी म० के प्रासंगिक भाषण हुए और फिर सम्मेलन में पास हुए प्रस्ताव पढ़कर सुनाये गये।

श्री ऋषिसम्प्रदायी सती-सम्मेलन प्रतापगढ़ में पास हुए प्रस्ताव

(१) शास्त्र विशारद, आगमोद्धारक बालब्रह्मचारी पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने वृद्धावस्था होते हुए भी ऋषिसम्प्रदाय का आचार्यपद स्वीकार करके सम्प्रदाय पर जो महद् उपकार किया है, उसके लिये पूज्य श्री का आभार मानते हुए, यह सती सम्मेलन, पूज्य श्री की छत्रछाया को स्वीकार करता है। तथा ऐसे समर्थ आचार्य को प्राप्त करने में अपना बड़ा सौभाग्य समझता है।

प्र०—आर्याजी श्री कस्तूरांजी महाराज

अ०—आर्याजी श्री सरदारांजी महाराज.

(२) आचार्य, पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज सा०, तपस्वीराज श्री० देवजी ऋषिजी म०, पं० रत्न श्री आनन्द ऋषिजी म०, आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० आदि गुरुवरों ने दक्षिणादि

दूर प्रदेशों से मालवे में पधारकर, हमको दर्शनदान दिया है और इस सती सम्मेलन में मार्ग प्रदर्शन करके, सती-संगठन करवाया है। इसलिये यह सम्मेलन उक्त मुनिवरों का हार्दिक आभार मानता है।

प्र०—आर्याजी श्री रत्नकुंवरजी महाराज

अ०— „ , चतुरकुंवरजी महाराज

(३) राजकोट पाली, होशियारपुर, सांवडो, इन्दौर आदि स्थानों पर मुनि-सम्मेलनों के द्वारा, जो-जो संगठन तथा सुधार हुए हैं, विशेष एवं चिरस्थायी बनें ऐसी इस सती सम्मेलन की हार्दिक भावना है।

प्र०—आर्याजी श्री केशरकुंवरजी महाराज

अ०— „ „ नगरकुंवरजी „

(४) अजमेर में आगामी चैत्र शु० १४ से होने वाला श्री बृहत्साधु सम्मेलन चतुर्विध श्री संघ की ज्ञान, दर्शन, चारित्र की वृद्धि-पूर्वक जिन शासन को आलोकित करता हुआ सफल हो ऐसी इस सती-सम्मेलन की श्री शासनदेव से प्रार्थना है।

प्र०—आर्याजी श्री हगामाजी महाराज

अ— , इन्दरजी महाराज

(५) अजमेर बृहत्साधु-सम्मेलन के वास्ते दूर दूर प्रदेशों से, विहार के अनेक कष्ट सहकर पधारते हुए, महामान्यवान मुनिवरों का विहार सुखरूप हो ऐसी इस सती-सम्मेलन की श्री शासन-देव से नम्र प्रार्थना है।

प्र०—आर्याजी श्री० सिरेकुंवरजी महाराज

अ०— , , फूलकुंवरजी ,

(६) यह सती सम्मेलन, अजमेर में होने वाले बृहत्साधुसम्मेलन से विनम्र प्रार्थना करता है कि 'बृहत्साध्वीसम्मेलन' योग्य-स्थान और उचित समय पर करवाने की व्यवस्था पर विचार करें। तथा इसकी सफलता के लिये जैसे प्रान्तिक एवं साम्प्रदायिक सम्मेलन हुए हैं उसी तरह सतियों का संगठन करने का प्रयास सम्प्रदाय के मुख्य मुख्य मुनिराज शुरू करने की कृपा करें।

प्र०—आर्याजी श्री० अमृताजी महाराज

अ०— „ केशरजी ,

(७) अजमेर में होने वाले बृहत्साधुसम्मेलन में ऋषि सम्प्रदाय की तरफ से पधारने वाले (इन्दौर में ऋषि सम्मेलन के द्वारा चुने हुए) पांच प्रतिनिधि मुनिवरों के प्रति यह सती-सम्मेलन अत्यन्त मान पूर्वक हार्दिक-श्रद्धा प्रकट करता है और उन्हें इस सम्मेलन के भी प्रतिनिधि स्वरूप हर्ष पूर्वक स्वीकार करता है।

प्र०—आर्याजी श्री० लछमाजी महाराज

अ०— „ सुन्दरकुंवरजी महाराज

(८) यह सम्मेलन सती शिरोमणि दक्षिण की धर्मप्रचारिका, महासती श्री रामकुंवरजी महाराज और महासती श्री सुन्दरजी महाराज के स्वर्गवास पर खेद प्रकट करता है और स्वर्गस्थ आत्मा की धममयी शान्ति के लिये भावना करता हुआ उनकी शिष्या सतियों को आश्वासन देता है।

प्र०—आर्याजी श्री० आनन्दकुंवरजी महाराज

अ०— „ „ मैनाकुंवरजी „

(९) यह सती-सम्मेलन, नवदीक्षित मुनि व महासतियों को बधाई देता हुआ, निर्मल संयम द्वारा, ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र की वृद्धि करके जीवन सफल करने की भावना करता है।

प्र०—आर्याजी श्री० सरदारकुँवरिजी महाराज.

अ०— ,, ,, हुलासकुँवरिजी ,,

(१०) यह सतीसम्मेलन, इन्दौर ऋषि सम्मेलन के समय बनी हुई १०५ बोल की समाचारी और बाद में १२ बोल बढाकर बनाई हुई ११७ बोल की समाचारी को सहर्ष स्वीकार करता है।

प्र०—आर्याजी श्री० हगामाजी महाराज

अ०— ,, ,, राजकुँवरिजी ,,

(११) यह सती सम्मेलन, आचार्य श्री की सम्मति के अनुसार, महासती श्री हमीरांजी म०, श्री० कस्तूरांजी म०, श्री सरदाराजी म०, श्री रत्नकुँवरिजी म०, और श्री० हगामाजी म०, इन पांच महासतियों का प्रवर्तिनी-मडल नियुक्त करता है। सब संगठित-सतियांजी उनकी आज्ञानुसार संयम निर्वाह करना स्वीकार करती हैं।

प्र०—आर्याजी श्री इन्द्रकुँवरिजी महाराज.

अ०— ,, ,, उमरावकुँवरिजी ,,

(१२) इस सम्मेलन मे नियुक्त हुए प्रवर्त्तिनी मण्डल द्वारा, सभी सतियों के विहार, चातुर्मास, प्रायश्चित आदि को व्यवस्था, आचार्य श्री की सम्मति पूर्वक होगी। पक्खी, संवत्सरी आदि की आज्ञा भी प्रवर्त्तिनीमण्डल, आचार्य श्री से मंगावेगा।

प्र०—आर्याजी श्री० सिरेकुँवरिजी महाराज

अ०— ,, ,, फूलकुँवरिजी ,,

[१३] चातुर्मास तथा संवत्सरी की आज्ञा के अतिरिक्त, अन्य कार्यों के लिये आचार्य श्री ने, मालवे की सतियों के अधिकारी तपस्वीराज श्री० देवजी ऋषिजी महाराज को और दक्षिण की सतियों के अधिकारी प० रत्न आनन्दऋषिजी महाराज को नियत किया है। तदनुसार यह सम्मेलन, तपस्वी जी श्री० देवजीऋषिजी महाराज को अपने अधिकारी स्वीकार करता है।

प्र०—आर्याजी श्री वल्लभकुँवरिजी महाराज,

अ०— ,, ,, श्रीमतीजी महाराज,

[१४] यह सम्मेलन घोषित करता है, कि:—

[क] सगठित सभी महासतियांजी, परस्पर १२ संभोग खुले समझे।

[ख] दक्षिण-खानदेश की तरफ विचरने वाली ऋषि सम्प्रदाय की आज्ञावर्तिनी महासतियों के साथ, ११ व्यवहार (सम्भोग) खुले समझें।

[ग] ऋषि सम्प्रदाय की जो सतियां सङ्गठित नहीं हुई हैं, या तीन से कम विचरती हैं, ऐसी लोकापवाद विना की सतियों की, परस्पर वात्सल्य-सम्बन्ध द्वारा सेवा की जा सकेगी।

प्र०—आर्याजी श्री रत्नकुँवरिजी महाराज.

अ०— ,, ,, चांदकुँवरीजी ,,

(१५) मालवे की धर्मप्रचारिका, सतीशिरोमणि, स्थविरा सती श्री० हमीरांजी महाराज ने, इस सम्मेलन को सफल करने में पूर्ण सहयोग दिया है, और आप ही की कृपा से सम्मेलन सफल हुआ है। अतः यह सम्मेलन आपका अत्यन्त आभार मानता है।

प्र०—आर्याजी श्री० चन्दकुँवरीजी महाराज
अ०— " " दलासकुँवरीजी महाराज

उपरोक्त प्रस्ताव सुना चुकने के पश्चात्, श्री० सुन्दरलालजी ने मुनिगुणमाला का स्तवन सुनाया। बाबू लक्ष्मीनारायणजी अग्रवाल ने भगवान् महावीर के जीवन पर अच्छा प्रकाश डाला, और उन्हीं के परिवार (साधु साध्वी) को बधाई दी। रवि० जैन सेठ लक्ष्मीचन्दजी मीया ने इस संगठन के प्रति हर्ष बतलाकर, समस्त जैन संगठन की इच्छा प्रदर्शित की। मास्टर बालमुकुन्दजी, तथा श्री चौ० के सुरखिया ने प्रासंगिक-विवेचन किया। प्रतापगढ़ राज्यसभा के सभ्य और वकील मिर्जा साहब ने आनन्द प्रदर्शन के साथ-साथ, ऐसी व्यापक भावना के व्याख्यान, पूज्य श्री के विराजने तक हमेशा करने की प्रार्थना की।

अन्त में, आचार्य श्री पण्डितरत्न आनन्द ऋषिजी म० सा० ने साध्वीजी को महिला समाज सुधारने की सूचना दी। तत्पश्चात् महासतियों ने, शान्ति स्तवन का अन्तिम मंगलगान किया। फिर महावीर प्रभु जिनशासन पूज्य श्री आदि के जयनाद साथ, दोपहर को १॥ बजे सभा का कार्य सानन्द पूर्ण हुआ।

श्री स्थानीय जैन श्री संघ (प्रतापगढ़)

मरुधर मुनि सम्मेलन का द्वितीय अधिवेशन

ब्यावर

यों तो सारे ही भारतवर्ष में साधु सम्मेलन की तैयारी, प्रांतीय एवम् सांप्रदायिक सम्मेलनों की धूम और मुनिराजों के विहार के कारण एक विचित्र उत्साह फैला हुआ था किन्तु खास तौर पर मारवाड़ के मुनिराजों तथा श्रावकों में विशेष उत्साह और सावधानी थी। कारण कि उन्हीं के घर में वह महा पर्व होने जा रहा था जिसकी पिछले १५०० वर्षों में कल्पना भी नहीं की गई थी और विभिन्न प्रांतों से विहार का कष्ट सहन करते हुए बड़े २ विद्वान मुनिराज उन्हीं के यहां मेहमान होकर आ रहे थे। इन आगन्तुक महानुभावों को किसी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिये मरुधर के मुनिराजों ने एक स्वागत समिति तथा स्वयंसेवक मण्डल तैयार कर लिया था और वे स्वयंसेवक मुनिराज अन्य प्रान्तीय मुनिराजों के सम्मुख जाकर उनका स्वागत करते तथा उन्हें सब तरह सुविधा पहुंचाने का प्रयत्न करते थे यह बात पहिले बतलाई जा चुकी है। इस तरह की सेवाभावना और आतिथ्य भाव से ओतप्रोत मुनिराजों ने अपनी इस सद्भावनाओं को और अधिक दृढ़ करने के निमित्त मरुधर मुनि सम्मेलन का दूसरा अधिवेशन ब्यावर में किया जिसकी रिपोर्ट जैन प्रकाश में यों प्रकाशित हुई थी—

सं० १९९१ माघ शुक्ला ३ ४ ५ ता० १४ १५ १६ जनवरी सन् १९३५ ई०

उपस्थिति

पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज की संप्रदाय के प्रवर्त्तक मु० श्री धैर्यमलजी म०, ठा० ४
पूज्य श्री अमरसिंहजी म० की सम्प्रदाय के मन्त्री मु० श्री ताराचंद्रजी म० ठा० ४
पूज्य श्री जयमलजी म० की संप्रदाय के प्रवर्त्तक पं० श्री हज़ारीमलजी म० ठा० १२
पूज्य श्री नानकरामजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक मु० श्री पन्नालालजी म० ठा० ३
पूज्य श्री स्वामीदासजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक मु० श्री फतेहलालजी म० ठा.५

वोट मिले—

मुनि श्री चौथमलजी म० की संप्रदाय के प्रवर्त्तक मुनि श्री शार्दूल सिंहजी महाराज ठाणा ३, अस्वस्थता के कारण न पधार सके, अतः मन्त्री मु० श्री ताराचन्द्रजी म० को वोट दिया।

प्रवर्त्तक मु० श्री दयालचन्दजी म० ठाणा २ तथा मु० श्री उत्तमचंद्रजी महाराज ठा० ३ कुल ठाणा ५ नहीं पधार सके अतः मन्त्री मु० श्री ताराचन्द्रजी म० को वोट दिया।

निमन्त्रित मुनि—

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म० सा० की सम्प्रदाय के आत्मार्थी मु० श्री मोहनऋषिजी महाराज ठाणा २

कार्यवाही—

(१) प्रथम अधिवेशन पाली की कार्यवाही सुनाई गई और उसके लिये सन्तोष प्रकट किया गया।

(२) यह सम्मेलन, राजकोट, होशियारपुर, महेंद्रगढ़, लींबड़ी, इन्दौर, कलोल, प्रतापगढ़ आदि स्थानों में हुए प्रांतिक एवं साम्प्रदायिक साधु साध्वियों के संगठन के प्रति हार्दिक संतोष प्रकट करता है।

(३) मरुधर साधु सम्मेलन के प्रति हार्दिक अभिनन्दन प्रकट करने वाले साधु साध्वी तथा श्रावक श्राविकाओं के प्रति, यह सम्मेलन साभार प्रमोद भाव प्रकट करता है।

(४) आगामी चैत्र शुक्ला १० से अजमेर में प्रारंभ होने वाले श्री बृहत् साधु सम्मेलन के प्रति यह सम्मेलन, दृढ श्रद्धा प्रदर्शित करता हुआ उसकी संपूर्ण सफलता की भावना करता है। तथा सम्मेलन द्वारा जिन शासनोन्नति का सुअवसर प्राप्त कराने वाले चतुर्विध श्री संघ को धन्यवाद देता है।

(५) यह सम्मेलन ऐसे शीतकाल में विहार कर के, अनेक प्रकार के परिषह सहन करते हुए, गुजरात, कच्छ, काठियावाड़, पञ्जाब, महाराष्ट्र आदि दूर २ के प्रदेशों से पधारने वाले मुनिराजों के विहार सुखपूर्वक होने की भावना करता है। उन महा पुरुषों के स्वागतार्थ, निम्न मुनिराजों की स्वागत समिति कायम करता है, जो निम्न लिखित स्थानों पर हाजिर रहेंगे—

स्थान	नाम मुनिराज	संप्रदाय
सादड़ी	मुनिश्री छगनलालजी महाराज, मंत्री	पूज्य श्री स्वामीदासजी म०
,,	,, चांदमलजी महाराज	पूज्य श्री जयमलजी महाराज

,	,,	मिश्रीमलजी महाराज मन्त्री	पूज्य श्री रघुनाथजी महाराज
पाली	,,	दयालचन्द्रजी महाराज ठा० २	पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज
सोजत	,,	शार्दूलसिंहजी महाराज ठा० ३ प्र०	पूज्य श्री चौथमलजी महाराज
ब्यावर	,,	हजारीमलजी महाराज ठा० ३ प्र०	पूज्य श्री जयमलजी महाराज
किशनगढ़	,,	पन्नालालजी म० ठाणा २ प्र०	पूज्य श्री नानकरामजी महाराज
भीलवाड़ा		गणेशमलजी म० ठाणा २ प्र०	पूज्य श्री जयमलजी महाराज

(६) यह सम्मेलन घोषित करता है कि बाहर से पधारे हुए मुनिवरों को अजमेर में आहार पानी, वस्त्र न भूमि आदि हरएक प्रकार की आवश्यकता पूर्ति करने के लिए और हर प्रकार की सेवा करने को, सभी मरुधर मुनि स्वयंसेवक दल की भांति तैयार रहेंगे।

(७) यह सम्मेलन इस प्रांत में विचरने वाले और परिचित मुनिराज एवं महासतियों से प्रार्थना करता है कि बृहत्साधु-सम्मेलन में पधारे हुए पंजाब गुजरात तथा दक्षिण के मुनिवरों को चातुर्मास करने के लिए, अजमेर के आसपास १०० मील तक के क्षेत्रों को खुले रक्खें। ताकि दूर देशावर से पधारे हुए मुनिराजों को, विहार का अधिक कष्ट न उठाना पड़े। तथा इस प्रान्त को भी नवीन मुनिराजों का लाभ मिले।

(८) अजमेर सम्मेलन में पधारने वाले मुनिराजों से यह सम्मेलन प्रार्थना करता है कि आप लोग डेढ़ मास पहले ब्यावर पधारने की कृपा करें, ताकि हमें आपकी अमूल्य सेवा का सुयोग प्राप्त हो तथा बृहत् साधु-सम्मेलन को सफल बनाने की योजना विचारी जाय।

(९) यह सम्मेलन, अखिल भारतवर्षीय श्वा० जैनों से निवेदन करता है कि श्री बृहत् साधु सम्मेलन की सफलता के लिये उभयकाल श्री शासन देव से भावनामय प्रार्थना करें और अपने क्षेत्रों में निरन्तर एक एक आयंबिल शुरू कर दें।

(१०) यह सम्मेलन अखिल भारत के चतुर्विध श्री संघ (साधु साध्वी श्रावक श्राविका) से निवेदन करता है, कि श्री बृहत् साधु सम्मेलन सफल होने तक कोई भी किसी प्रकार का सत्याग्रह न करें।

(११) यह सम्मेलन मरुधर सम्प्रदायों से आग्रह करता है कि बृहत्साधुसम्मेलन से पहले यदि अपनी २ सम्प्रदाय के साधु-साध्वियों के संगठन में किसी प्रकार की न्यूनता हो तो शीघ्र ही सम्पूर्ण संगठन करने का यत्न करें।

(१२) यह सम्मेलन श्री बृहत्साधुसम्मेलन के वास्ते मरुधर सम्प्रदायों की तरफ से निम्न प्रतिनिधि चुनता है—

(क) पूज्य श्री रघुनाथजी म० की सम्प्रदाय के संगठित मुनि ४ आर्याजी २१ कुल ठाणा २५ की तरफ से प्रतिनिधि दो।

१ प्रवर्तक मुनि धैर्यमलजी म० २—मन्त्री मुनि श्री मिश्रीमलजी म०।

[ख] पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की सम्प्रदाय के मुनि ९ और आर्याजी ८१ कुल ९० ठाणों की तरफ से प्रतिनिधि ४।

१—प्रवर्तक मुनि श्री दयालचन्द्रजी म० २ मन्त्री मुनि श्री ताराचन्द्रजी म० ३—मुनि श्री उत्तमचन्द्रजी म० ४—मुनि श्री नारायणदासजी म०।

[ग] पूज्य श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के संगठित मुनि १२ और आर्याजी १०० कुल ११२ की तरफ से प्रतिनिधि ५।

[१] प्रवर्त्तक मुनि श्री हजारीमलजी म०, २ मन्त्री मुनि श्री चौथमलजी महाराज, ३ मुनि श्री गणेशीलालजी म०, ४-मुनि श्री वक्तावरमलजी म०, ५ मुनि श्री चैनमलजी महाराज।

[घ] पूज्य श्री स्वामीदासजी म० की सम्प्रदाय के संगठित मुनि ५ और आर्याजी १२ कुल ठाणे १७ की तरफ से प्रतिनिधि २।

१—प्रवर्तक मुनि श्री फतेलालजी म०, २—मन्त्री मुनि श्री छगनलालजी महाराज।

[ङ०] पूज्य श्री नानकरामजी म० की सम्प्रदाय के मुनि ३ और आर्याजी १४ कुल १७ की तरफ से प्रतिनिधि २।

१—प्रवर्तक मुनि श्री पन्नालालजी म०, २—नाम पीछे प्रकट होगा।

[च] पूज्य श्री चौथमलजी म० की सम्प्रदाय के मुनि ३ और आर्याजी १८ कुल २१ ठाणों की तरफ से प्रतिनिधि २।

१—प्रवर्तक मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म०, २—मुनि श्री रूपचन्दजी महाराज।

संगठित मरुधर साधु साध्वियों के उपरोक्त प्रतिनिधियों के नाम, मन्त्री श्री साधु-सम्मेलन समिति को भेज दिये जांय। साथ ही, यह भी सूचित कर दिया जाय कि असंगठित साधु-साध्वियों के प्रतिनिधि को बिना प्रवर्तक और मन्त्री की आज्ञा के न लेवें।

सम्प्रदाय के पृथक साधु-साध्वी, यदि बृहत्सम्मेलन से पूर्व शास्त्रानुसार मिलेंगे तो प्रतिनिधियों के नामों में प्रवर्तक और मन्त्री फेरफार कर सकेंगे। किन्तु सम्मेलन प्रारम्भ होने से पूर्व मन्त्री साधु-सम्मेलन समिति को खबर देनी होगी।

इतना कार्य होने के पश्चात्, भगवान् महावीर के जयघोष के साथ दोपहर को ३॥ बजे पहले दिन की बैठक समाप्त हुई।

दूसरे दिन की बैठक.

गुजरात के मुनिवरों का पालनपुर से, सोमवार को विहार होने के हर्ष समाचार सुनकर, दोपहर के १ बजे से कार्यवाही पुनः प्रारम्भ की गई।

[१३] यह सम्मेलन, मरुधर सम्प्रदायों से साग्रह प्रार्थना करता है, कि अपनी अपनी सम्प्रदाय की महासतियों का सतीसम्मेलन, सं० १९९० की फाल्गुण शु० १५ तक, अनुकूल क्षेत्र में करें और बृहत्साधुसम्मेलन में पधारने वाले प्रतिनिधि-मुनि, सम्प्रदाय की स्वीकृति लेकर पधारें।

[१४] यह सम्मेलन मरुधर-श्रावक समिति को सूचित करता है, कि:—

[क] पाली अधिवेशन के पहले और पीछे जो २ मुनि सगठन से अलग हैं या अलग हुए है, उन्हें अपनी २ सम्प्रदाय में सगठित करवा देने का भरसक प्रयत्न करें।

[ख] मरुधर-साधु-सगठन में, पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० सा० और पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदायों को संगठित करने का प्रयत्न करें।

[ग] भविष्य में मरुधर साधु-साध्वियों के सम्बन्ध में, श्रावक समिति कोई प्रस्ताव पास करना चाहे, तो छहों सम्प्रदायों के प्रवर्तक तथा मन्त्रियों की आज्ञा प्राप्त करके उसकी रचना करें।

[१५] यह सम्मेलन, मरुधर सम्प्रदायों से प्रार्थना करता है कि अपनी २ समाचारी, यदि साधु-सम्मेलन को न भेजी हो, तो भेज दें या बृहत्साधु-सम्मेलन में पधारते समय, उसे अपने साथ लेकर पधारें।

[१६] आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० सा० की तैयार की हुई सर्वमान्य-समाचारी इस सम्मेलन में सुनाई गई और संशोधन किया गया। यह सम्मेलन, इस संशोधित सर्वमान्य समाचारी को अपनी सम्मतिपूर्वक बृहत्साधुसम्मेलन में रखना तय करता है।

[१७] सीवन से आया हुआ प्रवर्त्तक मुनि श्री शार्दूलसिंहजी म० सा० का सन्देश पढ़ा गया और विचाराधीन रक्खा गया।

[१८] पूज्य शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के मुनि श्री कजोड़ीमलजी म० सा० की शीघ्र पधारने की सूचना के कारण, सम्मेलन पौष शुक्ला १३ के बजाय माघ कृष्णा १ से रक्खा गया। तथापि अस्वस्थता के कारण, मुनि श्री पधार नहीं सके अतः इस सम्मेलन की कार्यवाही उन्हें पहुंचाने के लिये, प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालालजी महाराज सा० से प्रार्थना की जाती है।

[१९] इस सम्मेलन की कार्यवाही, नहीं पधारे हुए मरुधर मुनिवरों तक पहुंचाने के लिये मन्त्री मुनि श्री ताराचन्दजी म० सा० तथा मन्त्री मुनि श्री छगनलालजी म० सा० से प्रार्थना की जाती है।

इतनी कार्यवाही करके, ३॥ बजे दिन को, दूसरे दिन की बैठक समाप्त हो गई।

तीसरे दिन (ता० १६ सोमवार) की कार्यवाही।

[२०] यह सम्मेलन मरुधर सम्प्रदायोंके प्रवर्त्तक एवं मन्त्रियों से प्रार्थना करता है कि अपनी २ आम्नायवाले क्षेत्रों की सूचि, माह बदी ८ से पहले तैयार कर लें।

[२१] यह सम्मेलन मरुधर श्रावक-सम्मेलन बगड़ी में पास हुए प्रस्तावों में निम्नानुसार संशोधन करने को मरुधर श्रावक समिति को सूचित करता है। श्रावक-समिति आगामी अधिवेशन में संशोधन करके, मरुधर-साधु समिति को खबर दे।

[क] प्र० नं० ५—उन सम्प्रदायों के असंगठित अकेले और शिथिलाचारी मुनियों का पक्ष किसी गांव का समस्त श्रीसंघ करेगा तो प्रस्ताव लागू होगा। कुछ व्यक्तियों के पक्ष लेने से नहीं।

[ख] प्र० नं० ८—सम्प्रदाय, मरुधर श्रावक समिति के सिपुर्द न करके अपनी अपनी सम्प्रदाय के संघ के सिपुर्द कर दें।

[ग] प्र० नं ९—अपने मुनि विद्यार्थियों को सिद्धान्तशाला में भेजने की अनुकूलता न हो, तो साता उपजे वैसा कर सकते हैं।

[घ] प्र० नं० १०—यदि वैरागी या वैरागिन के सम्बन्ध में स्थानीय श्रीसंघ को अप्रतीति या आचरण सम्बन्धी सन्देह हो, तो उसके लिये नियम लागू किया जाय। सर्वसाधारण के लिये नहीं।

[ङ०] प्र० नं० २१ मुनि महासतियांजी अपनी अनुकूलता अनुसार विचरें।

[२२] यह सम्मेलन आमन्त्रित आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० सा० व उत्साही मुनि श्री विनयऋषिजी म० सा० ने तीन दिन की कुल कार्यवाही में जो सहायता पहुंचाई है उसके लिये उन्हें साभार धन्यवाद देता है।

इसके बाद भगवान् महावीर के जयनाद के साथ, सम्मेलन का कार्य, शान्तिपूर्वक पूर्ण हुआ।

खास बैठक ता० १७-१-३३ मंगलवार।

सर्वसम्मिति से तय किया जाता है, कि अजमेर वृहत्साधुसम्मेलन तक, छः सम्प्रदायों का मरुधर-साधु संगठन, सुव्यवस्थित रूप से चलाने तथा तत्सम्बन्धी पत्र व्यवहार आदि कार्य करने का भार, महामन्त्री मुनि श्री चौथमलजी महाराज सा० को दिया जाता है।

विहार का प्रोग्राम बनाकर तथा अन्य आवश्यक विचार विनिमय के पश्चात, भगवान् महावीर के जयनादपूर्वक, ३॥ बजे खास बैठक का कार्य पूर्ण हुआ।

आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी महाराज ने, जो सर्वमान्य समाचारी तैयार की थी और जिसे मरुधर मुनि सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन ने संशोधन करके, बृहत् साधु सम्मेलन में उपस्थित करना तय किया था, वह यों है—

(१) अपने अपने आत्मा की साक्षी से, अपने गुरु या आचार्य के पास भूतकालिक मूल गुणादि सम्बन्धी आत्म शुद्धि करना।

(२) श्रावकों के धर्म ध्यान के निमित्त बने हुए मकान में उतरना, चाहे लोक व्यवहार में उसका कुछ भी नाम हो।

(३) भंडार जिस शहर में हो उसी में या अन्य अनुकूल क्षेत्र में, गृहस्थ की नेश्राय में रखना।

(४ जहां तक बने शुद्ध स्वदेशी या खादी उपयोग में लावें। रोगादिक कारण के अतिरिक्त साधु ७२ हाथ व साध्वी ९६ हाथ से अधिक वस्त्र न रक्खें।

(५) आहार पानी के निमित्त ४ पात्र से अधिक नहीं रखना। रोगादि अन्य कारण हों, तो आगार है।

(६) रात्रि में एक प्रहर रात्रि व्यतीत होने के बाद व्याख्यान नहीं बांचना। व्याख्यान स्थान के निमित्त दीपकादि हों, तो वहां नहीं जाना और अपने स्थान से ५० गज के फासले से दूर जाकर न व्याख्यान देना न, सुनना।

(७) गृहस्थों को हाथ से लिख कर पत्र नहीं देना। प्रश्नों के उत्तर हाथ से लिख कर दे सकते हैं।

(८) धातु की बनी हुई कोई वस्तु, रात्रि में अपनी नेश्राय में नहीं रखना।

(९) औषधि, तमाखू, चूर्ण तथा मलहम आदि खाद्य व सुंघे जाने वाले पदार्थ, रात्रि में अपनी नेश्राय में नहीं रखना।

(१०) साधु के स्थान पर साध्वीजी, श्रावक तथा श्राविका दोनों की साक्षी से बैठ सकते हैं। और आर्याजी के स्थान पर, यदि अनिवार्य प्रसंग हो, तो साधुजी, श्रावक तथा श्राविका दोनों की साक्षी से बैठ सकते हैं।

(११) शेष काल में रहे हों, उससे दूना काल अन्यत्र व्यतीत करके वहां पधार सकते हैं।

(१२) पक्खी और संवत्सरी बृहत् साधु-सम्मेलन का निर्णय होने पर, कान्फ्रेंस की टीप के अनुसार करना।

(१३) गृहस्थ से वैयावच्च नहीं करवाना।

(१४) साधु दो से कम और आर्याजी तीन से कम न विचरें। कारण विशेष का आगार।

(१५) वस्त्र पात्रादि नित्योपयोगी वस्तुओं का प्रतिलेखन दोनों समय करना।

(१६) पंडित के वेतन के लिये श्रीसंघ द्वारा चन्दा इकट्ठा नहीं करवाना।

(१७) पुस्तक आदि छपवाने के लिये, श्रीसंघ द्वारा चन्दा इकट्ठा नहीं करवावें।

(१८) सौ वर्ष से कम उम्र वाले बालक बालिका को दीक्षा नहीं देना तथा उसकी सेवा सुश्रूषा एवं पालन पोषण नहीं करना।

(१९) माता पिता और सगे सम्बन्धियों की आज्ञा होने पर भी श्रीसंघ की आज्ञा के बिना दीक्षा नहीं देना।

(२०) दीक्षा महोत्सव में वैरागी के उपकरणों के लिये रु० १००) से अधिक नहीं खर्च करना। शास्त्रादि की बात अलग है।

(२१) जो मुनि जिस क्षेत्र में विचरते हों उस क्षेत्र में यदि कोई नवीन मुनि पधारें तो वह मुनि के विरुद्ध प्ररूपणा न करें और मूल-संप्रदाय की समकित न पलटें।

(२२) आर्याजी से बिना कारण आहार पानी न मंगवाया जावे।

(२३) वर्द्धमानी से पांच दिन के पहले आहार ग्रहण करना नहीं।

(२४) रात्रि के समय साधुजी स्त्री के साथ और आर्याजी पुरुष के साथ बातचीत न करें।

(२५) साधुजी श्राविकाओं की सभा में श्रावक के बिना और आर्याजी पुरुषों की सभा में श्राविका के बिना व्याख्यान न बांचे।

(२६) ३२ शास्त्रों के मूल से मिलते हुए अर्थ टीका व ग्रन्थों को आगम प्रमाण तथा जिनवाणी मानना।

(२७) गृहस्थ के यहां रोगादि कारण के अतिरिक्त न बैठें।

(२८) विलायती प्रवाही दवाइयां पीने के काम में न ली जावें। चुपड़ने और मालिश की दवा का आगार है।

(२९) साधु या साध्वी अपने नाम से पत्र बुकपोस्ट पेपर रजिस्ट्री वी० पी० आदि न मंगवायें।

(३०) मन्त्र यंत्र तन्त्र धागा डोरा भविष्य बतलाना आदि कार्य न करें।

(३१) साधु तथा साध्वीजी अपने फोटो न उतरवायें और न समाधि स्थान ही बनवावें।

(३२) आपत्तिकाल में यदि किसी प्रवृत्ति का सेवन करना पड़े तो अपनी सम्प्रदाय के आचार्य तथा बड़े साधु की आज्ञा से, उसकी सूचना सम्मेलन समिति को दे दें।

(३३) आचार्य गुरु या अन्य किसी की निश्राय के बिना स्वच्छन्द वृत्ति से विचरने वाले सम्मेलन समिति से बाहर गिने जांय।

(३४) अन्योन्य टीकायुक्त पर्चे, ट्रेक्ट आदि छपवावें नहीं।

(३५) प्रति वर्ष वृहत् साधु सम्मेलन की जयन्ती मना कर उसमें सम्मेलन के नियमों का बोध कराना।

(३६) पूर्वोक्त सम्भोगियों में से यदि किसी की त्रुटि सुनने में आवे तो रूबरू निर्णय करने के पूर्व किसी के आगे न कहें।

—x—

कच्छ प्रांत में भी जागृति

जब सारे ही भारतवर्ष में मुनिराजों की जागृति का महान यज्ञ पूरी शक्ति के साथ हो रहा था, तब कच्छ प्रांत तक उस लहर का न पहुंचना कैसे संभव था ? परिणामतः आठ कोटि बड़े-पक्ष के मुनिराजों का एक सम्मेलन मांडवी नामक नगर में हुआ। इस सम्मेलन की रिपोर्ट भेजते हुए वहां के श्रीसंघ के अग्रेसर श्री सेठ शेसकरणजी गोविन्दजी ने साधु सम्मेलन समिति के मन्त्री के नाम जो उत्साह वर्धक पत्र भेजा था, वह रिपोर्ट से पहिले उद्धृत किया जाता है। दोनों चीजें गुजराती में हैं इसलिये यहां उनका हिन्दी भाषान्तर दिया जाता है:—

पत्र:—

कच्छ मांडवी श्रीसंघ का जयजिनेन्द्र वांचियेगा।

विशेष समाचार यह है कि सं० १९८९ की पौष शुक्ला १५ मङ्गलवार के दिन, आठ कोटि बड़े पक्ष के पूज्य श्री देवजी स्वामी की परंपरानुसार चलने वाले पूज्य श्री कानजीस्वामी आदि ठा० १८ ने साधु सम्मेलन के रूप में एकत्रित हो कर, एकमत और सद्भाव पूर्वक जो प्रस्ताव श्रीसंघ के उदय के निमित्त पास किये हैं उनकी एक प्रति श्रीमान् की सेवा में भेज रहे हैं जिसे पढ़ कर आप अत्यन्त प्रसन्न होंगे। आजकल साधुमार्गी समाज के उदयकाल का सितारा चमचमा रहा है। जिसके कारण मुनिराज अपना जीवन सुधारने तथा चतुर्विध-श्रीसंघ का उदय करने के निमित्त, भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। यह देख कर प्रत्येक स्थानकवासी भाई को प्रसन्नता होना चाहिये। साथ ही आप जैसे उत्साही और सच्ची लगन वाले सज्जन ने बृहत्साधुसम्मेलन के लिये महान परिश्रम कर के जो जहमत अपने सिर उठाई है, उसके लिये साधुमार्गी सकल श्रीसंघ आप को कोटिशः धन्यवाद देता है तथा इच्छा प्रकट करता है कि ऐसे शुभ प्रसङ्ग हमारे समाज में आते रहें। इसके साथ भेजी हुई रिपोर्ट जैन प्रकाश में प्रकाशित करवा दीजियेगा।

यहां से मुनिराज बृहत्सम्मेलन में आने के लिये स्पष्ट इच्छा रखते हैं।

लि० संघ सेवक—

सेसकरण गोविन्दजी का जयजिनेन्द्र

रिपोर्ट—

श्री कच्छ आठ कोटी बड़े पक्ष के मुनिराज एवं आर्याजी ने मिल कर सं० १९८९ की पौष शुक्ला १५ मङ्गलवार के दिन माण्डवी नगर में अपना साधु सम्मेलन किया और निम्न लिखित नियमोपनियम बनाये हैं जिनका सबसे, शुद्धबुद्धि पूर्वक तथा सद्भावना सहित पालन करने का अनुरोध किया गया है।

(१५) वस्त्र पात्रादि नित्योपयोगी वस्तुओं का प्रतिलेखन दोनों समय करना।

(१६) पण्डित के वेतन के लिये श्रीसंघ द्वारा चन्दा इकट्ठा नहीं करवाना।

(१७) पुस्तक आदि छपवाने के लिये, श्रीसंघ द्वारा चन्दा इकट्ठा नहीं करवावें।

(१८) नौ वर्ष से कम उम्र वाले बालक बालिका को दीक्षा नहीं देना तथा उसकी सेवा सुश्रूषा एवं पालन पोषण नहीं करना।

(१९) माता पिता और सगे सम्बन्धियों की आज्ञा होने पर भी श्रीसंघ की आज्ञा के बिना दीक्षा नहीं देना।

(२०) दीक्षा महोत्सव में वैरागी के भण्डोपकरण के लिये रु० १००) से अधिक नहीं खर्च करना। शास्त्रादि की बात अलग है।

(२१) जो मुनि, जिस क्षेत्र में विचरते हों, उस क्षेत्र में यदि कोई नवीन मुनि पधारें तो उन मुनि के विरुद्ध प्ररूपणा न करें और मूल-सम्प्रदाय की समकित न पलटें।

(२२) आर्याजी से बिना कारण आहार पानी न मंगवाया जावे।

(२३) वर्षीतप पारणे दिन के पहले आहार ग्रहण करना नहीं।

(२४) रात्रि के समय साधुजी स्त्री के साथ और आर्याजी पुरुष के साथ बातचीत न करें।

(२५) साधुजी श्राविकाओं की सभा में श्रावक के बिना और आर्याजी पुरुषों की सभा में श्राविका के बिना व्याख्यान न बांचे।

(२६) ३२ शास्त्रों के मूल से मिलते हुए अर्थ टीका व ग्रन्थों को आगम प्रमाण तथा जिनवाणी मानना।

(२७) गृहस्थ के यहां रोगादि कारण के अतिरिक्त न बैठें।

(२८) विलायती प्रवाही दवाईयां पीने के काम में न ली जावें। सुंघने और मालिश की दवा का आगार है।

(२९) साधु या साध्वी अपने नाम से पत्र बुकपोस्ट पेपर, रजिस्ट्री वी० पी० आदि न मंगवावें।

(३०) मन्त्र यंत्र तन्त्र धागा डोरा भविष्य बतलाना आदि कार्य न करें।

(३१) साधु तथा साध्वीजी अपने फोटो न उतरवावें और न समाधि स्थान ही बनवावें।

(३२) आपत्तिकाल में यदि किसी प्रवृत्ति का सेवन करना पड़े तो अपनी सम्प्रदाय के आचार्य तथा बड़े साधु की आज्ञा ले, उसकी सूचना सम्मेलन समिति को दे दें।

(३३) आचार्य गुरु या अन्य किसी की नेश्राय के बिना स्वच्छन्द वृत्ति से विचरने वाले सम्मेलन समिति से बाहर गिने जांय।

(३४) अन्योन्य टीकायुक्त पर्चे, ट्रेक्ट आदि छपवावें नहीं।

(३५) प्रति वर्ष वृहत् साधु सम्मेलन की उपस्थी सभा कर उसमें सम्मेलन के नियमों का बोध कराना।

(३६) पूर्वोक्त सम्भोगियों में से यदि किसी की त्रुटि सुनने में आवे तो उसका निर्णय करने के पूर्व किसी के आगे न कहें।

—x—

कच्छ प्रांत में भी जागृति

जब सारे ही भारतवर्ष में मुनिराजों की जागृति का महान यज्ञ पूरी शक्ति के साथ हो रहा था, तब कच्छ प्रांत तक उस लहर का न पहुंचना कैसे संभव था? परिणामत आठ कोटि बड़े-पक्ष के मुनिराजों का एक सम्मेलन मांडवी नामक नगर में हुआ। इस सम्मेलन की रिपोर्ट भेजते हुए वहां के श्रीसंघ के अग्रेसर श्री सेठ शेसकरणजी गोविन्दजी ने साधु सम्मेलन समिति के मन्त्री के नाम जो उत्साह वर्धक पत्र भेजा था, वह रिपोर्ट से पहिले उद्धृत किया जाता है। दोनों चीजें गुजराती में हैं इसलिये यहा उनका हिन्दी भाषान्तर दिया जाता है:—

पत्र:—

कच्छ मांडवी श्रीसंघ का जयजिनेन्द्र वांचियेगा।

विशेष समाचार यह है कि सं० १९८९ की पौष शुक्ला १५ मङ्गलवार के दिन, आठ कोटि बड़े पक्ष के पूज्य श्री देवजी स्वामी की परंपरानुसार चलने वाले पूज्य श्री कानजीस्वामी आदि ठा० १८ ने साधु सम्मेलन के रूप में एकत्रित हो कर, एकमत और सद्भाव पूर्वक जो प्रस्ताव श्रीसंघ के उदय के निमित्त पास किये हैं उनकी एक प्रति श्रीमान् की सेवा में भेज रहे हैं जिसे पढ़ कर आप अत्यन्त प्रसन्न होंगे। आजकल साधुमार्गी समाज के उदयकाल का सितारा चमचमा रहा है। जिसके कारण मुनिराज अपना जीवन सुधारने तथा चतुर्विध-श्रीसंघ का उदय करने के निमित्त, भगीरथ प्रयत्न कर रहे हैं। यह देख कर प्रत्येक स्थानकवासी भाई को प्रसन्नता होना चाहिये। साथ ही आप जैसे उत्साही और सच्ची लगन वाले सज्जन ने बृहत्साधुसम्मेलन के लिये महान परिश्रम कर के जो जहमत अपने सिर उठाई है, उसके लिये साधुमार्गी सकल श्रीसंघ आप को कोटिशः धन्यवाद देता है तथा इच्छा प्रकट करता है कि ऐसे शुभ प्रसङ्ग हमारे समाज में आते रहें। इसके साथ भेजी हुई रिपोर्ट जैन प्रकाश में प्रकाशित करवा दीजियेगा।

यहा से मुनिराज बृहत्सम्मेलन में आने के लिये स्पष्ट इच्छा रखते है।

लि० संघ सेवक—
सेसकरण गोविन्दजी का जयजिनेन्द्र

रिपोर्ट—

श्री कच्छ आठ कोटी बड़े पक्ष के मुनिराज एवं आर्याजी ने मिल कर स० १९८९ की पौष शुक्ला १५ मङ्गलवार के दिन माडवी नगर में अपना साधु सम्मेलन किया और निम्न लिखित नियमोपनियम बनाये हैं जिनका सबसे, शुद्धबुद्धि पूर्वक तथा सद्भावना सहित पालन करने का अनुरोध किया गया है।

(१) आज तक भिन्न भिन्न गुरु और शिष्य की परंपरा चलती आई है। यह पद्धति अनेक बार क्लेश का कारण होती है और भविष्य में भी इस से दलबंदी की संभावना रहती है। इसलिये इस पद्धति को रोक कर, भविष्य में एक ही गुरु के सब शिष्य तथा एक ही प्रवर्तिनीजी की सब शिष्याएं हों। इस प्रकार ऐक्य की रचना की जाय यह निश्चित किया जाता है।

(२) आज तक साधु साध्वियों के क़ब्ज़े में भिन्न २ पुस्तकों के भंडार रहे। वे सब अब एकत्रित कर दिये जावें और भविष्य में उन पर किसी का व्यक्तिगत स्वामित्व न रहेगा। बल्कि साधु और श्रावकों की एक संयुक्त समिति की उस पर देखरेख रहेगी।

(३) किसी भी अच्छे स्थान में एक "श्री वर्धमान जैन ज्ञान भंडार" खोला जाय। इसमें प्रत्येक साधु साध्वी को अपने कब्जे की मुद्रित तथा लिखित पुस्तकें अर्पण कर देनी चाहिये। अर्थात् उपयोगी पुस्तकों का एक जगह संग्रह किया जाय। इस भंडार की पुस्तकें योग्य पात्र को पढ़ने के लिये मिल जांय ऐसी व्यवस्था करनी चाहिये।

(४) भविष्य में नई उपाधि आवश्यकता के बिना देना बंद रखना निश्चित किया जाता है।

(५) दीक्षा लेने वाले उम्मीदवार को उस के अभिभावकों से छिपा कर मुंडना नहीं। उम्मीदवार की शारीरिक सम्पत्ति जांची जाय। शरीर में किसी प्रकार का ऐब न हो कर्ज़दार या अपराधी न हो। प्रकृति अच्छी हो वैराग्यवान हो उसके आचरण में किसी प्रकार का ऐब न हो, बहुत कम या बहुत अधिक आयु न हो पन्द्रह वर्ष से अधिक और पचास वर्ष से कम उमर वाला हो। ऐसे निर्दोष मनुष्य को एकाध वर्ष अपने साथ रख कर उसके स्वभाव तथा वैराग्य का भलीभांति परिचय प्राप्त करके जब उसकी योग्यता का निर्णय होजाय तब उसके अभिभावकों की लिखित आज्ञा प्राप्त की जाय।

(६) यदि किसी ग्राम में दीक्षा देने का प्रसङ्ग आवे तो दीक्षा देने से एक मास पूर्व पूज्यश्री, एक कार्यवाहक साधुजी तथा मंत्रीजी और संघ के अग्रेसर श्रावकों की सही मंगवा ली जावे। साथ ही स्थानीय श्रीसंघ की भी सम्मति प्राप्त करके फिर दीक्षा देने की बात प्रकट की जाय और तभी मुहूर्त आदि निकलवाया जावे।

(७) दीक्षा के उम्मीदवार दो पुरुष या दो बाइयां यदि एक ही मुहूर्त पर दीक्षा लेने वाले हों, तो जो उम्र में बड़े हों उन्हें बड़ा बनाया जाय। यदि दोनों समान आयु वाले हों तो जिसने पहले उम्मीदवारी की हो उसे बड़ा बनाया जाय।

(८) दीक्षा लेने वाले के लिये पात्रों का १ सेट जब सेट पातिसदार डिब्बा १ आवश्यकवस्त्र (जिनमें खादी या मिल के स्वदेशी वस्त्रों के अतिरिक्त और न हों) और ज़रूरी चीजों के अलावा अन्य उपकरण न लिये जांय।

(९) किसी के दीक्षित चेले या चेली को तथा प्रसिद्ध हुए दीक्षा के उम्मीदवार को भरमा कर अपने पक्ष में न मिलाया जावे। यदि कोई ऐसा करेगा तो वे चेले चेली बहकाने वाले के न होंगे। किन्तु यदि दीक्षा लेने वाले के भाव पहले गुरु के प्रति कम हो जांय और अन्य मुनिराजों के पास अपनी इच्छा से दीक्षा ले तो उसे कोई रोक भी न सकेगा। इसी तरह किसी के दीक्षागुरु या ज्ञानगुरु में भी फेरफार न करवाया जावे।

(१०) किसी चेले या चेली का कोई ख़ास दोष दृष्टिगोचर हो और उसका आहार पानी अलग करना या अन्य कोई बडा प्रायश्चित देना पड़े, तो आचार्य श्री और उनके सहायक कार्यकर्त्ता एव स्थानीय श्रीसंघ के अग्रेसरों के सन्मुख सारा मामला रखकर, उनकी सम्मतिपूर्वक वैसा किया जाय। सामान्य कारण से अथवा ज्ञान की कमी के कारण, कोई गुरु अपने शिष्य अथवा शिष्या को पृथक् नहीं कर सकेगा। यदि, कोई ऐसा करेगा, तो उसे नये शिष्य या शिष्या करने का अधिकार न रहेगा।

(११) चेली या चेला स्वयं भाग गया हो अथवा छोड दिया गया हो और उसे फिरसे सघाड़े में मिला लेने की इच्छा उत्पन्न हो तो सम्प्रदाय के पूज्य श्री एवं कार्यवाहकों की स्वीकृति प्राप्त कर ली जाय।

(१२) अपने या पराये, किसी भी नालायक किंवा दूषित साधु-साध्वी के साथ वन्दना आदि व्यवहार न रक्खे जायँ। इसी तरह अपनी सम्प्रदाय से अलग किये हुए साधु-साध्वी के साथ बिल्कुल सम्बन्ध न रक्खा जाय। केवल खमाना दूसरी बात है।

(१३) कोई साधु-साध्वी, यदि अपना समुदाय छोड़े अथवा किसी दोष के कारण सम्प्रदाय के कार्यवाहक लोग उसे संघाड़े से बाहर निकाल दें, तो उसका परम्परा सम्बन्धी भण्डार की पुस्तकों पर कोई अधिकार न रहेगा।

(१४) साधुओं को दो से कम और साध्वियों को तीन से कम न विचरना चाहिये। यदि किन्हीं आर्याजी के साथ तीसरी आर्याजी विचरने वाली न हों और प्रकृति-स्वभाव आदि के कारण सम्प्रदाय के अग्रेसर लोग उन्हें स्वीकृति दे दें, तो अलग बात है।

(चातुर्मास के क्षेत्र में व्याख्यान और वांचन के समय के अतिरिक्त साधुजी के स्थान पर स्त्रियों तथा साध्वियों को, त्योंही आर्याजी के स्थान पर पुरुषों एवं साधुओं को अत्यन्त-आवश्यक कार्य के बिना कदापि न बैठना चाहिये। अन्य ग्रामों से दर्शनार्थ आये हुए लोगों की बात अलग है। किन्तु वे भी, स्त्री हों या पुरुष, कम-से कम दो की संख्या में होने चाहिए। यदि किसी साध्वी या गृहस्थ बाई को सूत्र की वांचनी या अन्य अभ्यास करवाना पड़े, तो अनुकूल-समय में, दो घण्टे से अधिक वाचनी या अभ्यास न करवाया जावे और उसके लिये भी खुली जगह में बैठना आवश्यक है।

(१६) प्रत्यक्षत: अप्रतीतिकारी गिने जाने वाले अर्थात् समाज में निन्दनीय माने जाने वाले घर में, साधु-साध्वी को अकेले न जाना चाहिये। इसी तरह, जिस घर में लोगों को शंका का स्थान जान पडे वहां भी अकेले साधु अथवा साध्वी को बेहरने अथवा किसी अन्य प्रसग पर न जाना चाहिये।

(१७) जिस संघ में क्लेश फैला हुआ हो, वहा चातुर्मास रहने से, यदि अश्रेय होता जान पडे तो वहा का चातुर्मास न ठहराया जाय।

(१८) किसी भी संप्रदाय के साधु साध्वी अथवा संघ पर, द्वेष-बुद्धि से आक्षेप वाला लेख अथवा अपनी सम्प्रदाय की मान्यता के विरुद्ध लेख, समाचारपत्रों में न भेजा जाय। इसी तरह साधु-साध्वियों को, इस तरह की प्रेरणा भी किसी और को न करनी चाहिये।

(१९) साधु-साध्वियों को, गृहस्थ के सन्मुख किसी साधु-साध्वी का दोष - वर्णन न करना चाहिये। इसी तरह गृहस्थों को भी किसी साधु-साध्वी के सन्मुख किसी का दोष वर्णन न करना चाहिये। यदि किसी का दोष दिख पडे, तो उसी व्यक्ति के सन्मुख खुलासा करना चाहिये और हित चिन्तन की भावना से, यदि भूल हो, तो उसे परस्पर बतलाना एवं सुधारना चाहिये।

(२०) किसी भी बिना नाम के पत्र पर, संघ अथवा साधुजी ध्यान न दें। साथ ही इस तरह का पत्र, किसी और को पढ़ाकर, लिखा न करवानी चाहिए। पढ़वाने वाले और लिखा करने वाले, दोनों ही अपराधी समझे जायंगे।

(२१) सवत्सरी सम्बन्धी कागज न छपवाये जावें और ऐसे कागज न लिखे जायं और न लिखवाये जाय। छोटे साधु-साध्वी, बड़ों की आज्ञा के बिना कागज न लिखें न लिखवावें। साधु साध्वी महत्वपूर्ण कागज संघ के अग्रेसरों के हस्ताक्षर बिना न भेजें।

(२२) साधु साध्वी फोटो न खिंचवावें, अपने फोटो पुस्तकों में न छपवावें और स्थानकों किंवा गृहस्थों के घर में उन्हें दर्शन-पूजन के लिये रक्खें या रखवावें नहीं। इस प्रकार की प्रवृत्ति, को कोई भी साधु साध्वी प्रोत्साहन न दें। शुद्ध साधु मार्गी-समाज की श्रद्धा रखनी चाहिये।

(२३) साधु-साध्वी के अपराध के प्रमाण सम्बन्धी कागज़, यदि किसी के हाथ आजावे तो तो उन्हें सम्प्रदाय के कार्यवाहकों के पास भेज दें। अपने पास रखकर और लोगों को न पढ़ावें। पढ़वाने वाला अपराधी गिना जायगा।

(२४) अपराध की सजा होजाने के बाद अथवा तत्सम्बन्धी स्पष्टीकरण के पश्चात् अपराध के प्रमाण के कागज़ फाड़ डाले जायें और उसके बाद अपराधी की निन्दा न की जाय।

(२५) साधु साध्वी के दर्शनार्थ, खास कारण के अतिरिक्त अर्थात् स्थिरवास तथा बीमारी किंवा कोना छुड़वाने के प्रसंग के सिवा संघ न निकाले जायें।

(२६) श्रावकों को, साधु-साध्वियों का विहार जितना भी सम्भव हो कम से-कम खर्च और सादगी से मनाना उचित है।

(२७) साध्वीजी को डाक्टर से इंजेक्शन लेने अथवा आपरेशन करवाने की जरूरत पड़े और साधु-साध्वी के लिये डोली की जरूरत पड़े तो आकस्मिक-कारण के अतिरिक्त, सम्प्रदाय के कार्य वाहकों की स्वीकृति प्राप्त करनी चाहिये।

(२८) दीक्षा के अवसर पर, समवसरण में, पुस्तकों के लिये चन्दा न किया जाय। धन या पन्ने की जो रकम हुई हो, वह "श्री वर्धमान जैन-ज्ञानभण्डार" के फण्ड में भेज दनी चाहिये।

(२९) प्रत्येक साधु साध्वी को सूत्रपठन एवं स्वाध्याय करने की प्रवृत्ति रखनी चाहिये। दशवैकालिकसूत्र सभी को अथवा याद होना चाहिये।

(३०) रेशमी-वस्त्र बौर्ट धारीदार, रंगीन और मर्यादा न सुरक्षित रह ऐसे बारीक वस्त्र न बदरने चाहिए।

(३१) साधु-साध्वी के एक संघाड़े को क्रमवार पूज्य श्री की आज्ञा से, बागड़ में विचरना चाहिए।

(३२) जिस ग्राम में चातुर्मास करना निश्चित हो उस ग्राम में कॉन्फ्रेंस के कार्यवाहकों को बुलाकर, उनकी उपस्थिति में साधु-साध्वियों के चातुर्मास तय किये जायें।

(३३) समिति को प्रत्येक सम्प्रदाय वाले मुनियों के साथ बारह व्यवहारों (सम्भोगों) में से तीसरा चौथा छठा व्यवहार छोड़कर, शेष नौ व्यवहार परस्पर किये जायें। वे नौ व्यवहार निम्नानुसार हैं:—

१—वस्त्र पात्र का लेना देना। २—प्रवचन की वांचना लेनी-देनी। ३—नमस्कार करना या कराना। ४—आते जब, बाहर से आवें तब खड़े होना। ५—वैयावृत्य करना। ६—साथ में

उतरना। ७—एक ही आसन पर बैठना। ८—व्याख्यान देना और दिलाना। ९—साथ साथ स्वाध्याय करना।

शेष जो तीन-सम्भोग परस्पर न किये जायँ, वे निम्नानुसार हैं:—

१—आहार-पानी साथ-साथ करना। २—शिष्यादिक का लेन देन। ३—उपधि, आहार, शिष्यादिक का आमन्त्रण।

अभ्यास के निमित्त, चातुर्मास के अवसर पर अथवा विहार में साथ-साथ रहने का प्रसंग आवे, और ऐसे समय, यदि कोई सुविहित मुनि सहयोग की इच्छा प्रकट करें, तो उनके साथ, समुदाय के कार्यवाहकों की सम्मति से, जब तक साथ रहें तब तक, बारह प्रकार के सम्भोग कर सकते हैं, यह निश्चित किया जाता है।

(३४) अन्य सम्प्रदायों के कोई सुविहित-मुनि, यदि इस सम्प्रदाय मे मिलने की इच्छा करें, तो पूज्य श्री, कार्यवाहकों एवं माडवी श्रीसंघ के अग्रेसरों की स्वीकृति के बिना नहीं मिलाये जासकेंगे।

(३५) चार शहरों के बीच विचरने वाले प्रत्येक साधु-साध्वी को, चातुर्मास समाप्त होने के बाद एक महीने में, पूज्य श्री जहा विराजते हों, वहां एकत्रित होना चाहिये। शरीरादिक व कोई खास कारण हो, तो बात अलग है।

(३६) साधु और साध्वियों को, सभी को एक साथ बैठकर, दिन के किसी भाग में, निवृत्ति के समय, एक या दो घण्टे तक सूत्र का स्वाध्याय करना चाहिये।

(३७) प्रचलित धाराधोरण में यदि किसी प्रकार का सशोधन करने की आवश्यकता पड़े, तो पूज्य श्री तथा कार्यवाहकों का मत प्राप्त करके कर सकते हैं।

(३८) आज तक साम्प्रदायिक सम्मेलन में उपस्थित प्रत्येक साधु-साध्वी सम्बन्धी दोष के विषय में जांच करके और सब साधु-साध्वियों से पूछकर, कार्यवाहकों के सन्मुख निराकरण होचुका है। अब भविष्य में, इस सम्बन्धी उधेड़-बुन न की जाय। इसके सम्बन्ध में, अब यदि कोई कुछ भी टीका-टिप्पणी करेगा, तो वह टीका करने वाला अपराधी गिना जायगा।
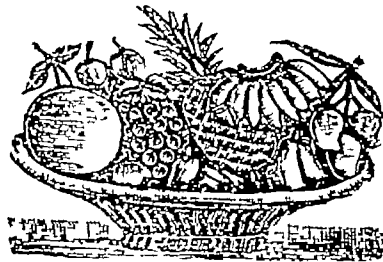
श्री साधु-सम्मेलन समिति, प्रथम बैठक

आज मिति माघ सुदी १३ शनिवार को,

जयपुर में श्री दुर्लभजी जौहरी के मकान पर,

दिन को एक बजे श्री साधु-सम्मेलन-समिति की बैठक हुई, जिसमें निम्नलिखित सदस्य उपस्थित थे--

१—पं० श्री कृष्णचन्द्रजी अधिष्ठाता, श्री जैन गुरुकुल पंचकूला
२—सेठ श्री वर्धमानजी पीतलिया रतलाम
३—श्री पूनमचन्दजी खींवसरा संचालक वीराश्रम, ब्यावर.
४—श्री आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर
५—जौहरी केसरीमलजी चोरड़िया जयपुर
६—जौहरी मोतीलालजी मूसल जयपुर
७—जौहरी दुर्लभजी त्रिभुवन, मोरवी

इन सभ्यों के अतिरिक्त, जयपुर तथा अजमेर श्रीसंघ के डेप्युटेशन भी उस समय उपस्थित थे। श्री दुर्लभजीभाई के प्रस्ताव तथा जौहरी केसरीमलजी के अनुमोदन से सभापति का आसन सेठ श्री वर्धमानजी सा० पीतलिया ने ग्रहण किया। इस सभा का आमन्त्रण और समिति के सम्बन्ध में की हुई आजतक की सारी कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण तथा बाहर से आये हुए पत्र एवं तार श्री मन्त्रीजी ने पढ़कर सुनाये।

आजतक की कार्यवाहियों का संक्षिप्त विवरण जो कमेटी के सामने पढ़कर सुनाया गया, यों है—

दिल्ली—कमेटी में चुने गये ११ सभ्यों में से जो महाशय देहली में नहीं पधारे थे, उनकी सेवा में पत्र व्यवहार द्वारा करके स्वीकृति मंगाई गई थी। दो सभ्यों ने वृद्धावस्था आदि कारणों से इनकार कर दिया। अतः समिति की सलाह मंगवाकर निम्न दो नये सभ्य चुने गये हैं—

(१) सेठ पन्नालालजी नारमलजी, भुसावल
(२) भंसाली जीवाभाई ईश्वर पालनपुर

पत्र व्यवहार से और मुनिराजों की सेवा में हाजिर होकर प्रचार किया गया। [illegible] में, कच्छ काठियावाड़ और गुजरात की ११ सम्प्रदायों का प्रान्तिक सम्मेलन राजकोट में और मारवाड़ की ६ सम्प्रदायों का प्रान्तिक सम्मेलन पाली में निश्चित हो चुका है। आजतक, सभी सम्प्रदायों के डाइरेक्टरी फार्म भरकर नहीं आये हैं। प्रचार-कार्य में, अबतक [illegible] खर्चे हुए हैं। कुल ४११ पत्र भेजे गये हैं।

श्रीमान् लौंकाशाह के समय की समाचारी व श्री धर्मसिंहजी की पुरानी समाचारी के लिये कोशिस चल रही है। किन्तु पुराने भण्डारों का नाश हो जाने से अभीतक असली समाचारी नहीं मिल सकी है। वर्तमान ३२ सम्प्रदायों से, समाचारी की नकलें मंगवाकर, जहा २ भिन्नता हो, वह भिन्नता कम करने के लिये, एक समाचारी उपसमिति स्थापित करके, यह आवश्यक कार्य उसके सिपुर्द करना चाहिये।

सम्मेलन के स्थल के लिये, ब्यावर अजमेर, जयपुर और देहली इन चारों स्थलों पर श्रीसंघ की सभायें बुलाई गई थीं। और पालनपुर के बहुत से आगेवान भाई बाहर के ग्रामों में रहते हैं, इस कारण डेप्युटेशन के लिये समय मांगा गया था। लेकिन वहा इस देशकाल में सम्मेलन के लिये सुभीता नहीं होने के कारण से, रूबरू जाकर अर्ज करने का मौका नहीं मिला। महासम्मेलन को सफल व सरल बनाने के लिये, प्रथम अपना २ संगठन करने के लिये, बहुतसी सम्प्रदायें जागृत हो चुकी हैं। दक्षिण में संगठन कराने के लिये सेठजी किशनदासजी व सेठजी मोतीलालजी मूथा ने प्रयास किया है। वैसे ही सर्व सभ्य, महद् कार्य के लिये श्रम उठावें, ऐसी सविनय अर्ज है।

तत्पश्चात्, सर्वानुमति से निम्नलिखित प्रस्ताव स्वीकृत हुए—

(१) राजकोट प्रान्तीय-साधु-सम्मेलन तथा पाली मारवाड़ मुनि-सम्मेलन का आमंत्रण आया है, इस लिये निश्चय किया जाता है कि समिति की ओर से मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी दोनों जगह जावें।

(२) सभी सम्प्रदायों की समाचारी की नकलें और शास्त्रसम्मत, देशकालानुसार जो जो सुधार समाचारी में करने हों, वे सूचनायें मगाई जावें। जिस सम्प्रदाय में समाचारी मुकर्रर न हो उस सम्प्रदाय से प्रार्थना की जावे, कि अपनी सम्प्रदाय के लिये शीघ्र ही समाचारी निर्माण करके, उसको नकल यहां भिजवा दें। इस तरह सब की नकलें आजाने पर, सब का मिलान करके, उन पर से शास्त्रसम्मत, देशकालानुसार एक कच्चा खरडा समाचारी के सम्बन्ध में तैयार किया जावे और उसकी एक २ नकल विचारणार्थ सब सम्प्रदायों के आचार्य श्री अथवा अग्रेसर मुनियों की सेवा में भेजकर उसपर उनके अभिप्राय मगवाये जावें।

(३) जिन २ सम्प्रदायों में आचार्य अबतक नहीं मुकर्रर हुए है, उनसे प्रार्थना की जावे कि वे शीघ्र ही आचार्य नियत कर लें। यदि शीघ्रता के कारण ऐसा न हो सके, तो अपनी सम्प्रदाय के अग्रगण्य मुनि का नाम समिति को सूचित करें, ताकि समिति को आमन्त्रण देने में सुविधा रहे।

(४) मुनि सम्मेलन के स्थान के विषय में भिन्न २ मेम्बरों तथा श्री सङ्घ की तरफ से आई हुई सम्मतियों व उपस्थित सदस्यों की राय पर से एवम् अजमेर श्री सङ्घ की ओर से लगभग १२५ गृहस्थों के हस्ताक्षर युक्त आमन्त्रण-पत्र पर विचार करके और अजमेर के श्रीसङ्घ की ओर से श्रीमान सेठ नवरत्नमलजी आदि सात गृहस्थों के डेप्युटेशन के रूप में उपस्थित होकर उत्साह पूर्वक इस सम्बन्ध में सन्तोषजनक वार्तालाप करने के बाद मुनि सम्मेलन के लिये अजमेर स्थान निश्चित किया जाता है। सब मुनि महात्माओं की सेवा में प्रार्थना की जावे कि वे इस वर्ष के चातुर्मास, उपरोक्त स्थल को ध्यान में रख कर ही नियत फरमावें। ताकि साधु सम्मेलन के समय उन्हें अजमेर पधारने में सुभीता रहे।

(५) श्री पूनमचन्दजी खींवसरा ने सभा में हाजिर होकर अवकाश के अभाव के कारण इस समिति के सदस्य रहने में असमर्थता प्रकट की। इसलिये उनके स्थान पर सेठजी भीकमजी मनवाणी ब्यावर वाले मुकर्रर किये जाते हैं।

(६) इस समिति में निम्न लिखित गृहस्थों के नाम और बढ़ाये जाते हैं—

१—सेठ ब्यावरमलजी गिरीलालजी बमौली
२—श्री सौभागमलजी पोरवाड़ धांदला
३—सेठ मथरतनमलजी रियां वाले अजमेर.
४—श्री कल्याणमलजी वैद अजमेर

(७) अजमेर श्रीसंघ ने संगठन के इस पवित्र काम को अपने यहां करवाने के लिये अत्यन्त उत्साह पूर्वक प्रेरणा तथा आग्रह किया इसलिये यह समिति अजमेर श्रीसंघ का हार्दिक आभार मानती है।

अन्त में सभापति का आभार मान कर जयजिनेन्द्र की ध्वनि के साथ सभा विसर्जित की गई।

श्री जयपुर
तारीख २०-२-३२

द० वरदभाण
सभापति जयपुर-सभा

श्री साधुसम्मेलन समिति की दूसरी बैठक

माह ता० १३-३२ का बघाना (नीमच) में कारण जीन प्रेस में समिति की सभा हुई। निम्न लिखित सदस्य उपस्थित थे—

(१) सेठ नथमलजी चोरडिया नीमच
(२) सेठ वरदभाणजी पीतलिया रतलाम
(३) सेठ सौभागमलजी महता जावरा
(४) सेठ पूनमचन्दजी भंडारी रतलाम
(५) सेठ कल्याणमलजी वैद अजमेर
(६) सेठ हार्टेलालजी पोखरना इन्दौर
(७) सेठ सौभागमलजी पोरवाड़ धान्दला
(८) सेठ रतनलालजी महता उदयपुर
(९) सेठ दुर्लभजी त्रिभुवन झौहरी जयपुर

श्री कल्याणमलजी वैद ने सेठ सौभागमलजी मेहता को प्रमुख स्थान देने का प्रस्ताव। श्री हार्टेलालजी पोखरना ने श्री नथमलजी सा० चोरडिया को प्रमुख स्थान देने का प्रस्ताव

पेश किया। श्री रतनलालजी सा० मेहता ने, पोखरनाजी के प्रस्ताव का समर्थन किया और श्री चोरड़ियाजी ने प्रमुख स्थान ग्रहण किया। तत्पश्चात् निम्न लिखित कार्यवाही हुई—

(१) सभा का आमंत्रण पढ़ कर सुनाया गया और गत जयपुर कमेटी की कार्यवाही सुनाई गई।

(२) आज तक, समिति ने जो कार्य किया, उसका विवरण और हिसाब मंत्रीजी ने पेश किया, जो यों है—

ता० २०-२-३२ से ता० ३१-५-३२ तक का समिति के कार्य का विवरण

गत सभा के प्रथम प्रस्तावानुसार, मै राजकोट और पाली सम्मेलन में हाज़िर रहा था। होशियारपुर सम्मेलन के लिये पंजाब में भी मुसाफरी की थी। तीनों सम्मेलनों मे, साधुजी व श्रावकों का उत्साह पूर्ण था। तीनों सम्मेलनों का विस्तृत विवरण 'प्रकाश' में छप चुका है। (उपस्थित सभ्यों को छपा हुआ विवरण भेंट किया गया।) सम्मेलनों में पधारने के लिये मुनिराजों की सेवा में हाजिर होने के लिए जितना हो सका उतना प्रयास भी किया है। लींबडी संप्रदाय ने, अपना सम्मेलन कर के संप्रदाय का आदर्श संगठन किया है और पुराने भंडारों की व्यवस्था पर से अपनी मालिकी दूर करके खुद परिग्रह से मुक्त हो तथा मूल्यवान पुस्तकों का संग्रह श्रीसङ्घ की सेवा में समर्पण करके ६० स्थानों पर पुस्तकालय खोलने की योजना की है। लींबड़ी में गुर्जर श्रावक समिति ने मिल कर बंधारण का कच्चा ढांचा तैयार किया है। सर्व संघों की सलाह के अनुसार अन्तिम निर्णय दूसरी सभा में करेंगे। महा सम्मेलन के लिये लींबड़ी संप्रदाय के प्रतिनिधि भी मुकर्रर किये हैं। मैं लींबड़ी की दोनों सभाओं में हाजिर था। अबतक ६०६ चिट्ठियां लिखी गई हैं और आज तक रु० २०३।-)॥ खर्च हुए जिसकी विगत यों है—

पोस्टेज खर्च	तार खर्च	स्टेशनरी व छपाई	पेपरों का चन्दा खर्च
४६॥≡)	३८-)	२०।)	१३)

वेतन खर्च प्रतिदिन एक एक घण्टे के लिए ग्रेजुएट से सेवा लेते हैं-	मुसाफरी खर्च आदमी को भेजने बुलाने का
६०)	४८।-)॥

कुल रुपये २३०।-)॥

ता० १-११-३१ से ता० १-६-३२ तक किफायत से काम करते हुए भी जो खर्च हुआ वह सभा के सन्मुख पेश किया जाता है।

इस महाभारत कार्य के लिये सभी सभ्यों को सतत प्रयास करने की सविनय विनती करता हूं और मेरी अल्प सेवा मे जहां त्रुटि रह गई हो उसके लिये क्षमा चाहता हूं। तथा भविष्य के लिये विचार विनिमय करने की प्रार्थना करता हूं।

* * * * *

(३) कार्य की सरलता के लिये भिन्न २ संप्रदायों के विषय में यदि कोई कार्य हो तो निम्नोक्त सज्जनों द्वारा करवाया जाय।

सम्प्रदाय—	श्रावकों के नाम—
[१] पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज	श्री सेठ धूलचन्दजी भंडारी „ सोभागमलजी पोरवाड़
[२] पूज्य श्री कानजी ऋषिजी महाराज	„ ला० ज्वालाप्रसादजी „ सेठ रामलालजी कीमती
[३] पूज्य श्री धर्मसिंहजी तथा गुजरात की सम्प्रदायें	„ चन्दूलाल छगनलाल शाह „ जीवाभाई ईश्वरभाई मकसाती
[४] काठियावाड़ी सम्प्रदायें	„ चुनीलाल नागजी वोरा „ दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी
[५] कच्छी सम्प्रदायें	„ वेलजी भाई लखमसी नपु
[६] पंजाबी सम्प्रदायें	„ ला० रतनचन्दजी „ ला टेकचन्दजी „ ला० गोकुलचन्दजी
[७] पू० पी० जमुना पार	„ सेठ अचलसिंहजी
[८] पूज्य श्री हस्तीमलजी म०	„ सेठ मोतीलालजी मूथा „ „ मोतीलालजी मूसल
[९] पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज	„ „ बरदभाणजी पीतलिया „ „ अमृतलालजी जौहरी
[१०] पूज्य श्री मुन्नालालजी म०	„ „ सोभागमलजी मेहता „ „ छोटेलालजी पोखरना
[११] मारवाड़ी मुनि सम्प्रदायें	„ मोतीलालजी रातड़िया „ सेषमलजी बालिया
[१२] मेवाड़ी सम्प्रदायें	„ रतनलालजी मेहता

मंत्रीजी उपरोक्त सज्जनों से कार्य लेवें।

× × × × ×

(४) साधु-सम्मेलन-समिति में निम्न सदस्यों के नाम बढ़ाये जावें—

[१] श्री सेपमलजी बालिया पाली,
[२] श्री० मोतीलालजी रातड़िया, जोधपुर,
[३] श्री० लाला ज्वालाप्रसादजी, महेन्द्रगढ़,
[४] श्री० रामलालजी कीमती, इन्दौर।

(५) इस समिति के जो सदस्य आज तक की दो सभाओं में नहीं पधारे हैं, तथा आगामी सभा में भी न उपस्थित हों इस प्रकार लगातार तीन सभाओं में अनुपस्थित रहने वाले सदस्यों के स्थान पर नये सदस्य चुनने का अधिकार आगामी-सभा को होगा।

(६) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय का हितेच्छु श्रावक मण्डल (पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की सम्प्रदाय का) और श्री जैनोदय-पुस्तक-प्रकाशक-समिति (पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की संप्रदाय की संस्था) दोनों के सभापति महाशयों की तरफ से आये हुए पत्र पढ़े गये। उन्होंने जाहिर किया है, कि "अश्रद्धा का परिणाम" शीर्षक और उसके विरोध में जो लेख तथा पर्चे प्रकट हुए हैं वे सब व्यक्तिगत हैं। हमारी सम्प्रदाय के, उक्त जवाबदार मण्डलों से उनका कोई सम्बन्ध नहीं है। ऐसी प्रवृत्तियों से हम नाराज हैं—इत्यादि।

इस पर से यह समिति निश्चय करती है कि अशान्ति व द्वेष फैलाने वाले पर्चों को व्यक्तिगत समझा जाय। दोनों सम्प्रदायों के अग्रेसरों का इससे कोई सम्बन्ध नहीं है। इन पर्चेबाजी करने वालों की कृति की ओर, यह समिति घृणा की दृष्टि से देखती है तथा ऐसा गन्दा-वातावरण आयन्दा न फैलने पावे इसके लिये प्रत्येक बन्धु का ध्यान खींचती है। यदि आयन्दा किसी भी तरफ से ऐसी कार्यवाही होगी तो समिति उस व्यक्ति या व्यक्तियों के विषय में उचित-कार्यवाही करने का विचार करेगी।

(७) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सं० के हितेच्छु श्रावक मण्डल ने, अपनी सम्प्रदाय पर, पर्चों में किये गये आक्षेपों का न्याय मांगा है। अतः जो पर्चे प्रकट हुए हैं, उनके लेखकों को सूचित किया जाता है कि यदि वे सच्चे हैं और आक्षेपों के प्रमाण दे सकते हैं तो समिति में एक मास के अन्दर मन्त्री द्वारा पेश करें। पेश होने के बाद, दोतरफा प्रमाण लेकर, उसका निर्णय करने के लिये निम्नलिखित श्रावकों की कमेटी मुकर्रर की जाती है—

१—लाला टेकचन्दजी सा०, जँडियाला.
२—सेठ दामोदरभाई जगजीवन, दामनगर.
३—वेलजी भाई लखमसी नपु. बम्बई.

उक्त समिति का निर्णय आखिरी समझा जावे। एक मास तक उन पर्चों के लेखकों ने समिति को कोई प्रमाण न दिया तो उन्हें झूठा जाहिर किया जायगा।

(८) राजकोट, पाली व होशियारपुर में जो प्रान्तिक-सम्मेलन हुए हैं, उन सम्मेलनों की कार्यवाही के प्रति समिति, अपना हार्दिक सन्तोष प्रकट करती है। ऐसे प्रान्तिक सम्मेलन, अजमेर में होने वाले वृहत्साधु-समेलन के लिए मार्गदर्शक और मजबूती देने वाले हैं। अतः ऐसे संमेलन, जिन-जिन प्रान्तों की संप्रदायों में नहीं हुए हैं, उनको अपने संमेलन करके, अपना संगठन करने को यह समिति आग्रह करती है।

प्रमुख श्री व आगन्तुक महाशयों का आभार मानकर सभा विसर्जित की गई।

(Sd.) नथमल चोरड़िया, सभापति.

श्री साधु-सम्मेलन-समिति की तीसरी बैठक

आज ता० १३-६-३२ को, दोपहर के १ बजे से, श्री साधु-सम्मेलन समिति की तीसरी बैठक श्री महावीर भवन देहली में हुई। जिसमें निम्न-सदस्य उपस्थित थे—

[१] श्रीमान् लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी, महेन्द्रगढ़
[२] ,, , गोकुलचन्दजी जौहरी, दिल्ली
[३] ,, रा० सा० ला० टेकचन्दजी जंडियाला
[४] ,, सेठ सोभागमलजी मेहता, जावरा
[५] ,, सेठ दुर्लभजी भाई त्रि० जौहरी, जयपुर
[६] ,, लाला त्रिभुवन नाथजी कपूरथला
[७] ,, मस्तरामजी M. A. L. L. B. अमृतसर
[८] ,, ला० गुजरमलजी जैन, लुधियाना
[९] ,, कल्याणमलजी वैद्य अजमेर
[१०] ,, आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर.
[११] ,, रतनचन्दजी सा० अमृतसर
[१२] ,, अमरचन्दजी पुङ्गलिया देहली
[१३] ,, अमरावसिंहजी जौहरी देहली
[१४] ,, सेठ वेलजी लखमसी B. A L L. B लघु बम्बई
[१५] लाला ग्यारसमलजी सा० बनौली

निमंत्रित सभ्य

श्री धीरजलाल के० तुरखिया रायपुर

इनके अलावा अजमेर श्रीसंघ की ओर से, समिति की आगामी बैठक को निमन्त्रण देने के लिये पधारे हुए निम्न सद्गृहस्थ भी थे—

[१] श्रीमान् सेठ रेखराजजी दुर्धिड़िया अजमेर.
[२] कुँवर केशरीमलजी ढोंका, अजमेर
[३] सेठ मूलचन्दजी मोदी, अजमेर

श्री० लाला गोकुलचन्दजी जौहरी के प्रस्ताव और रा० सा० लाला टेकचन्दजी तथा श्री० लाला रतनचन्दजी के अनुमोदन करने पर श्री० लाला ज्वालाप्रसादजी सा० जौहरी ने प्रमुख स्थान ग्रहण किया। तत्पश्चात निम्न कार्यवाही हुई।

कार्यवाही

(१) निमन्त्रण-पत्र बाहर से आये हुए पत्र और गत सभा की कार्यवाही सुनाई गई। गत सभा की कार्यवाही एजेण्डा में जाहिर करने के अनुसार पुनः विचाराधीन रक्खी गई।

(२) नीमच कमेटी के बाद, आज तक मन्त्रीजी ने जो कार्य व अनुभव किए, सुनाये गए। उस पर सभा ने सन्तोष प्रकट किया और मन्त्रीजी द्वारा पेश की हुई सूचनाएँ विचाराधीन रक्खी गईं।

मन्त्रीजी की रिपोर्ट

[ता० १-६-३२ से ता० १-६-३२ तक का विवरण]

१—नीमच सभा के बाद, इन्दौर में ऋषि-सम्मेलन और पूज्यपद महोत्सव मे मैं उपस्थित हुआ था और चारों सम्प्रदायों के सन्तों की उसमे उपस्थिति हो, इसके लिये लाला ज्वालाप्रसादजी के साथ रात्रि में २०० माइलकी मुसाफिरी करके शांति से उत्सव का कार्य निर्विघ्नतापूर्वक पूर्ण करवाया।

२—नीमच से ब्यावर मरुधर श्रावक समिति में उपस्थित हुआ था। दोनों सभाओं का विवरण 'प्रकाश' में छप चुका है। यहां सभ्यों की सेवा में भी मौजूद है।

३—अजमेर श्रीसंघ के आमन्त्रण से दो बार अजमेर गया था। उत्साह बढाने के लिये अलग-अलग मुखिया-श्रावकों से मिला था और सभा में बहुतसी बातों का समाधान कर दिया था। स्वागत-समिति का प्रमुख स्थान ग्रहण करने के लिए दो बार सेठजी विरदमलजी सा० लोढ़ा से आग्रह-पूर्वक प्रार्थना की, किन्तु अनिवार्य-कारणों से आपने इनकार कर दिया। अब अजमेर स्वागत-समिति थोड़े दिनों में नियत हो जायगी।

४—एकलविहारियों को अलग-अलग चातुर्मास नहीं कराने के लिये पत्र व्यवहार किया था। किन्तु तब भी उपरोक्त श्रावकों ने बहुत से स्थानों पर एकलविहारियों के चातुर्मास कराये हैं। इतना ही नहीं बल्कि बहुत से स्थानों पर अकेली आर्याजी का भी चौमासा है। एकलविहारी और शिथिलाचारियों को, श्रावकों की कायरता से पोषण मिल रहा है। वहम और भय के कारण श्रावक लोग कुछ कहने में डरते हैं और अज्ञानी श्रावकों से शिथिलाचार में पूरी पूरी मदद हो रही है। इस बात पर हमने पूज्य-मुनिराजों का ध्यान भी आकर्षित किया है। ब्यावर में, प्रवर्त्तक मुनि श्री हरखचन्द्रजी महाराज, रतलाम में पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज और जोधपुर में पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज सा० के सदुपदेश से हजारों श्रावक-श्राविकाओं ने, साधु-साध्वियों से ज्योतिष, सलाह का आंक पूछने के व डोरा, गण्डा तावीज आदि कराने के सौगन्द ले लिए हैं, किंतु वहम का बाजार तेज़ होने से, असह्य शिथिलाचारियों को कोई कुछ भी नहीं कहता है। और प्रांतों की बनिस्बत, मारवाड़ में ज्यादा घोटाला है। वे इतने निर्भय और निरंकुश होगये हैं कि समझाने वालों को भी डराते हैं। इनके पोषण की जड़ कट जावे तो इनमें से भी सुधरने योग्य हैं। यदि हम लोग चुप बैठे रहेंगे तो नतीजा बुरा होगा। पोल इतनी बढ गई है और ऐसे-ऐसे अनर्थ हो रहे हैं कि सभा में उनका बयान करने में लज्जा आती है। इससे अपने मुनियों के वेश-लिङ्ग की निंदा हो रही है।

५—३२ सम्प्रदायों की डाइरेक्टरी का फार्म भरकर भेजने की बारम्बार अर्ज की गई थी। अलग-अलग सम्प्रदायों के लिए गत सभा में नियत किए गए सभ्यों से भी प्रार्थना की गई। किंतु अभी तक केवल ११ सम्प्रदायों की डाइरेक्टरी मिली है और २१ की बाकी है। जिसमें पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज सा०, पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा०, पूज्य श्री सोहन लालजी म० सा० इत्यादि बड़ी सम्प्रदायों की भी बाकी हैं। वैसे ही सब सम्प्रदायों की समाचारी की नकल भेजने की भी प्रार्थना की थी, किंतु हमारे पास केवल २ या ३ ही समाचारी आई हैं। डाइरेक्टरी तथा समाचारी भेजने में इतना आलस्य है- तो और बातों का खयाल तो आप सभ्य महाशय ही कर सकेंगे।

से न छापने बाबत ता० २४ अप्रेल के 'प्रकाश' में जाहिर कर दिया था। किन्तु उस नियम का पूर्णतया पालन नहीं होने से कुछ लेख वैसे भी छप गये हैं। आयंदा वैसी स्थिति न आने के लिये कुछ नियम बना देने को मैं समिति से अर्ज करता हूं।

१०— नीमच कमेटी के पश्चात् मेरे ह० तीन मास में खर्चा रु० ६०|≡)| का हुआ है।

कान्फ्रेंस की जनरल कमेटी ने खर्च के लिये ५००) रु० की मंजूरी दी थी जिसमें से हमने अभी तक रु० ४००) मंगवाये हैं। किन्तु मेरे हस्ते दस महीनों में, ३२०||) खर्च हुए हैं।

३५) रु० प्रचारक श्री चिमनलालजी को दिये हैं। उसका कान्फ्रेंस आफिस से हिसाब समझ लिया है। जितनी हो सकी उतनी किफायत से काम किया है।

११— ता० १५ फरवरी से प्रचारक चिमनसिंहजी मेरी सूचना के अनुसार कार्य कर रहे हैं, जिसकी रिपोर्ट समय समय पर 'प्रकाश' में छपी है। मैंने आज तक ८५०० माइल की मुसाफरी करके यथाशक्ति श्रीसंघ की सेवा की है। मेरी अल्प शक्तियों से मैं पूर्ण परिचित हूं। मेरे कार्य में बहुत सी त्रुटियां रह गई है उनके लिये मैं आपसे क्षमा चाहता हूं। आप सभ्योंने भी इस महाभारत कार्य की पूरी २ जिम्मेदारी का पूरा २ खयाल किया होगा। आपके साथ के पत्र-व्यवहार में अविनय या अभक्ति दिखी होवे तो उसका खयाल न कर क्षमा करें।

भाई श्री धीरजलालजी तुरखिया ने समय समय पर साथ देकर जहां २ बुलाया वहां उपस्थित होकर जो सहयोग दिया है उसके लिये मैं उनका आभार मानता हूं।

* * * * *

(४) आज तक ३२ सम्प्रदायों में से सिर्फ ११ संप्रदायों के डाइरेक्टरी फार्म और केवल तीन संप्रदायों की समाचारी प्राप्त हुई है। अतः बाकी रही सम्प्रदायों से साग्रह विनती की जाती है कि वे अपनी २ संप्रदाय के डाइरेक्टरी फार्म और वर्तमान समाचारी (पुरानी हो वा संशोधित) शीघ्रातिशीघ्र मन्त्री साधु-सम्मेलन समिति जयपुर को भेज दें। यदि आसोज सुदी १५ तक समाचारी और डाइरेक्टरी फार्म न आवें तो श्री धीरजलाल के० तुरखिया, उन संप्रदायों के मुख्य २ श्रावकों की सेवा में उपस्थित हो कर प्राप्त करें। आशा है कि हरएक सम्प्रदाय आसोज सुदी १५ के पहले २ अपनी समाचारी व डाइरेक्टरी फार्म भेजने की कृपा करेंगे।

बृहत्साधु-सम्मेलन, अजमेर इसी फाल्गुण मास में करना या एक साल बाद? इस विषय पर प्रकट हुए और प्राप्त हुए सभी अभिप्रायों पर ध्यान रखकर चर्चा करने के बाद यह सभा निश्चित करती है कि बृहत्साधु सम्मेलन इसी फाल्गुन मास में किया जाय।

[५] साधु-सम्मेलन-समिति के आगामी खर्च के वास्ते रु० ५००) पांचसो की अधिक स्वीकृति के लिये, यह सभा श्री प्रमुख अ० भा० श्वे० स्था० जैन कान्फरेन्स से अर्ज करती है।

[६] पण्डितरत्न, शतावधानीजी मुनि श्री रत्नचन्दजी म० सा० के सन्देश और मन्त्रीजी की रिपोर्ट को ध्यान में रखते हुए, सम्मेलन की पूर्ण सफलता के लिहाज से जिन २ स्थानों में शंका समाधान के लिये जाना आवश्यक प्रतीत हो, वहां वहां निम्नलिखित सदस्यों ने प्रवास करना कृपा पूर्वक स्वीकार किया है।

रा० ब० श्रीमान् लाला ज्वालाप्रसादजी, महेन्द्रगढ़

„ सेठ वेलजीभाई लखमसी नप्पु B. A. LL. B बम्बई

„ लाला गोकुलचन्दजी जौहरी, दिल्ली।

रा० सा० „ लाला टेकचन्दजी सा० जंडियाला।

„ लाला रतनचन्दजी जैन, अमृतसर।

„ लाला त्रिभुवननाथजी, कपूरथला।

„ सेठ सोभागमलजी महता, जावरा।

„ सेठ आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर।

„ लाला अमरावसिंहजी जौहरी दिल्ली।

„ सेठ दुर्लभजीभाई त्रिभुवन जौहरी, जयपुर।

इसके अलावा, समिति के अन्य सभ्य जो कि कारणवशात् अनुपस्थित हैं, उनसे भी यह सभा प्रवास में सम्मिलित होने के लिये साग्रह अनुरोध करती है।

[७] नीमच कमेटी के प्रस्तावानुसार जो सदस्य लगातार तीन कमेटियों में नहीं पधारे हैं उनके स्थान पर दूसरे सज्जनों का चुनाव करना चाहिये था। तथापि यह सभा उचित समझती है कि मन्त्रीजी इन सज्जनों की सेवा चालू रखने को पत्र व्यवहार करें और वे कारणवशात् सेवा न दे सकें तो आगामी सभा में दूसरे चुनाव पर विचार किया जाय।

[८] इस समिति की नीमच की दूसरी बैठक के प्रस्ताव नं० ७ पर दुबारा विचार होकर यह सभा निश्चय करती है कि वर्तमान परिस्थिति में सम्मेलन की सफलता की दृष्टि से इस प्रश्न की कार्यवाही स्थगित कर दी जाय और इस सम्बन्ध के तमाम कागजात रेकर्ड में न रक्खे जावें।

[९] श्री दीपमलजी बाफिया पाली वालों का इस्तीफा पेश किया गया और स्वीकार किया गया। आवश्यकतानुसार निम्न सभ्य बढ़ाये गये।

१—रा० ब० श्रीमान् सेठ चांदमलजी नाहर जबलपुर।

२—रा० ब० „ दीवान विशनदासजी C. S. I जम्मू

३— धीरजलाल के० तुरखिया रायपुर।

४— „ सेठ दामोदरभाई जगजीवन जामनगर।

५— „ सेठ राजमलजी ललवाणी जामनेर।

६— „ सेठ भैरूदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर।

[१०] अकेले और सम्प्रदाय की आज्ञा से बाहर साधु व आर्या के रूप में रहने वालों से यह समिति पुनः २ आग्रह करती है कि वे अपनी २ सम्प्रदाय में या किसी अन्य सम्प्रदाय में मिल जाय और जहां वे हों वहां के श्रावक भी कृपया उनको सम्प्रदाय की आज्ञा में चलाने का यत्न करें, ताकि भविष्य में कमेटी को और कोई प्रबन्ध न करना पड़े।

[११] समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी का इस्तीफा पेश किया गया, जिस पर उनकी निःस्वार्थ एवं उत्साहपूर्ण सेवाओं की धन्यवादपूर्वक कद्र करते हुए, सभा ने उनसे अपना इस्तीफा वापस ले लेने की आग्रहपूर्वक प्रार्थना की और उन्होंने इसे कृपापूर्वक स्वीकार भी कर लिया। कार्याधिक्य के कारण मन्त्रीजी की सहायता के लिये श्री धीरजलाल के० तुरखिया को सहायक-मन्त्री नियुक्त किया जाता है।

[१२] पण्डितरत्न मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज सा० की सूचनानुसार, पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज सा० की दोनों सम्प्रदायों के दोनों पूज्य महाराज श्री की सेवा में यह समिति नम्रतापूर्वक प्रार्थना करती है कि सं० १९८२ में रतलाम मे, दोनों सम्प्रदायों में हुए समझोते को पूर्णतया अमल में लाने का भरसक प्रयत्न करें एवं मुख्य २ श्रावकवर्ग भी इस कार्य में पूरा सहयोग दें, ताकि आगामी बृहत्साधु-सम्मेलन शान्तिपूर्वक सफलता के साथ सम्पन्न हो।

[१३] अजमेर के सज्जनों का प्रेमपूर्ण आमन्त्रण स्वीकार करके, समिति की आगामी बैठक, आसोज सुदी १५ ता० १४-१०-३२ को अजमेर में की जाय। सभासदों का प्रवास भी अजमेर से शुरू होगा।

[१४] प्रमुख श्री वेलजीभाई रे० ज० सेक्रेटरी सा० और पधारे हुए सभ्यों का उपकार मानकर, ता० १४-९-३२ को दोपहर के समय, श्री महावीरप्रभु की जय के साथ सभा विसर्जित हुई।

लाला ज्वालाप्रसाद
प्रमुख,
श्री साधु-सम्मेलन समिति सभा, दिल्ली

श्री साधु-सम्मेलन समिति, चौथी बैठक अजमेर

आज, ता १४-१०-३२ को दोपहर के १ बजे से, उक्त समिति की चौथी बैठक श्री० केसरीसिंहजी वाली हवेली (लाखनकोटडी) अजमेर में हुई। निम्न सदस्य उपस्थित थे—

[१] श्रीमान् किशनदासजी मूथा अहमदनगर.
[२] „ पं० कृष्णचन्द्रजी जैन, पचकूला।
[३] „ अमृतलाल रायचन्द जौहरी, बम्बई।
[४] „ रा० सा० ला० टेकचन्द्जी झंडियाला।
[५] „ लाला त्रिभुवननाथजी कपूरथला।
[६] „ ला० रतनचन्द्जी, अमृतसर।
[७] „ राजमलजी ललवानी, जामनेर।
[८] „ पन्नालालजी नारमलजी, भुसावल।
[९] „ रतनलालजी महता, उदयपुर।
[१०] „ नथमलजी चोरडिया, नीमच।
[११] „ रा० सा० मोतीलालजी मुथा, सतारा।
[१२] „ भौंरीलालजी सा० मूसल, जयपुर।
[१३] „ आनन्दराजजी सा० सुराना, दिल्ली।

(१४) „ लच्छीरामजी सा० साँड, जोधपुर।
(१५) „ मोतीलालजी सा० रातड़िया, जोधपुर।
(१६) „ गोरधनमलजी रियांवाले, अजमेर।
(१७) „ कल्याणमलजी बेद, अजमेर।
(१८) „ सेठमलजी सेठिया, बीकानेर।
(१९) „ रा० बा० ला० ज्वालाप्रसादजी, महेन्द्रगढ़।
(२०) „ दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी, जयपुर।
(२१) „ चुन्नीलालजी नागजी बोरा, राजकोट।
(२२) „ लाला मथुराशाह रूपेशाह, सियालकोट।
(२३) „ धीरजलाल के० तुरखिया, रायपुर।

श्रीमान् लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी के प्रस्ताव और सा० श्री मोतीलालजी मूथा के अनुमोदन से श्रीमान् किशनदासजी सा० मूथा ने प्रमुख स्थान ग्रहण किया और निम्न प्रकार की कार्यवाही हुई—

कार्यवाही—

(१) गत कमेटी की कार्यवाही सुनाई गई।

(२) गत-कमेटी से, आजतक का मन्त्री के कार्य का विवरण पढ़ा गया और समिति ने उस पर सन्तोष प्रकट किया।

मन्त्रीजी के कार्य का विवरण—

ता० १५ ६ ३२ से ता० १४-१०-३२ तक की संक्षिप्त रिपोर्ट

१—दिल्ली-बैठक के समय रोहतक श्रीसंघ के डेप्युटेशन को आश्वासन दिया था तदनुसार श्री लाला गोकुलचन्दजी सा० नाहर के साथ मैं और श्री उमरावसिंहजी जौहरी रोहतक गये। वहां मुनि श्री मिश्रीलालजी को समझाया और पूज्य श्री के चरणों में पधारकर अर्ज करने की सलाह दी। समझाने पर, उन्होंने सत्याग्रह न करना स्वीकार किया। साथ ही इश्तिहार न बंटवाने और केवल उनकी ज्ञातरी के लिये दी हुई चिट्ठी को प्रकट न करने को कहा था। किन्तु इन दोनों बातों का उन्होंने पालन नहीं किया है। विहार करके नारनोल पहुंचने पर, उनको समझाने और सत्याग्रह करने की हमने सलाह नहीं दी है इस बात की याद दिलाने नारनोल गया। किन्तु उन्होंने मारवाड़ की तरफ आने की इच्छा ही कायम बतलाई।

२—प्रस्ताव नं० १२ के अनुसार दोनों पूज्यों को विनतीपत्र भेज गये। जिसमें एक प्रत्युत्तर आया है जो आपके सामने पेश किया जायगा।

३—समाचारी तथा शाहरपक्खी भेजने का सभी सम्प्रदायों से विनती की गई। सर्व शाहरपक्खी फार्म चार सम्प्रदाय के मिले हैं। समाचारी दो सम्प्रदायों की आई।

४—डेपुटेशन में सम्मिलित होने का लगभग १५ सदस्यों को विनतीपत्र भेजकर आग्रह किया गया। फलतः निम्नलिखित-सज्जनों ने सहयोग देना स्वीकार किया—

श्री० राजमलजी ललवानी ने दीपमालिका तक साथ देना स्वीकार किया।

श्री० रा० ब० चांदमलजी सा० नाहर ने मनमाड़ से आगे के प्रवास में सहयोग देना स्वीकार किया।

श्री० हेमचन्द भाई रामजीभाई मेहता, (भावनगर स्टेट रेल्वे के मैनेजर) ने, सभ्य नहीं होने पर भी, धर्म प्रेम से १ मास तक सहयोग देना स्वीकार किया है।

श्री० चुन्नीलालभाई नागजी वोरा ने काठियावाड में।

श्री० किशनदासजी सा० मूथा।

५—प्रस्ताव न० ७ के अनुसार, तीन-सभाओं में अनुपस्थित-सभ्यों को चौथी-बैठक के समय अजमेर पधारकर अपना कर्त्तव्य बजाने को विनतीपत्र भेजे गये।

श्री० चन्दूलालभाई छगनलाल ने और श्री धूलचन्दजी भण्डारी रतलाम ने, सेवा करने के समयाभाव के कारण अपने इस्तीफे पेश किये हैं। अन्य जितने सज्जन पधारे हैं, वे आपके सामने हैं।

६—प्रस्ताव न० ६ के अनुसार, नये सभ्यों को चुनाव की सूचना देकर स्वीकृति मागी गई। रा० ब० दीवान विशनदासजी C. S. I. जम्मू की स्वीकृति न आने के कारण, उनसे तार द्वारा पूछा गया है। अन्य सभ्यों ने सेवा स्वीकार करली है।

७—प्रस्ताव नं० १० के अनुसार सूचना कई जगह पर भेज दी गई है।

८—डेप्युटेशन का प्रवासक्रम और मुनिवरों से पूछने की प्रश्नावली तय्यार की गई है, जो समिति की स्वीकृति के वास्ते आपके सामने है।

९—बगडी में,मरुधर-श्रावक सम्मेलन ता० ११,१२ तदनुसार आसोज सुदी १२,१३ को भरने का प्रयत्न हुआ। इसका प्रचार व सफल बनाने को प्रवास करके तथा बगडी में रहकर सहयोग दिया। मारवाड़ में, ऐसा सम्मेलन और पहले शायद ही हुआ हो। सम्मेलन के प्रस्ताव देखना चाहें तो यहां मौजूद हैं। इस सम्मेलन की बहुतसी महत्वपूर्ण कार्यवाही सभी जैनों को अनुकरणीय होगी।

१०—पूज्य श्री धर्मदासजी म० की सं० के एक फिर्के के ४ सन्त शाहपुरा में हैं। उनको संगठन के वास्ते समझाया गया। उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लिया है। उज्जैन से पत्र-व्यवहार शुरू कर दिया है। भाई धीरजलालजी, इस कार्य के लिए शाहपुरा, भीलवाडा आदि गये थे। और अजमेर में जाहिर सभा करके श्रीसंघ का उत्साह बढाया था।

११—एक मास में, पत्र न० १३२७ से न० १६०६ तक अर्थात २७९ पत्र लिखे गये हैं।

१२—वातावरण देखते हुए सभी मुनिवरों के पास डेप्युटेशन का जाना आवश्यक है। समय थोडा है, क्षेत्र बहुत है। यदि इस समिति के सभी (४०) सदस्य डेप्युटेशन में पधारें और ५-७ विभाग करके प्रवास किया जाय, तो यह कार्य अधिक सफल हो सकता है। एक डेप्युटेशन का कार्तिक सुदी १५ तक सब जगहों पर पहुचना मुश्किल है। साथ ही बहुत सी जगहों पर पहुंचना मुश्किल है। साथ ही बहुत सी जगहों पर जाकर, क्षेत्र विशुद्धि करने की भी पूरी २ जरूरत है। महा-सम्मेलन में शामिल होने के लिए सब सम्प्रदायों की मंजूरी व प्रतिनिधियों के नाम मिलने के बाद ही तारीख मुकर्रर करने की हमारी राय है। सभी के सभी मेम्बर यदि इस महायज्ञ के लिए घर का कार्य छोड कर भ्रमण का परीश्रम करें तो कार्य सरल व साध्य हो सकेगा। वर्ना केवल कागज मात्र से ही सभी सम्प्रदायों का पधारना हमको तो संभव नहीं दीखता है।

(३) बाहर से आये हुए पत्र पढे गये और विचाराधीन रक्खे गये।

(४) (A) निम्न दो सदस्य इस समिति को सेवा नहीं दे सकते हैं अतः समिति से नाम कम किये गये—

१— श्री चन्दूलालजी कुशलदासजी अहमदाबाद
२— श्री० श्रीचन्दजी सा० अब्बाणी ब्यावर

(B) निम्न सदस्यों के नाम समिति में बढ़ाये जाते हैं—

१— श्री० चन्दनमलजी सा० कोचर जोधपुर
२— श्री० हेमचन्दभाई रामजीभाई मेहता भावनगर स्टेट रे० मैनेजर
३— श्री० रा० ब० ठाकरसीभाई मकनजी इंजीनियर, जूनागढ़ स्टेट
४—श्री० सरदारमलजी सा० मार्केट जज शाहपुरा.
५—श्री कुन्दनमलजी सा० फिरोदिया M. A. L. L. B. अहमदनगर.
६—श्री सोभागमलजी अमोलकचन्दजी लोढ़ा बगड़ी.
७—श्री शंकरलालजी रतनलालजी गुलेच्छा सींवन
८—श्री सुगनचन्दजी लूणावत धामण
९—श्री रूपचन्दजी जवाहरलालजी रामावत प्रतापगढ़
११—श्री० सुगनचन्दजी सा० नाहर अजमेर
१०—श्री मुलकराजजी B. A. गुजरांवाला
१२—श्री० लाल मथुरामाणकजी बजुब
१३—श्री० सेठलाल भाई रामजी मांगरोल
१४—श्री० बनारसीलालजी (मक्खन-बुकडिपो) लाहौर

(५) साधु-मुनिराजों का पूछने की प्रश्नावली मंत्री की तरफ से पेश हुई और संशोधन की गई। इसे छपाकर मुख्य-मुख्य मुनिवरों की सेवा में भेज उत्तर मंगाने को मन्त्री को सूचना दी गई।

(६) गत देहली की बैठक के प्रस्ताव नं० ८ पर (जो सीमन्ध कमेटी के प्रस्ताव नं ७ की कार्यवाही को स्थगित करने के सम्बन्ध में हुआ था) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के हितेच्छु श्रावक मण्डल ने असन्तोष प्रकट किया है और अपनी मांग कायम रक्खी है। इस विषय में समिति के मन्त्री को अधिकार दिया जाता है कि निम्नलिखित तरीके पर मण्डल को जवाब लिख दें।

(अ) कार्यवाही चालू रखने में सम्मेलन के कार्य में विलम्ब होता है। समय स्वल्प है तथा कई प्रकार के नये विघ्न खड़े होना सम्भव है। अतः समिति पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० से प्रार्थना करती है कि एक व्यक्ति के किये हुये आक्षेपों से समाज सहमत नहीं है। ऐसी हालत में उसे महत्व न दें। मण्डल से भी समिति निवेदन करती है कि आपकी मांग के अनुसार कोई जवाबदार संस्था उन आक्षेपों की जिम्मेवारी नहीं लेती है, जो सीमन्ध कमेटी के प्रस्ताव नं० ६ से प्रकट है। इसलिये समिति ने स्थगित कर दिया था और आप भी इस विषय को स्थगित कर दें।

(ब) प्रस्ताव नं १२ के सम्बन्ध का खुलासा आया। वह समिति के दफ्तर में रक्खा गया है। समिति तो दोनों सम्प्रदायों में स्नेह और परस्पर प्रेम बढ़े, ऐसा हृदय से चाहती है।

(७) दिल्ली की बैठक के प्रस्ताव नं० ५ के अनुसार आवश्यक स्थानों पर जाने के वास्ते

उत्साही सज्जनों के अलग-अलग डेपुटेशन भेजना तय किया। मंत्रीजी प्रवास का प्रोग्राम बना देंगे।

(८) श्री० प्रमुख श्री का, अजमेर श्रीसंघ का और बाहर से पधारे हुए सभासदों का उपकार मानकर, रात्रि को १०॥ बजे, सभा 'महावीर-प्रभु की जय' के साथ विसर्जित की गई।

(Sd,) किशनदास मूथा, प्रमुख

श्री साधुसम्मेलन समिति की पांचवीं बैठक, बंबई

उक्त समिति की पांचवीं बैठक, ता० २३, २४, २५ दिसम्बर सन् १९३२ ई० को कान्दावाड़ी जैन-स्थानक में हुई। निम्न सदस्य उपस्थित थे—

१—श्री० वेलजीभाई लखमसी नपु B A L-L B बम्बई
२— ,, अमृतलाल भाई रायचन्द जौहरी, बम्बई
३— ,, वर्द्धभानजी सा० पीतलिया, रतलाम
४— ,, रा० सा० मोतीलालजी मूथा, सतारा
५— ,, लच्छीरामजी सा० सांड, जोधपुर
६— ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा, देहली
७— ,, पन्नालालजी सा० बम्ब, भुसावल
८— ,, रतनलालजी ठाकुरलालजी सा० खिंचन
९— ,, नथमलजी सा० चोरडिया, नीमच.
१०— ,, चन्दनमलजी सा० कोचर, जोधपुर
११— ,, कुन्दनमलजी सा० फिरोदिया B. A L-L B. अहमदनगर
१२— ,, दुर्लभजीभाई त्रिभुवनजी जौहरी, जयपुर
१३— ,, धीरजलाल के० तुरखिया, ब्यावर
१४— ,, नेमीचन्दजी सा० लूंकड़, आगरा (श्री अचलसिंहजी सा० के बदले)
१५— ,, सोभागमलजी सा० मेहता, जावरा. (रविवार को पधारे)
१६— ,, अमोलकचन्दजी सा० लोढा, बगड़ी (,, ,, ,,)

श्री अमृतलालभाई जौहरी के प्रस्ताव और श्री० आनन्दराजजी सा० सुराणा के अनुमोदन से प्रमुख स्थान श्री० मोतीलालजी सा० मूथा ने स्वीकार किया। निम्न प्रकार से कार्यवाही हुई।

कार्यवाही

(१) आमन्त्रण पत्रिका और गत मीटिंग की कार्यवाही पढ़ी गई।

(२) श्रीमान् किशनदासजी सा० मूथा अहमदनगर वाले, जो इस समिति के सभ्य थे। डेप्युटेशन में आपने १५ दिन तक साथ दिया था और आपसे सम्मेलन के कार्य में अनेक प्रकार की सहा-

मता की आशा थी। किन्तु आपके अचानक स्वर्गवास के समाचार से यह सभा हार्दिक-दिलगीरी जाहिर करती है, स्वर्गस्थ की आत्मा के लिये शान्ति चाहती है और आपके कुटुम्ब को आश्वासन देती है।

उपरोक्त प्रस्ताव, स्वर्गस्थ के पुत्रों को, अहमदनगर पहुँचाने की मंत्रीजी को सूचना दी जाती है।

(३) मंत्रीजी के कार्य की रिपोर्ट व हिसाब पढ़ा गया।

रिपोर्ट

ता १५-१०-३२ से ता० २१-१२-३२ तक की संक्षिप्त रिपोर्ट

१—अजमेर की बैठक में, समिति में १४ सभ्य बढ़ाये गये, उनको पत्र द्वारा सूचित किया गया है। किसी का इनकार पत्र नहीं मिला है।

२—बीस प्रश्नों की प्रश्नावली समिति की आज्ञानुसार मुख्य मुख्य मुनिवरों की सेवा में भेजी गई और बहुत-से उत्तर आये हैं जो फाइल किये गये हैं। प्रायः सब सम्मेलन की तरफदारी और काम में ही हैं और भविष्य की कार्यदिशा भी सूचित करते हैं। ये सब पढ़कर, समिति उचित-व्यवस्था करे यह विनती है।

३—अजमेर की बैठक के प्रस्ताव नं० ६ के अनुसार श्री हितेच्छु-श्रावक-मण्डल रतलाम को जवाब भेज दिया है।

४—आवश्यक स्थानों पर जाकर मुनिवरों से शंका समाधान और सम्मेलन में अपना-अपना संगठन शुद्धि करके पधारने का निमंत्रण देने को अलग-अलग डेप्युटेशनों ने प्रवास किया।

A. जिसमें बहुसंख्यक और लम्बा दौरा करने वाले डेप्युटेशन को ३२ दिन लगे। इसमें रेल मोटर स्टीमर और बैलगाड़ी आदि को मिलाकर करीब ५००० माइल का सफर हुआ। खर्च सबने अपना अपना किया।

B राजपूताने में जयपुर के गृहस्थों का डेप्युटेशन गया था।

उपरोक्त दोनों डेप्युटेशनों की रिपोर्ट प्रकाश में छप चुकी है।

C काठियावाड़ में जहां बड़ा डेप्युटेशन नहीं पहुँच सका था वहां (सावरकुण्डला मूली जूनागढ़ आदि स्थानों पर) राजकोट के गृहस्थों का डेप्युटेशन गया था।

D मेवाड़ में शाहपुरा के जज श्री सरदारमलजी सा० छाजेड़ आदि का डेप्युटेशन हुआ था।

उपरोक्त दो डेप्युटेशनों की रिपोर्ट अब जैनप्रकाश में यथावकाश प्रकाशित होगी।

E. मारवाड़ के वास्ते जो डेप्युटेशन नियत किया गया था उसने दौरा नहीं किया है। पूछने पर उत्तर मिला कि—"मुनि मिश्रीलालजी के उपवास के कारण मारवाड़ का वातावरण शुद्ध न होने से नहीं जा सके"।

इसका कारण समयाभाव या अज्ञात होने से किसी मुनिराज के पास न पहुँच सके हों, तो उन के लिये क्षमा चाहते हुए डेप्युटेशन का रिपोर्ट के अन्तिम भाग में खुलासा कर दिया है।

५—डेप्युटेशन पूर्ण होते ही सहमंत्री श्री० धी० क तुरखिया का ता १७ को ब्यावर होते हुए, ता १८ को ब्यावर के अग्रेसरों के साथ नेपाज भेजे और श्री मिश्रीलालजी से पारणा करने का

आग्रह किया गया था तत्पश्चात, श्रीमान् लाला ज्वालाप्रसादजी के ब्यावर पधारने पर एक वक्त और सेवाज को, ब्यावर के अग्रेसरों के साथ सहमंत्री का जाना हुआ, जहां पारने के वास्ते प्रयास किया गया।

६—देहली श्रीसंघ के आदेश से पारने के प्रयास के वास्ते निकले हुए डेप्युटेशन के मन्त्री श्री दुर्लभजी जौहरी ने, जोधपुर में साथ किया। तिवरी में पूज्य श्री० जवाहिरलालजी म० सा० के पास होकर, सब के साथ सेवाज आये। पारणे का प्रयास किया, परन्तु सफल न हुए।

७—देहली डेपुटेशन के असफल लौटने पर और पालनपुर सघ पर श्री मिश्रीलालजी द्वारा विश्वास प्रकट करने पर, मत्री और सहमत्री काठियावाड जाते हुए पालनपुर के अग्रेसरों से मिले। उनके सामने सब परिस्थिति रक्खी और पारणे का यश लेने की अर्ज की।

८—पालनपुर से रवाना होकर काठियावाड और गुजरात के मुनिवरों का विहार कराने, मत्री तथा सहमत्री प० मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० सा० के पास गये। वहा से, कलोल में, दरियापुरी सम्प्रदाय के सम्मेलन में हाजिर होकर प्रतिनिधियों का चुनाव कराया और दरियापुरी सन्तों के पास तथा खंभात-सम्प्रदाय के मुनिवर्गों के पस नरोडा जाकर अजमेर की तरफ विहार करने का निश्चय करवाया।

९—वढवान, बढवाण केम्प, रामपुरा, लींबडी, कथारिया, बलगामडा आदि स्थानों पर जा कर, लींबडी के दो सम्प्रदाय तथा बोटाद व गोंडल सम्प्रदाय के प्रतिनिधि मुनिवर्गों को शीघ्र विहार करने की विनती की।

१०—अमरेली में जाकर, वयोवृद्ध सेठ प० हसराज भाई लक्ष्मीचन्द्रभाई को, उनके सुपुत्र श्री रामजीभाई से और प० बेचरदासजी आदि से मिले। शास्त्रोद्धार के वास्ते सेठजी ने रु० १५०००) अर्पण कराके कॉन्फ्रेन्स द्वारा ट्रस्टडीड कराकर, यह शुभ कार्य शुरू करने का वचन लिया। सेठजी की योजना व पत्र साथ है जो कान्फ्रेन्स की जनरल कमेटी में निर्णयार्थ पेश किया जायगा।

११—दामनगर जाकर, शास्त्र-विशारद सेठ श्री दामोदर भाई से मिले और साधु सम्मेलन के समय १५-२० दिन के लिये पधारने की स्वीकृति ली।

१२—मिश्रीलालजी ने ता० २१ को पारणा कर लेने के समाचार मिले हैं। इससे, हर्ष के साथ छुटकारे का दम खींचा है। सम्मेलन के सामने से, एक विघ्न टल गया मालूम होता है। भविष्य में ऐसी-ऐसी परिस्थितियों से और एकलविहारी तथा आज्ञाबाहर के मुनियों के विघ्नों से बचने के वास्ते कोई उपाय सोचना आवश्यक है। इस पर समिति ध्यान दे।

१३—अब अजमेर-सम्मेलन की तारीख मुकर्रर करनी है। इसके लिये अजमेर के संयोग, मुनिराजों के विचार और द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव देखते हुए चैत्र सुदी १० बुधवार से कार्य शुरू करना ठीक दीखता है। सब संयोग जबानी सविस्तार समझाये जावेंगे।

१४—सम्मेलन के नियमों का पूरा-पूरा पालन होने के लिये कॉन्फ्रेन्स का अधिवेशन सम्मेलन के करीब समय में करना भी ज़रूरी है। इस विषय में तथा सम्मेलन की मिती के वास्ते समिति को अपना अभिप्राय कान्फ्रेन्स की जनरल कमेटी के सामने रखना जरूरी है।

१५—सम्पूर्ण सम्मेलन प्रेम-पूर्वक सफल हो, इसके लिए मुनियों को विहार की सरलता, स्वागत, सम्मेलन से पहले विचार-विनिमय, मिलन, विषय-विचार आदि-आदि के वास्ते कई विचारों की आवश्यकता है।

१६—साधु-सम्मेलन-समिति का चुनाव सम्प्रदायवार नहीं हुआ है। सो सम्प्रदायवार चुनाव

करने की सूचनायें समिति के आफिस में आई हैं। वे सूचनायें आपके समक्ष पेश की जायेंगी। इस पर विचार करके, खुलासा प्रकट करके और भविष्य के चुनाव पर विचार करके, सबका सन्तोष तथा न्याय देने की भी आवश्यकता है।

१७—सम्मेलन का आन्दोलन अधिक जोर शोर से होना जरूरी है। इस वास्ते जैनप्रकाश को अधिक निकालने की जरूरत रहेगी और समाचार तथा प्रचार के अधिक सुभीते के वास्ते 'जैन-प्रकाश' कुछ समय के लिये अजमेर में ही छपाया जाय तो कैसा रहे? तथा अधिक प्रचार व आन्दोलन के वास्ते प्रचारक भेजने, पोस्टर्स छपवाने आदि आदि की जरूरी सूचनायें प्राप्त करने की आपसे उम्मीद है।

१८—समिति के कुछ सभ्यों ने मध्यस्थ भाव रखकर सेवा नहीं दी है। उनसे सेवा लेने की उम्मीद होनी चाहिये। इस समिति के सभ्यों की अन्तिम सेवा सम्मेलन के समय १५ दिन से १ मास तक उपस्थित रहने की तो होनी ही चाहिये। इस विषय में भी आप विचार करके उचित-कार्यवाही करें।

१९—रिपोर्ट के इस समय में, पत्र नं० १६०७ से नं० १११६ तक अर्थात् १०७ पत्र लिखे गये हैं।

२०—ता० १ ११ ३१ से ता० २२ १२-३२ तक समिति का खर्च रु ६९७॥=) हुआ है।

उपरोक्त हिसाब पेटे रु० ५४६=) कान्फ्रेन्स की तरफ से आय हैं और रु० १२१।) मंत्री के पास से खर्च हुए हैं। हिसाब की बही मय सरवाया के मौजूद है। देखकर हिसाब पास कर लेने का मन्जूर कर दिया जावे।

दुर्लभजी त्रि० झौहरी
धीरजलाल के० तुरखिया
मंत्रीगण

(४) निम्न सभ्य लगातार तीन मीटिङ्गों में उपस्थित नहीं हुए हैं, उन्हें एक बार और मौका दिया जाय और आगामी बैठक में उपस्थित होने की विनती की जाय।

१—श्री० चुन्नीलालजी सा० भण्डारी रतलाम
२— „ केशरीमलजी सा० चोरड़िया जयपुर
३— „ सोभागमलजी सा० पोरवाड़ धांदला
४— „ श्री० मीठाभाई ईश्वरभाई, पालनपुर
५— „ छोटेलालजी सा० पोखरना इन्दौर

(५) निम्न सभ्यों के नाम समिति में बढ़ाए जाते हैं—

१—श्री० सरदारमलजी सा० पुङ्गलिया नागपुर
२— कन्हैयालालजी सा० भण्डारी इन्दौर
३— हीरालालजी सा० नांदेचा खाचरौद
४— मंगलदास जेसंगभाई, अहमदाबाद
५— मिश्रीलालजी सा० मुथोत ब्यावर
६— „ गिरधरलाल दामोदर दफ्तरी बम्बई
७— सरदारमलजी छाजेड़ जोधपुर
८— „ सा० मार्तण्ड ऑ० मजिस्ट्रेट, हैदराबाद
९— रतनशी मग्नाजी रायचूर

१०— ,, मोतीरामजी नाहर, होशियारपुर.
११— ,, माणकचन्दजी यरमेचा, किशनगढ़
१२— ,, सिद्धकरणजी कोठारी, किशनगढ
१३— ,, मुकुन्दचन्दजी बालिया, पाली
१४— ,, माणकचन्दजी किशनदासजी मूथा, अहमदनगर
१५— ,, नेमीचन्दजी लूंकड, आगरा
१६— ,, लालचन्दजी मूथा, गुलेदगढ़.
१७— ,, मगनमलजी कोचेटा, भँवाल

(६) साधु-सम्मेलन समिति के चुनाव के सम्बन्ध में, मन्त्रीजी के पास सम्प्रदायवार चुनाव नहीं होने की सूचना आई है। इसलिये, यह समिति खुलासा करती है, कि साधु-सम्मेलन समिति के सभ्यों का चुनाव, सम्प्रदाय के लिहाज से किया गया है। क्योंकि, साधु-सम्मेलन समिति का कार्य मुनिवरों को एकत्रित करने और उस कार्य के वास्ते हरएक प्रसंग पर सहायक होने का है। सम्मेलन का कार्य तो केवल मुनिराज ही करेंगे। इसलिये जितने जितने उत्साही कार्यदक्ष व आत्मभोगी के नाम प्राप्त होते गये है त्यों-त्यों नाम बढाते गये हैं फिर भी अन्य उत्साहियों के नाम कोई संघ सूचित करेंगे तो समिति उनके नाम बढ़ाने का विचारेगी।

इस समिति का कार्यमात्र साधु सम्मेलन होने तक सेवा देने का है।

(७) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की दोनों सम्प्रदायों में संप कराने के बहाने से श्री० मिश्रीलालजी ने अनावश्यक अनशन करके सारी समाज में जो अशान्ति फैला दी इससे यह समिति अपना घोर असन्तोष प्रकट करती है। इसी प्रकार महात्मा गांधीजी, पं० रत्न शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, पं० मुनि श्री तिलोकचन्दजी महाराज आदि ने भी उक्त कार्य को धर्म विरुद्ध तथा अनुचित बतलाया है।

B अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन साधु सम्मेलन द्वारा ऐक्य व प्रेम करने का प्रयास किया जा रहा है; ऐसी हालत में किसी भी व्यक्ति को भविष्य में ऐसी कार्यवाही करने की और ऐसे कार्य करने वालों को किसी प्रकार का उत्तेजन व सहायता देने की यह समिति सख्त मनाई करती है।

C. तथा सम्मेलन को सफल चाहने वाले सभी मुनिवरों और आगेवान श्रावकों से साग्रह प्रार्थना करता है कि भविष्य में ऐसे बाधक प्रसंग प्राप्त होने पर संयुक्त बल से ऐसे कार्य की अनुचितता जाहिर करके और उचित कार्यवाही करके ऐसे प्रसंगों को रोकने का यथाशक्य प्रयास करें।

(८) साधु सम्मेलन के वास्ते अनुकूल वातावरण फैलाने और भविष्य में होने वाले अशांति के प्रसगों को रोकने के वास्ते सम्पूर्ण सत्ता के साथ निम्न सज्जनोंकी एक सब कमेटी नियुक्तकी जाती है।

१ श्रीमान् वेलजी लखमसी नप्पु B A. L-L B बम्बई।
२ ,, कुन्दनमलजी सा० फिरोदिया B A. L L B. अहमदनगर
३ ,, सरदारमलजी सा० छाजेड जज शाहपुरा स्टेट।
४ ,, राजमलजी सा० ललवानी Ex M. L C जामनेर।
५ ,, नथमलजी सा० चोरडिया, नीमच
६ ,, नेमीचन्दजी सा० लूँकड आगरा
७ ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा जोधपुर

८ „ रा० सा० मोतीलालजी मूथा, सतारा
९ „ अमोलकचन्दजी ला० लोढा, बगड़ी।
१० , कुलमजी त्रि० जौहरी } दोनों मन्त्री होद्दा की दृष्टि से
११ „ धीरजलाल के० तुरखिया

कोरम पांच का मुकर्रर किया जाता है।

(९) अजमेर सम्मेलन के समय में मुनिवरों के पारस्परिक व्यवहार खास संयोगवशात होवे, वे अपवादरूप समझे जावेगे परन्तु भविष्य में इस अपवाद को सम्भोगरूप समझने का नहीं है। सम्मेलन के समय इस विषय में भविष्य के वास्ते जो निर्णय होगा, उसका अमल बराबर होगा।

(१०) देहली जनरल कमेटी के प्रस्ताव नं० १ क 'ठ विभाग के अनुसार कितनेक मुनि अपने-अपने सम्प्रदाय में मिल गये हैं यह हर्ष की बात है। बाकी के (सम्प्रदाय बाहिर व अकेले विचरने वाले) भी उनका अनुकरण करें (सम्प्रदाय में मिल जांय) ऐसा यह समिति अन्तर से चाहती है।

अभी तक सम्प्रदाय से पृथक या अकेले विचरने वालों की तरफ से ठहराव अनुसार प्रान्त वार सम्प्रदाय बनाकर कोई प्रतिनिधि भेजने की सूचना आई नहीं है। अब कोई नाम सूचित करेंगे तो समिति को पसन्दगी पर स्वीकार होगा।

(११) कान्फ्रेन्स कमेटी ने व साधु सं० समिति ने पहिले साधु-सम्मेलन फाल्गुन मास में होने का जाहिर किया था; परन्तु फाल्गुन मास में सम्मेलन भरने में कई असुविधायें होने से तथा सं० १९९० (गुजराती सं० १९८९) के चैत्र शुक्ला १० बुधवार का शुभ मुहूर्त निकलने के कारण सम्मेलन का प्रारम्भ चैत्र सुदी १० बुधवार ता० ५ ४ ३३ में किया जायगा। इसलिये सम्मेलन में पधारने वाले मुनि महात्माओं से सविनय विनती है कि उक्त मिती के करीब अजमेर में पधारने की कृपा फरमावें।

(१२) साधु सम्मेलन में भविष्य की उन्नति के सम्बन्ध में विचार किया जावे किन्तु भूतकाल सम्बन्ध की कोई चर्चा नहीं की जावे।

(१३) सम्मेलन के समय मुनिराजों का परस्पर सम्मान आदि बर्ताव अपनी इच्छानुसार रहेगा। इसलिये पधारने वाले सभी मुनिराजों से नम्र विनन्ति है कि इस विषय में कोई ख्याल न फरमावें।

(१४) सम्मेलन के समय पधारने वाले सर्व सम्प्रदाय के मुनिराजों के सामने स्वागतार्थ समिति के उपस्थित सभी सभ्यों का जाना आवश्यक होगा।

(१५) सम्मेलन के समय समिति के सर्व सभ्यों को हाजिर रहने का कर्तव्य है। इस कर्तव्य का पूर्ण पालन करने को यह सभी समिति के सभी सभ्यों को साग्रह अनुरोध करती है।

(१६) समिति के काम के वास्ते देहली की बैठक में ५००) अधिक के वास्ते मांग मांगने का तय हुआ था। इसके बदले रु० १५००) के लिये कान्फ्रेन्स आफिस को अर्ज की जाय।

(१७) यह समिति कान्फ्रेन्स की जनरल मीटिंग को अर्ज करती है कि साधु-सम्मेलन के बाद तुरन्त में ही अजमेर व नजदीक के स्थान पर कान्फ्रेन्स का अधिवेशन भरने की व्यवस्था कर जिस से सभी जैनों को कान्फ्रेन्स में शामिल होने का मुनि दर्शन का और साथ कन्वेशन का भी लाभ मिल सके। साधु-सम्मेलन की कार्यवाही बताई जा सके और उसका प्रचार व अमल हो सके।

(१८) डेप्युटेशनों की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ कि प्रायः सभी सम्प्रदायों ने सम्मेलन के प्रति

सहानुभूति एव प्रसन्नता बताते हुए अपने-अपने प्रतिनिधि भेजने का स्वीकार किया है और प्रश्नावली के उत्तर भी भेजे है। इससे यह समिति हर्ष के साथ आभार मानती है।

(१६) इस सभा के प्रस्ताव नं० ७-८-११-१६-१७ जो विशेष महत्व के हैं अतः कान्फ्रेंस की जनरल कमेटी को भी ये प्रस्ताव पास करने की सिफारिश की जावे।

(२०) प्रमुख श्री व पधारे हुए सभ्यों का उपकार मान कर श्री महावीर प्रभु के जयनाद के साथ कार्यवाही समाप्त हुई।

नोट—ता० २३ व २४ दिसम्बर शुक्र व शनिवार की कमेटी में ठहराव नं० १७ तक सर्वानुमति से पास हो गये थे व ता० २५ दिसम्बर रविवार की कमेटी में समिति के सदस्य सेठ सोभागमलजी सा० जावरा वालों के आने से पास हुए ठहराव पढ के सुनाये गये; तो इन्होंने ठहराव पास हुए मे से ठहराव नं० ७ के बाबत अपनी असहमति बताकर नोट करवाया।

ता० २५-१२-३२ } (Sd Motilal Balmukund Mutha
प्रमुख

—o—

श्री साधु-सम्मेलन समिति, छट्ठी बैठक अजमेर

उक्त समिति की छट्ठी बैठक देवलिया ठाकुर साहब की हवेली अजमेर में ता० २५-२-३३ को हुई उस समय निम्न सदस्य उपस्थित थे।

१ श्री० वर्द्धमानजी सा० पित्तलिया, रतलाम
२ ,, फूलचन्दजी सा० भण्डारी ,,
३ ,, नथमलजी सा० चोरडिया नीमच
४ ,, टेकचन्दजी सा० भंडियाला
५ ,, रतनचन्दजी सा० अमृतसर
६ ,, रतनलालजी सा० महता उदयपुर
७ ,, केशरीचन्दजी सा० चोरडिया जयपुर
८ ,, भँवरलालजी सा० मुशल जयपुर
९ ,, छोटेलालजी सा० पोखरना इन्दौर
१० ,, मस्तरामजी सा० M A अमृतसर
११ ,, सोभागमलजी सा० पोरवाड़, थांदला
१२ ,, सरदारमलजी सा० छाजेड शाहपुरा
१३ ,, ज्वालाप्रसादजी सा० महेन्द्रगढ़
१४ ,, सुगनचन्द जी सा० नाहर अजमेर
१५ ,, अमोलखचन्द सा० लोढा, बगडी

१६ „ भवरलालामजी सा० बलूह
१७ „ मगममलजी सा० कोचेटा मेवाड़
१८ „ भवरलमलजी सा० रियांवाला अजमेर
१९ „ लखाम्बीरामजी सा० मुथोत ब्यावर
२० „ मिश्रीलालजी सा० सुराणा जोधपुर
२१ „ आनंदरामजी सा सुराणा „
२२ „ दुर्लभजी भाई त्रि० जौहरी मोरवी
२३ „ धीरजलाल क तुरखिया, ब्यावर
२४ , कल्याणमलजी सा वैद्य अजमेर

श्री० सरदारमलजी सा छाजेड़ की दरख्वास्त और श्री आनंदरामजी सा० सुराणा के अनुमोदन से रा० सा० लाला टेकचंदजी सा० ने प्रमुख स्थान स्वीकार किया। कार्यवाही निम्न प्रकार हुई।

[१] आमंत्रण पत्र, गत सभा की कार्यवाही, मन्त्रियों की रिपोर्ट तथा बाहिर के आये हुए पत्र सुनाये गये।

मन्त्रीजी की रिपोर्ट

ता० २१-१२-३२ से ता० २४-२-३३ तक की सक्षिप्त रिपोर्ट

१—गत बैठक के प्रस्ताव नं० ४ के अनुसार, लगातार ३ बैठकों में नहीं पधारे हुए सभासदों को, एक बार अधिक मौका देकर सेवा की प्रार्थना की है।

२—नये चुने हुए सभ्यों को पत्र द्वारा सूचित कर दी गई है।

३—श्री साधु सम्मेलन-संरक्षक समिति जो प्र० नं० ८ के अनुसार बनी है—कार्य शुरू कर दिया है। एक बैठक ब्यावर हुई थी और दूसरी बैठक आज शुरू है।

४—मारवाड़ में, पहले डेपुटेशन नहीं जा सका था अतः सहमंत्री श्री० अमोलकचंदजी सा० लोढ़ा श्री० मगनमलजी सा० कोचेटा श्री० शंकरलालजी सा० मुकेम्बा श्री० लच्छीरामजी सा० सांड आदि के साथ ब्यावर, बिलाड़ा नागौर आदि स्थानों पर डेपुटेशन का दौरा हुआ, जिसकी रिपोर्ट प्रकाश में आ चुकी है।

५—अजमेर में ता० २८-१-३३ को श्री संघ की बैठक कराके स्वागत-समिति की स्थापना के समय हाजिरी दी। उत्साह बढ़ाया मार्गदर्शन किया।

६—देहली जाकर गणिजी श्री उदयचंद्रजी म० उपाध्यायजी श्री आत्मारामजी म० आदि के दर्शन किये। वहां पं० मुनि श्री फूलचंदजी म० मुनि श्री कुन्दनमलजी म० आदि से मिले और जो वार्तालाप आदि हुआ सो जैन-प्रकाश में छप चुका है। बाद में आगरा और अलवर से जो पत्र आये हैं उन पर विचार करके उचित कार्यवाही करने की आप से प्रार्थना है।

७—मंत्री और सहमंत्री पाली को दरियापुरी सम्प्रदाय के मुनिराजों के दर्शनार्थ व साता पूछने गये थे। मंत्रीजी ने पालनपुर और आबू जाकर काठियावाड़ तथा गुजरात के मुनिवरों के विहार में दर्शन किये। सहमंत्री ने आबू, सिद्धपुर, अहमदाबाद जाकर मुनि दर्शन किया तथा छपाई आदि कार्य करवाये।

८—अब समिति के और स्वागत-समिति के आफिस अजमेर में शुरू कर दिये है तथा कार्य चल रहा है। आपसे सब तरह मार्ग प्रदर्शन चाहते हैं।

६—मुनिवरों को ठहराने, के गोल वैठक के, सभासदों के ठहरने के आदि मकानों की पसन्दगी और सुभीता आपको देखकर निश्चय करना है।

१०—सभासदों से सम्मेलन के समय अजमेर रहने का आग्रह करना है, इसके लिये क्या किया जावे ? इस व्यवस्था पर भी विचार करना है।

११—सम्मेलन की सफलता के लिवे दूरदर्शिता से विचार करना है। उस पर खूब गम्भीर विचार करके उचित व्यवस्था करें।

१२—रिपोर्ट के इस समय में काफी पत्र लिखे गये हैं।

१३—भीलवाडे, पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० की साता पूछने के लिये मंत्री और श्री० सरदारमलजी छाजेड गये थे तथा ब्यावर पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० की सेवा में भी गये थे।

[२] श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल की सिफारिश से श्री चांदमलजी सा० गांधी रतलाम को और पंजाब जैन कान्फ्रेंस की सिफारिश से लाला हरजसरायजी B. A. अमृतसर व लाला अमरनाथजी जैन कसूर वाले को समिति के सभ्य चुने जाते हैं।

[३] मुनि महाराजों को ठहराने के मकानों की पसन्दगी और प्रबन्ध करने को निम्न सज्जनों की सब-कमिटी चुनी जाती है।

१ श्रीमान् सेठ नवरतनमलजी सा अजमेर।
२ ,, ,, सुगनचन्दजी सा० ,,
३ ,, कल्याणमलजी सा० वैद्य ,,
४ ,, अमोलखचन्दजी सा० लोढा वगडी।
५ ,, केशरीमलजी सा० चोरडिया जयपुर।
६ ,, भोरीलालजी सा० मुशल, जयपुर।
७ ,, मगनमलजी सा कोचेटा भेंवाल।

[४] A यह समिति सर्वानुमति से निश्चय करती है कि इस समिति के सभी सभ्यों को चैत्र सुदी १ से वैशाख शु० ५ तक १ मास के लिये अजमेर पधारना अनिवार्य होगा।

B जो सदस्य सपरिवार पधारें, वे सब प्रकार का प्रबन्ध अपनी (खुद की) तरफ से करेंगे। उनको उनके खर्च से मकान आदि का प्रबन्ध करने में अजमेर की स्वागत समिति सहायता देगी। अकेले पधारने वाले सदस्य को रहने व जीमने का प्रबन्ध स्वागत समिति करेगी।

[५] मुनिराजों के दर्शनार्थ पधारने वाले सज्जनों को मकान, पानी, रोशनी का प्रबन्ध वैशाख बिदी १० से (गुज० चैत्र बदी १० से) वैशाख सुदी ३ तक अजमेर स्वागत समिति की तरफ से होगा। भोजन की व्यवस्था दर्शनार्थियों को अपने खर्च से करने की है। उनको शुद्ध व फायदे से भोजन प्रबन्ध हो सके इस लिए उतारे के नजदीक में मोदीखाना, हलवाई व ढाबे की व्यवस्था की जायगी।

[६] यह समिति सर्वानुमति से प्रकट करती है कि निम्नोक्त सम्प्रदायों को सम्मेलन में पधारने की आमन्त्रण(कुम्कुम) पत्रिका भेजी गई है। इन सम्प्रदायों के प्रतिनिधि वैय्यावच्ची मुनियों

के सिवाय कोई भी मुनि सम्मेलन के अवसर पर पधारने का कष्ट न उठावें क्योंकि वे किसी भी तरह सम्मेलन में शरीक न हो सकेंगे।

पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री बाडीलाल डाह्याभाई, पूज्य श्री अमोलख ऋषिजी म० सा० की संप्रदाय को मारफत श्री लाला ज्वालाप्रसादजी, पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री फूलचन्दजी भण्डारी पूज्य श्री सोहनलालजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री लाला रतनचंदजी, पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री वर्द्धमानजी पितल्या पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री सोभागमलजी महता, पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री मोतीलालजी मूथा पूज्य श्री ज्ञानचंदजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत, श्री रतनलालजी शंकरलालजी गुगलिया पूज्य श्री गुलाबचन्दजी म० सा० (लींबड़ी मोटो संघाड़ो), मारफत श्री मानजी डुंगरशी सेठ, पूज्य श्री मोहनलालजी म० सा० (लींबड़ी नानो संघाड़ो) मारफत श्री सवजी धारसी स्वामीभाई श्री गोंडल मोटो संघाड़ो, मारफत श्री दामोदर भाई देवचंद कामदार श्री गोंडल संघाड़ा मारफत श्री गिरजाशंकर भाई संघाणी, श्री बोटाद संघाड़ा मारफत श्री सघवा नारणभाई मूलजीभाई श्री सायला संघाड़ो, मारफत श्री मणिलाल मोहनलाल, श्री खंभात संघाड़ो मारफत श्री मार्चंदराजजी सुखचा श्री बरवाला संघाड़ो, मारफत श्री नेमीचन्द सरूपचन्द श्री कोटा सम्प्रदाय, मारफत श्री जुवीलाल श्री वावेल श्री कच्छ आठकोटी मोटीपक्ष, मारफत श्री शिवकरण गोविन्दजी, श्री कच्छ आठकोटी मोटी पक्ष, मारफत श्री उमरशी कानजी भाराणी श्री मोतीरामजी म० सा० की सम्प्रदाय को, मारफत लाला ज्वालाप्रसादजी पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० सा० की संप्रदाय को मारफत श्री मगनीरामजी मोतीरामजी पूज्य श्री जयमलजी म० सा० की संप्रदाय को मारफत श्री अमोलकचन्दजी लोढ़ा, पूज्य श्री नानकरामजी म० सा० की सम्प्रदाय को, मारफत श्री विरदमलजी लोढ़ा पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय को, मारफत श्री सरदारमलजी छाजेड़ पूज्य श्री रूघनाथजी म० सा० की संप्रदाय को मारफत श्री अमोलकचन्दजी लोढ़ा, पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की संप्रदाय को मारफत श्री मगनमलजी कोचर, पूज्य श्री स्वामीदासजी म० सा० की सम्प्रदाय को मारफत श्री अमोलकचन्दजी लोढ़ा पूज्य श्री चौथमलजी म० सा० की सम्प्रदाय को, मारफत श्री मगनमलजी कोचेटा कुंकुमपत्रिका भेजी गई है।

[७] समिति का काम बढ़ता जा रहा है अतः यह समिति सर्वानुमति से श्रीयुत सरदारमलजी छाजेड़, मत्र शाहपुरा को सहकारी मंत्री नियुक्त करती है।

[८] प्रमुख साहेब व पधारे हुए सज्जनों का उपकार मानकर उनका कष्ट उठाने व काम को सफलतापूर्वक समाप्त करने का धन्यवाद देते हुए श्री महावीर प्रभु के जयनाद के साथ कार्यवाही समाप्त की गई।

नथमल जैन प्रमुख

श्री साधु-सम्मेलन समिति, सातवीं बैठक अजमे[र]

उपरोक्त कमेटी की सातवीं बैठक मम्बइया वाले नोहरे अजमेर में ता० १-४-३२ को हुई उस समय निम्न सदस्य उपस्थित थे—

१ रा० ब० श्री० लाला ज्वालाप्रसादजी महेन्द्रगढ़
२ दी० ब० „ लाला बिसनदासजी, जम्मू.
३ श्री० सोभागमलजी मेहता, जावरा
४ „ अमोलकचन्दजी लोढा, बगडी
५ „ मिश्रीमलजी मूणोत, ब्यावर
६ „ रतनचन्द्रजी जैन, अमृतसर
७ „ हीरालालजी, खाचरोद
८ „ धूलचन्दजी सा० भण्डारी, रतलाम
९ „ रा० ब० चांदमलजी सा० नाहर, बरेली
१० „ त्रिभुवननाथजी, कपूरथला
११ „ मस्तरामजी जैन, अमृतसर
१२ „ ला० मुल्करामजी जैन, गुजरांवाला
१३ „ „ अमरनाथजी, कसूर
१४ „ भँवरीलालजी मूसल, जयपुर
१५ „ उमरावसिंहजी जौहरी, दिल्ली
१६ „ मोतीशाहजी, सियालकोट
१७ „ रूपेशाह नत्थूशाह, सियालकोट
१८ „ छोटेलालजी पोखरना, इन्दौर
१९ „ केसरीमलजी चोरड़िया जयपुर
२० „ वर्द्धमानजी पीतलिया, रतलाम
२१ „ कृष्णचन्द्रजी, पचकूला
२२ श्री० रतनलालजी मेहता, उदयपुर
२३ „ ला० टेकचन्दजी, फँडियाला
२४ „ सुगनचन्दजी नाहर, अजमेर
२५ „ नवरतनमलजी रियांवाले, अजमेर
२६ „ कल्याणमलजी वैद्य, अजमेर.
२७ „ सरदारमलजी सा० छाजेड़, शाहपुरा
२८ „ आनन्दराजजी सुराणा, जोधपुर
२९ „ श्री० चांदमलजी गांधी, रतलाम
३० „ गोकुलचन्दजी नाहर, दिल्ली
३१ „ पन्नालालजी बम्ब, भुसावल
३२ „ सुगनचन्दजी लूणावत, धामणगांव
३३ „ नथमलजी सा० चोरड़िया, नीमच
३४ „ मोतीलालजी मूथा, सतारा
३५ „ भैरोंदानजी सा० सेठिया, बीकानेर
३६ „ नोरातारामजी सा० बनूड़
३७ „ रामलालजी जवाहरलालजी रामावत
३८ „ मोतीलालजी सा० रातड़िया, जोधपुर
३९ „ चुन्नीलाल नागजी वोहरा, राजकोट
४० „ मगनमलजी सा० कोचेटा भँवाल
४१ „ धीरजलाल के० तुरखिया
४२ „ दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी, जयपुर

श्री० वर्द्धमाणजी सा० पीतलिया के प्रस्ताव व श्री० ला० टेकचन्दजी सा० के अनुमोदन से, श्री० रा० ब० चांदमलजी सा० ने सभापति का पद ग्रहण किया। आये हुए पत्र व तार पढे गये। गत बैठक की कार्यवाही सुनाई गई। पश्चात् निम्नलिखित कार्यवाही हुई।

१—कई एक सम्प्रदायों के प्रतिनिधि फार्म भर कर नहीं आये हैं। उनके आगेवान्-श्रावकों से, फार्म शीघ्र ही भरवाकर भेजने की विनती है। ताकि वे आगामी यानी चैत्र शुक्ला ९ की बैठक में पेश किये जा सकें।

२—मुनिराजों के सम्मेलन का स्थल निश्चय करने के वास्ते, निम्नलिखित सात-सदस्यों की एक सब कमेटी नियुक्त की जाती है—

[१] श्री० ला० गोकुलचन्दजी सा० जौहरी
[२] „ वर्द्धमानजी सा० पीतलिया
[३] „ केसरीमलजी सा० चोरड़िया
[४] „ ला० टेकचन्दजी सा०
[५] „ चांदमलजी सा० नाहर
[६] „ लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी
[७] „ सुगनचन्दजी सा० नाहर, मन्त्री

३—मंत्रीजी प्रतिनिधि-मुनिराजों से विनती कर दें, कि वैयावच्ची मुनिराजों को सम्मेलन भवन में प्रवेश न करावें। तथा जलादि का प्रबन्ध भवन से बाहर ही रक्खें।

नोट—इस प्रस्ताव की कापी, सभी मुख्य-मुख्य मुनिराजों की सेवा में भेजी जावे।

४—यह समिति सभी प्रतिनिधि मुनिराजों से नम्रता पूर्वक विनती करती है, कि वे सम्मेलन की कुल कार्यवाही, सम्मेलन पूर्ण होने तक प्रतिनिधियों के बीच ही रखने की कृपा करें। अर्थात्, किसी अन्य मुनि या श्रावक से न कहें।

५—सम्मेलन भवन के बाहर सिर्फ सम्मेलन समिति के सदस्य ही बैठें। एक से तीन दिन तक सभी सदस्यों को सम्मेलन के समय पर हाजिर रहना होगा बाद के वास्ते दूसरी बैठक में विचार किया जावे।

सम्मेलन के अन्दर गोल बैठक रखने को मुनिराजों से प्रार्थना है। अगली लाइन में हर सम्प्रदाय के एक एक मुख्य मुनिराज विराजें और बाकी के अपने अपने मुख्य के पीछे बैठक रखने की कृपा करें।

७—साधु-सम्मेलन समिति की बम्बई बैठक के प्रस्ताव नं० ६ में यह संशोधन किया जाता है, कि यह समिति कान्फ्रेंस का नवमा-अधिवेशन होने तक कायम रहे और साधु-सम्मेलन में जो कार्यवाही हो, उसको कान्फ्रेंस में पेश करके स्वीकार करवाना इसका कर्तव्य होगा।

आजकल सम्मेलन-समिति में जिन सभ्यों के नाम हैं, वही कायम रहें। अलबत्ता किसी का नाम बढ़ाया न जावे तथा नियमानुसार जो जो सदस्य तीन कमेटियों में उपस्थित नहीं हो सके, उनके नाम पृथक होने चाहिए थे। परन्तु इस समय ऐसा करना यह समिति मुनासिब नहीं समझती।

९—सादड़ी-स्वागत-समिति का पत्र पेश किया गया। उसको जवाब दिया जाय, कि बम्बई कमेटी के १२ वें प्रस्ताव का यह आशय नहीं है कि मुनिराज आत्मशुद्धि न करें। किन्तु पारस्परिक द्वेष दूर्भाव के विचार को रोकने के वास्ते ही यह प्रस्ताव बनाया है।

१०—आगामी मीटिंग चैत्र सुदी ६ मंगलवार को रात्रि के ८ बजे से मन्त्रियों के मोहर में बुलाई जाय।

११—सभापतिजी का तथा पधारे हुए सभ्यों का आभार मानकर महावीर प्रभु की जय के साथ सभा की कार्यवाही पूर्ण की गई।

—चांदमल प्रमुख

श्री साधु-सम्मेलन समिति, आठवीं बैठक अजमेर

इस समिति की बैठक, ता० ४—४—३३ की रात को ८ बजे से, मुमइयों के नोहरे में प्रारम्भ हुई। निम्न सदस्य उपस्थित थे:—

१— श्री० रा० ब० दीवान विशनदासजी सा०, जम्बू
२— रा० ब० ज्वालाप्रसादजी सा० जौहरी महेंद्रगढ़.
३— ,, नौरातारामजी सा० जैन, बनूड
४— ,, नत्थूशाहजी सा० जैन, सियालकोट.
५— श्री० टेकचन्दजी सा० जैन, भरिडयाला.
६— ,, मस्तरामजी सा० जैन, एम० ए० अमृतसर.
७— ,, हीरालालजी सा० नांदेचा. खाचरोद
८— ,, रामलालजी सा० रामावत
९— ,, चांदमलजी सा० गांधी, रतलाम
१०— ,, धूलचन्द्जी सा० भण्डारी, रतलाम
११— ,, लच्छीरामजी सा० सांड जोधपुर
१२— ,, कृष्णचन्द्रजी सा०
१३— ,, गिरधरलालजी दफ्तरी
१४— ,, चुन्नीलाल भाई नागजी वोरा
१५— ,, केशरीमलजी सा० चोरडिया, जयपुर
१६— ,, कल्याणमलजी सा० वैद, अजमेर
१७— ,, मगनमलजी सा० कोचेटा, भंवाल
१८— ,, अमोलकचन्द्जी सा० लोढा, वगड़ी
१९— ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा, जोधपुर
२०— ,, सरदारमलजीसा० छाजेड
२१— ,, उमरावसिंहजी सा० जौहरी
२२— ,, सुगनचन्दजी सा० लुणावत, धामणगांव
२३— ,, राजमलजी सा० ललवाणी, जामनेर
२४— ,, सोभागमलजी सा० मेहता, जावरा
२५— ,, चांदमलजी सा० नाहर, बरेली
२६— ,, रतनचन्दजी सा०
२७— ,, त्रिभुवननाथजी सा०
२८— ,, अमरनाथजी सा० कसूर
२९— ,, मुल्कराजजी सा० गुजरांवाला
३०— ,, पन्नालालजी सा० बम्ब,
३१— ,, भँवरीलालजी मूसल
३२— ,, छोटेलालजी सा० पोखरणा
३३— ,, सुगनचन्दजी सा० नाहर,
३४— ,, लालचन्दजी सा० मूथा,
३५— ,, दुर्लभजी भाई त्रि० जौहरी
३६— ,, धीरजलाल के० तुरखिया

श्री सुगनचन्दजी सा० नाहर के प्रस्ताव और श्री० सुगनचन्दजी सा० लुणावत के अनुमोदन से, प्रमुख स्थान रा० ब० दीवान विशनदासजी सा० सी० एस० आइ० सी० आइ० ई० ने ग्रहण किया। इसके बाद 'स्थानीय-सब कमेटी की ओर से यह रिपोर्ट सुनाई गई—

हाजिरी—

१— लाला गोकुलचन्दजी
२— सेठ वर्द्धभानजी
३— रा० सा० ला० टेकचन्दजी
४— बा० आनन्दराजजी
५— रा० ब० चांदमलजी नाहर
६— जौहरी केशरीमलजी चोरडिया
७— बा० सुगनचंदजी नाहर
८— जौहरी दुर्लभजी भाई

इस समिति के सभ्यों ने ता० ३ रविवार को मकान देखे और उन पर गौर किया। सम्मेलन में बैठने वाले संतों की सहूलियत को ध्यान में रखते हुवे समिति की यह राय है कि सम्मेलन मर्दाओं के मोहरे में ही हो।

ता० २—४—३३

—चांदमल प्रमुख

....

....

(१) सम्मेलन के स्थानके वास्ते सबकमेटी ने जो रिपोर्ट पेश की, उसपर विचार किया गया निश्चय हुआ कि साधु-सम्मेलन की बैठक मर्दाओं के मोहरे में, जहां इस समिति की बैठक है उसी स्थान पर की जाय।

(२) कल सम्मेलन की शुरुआत होने वाली है, अतः निम्न प्रकार प्रोग्राम रक्खा जाय।

साधु सम्मेलन समिति के सभ्य सुबह ८॥ बजे स्वागत ओफिस में हाजिर हो और उस स्थान पर मुनिवरों को सम्मेलन में पधारने की प्रार्थना करें। बैठक के स्थान पर मुनिराज बिराजें। समिति के सभ्य तथा स्वागत समिति के प्रमुख के सिवा किसी को स्वयंसेवक आने न दें।

मुनिवर पहले मंगलाचरण करें। बाद में पिछली कमेटी की प्रथम बैठक के प्रस्ताव सुनाये जांय। मंत्रीजी अपना निवेदन प्रकट करें। बाद में ५ प्रांतों के निम्न सभ्य मुनिवरों को प्रार्थना व धन्यवाद के कुछ शब्द कहे—

पंजाब की तरफ से— रा० सा० टेकचंदजी
गुजरात की तरफ से— श्री० चुनीलाल नागजी वोरा
दक्षिण की तरफ से— रा सा० मोतीलालजी मूथा
मालवे की तरफ से— श्री सौभागमलजी मेहता
मारवाड़ की तरफ से— श्री मगनमलजी सा० कोचेटा

पूज्य श्री सोहनलालजी म० के और अन्य आये हुए सन्देश सुनाये जांय। बाद में मुनि श्री अपना काय करें।

(३) गत बैठक के प्रस्ताव १ में फेरफार किया जाता है कि सम्मेलन के अन्दर बैठक गोल रक्खी जाय और मुनिराज चाहे जैसे बैठने का क्रम मुकरर करें।

(४) यह समिति ठहराव करती है कि सम्मेलन में विषय चलने के सम्बंध में जो ठहराव देहली कमेटी में हुआ है तदनुसार क्रमशः विषयों की चर्चा की जाय ऐसी प्रार्थना है।

(५) प्रमुख सा० व पधारे हुए सभ्यों का आभार मानकर महावीर प्रभु की जय के साथ सभा रात को २॥ बजे विसर्जित हुई।

—विजनदास प्रमुख

ता० १ ४ ३३ को मन्त्रीजी की तरफ से साधु सम्मेलन में एक पत्र भेजा गया था जिसके उत्तर में कवि मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज और मुनि श्री चैनमलजी महाराज ने बाहर पधारकर निम्न प्रकार उत्तर दिया:—

सम्मेलन का काम सन्तोषजनक चल रहा है। निराश होने का कुछ कारण नहीं है।"

—दुर्लभजी जौहरी

श्री साधु सम्मेलन समिति की नवमी बैठक

उपरोक्त समिति की बैठक ता० १४-४-३३ को, रा० ब० ला० ज्वालाप्रसाद जी के उतारे पर हुई। उपस्थिति निम्न प्रकार थी

१ दी० ब० दीवान बिशनदासजी C. S. I. C. I. E.
२ ला० गोकुलचन्दजी सा० नाहर
३ रा० ब० चांदमलजी सा० नाहर
४ श्री० सुगनचन्दजी सा० नाहर
५ ,, लच्छीरामजी सा० सांड
६ ,, न्यादरमल गिरीलालजी
७ ,, रा० ब० ला० ज्वालाप्रसादजी जौहरी
८ ,, मिश्रीमलजी मुणोत
९ ,, अमोलखचन्दजी सा० लोढ़ा
१० ,, रामलालजी सा० गमावत
११ ,, रतनलालजी सा० मेहता
१२ ,, प० कृष्णचन्द्रजी
१३ ,, सरदारमलजी सा० छाजेड
१४ ,, धीरजलाल के० तुरखिया
१५ ,, अमृतलाल भाई जोहरी
१६ श्री० कृष्णचन्द्रजी
१७ ,, वरदभाणजी सा० पीतलिया
१८ ,, हीरालालजी सा० नान्देचा
१९ ,, सुगनचन्दजी सा० लूणावत
२० ,, पन्नालालजी सा० बम्ब
२१ ,, केसरीमलजी सा० चोरड़िया
२२ ,, अमरनाथजी सा० कसूर
२३ ,, रतनचन्द्रजी सा० अमृतसर
२४ ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा
२५ ,, रा० सा० मोतीलालजी सा० मूथा
२६ ,, धूलचन्दजी सा० भण्डारी
२७ ,, चांदमलजी सा० गांधी
२८ मुल्कराजजी सा०
२९ ,, दुर्लभजी भाई जौहरी

ला० गोकुलचन्दजी सा० नाहर के प्रस्ताव और रा० ब० चाँदमलजी सा० नाहर के अनुमोदन करने पर प्रमुख स्थान, दीवान बहादुर बिशनदासजी सा० C. S. I. C. I. E. ने ग्रहण किया। निम्न प्रकार कार्यवाही हुई—

(१) यह समिति साधु-सम्मेलन में विराजते हुए सभी मुनिवरों से, विनम्र भाव से साग्रह प्रार्थना करती है कि सम्मेलन की कार्यवाही, प्रतिनिधियों से बाहर न जाने दें। हमें आश्चर्य होता है, कि पहले भी समिति ने ऐसी ही अर्ज की थी। किन्तु अखबार तक ये बातें पहुँच गई हैं। अतः पुनः प्रार्थना है, कि कोई बात बाहर न जाने दें।

नोट—इस प्रस्ताव की नकल और 'जैनपथ' का अंक, समिति के मन्त्री, श्री साधु-सम्मेलन के संयोजक मुनिवरों को पहुंचा दें।

इतनी कार्यवाही के बाद, श्री महावीर प्रभु की जय के साथ सभा विसर्जित हुई।

—बिशनदास प्रमुख

उपरोक्त प्रस्तावानुसार, मंत्री श्री दुर्लभजी भाई और श्री० सरदारमलजी सा० छाजेड़ ने संचालक-मुनिवरों की सेवा में उपरोक्त प्रस्ताव सुनाया। इस पर से पण्डितरत्न श्री शतावधानीजी म० सा० ने फरमाया, कि इस विषय पर आज सम्मेलन में प्रस्ताव कर दियागया है और यह भी फरमाया कि—"जिस प्रतिनिधि मुनि की तरफ से कोई बात बाहर पड़ेगी, उन्हें सम्मेलन के कार्य से पृथक किया जावेगा ऐसा तय किया है।"

सम्मेलन की कार्यवाही का सन्तोषजनक समाचार पूछने पर फरमाया, कि क्रमशः विषय का निराकरण होगया है। कई बातों में, श्रावकों की सलाह लेनी है। अब समाचारी का विषय चल रहा है।

—दुर्लभजी जौहरी —सरदारमल छाजेड़

श्रीसाधु संमेलन समिति की दशवीं बैठक अजमेर

उपरोक्त समिति की बैठक, ता० १५-४-३३ को तीन बजे मिशन हॉस्पिटल (पुराना) सा० ज्वालाप्रसादजी सा० जौहरी के उतारे पर हुई। उपस्थिति यों थी—

१ रा० सा० मोतीलालजी मूथा
२ रा० ब० चांदमलजी सा० माहर
३ श्री० रा० ब० ज्वालाप्रसादजी सा० जौहरी
४ ,, गोकुलचन्दजी सा० माहर
५ पन्नालालजी सा० बम्ब
६ ,, लच्छीरामजी सा० सांड
७ ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा
८ ,, केसरीमलजी सा० चोरड़िया
९ श्री० गिरधरलालभाई
१० सुगनचन्दजी सा लूणावत
११ ,, नथमलजी सा० चोरड़िया
१२ दी० ब० श्री० विशनदासजी O S I C I E
१३ श्री० फूलचन्दजी सा० भण्डारी
१४ , वर्धमानजी सा० पीतलिया
१५ , अमृतलाल भाई जौहरी
१६ , उमरावसिंहजी सा०
१७ दुर्लभजी भाई जौहरी
१८ ,, राजमलजी सा ललवाणी
१९ ,, सोभागमलजी सा० रतलाम
२० सरदारमलजी छाजेड़
२१ प्यारेमलजी सा०
२२ रामलालजी सा० रामावत
२३ , सेठ नथरतनमलजी सा० रियांवाले

श्री गिरधरलाल भाई के प्रस्ताव और श्री० वर्धमानजी सा० के अनुमोदन करने पर प्रमुख स्थान रा० सा मोतीलालजी मूथा ने ग्रहण किया। निम्नलिखित कार्यवाही हुई—

(१) श्री मिश्रीलालजी के बारे में आये हुए तार व चिट्ठी साधु सम्मेलन सरक्षक समिति में मंत्रीजी के पास भेजे जावें ताकि वे संरक्षक समिति में पेश करके उचित कार्यवाही करें।

(२) पधारे हुए सभ्यों का आभार मानकर श्री शान्तिनाथजी के जयनाद के साथ सभा विसर्जित की गई।

मोतीलाल
प्रमुख

श्रीसाधु संमेलन समिति ग्यारहवीं बैठक अजमेर

उपरोक्त समिति की बैठक ता० १६—४—३३ को स्वागत कारिणि समिति के ओफिस, अजमेर में दोपहर को दो बजे प्रारम्भ हुई। निम्न सदस्य उपस्थित थे—

१ श्री० रायसाहिब मोतीलालजी मूथा
२ श्री० रा० ब० चांदमलजी सा० नाहर
३ ,, ला० गोकुलचन्दजी सा० नाहर
४ ,, रा० ब० ला० ज्वालाप्रसादजी सा०
५ ,, राजमलजी सा० ललवाणी
६ ,, ला० रतनलालजी सा०
७ ,, चदनमलजी सा० कोचर
८ ,, रामलालजी सा० रामावत
९ ,, रतनलालजी सा मेहता
१० ,, चुन्नीलाल भाई
११ ,, मोतीलालजी सा० गतड़िया
१२ ,, मुल्कराजजी सा०
१३ ,, अमरनाथजी सा०
१४ ,, खजाचीलालजी सा०
१५ ,, न्यादरमलजी गिरीलालजी
१६ ,, अमृतलाल भाई जौहरी
१७ ,, प० कृष्णचन्द्रजी
१८ ,, सरदारमलजी सा० छाजेड
१९ ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा
२० ,, उमरावसिंहजी सा० जौहरी
२१ ,, दुर्लभजी भाई जौहरी
२२ ,, धूलचन्दजी सा० भण्डारी
२३ ,, सुगनचन्दजी सा० लुणावत
२४ ,, धीरजलाल के० तुरखिया
२५ ,, चांदमलजी सा० गांधी
२६ ,, नवरतनमलजी सा० रिया वाले
२७ ,, लच्छीरामजी सा० साड
२८ ,, बरधमाणजी सा० पितलिया
२९ ,, हीरालालजी सा० नांदेचा
३० ,, नत्थूशाहजी सा०
३१ ,, मोतीशाहजी सा०
३२ ,, दी० ब० विशनदासजी सा०

श्री० रतनचन्दजी सा० जैन के प्रस्ताव और श्री राजमलजी सा० ललवाणी के अनुमोदन के बाद सर्वानुमति से प्रमुख स्थान रा० सा० मोतीलालजी मूथा ने ग्रहण किया। निम्नानुसार कार्यवाही हुई —

(१) निकले हुवे पर्चे व आये हुए पत्र सुनाये। संरक्षक समिति ने स्थिति बताने वाला पर्चा जिसे छपाने का विचार किया है उसे भी पढ सुनाया।

(२) सार्वजनिक वाचनालय का पत्र समिति को सुनाया गया। उसको नोट किया और सहायता के वास्ते अन्य जैन संस्थाओं के साथ में इसको भी देने वास्ते शामिल किया गया है।

(३) दर्शनों के वास्ते भाइयों व बहिनों के सुभीते के लिये निम्न सदस्य मुनिवरों की सेवा में अर्ज करके समय नियुक्त करावें।

१ दीवान बहादुर विशनदासजी सा० C S I C I E
२ श्री उमरावसिंहजी सा०
३ श्री ला० गोकुलचन्दजी सा० नाहर

उपरोक्त प्रस्तावानुसार, मंत्री श्री दुर्लभजी भाई और श्री० सरदारमलजी सा छाजेड़ ने संचालक-मुनिवरों की सेवा में उपरोक्त प्रस्ताव सुनाया। इस पर से पण्डितरत्न श्री शतावधानीजी म० सा० ने फरमाया, कि इस विषय पर मात्र सम्मेलन में प्रस्ताव कर दियागया है और यह भी फरमाया कि—"जिन प्रतिनिधि मुनि की तरफ से कोई बात बाहर पड़ेगी, उन्हें सम्मेलन के कार्य से पृथक किया जावेगा ऐसा तय किया है।"

सम्मेलन की कार्यवाही का सम्बोधनात्मक समाचार पूछने पर फरमाया, कि क्रमशः विषय का निराकरण होगया है। कई बातों में, श्रावकों की सलाह लेनी है। अब समाचारी का विषय चल रहा है।

—दुर्लभजी जौहरी —सरदारमल छाजेड़

श्रीसाधु संमेलन समिति की दशवीं बैठक अजमेर

उपरोक्त समिति की बैठक ता० १४-४-३३ को तीन बजे मिशन हॉस्पिटल (पुराना) रा० ब० ज्वालाप्रसादजी सा० जौहरी के उतारे पर हुई। उपस्थिति यों थी—

१ रा० सा० मोतीलालजी मूथा
२ रा० ब० चांदमलजी सा० नाहर
३ श्री० रा० ब० ज्वालाप्रसादजी सा० जौहरी
४ ,, गोकुलचन्दजी सा० नाहर
५ ,, पन्नालालजी सा० कमद
६ ,, लक्ष्मीचन्दजी सा० सोढ
७ ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा
८ ,, केसरीमलजी सा० चोरड़िया
९ श्री० गिरधरलालभाई
१० सुगनचन्दजी सा लूणावत
११ , नथमलजी सा० चोरड़िया
१२ दी० ब० श्री० विशनदासजी C S I C I E
१३ श्री० फूलचन्दजी सा० भण्डारी
१४ वर्धमानजी सा० पीतलिया
१५ अमृतलाल भाई जौहरी
१ ,, उमरावसिंहजी सा०
१७ दुर्लभजी भाई जौहरी
१८ ,, राजमलजी सा ललवाणी
१९ ,, सोभागमलजी सा० रतलाम
२० सरदारमलजी छाजेड़
२१ प्यारेमलजी सा०
२२ रामलालजी सा० रामावत
२३ , सेठ नथरतनमलजी सा० रियांवाले

श्री गिरधरलाल भाई के प्रस्ताव और श्री० वर्धमानजी सा० के अनुमोदन करने पर प्रमुख स्थान रा० सा० मोतीलालजी मूथा ने ग्रहण किया। निम्नलिखित कार्यवाही हुई—

(१) श्री मिश्रीलालजी के बारे में आये हुए तार व चिट्ठी साधु सम्मेलन सरक्षक समिति में मंत्रीजी के पास भेज जावें ताकि वे संरक्षक समिति में पेश करके उचित कार्यवाही करें।

(२) पधारे हुए सभ्यों का आभार मानकर श्री शान्तिनाथजी के जयनाद के साथ सभा विसर्जित की गई।

मोतीलाल
प्रमुख

श्री साधु संमेलन समिति ग्यारहवीं बैठक अजमेर

उपरोक्त समिति की बैठक ता० १६—४—३३ को स्वागत कारिणि समिति के ओफिस, अजमेर में दोपहर को दो बजे प्रारम्भ हुई। निम्न सदस्य उपस्थित थे—

१ श्री० रायसाहिब मोतीलालजी मूथा	२ श्री० रा० ब० चांदमलजी सा० नाहर
३ ,, ला० गोकुलचन्दजी सा० नाहर	४ ,, रा० ब० ला० ज्वालाप्रसादजी सा०
५ ,, राजमलजी सा० ललवाणी	६ ,, ला० रतनलालजी सा०
७ ,, चंदनमलजी सा० कोचर	८ ,, रामलालजी सा० रामावत
९ ,, रतनलालजी सा मेहता	१० ,, चुन्नीलाल भाई
११ ,, मोतीलालजी सा० गतडिया	१२ ,, मुल्कराजजी सा०
१३ ,, अमरनाथजी सा०	१४ ,, खजाचीलालजी सा०
१५ ,, न्यादरमलजी गिरीलालजी	१६ ,, अमृतलाल भाई जौहरी
१७ ,, प० कृष्णचन्द्रजी	१८ ,, सरदारमलजी सा० छाजेड
१९ ,, आनन्दराजजी सा० सुराणा	२० ,, उमरावसिंहजी सा० जौहरी
२१ ,, दुर्लभजी भाई जोहरी	२२ ,, धूलचन्दजी सा० भण्डारी
२३ ,, सुगनचन्दजी सा० लुणावत	२४ ,, धीरजलाल के० तुरखिया
२५ ,, चांदमलजी सा० गांधी	२६ ,, नवरतनमलजी सा० रियां वाले
२७ ,, लच्छीरामजी सा० सांड	२८ ,, बरधभाणजी सा० पितलिया
२९ ,, हीरालालजी सा० नांदेचा	३० ,, नत्थूशाहजी सा०
३१ ,, मोतीशाहजी सा०	३२ ,, दी० ब० विशनदासजी सा०

श्री० रतनचन्दजी सा० जैन के प्रस्ताव और श्री राजमलजी सा० ललवाणी के अनुमोदन के बाद सर्वानुमति से प्रमुख स्थान रा० सा० मोतीलालजी मूथा ने ग्रहण किया। निम्नानुसार कार्यवाही हुई —

(१) निकले हुवे पर्चे व आये हुए पत्र सुनाये। सरक्षक समिति ने स्थिति बताने वाला पर्चा जिसे छपाने का विचार किया है उसे भी पढ सुनाया।

(२) सार्वजनिक वाचनालय का पत्र समिति को सुनाया गया। उसको नोट किया और सहायता के वास्ते अन्य जैन संस्थाओं के साथ में इसको भी देने वास्ते शामिल किया गया है।

(३) दर्शनों के वास्ते भाइयों व बहिनों के सुभीते के लिये निम्न सदस्य मुनिवरों की सेवा में अर्ज करके समय नियुक्त करावें।

१ दीवान बहादुर विशनदासजी सा० C. S I C I E
२ श्री उमरावसिंहजी सा०
३ श्री ला० गोकुलचन्दजी सा० नाहर

४ श्री सा० रतनलालजी सा०
५ श्री० सेठ वर्धमानजी सा० पीतलिया
६ श्री० सुखीलाल भाई वोरा
७ श्री० आनन्दराजजी सा० सुराणा

(४) दर्शनार्थियों की संख्या दिनदिन बढ़ रही है। इस कारण हरएक प्रकार से सुव्यवस्था और स्त्री तथा बच्चों की रक्षा करना जरूरी होने से निम्न सज्जनों की एक उप समिति बनाई जाती है जो पुलिस कमिश्नर से आर्य समाज से, और सेवा समाज से मिल कर सहयोग प्राप्त करें।

१ दी० ब० श्री० विशनदासजी सा०   २ रा० सा० श्री० मोतीलालजी सा० मूथा
३ श्री० नवरतनमलजी सा०

—मोतीलाल मूथा
प्रमुख

साधु-सम्मेलन समिति की बारहवीं बैठक अजमेर

उपरोक्त समिति की बैठक ता० १७-४-३३ को दो-पहर को दो बजे से स्वागत कारिणी समिति के कार्यालय के ऊपर हुई थी। निम्न सदस्य उपस्थित थे।

१ श्री० वर्धमानजी सा० पीतलिया
२ श्री० राजमलजी सा० ललवाणी
३ रतनचन्दजी सा० जैन
४ ,, खजांचीमलजी सा० जैन
५ अमरनाथजी सा० जैन
६ , मुकन्दरामजी सा० जैन
७ प्यारेमलजी गिरिधारलजी
८ चन्दनमलजी सा० कोचर
९ ,, मोतीलालजी सा० रातड़िया
१० रा० सा० मोतीलालजी सा० मूथा
११ , अमृतलालजी भाई जौहरी
१२ , धूलचन्दजी सा० भण्डारी
१३ दुर्लभजी भाई त्रि० जौहरी
१४ मस्तूरचन्दजी सा० जैन
१५ लालचन्दजी सा० मूथा
१६ , हीरालालजी सा० नान्देचा
१७ ,, सुखीलाल भाई वोरा
१८ मोतीशाहजी जैन
१९ रा० ब० ज्वालाप्रसादजी
२० ,, लच्छीरामजी सा० सोढ़
२१ केशरीमलजी सा० चोरड़िया
२२ रतनलालजी सा० मेहता
२३ सुगनचन्दजी सा० नाहर
२४ , चांदमलजी सा० नाहर
२५ पं० हर्षचन्द्रजी
२६ दी० ब० विशनदासजी
२७ रामलालजी सा० रामायत
२८ , गिरधरलाल भाई दफ्तरी
२९ सरदारमलजी सा० छाजेड़
३० अमोलकचन्दजी सा० लोढ़ा
३१ उमरावसिंहजी सा० जौहरी
३२ , नवरतनमलजी सा० रियां वाले
३३ ,, धीरजलाल के० तुरखिया

श्री खजांचीलालजी सा० के प्रस्ताव और श्री सुगनचन्दजी सा० नाहर के अनुमोदन से श्री वर्द्धभाणजी सा० पीतलिया ने प्रमुख स्थान ग्रहण किया। निम्न प्रकार कार्यवाही हुई।

(१) दर्शन करने के सुभीते के लिये नियत की हुई सब कमेटी ने अपनी रिपोर्ट व किया हुआ प्रबन्ध जबानी सुनाया और कल से इसका ठीक अमल होने का विश्वास बताया।

(२) रक्षा प्रबंध करने वाली उप समिति की अनावश्यकता उसी समिति के सभ्यों ने बतलाई। उस पर से यह तय किया गया कि पुलिस कमिश्नर को प्रबन्ध करने और आर्यसमाज के मुखियाओं से स्वयंसेवकों की सहायता मांगने के लिये पत्र लिखने की सत्ता मंत्रीजी को दीजाती है

(३) इस समिति को मालूम हुआ है कि कोई कोई फोटो ग्राफर और अन्य लोग मुनियों की अनजान में कैमेरों द्वारा फोटो खींच लेते हैं यह स्था० जैन समाज की मान्यता के खिलाफ है मुनिराज और श्रावक लोग इस प्रवृत्ति से नाराज हैं। अतः यह समिति जो लोग इस तरह फोटो खींचने की प्रवृत्ति कर रहे हैं उनकी तरफ नाराजगी बतलाते हुवे आयन्दा ऐसा न करने की सूचना करती है और साधु मुनिराज के फोटो न खरीदने का आग्रह करती है।

नोटः— इस प्रस्ताव को छपवा कर बांट दिया जाय और पेपरों में जाहिर करवा दिया जाय।

(४) पूज्य श्री हुक्मीचंदजी म० की संप्रदाय के दोनों पूज्यों का पंच मुनिवरों द्वारा दिया हुआ फैसला मंत्रीजी ने निम्न प्रकार सुनाया—

वैशाख कृष्णाष्टमी १९८० ता० १७-४-२३ सोमवार

भविष्य का फैसला

आज रोज दोनों पक्ष के भविष्य का फेसला पंच निम्न प्रकार से देते हैं—

(१) मुनि श्री गणेशीलालजी म० को युवाचार्य पद पर नियत करें।

(२) मु० श्री खूबचन्दजी म० को उपाध्याय पद पर नियत करें।

(३) अबसे जो नये शिष्य हों, वे युवाचार्य की नेश्राय में रहें।

(४) भविष्य के धाराधोरण दोनों पूज्य मिल कर बांधें।

(५) पू० श्री हुक्मीचन्दजी म० की संप्रदाय के चौमासे ठहराने की और दोष शुद्धि करने की सत्ता दोनों पूज्यों की हयाती तक दोनों पूज्यों को रहेगी और एक आचार्य रहने पर एक आचार्य की होगी।

(६) फैसला मिलने के साथ ही परस्पर बारह सम्भोग खुले करें।

द० अमोलकऋषि — द० मुनि रत्नचंद — द० मुनि मणिलाल

द० मुनि नानचन्द्र — द० काशीराम

उक्त फैसले पर दोनों पूज्यों की स्वीकृति पूछने को मन्त्रीजी भेजे गये। तब निम्न प्रकार से दोनों पूज्यों की तरफ से उत्तर मिले——

पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० ने फरमाया कि— 'फैसला मंजूर है। अमल दरामद धाराधोरण बना कर किया जायगा।'

पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० ने फरमाया कि— "फैसला मंजूर है"

उपरोक्त संतोष प्रद उत्तर सुनते ही समिति ने महावीर प्रभु की जयध्वनि की।

(५) यह समिति पूज्य श्री हुक्मीचंदजी म० सा० की सम्प्रदायों को एक कराने का जो

शान्ति वर्द्धक कार्य पांच समर्थ मुनिवरों ने सतत परिश्रम से किया है इस के लिये पांचों मुनिवरों का आभार मानती है और उन्हें हार्दिक धन्यवाद देती है।

(६) यह समिति दोनों पूज्य मुनिवरों ने पंच मुनिराजों के फैसले को स्वीकृत करमा कर समाज में जो अपूर्व आनन्द फैला दिया है उसके लिए दोनों प्रतापी पूज्यों का हार्दिक अभिनन्दन पूर्वक आभार मानती है।

(७) श्री साधु सम्मेलन समिति के प्राण स्वरूप जिन शासन सेवा के लिये तन मन, धन से अविश्रांत अहोनिशि प्रयत्न करने और सफलता प्राप्त करने पर मंत्री श्री दुर्लभजीभाई त्रि० झौहरी को अनेकशः धन्यवाद देती है और आभार प्रदर्शन के तौर पर एक 'नवरत्न' पदक देना ठहराती है।

नोट—इस नवरत्न पदक के वास्ते समिति के जो २ सभ्य अपनी तरफ से कुछ रकम देना चाहें वे श्री अमृतलाल भाई झौहरी के पास भेज दें।

(८) प्रमुख सा० व पधारे हुवे सदस्यों का आभार मान कर, प्रस्ताव नं० ५ ६ को लेकर समिति के सभ्य पंच मुनिवरों की और दोनों पूज्यों की सेवा में गये। मुनिवरों को प्र० नं० ५-६ वाली आभारप्रदर्शक प्रस्ताव सुना कर अपना हर्ष तथा संतोष प्रकट किया और श्री शांतिनाथ प्रभु की जयध्वनि के साथ सभा विसर्जन हुई।

द० वरदभाण प्रमुख

श्री साधु-सम्मेलन समिति,तेरहवीं बैठक अजमेर

उक्त समिति की बैठक ता० १६-४ ३३ को दोपहर के दो बजे से प्रारंभ हुई। निम्न सदस्य उपस्थित थे—

१ श्री सा० टेकचन्दजी सा० जैन
२ „ रतनचन्दजी सा० जैन
३ „ कजोडीलालजी सा० जैन
४ „ अमरनाथजी सा० कसूर
५ „ मुकन्दरामजी सा०
६ „ „ सुजानसिंहजी सा०
७ „ „ गिरीलालजी सा०
८ „ मोतीलालजी सा० रांतड़िया
९ सा० मोहनलालजी सा०
१० रूपचन्दजी सा० रामावत
११ „ अमलालजी सा० कीमती
१२ „ अमृतलाल भाई झौहरी
१३ चांदमलजी सा० नाहर
१४ „ रतनलालजी सा० मेहता
१५ „ नथूलालजी सा० जैन
१६ श्री० टी० ब० ला० विशनदासजी सा० जैन
१७ „ लच्छीरामजी सा० सांड
१८ „ हीरालालजी सा० नांदेचा
१९ „ चन्दनमलजी सा० कोचर
२० „ नवरतनमलजी सा० रियां वाले
२१ „ मदनलालजी सा० मूसल
२२ „ अमरनाथजी सा० जैन
२३ „ मोतीलालजी
२४ „ गोकुलचन्दजी सा० नाहर
२५ अमोलकचन्दजी सा० लोढ़ा
२६ „ सुगनचन्दजी सा० नाहर
२७ „ अचलसिंहजी सा०
२८ „ नेमीचंदजी सा० सूरज
२९ चुन्नीलालभाई याग
३० „ पं० कृष्णचन्द्रजी

सभापति का आसन श्री बरधभाणजी सा० पीतलिया ने ग्रहण किया। निम्न कार्यवाही हुई।

(१) श्री दुर्लभजी भाई को जो 'नवरत्न पदक' दिया जाने वाला है उसकी कीमत रुपये ५००) तक होनी चाहिये।

(२) सम्मेलन का कार्य अब पूर्ण हो गया है। इसलिये व्याख्यान की शुरुआत होना जरूरी है। अतः निम्न सज्जनों की सब कमेटी मुनिवरों की सेवा में जाकर तय कर लें और प्रोग्राम जाहिर करें।

श्री० ला० गोकुलचन्दजी सा०
,, अमृतलालभाई जौहरी
,, दी० ब० विशनदासजी सा०
श्री बरधभाणजी सा० पीतलिया
श्री० ला० अचलसिंहजी सा०
,, ,, टेकचन्दजी सा०
श्री० सुगनचन्दजी सा० या नवरतनमलजी सा०

प्रमुख सा० का उपकार मान कर सभा विसर्जन हुई।

द० बरधभाण प्रमुख

श्री साधु सम्मेलन समिति चौदहवीं बैठक अजमेर

उक्त समिति की बैठक, ता० २१ ४ ३३ को ७ बजे शाम से, स्वागत समिति के आफिस में हुई। निम्न उपस्थिति थी—

१ श्री० सेठ कन्हैयालालजी भण्डारी, इन्दौर
२ ,, ला० टेकचन्दजी, जंडियाला
३ ,, रतनचन्दजी अमृतसर
४ ,, वेलजी भाई लखमसी नपु. बंबई
५ ,, पन्नालालजी, भुसावल
६ ,, मस्तरामजी M A
७ ,, रामलालजी कीमती
८ ,, धूलचन्दजी सा० भण्डारी
९ ,, अमृतलालभाई जौहरी
१० ,, त्रिभुवननाथजी, कपूरथला
११ ,, मुल्कराजजी B A
१२ ,, रूपचन्दजी रामावत
१३ ,, मोतीलालजी स्यालकोट
१४ ,, न्यादरमलजी गिरीलालजी
१५ ,, नवरतारामजी वनूड
१६ ,, रा० ब० चांदमलजी नाहर
१७ ,, लच्छीरामजी सांड
१८ ,, धीरजभाई के० तुरखिया
१९ श्री० आणंदराजजी सुराणा
२० दी० ब० विशनदासजी C. S. I. C. I. E.
२१ श्री० रतनलालजी मेहता
२२ ,, सेठ नवरतनमलजी, अजमेर
२३ ,, कुन्दनमलजी फिरोदिया
२४ ,, रा० सा० मोतीलालजी मूथा
२५ ,, मिश्रीमलजी मुणोत
२६ ,, लालचन्दजी मूथा गुलेदगढ़
२७ ,, सरदारमलजी छाजेड़
२८ ,, बर्द्धमानजी पीतलिया
२९ ,, हीरालालजी खाचरौद
३० ,, गोकलचंदजी नाहर
३१ ,, केसरीमलजी चोरड़िया
३२ ,, सेठ अचलसिंहजी मेहता
३३ ,, ला० उमरावसिंहजी दिल्ली
३४ ,, चुन्नीलाल नागजी वोहरा
३५ ,, सेठ लक्ष्मणदासजी जलगांव

प्रमुख-स्थान, सर्वानुमति से श्री० वेलजी भाई लखमसी नप्पु ने ग्रहण किया। निम्न प्रस्ताव पास हुए—

[१] मुनिराजों के व्याख्यान, परसों ता० २३ को मण्डप में, सब के एक स्थान पर होवें तथा रोजाना १ स्थानों पर अलग अलग हों, ऐसी समिति की प्रार्थना मुनिराजों की सेवा में की जावे। इसके वास्ते समिति, श्री चांदमलजी माहर तथा श्री सरदारमलजी छाजेड़ को नियुक्त करती है, कि वे मुनिराजों से अर्ज करके निश्चय कर लें।

[२] इस समिति की बैठक, कल ता० २१ को सात-बजे शाम से पण्डाल में होगी।

[३] माणकजीवन-कालीदास के दस्तखती जो हैण्डबिल निकाला हुआ, उसको देखते हुए समिति यह निर्णय करती है कि वर्द्धमानजी व वेलजीभाई को हैण्डबिल दिखलाकर, प्रतिवादस्वरूप उत्तर प्रकट करा दिया जावे कि समिति की कार्यवाही सम्बन्धी कोई भी जाहिरात बिना मन्त्रीजी की सही के गलत समझी जावेगी।

[४] पधारे हुए सभ्यों का आभार मानते हुए श्री शान्तिनाथजी के जयनाद के साथ सभा विसर्जित हुई।

वेलजी लखमसी नप्पु
प्रमुख

सम्मेलन की सफलता के लिए

डेपूटेशनों की रिपोर्ट

ता० १४ अक्तूबर सन् १९३२ ई० को, अजमेर में साधु सम्मेलन समिति की बैठक हुई थी, उसमें यह प्रस्ताव पास हुआ था।

(७) देहली बैठक के प्रस्ताव नं० ६ के अनुसार, आवश्यक स्थानों पर जाने के लिये उत्साही सज्जनों के अलग-अलग स्थानों पर डेपुटेशन भेजना तय किया जाता है। मंत्रीजी प्रवास का प्रोग्राम बनावेंगे।

इस प्रस्ताव के अनुसार समाज के प्रतिष्ठित प्रतिष्ठित सभ्यों का अखिल भारतीय एक डेपुटेशन विभिन्न प्रान्तों में आचार्यों में तथा अनेक मुनिराजों की सेवा में गया जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट जैन प्रकाश में निम्नानुसार प्रकाशित हुई थी—

शरत्पूर्णिमा की सुहावनी-रात्रि में साधु-सम्मेलन-समिति की अजमेर बैठक ने जो निश्चय किया था तदनुसार भारतवर्ष भर के मुनिराजों से आवश्यकतानुसार मिलकर शंका समाधान और प्रचारकार्य करने को भिन्न भिन्न सज्जनों को भिन्न-भिन्न स्थानों का प्रवास करने के लिये प्रार्थना की गई थी तदनुसार—

ता० १५ शनिवार, राजाबहादुर ला० ज्वालाप्रसादजी रा० सा० लाला टेकचन्दजी और

और अन्यान्य सज्जन अजमेर से ब्यावर गये। वहां विराजमान कोटा सम्प्रदाय के, किन्तु पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० के आज्ञावर्ती मुनि श्री हरखचन्द्रजी म० ठा० ५, पूज्य श्री जयमलजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्तक मुनि श्री हजारीमलजी म० ठा० ७, पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म० की सम्प्रदाय के मुनि लक्ष्मीऋषिजी और उनके आज्ञावर्ती मुनि श्री कल्याणचन्द्रजी, चुन्नीलालजी, म. ठा. ३ से भिन्न-भिन्न स्थानों पर मिले।

साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में, सबका सद्भाव है। जैनगुरुकुल का अवलोकन करके, सभी सज्जन मोटर द्वारा वापस अजमेर लौट आये। दूसरे दिन, अखिलभारतीय ओसवाल सम्मेलन में उपस्थित रहकर, रात्रि को कुल ११ सभ्य (७+४) आबुरोड को रवाना होगये।

ता० १७ सोमवार को श्री भौंरीलालजी मूसल जौहरी और श्री० धी० के० तुरखिया सहायक मन्त्री, मोटर द्वारा किशनगढ़ गये, और पूज्य श्री नानकरामजी म० की सम्प्रदाय के प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालालजी महाराज ठा० २ से मिले। उनका उत्साह अनुकरणीय है।

ता० १७ सोमवार को रात्रि की गाडी से श्री० नथमलजी सा० चोरडिया और श्री० धी० के० तुरखिया अजमेर से रवाना होकर वींवडी गये वहा कविवर्य पं० मुनि श्री नानचन्द्रजी से मिल कर बांकानेर की ओर रवाना हो गये।

ता० १६ की रात्रि को निकले हुए सज्जन ता० १७ को सवेरे आबूरोड उतरे और कच्छ मोटे पक्ष के योगनिष्ठ पं० मुनि श्री त्रिलोकचन्द्रजी म० ठा० २ से मिले। इस समयज्ञ मुनीश्वर की तो बात ही क्या कहनी है? योग को साधना के साथ-साथ शासन सेवा के आन्दोलन का भी प्रचार करते रहते हैं।

आबू से ता० १७ की रात्रि को पेसेंजर ट्रेन द्वारा बांकानेर के लिये रवाना हुए। बीच में वीरमगांव पडा वहां विराजमान दरियापुरी सम्प्रदाय के मुनि श्री पुरुषोत्तमजी म० ठा० ३ के दर्शन करके, उनसे वार्तालाप की और ता० १८ मगलवार को दोपहर के समय बांकानेर पहुंचे।

बांकानेर के श्रीसङ्घ ने तो राजसी ठाठ से डेप्यूटेशन का स्वागत किया। बैंड बाजा बजाते हुये बडी धूमधाम से डेप्यूटेशन के सभ्यों को श्री शतावधानीजी की सेवा में ले गये। बांकानेर पहुँचने पर डेपुटेशन के सभ्य निम्न सज्जन थे।

(१) श्री० लाला गोकुलचन्दजी नाहर जौहरी दिल्ली, प्रमुख स्था० जैन-कान्फ्रेंस।
(२) राजाबहादुर एस० ज्वालाप्रसादजी (हैदराबाद वाले) महेन्द्रगढ़।
(३) श्री० रा० सा० लाला टेकचन्दजी जँडियाला, प्रमुख जैन सभा पञ्जाब।
(४) श्री० लाला रतनचन्दजी अमृतसर, उप प्रमुख जैन सभा पञ्जाब।
(५) ,, ,, त्रिभुवननाथजी कपूरथला, मन्त्री, ,, ,, ,,
(६) ,, सेठ किशनदासजी मूथा अहमदनगर।
(७) ,, ,, नथमलजी चोरडिया, नीमच छावनी
(८) ,, ,, पन्नालालजी बम्ब, भूसावल.
(९) ,, ,, चुन्नीलाल भाई नागजी वोरा, राजकोट

(१०) „ , दुर्लभजी त्रि० जौहरी मन्त्री साधु सं० समिति।
(११) „ „ धीरजलाल के० तुरखिया सहमन्त्री, साधु सं० समिति।
(१२) „ ला० कस्तूरचन्दजी लोढ़ा दिल्ली

इनके अतिरिक्त, और चार मनुष्य थे। रात्रि में पं० रत्न शतावधानीजी श्री रत्नचन्द्रजी म० के साथ ज्ञानचर्चा की और मार्गदर्शन प्राप्त किया। सवेरे व्याख्यान का लाभ उठा शेष वार्तालाप और मरनावली के उत्तर लेकर दोपहर को जामनगर के लिये रवाना हो गये। मार्ग में, राजकोट के डेपुटेशन का स्वागत किया।

ता० १८ की शाम को जामनगर पहुँचे। संघ के आगेवान लोग स्टेशन पर पधारे थे। वहां पहुँच कर आत्मार्थी मुनि श्री कानजी स्वामी ठा० ३ (बोटाद सम्प्रदाय) और मुनि श्री धीमाजी स्वामी ठा० १ (गोंडल सम्प्रदाय) के दर्शन किये। रात्रि में ज्ञानचर्चा हुई। ता० २० गुरुवार को सवेरे व्याख्यान सुने और इसके बाद साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में चर्चा करके शाम को स्टीमर द्वारा कच्छ में जाना था। किन्तु वर्षा और सर्दी के कारण वहां का प्रोग्राम स्थगित रहा और श्री मोरवी नरेश के आमन्त्रण के कारण मोरवी गये। मोरवी में गोंडल के सघाणी सघाड़े (इस संघाड़े में केवल आर्या जी ही हैं) की आगेवान आर्याओं में से चतुरबाई स्वामी बा० ब्र० मणिबाई स्वामी ठा० ३ विराजमान थीं। उनसे मिलने की खास आवश्यकता थी। ता० २१ शुक्रवार की शाम को मोरवी पहुँचे मोरवी श्रीसंघ के आगेवान और मोरवी स्टेट के गृहविभाग के अधिकारी स्वागत के लिये पधारे थे। खास सैलून में स्टेशन से शहर लेगये। ट्राम स्टेशन पर स्टेट की मोटरें और बग्घियां तैयार थीं। स्टेट गेस्ट हाऊस में पहुँचे। भोजन कर चुकने के बाद रात्रि को ८ बजे महाराजा सा० मोरवी से मुलाकात हुई। महाराजा सा० ने जैन कान्फ्रेन्स के प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित करके डेपुटेशन के कार्य की सफलता चाही।

सवेरे महासतीजी के व्याख्यान में गये। जैन-शाला के बालक बालिकाओं ने भी आनन्द कराया। व्याख्यान के समय मन्त्रीजी आदि ने सन्देश सुनाया।

महासतीजी के साथ वार्तालाप किया और दोपहर को कच्छ के लिये नवलखी बन्दर से रवाना हो गये। रात को कच्छ काँठे के कंडला बन्दर पहुँचे। जामनगर स्टेट रेल्वे के मैनेजर श्री हेमचन्दजी भाई रामजीभाई मेहता की कृपा से कच्छ रेल्वे के मैनेजर श्री सोभागचन्दजी कोठारी ने डेपुटेशन के लिये आदि से इति तक प्रत्येक तरह की व्यवस्था की थी। भा० वैरागी भाई ने भी कच्छ में डेपुटेशन की सहायता करने के लिए तार द्वारा सूचनाएं दी थीं।

ता० २३ रविवार को सवेरे मोटर में कंडला से रवाना होकर भुज पहुँचे। आठ कोटि छोटे पक्ष के युवाचार्य मु० श्री कुंवरजी स्वामी ठा० ३ से मिले। वार्तालाप किया और दोपहर को सात रतन दो मोटरें लेकर मुन्द्रा गये जहां आठ कोटि बड़े पक्ष के मुनि श्री कृपाचन्दजी ठा० ३ विराजमान थे। यहां से ५ गृहस्थ भाई साथ लिये हुए आठ कोटि छोटे पक्ष के पू० श्री शामजी स्वा० ठा० ४ के पास गये। भुज से श्री प्रतापचन्द भाई वीरचन्दभाई साथ आये थे। यहां से सभी विराजमान आठ कोटि बड़े पक्ष के पू० श्री कानजीस्वामी ठा० ४ के दर्शन किये। वार्तालाप किया और रात को मुन्द्रा वापस लौट आये।

रात को दो बजे चार रेंकड़ा (बेलगाड़ी) किराए लेकर मुंद्रा से कोंडाकरा के लिये रवाना हुवे। मुंद्रा से दो भाई साथ २ पधारे थे। ता० २४ सोमवार को सवेरे सात कोस का रेतीला रास्ता तय कर के बेलगाडियों द्वारा कोंडोकरा पहुंचे। यहां युवाचार्य पं० मु० श्री नागचन्द्रजी स्वामी ठा०५ के दर्शन किये और बातचीत की एवम् प्रश्नावली के उत्तर लिये। भोजन करके फिर तुरत ही बेलगाड़ी से रवाना होकर दोपहर को दो बजे भुजपुर आये। यहां आठ कोटि बड़े पक्ष के मुनि श्री वनेचन्दजी, लालमीचन्दजी आदि ठा० ४ के दर्शन किये। वार्त्तालाप कर चुकने के बाद उन्हीं बेलगाड़ियों में फिर रवाना होकर शामको मुन्द्रा पहुचे। वहां से मोटर में रवाना होकर रातको आठ बजे भुज पहुंचे।

ता० २५ को सवेरे कोठारीजी के स्पेशल सैलून में रवाना हो रेल्वे में ही भोजन बना कर जीमते २ कंडला बन्दर पहुंचे। वहां नवलखी से खास तौर पर मंगाई हुई मोटर लांच हाजिर थी।

ला० ज्वालाप्रसादजी जैसे सुकोमल श्रीमन्त गण, श्री ला० गोकुलचन्दजी जौहरी और श्री किशनदासजी मूथा जैसे वृद्ध महानुभाव पंजाव, भुसावल आदि के व्यवसायी एवं आगेवान प्रतिष्ठित गृहस्थ अपने आराम और धन्धे को छोड़ कर शासन सेवा की उत्कट इच्छा से रेल्वे, मोटर, जहाज और बैलगाड़ियों में समुद्र में, सड़कों पर एवं कच्चे रास्तों पर रात या दिन भूख या प्यास, नींद किंवा आराम की परवा किये विना लम्बे सफर के लिये निकल पड़े हैं यही समाज के उज्ज्वल भविष्य का चिह्न है।

कण्डला से मोटर लांच में रवाना होकर नवलखी बंदर आये। यहां से चल कर मोरवी श्रीसंघ के आगेवान लोग व्यालु करवाने के लिये भोजन सामग्री सहित स्टेशन पर तय्यार मिले। यहा व्यालु कर के वढ़वाण कैंप के लिये रवाना हो गये। ठीक आधी रात के समय वढवाण जंकशन पर वहां के श्री सघ के अग्रेसर नींद की क्षति उठा कर स्वागतार्थ प्रस्तुत थे। उतारे के स्थान पर जाकर आराम किया। सवेरे देशी ढंग से बाजे गाजे के साथ डेप्यूटेशन को उपाश्रय ले गये। लींबड़ी संघवी संघाड़े के पू० श्री मोहनलालजी म० पं० मु० श्री मणिलालजी म० आदि ठा० ६ के दर्शन किये। सम्मेलन का सन्देश सुनाया और पू० श्री से प्रतिनिधि भेजने की प्रार्थना की। पूज्य श्री ने यह प्रार्थना स्वीकार की और पं० मुनि श्री मणिलालजी म० आदि को शतावधानीजी के साथ भेजने की भावना प्रकट की।

ता० २६ की दोपहर को मोटर द्वारा लींबड़ी गये। स्वागत के लिये पधारे हुवे आगेवानों के साथ जाकर गेस्ट हाउस में दूध नाश्ता आदि ग्रहण कर के पं० कविवर मु० श्री नानचन्द्जी म० ठा० ४ के दर्शन करने गये। कवि श्री को लींबड़ी सम्प्रदाय के सम्मेलन ने प्रतिनिधि चुना ही है और उन्होंने अजमेर आने से पहले सम्प्रदाय के सभी मुनियों का संयुक्त सन्देश प्राप्त कर के पधारने की भावना व्यक्त की। शतावधानीजी कवि श्री को साथ लेकर पधारेंगे ऐसी आशा है।

रात को मिक्स्ड ट्रेन में भावनगर से B S Ry के मैनेजर श्री० हेमचन्द भाई रामजी महता पधारे। ता० २७ को प्रातःकाल उन महानुभाव से भेंट हुई। तत्पश्चात स्पेशल मोटर करके सब लोग सायला गये। पू० श्री गुलाबचन्दजी स्वामी (लींबड़ी बड़ी सम्प्रदाय) वीरजी स्वामी आदि

महापुरुषों के दर्शन किये और शतावधानीजी कवि श्री तथा अन्य लींबड़ी सम्प्रदाय के प्रतिनिधि मुनियों को अजमेर की तरफ भेजने की भावना की। चातुर्मास के पश्चात् शीघ्र ही लींबडी में सब साधु गण एकत्रित होकर प्रतिनिधियों को विदा करेंगे यह भावना प्रकट की गई। यहां दूध नाश्ता आदि ग्रहण कर के १२ बजे लींबड़ी पहुंचे।

श्री हेमचन्द भाई मेहता सलून लेकर पधारे थे वे मेहमानों को भावनगर तक लेने ले गये। वहां से लौटने पर ता० २६ को सबेरे बोटाद पहुंचे। स्टेशन पर, श्रीसंघ तथा नवयुवक दल का जय-नाद सुनकर डेपुटेशन के सभ्य चौंक पड़े। स्टेशन से सीधे पालियाद मोटर द्वारा जाने का प्रोग्राम पूरा न होगा यह स्पष्ट ज्ञात पड़ने लगा और हुआ भी यही।

आखिरकार, बोटाद् श्रीसंघ के आधीन होकर, ध्वजा पताका से सजाये हुए दरवाजे और रास्तों से गुजर कर उतारे पहुंचे। यहां नाश्ता किया और फिर जुलूस के रूप में बाजार की प्रदक्षिणा करवाते हुए उपाश्रय ले गये। स्थविर शास्त्रज्ञ मुनि श्री मूलचन्द्जी महाराज ठा० ३ के दर्शन हुए। नियमानुसार श्रीसंघ की सभा हुई। जिसमें अग्रेसर सेठ रायचन्द्भाई के सुपुत्र ने डेपुटेशन की सफलता का संगीत गाया तत्पश्चात बोटाद् श्रीसंघ से एकता की याचना समिति से सहयोग और बोटाद् सम्प्रदाय की तरफ से प्रतिनिधि मुनि भेजने की मांग की गई। इसके उत्तरमें बोटाद्के संघवी श्रीरायचंद भाई गांधी ने सम्मेलन तथा समिति से पूर्ण सहयोग की भावना प्रकट की और मुनि श्री ने स्वयं विहार कर सकने में अशक्त होने के कारण मुनि श्री माणकचन्द्जी महाराज आदि को भेजने का भाव प्रकट किया।

पालियाद के थानेदार साहब और श्रीसंघ के अग्रसर लोग हम लोगों को ले जाने के लिये बोटाद् पधारे थे। इसलिए बोटाद् में शाम को जीमने का वचन देकर, सीधे पालियाद गये। वहां भी स्काउटपार्टी और स्वागत की धूम धाम दोख पड़ी। सारा ग्राम ध्वजा पताका से सजाया गया था। और उपाश्रय के सम्मुख सुन्दर रंगमण्डप स्वागत के लिये तयार किया गया था। उपाश्रय में, बोटाद सम्प्रदाय के प्रवर्तक मुनि श्री माणकचन्द्जी स्वामी और गोंडल बड़ संघाड़ के मन्त्री मुनि श्री पुरुषोत्तमजी स्वामी ठा० ४ के दर्शन हुए। हमारे कुछ कहने से पूर्व ही पालियाद श्रीसंघ ने समिति के कार्य में विश्वास और सहानुभूति प्रकट की। मुनिराजों से प्रार्थना करने पर विदित हुआ कि दोनों महानुभावों के पधारने के भाव हैं किन्तु पुरुषोत्तमजी महाराज, अन्य मुनिराजों का सन्देश मिलने के बाद पधार सकेंगे। दोनों ही संगठन के जबरदस्त हिमायती हैं।

पालियाद में भोजन करके तथा बोटाद में सन्ध्या का भोजन ग्रहण कर मिक्स्ड ट्रेन से अहमदाबाद के लिये रवाना हुए। ता० ३ को प्रातःकाल अहमदाबाद पहुंचे। स्टेशन पर श्रीसंघ के अग्रेसर तथा युवक लोग आये थे। सब लोग श्री० जेसिंगभाई उजमसी सेठ के बंगले पर गये। वहां से नित्यकर्म करके निकले और खम्भात सम्प्रदाय के पूज्य छगनलालजी महाराज ठा० ५ की सेवा में गये। यह नव वर्ष का दिन था। इसी कारण दर्शनार्थियों का तांता सा लगा था। पूज्य श्री से प्रार्थना की गई जिसे उन्होंने स्वीकार फरमाया।

दोपहर को कलोल के लिये रवाना हुए। श्री० वाडीलाल भाई और श्री० चम्पूलाल भाई अहमदाबाद से हमारे साथ होगये थे। वहां पहुंच कर पं० मु० श्री रूपचंदजी म० ठाणा ३ के दर्शन

किये और अजमेर पधारने की प्रार्थना की। मुनि श्री ने सम्मेलन के प्रति पूर्ण सहयोग प्रकट किया। श्रीसंघ के अग्रेसर भी वहां पधारे थे जिन्होंने श्री रतिलालभाई को हमारी सहायता के लिये साथ दिया

रातको अहमदाबाद लौट आये। लखतर और प्रान्तीज इन दो गामों का कार्य आज ही पूर्ण कर लेना था इसलिये हम लोग दो भागों में बट गये। स्थानीय दो दो गृहस्थों को अपने साथ लिया। ता० ३१ को एक विभाग राजा बहादुर के नेतृत्व में लखतर गया और दूसरा भाग राय-साहब टेकचन्दजी के नेतृत्व में प्रांतीज पहुंचा।

लखतर में दरियापुरी सम्प्रदाय के मंत्री मुनि श्री ईश्वरलालजी म० ठा० २ और सघ के अग्रेसरों के दर्शन किये। महाराज श्री के पास दो दीक्षा होने वाली हैं। यदि ये दीक्षाएं कार्तिक वदी में हो गईं तब तो ठीक है नहीं तो दीक्षा देने का कार्य दूसरे मुनिराजों को सौंप कर भी सम्मेलन के लिये प्रस्थान करने और संप्रदाय के मुनियों का संदेश प्राप्त करने का भाव प्रकट किया है।

प्रांतीज स्टेशन पर श्री सघ और युवक लोग हाजिर थे। दरवाजे मे बाहिर निकलते ही नौबत नगाड़ों की आवाज सुनाई दी। जलूस के रूप में उपाश्रय ले गये। रास्ते तथा उपाश्रय के बाहर वही ध्वजा पताका और सजावट दीख पडी। श्रीसंघ की सभा में दरियापुरी संप्रदाय के पूज्य श्री उत्तमचन्दजी स्वा० ठाणा ४ के दर्शन किये। पूज्य श्री ने सम्मेलन के प्रति सहानुभूति और प्रतिनिधियों को भेजने की भावना प्रकट की। श्री सघ ने अपना सभी तरह से सहयोग प्रकट किया। पूज्य श्री धर्मसिंहजी म० के समय की प्राचीन साधु समाचारी पाकर कृतकृत्य हुये। प्रश्नावली के उत्तर भी सब जगहों से प्राप्त हुए।

ता० ३१ की रात्रि को लखतर, प्रांतीज और अहमदाबाद में रहे हुए डेप्यूटेशन के सभ्य साथ २ काठियावाड मेल से बम्बई के लिये रवाना हुये। ता० १ नवम्बर को प्रातःकाल बम्बई पहुंचे, जहां बंबई श्रीसघ के प्रमुख सेठ वेलजी भाई संघ के सभ्यों सहित सत्कार के लिये हाजिरथे।

चातुर्मास के दीर्घ मंथन के पश्चात संप्रदाय का संयुक्त संदेश देकर अपने अपने प्रतिनिधियों को बृहत्साधु-सम्मेलन अजमेर के लिये बिदा करने के निमित्त आठकोटि बड़े पक्ष के मुनि गण मुंद्रा में लींबड़ी संप्रदाय के मुनिराज लींबडी में और दरियापुरी संप्रदाय के मुनिगण कलोल में यथा सम्भव शीघ्र उपस्थित होने वाले हैं।

बम्बई के सेंट्रल स्टेशन पर बंबई श्रीसंघ के आगेवान लोग मोटरें और फूलमालाएं लेकर पधारे थे। श्री अमृतलाल भाई जौहरी के यहां ठहरने की व्यवस्था की। वहां जाकर फिर व्याख्यान में गये। पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की संप्रदाय के मु० श्री मोतीलालजी महाराज ठा० ३ के दर्शन किये और साधुसम्मेलन का संदेश सुनाया तथा पू० श्री से सम्मेलन में पधारने की प्रार्थना की। मुनि श्री ने सम्मेलन के प्रति हार्दिक सहानुभूति प्रकट की और अपने शिष्य के पैर का आराम हो जाने पर स्वयं सम्मेलन में पधारने, अन्यथा देवगढ़ मे चातुर्मास स्थित मु० श्री जोधराजजी म० को मेवाडी संप्रदाय के प्रतिनिधि के रूप में भेजने के भाव प्रकट किये। बंबई श्रीसंघ से उनके प्रमुख श्री वेलजीभाई को डेप्यूटेशन के साथ भेजने की प्रार्थना की गई। फल स्वरूप उपरोक्त महानुभाव भी डेप्युटेशन में सम्मिलित हो गये।

ता० ५ की रातको डेप्यूटेशन का सदेश सुनने के लिये हीरा बाग में एक सभा हुई। उसमें भाषण हुए और सम्मेलन के प्रति जबरदस्त सहानुभूति प्रकट की गई।

ता० ३ को सवेरे बोरीबन्दर से रवाना हो कर दोपहर को १२ बजे मनमाड़ पहुंचे। स्टेशन पर श्रीसंघ फूलमाला, इत्र पान आदि सामग्री और बाजे गाजे आदि की व्यवस्था सहित उपस्थित था। जलूस के रूप में शहर में पहोंचे। प्रसिद्ध वक्ता मुनिश्री चौथमलजी महाराज ठा० ८ के दर्शन किये। थोड़े से वार्त्तालाप के बाद भोजन करने गये दो पहर को दो बजे एक सभा हुई। जिसमें सम्मेलन का सदेश सुनाया गया और मुनि श्री से अजमेर पधारने की प्रार्थना की गई। महाराज श्री का उत्साह अनुकरणीय था। मनमाड़ से चातुर्मास के बाद विहार करके शीघ्रता पूर्वक मदसौर पहुंचने और पूज्य श्री की आज्ञानुसार अजमेर पधारने का भाव प्रकट किया। साथही सम्मेलन की सफलता की इच्छा प्रकट की।

ता० ३ की रात्रि को यहां से रवाना होकर ता० ४ को सवेरे भोपाल पहुंचे। स्टेशन पर सूत की मालाएं लिये हुए श्रीसंघ युवकमण्डल आदि के सभ्य उपस्थित थे। रास्ते में बैंड की सलामी के साथ रोके गये और नास्ता करवाया गया। तत्पश्चात जलूस के रूप में आगे बढ़े। उपाश्रय में शास्त्रोद्धारक पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म० ठा० ५ के दर्शन किये और व्याख्यान सुना। तत्पश्चात सभा के बीच पूज्यश्री से प्रार्थना की और सभा को सम्मेलन का सन्देश सुनाया। पू० श्री ने सम्मेलन के लिये प्रत्येक तरह से हार्दिक सहानुभूति प्रकट की। साथही प्रेम और संगठन पर खूब जोर देते हुए प्रसन्नता सहित यह बात प्रकट की कि हमारी तरफ से अजमेर जाने वाले प्रतिनिधि ज्येष्ठ मास में ही यानी इन्दौर सम्मेलन के समय हो चुन लिये गये हैं।

यहां से ता० ४ को दोपहर के समय रवाना होकर रात्रि को उज्जैन पहुंचे। यहां भी श्री संघ के अग्रेसर लोग स्टेशन पर हाजिर थे। स्टेशन से तुरन्त ही विदा होकर मुनि श्री ताराचन्द्रजी महाराज ठा० १५ की सेवा में पहोंचे। दर्शन किये और सम्मेलन तथा सम्प्रदाय के सम्बन्ध में थोड़ा वार्त्तालाप किया। तारीख ५ का सवेरे व्याख्यान में सम्मेलन का सन्देश सुनाया और अजमेर पधारने की प्रार्थना की। मुनिगण सम्मेलन के पूर्ण प्रशंसक और इच्छुक हैं। साथही पू० श्री धर्मदासजी म० के सम्प्र फिरकों से संगठन रखने की इच्छा भी रखते हैं। उन्होंने अजमेर की तरफ पधारने के हार्दिकभाव प्रकट किये। प्रतिनिधियों का चुनाव कर लिया है किन्तु साथ ही यह भाव व्यक्त किये कि समाज की स्थिति दिनों दिन बिगड़ती जारही है मुनिराजों एवं श्रावकों में पारस्परिक वैमनस्य एवं साम्प्रदायिक कलह बढ़ता जारहा है। अत मुनि सम्मेलन से पूर्व आपसा द्वेष शांत होना चाहिये तथा यह निश्चय करके ही मुनिराजों को पधारना चाहिये कि हम समाज की उन्नति के लिए ही जारहे हैं समाज को एकतांत में गूंथने को जारहे हैं। तब तो हम लोगों का जाना भी समाज के लिए श्रेयस्कर होगा अन्यथा समय और शक्ति की बरबादी के सिवाय भविष्य भी अधिक बिगड़ जायगा। संगठन में ही हमारा तथा समाज का कल्याण है। संघ सेवा के लिये हम सदैव तैयार हैं।

उज्जैन से डेप्यूटेशन के चार सभ्य मोटर द्वारा रवाना होके इन्दौर गये और शेष डेप्यूटेशन ११ बजे की ट्रेन से रतलाम के लिये रवाना होगया।

इन्दौर में आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी महाराज ठा० २ तथा पू० श्री मन्नालालजी म०

की सम्प्रदाय के मु० श्री शेषमलजी म० ठा० ३ विराजमान थे। मुनिवरों के दर्शन किए और वार्त्तालाप किया।

मुनि श्री मोहन ऋषिजी तो सम्मेलन की प्रेरणा को सिंचन करने वाले और जनता को जागृत करने के निमित्त, लेखों के द्वारा प्राणशक्ति फूंकने वाले हैं। उन्हें तो आमन्त्रण की आवश्यकता ही क्या हो सकती है ? ऋषि सम्प्रदाय के प्रतिनिधि चुन लिये गये हैं और वे सुखे समाधे अजमेर पधारेंगे।

मुनिश्री सहसमलजी ने चातुर्मास में प्रकट की हुई छः प्रतिज्ञाओं के द्वारा अपने शान्तिप्रेमी आत्मा का परिचय दिया है। वे, अब पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की आज्ञा के अनुसार बर्ताव करेंगे। सम्मेलन के सम्बन्ध में, उनके हृदय में अच्छी-अच्छी भावनाएं हैं।

रतलाम में, ता० ५ को दोपहर के २ बजे पहुँचे। तीनों संघ के सैंकडों आगेवान लोग, सूत की मालायें ले लेकर स्टेशन पर स्वागतार्थ पधारे थे। स्टेशन से शहर में पहुँचे और सेठ वरदमाणजी सा० के यहां उतर कर, पूज्य श्री मुन्नालालजी म० की सम्प्रदाय के स्थविर मुनि श्री नन्दलालजी म० ठा० ५ के दर्शन किये और सम्मेलन के लिये सहानुभूति मांगी। यहां से पूज्य श्री हस्तीमलजी म० ठा० ६ के दर्शनार्थ गये। वार्त्तालाप किया। सम्मेलन के लिये सहानुभूति प्रकट की गई।

चांदनीचौक में, श्री० सेठ वरदभाणजी पीनलिया के मकान के समीप ही, तीनों संघ की संयुक्त सभा हुई। श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति थी। बहुत वर्षों के पश्चात् ऐसा हर्ष का सयोग प्राप्त होने के कारण, सबके हृदय आनन्द से उल्लसित थे। सभा में, सम्मेलन का सन्देश सुनाया गया और श्रीसंघ का सहयोग मांगा गया। फलस्वरूप श्री वरदभाणजी सा० पीतलिया डेपुटेशन के साथ हुए।

ता० ६ को सवेरे डेपुटेशन के सब सभ्य पहले मुनि श्री नन्दलालजी महाराज के व्याख्यान में गये। वहां सम्मेलन का सन्देश सुनाया और महाराज श्री की उपस्थिति की आवश्यकता बतलाई। महाराज श्री ने सहानुभूति प्रकट की और सफलता की शुभाशीष दी। साथ ही यह भी फरमाया कि वृद्धावस्था के कारण स्वय तो नहीं पधार सकेंगे, लेकिन सम्प्रदाय की ओर से पूज्य श्री की आज्ञानुसार प्रतिनिधि गण आवेंगे।

तत्पश्चात, पूज्य श्री हस्तीमल जी म० के व्याख्यान में गये। सम्मेलन का सदेश सुनाया और पूज्य श्री से अजमेर पधारने की प्रार्थना की। नवचेतनवान् पूज्य श्री ने सम्मेलन के प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट करते हुए। अनेक मार्गदर्शक बातें बतलाई, सम्मेलन की अनिवार्य आवश्यकता पर जोर दिया और अन्यान्य मुनिवरों के पधारने का समाचार पाते ही, स्वय पधारने की उत्कट इच्छा प्रकट की।

रतलाम से दोपहर को तीन बजे रवाना होकर शाम को ६ बजे मन्दसौर पहुँचे। जावरा स्टेशन से श्री सौभागमलजी मेहता डेपुटेशन के साथ हुए। स्टेशन पर जावरा श्रीसंघ के अग्रेसर लोग, सूत की मालायें लिये उपस्थित थे, जिनके साथ नवयुवक मण्डल भी था। मन्दसौर पहुँचने पर बाजे गाजे और नगाड़े तय्यार मिले। जुलूस के रूप में शहर की प्रदक्षिणा करते हुए वयोवृद्ध शास्त्रविशारद पूज्य श्री मुन्नालालजी महा० ठा० ६ के दर्शन करने गये। पू० श्री से सुखसाता पूछ कर, सम्मेलन में

पधारने और उन जैसे अनुभवी मुनिवरों की उपस्थिति की अत्यन्त आवश्यकता होने की बात अर्ज की। विशेष व्याख्यान में अर्ज करने की बात कहकर, विश्राम के लिये सद्दरयगच्छ उतारे पर चले गये।

ता० ७ को सवेरे व्याख्यान में काफी उपस्थिति थी। सम्मेलन का सन्देश सुनाया और पूज्य श्री से अजमेर पधारने की प्रार्थना की। पूज्य श्री ने शरीर से विवशता प्रकट की और यदि बीच में सुधारा हुआ, तो स्वयं पधारेंगे अन्यथा सम्प्रदाय की ओर से प्रतिनिधि भेजने तथा सम्मेलन के लिए आवश्यक सूचनायें देने आदि के सम्बन्ध में अपने विचार प्रकट किये। आपने सम्मेलन की अनिवार्य आवश्यकता बतलाते हुए, डपुटेशन के परिश्रम से सम्मेलन की सफलता हो यह आशीर्वाद दिया।

अजमेर के उत्साही-सभ्य श्री० कल्याणमलजी वैद्य, यहीं से डेपुटेशन में सम्मिलित हुए। मन्दसौर से दोपहर को जोधपुर के लिये रवाना हुए।

जोधपुर स्टेशन पर ता० ८ को सवेरे पहुँच। श्री संघ के अग्रेसर लोग स्टेशन पर पधारे थे। स्टेशन से सीधे प्रतापी पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के व्याख्यान में गये। व्याख्यान के पश्चात मंत्रीजी ने साधु सम्मेलन का सन्देश, व्यवस्था और रहस्य समझाया। पू० श्री ने मुनि-सम्मेलन की अनिवार्य आवश्यकता बतलाते हुए उसके प्रति अपनी सहानुभूति प्रकट की।

दोपहर को शंका समाधान और मार्गदर्शक विवेचन हुए। तत्पश्चात पू० श्री ने मुनि-सम्मेलन में सम्मिलित होने का भाव प्रकट किया और साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में अनेक उपयोगी सूचनायें दीं।

ता० ९ की रात्रि को दिल्ली जाने के लिए, डेपुटेशन जोधपुर से रवाना हुआ। ता० १० की रात को ८ बजे दिल्ली पहुंचा। सामान को स्टेशन पर ही छोड़कर, युवाचार्य श्री काशीरामजी महा० तथा मुनि श्री छोटेलालजी म० ठा० ८ के दर्शन किए। पहले से ही रात्रि को मीटिंग करने के समाचार दे रक्खे थे, जिसके अनुसार श्री संघ की सभा के समक्ष युवाचार्य श्री से प्रार्थना की गई। युवाचार्य श्री ने अजमेर की तरफ विहार किया। दिल्ली से उपयोगी सूचनायप्राप्त कर के उसी रात्रि को १०॥ बजे की ट्रेन से लुधियाने के लिए रवाना हो गए। यहां से श्री आनन्दराजजी सुराणा हमारे साथ हो गए।

ता० ११ को सवेरे १० बजे लुधियाने पहुंचे। स्थविर मुनि श्री जयरामदासजी म० शालिग्रामजी म०, श्री० उपाध्यायजी आत्मारामजी म० ठा० ८ के दर्शन किए। व्याख्यान में श्रीसंघ के समक्ष सम्मेलन का सन्देश और आज तक की सफलता के शुभ समाचार सुनाकर अजमेर सम्मेलन में पधारने के लिए शीघ्र विहार करने की प्रार्थना की। उन महानुभावों ने अपनी वसी ही भावना प्रकट की।

भोजन करके मोटर द्वारा रायकोट गए। लुधियाने से ला० गुज्जरमलजी और फतूमलजी भी डेपुटेशन के साथ आए थे। रायकोट में गणिजी श्री उदयचन्दजी म० ठा० ५ के दर्शन किए। वहां के श्री संघ के सन्मुख सम्मेलन का संदेश सुनाकर गणिजी महाराज से भी उपाध्यायजी के साथ ही अजमेर की तरफ विहार करने की प्रार्थना की। गणिजी म० ने यथाशीघ्र दिल्ली पहुंचने के भाव प्रकट किए, वहां से वे अजमेर की तरफ पधारेंगे।

रायकोट से लुधियाना आकर रात को अमृतसर पहुंचे। अमृतसर श्रीसंघ के अगेवान लोग

रंगीन मालाएँ लिए हुए स्टेशन पर उपस्थित थे। सबके साथ रवाना होकर, पंजाब केसरी पूज्य श्री सोहनलालजी म० ठा० ६ के दर्शनार्थ गए। सवेरे पू० श्री के व्याख्यान में उपस्थित हुए। श्रीसंघ के सन्मुख पू० श्री को शुभ सन्देश स्थान-स्थान पर पहुंचाने और उसमें प्राप्त सफलता के समाचार सुनाये। पू० श्री ने सम्मेलन की आवश्यकता समझाई और सफलता के लिए आशीर्वाद दिया। सम्मेलन का प्रारम्भ फाल्गुन शुक्लपक्षमें हो तो अच्छाहै, यह बतलाते हुए अन्य उपयोगी सूचनाएँ दीं।

यहां से ता० १२ को दोपहर के समय डेप्युटेशन के सदस्य ला० टेकचन्दजी सा० को झण्डियाला पहुंचाने के लिए मोटर में रवाना हुए। वहां तपस्वी मुनि श्री निहालचंद्रजी म० ठा० ३ के दर्शन किये। यहां से भाई त्रिभुवननाथजी को कपूरथला पहोंचाने गये। कपूरथला में रात को ठहर कर और इन पंजाबी भाइयों के प्रेम का प्रसाद चख कर ता० १३ को जालन्धर पहोंचे जहां पंजाब की महा प्रवर्तिनि श्री पार्वतीजी महा सतीजी ठा० ६ के दर्शन किये। सम्मेलन के लिए उपयोगी सूचनाएँ प्राप्त करके मोटर में ही लुधियाने पहोंचे। श्री उपाध्यायजी के पुनः दर्शन करके दिल्ली जाने के लिए स्टेशन पर गए। दस मिनट देर हो जाने के कारण वह गाड़ी न मिली अतः अम्बाले गये। यहां के अवकाश के समय का सदुपयोग करने और श्री राजा बहादुर ज्वलाप्रसादजी के आग्रह से जैनेन्द्रगुरुकुल पंचकूला का अवलोकन करने गये। रातको पीछे लौटकर पंजाब मेल सेता० १४ को सवेरे दिल्ली पहोंचे।

हम लोगो को पूज्य श्री मोतीरामजी महा० की सेवा में महेंद्रगढ जाना था। बीच में दिल्ली में ३ घण्टे का अवकाश था इसलिए युवाचार्य श्री काशीरामजी म० म० श्री छोटेलालजी म० आदि के दर्शन करने की इच्छा हुई। युवाचार्यजी ने अजमेर की तरफ विहार शुरू कर दिया है जिसके कारण सदर में उनके दर्शन हो सके।

दिल्ली से ८॥ बजे रवाना होकर एक बजे नारनोल पहोंचे जहांसे राजा ब० ज्वालाप्रसादजी की मोटर से महेंद्रगढ गए। यहां पू० श्री मोतीरामजी म० ठा० ४ के दर्शन किए और सम्मेलन का सन्देश सुना कर अजमेर की ओर विहार करने की प्रार्थना की। पू० श्री वृद्धावस्थामें होते हुवे भी जीवन का यह लाभ उठाने के लिए उत्सुक हैं। उन्होंने सम्मेलन में सम्मिलित होनेकी भावना प्रकट की।

राजा बहादुर को उनके घर छोड कर सबलोग अपने २ स्थान को चले गये। इतना लम्बा प्रवास करने पर भी बहुत सी जगहें शेष रह गई है इसके लिये भिन्न २ प्रांतीय डेप्युटेशन मुकर्रर कर के सबसे प्रवास करके रिपोर्ट तैयार करने की पत्र द्वारा प्रार्थना की है। प्रवास में सबके पूरे २ समाचार नहीं मिल सके हैं इसलिये—

सब मुनिवरों की सेवा में नम्र निवेदन

यह है कि कार्तिक शुक्ला १५ तक मुनिराज एक जगह रहते हैं इसलिये उस समय तक आवश्यक स्थानों पर पहुंच जाने के लिए ही भिन्न २ पांच डेप्युटेशनों की रचना की गई थी। हम लोगों ने तो आज ३५ दिन तक प्रवास किया है फिर भी अनेक जगहें रह गई। यह बात हमारे ध्यान में है। किन्तु अब विहार में मुनिराज कहां मिले यह कठिनाई है।

यह सम्मेलन मुनियों का है और सभी कार्य उन्हीं महापुरुषों का है। हम लोग तो केवल उन के दलाल—प्रतिनिधि हैं। हम लोग जहां २ नहीं पहुंच सके हैं वहां के लिए आप क्षमाशील मुनिवर कोई ख़याल न कीजियेगा।

यह बात तो सभी मुनिराजों को मालूम हो है कि अजमेर में आगमी फाल्गुन मास में वृहत्सा धुसम्मेलन होने वाला है। अस्वीक स्थान से शारीरिक कारण छोड़ कर सम्मेलन में पधारने की स्वीकृति मिल चुकी है। अब तो सब के विहार भी अजमेर की तरफ हो गए होंगे। जहां डेप्युटेशन नहीं पहोंचा है वहां भी प्रार्थना तो पहुंच ही गई है। इसलिए सभी सम्प्रदायों के समस्त प्रतिनिधि मुनियों से बारम्बार प्रार्थना है कि वे अजमेर की तरफ विहार करने का शुभ सम्वाद भिजवाव।

यदि किसी जगह हमलोगों की आवश्यकता हो तो अवश्य ही याद कीजियेगा। वहीं हाजिर होने के लिए सेवकगण सदा तय्यार हैं। हमारी भूलों के लिए क्षमा याचना करते हैं।

समय के अभाव के कारण निम्न स्थानों को नहीं पहुंच सके हैं। नागौर, जींदन, सियालकोट भंदेसर पट्टा मालेरकोटला, देवगढ़, सोजत, महीदपुर, सुजानपुर, प्रतापगढ़, हाथरस मूली, जूनागढ़ शाहपुरकुण्डला, बगड़ी, फरीदकोट, सेवाज सांडिया, समदड़ी, पीपाड़, बड़ोदा, खम्भात आदि आदि।

फिर भी जो दूसरे डेपुटेशन गये होंगे उनको रिपोर्ट आगे चल कर प्रकाशित होगी। अनिवार्य कारणों से कार्तिक शुक्ला १५ तक सब जगहों पर न पहुँच सकने के लिये नम्रतापूर्वक क्षमा याचना करते हुए भी जहां आवश्यकता जान पड़ेगी वहां अब भी जाने को तैयार हैं।

दूसरे डेपूटेशन की रिपोर्ट

जौहरी केसरीमलजी चोरड़िया श्री कानमलजी कोठारी और जौहरी भँवरलालजी मूसल जयपुर से कार्तिक शुक्ला १० को दोपहर की गाड़ी से माधोपुर गये। वहां कोटा सम्प्रदाय के स्वामी जी श्री रामकुंवारजी म० ठा० ५ तथा मनियारजी श्री धरजाजी आदि ठाणा ८ से विराजती हैं। मुनिराजों से वार्तालाप हुआ। स्वामी श्री बिरदीचन्दजी महाराज के निकलने की तकलीफ अब शान्त है। तबियत ठीक होने पर प्रश्नों के उत्तर फिर भेजने को फरमाया है। संगठन करके आचार्य नियुक्त करने के लिये, कोटा सम्प्रदाय के सब गांवों के श्रावकों की मीटिंग करके निर्णय करने और अजमेर पधारने के सम्बन्ध में प्रार्थना की जिसे उन्होंने मंजूर फरमाया। इसके बाद बूंदी कोटा से फिर लौटते समय दर्शन करने को कहकर वहां से रवाना हुए और आमणपुर पहुंचे। वहां स्वामीजी श्री नीतमलजी म० ठा० २ से विराजते हैं। आपने अपना सम्बन्ध, स्वामीजी श्री ताराचन्दजी महाराज पूज्य श्री माधव मुनिजी महाराज की सम्प्रदाय के साथ बतलाया। लेकिन उनके शामिल नहीं हैं। स्व-सम्प्रदाय में सम्मिलित होकर संगठन करने और अजमेर पधारने की प्रार्थना की। यहां से हटे

गन पर आकर ठहरे और सुबह की गाड़ी से कोटा के लिए रवाना हो गये। लगभग ७॥ बजे दिन को कोटा पहुंचे और स्टेशन से सीधे मोटर द्वारा बूंदी को रवाना हो गये। बूंदी पहुँच कर, वहां के मुख्य-मुख्य श्रावकों के साथ करीब १ बजे दोपहर को स्वामी शङ्करलालजी म० के पास गये। ये भी कोटा सम्प्रदाय के हैं। इनके तथा वहां के श्रावकों के कहने से मालूम हुआ, कि पू० श्री छगनलालजी महाराज की आज्ञानुसार, उनकी पछेवडी, सं० १९६५ के साल में इन्हें ओढाई गई थी। लेकिन, अब ठाणे १ से ही हैं और जो बात सब श्रीसंघ कहे वह मजूर करने को कहते हैं। इसलिये बूंदी के श्रावकों से सगठन करके एक आचार्य मुकर्रर करने के लिये कोटा सम्प्रदाय के सब मुनिराजों तथा श्रावकों की मीटिंग करने की बात कहकर, एवं संगठन करके अजमेर पधारने का अनुरोध करके वहां से कोटा आये। वहां भी मुख्य-मुख्य श्रावकों से मिले और सब हाल कह कर, संगठन की आवश्यकता बतलाई। उन्होंने इसे स्वीकार किया। तत्पश्चात् स्वामीजी श्री कस्तूरमलजी महाराज ठा० ३ के दर्शन किये उनसे भी संगठन करने की प्रार्थना की और वहां से रवाना होकर वापस माधोपुर आये। वहां मुनिराजों तथा सतियाजी के दर्शन करके सब हाल सुनाया। कोटा सम्प्रदाय के संगठन की कोशिश हो रही है।

सम्मेलन में पधारने से पूर्व अपनी-अपनी सम्प्रदाय में सगठन उत्पन्न करने के लिए चारों तरफ तैयारियां चल रही हैं। यही साधु-सम्मेलन की सफलता के चिह्न हैं।

तीसरे डेपूटेशन की रिपोर्ट

श्री० सरदारमलजी सा० छाजेड, जज शाहपुरा राज्य की ओर से निम्न रिपोर्ट प्राप्त हुई।

ता० १ दिसम्बर को यहां से रवाना होकर, गंगरार (मेवाड) जहां पूज्य श्री शीतलदासजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनि श्री कजोडीमलजी महा० ठा० ५ से विराजमान हैं, गया और मुनि श्री की सेवा में वृहत साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में अर्ज की। फलतः मुनिराजों ने अपनी सहानुभूति प्रकट की और साधुभाषा मे सम्मेलन में सम्मिलित होने की स्वीकृति दी। आप लोगों ने फरमाया कि गगरार से मॉडलगढ की तरफ विहार करेंगे और वहा से अजमेर की तरफ विहार करने के भाव हैं। डाइरेक्टरी फार्म और प्रश्नावली भराकर भेजी है सो पहुँची होगी। समाचारी चारों सम्प्रदायों की करीब-करीब मिलती हुई है, सो जो उन सम्प्रदायों की तरफ से होगा, वह इनकी तरफ से भी होगा। इन मुनि श्री की इच्छा, छ हों मारवाड़ी सम्प्रदाय—जिनका सगठन हो चुका है—के साधुओं से, वृहत साधु सम्मेलन से पूर्व मिलकर, उनके साथ अपना सगठन कर लेने की है। सिर्फ मुनि श्री छगनलालजी महाराज व मुनि श्री पन्नालालजी म० मिलना आवश्यक है। इस वास्ते, आप जैनप्रकाश में लेख निकलवा दें, कि उक्त मुनिराजों का विहार यदि विजयनगर की तरफ हो जावे, तो अजमेर पधारने से पूर्व पूज्य श्री शीतलदासजी म० की सम्प्रदाय के साधु अपनी बातचीत करके, मरुधर साधु सम्मेलन में शरीक हो जायें। इसमें उन मुनियों को कोई बाधा नहीं है, सिर्फ जबानी बातचीत करना

चाहते । लिखकर दरियाफ्त करने योग्य बातें नहीं हैं, जिससे दोनों सम्प्रदायों के मुनियों से, डेपु० द्वारा बातचीत कर लेने का आग्रह नहीं किया जा सकता । यह सम्प्रदाय निकटवर्ती बड़ी सम्प्रदाय में *मिल जाने को भी तैयार है, बशर्ते कि चारों सम्प्रदायों के मुनिराज मिल कर परस्पर बातचीत करलें ।* मेरी तरफ से तीन संप्रदायों का उत्तर भेज दिया है जो मेरे ज़िम्मे रक्खा था । देवगढ़ वालों का उत्तर भेजने को रतनलालजी महता उदयपुर वालों को लिख दिया था सो उन्होंने भेजा ही होगा।

मुनि श्री भैरूँलालजी म०, मुनि श्री चौथमलजी महाराज से मिलने के लिये झालावाड़ की तरफ गये हैं, वहां बातचीत करके सब बातें तय करेंगे और एकलविहार करना छोड़ेंगे। आप सब कुशल हैं। श्री० रतनलालजी मेहता भी देवगढ़ पधार थे, मुनि श्री जोधराजजी म० से पधारने की अरज की गई है।

काठियावाड़ प्रान्तीय डेपुटेशन की रिपोर्ट

श्रीयुत मन्त्री श्री साधु सम्मेलन समिति अजमेर जय जिनेन्द्र ।

श्री साधु-सम्मेलन-समिति का मुख्य डेपुटेशन काठियावाड़ के प्रवास में समय के अभाव के कारण जिन तीन स्थलों—जूनागढ़ सावरकुण्डला और मूली में विराजमान मुनिराजों की सेवा में नहीं पहुंच सका था वहां जाकर साधु सम्मेलन में पधारने का आमन्त्रण देने का कार्य आपकी तरफ से हमारे सुपुर्द कर दिया गया था। इस कार्य के सम्बन्ध में निम्न रिपोर्ट आपकी जानकारी के लिये पेश करता हूँ।

जूनागढ़—राजकोट से मैं तथा श्री जेचन्द अमरसी कोठारी ता० १०-११-३२ की रात्रि की गाड़ी से रवाना होकर ता० ११-११-३२ को प्रातःकाल जूनागढ़ पहुंचे। वहां पहुंच समिति के सभ्य श्री रावसाहब लाकमसी मकनजी घीया को साथ लेकर लींबड़ी सम्प्रदाय के मुनिराज श्री मोहनलाल स्वामी श्री धनजी स्वामी श्री शिवलालजी स्वामी आदि ठा० ६ से साधु-सम्मेलन में पधारने की प्रार्थना की और उक्त सम्मेलन की अब तक की प्रवृत्तियों से वाकिफ किया। जवाब में उन *समस्त मुनिराजों ने सम्मेलन की अत्यन्त आवश्यकता बतलाई। साथ ही यह भी फरमाया* कि हमारे साथ तो वृद्ध मुनिराज हैं इसलिये इतना लम्बा विहार करके अजमेर पहुंचने में असमर्थ हैं। साथ ही उस सम्प्रदाय की ओर से पंडित मुनिराज श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी और नागचन्द्रजी स्वामी सम्मेलन में पधारेंगे ही इसलिये फिर हमारी उपस्थिति की अधिक आवश्यकता नहीं रह जाती। यह बात हुए भी उन महानुभाव ने चरम भाव प्रकट किए कि—

गत ज्येष्ठ मास में लींबड़ी सम्प्रदाय का सम्मेलन हुआ किन्तु वह बहुत थोड़े समय पूर्व सूचना प्रकाशित करके हुआ इसलिए हम लोग उस सम्मेलन में सम्मिलित न हो सके। यदि सब मुनिराजों के लिए से मिलने की व्यवस्था की जावे तो अजमेर की तरफ विहार करने में बड़ी देर होगी। इसी कारण पंडित मुनिराज श्री रत्नचन्द्रजी स्वामी आदि ने अजमेर की तरफ प्रयाण करके

गारे विचार सम्मेलन में रखने की सूचना की है। वह इस सम्प्रदाय के प्रतिनिधि भी गे।

यह डेपूटेशन काठियावाड के अन्य सभी प्रमुख मुनिराजों की सेवा में उपस्थित हुआ और न्हें सम्मेलन के लिए आमन्त्रित किया। सभी जगह मुनिराजों ने सम्मेलन के प्रति हार्दिक प्रेम दर्शित किया और सम्मेलन की आवश्यकता प्रकट की।

इसी प्रकार अन्यान्य प्रान्तों में भी विभिन्न सदस्यों के डेपुटेशन निकले और सब जगह से उत्साहवर्धक सम्मतियां ही प्राप्त हुईं। सब प्रान्तों के मुनिराजों ने सम्मेलन के आयोजन की सराहना की।

इस सर्वव्यापी उत्साह और सहानुभूति से प्रेरित होकर सम्मेलन का आयोजन करने वालों की प्रसन्नता का पार न रहा। अब कुछ ही दिन व्यतीत हुए थे कि भारत के सभी भागों से, मुनिराजों के विहार की बधाइयां आने लगीं। दक्षिण गुजरात काठियावाड़, पंजाब, आदि प्रदेशों के मुनिराज, साधु सम्मेलन रूपी समुद्र में, नदी की तरह मिलने की इच्छा से बढ़ने लगे। जिन २ प्रदेशों से मुनिराज पधारते थे, वहां तो उत्साह की बाढ़ आ ही जाती थी, लेकिन जहां २ होकर विहार करते थे, वहाँ भी कुछ कम उत्साह नहीं होता था। सारांश यह कि एक बार सारे ही समाज में एक नवीन स्फूर्ति उत्पन्न हो गई, सब लोगों का ध्यान साधु-सम्मेलन पर केन्द्रित हो गया।

कभी बधाई मिलती, कि पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज, अजमेर की तरफ विहार कर रहे हैं और कभी यही बात श्री शतावधानीजी के लिये सुनी जाती थी। किसी समय यह समाचार पढ़ने को मिलता, कि पंजाबी सिंह अजमेर की तरफ बढ़ते आ रहे हैं, तो किसी समय कविवर नानचन्द्रजी के विहार का शुभ-संवाद मिलता। इस तरह, सभी दिशाओं से एक ही ध्वनि सुनाई देती थी, कि मुनिराज अजमेर की तरफ विहार कर रहे हैं। उस समय लोगों में जैसा उत्साह था, उसका वर्णन करना कठिन है।

इधर आगत मुनिराजों का स्वागत करने के निमित्त, मारवाड़ के मुनि मण्डल ने एक स्वागत समिति बना ली थी, जिसके अनेक मुनिराजों ने, स्वयं सेवक के रूप में, अन्य प्रान्तों से आने वाले मुनिराजों के सन्मुख जाकर, उनका स्वागत करने का भार लिया था।

साधु-सम्मेलन के अवसर पर, जिस तरह से मुनिराजों के विभिन्न प्रान्तीय समूह पधारे थे, उन्हें देख कर कोई भी बुद्धिमान अनुमान लगा सकता है, कि जहां से ये आदरणीय मुनिगण चले हैं और जहां २ होकर पधारे हैं, वहां के लोगों में कैसा उत्साह और आनन्द की लहर दौड़ गई होगी। जिन मार्गों पर होकर ये मुनिराज पधारने वाले थे, उनके आसपास के लोग, विहार की बधाई के लिए कितने उत्सुक रहे होंगे और साधु-सम्मेलन समिति के सभ्यों एवं अजमेर के श्रीसंघ को इस प्रकार की बधाई सुनने की कितनी अभिलाषा रही होगी, इसका अनुमान लगाना कठिन नहीं है। लोगों की यह अभिलाषा पूर्ण हुई और बधाई पर बधाई जैन प्रकाश आदि में प्रकाशित होने लगीं।

श्री साधु-सम्मेलन संरक्षक समिति

बम्बई की ता० २१ दिसम्बर १९३२ की सभा का प्रस्ताव नम्बर ८ इस प्रकार था—साधु सम्मेलन के वास्ते अनुकूल वातावरण फैलाने और भविष्य में होने वाले अशान्ति के प्रसंगों को रोकने के वास्ते सम्पूर्ण सत्ता के साथ निम्न लिखित सज्जनों की एक सब कमेटी नियुक्त की जाती है।

(१) श्रीमान् वेलजी लखमशी नप्पु बम्बई।
(२) श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर।
(३) „ सरदारमलजी छाजेड़ शाहपुरा।
(४) „ राजमलजी ललवाणी जामनेर।
(५) „ नथमलजी चोरड़िया नीमच।
(६) „ नेमीचन्दजी सुकड़ आगरा।
(७) „ धर्मदासजी सुराणा जोधपुर।
(८) „ रा० सा० मोतीलालजी मुथा सतारा।
(९) „ अमोलकचन्दजी लोढा बगड़ी।
(१०) „ दुर्लभजी त्री० झौहरी } मन्त्रियों की दृष्टि से
(११) „ धीरजलाल के. तुरखिया }

कोरम पांच का मुकर्रर किया जाता है।

प्रथम बैठक

उक्त समिति की प्रथम बैठक ता० २७-१-३३ को श्री नथमलजी चोरड़िया की अध्यक्षता में श्री जैन गुरुकुल भवन (ब्यावर) में हुई।—

निम्न प्रकार कार्यवाही हुई—

१ यह तय किया जाता है कि पं० रत्न शतावधानीजी रत्नचन्द्रजी म० सा० का आया हुआ पत्र जो सभा में पढ़ा गया उसकी नकल उक्त समिति के सभ्यों को भेज दी जाय। और दोनों पूज्यों का मिलन (माघ शुक्ला १५ या उसके कुछ अर्से के बाद) के समय हाजिर रहने को साग्रह प्रार्थना की जाय।

२. श्री शतावधानीजी म० सा० का आया हुआ पत्र दोनों पूज्यों के पास श्री नथमलजी सा० चोरड़िया के साथ भेजा जाकर दोनों पूज्यों का मिलन माघ शुक्ला १५ से कुछ अर्से के बाद रखने के लिये अर्ज की जाय।

३ पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० जैतारण पधार रहे हैं और श्री मिश्रीलालजी जय-तारण पहुंच गये हैं। वहां हर प्रकार की शान्ति रखने को शास्त्रार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० सा० को विहार करके जयतारण पधारने की अर्ज की जाय और श्री नथमलजी सा० चोरड़िया को जयतारण भेजे जाय।

४ श्रीमान् नथमलजी सा० चोरड़िया दोनों पूज्यों की सेवा में जाकर दोनों पूज्य श्री को मिलने का स्थान और समय मुकर्रर करके मन्त्रियों को सूचना देवें ताकि मन्त्री इस समिति के सभी सभ्यों को मुकर्रर समय और स्थान पर हाजिर रहने का समाचार देवें।

दूसरी बैठक

उक्त सभा की दूसरी बैठक ता० २५-२६ फरवरी रविवार को श्री नवरतनमलजी सा० रियांवालों की हवेली मोती कटरा (अजमेर) में हुई।

१-संरक्षक समिति की तरफ से भेजे हुए सभ्यों ने दोनों पूज्य महाराज की सेवा में उपस्थित होकर मिलने का समय व स्थल के वास्ते अर्ज की तो पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज का फरमाना था कि श्री मिश्रीलालजी के पारणे कराने को जो शब्द भेजे थे. उन शब्दों से उन्होंने पारणा नहीं किया इस लिये उसके बदारण में तो वो (पूज्य श्री जवाहिरलालजी) नहीं है पर उनके भाव सम्प के हैं और यदि संरक्षक समिति विनंती करती है तो उन्होंने फरमाया कि वो पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज से मिलने को तैयार हैं पर मिलाप के समय वे दोनों पूज्य ही रहेंगे। पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज का फरमाना था कि उनकी भावना जैन धर्म की उन्नति हो ऐसा करने की है उनका शरीर परवश है अतः मिलाप के समय के विषय में निश्चित नहीं कह सकते पर मुनियों के प्रयास से ब्यावर की तरफ आने के भाव हैं। उपरोक्त बातों से यह समिति दोनों पूज्यों के समय और मिलने के भावकी तरफ आदर की दृष्टि से देखते हुए निर्णय करती है कि पूज्य श्री मन्नालालजी के शरीर की परवशता के कारण ब्यावर के आसपास पधारने तक पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज से आसपास ही विहार करने की प्रार्थना की जाय और जब पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज निकट पधार जायेंगे तब दोनों पूज्यों की अनुमति व अनुकूलता से स्थान व समय का समिति निर्णय करेगी।

इस प्रस्ताव की नकल दोनों पूज्य श्री की सेवा में भेजी जावे।

(२) पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज की शारीरिक परवशता के कारण भीलवाडा से विहार होकर ब्यावर के आसपास पहुंचने में अभी विलम्ब है इस लिये दोनों पूज्य महाराज के मिलाप का समय व स्थल दोनों की अनुकूलता व अनुमति से मुकर्रर करने में आयेगा अतएव श्री मिश्रीलालजी की तर्फ से जो हेन्डबिल प्रकट हुए हैं वो समिति की राय में अनावश्यक हैं उनका ऐसे हेन्डबिल निकाल कर शांत वातावरण में उत्तेजना फैलाना निष्कारण है हम उन्हें इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि यह समिति अनुकूल समय में दोनों पूज्यों का मिलाप कराने का पूर्ण प्रयास कर रही है इस दरमियान में यदि श्री मिश्रीलालजी किसी किस्म की प्रवृत्ति उतावल में करे कि जिससे संघ में या सम्मेलन में अशान्ति का मौका आवे तो उसकी जिम्मेवारी उनकी (श्री मिश्रीलालजी की) होगी।

नोट—इस प्रस्ताव की नकल श्री मिश्रीलालजी के पास भेजी जावे और प्रकाश वगैरा में भी प्रकट की जावे।

(३) उपरोक्त दोनों प्रस्तावों की नकलें मुख्य २ मुनिराजों की सेवा में भेजी जाकर उनकी सलाह मांगी जावे कि समिति के इतने प्रयास करने पर श्री मिश्रीलालजी सम्मेलन के मौके पर यदि किसी प्रकार की प्रवृत्ति (अनशनादि) करें तो उनका ऐसा करना कहां तक उचित है इस विषय में आपका स्पष्ट अभिप्राय लिखवा कर भिजवाने की कृपा करें।

(४) प्रमुख साहब का आभार मान कर श्री शांतिनाथ प्रभु की जय बोल कर सभा विसर्जन को गई।

मथमल चोरड़िया
प्रमुख

तृतीय बैठक

सभा की तृतीय बैठक श्री नवरतनमलजी सा० रीयां वालों की हवेली मोती कटरा (अजमेर) में हुई। ता० १३-१-३३ ईस्वी, मंगलवार।
निम्न कार्यवाही हुई:—

१ प्रेसीडेन्ट पगमेन एसोसियेशन ब्यावर की तरफ से एक नोटिस "कारण से कारज" नाम का निकला है उससे विदित होता है कि श्री मिश्रीलालजी चैत वदी १ से सागारी अनशन शुरू करने वाले हैं। उनकी ऐसी प्रवृत्ति में वृहत साधु सम्मेलन होने के पेश्तर धारण करना साधु सम्मेलन समिति की बैठक जो २३-२४-२५ दिसम्बर सन १९३२ को बम्बई में हुई, उसके प्रस्ताव न० ७ के विरुद्ध है तथा साधु सम्मेलन सरक्षक समिति का कार्य इसमें हस्तक्षेप करने का नहीं रहते हुए भी चतुर्विध संघ में किसी तरह की अशांति उत्पन्न न हो इस कारण उक्त समिति के सदस्यों ने दोनों पूज्य श्री की सेवा में उपस्थित होकर दोनों पूज्यों के मिलाने का प्रयास करने के बाबत ठहराव गत ता० २७ फरवरी १९३३ को किए थे जिनमें से प्रस्ताव न० २ की नकल श्री मिश्रीलालजी के पास मारफत आनन्दराजजी सुराणा अमोलकचन्दजी लोढ़ा मगनमलजी कोचेटा व मिश्रीलालजी मुणोत भिजाई गई तो श्री मिश्रीलालजी ने प्रस्ताव को अस्वीकार करते हुए यह उद्‌गार जाहिर किये कि वो इस समिति को नहीं मानते हैं जब कि वो समिति को ही नहीं मानते हैं तो समिति का ऐसा प्रयास करना भी अनावश्यक ठहरता है। दोयम सरक्षक समिति के सदस्य दोनों पूज्य श्री से मिले और बातचीत की। इस पर से समिति के सदस्यों को यह समय मिलाप का अनुकूल प्रतीत नहीं होता है व सोनार्थ मुख्य २ मुनिराजों व श्रावकों की यह सम्मति है कि वृहत् साधु सम्मेलन से पहले दोनों पूज्यों के मिलाने का प्रयास स्थगित रखना जावे तो श्रेयस्कर है। अतः इन सब बातों को विचार में रखते हुए यह समिति निर्णय करती है कि वृहत् साधु सम्मेलन में ही सब सम्प्रदायों के मिलाप के साथ २ दोनों सम्प्रदायों का मिलाप होना लाभदायक है और गत बम्बई के प्रस्ताव नं० १-२ के अनुसार अब समिति को ऐसा प्रस्ताव करने की आवश्यकता नहीं है और इस ठहराव के साथ २ श्री महावीर जैन युवक मित्र मंडल मंदसोर की तरफ से ७ दिसम्बर सन् १९३२ का जो पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज की हार्दिक भावना प्रकाश अंक ८ तारीख ११-१२ ३२ में छपी है उसके पहरा न० ३ की तरफ जनता का ध्यान फिर से आकर्षित किया जाता है।

२ यह समिति साधु सम्मेलन समिति की गत बैठक ता० २३-२४-२५ दिसम्बर को जो बम्बई में हुई उसके प्रस्ताव न० ७ के पहरा २ की तरफ चतुर्विध संघ का ध्यान आकर्षित करती हुई चतुर्विध संघ से फिर भी सादर प्रार्थना करती है कि श्री मिश्रीलालजी यदि ऐसी प्रवृत्ति अख्तियार करें कि जिससे अशांति उत्पन्न हो तो किसी भी तरह उसको उत्तेजना व सहायता न दें

वरना जो व्यक्ति उनको अशान्ति वर्धक प्रवृत्ति में उत्तेजना व सहायता देंगे तो वे वृहत साधु सम्मेलन के कार्य में बाधक बनेंगे।

३. यह समिति मंत्री को सत्ता देती है कि अनशन प्रवृत्ति के खिलाफ जो २ मुनिराज व श्रावक गण की सलाह है वो आवश्यकतानुसार प्रकाशित कर देवें।

४. पधारे हुए सदस्यों का आभार मानते हुये श्री शान्तिनाथजी के जयनाद के साथ कार्यवाही समाप्त की गई।

सरदारमल छाजेड़
प्रमुख

चौथी बैठक

निम्न प्रकार कार्यवाही हुई:—

१. मौजूदा शंकाशील वातावरण और समिति के नाम आये हुए तार चिट्ठी देखते हुए यह समिति तय करती है कि सम्मेलन के संचालक मुनिवरों को अर्ज की जाय कि श्री मिश्रीलालजी (ब्यावर मे जो अनशन कर रहे हैं) को आप संयुक्त राय से ऐसा कहला भेजें कि बत्तीस ही सम्प्रदाय के सप (एकता) का सवाल सम्मेलन में चल रहा है और सम्भव है कि सभी सम्प्रदायों का निकटवर्तीपना होने की उम्मीद है तो फिर पूज्य हुक्मीचन्दजी म० की दोनों सम्प्रदाय का संप भी स्वाभाविक ३२ सप्रदायों के साथ २ हो जायगा। अतः आप पारणा कर लें।

२ यदि उक्त प्रकार जैसा सयुक्त सदेश मुनिराज भेज देवें तो ठीक है। वरना सरक्षक समिति की तीसरी बैठक के प्रस्तावानुसार मुनिवरों के अभिप्राय जो समिति के पास आये हैं वे प्रकट कर दिये जांय।

३. यह समिति साधु सम्मेलन समिति बम्बई की बैठक के प्रस्ताव न० ७ के B और C विभाग जो निम्न प्रकार हैं उस पर सभी मुनिवरों का ध्यान खींचती है।

नकल.

B अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन साधु-सम्मेलन द्वारा ऐक्य व प्रेम करने का प्रयास किया जा रहा है, ऐसी हालत में किसी भी व्यक्ति को भविष्य में ऐसी कार्यवाही करने की ओर ऐसे २ कार्य करने वालों को किसी प्रकार का उत्तेजन व सहायना देने की यह समिति सख्त मनाई करती है।

C. तथा सम्मेलन को सफल चाहने वाले सभी मुनिवरों और आगेवान श्रावकों से साग्रह प्रार्थना करती है कि, भविष्य में ऐसे बाधक प्रसग प्राप्त होने पर सयुक्त बल से ऐसे कार्य की अनुचितता जाहिर करके और उचित कार्यवाही करके ऐसे प्रसगों को रोकने का यथाशक्य प्रयास करें। इतना कार्य करके श्री शांतिनाथ प्रभु की जयनाद के साथ सभा विसर्जन हुई।

मोतीलाल मुथा
प्रमुख

पांचवीं बैठक

उक्त समिति की पांचवीं बैठक ता० १६-४-३३ को सुबह में स्वागत कारिणी की आफिस (लाखन कोटड़ी) में हुई।

निम्न प्रकार कार्यवाही हुई—

१ वर्तमान परिस्थिति को शान्त करने और सत्य हकीकत से जनता को वाकिफ करने के लिये उपरोक्त सज्जनों के नाम से एक जाहिर निवेदन निम्न प्रकार छपवा कर वितीर्ण किया जाय। यह निवेदन संरक्षक समिति की तरफ से नहीं किन्तु उक्त गृहस्थों की तरफ का है।

(जाहिर निवेदन)

श्री मिश्रीलालजी जो ब्यावर में अनशन कर रहे हैं उस विषय में कई सज्जनों ने तार तथा पत्र द्वारा सपक्ष विपक्ष में अनेक प्रकार से सूचना दी है। हमें इस विषय में निम्न प्रकार खुलासा करना आवश्यक प्रतीत होता है। जिससे कि जनता सत्य बात से वाकिफ हो सके

श्री मिश्रीलालजी के प्रथम बार के अनशन के बाद साधु-सम्मेलन समिति की बम्बई बैठक में निम्न प्रकार प्रस्ताव पास किया था।

पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज के दोनों सम्प्रदायों में सम्प कराने के बहाने से श्री मिश्रीलालजी ने अनावश्यक अनशन करके सारी समाज में जो अशान्ति फैला दी है इससे यह समिति अपना घोर असंतोष प्रकट करती है। इसी प्रकार महात्मा गांधीजी, पं० रत्न शतावधानीजी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज पं० मुनि श्री त्रिलोकचन्द्रजी महाराज आदि ने भी उक्त कार्य को धर्म विरुद्ध तथा अनुचित बतलाया है।

अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन साधु सम्मेलन द्वारा ऐक्य व प्रेम करने का प्रयास किया जा रहा है, ऐसी हालत में किसी भी व्यक्ति को भविष्य में ऐसी कार्यवाही करने को और ऐसे कार्य करने वालों को किसी प्रकार का उत्तेजन व सहायता देने की समिति सख्त मनाई करती है।

तथा सम्मेलन को सफल बनाने वास्ते सभी मुनिवरों और भाग्यवान श्रावकों से साग्रह प्रार्थना करती है कि भविष्य में ऐसे बाधक प्रसंग प्राप्त होने पर संयुक्त बल से ऐसे कार्य की अनुचितता जाहिर करके और उचित कार्यवाही करके ऐसे प्रसंगों को रोकने का यथाशक्य प्रयास करें।

भविष्य में साधु सम्मेलन के वातावरण को विशुद्ध रखने का एक संरक्षक समिति की स्थापना हुई। उक्त समिति दोनों पूज्यों को मिलाने आदि के बाबत ठीक २ कार्यवाही करती रही और श्री मिश्रीलालजी के पास भी अनशन न करने का प्रस्ताव भेजा। प्रस्ताव इस तरह है।

पूज्य श्री मन्नालालजी महाराज सा० की शारीरिक परवशता के कारण भीलवाड़ा से विहार कर ब्यावर व आसपास पहुंचने में उनको अभी विलम्ब है। इस लिये दोनों पूज्य महाराज के मिलाप का समय व स्थान बाबत दोनों की अनुकूलता व अनुमति मुकर्रर करने में आवेगा अतएव श्री मिश्रीलालजी को बार से जो टेलिग्राम प्रकट हुए हैं वे समिति की राय में अनावश्यक हैं। उनका ऐसे

हैण्डबिलों को निकाल कर शांत वातावरण में उत्तेजना फैलाना निष्कारण है। हम उन्हें इस बात का विश्वास दिलाते हैं कि यह समिति अनुकूल समय में दोनों पूज्यों का मिलाप कराने का पूर्ण प्रयास कर रही है। इस दरमियान में यदि श्री मिश्रीलालजी किसी प्रकार की प्रवृत्ति उतावल में करें कि जिससे संघ में अशान्ति का मौका आवे तो उसकी जिम्मेवारी उन पर (श्री मिश्रीलालजी पर होगी)।

नोट—इस प्रस्ताव की नकल श्री मिश्रीलालजी के पास भेजी जावे, और प्रकाश वगैरा में भी प्रकट की जावे। उपरोक्त नोट के अनुसार इस प्रस्ताव को श्री आनन्दराजजी सुराणा, श्री अमोलकचन्दजी लोढ़ा, श्री मिश्रीमलजी मुणोत और श्री मगनमलजी मा० कोचेटा के साथ श्री मिश्रीलालजी को ब्यावर (बालिया के बगले में) पहुँचाया। प्रस्ताव को पढते ही उन्होंने उसे फेंक दिया और कहा कि मैं समिति को नहीं मानता। बाद में ब्यावर में अजमेर सम्मेलन तक के लिये प्राय. सभी मुख्य संतों ने अनशन न करने के लिये समझाया, किन्तु श्री मिश्रीलालजी ने अपने हठ को नहीं छोडा, न किसी का कहना माना।

संरक्षक समिति ने सभी सम्प्रदाय के मुख्य २ मुनिराजों से श्री मिश्रीलालजी के होने वाले अनशन के विषय में अभिप्राय माँगे थे, उस पर से बहुत से सन्तों के अभिप्राय आये हैं, कि इस समय का अनशन अप्रासंगिक—अनुचित-तथा सम्मेलन के काम में बाधक है। उक्त प्रकार के सन्देश समिति की फाइल में मौजूद हैं।

तत्पश्चात् दोनों पूज्यों में एकता स्थापित करने के लिये पाच आगेवान मुनिवरों को पंच मुकर्रर किये पंचों ने भूतकाल का फैसला कर दिया है। अब दोनों पूज्यों को मिल कर अपना भावी बँधारण विचार करने को पंचों ने भलामण करदी है। उन्हें जहाँ पर आवश्यकता होगी, वहां पंच भी सहायता करने तैयार हैं। कई वर्षों की भिन्नता मिटाने में कुछ समय की आवश्यकता होती है। जो कुछ शुद्ध वातावरण हुआ है, वह बहुत थोडे अर्से में और सन्तोषजनक हुआ है, यह जान कर जनता को हम विनती करते हैं कि सम्मेलन का कार्य बड़ी शान्तिपूर्वक चल रहा है, बर्त्तीस ही सम्प्रदायों का निकटवर्तीपने की चर्चा चल रही है, बहुत सफलता होने की उम्मीद है। फिर दोनों पूज्यों की एक्यता का सवाल ही नहीं रहता है। दोनों पूज्यों के बीच में भी अच्छे २ मुनिराज तथा श्रावक भरसक कोशिश कर रहे हैं, अतः जनता धैर्य रक्खे।

साधु-सम्मेलन

जिस साधु-सम्मेलन के लिये, लगभग दो वर्ष से अनवरत परिश्रम किया जा रहा था, जिसे सफल बनाने के निमित्त बड़े २ श्रीमन्त प्रवासरूपी तप कर रहे थे और एक सामान्य मनुष्य की भांति सर्दी-गर्मी की चिन्ता किये बिना, रेल, जहाज, मोटर, यहां तक कि बैल-गाडियों में बैठ-बैठ कर लम्बे सफर करके, मुनिराजों से अजमेर पधारने की प्रार्थना कर चुके थे; जिसे सफल बनाने के निमित्त. ८-८ सौ माइल तक के लम्बे प्रवासों को, सर्दी-गर्मी का कष्ट सहन करते हुए एवं नंगे पैर चल कर मुनिराजों ने पूर्ण किया था, वह साधु-सम्मेलन, विघ्नसन्तोषियों की भविष्य वाणी को झूठी साबित करके यदि सम्पन्न हो, तो इसमें आश्चर्य की बात ही क्या थी ?

इतिहास से मालूम होता था, कि पञ्चमीपुर तथा मथुरानगरी में शताब्दियों पूर्व साधु सम्मेलन हुए थे। कौन जानता था कि 'इतिहास अपनी पुनरावृत्ति स्वयं करता है" यह कहावत इस सम्बन्ध में इतनी शीघ्रता से चरितार्थ हो जायगी। किसी ने कल्पना भी नहीं की थी, कि जो मुनिराज रेल पर नहीं चढ़ते मोटर-बग्घी की तो बात ही क्या है बैल-गाड़ी पर भी नहीं बैठते, किसी सवारी पर तो बैठना दूर रहा जो भयङ्कर सर्दी या गर्मी में कङ्करीली या कँटीली जमीन पर चलते समय भी जूता नहीं पहनते खड़ाऊँ नहीं पहनते, एक दिन से अधिक शीत निवारणार्थ कपड़े अपने पास नहीं रख सकते जिनके भोजन की व्यवस्था अनुकूल परिस्थिति पर मिले हुए अन्न पर अवलम्बित है, जो एक-दूसरे से सैकड़ों मील दूर हैं और सैकड़ों वर्षों से जिनका परस्पर मिलन होने की कल्पना भी नहीं की गई वे इतनी शीघ्रता से इन सारे कष्टों का मुकाबिला करते हुए इतना लम्बा प्रवास पूर्ण करके अजमेर में सम्मिलित होंगे और यह सब हुआ कितनी शीघ्रता से? केवल दो वर्ष के भीतर। पंजाब के झगड़े की शान्ति के निमित्त डेपुटेशन जाता है और श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज, साधु-सम्मेलन करने की सूचना देते हैं बस यहीं से इस महान् यज्ञ का सूत्रपात होता है। महापुरुषों का एक संकेत वटबीज की भांति बड़े २ परिणाम उत्पन्न कर देता है। इसी तरह पूज्य श्री के उस संकेत ने ही इतिहास की पुनरावृत्ति का यह सुन्दर समय उपस्थित किया।

जो लोग छिद्र संतापी हैं वे प्रत्येक कार्य का बुरा परिणाम देखने को उत्सुक रहते हैं। इसी प्रकार के लोगों ने भविष्यवाणी की थी कि साधु-सम्मेलन का प्रयत्न निर्मूल है वह कभी हो ही नहीं सकता। लेकिन ऐसे लोगों की भविष्यवाणी से अधिक मूल्य उन लोगों की भविष्यवाणी का है जो यह कह गये हैं कि सच्ची लगन से किये हुए प्रत्येक कार्य का अच्छा परिणाम हुए बिना नहीं रहता। ठीक इसी तरह साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में भी समझना चाहिये। क्या साधु-सम्मेलन समिति डेपुटेशन अजमेर श्री संघ सारे समाज और सब से बढ़कर पूज्य मुनिराजों का परिषहों का मुकाबिला करते हुए किये हुए उग्र विहार का परिश्रम कभी व्यर्थ जा सकता था? कदापि नहीं। अस्तु।

इस समय भिन्न २ प्रान्तों से पधारे हुए, लगभग २०० मुनिराज अजमेर में विराजमान थे। इन सभी मुनिराजों के दर्शन का लाभ उठाने के निमित्त हजारों की संख्या में गृहस्थ लोग अजमेर आ चुके थे। कोई गली, कोई मुहल्ला कोई सड़क और कोई रास्ता नहीं बचा था जहां बाहर से आये हुए गृहस्थ न ठहरे हों। मुनिगण लाखनकोठरी में विराजमान थे और गृहस्थ लोग सब जगह। इसी कारण लाखन कोटड़ी मुनिमय और अजमेर जैनमय हो रही थी।

ता० ५ अप्रेल तदनुसार चैत्र शुक्ला १० सं० १९९० को साधु-सम्मेलन चतुर्विध,-श्रीसंघ की उपस्थिति में प्रातः ९ बजे से प्रारम्भ होगा यह खबर पहले से ही फैल चुकी थी, अतः सवेरे ही लोगों की भीड़ सम्मेलन के नोहरे में एकत्रित हो गई थी। नौ बजे के लगभग, सभी मुनिराज एवं आचार्य श्री सम्मेलन के नोहरे में उस जगह पधार गये जहां साधु-सम्मेलन प्रारम्भ होने वाला था। खुले आंगन में लोगों की भीड़ जमा थी और सामने बरामदे में समस्त मुनिराज बिना छोटे बड़ों के भेदभाव के विराजमान थे। जिसमें अगली ही लाइन में शतावधानी मुनि श्री रत्नचन्द्रजी महाराज

युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज गणीजी श्री उदयचन्द्रजी पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज, पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज, पूज्य श्री छगनलालजी महाराज आदि विराजमान थे। ये महानुभाव, अपने २ ढग के प्रसिद्ध मुनिराज थे, अतः इनके आगे विराजने से, दर्शनार्थं उमडी हुई जनता को दर्शनों के लाभ का सुयोग सरलता पूर्वक प्राप्त हो गया।

भगवान महावीर के समवसरण का जो वर्णन शास्त्रों मे आया है, उसे आधुनिक काल के लोग, केवल भक्ति के बाहुल्य से कल्पना की हुई बात समझते हैं। लेकिन जिन लोगों ने अजमेर में यह समवसरण देखा है, वे अनुमान से जान सकते हैं, कि जब इस पांचवे आरे में, सामान्य मुनिराजों का ऐसा समवसरण हो सकता है, तो उस जमाने में कैसा हुआ होगा। लम्बा-चौड़ा बरामदा सैंकडों मुनिराजों से खचाखच भरा था, जिनमें सामान्य से सामान्य और बड़े से बड़े विद्वान मुनिराज समस्त विराजमान थे। पश्चिम की तरफ का लम्बा चौड़ा और ऊँचा चबूतरा, सतियों एवं गृहस्थ महिलाओं से भरा था। बीच का मैदान और आसपास की प्रत्येक ऊची नीची जगह पुरुषों से भरी थी। इस तरह हजारों मनुष्यों के चतुर्विध संघ की उपस्थिति में होने वाली यह सभा, सचमुच ही एक छोटा सा समवसरण थी। जिन लोगों ने यह सभा नहीं देखी है, वे तो उसकी कल्पना भी नहीं कर सकते। जो उसमें सम्मिलित हुए वे वास्तव में धन्य हो गये, क्योंकि ऐसा मुनिराजों का सगठित होकर बैठना, पिछली पचास पीढियों से नहीं देखा गया था और निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता, फिर ऐसा सुन्दर सम्मेलन कभी होगा भी या नहीं और यदि होगा, तो कब होगा। अस्तु।

ठीक सवा नौ बजे, पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज ने, नवकार मन्त्र से मगलाचरण किया। आपके पश्चात् शतावधानी पण्डित श्री रत्नचन्द्रजी महाराज तथा कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज ने 'किं कर्पूरमय सुधारसमय। आदि श्री पार्श्वनाथ भगवान् की विस्तृत प्रार्थना की। आप लोगों की प्रार्थना समाप्त हो जाने पर, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने—'श्री जिनराज सुपार्श्व पूरो आश हमारी' आदि प्रार्थना गाई। आपके पश्चात्, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने, प्राकृत भाषा में शास्त्रपाठ फरमाया और फिर अपना भाषण यों प्रारम्भ किया।

पूज्य मुनिवरों तथा श्रोतागण, आज आप लोगों का यहाँ पधारना जिस पवित्र उद्देश्य से हुआ है, उसका आप लोगों के सन्मुख मै क्या वर्णन करूं? उसे तो आप लोग भली-भांति जानते हो हैं। कोटिशः धन्यवाद है उन महापुरुष को, जिनके उपजाऊ मस्तिष्क से यह साधु-सम्मेलन की योजना जिसके कारण साधुओं के हृदय में इतना प्रबल उत्साह और श्रावकों के हृदय में इतनी जबरदस्त भक्ति उत्पन्न हो गई है— आप लोगों को, क्या इस बात का पता है, कि यह साहस, भक्ति और शक्ति के विचित्र सम्मेलन की योजना, पंजाब भूमि में विचरने वाले श्री सज्जैनाचार्य पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के उस प्रारम्भिक प्रयत्न का फल है, जो उन्होंने श्री जैन धर्म की रक्षा के लिये किया है। पूज्य श्री स्वय इस सम्मेलन में पधारते, किन्तु वृद्धावस्था के कारण इतना लम्बा सफर नहीं कर सकते थे। उनके हृदय में इस प्रसंग पर पधारने की उमङ्ग तो थी, किन्तु शारीरिक शक्ति का अभाव था। अपनी असमर्थता के ही कारण, उन्होंने हम लोगों को अपना दूत बना कर भेजा है। इसी लिये हमारा कर्त्तव्य है कि, आप लोगों को पूज्य श्री का पवित्र सदेश सुनावें। यों तो उन्होंने एक लिखित संदेश सभा में सुनाने के लिये भेजा है, किन्तु अभी मैं उनके ये

विचार ही कहूंगा जो उन्होंने फरमाये हैं। लिखित सन्देश अवकाश देख कर पढ़ा जावेगा। उन्होंने फरमाया है कि—कि अब समाज को अपने कल्याण के पथ पर विचार कर लेना चाहिये। जैन जाति दिन २ अधःपतन की ओर जा रही है इसका कारण खोज निकालना और उसकी रोक का प्रयत्न करना अत्यन्त आवश्यक है। साधु-मुनिराजों पर ही समाज के उत्थान का सारा भार है, अतः उन्हें भी इस विषय पर विचार करना चाहिये।

जैन धर्म पर आने वाली विपत्ति और उस पर होने वाले आक्रमणों से उसकी रक्षा करने के लिये ही पूज्य श्री ने यह योजना बनाई थी। उन्हीं की कृपा का यह फल है कि हमारे समाज के बड़े २ विद्वान जैसे शतावधानीजी पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज पूज्य श्री मुन्नालालजी म० आदि महात्मा एकत्रित हुए और धर्म तथा समाज की रक्षा के विषय में कोई उपाय ढूंढने के प्रयत्न में लग सके हैं। आज हम लोग जिस उद्देश्य से यहां एकत्रित हुए हैं उसे सम्मेलन का आशय भलीभांति समझ कर-पूरा करने का प्रयत्न करना चाहिये। सम्मेलन में सम्मिलित होने से पूर्व हम लोगों को अपने हृदय पर से रागद्वेष रूपी आवरण उतार डालना चाहिये। जिस प्रकार से स्नान करने वाला मनुष्य स्नान करने से पूर्व अपने वस्त्र उतार डालता है उसी तरह हमें भी इस सम्मेलन रूपी भाव गंगा में नहाने से पहले अपने रागद्वेष को छोड़ देना चाहिये। इस समय सब लोगों को यह बात अपने हृदय से निकाल देनी चाहिये कि हमारा पक्ष गिर जावेगा या उनका पक्ष बढ़ जावेगा। हमें अपना साम्प्रदायिक भेदभाव भूल कर इस समय यही समझना चाहिये कि हम सब लोग एक हैं भगवान के शिष्य हैं। भगवान महावीर का, साधुओं के लिये सदैव यही उपदेश रहा है कि जहां जाओ वहां शांति का ही उपदेश दो। ऐसी दशा में यहां जब हम लोग एकत्रित हुए हैं तो शान्ति का उपदेश शान्तिपूर्ण व्यवहार तथा शान्त विचार करने के अतिरिक्त और क्या कर सकते हैं?

आजकल बहुत से लोग इस बात का आक्षेप करते हैं कि अहिंसा ने हमें कमजोर बना दिया है निर्बल कर डाला है। किन्तु असल में वे लोग इस बात को समझते ही नहीं कि अहिंसा है क्या चीज? जहां न्याय है वहीं अहिंसा है। अहिंसा और न्याय दोनों पर्यायवाची शब्द हैं। अहिंसा ही प्रेम है। जहां न्याय और प्रेम का अभाव है उसी स्थिति का नाम हिंसा है। जैनी लोग न्याय को ही अहिंसा कहते हैं। अस्तु।

आज यहां एकत्रित सभी महानुभावों का कर्तव्य है कि वे रागद्वेष का परित्याग करके गुण ग्रहण करें और समाज तथा धर्म के हितैषी बन कर इस सम्मेलन को सफल करने का प्रयत्न करें। आज हम लोगों के सामने श्री भद्रबाहु स्वामी आदि आचार्यों की तरह अपना मार्ग निश्चित करने का अवसर आ गया है। अतः भेदभाव को सर्वथा भूल कर प्रेम से काम लेना चाहिये।

संघ धर्म का अर्थ ही यह है कि कुल स्थविर गण-स्थविर आदि सब लोग एकत्रित हों और अपनी दशा का विचार तथा उसके सुधार का प्रयत्न करें।

(आपका इतना भाषण हो चुकने पर सभा ने पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज का सन्देश सुनाने का आग्रह किया अतः आपने वह सुनाना प्रारम्भ किया।

जिनशासन हितैषी उपस्थित गच्छाधिपति व अन्य प्रतिनिधि मुनिवरों की ओर,

वन्दे जिनवरम् !

कोई दो वर्ष से अधिक हुए, कि अखिल भारतवर्षीय श्वेताम्बर-स्थानकवासी जैन कान्फरेन्स का डेपुटेशन, टीप के सम्बन्ध में मेरे पास अमृतसर में आया था तो मुझे अपनी चिरस्थायी मनो-कामना, कि चार तीर्थ के कल्याण का साधन, शासनाधार मुनिराजों का जो काल और दूरी के कारणों से, शताब्दियों से भिन्न २ विचर रहे हैं, एक स्थान पर एकत्रित होकर परस्पर वार्तालाप करना और संगहित का मार्ग नियत करना ही है, प्रकट करने का अवसर मिला था। मुझे यह प्रतीत कर अत्यानन्द हो रहा है, कि शासन हितैषी और चतुर्तीर्थ प्रेमियों के अथक् परिश्रम से वह शुभ दिन आ पहुंचा है। वृद्धावस्था और शारीरिक निर्बलता इसमें बाधक है, कि मैं स्वयं सम्मेलन में सम्मिलित होकर आपकी विचार-चर्चाओं में सहयोग दूं और परस्पर साक्षात् से लाभ उठा सकूँ, तथापि मैंने अपने युवाचार्य और अन्य प्रतिष्ठित मुनिराजों को, वीरशासन के कल्याण की साधना के चिन्तन में सहयोग देने के लिये भेजा है।

सर्व भारतवर्ष के साधुमार्गी चतुर्विध सघ का ही क्या, अपितु अन्य जैन धर्मावलम्बी की दृष्टि भी इस सम्मेलन की ओर अत्यन्त उत्सुकता से लगी हुई है। सम्मेलन से यह प्रबल आशा है, कि वह सर्व सघ को एक धारा में प्रवाहित करने और जैन सिद्धान्त के आधार पर श्रद्धा तथा आचरण में एकता लाने का कारण होगा। क्षमाश्रमण देवर्द्धिगणि ने जो कार्य डेढ हजार वर्ष पूर्व आरम्भ किया था, उस कार्य के पुनरारम्भ का भार भी आप पर होगा। सम्मेलन अपने कारनामों से परखा जावेगा। साधु वर्ग जितना ऊँचा उठे उतना ही संघ को अन्य अंग उठा सकेगा। मुझे पूर्ण विश्वास है कि आप लोगों को विचारमन्थन के फलस्वरूप, श्री संघ का भविष्य अपूर्व मनोहर और उज्जवल होगा और आप महानुभावों का दूरदूरान्तर का देशाटन तथा अनेक परिषहों का सहन, शासनतीर्थ की वास्तविक यात्रा ॥ इति ॥

उपरोक्त सन्देश (जो छपा हुआ था उसी समय सभा में बांटा भी गया था) पढकर सुनाने के बाद उपाध्यायजी महाराज ने फरमाया, कि—

यह उन वयोवृद्ध पूज्य श्री का पवित्र सन्देश है। उन्हीं के अनुरोध से आज हम सब लोग क्रियाशुद्धि, ज्ञानशुद्धि आदि के लिये यहां एकत्रित हुए हैं। मेरी, सब लोगों से पुनः यह नम्र प्रार्थना है कि हम लोग राग द्वेष का परित्याग करके ही सम्मेलन में विचार करें।

आपका भाषण समाप्त हो जाने पर, श्री मजैनाचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज ने, अपना भाषण यों प्रारम्भ किया—

महानुभावो ! मैंने सम्मेलन के विषय में एक संस्कृत कविता की है। उस कविता में, इस सम्मेलन-से बड़ी आशा प्रकट की गई है। वह कविता, मैं आप लोगों के सामने सुनाता हूं-

सफलयतु मुनिसम्मेलनमदो, विजयतां मुनिसम्मेलन मदः।
कालाद्वहोः सुपुप्तां जैनीं, जाति महोसम्मदः।
सम्बोधयति ने तुमार्हतमतध्वानां सम्पदः ॥ १ ॥

साधुवादममियातु साधुधीर्गम्यतु दुर्लभं मदः।
शान्तिं भजतु तपस्वि मानसं द्विविधोऽपरसतु गदः ॥ २ ॥
सर्वेषामपि जिनानुगानां वैमुख्यं संसदः।
गुणानुरागो निवर्ततां वैमत्यो कोपशोषदः ॥ ३ ॥
पराधीनता मापिव भजते कुमतिपको कदवः।
कापथमिदं हेयममिपसे निवारय द्विपदः ॥ ४ ॥

इसका आशय यह है कि यह मुनि सम्मेलन सफल हो और विजयलक्ष्मी को प्राप्त करे। चिरकाल से सोता हुआ जैन समाज जागे और कल्याण का पथ ग्रहण करे। आज हृदय का हर्ष कहता है कि साहसमार्ग की उन्नति हो। धर्म की उन्नति की ओर आज सब मुनि-महात्माओं की बुद्धि धन्यवाद की पात्र है। किन्तु यह धन्यवाद तभी सार्थक हो सकता है जब सफलता की प्राप्ति तथा पवित्र उद्देश्य की पूर्ति हो जाय।

साधुवाद का उदय हो और दमनीय अहंभावना रूपी दीवार हम लोगों के बीच में खड़ी है, जो हमारी फूट का सब से बड़ा कारण है। अब उस दीवार को भेदन करने का समय आगया है। जो लोग निर्माण करने की शक्ति में दक्ष हैं, वे निर्मित वस्तु का भेद न करने में क्यों न सफल होंगे? निर्माण करने का कार्य तो चतुर कारीगर करता है किन्तु भेदन कार्य तो एक मामूली से मामूली कारीगर भी कर सकता है। रागद्वेष नष्ट हो अहंभावना छूटे, समस्त अनुगामियों की विमुखता छूटे और उन्हें सद्ज्ञान की प्राप्ति हो, तभी धर्म तथा समाज का कल्याण सम्भव है। इस सम्मेलन का साधु-महात्माओं तथा श्रावकों पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा ऐसी आशा है।

इस सम्मेलन में उपस्थित महात्माओं से सद्भावना की आशा करता हुआ, मैं विनम्र अनुरोध करता हूं कि सब महानुभाव सफलता के अनुकूल ही व्यवहार करें। ध्यान रहे कि कठिन साधना करने पर ही सफलता के दर्शन होते हैं।

आपका भाषण समाप्त होने पर कविवर मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज ने अपना भाषण निम्न भावना से प्रारम्भ किया।

शासन देव दया कर सब के चित्त की चाँप हटावेगा।
परम प्रेम से यही भावना विद्युत वेग बढ़ावेगा॥
भक्त वीर ज्ञाता के दिल में भावना खूब जमावेगा।
ढाढा झिमर को नम्र बना के पग २ टेक रमावेगा॥
झगड़ा बड़ा गच्छ का हट जावे रगड़ा सब मिट जावेगा।
समाज का मैला विषरस तज समरस बीज समावेगा।
कदाग्रह को काट मूल से सरल सरल बन जावेगा।
सन्तों का सम्मेलन पूरण सन्त-शिष्य बन जावेगा॥

हे कृपानाथ! हे शासन देव! मेरे हृदय की ऐसी चाँप हटाइये कि जिससे बिजली उत्पन्न हो जाय। सब लोग कहते हैं समाज सुषुप्त है। किन्तु मैं कहता हूं कि समाज सुषुप्त नहीं, बल्कि

मृतप्राय है। देखो कि आर्य समाज अभी केवल ५० वर्ष पुरानी संस्था है, किन्तु उसमें सब मिला कर ६५५ संस्थायें हैं, जिनमें ३१ तो गुरुकुल ही हैं। हमारे समाज में, हिलती-डुलती हुई थोड़ी सी पाठशालाएँ और गुरुकुल हैं। इसमें केवल गृहस्थों का ही दोष नहीं है, हमारा भी दोष है। कारण कि हमने ऐसा उपदेश दे रक्खा है कि रुपया न खर्च करना चाहिये, इससे पापहोता है। आज यहां भिन्नभिन्न सम्प्रदायों और प्रान्तों के मुनिराज विराजमान हैं। ये सब, यहां इकट्ठे होने के बाद भी यदि सम्मेलन असफल हो जाय, तो यह हमारा ही दोष है। गृहस्थों ने, पिछले दो वर्षों में जैसा परिश्रम साधु-सम्मेलन के लिये किया है, उसे सभी जानते हैं। हमें, गृहस्थों को जगाना चाहिये, उसके बदले गृहस्थों को हमें प्रतिबोध देना पड़ता है। गृहस्थों ! आप लोग हमें अन्नदाता कहते हैं, किन्तु वास्तव में हम लोग अन्नदाता नहीं हैं, सच्चे अन्नदाता तो तुम्हीं हो, कारण, कि तुम्हीं हमें अन्न देते हो लेकिन हम उस अन्न के बदले तुम्हें क्या देते हैं ?

जब तक उदारता और प्रेम आदि सद्गुण हम में ही नहीं है, तब तक तुम से उनकी आशा कैसे की जासकती है ? तरण तारण किसे कहा जाता है ? तरण तारण वही है, जो खुद भी तरे और दूसरों को तारे। भगवान महावीर के उपदेशामृत का जिन्होंने पान किया है, उनमें वैर भाव तो कभी हो ही नहीं सकता। हम लोग प्रति दिन दो-दो बार कहते हैं, कि सारी दुनिया के जीव समान हैं, कोई छोटा बड़ा नहीं है। सब हमारे मित्र हैं, कोई शत्रु नहीं। किन्तु इसी के अनुसार जब हम अपने हृदय को बनावें, तभी उसमें से प्रेम के झरने बह सकते हैं। मित्र वही हो सकता है, जिसमें समानता हो। साधु का लक्षण है—जिसके हृदय में प्रेम हो, आंखों में अमृत भरा हो। उत्थान केवल व्याख्यान से नहीं हो सकता, कार्य से हो सकता है। हमारे वेश में कुछ नहीं है, जो कुछ है, वह अपने आत्मा में ही है। यदि तृष्णा नहीं छूटी, तो फिर साधु होने से ही क्या लाभ ? आज, महात्मा-गांधीजी का भाषण सुनने दो लाख मनुष्य एकत्रित होते हैं और हमारा भाषण सुनने को लोग आते नहीं, इसका कारण क्या है ? कारण यह है, कि महात्माजी गृहस्थ के वेष में साधु हैं। पच महाव्रतधारी से पूछना पड़ता है, कि महाराज ! आप सत्य कह रहे हैं या असत्य ? इस प्रकार का प्रश्न पंच महाव्रतधारियों से पूछा जाता है, इसका कारण क्या है ? आज हमारी स्थिति कमजोर हो गई है। जैन धर्म मर्दों का धर्म है, नामर्दों का नहीं। हम लोगों को एक करने के लिये आप परिश्रम करते हैं। जो कार्य हमें करना चाहिये, वह आज आप लोगों को करना पड़ रहा है। हम लोग भंगी के साथ बातचीत कर सकते हैं, किन्तु एक साधु दूसरे साधु से बात भी नहीं कर सकता। कारण कि ऊँचनीच का भेद वहाँ बीच में आ जाता है। भेदभाव के बड़े २ पहाड़ हम लोगों के बीच में पड़े हैं। जब वे पहाड़ बीच से निकलें तभी हमारा उत्थान सम्भव है। सारांश यह, कि सम्मेलन की सफलता तभी सम्भव है, जब हम में, ऐक्य उत्पन्न हो तथा हृदय की कालिमा दूर हो जाय।

० ० ० ० ०

आपके भाषणोपरान्त, श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने, 'नमोलोए सव्वसाहूणं' से प्रारम्भ करके, विस्तृत शास्त्रपाठ फरमाया और फिर अपना भाषण यों प्रारम्भ किया—

साधुवादमभिप्राप्तु साधुर्योगीश्वरस्तु दुर्लभ मदः ।
शान्तिं भजतु तपस्वि मानसं द्विविधोऽपरसतु गदः ॥ २ ॥
सर्वेषामपि जिनानुगानां वैमनस्यं संसदः ।
गुणानुरागो निवर्ततां चेक्यो कोविदः ॥ ३ ॥
पराधीनता मानिव भजते कुमतिपदं कहवः ।
कापथमिदं हेयमभिपश्ये निवारय द्विपदः ॥ ४ ॥

इसका आशय यह है कि यह मुनि सम्मेलन सफल हो और विजयलक्ष्मी की प्राप्ति करे। चिरकाल से सोता हुआ जैन समाज जागे और उत्थान का पथ ग्रहण करे। आज हृदय का हर्ष कहता है कि भाग्यभाग की उन्नति हो। धर्म की उन्नति की ओर आज सब मुनि-महात्माओं की बुद्धि धन्यवाद की पात्र है। किन्तु यह धन्यवाद तभी सार्थक हो सकता है जब सफलता की प्राप्ति तथा पवित्र उद्देश्य की पूर्ति हो जाय।

साधुवाद का उदय हो और दम्भीय अहंभावना रूपी दीवार हम लोगों के बीच में खड़ी है, जो हमारी फूट का सब से बड़ा कारण है। अब उस दीवार को भेदन करने का समय आगया है। जो लोग निर्माण करने की शक्ति में दक्ष हैं, वे निर्मित वस्तु का भेद न करने में क्यों न सफल होंगे? निर्माण करने का कार्य तो चतुर कारीगर करता है किन्तु भेदन कार्य तो एक मामूली से मामूली कारीगर भी कर सकता है। रागद्वेष नष्ट हो अहंभावना छूटे, समस्त अनुगामियों की विमुखता छूटे और उन्हें सद्ज्ञान की प्राप्ति हो, तभी धर्म तथा समाज का कल्याण सम्भव है। इस सम्मेलन का साधु-महात्माओं तथा श्रावकों पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा ऐसी आशा है।

इस सम्मेलन में उपस्थित महात्माओं से सद्भावना की आशा करता हुआ मैं विनम्र अनुरोध करता हूं कि सब महानुभाव सफलता के अनुकूल ही व्यवहार करें। ध्यान रहे कि सतत साधना करने पर ही सफलता के दर्शन होते हैं।

आपका भाषण समाप्त होने पर कविवर मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज ने अपना भाषण निम्न भावना से प्रारम्भ किया।

शासन देव दया कर सब के दिल की चोप बढ़ावेगा।
परम प्रेम से यही भावना विद्युत वेग बढ़ावेगा॥
मत वीर दाता के दिल में आतम ज्योत जमावेगा।
ठण्डा जिगर को गरम बना के, रग २ तेज रमावेगा॥
अपना मत मत का हठ जावे रगड़ा सब मिट जावेगा।
समाज का मैल विषमय तज समरस बीज समावेगा॥
कदाग्रह को काट मूल से सरल सरल बन जावेगा।
सन्तों का सम्मेलन पूरण सन्त-शिष्य बन जावेगा॥

हे कृपानाथ! हे शासन देव! मेरे हृदय की ऐसी चोप दीजिये कि जिससे जिसकी कल्याण हो जाय। सब लोग कहते हैं समाज सुषुप्त है। किन्तु मैं कहता हूं कि समाज सुषुप्त नहीं, बल्कि

मृतप्राय है। देखो कि आर्य समाज अभी केवल ५० वर्ष पुरानी संस्था है, किन्तु उसमें सब मिला कर ६५५ संस्थायें हैं, जिनमें ३१ तो गुरुकुल ही हैं। हमारे समाज में, हिलती-डुलती हुई थोड़ी सी पाठशालाएँ और गुरुकुल हैं। इसमें केवल गृहस्थों का ही दोष नहीं है, हमारा भी दोष है। कारण कि हमने ऐसा उपदेश दे रक्खा है कि रुपया न खर्च करना चाहिये, इससे पापहोता है। आज यहां भिन्नभिन्न सम्प्रदायों और प्रान्तों के मुनिराज विराजमानहैं। ये सब, यहां इकट्ठे होने के बाद भी यदि सम्मेलन असफल हो जाय, तो यह हमारा ही दोष है। गृहस्थों ने, पिछले दो वर्षों में जैसा परिश्रम साधु-सम्मेलन के लिये किया है, उसे सभी जानते हैं। हमें, गृहस्थों को जगाना चाहिये, उसके बदले गृहस्थों को हमें प्रतिबोध देना पड़ता है। गृहस्थों! आप लोग हमें अन्नदाता कहते है, किन्तु वास्तव में हम लोग अन्नदाता नहीं हैं, सच्चे अन्नदाता तो तुम्हीं हो, कारण, कि तुम्हीं हमें अन्न देते हो लेकिन हम उस अन्न के बदले तुम्हें क्या देते हैं?

जब तक उदारता और प्रेम आदि सद्गुण हम में ही नहीं है, तब तक तुम से उनकी आशा कैसे की जासकती है? तरण तारण किसे कहा जाता है? तरण तारण वही है, जो खुद भी तरे और दूसरों को तारे। भगवान महावीर के उपदेशामृत का जिन्होंने पान किया है, उनमें वैर भाव तो कभी हो ही नहीं सकता। हम लोग प्रति दिन दो-दो बार कहते हैं, कि सारी दुनिया के जीव समान हैं, कोई छोटा बड़ा नहीं है। सब हमारे मित्र हैं, कोई शत्रु नहीं। किन्तु इसी के अनुसार जब हम अपने हृदय को बनावें, तभी उसमें से प्रेम के झरने बह सकते हैं। मित्र वही हो सकता है, जिसमें समानता हो। साधु का लक्षण है—जिसके हृदय में प्रेम हो, आंखों में अमृत भरा हो। उत्थान केवल व्याख्यान से नहीं हो सकता, कार्य से हो सकता है। हमारे वेश में कुछ नहीं है, जो कुछ है, वह अपने आत्मा मे ही है। यदि तृष्णा नहीं छूटी, तो फिर साधु होने से ही क्या लाभ? आज, महात्मा-गांधीजी का भाषण सुनने दो लाख मनुष्य एकत्रित होते हैं और हमारा भाषण सुनने को लोग आते नहीं, इसका कारण क्या है? कारण यह है, कि महात्माजी गृहस्थ के वेष में साधु हैं। पच महाव्रतधारी से पूछना पड़ता है, कि महाराज! आप सत्य कह रहे हैं या असत्य? इस प्रकार का प्रश्न पच महाव्रतधारियों से पूछा जाता है, इसका कारण क्या है? आज हमारी स्थिति कमजोर हो गई है। जैन धर्म मर्दों का धर्म है, नामर्दों का नहीं। हम लोगों को एक करने के लिये आप परिश्रम करते हैं। जो कार्य हमें करना चाहिये, वह आज आप लोगों को करना पड़ रहा है। हम लोग भंगी के साथ बातचीत कर सकते हैं, किन्तु एक साधु दूसरे साधु से बात भी नहीं कर सकता। कारण कि ऊँचनीच का भेद वहाँ बीच में आ जाता है। भेदभाव के बड़े २ पहाड़ हम लोगों के बीच में पड़े हैं। जब वे पहाड़ बीच से निकलें तभी हमारा उत्थान सम्भव है। सारांश यह, कि सम्मेलन की सफलता तभी सम्भव है, जब हम में, ऐक्य उत्पन्न हो तथा हृदय की कालिमा दूर हो जाय।

० ० ० ० ०

आपके भाषणोपरान्त, श्री मज्जैनाचार्य पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने, 'नमोलोए सव्वसाहूणं' से प्रारम्भ करके, विस्तृत शास्त्रपाठ फरमाया और फिर अपना भाषण यों प्रारम्भ किया—

मैं, श्रमण संघ को नमन करके, अपने हृदय से इस सम्मेलन की सफलता चाहता हूँ, जो आज आप लोगों के सम्मुख प्रारम्भ होरहा है। आज का सम्मेलन, 'साधु-सम्मेलन' के नाम से पुकारा जाता है। किन्तु, साधु कौन होता है यह बात पहले जान लेने की आवश्यकता है। जो व्यक्ति मुक्ति की साधना में प्रवृत्त हो, वही साधु है। जिनशासन का मूल विनय जहां है वह विनय साधु के लिये अनिवार्यतः आवश्यक है। जिसने विनय का मार्ग स्वीकार किया है उसका अभिमान तो अपने आप ही नाश हो जायेगा। जिनशासन का मूल विनय जहां है वहां शाखा उपशाखा, पत्ते, फूल फल आदि तो होंगे ही। इससे सिद्ध है, कि विनय के होने पर शेष सब गुणों की प्राप्ति अपने आप हो जायेगी। किन्तु जहां मूल वस्तु विनय का ही अभाव है वहां शेष बातों की आशा भी कैसे की जा सकती है? क्योंकि जिस वृक्ष का मूल ही नहीं है, उसमें फल-फूल कहां से लगेंगे? इसीलिये, मुनिराज विनय मार्ग का आश्रय ग्रहण करते हैं। वे अपने कल्याण के लिये वीतराग का मार्ग ग्रहण करते हैं। इस मार्ग को ग्रहण करते समय, उन्होंने संसार का भी त्याग कर दिया जिसे साधारणतया मनुष्य बड़ा प्रेम करते और जिसका परित्याग अत्यन्त कठिन है। उन्होंने केवल कल्याण की ही इच्छा से संयम का भार उठाया और उस पथ में होने वाले कष्टों को प्रसन्नता पूर्वक सहन किया। कल्याण ही के लिये वे यत्र-तत्र विचरते, भूख प्यास का दुःख उठाते तथा नाना प्रकार के परिषह सहन करते हैं। ऐसी दशा में, कल्याण उनसे छिपा न रहना चाहिये।

मैं पूछता हूं कि क्या व्यवहार में ही आत्म-कल्याण है या और किसी चीज में? यदि व्यवहार से ही आत्म-कल्याण हो सकता तो सब लोग जानते हैं कि नवम-ग्रैवेक में अनन्त-भव किये हैं। और यह भी निश्चित है कि बिना साधुपना लिये कोई वहाँ पहुंच नहीं सकता। जब अनन्त बार हमने साधुपना लिया है, तब फिर आखिर वह कौन सी कमी हम में थी, जिसके कारण हम गौतम भगवान की-सी क्रिया और नौ पूर्व का ज्ञान धारण करके भी अनन्त संसारी रह गये? उस कारण को पहचानने की बड़ी जरूरत है। सभी लोग जानते हैं कि अनन्त-संसार का कारण कषाय की प्रबलता और तीव्रता है। जब तक अनन्तानुबन्धी चौकड़ी नहीं छूटती, तब तक जीव परत संसार नहीं कर सकता। इसी दशा में, हम लोगों को आज इतना पवित्र उद्देश्य लेकर यहाँ एकत्रित होने की दशा में, राग द्वेष का सर्वथा त्याग करना चाहिये अथवा राग-द्वेष बढ़ाने वाले कार्य करने चाहिये इसका निर्णय मैं आप लोगों पर ही छोड़ता हूं।

यह सम्मेलन, पारस्परिक मनोमालिन्य दूर करने के लिये किया जा रहा है। इसलिये, सब लोगों को अपने-अपने हृदय के, मनोमालिन्य निकाल देना चाहिये। जैन-धर्म क्रिया और आचार पर ही आश्रित है। क्रिया की जैसी शुद्धता इस समाज के साधुओं में है वैसी और कहीं न मिलेगी। साधु लोग कनक तथा कान्ता के त्यागी और इस तरह कष्टों को सहन करने वाले क्या आपने किसी और पन्थ में भी देखे हैं? जहां, ऐसे उत्तम आचार का प्रचार है वहां धर्म की न्यूनता क्यों है? साधुता का मूल आचार है यह बात तो ठीक है किन्तु इसके साथ ही साथ अन्तःकरण की शुद्धि भी आवश्यक है। यदि हम लोगों के आचार की तरह अन्तःकरण की भी शुद्धि होती तो जैन-धर्म आज विश्वव्यापी धर्म बन गया होता।

गच्छभेद के कारण, हम लोगों में जो भेद पड गया है, उसी को मिटाने के लिये आज सब साधु-मुनिराज एकत्रित हुए हैं। मुझे पूर्ण भरोसा है, कि जिस उद्देश्य से सब मुनिराज कष्ट उठाकर यहाँ पधारे हैं तथा भेदभाव को भूल कर एक सभा में बैठे हैं उसकी पूर्ति भी करेंगे। जिस तरह, यह व्यावहारिक-साधना की जारही है, उसी तरह अन्तःकरण से भी परस्पर मिलेंगे। सब लोग, अपने हृदयों से ऊंच-नीच का भेदभाव दूर करके, वीतराग के शासन की उन्नति का विचार अवश्य-मेव करेंगे। छोटे और बड सबसे प्रेम करना ही सम्यग्दृष्टि का लक्षण है। इसलिये, मेरी यह सिफारिश है, कि जिस तरह सब मुनिगण कष्ट उठा कर यहां पधारे हैं, उसी तरह कार्य कर एवं सफलता प्राप्त करके, पवित्र जैन-धर्म को चिरस्थायी बनावें और श्री वीर भगवान् के शासन की ध्वजा दिगन्त तक फहरावें, यही प्रार्थना है।

o o o o o

आपके भाषणोपरान्त, मुनिवर श्रीसौभाग्यमलजी महाराज ने, सम्मेलन की सफलता की भावना वाली एक सुन्दर कविता गाई। तत्पश्चात् श्री साधु-सम्मेलन समिति के मन्त्री श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी खडे हुए और साधु-सम्मेलन-समिति तथा कान्फ्रेन्स की ओर से, पधारे हुए आचार्यों एव मुनिराजों का स्वागत करते हुए अपना भाषण प्रारम्भ किया। आपके विस्तृत भाषण का सारांश यों है—

साधु-मुनिराज, ५-५ और ७-७ सौ माइल का सफर तय करके यहां पधारे और शासन के उद्धार का प्रयत्न करते है. इनके लिये मै उन्हें किन शब्दों में धन्यवाद दू ? यहाँ बड़े २ विद्वान तथा अनुभवी मुनि-महात्मा विराजमान हैं। इन लोगों के सामने मैं क्या बोलु ? मेरा भाषण, इस समय उसी प्रकार का है, जैसे कि सूर्य के सामने जुगनू। भला इनके सामने मैं क्या बोलने का अधिकारी हू ?

यहां पधारने के लिये, मुनि-महात्माओं को मार्ग मे बड़े २ कष्टों का सामना करना पड़ा होगा। दो दो दिन तक आहार न मिला होगा, कभी केवल सूखी-रूखी रोटी से ही काम चलाना पडा होगा और कभी कभी तो पानी के लिये भी कष्ट उठाना पडा होगा। किन्तु, उन सब कष्टों को सहन करके आप सब मुनिराज, सम्मेलन की सफलता की सद्भावना से प्रेरित होकर सर्दी गर्मी का कष्ट उठाते हुए, नगे शिर, नंगे पैर चल कर यहा पधारे हैं, इसके लिये मैं चार लाख स्थानकवासी जनता की ओर से, साधु-सम्मेलन की तरफ से एवं अपनी कान्फरेन्स माता की ओर से, आप लोगों का हार्दिक आभार मानता तथा सच्चे हृदय से स्वागत करता हूँ। आप लोगों ने अनेक प्रकार के परि-षह सहन किये हैं, इसके लिये मैं किन शब्दों में आपका उपकार मानू ? आप लोगों का यह सारा कष्ट, सब परिषह, सारा उत्साह सार्थक हो, यही इच्छा है। आज, मेरे हृदय मे जो उत्साह है, उसे व्यक्त करने के लिये मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं।

स्थानकवासी समाज के लिये, केवल साधु ही आलम्बन हैं। कारण कि हमारा और कोई तीर्थ स्थान नहीं है। ये मुनिराज ही हमारे तीर्थ हैं, यही हमारे आलम्बन हैं। और हमारा आलम्बन भी सर्व श्रेष्ठ। इन मुनि महात्माओं के आचार के सदृश आचार पालने वाले साधु, क्या संसार के

और किसी धर्म में भी है ? कहीं नहीं । हमारे साधुओं का इतना श्रेष्ठ आचार होते हुए भी हमारी अवनति क्यों हो रही है और हमारी जनसंख्या क्यों कम होती जाती है, इसका विचार करने तथा भावी उन्नति का मार्ग ढूंढने के लिये सब मुनिराज ऐक्य करके यहां पधारे हैं। मुनिराज, हमारे मस्तक के मुकुट हैं हमारे गले की माला हैं। इस बत्तीस मणियाली माला के बीच का धागा टूट गया है, उसे जोड़ने अथवा ज्ञान दर्शन रूपी धागे में इन बत्तीसों मणियों को पुनः पिरोकर एक रम्य माला तैयार करने के लिये ही आप सब यहां पधारे हैं। इस माला के तय्यार होजाने पर ही भगवान् महावीर के शासन का पुनरुद्धार सम्भव है।

अंधेरी रात में जब रेलगाड़ी तेजी से दौड़ती जाती है तब सब मुसाफिर चाहे ऊँघते ही रहें, किन्तु गार्ड तथा ड्राइवर अपनी जिम्मेवारी का ध्यान रख कर जागते रहते हैं। मुसाफिरों को कम चिन्ता रहती है किन्तु गार्ड और ड्राइवर उन्हें सकुशल पहुंचा देने की बड़ी चिन्ता रखते हैं। ठीक इसी प्रकार से साधु मुनिराज हमारे समाज के गार्ड तथा ड्राइवर हैं। समाज ने ही उन्हें यह पद प्रदान किया है। इसी लिये हम लोगों को तारने की जिम्मेवारी उन पर है। जो धर्म हमारे लिये तरण तारण जहाज़ है उसी की रक्षा के लिये सब महात्मा यहां पधारे हैं। हजारों वर्षों के पश्चात् आज यह मौका फिर आया है। इस अवसर पर शासन के उद्धार का पथ अवश्य ढूंढ निकालना चाहिये। इस सम्मेलन में समाज की बड़ी भारी शक्ति खर्च हो रही है और रुपये भी लगभग २५ लाख इस अवसर पर खर्च होंगे। यह सारी शक्ति और धन तभी सार्थक है जब सम्मेलन सफल हो जाय। जहां एक प्रतापी मुनिराज विराजते हैं, वहां लोग हजारों की संख्या में एकत्रित होते हैं फिर यह तो महायात्रा है इसके लिये समाज के लोग क्या न करेंगे ! लोगों को इस सम्मेलन से बड़ी आशा है और वास्तव में जाति तथा धर्म का भविष्य इसी सम्मेलन की सफलता किंवा असफलता पर निर्भर है। यदि प्रेमपूर्वक प्रत्येक कार्य किया जावेगा तो सफलता अवश्य होगी। आप सभी मुनिराज हम लोगों के सौभाग्य से भिन्न २ प्रान्तों से चल कर यहां पधारे हैं। जिस तरह कष्ट उठाकर आप यहां पधारे हैं उसी तरह उत्साह पूर्वक आज दोपहर को २ बजे से, इसी मण्डप में अपनी सभा करके, भगवान महावीर के पथ को अधिक ज्योत्स्ना पूर्ण बनाइये।

मैं श्रावक बन्धुओं से भी एक नम्रतापूर्ण प्रार्थना कर देना चाहता हूं। वह यह कि मुनिराजों को किसी भी प्रकार की कोई भाई सलाह न दें और उन्हें स्वबुद्धि से ही कार्य करने दें।

जिस तरह कोई माली परिश्रम करके एक आम का पेड़ लगावे और जल सींच-सींच कर उसे बड़ा करे तथा जब उसके आम पकने के दिन आवें तब उस झाड़ के नीचे सोता हो और एक पका हुआ आम उस पर गिर पड़े तब उसे जैसी प्रसन्नता अनुभव हो सकती है, वैसी ही प्रसन्नता आज मैं अनुभव कर रहा हूं। आज से २८ वर्ष पूर्व जब कि कान्फरन्स का बीजारोपण हुआ था तब मैं ही उसका मन्त्री था और आज जब यह फल लग रहा यानी जिस स्थिति की आशा किसी को स्वप्न में भी न थी वह उपस्थित हो गई है तब भी मैं ही उसका मन्त्री हूं। आज मेरा जीवन सार्थक हो गया। मैंने तो अपना जन्म सार्थक कर लिया किन्तु आप सब महानुभावों से मेरी प्रार्थना है कि आप लोग भी इस सम्मेलन को सफल बना कर अपना जन्म सार्थक करें।

X X X X X X

आपका भाषण समाप्त होने पर, लगभग ११॥ बजे, श्री महावीर भगवान के जयनाद के साथ सभा समाप्त हुई। इस तरह, साधु-सम्मेलन का यह प्रारम्भिक तथा खुला अधिवेशन पूर्ण हुआ और मंत्रीजी की प्रार्थना के अनुसार लगभग २ बजे से, उसी मम्मैयों के नोहरे में मुनिराजों की प्रायव्हेट सभा प्रारम्भ हो गई। सभा में, कोई गृहस्थ नहीं जाने पाया था। दरवाजे के भीतर की सारी व्यवस्था मुनिराजों के अधीन थी और बाहर स्वयंसेवकगण खडे थे।

श्री साधु-सम्मेलन समिति के सभ्य, नोहरे से बाहर चबूतरे पर बैठे थे और जनता की भारी भीड़ नोहरे के सामने खडी परिणाम की प्रतीक्षा कर रही थी। लगभग ४ बजे दिन को मुनिगण बाहर पधारे। नियमानुसार भीतर की कोई कार्यवाही तो वे बतला नहीं सकते थे, किन्तु पहला दिन होते हुए भी सम्मेलन की सफलता की आशा का जो तेज उनके चेहरों पर चमक रहा था, उससे लोगों को यह विश्वास हो गया, कि सम्मेलन का भविष्य आशामय है।

दूसरे दिन सबेरे ८॥ बजे से सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई और ११॥ बजे तक कार्य करके आहर के लिये स्थगित कर दी गई। तदुपरान्त, १॥ बजे से पुन सभा प्रारम्भ हुई और चार बजे तक होती रही। इस समय तक, हजारों की संख्या में गृहस्थ अजमेर पहुंच चुके थे और प्रतिदिन संख्या बढ़ती ही जाती थी, इस लिये सम्मेलन की बैठक की समाप्ति के समय, हजारों दर्शनार्थी नोहरे के बाहर वाले मैदान से लगा कर बाजार तक एकत्रित हो जाते थे। ज्यों ही स्वयंसेवकगण, आचार्यों तथा मुनिराजों को नोहरे के चौक में देखते त्योंही अपनी व्यवस्था ठीक करके, दरवाजा खुला कर देते थे। बाहर उत्सुक जनता रास्ते को दोनों तरफ से घेर कर दर्शनार्थ जड़ी रहती थी। बीच मे जो रास्ता शेष रहता था उसमें होकर आचार्य एव मुनिराज क्रम २ से निकलते थे। इस समय का दृश्य देखकर यह जान पडता था, मानो जनता रूपी पर्वत माला अपने स्थान पर स्थिर खडी है और मुनिराज रूपी मन्दाकिनी उसके बीच होकर मन्द गति से बह रही है। सम्मेलन के प्रारम्भ से लगा कर, अन्त तक प्रतिदिन इसी तरह की स्थिति रही।

सम्मेलन के तीसरे दिन, ता० ७-४-३३ को महावीर जयन्ती होने के कारण, गृहस्थों को चौक तक जाने की इजाजत मिली थी। कारण कि सभी मुनिराज सम्मिलित रूप से जयन्ती पर भाषण करने वाले थे। जो मुनिराज सम्मेलन में प्रतिनिधि थे, वे तो भीतर कार्यवाही में भाग ले रहे थे और शेष मुनिराज, हजारों स्त्री-पुरुषों की भीड के सन्मुख, भगवान महावीर की जयन्ती के सम्बन्ध में भाषण कर रहे थे। अनेक विद्वान् मुनिराजो ने भगवान् महावीर के जीवन पर, भिन्न २ दृष्टिकोणों से प्रकाश डाला। भाषणों की समाप्ति होते ही जो साधु उप-समिति पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज तथा पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की सम्प्रदायों के मतभेद का फैसला करने के लिये नियुक्त की गई थी, उसके मन्त्री शतावधानी पं० श्री रत्न-चन्द्रजी महाराज ने सम्मेलन से बाहर पधार कर फरमाया कि, आज पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज तथा पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज के आपसी मनोमालिन्य का फैसला लिखकर, दोनो पूज्यो को दे दिया गया है और यदि दोनों आचार्य मिलकर भविष्य के लिये कोई कार्यक्रम न बना सके, तो हम लोग भविष्य का फैसला कर देंगे। शतावधानीजी महाराज की यह घोषणा सुनकर, लोगों ने भगवान् महावीर के जयनाद से इस कल्याणप्रद सवाद का स्वागत किया। अन्त में कुछ और कार्यवाही करके, महावीर जयन्ती की वह सभा ११ बजे दिन को समाप्त हो गई।

सबेरे ८ बजे से प्रारम्भ साधु-सम्मेलन की बैठक भी ११ बजे स्थगित हो गई और १॥ बजे से पुनः प्रारम्भ होकर, ४ बजे समाप्त हुई। यद्यपि, सम्मेलन की कार्यवाही अज्ञात थी, तथापि मुनिराजों के चेहरे पर झलकने वाली उमंग, उनके उत्साह और शतावधानीजी की उपरोक्त घोषणा ने, लोगों के हृदय में, सम्मेलन की सफलता के विश्वास को और भी दृढ़ बना दिया था।

सम्मेलन, इसी तरह ता० ८ से ता० १६ अप्रेल तक होता रहा और वातावरण पूर्ववत् उत्साह वर्द्धक तथा शांत बना रहा। लोगों की भीड़भाड़, दर्शनार्थियों का उत्साह तथा मुनिराजों की सफलता व्यक्त करने वाली प्रसन्नता में, दिन दिन वृद्धि होती जारही थी।

ता० १७ अप्रेल को, दोनों पूज्यों का एकीकरण करवाने के निमित्त, बड़ा प्रयत्न किया गया। परिणाम स्वरूप हजारों गृहस्थों एवं समस्त-मुनिराजों की उपस्थिति में, नियुक्त उप-समिति के मन्त्री महोदय ने, दोनों पूज्यों के लिये, समिति की ओर से, भविष्य के लिये निम्न फैसला सुनाया—

भविष्य का फैसला

आज रोज, दोनों पक्ष के भविष्य का फैसला पंच नीचे मुजब देत हैं—

(१) मुनि श्री गणेशीलालजी महाराज का युवाचार्य पद पर नियत करें।

(२) मुनि श्री खूबचन्द्रजी महाराज को उपाध्याय पद पर नियत करें।

(३) अब जो नये शिष्य बनें, वे युवाचार्य की नेश्राय में रहें।

(४) भविष्य के लिये धारापोरण, दोनों पूज्य मिल कर बांधें।

(५) पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय का चातुर्मास ठहराने की और दोष शुद्धि करने की सत्ता दोनों पूज्यों की हयाती तक दोनों पूज्यों को रहेगी और एक आचार्य रहने पर एक आचार्य की होगी

(६) फैसला मिलने के साथ ही बारह सम्भोग खुला करें।

द० अमोलकऋषि
द० मुनि रत्नचन्द्र
द० मुनि काशीराम
द० मुनि मणिलाल
द० मुनि नानचन्द्र

उपरोक्त फैसले पर दोनों पूज्यों की स्वीकृति पूछने के लिये, साधु-सम्मेलन के मन्त्रीजी भेजे गये। तब दोनों पूज्यों की ओर से, निम्नानुसार उत्तर मिला।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने फरमाया, कि फैसला मंजूर है, समस्त दरामद धारापोरण बना कर किया जावेगा।

पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज ने फरमाया कि फैसला मंजूर है।

उपरोक्त फैसला तथा दोनों पूज्यों की उस पर स्वीकृति सुनकर, जनता हर्ष से जयनाद करने लगी। उस समय, लोगों में जैसी प्रसन्नता फैल रही थी उसका वर्णन करना, शक्ति से पर है चारों तरफ, आनन्द ही आनन्द की वर्षा हारही थी। होती भी क्यों नहीं? जिस मतभेद ने समाज में व्याप्त होकर, कलहाग्नि भड़का रक्खी थी, जिसके कारण जैनशासन की प्रभावना होने के बदले उसकी क्षति होरही थी।

जिस मतभेद से उत्तेजित होकर, गृहस्थ लोग गन्दी-पर्चेबाजिया कर रहे थे, वह मतभेद, जब समूल नष्ट होता दीख पड़े, तो भला किसे प्रसन्नता न होती ? अजमेर पधारे हुए हजारो गृहस्थो ने, हृदय की सच्ची लगन से इस मगलमय-संवाद को सुना और जिसने जहा सुना, वह वहीं आनन्द विभोर होगया।

फैसला सुनने के बाद ही, दोनों पूज्यो ने परस्पर क्षमायाचना की और हजारो जनता की दृष्टि के सन्मुख ही दोनों प्रतापी-पूज्यों का सम्मिलन होगया। इस पुनीत दृश्य को देख कर जिन लोगों के हृदय पर अब तक पक्षपात का मैल जमा हुआ था, वह धुल गया और सब के मुख से धन्य २ की आवाज निकलने लगी आचार्यों की ही भांति मुनिराजों तथा श्रावकों ने भी परस्पर क्षमायाचना की और परस्पर मिल गये। इस तरह, थोडी देर के लिये, उस लाखनकोठडी स्थित ऐतिहासिक मम्मैयों के नोहरे का वातावरण, क्षमा. याचना, सरलता एव प्रेम से भर गया। लोगो ने, साधु-सम्मेलन की इस सफलता पर, हर्ष तथा जयनाद किया।

इसी अभूतपूर्व-सफलता से प्रभावित होकर, श्री साधु-सम्मेलन-समिति ने, अपने मन्त्री श्री दुर्लभ-जी त्रिभुवन जौहरी को, उनके जिस अनवरत-परिश्रम के फलस्वरूप यह सफलता मिली थी, उसकी स्मृति में, एक नवरत्न-पदक देना निश्चित किया था, जो आगे चलकर कान्फ्रेंस के सभापति महोदय के करकमलों से उन्हें पहनाया गया। अस्तु।

इसके दूसरे दिवस यानी ता० १८ अप्रेल को, पचों के फैसले के अनुसार दोनों पूज्यों ने, परस्पर सभी सम्भोग प्रारम्भ कर दिये। फैसले को इस प्रकार क्रियात्मक रूप प्राप्त होते देखकर, लोगों की प्रसन्नता तथा उत्साह दूना होगया। लोगों को, जिस बात की कभी स्वप्न में भी आशा न थी, वह साधु-सम्मेलन के प्रयत्न से सम्यक्-प्रकारेण सफल होगई।

इस तरह, ता० ५-४-३३ से साधु-सम्मेलन प्रारम्भ होकर, ता० १६-४-३३ को, श्री शतावधानीजी महाराज के मंगलाचरण के साथ समाप्त हुआ। भीतर की कार्यवाही, अन्त तक प्रकाशित नहीं की गई थी। वह दूसरे प्रकरण में ज्यों की त्यो देखने को मिलेगी।

कानफ्रेन्स के नवम–अधिवेशन का बीजारोपण.

अखिल भारत श्री श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस की जनरल कमेटी की बैठक, ता० २४-२५ दिसम्बर शनि और रविवार सन् १९३२ ई को बम्बई के कान्दावाड़ी स्थानक में हुई थी। जिसमें अन्यान्य उपयोगी प्रस्तावों के साथ ही, कान्फ्रेंस का अधिवेशन करने के सम्बन्ध में निम्न प्रस्ताव भी पास हुआ था—

"कान्फ्रेंस का अधिवेशन करने की, श्री साधु-सम्मेलन समिति की सलाह के अनुसार कान्फ्रेंस के खर्च से अधिवेशन अजमेर या उसके आसपास, चैत्र सुदी १० के बाद और वैसाख सुदी ३ तक करना तय किया जाता है। स्थल एवं समय निश्चित करने तथा अधिवेशन सम्बन्धी कार्य की समस्त व्यवस्था करने के लिये, निम्नानुसार एक अधिवेशन प्रबन्धकारिणी समिति नियुक्त की जाती है।

१—श्रीमान् गोकलचन्दजी नाहर, दिल्ली
२— „ अचलसिहजी जैन, आगरा

३— „ अमृतलाल रायचन्द जौहरी, बम्बई
४— „ वरधमाणजी पीतलिया, रतलाम
५— „ नथमलजी चोरड़िया, नीमच
६— „ वेलसी खखमसी नपु, बम्बई
७— „ चुनीलाल नागजी वोहरा, राजकोट
८— „ मोतीलालजी मुथा सतारा
९— „ ला० टेकचन्दजी जैन, मंडियाला
१०— „ रतनचन्दजी जैन, अमृतसर
११— „ त्रिभुवननाथजी जैन, कपूरथला
१२— „ आनन्दराजजी सुराणा दिल्ली
१३— „ केसरीमलजी चोरड़िया, जयपुर
१४— „ अमोलकचन्दजी लोढ़ा, बगड़ी
१५— „ पन्नालालजी बम्ब, मूसावल
१६— „ नथरवनमलजी रींयावाला अजमेर
१७— „ कल्याणमलजी वैद अजमेर
१८— „ ला० ज्वालामसादजी महेन्द्रगढ़
१९— „ मगनमलजी कोचेटा, मंचाल
२०— „ चांदमलजी नाहर, जबलपुर
२१— „ लालचन्दजी मूथा, गुलेन्गढ़
२२— „ भीखमचन्दजी पारेख नासिक
२३— „ कुन्दनमलजी फिरोदिया, अहमदनगर
२४— „ सुगनचन्दजी नाहर, अजमेर
२५— „ जठालाल रामजी मांगरोल
२६— „ दुर्लभजी केशवजी खेताणी बम्बई
२७— „ दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी, जयपुर
२८— „ टी० जी० शाह, बम्बई
२९— „ कन्हैयालालजी भण्डारी, इन्दौर
३०— „ नमीचन्दजी सुरू फलौदी
३१— „ माणकचन्दजी बरमेचा किशनगढ़
३२— „ सोभागमलजी महता, जावरा
३३— „ हीरालालजी, ग्यावरह
३४— „ धीरजलाल केशवलाल तुरखिया, ब्यावर

उपरोक्त समिति को पांच सभ्य और बढ़ान तथा यदि कोई स्वीकार न करे, तो उनके बदले कोई दूसरा मेम्बर नियुक्त करने का अधिकार दिया जाता है।

उपरोक्त गृहस्थो में से जो जनरल कमेटी के मेम्बर न हों, वे मेम्बर बन जायेंगे, तभी इस कमेटी के सभ्य माने जायेंगे।

उक्त समिति के सेक्रेटरी, श्री सेठ नथमलजी चोरड़िया तथा श्री सेठ दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी नियुक्त किये जाते हैं।

इस समिति को स्वागत समिति बनाने तथा कान्फ्रेंस का प्रमुख चुनने आदि, सम्मेलन सम्बन्धी समस्त व्यवस्था करने की पूर्ण सत्ता दी जाती है।

प्राथमिक खर्च के लिये, रु० ४०००) तक की रकम उचन्त के तौर पर उपरोक्त कमेटी को देना मजूर किया जाता है।

)( )( )( )( )( )( )(

उपरोक्त प्रस्ताव पास होने के कुछ दिन बाद अधिवेशन-प्रबन्धक समिति की प्रथम बैठक, ब्यावर में हुई जिसमें तय हुआ कि कान्फ्रेंस का नवा अधिवेशन, अजमेर में ही, ता० २२, २३, २४ अप्रेल सन् १९३३ ई० को किया जावे। इस निर्णय के अनुसार अब साधु-सम्मेलन के साथ ही, कान्फ्रेंस के नवम अधिवेशन की भी तैयारिया होने लगी। अस्तु।

अजमेर में साधु सम्मेलन के साथ ही, कान्फ्रेंस की व्यवस्था के लिये समिति आदि बनाने को श्रीसघ की जो बैठक हुई थी, उसकी सक्षिप्त रिपोर्ट जैन प्रकाश में यों प्रकाशित हुई थी—

शुभ आरम्भ ही सिद्धि है।

अजमेर में श्रमणोपासक जैन पाठशाला के हॉल में, माघ शुक्ला ३ ता० २८-१-३३ शनिवार की रात को, ७॥ बजे से ११ बजे तक श्रीसंघ की मीटिङ्ग, खजाची सेठ भैंरूलालजी बोहरा की अध्यक्षता में हुई। उस समय, अधिवेशन प्रबन्धक समिति और सम्मेलन सरक्षक समिति के सभ्य भी उपस्थित थे। श्रीमान् जौहरीजी तुरखियाजी, और चौरडियाजी ने, अजमेर में आने वाले दो अपूर्व प्रसंगों (साधु-सम्मेलन तथा कान्फ्रेंस का नवमा अधिवेशन) की महत्ता और अजमेर श्रीसघ का कर्त्तव्य समझाया।

अजमेर श्रीसघ की ओर से, बा० सुगनचन्दजी नाहर ने भी, साधु सम्मेलन का अपूर्व अवसर पूर्ण सहयोग से सफल बनाने और अधिवेशन की सब प्रकार से सेवा करने का वक्तव्य दिया। तत्पश्चात् साधु सम्मेलन की स्वागत कारिणी के सभ्यों के नाम लिखे गये। स्वयंसेवक दल की भर्ती की गई। स्वागत समिति के अधिकारियों, (उप-प्रमुख मन्त्री, सहमन्त्री, खजाची आदि) का चुनाव किया गया। उतारा कमेटी भोजन कमेटी, रोशनी कमेटी, पानी प्रबन्धक कमेटी, सूचना कमेटी, मुनि सेवा (गोचरी के घर बताने आदि) समिति इत्यादि उपसमितिया बनाई गई।

अजमेर श्रीसघ का उत्साह अवर्णनीय है। सब तरह की तैयारिया उत्साह पूर्वक कर रहे हैं।

)( )( )( )( )( )( )(

इस तरह समस्त स्थानकवासी समाज का ध्यान, अजमेर में होने वाले दोनो शुभ प्रसगों की ओर आकर्षित हुआ ही था, कि इसी समय कान्फ्रेंस के नवम अधिवेशन की आमन्त्रण पत्रिका जैन प्रकाश में प्रकाशित हुई, जिसका हिन्दी भाषान्तर यों है।

ॐ अर्ह

All India S S Jain Conference 9th Session Ajmer

अखिल भारतवर्षीय श्री श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस, नवा अधिवेशन अजमेर

आमन्त्रण पत्रिका ।

श्री देवगुरु भक्तिकारक, श्रद्धाशील, प्रभावना परायण, अनेक शुभ गुणालंकृत,

श्रीसंघ समस्त की सेवा में ।

मु०

सविनय जयजिनेन्द्र ! श्री जैन धर्म के प्रताप से, अत्रकुशलं, तत्रास्तु ।

विशेष विनय यह है कि, श्री महावीर भगवान का शासन सदैव जयवान रहे, इस शुभ आशय से समय २ पर शासन नायक आचार्य प्रभृति समस्त श्रीसंघ ने यथायोग्य प्रयत्न किये हैं। इस आर्यावर्त की, अपनी सभी सम्प्रदायों के आचार्यों एवं मुख्य मुनिराजों का महासम्मेलन, अजमेर में, वीर सं० २४५९ वि० सं० १९८९ की चैत्र शुक्ला १० ता० ५ अप्रेल से शुरू होने वाला है। १५०० वर्षों के पश्चात प्राप्त होने वाले इस अपूर्व प्रसंग पर, समस्त भारतवर्ष के अपने स्वधर्मी बन्धु भी शासनोद्धार के पवित्र यज्ञ में अपना भाग देने के लिये परस्पर विचार विनिमय कर सकें, इसके लिये अपनी कान्फ्रेंस का नवमा अधिवेशन भी अजमेर में ता० २२, २३, २४, अप्रेल शुभ मिती चैत्र वदी १३ १४ ३०, शनि, रवि और सोमवार को होना तय हुआ है। इस पवित्र कार्य को सफल बना कर महासभा के पवित्र पुष्पों का सौरभ फैलाने के लिये पधारने का सभी को विनयपूर्वक आमन्त्रण है।

आजतक असम्भव समझा जाने वाला, मुनिराजों का महासम्मेलन, चतुर्विध श्रीसंघ के उत्साह से होने जा रहा है, यह जिनशासन की भावी उन्नति का शुभ चिन्ह है। भारतवर्ष के दूर २ प्रान्तों से उग्रविहार करके पधारे हुए मुख्य २ मुनिराजों के दर्शन और सदुपदेश के साथ २ भारतवर्ष भर के समझदार श्रावकवर्ग के साथ विचार विनिमय करने का यह अपूर्व अवसर है। हम लोगों के इतिहास में तो, हम लोगों के लिये यह प्रथम महायात्रा है। श्री नन्दीसूत्र में भगवान् महावीर के श्रीमुख से प्रशंसित पवित्र श्रीसंघ की सेवा का जीवन में ऐसा अपूर्व प्रसंग भाग्यशालियों को ही मिल सकता है। इस लिये आप स्वयं, अपने सगे सम्बन्धियों तथा मित्र स्नेहियों के साथ, महायात्रा करने पधारियेगा।

यह आमन्त्रण पत्रिका समस्त श्रीसंघ की सभा में पढ़कर सुना दीजियेगा और इसके साथ की सूचनाएं स्मरण में रखते हुए इसके साथ भेजे हुए फार्म भरकर शीघ्र भेज देने की कृपा कीजियेगा।

धन दे तन को राखिये तन दे, रखिये लाज ।
धन दे तन दे लाज दे एक धर्म के काज ॥

दर्शनातुर श्रीसघ सेवक—

नया बाजार अजमेर माघ शु १५ स १९८९	नथमल चोरडिया, दुर्लभजी जौहरी मन्त्रिगण अधिवेशन प्रबन्धक समिति	राजा ब० सुखदेवसहाय ज्वालाप्रसाद जौ० महेन्द्रगढ—स्वागताध्यक्ष

इस निमन्त्रण-पत्र के अतिरिक्त, यह खास निमन्त्रण पत्र विशेष विशेष व्यक्तियों की सेवा में भेजा गया था।

इस निमन्त्रण पत्र के प्रकाशित होने के कुछ दिन बाद ही जैन प्रकाश में निम्न विज्ञप्ति प्रकाशित हुई—

सब प्रान्तों में, कान्फरेन्स की ओर से भेजे हुए प्रचारकों का दौरा।

हमें यह सूचित करते हुए हर्ष होता है कि भारतवर्ष के भिन्न २ प्रान्तों के बडे २ शहरों एव नगरो मे, कान्फ्रेस की ओर से, सेवाभावी प्रचारक भ्रमण करेंगे। इस लिये प्रत्येक शहर तथा नगर के अग्रेसरों का कर्तव्य है कि, वे उन प्रचारको को किसी तरह की तकलीफ न होने दें, भोजन आदि सब प्रकार की सुविधा कर दें और चू कि प्रचारकों को बहुत से शहरों तथा नगरों में भ्रमण करना होगा, इसलिये जिस दिन वे वहा पहुचें उसी दिन सभा एकत्रित करके कान्फ्रेंस के प्रचार कार्य में उनकी सहायता करें एव प्रतिनिधि तथा प्रेक्षक-फार्म भरवा कर उन्हें शीघ्र देने की कृपा करें। जितने टिकिट खरीदने हो, उन्हें रुपये देकर प्राप्त कर लें। कारण कि इस समय साधु-सम्मेलन अजमेर में ही होने के कारण यात्रियों की सख्या बहुत ज्यादा होगी, अतएव प्रेक्षक टिकिट शायद पीछे से बन्द कर देने पडें। इस लिये पहले टिकिट खरीदना अधिक लाभदायक होगा। रसीद पर श्री दुर्लभजी त्रिभुवनदासजी जौहरी, मन्त्री कान्फ्रेंस नवम अधिवेशन अजमेर के दस्तखत होंगे। दूसरा हस्ताक्षर, जो प्रचारक मन्त्रियो का पत्र लेकर आवेगा, वह करेगा।

बड़े नगरो के पास, छोटे २ ग्रामों में प्रचारक नहीं जा सकेंगे। इस लिये अपने २ नगरो के निकट-वर्ती ग्रामों में रहने वाले भाइयों के पास, मुनियों के दर्शनार्थ तथा कान्फ्रेंस में पधारने का सन्देश भेजकर उनसे कान्फ्रेंस के नियमानुसार प्रतिनिधि तथा प्रेक्षक फार्म भरवा, एव रुपये वसूल करके, मन्त्री कान्फ्रेस ऑफिस नया बाजार अजमेर के पते पर भिजवाने की कृपा करें।

विनीत—

नथमल चोरडिया, मन्त्री

कान्फ्रेंस नवम अधिवेशन, अजमेर.

इस विज्ञप्ति के प्रकाशित होने के पश्चात् ही, जैन प्रकाश में, दूसरी विज्ञप्तिया प्रकाशित हुई—

कान्फरेन्स के प्रचार के लिये चारों ओर प्रचारक विदा किये गये।

आज निम्नलिखित प्रचारक, निम्न प्रान्तों में, प्रचार करने के लिये कुंकुम चावल के तिलक करके आनन्द पूर्वक विदा किये गये। प्रत्येक प्रान्त, शहर नगर व ग्रामों के नेताओ से हमारी प्रार्थना है, कि वे अपने २ प्रान्त में भ्रमण करने वाले प्रचारक को, हर तरह से सहायता देकर, स्वागत सदस्य, प्रतिनिधि, प्रेक्षक और स्वयसेवक के फार्म भरवा कर भिजवावें। प्रचारक को, दूसरी जगह भेजने के लिये, यदि रेल्वे

स्टेशन म हों, सो सवारी आदि की सुविधा कर दें। निम्न प्रचारक भिन्न भिन्न प्रान्तों में, निम्न प्रकार से प्रवास करेंगे।

श्री उदयलालजी डूगरवाल	मेवाड़ प्रान्त
श्री चिम्मनसिंहजी लोढ़ा	मारवाड़ प्रान्त
श्री प्रेमचन्दजी लोढ़ा	मालवा प्रान्त
श्री नन्दलालजी सुरपुरिया	दक्षिण प्रान्त
श्री करणसिंहजी महता	निजाम बैंगलोर
श्री गिरधरलाल के० शाह	अहमदाबाद गोहिलवाड़
श्री मणिलाल माणकचन्द	सोरठ-हालार
श्री मणिलाल भाई को समय मिला तो कच्छ भी जावेंगे।	
श्री शान्तिलाल वनमाली	खानदेश-बिहार
श्री जीवनलाल संघवी	गुजरात
श्री मूलचन्दजी कांकलिया	अजमेर-मरवाड़ा
श्री मगनमलजी सा कोचेटा	बुन्देलखंड व यू० पी०
श्री पं० शङ्करप्रसादजी दीक्षित	बीकानेर स्टेट
श्री झावालाल मणिलाल मेहता	मद्रास

अन्तिम तीन नाम, ऑनरेरी प्रचारकों के हैं।

दुर्लभजी त्रिभुवन ओँहरी,
नथमल चोरड़िया, मन्त्री

इसके बाद, चारों तरफ से प्रचारकों की प्रचार सम्बन्धी रिपोर्टें आने लगीं, जिन्हें देखकर पता चलता था कि विभिन्न प्रान्तों में, कान्फ्रेंस अधिवेशन तथा साधु-सम्मेलन के सम्बन्ध में कैसा उत्साह फैल रहा है। जगह जगह सभायें होती थीं, भाषण होते थे प्रतिनिधि स्वागतसभ्य और प्रेक्षक टिकिट बेचे जाते थे। इस तरह एक बार सारे ही देश, में उत्साह की जो तीव्र लहर पैदा कर दी गई, उसी के परिणामस्वरूप कान्फ्रेंस के नवम अधिवेशन के समय वह जनसमूह देखने को मिला जिसकी पहले कल्पना भी नहीं की गई थी। एक तो यों ही साधु-सम्मेलन के कारण लोग अजमेर आने को तैयार थे, जिस पर इन प्रचारकों के प्रचार ने और उत्साह बढ़ा दिया। अस्तु।

जिस समय, इन प्रचारकों की प्रचार सम्बन्धी रिपोर्टें प्रकाशित हो रही थीं उसी समय निम्न विज्ञप्ति जैन प्रकाश में प्रकाशित हुई—

कान्फ्रेन्स विज्ञप्ति।

मण्डप

मण्डप का कार्य जोरों से चल रहा है। मंच पर, १२०० सज्जनों के बैठने के लिये स्थान तैयार किया गया है। आकानगर में ४० मकान ऐसे बनाये गये हैं जिनमें प्रत्येक में ६ के हिसाब से ३००० मनुष्यों

का समावेश हो सकेगा। लगभग १२ या १४ भवन प्रतिष्ठित सज्जनों के नाम पर बन रहे हैं, जनमें से प्रत्येक में पचास २ साठ २ मनुष्यों का समावेश हो सकेगा। अब सिर्फ सात प्लाट और शेष हैं, जिनके लये समाज के धनाड्य श्रीमन्तों से प्रार्थना की गई है। उनमें से जिनकी सहायता पहले आ जायगी उन्हीं के नाम पर वे भवन बनवा दिये जायेंगे। गुजराती में एक कहावत है, कि—'वेलो तो पहलो'। इसके अनुसार, जो सज्जन शीघ्र २५०) रु० भेज देंगे, उनका नाम एक भवन पर लगा दिया जायगा। इन भवनों में उतरने वाले यात्रियों को जो आराम मिलेगा, उसका लाभ उन द्रव्य दाताओं को ही मिलेगा। इन दानियों का नाम, उस आई हुई मेदिनी के हृदय में चिरस्मरण रहेगा। भवनों के बीच में ५ बड़े २ फव्वारे बनाये गये हैं और गमले फूलवारी आदि लगाये गये हैं, ताकि मार्ग पर आने जाने वाले सज्जनों का मनोरंजन भी होता रहे। श्री वा० मो० शाह पुस्तकालय तथा सार्वजनिक वाचनालय में, श्रीसघ को पुस्तकें तथा समाचार पत्र पढने का साधन, भवनों के मध्य प्रस्तुत रहेगा। जिन महाशयों को सामायिक-प्रतिक्रमण करना हो उन्हें सामायिक भवन में आसन, पूंजनी आदि सामग्री मिलेगी। नहाने धोने के लिये स्नानागार में पानी के नल लगाये गये हैं। एक औषधालय भी रहेगा, जिसमें, हर तरह की औषधिया तैयार रहेगी श्रीयुत गणेशमलजी बोहरा, मण्डप मत्री रातदिन परिश्रम कर रहे हैं। श्री वरदभाणजी पीतलिया का स्तीफा आने के कारण श्री नवरतनमलजी सा० को प्रमुख मुकर्रर किया गया था। आपका उत्साह भी सराहनीय है।

भोजन।

प्रतिनिधि प्रेक्षक व स्वागत सदस्यों के लिये, भोजन का प्रबन्ध साथ ही साथ रक्खा गया है। केवल गुजराती रसोई घर व मारवाडी रसोडा अलग २ रहेंगे क्योंकि गुजराती तथा काठियावाडी सज्जन मिर्च नहीं खाते हैं। पहले प्रेक्षकों को भोजन कूपन न देने का निश्चय किया था। किन्तु स्थान स्थान से शिकायतें आने पर भोजन कूपन देने का निश्चय किया गया है। अतएव प्रचारकों को सूचना दी जाती है कि अब वे कूपन बुक्स ऑफिस से मंगालें। और जहा २ मांग हो २) रु० प्रत्येक बुक के हिसाब से बेच दें। प्रेक्षक महाशयों से भी निवेदन है कि वे प्रचारकों से वहीं कूपन बुक खरीद लें, क्योकि हमने उन्हीं के लाभ के लिये ठेके की तजवीज की है।

उतारा।

उतारा कमेटी के सेक्रेटरी श्री कल्याणमलजी वैद, श्री मगनमलजी कोचेटा व श्री केसरीमलजी राका मकानों के प्रबन्ध के लिये, सतत प्रयास कर रहे हैं। आने वाले सज्जनो को ठहराने की किसी प्रकार की तकलीफ न होगी, ऐसा हमें विश्वास दिलाया जा रहा है।

नवयुवक कान्फरेन्स।

इसी अवसर पर, नवयुवक कान्फ्रेंस होने का भी आयोजन हो रहा है।

मण्डप टिकिट।

मण्डप में दाखिल होने के लिये, बहुतसे ग्रामों में प्रचारको से ऐसा कहा गया कि हम वहीं यानी अजमेर में टिकिट खरीदेंगे। यहा लेने की हमें आवश्यकता नहीं। परन्तु हमारे विचार में, वे यदि वहीं टिकिट नहीं खरीदते हैं तो भूल करते हैं। क्योंकि इस बार साधु सम्मेलन की वजह से, मेदिनी अधिक

एकत्रित होगी और शायद यहां टिकिट बेचना बन्द ही करना पड़े। कारण कि मण्डप में, इतने आदमियों का समावेश होना असम्भव है, इसमें केवल दस हजार आदमियों के लिये ही स्थान है। प्रचारक लोग घूम रहे हैं, उन सबकी रिपोर्ट बराबर हमारे पास नहीं पहुंचती क्योंकि जहां रेल व मोटर नहीं है, वहां भी उनको जाना पड़ता है। इस लिये हमें निश्चित रूप से यह मालूम नहीं हो सकता, कि उनके पास टिकिट बचे हैं या नहीं। स्वागत सदस्य तथा स्त्री प्रेक्षक के टिकिट, दो बार फिर छपवाये गये हमारी इच्छा यह है कि उनके पास के टिकिट वहीं बिक जाय, तो यहां हमको टिकिट बेचने के कार्य से निवृत्ति मिल जाय। जो सज्जन वहां टिकिट नहीं खरीदेंगे, उनमें जो पहले आवेंगे वे बचे हुए टिकिट खरीद लेंगे और शेष सज्जनों को बिना टिकिट पाये पछताने का मौका आ सकता है। इस लिये हमारा नम्र निवेदन है कि वे वहीं, जब कि प्रचारक उनके यहां आवें, टिकिट खरीद लें। दो चार प्रचारक यहां आगये हैं, कुछ टिकिट हमारे यहां स्टॉक में हैं। जिन्हें चाहिये वे यहां मनिऑर्डर भेजकर अथवा वी० पी० द्वारा मंगवा लें। कुछ सज्जनों के प्रेक्षक तथा प्रतिनिधि फॉर्म में स्थान व जिले के खाने नहीं भरे हैं, इस दशा में हम उन्हें टिकिट कहां भेजें। और किस ग्राम के नाम में दर्ज करें। इस लिये सावधानी से फार्म भरकर भेजने चाहिये।

वालिण्टियर।

प्रतिनिधि, प्रेक्षक व दर्शनार्थियों की सेवा सुश्रूषा के लिये स्वयंसेवकों को इस अवसर का लाभ लेने को लिखा गया था। परन्तु अबतक बहुत से ग्रामों से फॉर्म भरकर नहीं आये। इतनी बड़ी भविनी की सेवा के लिये कम से कम १००० स्वयंसेवकों की आवश्यकता है। परन्तु शोक की बात है कि अबतक केवल २०० स्वयंसेवकों की तरफ से फॉर्म भरकर आये हैं। हमतो आशा करते थे, कि सेवाभावी नवयुवकों की दरख्वास्तें ऊपराऊपरी हजारों की संख्या में आवेंगी और हम उनमें से अपनी आवश्यकतानुसार छांटनी करके मंजूरी लिख देंगे। परन्तु शोक के साथ लिखना पड़ता है, कि अहमदनगर, मुम्बई, रतलाम, उदयपुर इन्दौर, पाली, बीकानेर, नागोर आदि किसी भी स्थान से, दरख्वास्त के फॉर्म अबतक भरकर नहीं आये। अन्य भी अनेक स्थानों के नवयुवक क्यों अबतक ऐसे अवसर पर गाढ़ी निद्रा में सोरहे हैं? यदि अपनी समाज के नवयुवकों की यही दशा रही तो हमको दूसरी जाति की सेवा-समितियों से सहायता लेनी पड़ेगी जो समाज के लिये अत्यन्त लज्जाजनक बात होगी। मारवाड़ी भाइयों की सुविधा के लिये हमने ड्रेस के दो विभाग भी कर दिये थे, इससे उनको सुविधा हो गई है। आशा है अब शीघ्र ही दरख्वास्तें आवेंगी।

मथमल चोरड़िया

मन्त्री श्री श्वे० स्था० जैन कानफ्रेंस, नवम अधिवेशन, अजमेर

आपके भाषणोपरान्त, श्री नथमलजी सा० चोरड़िया का भाषण प्रारम्भ हुआ। आपने फरमाया कि—

'अजमेर में, साधु सम्मेलन तथा कान्फ्रेंस की तैयारी जोरों से हो रही है। यह महा सम्मेलन स्थानकवासी समाज में पहला ही कहा जा सकता है। क्योंकि' सारे ही भारतवर्ष के आचार्य एवं बड़े २ मुनिराज एक स्थान पर एकत्रित हो रहे हैं। साथ ही विभिन्न प्रान्तों से इन महात्माओं के दर्शनार्थ एवं कान्फ्रेंस में सम्मिलित होने के लिये हजारों गृहस्थों के पधारने के समाचार चारों तरफ से मिल रहे हैं।

कानफ्रेंस में, अपनी व्यवहारिक (Social) और धार्मिक (Religions) उन्नति कैसे हो सामाजिक कुरुढ़ियों का नाश करके सुधार के रास्ते पर कैसे चल सकें, इस विषय पर विचार विनिमय होगा। अतएव, ऐसे महत्वपूर्ण कार्य के लिये एक सावधान नररत्न की आवश्यकता है। वह रत्न ढूंढ़ते २ काठियावाड़ के कोने में, आपके नगर में श्री हेमचन्दभाई रामजीभाई के रूप में अपने तेज से प्रकाशित हमें दृष्टिगोचर हुआ। अतः हम श्रीशघ भावनगर से आग्रह करते हैं कि अग्रेसर साहवान, श्री हेमचन्दभाई से सभापति पद के लिये स्वीकृति प्राप्त करने की विनती करने में हमारा साथ दें। यह आपके भावनगर श्रीसघ को सारे भारतवर्ष की तरफ से मान मिल रहा है, इसे आप स्वीकार करें और उनसे स्वीकार करवा कर, समस्त श्रीसंघ के साथ, कान्फ्रेंस के समय अजमेर पधारें।

आपके पश्चात, श्री सेठ कुवरजी आनन्दजी कापडिया ने, समयोपयोगी विवेचन करते हुए कहा कि–

श्री हेमचन्दभाई को प्रमुख पद का मान मिल रहा है, यह भावनगर का मान है। इसलिए डेपुटेशन के सदस्यों के साथ जाकर, प्रमुख स्थान के लिये श्री हेमचन्दभाइ से विनती करना हमारा कर्त्तव्य है।

आपके भाषणोपरान्त डेपुटेशन में पधारे हुए सज्जनों और प्रमुख सा० को धन्यवाद देकर सभा विसर्जित हुई।

यहां से डेपुटेशन के सदस्य और भावनगर के प्रतिष्ठित सज्जनों ने, श्री हेमचन्दभाई के बंगले पर जाकर, प्रमुखपद स्वीकार करने के लिये आग्रह पूर्वक विनती की। उत्तर में, श्री हेमचन्दभाई ने, संघ के अग्रेसरों तथा डेपुटेशन के सदस्यों से कहा कि मैं आप लोगों के सहयोग के सहारे इसे स्वीकार करने का साहस करता हू।

दूसरे दिन प्रातःकाल, डेपुटेशन के सदस्य श्री दीवान सा० सर पटनीजी के यहां मिलने गये और कान्फ्रेंस में पधारने की विनती की। भोजनोपरात श्री हेमचन्दभाई के साथ सब लोग लींबडी के लिये रवाना हो गये।

मार्ग में बोटाद स्टेशन पर, वहां के नगर सेठ और संघ के अग्रेसरों ने, चायपानी आदि से खातिरदारी की। संघ के अग्रेसरों में अच्छा उत्साह दीख पड़ता था।

लींबड़ी स्टेशन पर, वहां का श्रीसघ पुष्पहार आदि लेकर उपस्थित था। दरबार की तरफ से मोटर और श्रीयुत शिवसिंहजी दरबार लींबडी ठाकुर साहब की तरफ से उपस्थित थे। दरबारी महमान घर में उतारा दिया गया। यहां चायपानी लेकर श्री सघ के अग्रेसरों के साथ संघ के गेस्ट हाउस में गये, जहां श्रीसघ एकत्रित था। यहां भी दूध चाय, फल आदि से अच्छी तरह खातिर की गई। तत्पश्चात् श्रीसघ की तरफ से डॉ० पोपटलाल संघवी ने, डेपुटेशन के सदस्यों का स्वागत करते हुए, सघ का अच्छा उत्साह बतलाया और कहा कि यह पहला ही मौका है, कि कानफ्रेन्स के प्रमुख, काठियावाड के एक सद्गृहस्थ होंगे। इसके लिये हम सबको अभिमान है और हम आशा करते हैं कि कान्फ्रेन्स के इस अधिवेशन में सजग सभापति के कारण, अच्छा कार्य होगा। आपके बाद, डेपुटेशन के सदस्य श्री नथमल जी सा० चोरड़िया ने, श्रीसघ के सत्कार के लिये उपकार मानते हुए, सघ के उत्साह को और अधिक बढ़ाने को भाषण दिया। कान्फ्रेंस के विषय में जो गलतफहमिया थीं, उनके सम्बन्ध में प्रभावशाली शब्दों में प्रकाश डाला और उन्हें

यथासम्भव दूर किया। यहां से चलकर, पूज्य श्री मोहनलालजी स्वामी के दर्शनार्थ गये और मांगलिक सुनकर फिर दरबारी गेस्ट हाउस को चले गये।

भोजनोपरान्त, माननीय महाराणा सा० लींबड़ी को आमन्त्रण देने के लिये, लींबड़ी श्रीसंघ के अग्रेसरों के साथ राजमहल गये। वहां राणा सा० पर न्यौछावर करने के पश्चात् आमन्त्रण-पत्रिका भेंट की और पधारने के लिये निवेदन किया। श्री ठाकुर सा० ने, विनती स्वीकार करते हुए, पधारने के लिये फरमाया।

यहां से रातको रवाना होकर, डेपुटेशन फिर अजमेर चला गया और हेमचन्दभाई, भावनगर को लौट गये।

अजमेर में तैयारियां और मुनिराजों का पधारना।

जिस अजर अमरपुरी अजमेर में, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन समाज के दो बड़े २ सम्मेलन होने जा रहे थे, उसकी तैयारी और उत्साह के सम्बन्ध में कुछ कहना ही अनावश्यक है। अजमेर श्रीसंघ महीनों पहिले से अपनी सारी शक्ति लगाकर इसकी तैयारी में लगा हुआ था। श्री साधु सम्मेलन समिति और अधिवेशन प्रबन्धक समिति के दफ्तर दो महीने पहिले ही अजमेर में खुल गये थे। यही नहीं, साधु सम्मेलन समिति के सभी सभ्य सम्मेलन होने से एक मास पहिले सिर्फ इस लिये अजमेर में आकर रहे थे, कि साधु सम्मेलन के निमित्त सभी तरह की तैयारियां करना सकें एवं सम्मेलन का मार्ग प्रशस्त करके तथा उसे सब तरह सफल बनाने के उपाय सोच सकें। उधर अजमेर श्रीसंघ ने अमैयों के नोहरे के ठीक बगल में ही साधु सम्मेलन स्वागत समिति का दफ्तर खोल रक्खा था जिसमें अजमेर के कतिपय उत्साही एवं युवक कार्यकर्त्ता अपना सारा काम छोड़कर, अहिर्निश परिश्रम करते एवं सम्यक्रकारेण व्यवस्था करने का प्रयत्न करते थे। इन्हीं उत्साही कार्यकर्त्ताओं के परिश्रम के परिणामस्वरूप एक साथ दो महासम्मेलन सरलता पूर्वक सम्पन्न हो चुके थे।

उधर अजमेर के पुलिस प्राङ्गण में, जहां कुछ ही दिन पूर्व अखिल भारतवर्षीय स्वदेशी प्रदर्शिनी हो चुकी थी, कान्फ्रेंस का पण्डाल बनाया जा रहा था। कान्फ्रेंस के पण्डाल के कार्यकर्त्ताओं को स्वागत समिति से यथोचित सहायता प्राप्त हो सके इसकी सुविधा के निमित्त पण्डाल और स्वागत समिति के ऑफिस में टेलीफोन की व्यवस्था की गई थी।

इस तरह अजमेर में तैयारियां हो रही थी और इस अद्भ तैयारी में सफलता का चैतन्य फूंकने के निमित्त दूर २ के प्रदेशों से उग्र विहार करके, विद्वान मुनिराज अजमेर को समीप करते आते थे। प्रति दिन एक न एक समाचार मिलता था कि आज अमुक आचार्य श्री ब्यावर पधार गये हैं और अमुक मुनि श्री किशनगढ़। खासकर ब्यावर नगर में तो मुनिराजों का यह जमाव हुआ कि उसे भी एक छोटा सा सम्मेलन कह सकते हैं। इस तरह अजमेर के आसपास, शनै २ मुनिगण एकत्रित होते रहे। तत्पश्चात् अजमेर पधारने का क्रम प्रारम्भ हुआ।

ता० ३-४-१९३३ को पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज ६ साधुओं के साथ, प्रवर्त्तक मुनि श्री तारा चन्दजी महाराज ११ साधुओं के साथ और श्री मांगीलालजी महाराज ५ साधुओं के साथ, ब्यावर से

विहार करके तथा गणीजी श्री उदयचन्द्रजी महाराज, श्री आत्मारामजी महाराज और श्री फूलचन्द्रजं
ठाणे १६ किशनगढ से विहार करके, कुल मिलकर ४१ मुनिराज अजमेर पधारे। आप लोगों के स्वाग
लिये श्री मोहनऋषिजी महाराज तथा श्री पन्नालालजी महाराज आदि मुनिराज पधारे थे। अजमेर श्रीर
स्त्री-पुरुष, ओसवाल जैन हाई स्कूल के विद्यार्थी तथा अध्यापक लोग, जैन श्रमणोपासक पाठशाल
बालक, ब्यावर गुरुकुल के अध्यापक एव ब्रह्मचारी, साधु सम्मेलन समिति के उपस्थित सभी
और पधारने वाले दर्शनार्थी तथा लगभग १०० वालिण्टियर्स आदि सब लोग मुनिराजों के सामने
उन्हें बडे उत्साह तथा ठाट-बाट से स्वागतपूर्वक अजमेर में ले आये। जुलूस की शोभा देखते ही बनत
हजारों मनुष्यों के मुख से होने वाले जयजयकार, महिलाओं के गीत और बालकों के सुमधुर गायन,
के हृदय को प्रभावित करते थे।

दूसरे दिन, ता० ४-४-१९३३ ई० को, श्री साधु सम्मेलन मे उपस्थित होने की सदभावना से
होकर तथा ब्यावर से बिहार करके, कच्छ, गुजरात, काठियावाड, मारवाड, मेवाड आदि के लगभ
मुनिराज अजमेर पधारने वाले थे। इन महापुरुषों का स्वागत करने के निमित्त, साधु-मुनिराज अजमे
जैन तथा जैनेतर भाई एव बहनें, ब्यावर गुरुकुल के ब्रह्मचारीगण, साधु-सम्मेलन समिति के सभ्य, र
समिति के सभ्य, वालण्टियर्स आदि, जलूस के रूप में, लगभग ८॥ बजे दिन को आगत मुनिराजों की
में उपस्थित हुए और उन्हें केसरगज में होकर ब्यावर रोड की तरफ से, क्लाकटॉवर के नीचे होकर,
दरवाजा, पुरानी धानमण्डी, नयाबाजार और दरगा बाजार में होते हुए, लाखनकोठड़ी स्थित सम्मे
नोहरे में ले गये। इस जलूस का दृश्य अत्यन्त अपूर्व था। साधु सम्मेलन सम्बन्धी यह सब से बड़ा
था। लोगों का उत्साह दर्शनीय था। उस समय, ध्वजा-पताका तथा आदर्श वाक्यों के बोर्डों से सजा
अजमेर नगर मानो अमरापुरी जान पड़ता था। ४०० से ६०० माइल तक के लम्बे बिहार करके पधार
मुनिराजों के दर्शन के निमित्त एक दिन पूर्व से ही अन्य ग्रामों के लोग अच्छी सख्या में आये थे।
समिति ने भी बडी अच्छी व्यवस्था की थी। खास कर पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज, जिनकी त
अच्छी न होने के कारण चल नहीं सकते थे, उन्हें उनके शिष्यगण लगभग ५०० माइल तक कन्धे पर
कर लाये थे। उन महानुभाव को इस जलूस में भी डोली पर ही लाया गया था। उनकी डोली
प्रान्तवासी मुनिराज उठाते थे, यह देखकर सब लोगों को बडी प्रसन्नता होती थी। इस तरह भाग्
अजमेर के प्रागण में मुनिराजों की शुभ पधरामणी हुई। जो मुनिराज पीछे रह गये थे, या किसी का
रुक गये थे, वे भी दूसरे दिन पधार गये। अस्तु।

भावना विशुद्धि के लिये—

जब साधु-सम्मेलन की तैयारियां इतने जोरों से हो रही थी, और बाह्य क्षेत्र तैयार हो रह
तब भावना जगत की विशुद्धि भी तो आवश्यक थी। इसी दृष्टि से भिन्न २ लेखकों ने अपने २ विचार
द्वारा या अन्त रीति से व्यक्त किये थे। जिनमें से कुछ यों हैं—

श्री साधु सम्मेलन समिति के मन्त्री, श्री दुर्लभजीभाई जौहरी का निम्न-लेख जैन प्रक
प्रकाशित हुआ—

साधु सम्मेलन या विश्व सम्मेलन।

विश्व के समस्त व्यवहार, सम्मेलन की जंजीर में बन्ध होने के कारण ही व्यवस्थित है। रोटीका एक टुकड़ा किंवा वस्त्र का चार अंगुल टुकड़ा भी अनेक मनुष्यों के संगठन से ही तैयार हो पाता है। जड़ और चैतन्य सभी संगठन के बल पर ही शोभा देते हैं। संगठन के कारण ही नगर, ग्राम और शहर कहे जाते हैं। अन्यथा वे जगहें, जंगल किंवा श्मशान गिनी जायं। समस्त चराचर पदार्थों में, संगठन मौजूद है।

पृथ्वी के जीवों ने संगठन करके, अपने संगठन बल द्वारा, विश्वसम्राट मेरु जैसे पहाड़ बना दिये। पानी के संगठन से तालाब, नदी सरोवर और समुद्र बने। आकाश में पानी के संगठित रजकण, बादल बनकर, सूर्य के प्रकाश को भी रोक देते हैं। अग्नि के संगठन ने, ज्वालामुखी पहाड़ बना दिये, जिनसे बड़े बड़े वीर काँपते हैं। वायु के संगठन का साम्राज्य, विश्व के विस्तार के बराबर विख्यात है। वनस्पति के संगठन ने, बाग-बगीचे तैयार कर दिये। कीड़ी और मकोड़े भी, अपने बिल में संगठन पूर्वक बसने के कारण छोटे से छिद्र में लाखों की संख्या में रह सकते हैं। वहां से सब एक साथ बाहर निकलते हैं और रात्रि को फिर भीतर प्रवेश कर जाते हैं। टिड्डी भी करोड़ों की संख्या में संगठित होकर, अपनी छाया से ग्राम के ग्राम दाब लेती है। जलचर, थलचर, खेचर, उरग आदि सभी प्राणी संगठन पूर्वक रहते हैं। प्रवास के समय जंगल में हरिणों के टोले और दूसरे अनेक प्राणी संगठित दीख पड़ते हैं। स्थावर तथा त्रस, संज्ञी तथा असंज्ञी, एकेन्द्रिय तथा पंचेन्द्रिय, पशु या पक्षी, समस्त प्राणी संगठित रहते हैं। संगठित रहने वाले निर्भय हैं। जो संगठन से अलग पड़ गया, वह निर्बल है। आबू पर्वत की चोटी पर पड़ा हुआ पत्थर का टुकड़ा वहां से अलग होने पर मनुष्यों के पैर तले रौंदा जाता है। सिर पर के संगठित बाल राजा के मुकुट की भांति काम देते हैं। किन्तु यदि उन बालों में से कोई बाल नीचे गिर पड़े तो वह पैरों के नीचे एवं गटर तथा घूरे में पड़ कर सड़ जाता है। संगठित बालों की राजा नित्य सेवा करता, उन्हें विविध प्रकार के तेलों तथा इत्रों से पोषण करता और प्रति दिन स्नान करवाता है। किन्तु संगठन से अलग होजाने के बाद राजा के सिर का बाल, उसी राजा के पैरों के नीचे कुचला जाता है, बालों की कहां तो पहले की सिरताज दशा और कहां संगठन से भिन्न होकर गटर में सड़ना। जरी का मुकुट, राजा के मस्तक पर शोभा देता है। किन्तु उसी मुकुट का संगठन से भिन्न पड़ा हुआ सोने का तार पैरों तले रौंदा जाता है। संगठित जन समूह समुद्र से विश्वमात्र भयभीत रहता है और उस संगठन से भिन्न पड़ा हुआ जल-बिंदु किंचित् वायुमात्र से नष्ट हो जाता है। जबतक नख, शरीर के अवयव-अंगुली से लगे रहते हैं तभी तक उनकी कद्र है। अंगुली से बाहर निकलते ही उसे फौरन काट डाला जाता है। उस काटे हुए नख को गढ्ढे में गाड़ दिया जाता है। इस तरह तमाम चराचर पदार्थ या प्राणियों की शोभा संगठन के ही बल पर है। संगठन, यह प्रकृति का अनादि का नियम है। छोटे २ बालकों को बाल शिक्षा के पाठ में पहले संगठन का ही पाठ सिखलाया जाता है। वृद्ध पिता, मृत्यु के समय अपने पुत्रों से लकड़ी का बंधा हुआ बोझ मंगवा कर, उसे तोड़ने के लिये कहता है, तो वह नहीं टूटता। लेकिन जब वह उस बोझ को खोलकर तोड़ने के लिये कहता है तब क्षणभर में वे सब लकड़ियां टूट जाती हैं। इससे सिद्ध है कि जो संगठित है वही सुरक्षित है। संगठन के अभाव में निर्माल्यता दुर्बलता और विनाशक दशा प्राप्त हो जाती है। जिस तरह से पिता ने पुत्रों को लकड़ी के बोझ के दृष्टान्त द्वारा समझाया था उसी वाक्यत्रय की बाल शिक्षा के पाठ के रूप में आज साधु सम्मेलन करने की योजना विचारी जा रही है। विश्व का कल्याण करने वाले, अनन्त भव के लिये सुखी बनाने की योजना के उपदेशक और वैसे देश वालों के लिये संगठन का विचार लोक दृष्टि से कुछ कम

अच्छा समझा जायगा, फिर भी सयोगो के अधीन होकर, साधु सम्मेलन को स्वर्णसुयोग मान, सब जनता उसके लिये हर्षित हो रही है। उस सम्मेलन के लिये महापुरुषगण, उग्र विहार करके पधार रहे हैं। स्थावर और त्रस तथा पशु-पक्षी के सगठन में इतनी दिव्य शक्ति है, तो महामुनिश्वरों के संगठन में कैसी अलौकिक दिव्य शक्ति समाई हुई होगी, इसकी गिनती करने का कार्य गणित शास्त्रियों को सौंपकर, इस सम्मेलन की अपूर्व दिव्यता का ध्यान करके, पाठकों से अपना अपूर्व आत्म-बलिदान करने की प्रार्थना करता हूँ। और खास तौर पर एकलविहारियों को इसके लिये चेतावनी देता हूँ।

० ० ० ० ० ० ० ०

इस लेख के अतिरिक्त, साधु सम्मेलन प्रारम्भ होने से पूर्व निम्नलिखित पत्र छपवाकर बाटा गया था—

सम्मेलन के समय स्मरण रखने के मुद्रा लेख—

(१) रागद्वेप और मोह का त्याग ही अहिसा है।
(२) पराये हितों की उपेक्षा का नाम ही उन्माद दशा है।
(३) स्व तथा पर के हितकर वचन ही सत्य हैं।
(४) मन, वचन और काया में कषाय का अभाव हो, यही सामायिक है।
(५) कषायमय हितशिक्षा भी मृषावाद है।
(६) अनार्य लोग, अपने मा-बाप को बेचते हैं और कषायी अपने आपको कषाय के हाथ बेंच देता है।
(७) अपनी मानपूजा, सत्कार और सम्मान की रक्षा का विचार ही आर्त्तध्यान है।
(८) अनुकूल और प्रतिकूल उपसर्गों का सहन ही आभ्यन्तरिक-तप है।
(९) प्रकृति की अपेक्षा पारस्परिक-भय भयङ्कर है।
(१०) हिंसक, मृषावादी चोर और व्यभिचारी जिस तरह पापी हैं, उसी तरह क्रोधी, मानी, मायावी लोभी आदि १८ प्रकार के पापी हैं।
(११) धर्मस्थान औषधालय है, धर्म औषधि है और धर्माचार्य डॉक्टर है।
(१२) बाह्य परिग्रह से, आभ्यन्तर परिग्रह अनन्त भयंकर है।
(१३) धर्म के नाम पर क्लेश का अनुभव हो, यही अधर्म है।
(१४) धर्म चन्दन की भाति है। अज्ञानी उसे रगड कर अग्नि उत्पन्न करते हैं।
(१५) पगडी के आकार और रग की भिन्नता के कारण जाति की भिन्नता नहीं मानी जाती, तो सम्प्रदाय की भिन्नता क्यों मानी जाय
(१६) शुद्धाचार की नहीं, बल्कि आन्तरिक कषाय की उदीरणा के कारण ही यह सब खींचातानी है.
(१७) शास्त्रों का उपयोग जिस तरह धर्म के नाम पर अन्तरायों की वृद्धि के लिये किया जाता है वैसे ही यदि रागद्वेप घटाने के लिये किया जाय तो शास्त्र की भक्ति मानी जाय।
(१८) प्राणीमात्र के लिये जैन का व्यवहार, कमल से भी विशेष कोमल होना है।
(१९) अनेकान्ती स्वर्ग से भी अधिक सुखी रहता है।

(२०) एकान्ती नक से भी अधिक दुःखी रहता है।
(२१) जो बड़े से बड़ा सेवक है, वही राजा या महाराजा है।
(२२) कषाय के कड़वे फल उपदेश करने के लिये ही या आचरण करने के लिये भी ?
(२३) शास्त्र के बहाने, कषाय बढ़ाये गये या घटाये गये ?
(२४) सम्प्रदायों की स्थापना विषमता के लिये नहीं, बल्कि समता के लिये की गई थी।
(२५) शास्त्रों के नाम पर कषाय उत्पन्न करके डूबा जाता है या तैरा जाता है।
(२६) *मिथ्यात्व का नाश, केवल क्रिया से नहीं, बल्कि ज्ञान से होगा।*
(२७) जो वस्तु जितनी ही उत्तम है, विरोधी मार्ग ग्रहण करने पर वह उतनी ही अधम हो जाती है
(२८) सम्प्रदायें सुन्दर हैं, किन्तु साम्प्रदायिकता असुन्दर।
(२९) सम्प्रदायान्धता, मिथ्यात्व से भी अधिक भयंकर होती है।
(३०) संसारी अपने स्वार्थ के निमित्त लड़ते हैं, तब और लोग मान अपमान के लिये जूझते हैं।
(३१) राज्य के लिये होने वाले युद्ध समाप्त हो सकते हैं, किन्तु मान-अपमान के युद्ध पूर्ण नहीं हो सकते।
(३२) जैन को मान-अपमान के कीड़े नहीं खा सकते कारण, कि वह जीवित सिंह है। कीड़े तो मुर्दे को खा सकते हैं।
(३३) सम्प्रदायें होने पर, विषवाद आदि कारणों ने, करोड़ों के प्राण ले लिये।
(३४) मान-पूजा और आडम्बर का सर्वथा त्याग कर देने पर ही जैनत्व प्रकट होता है। हृदय की पवित्रता का नाम ही जैनत्व है।
(३५) धर्म की नहीं, बल्कि सम्प्रदाय की रक्षा करने की तरफ मन दौड़ता है।
(३६) जो धार्मिक है, वह सभी सम्प्रदायों को अपनी ही मानता है।
(३७) जो अपनी अपूर्णताओं के लिये अपनी लघुता प्रकट करे, वह जैन।
(३८) जो अपने आपको पूर्ण मानकर अन्य का तिरस्कार करे, वही अजैन।
(३९) मान, पूजा और आडम्बर का नाश करे, वह जैन अन्यथा मान-पूजा का कीड़ा।
(४०) विकास के बदले, आत्मा का विनाश न हो, इस का ध्यान रखियेगा।
(४१) जीवन ही सच्चा-व्याख्यान है।
(४२) विश्वप्रेम हुए बिना, महाव्रतों का पालन नहीं हो सकता।
(४३) विश्वप्रेम के अभाव में, प्रथम महाव्रत का भंग।
(४४) जहाँ, श्रावकों और क्षेत्र को, महत्व के कारण अपना माना जाता है, वहाँ अपरिग्रह व्रत कैसा ?
(४५) सभी शास्त्रों का सार, समभाव है।
(४६) साधु को, यावज्जीवन समभावी-व्रत की सामायिक होती है।
(४७) समता मोक्ष है और विषमता बन्ध।

संग्राहक—सत्यशोधक

कानफरेन्स में नवमें अधिवेशन की तैयारियां।

पहले बतलाया जा चुका है, कि एक तरफ जहां मम्मैयों के नोहरे में साधु-सम्मेलन का अधिवेशन हो रहा था, वहां दूसरी तरफ अजमेर नगर के उत्तर की ओर पुलिस ग्राउण्ड में, कान्फ्रेंस के नवमें अधिवेशन के निमित्त पण्डाल की तैयारिया हो रही थी। लम्बे चौड़े पुलिस ग्राउण्ड' में, एक बृहदाकार नगर-सा बसाने को तैयारियां हो रही थी। चतुर तथा सेवाभावी इंजिनियर एवं ओवरसियर लोग, सैंकड़ों मजदूरों को लगा कर उस नगर को बसाने का आयोजन कर रहे थे। उसी नगर के एक भाग में कान्फ्रेंस अधिवेशन के निमित्त पण्डाल तैयार किया जा रहा था। सारा कार्य पूर्ण मनोयोग और तीव्र गति से हो रहा था।

प्रकृति का चक्र, अनादिकाल से इस तरह चल रहा है, जिसका आजतक कोई हिसाब ही नहीं लगा सका। वह जड़ होते हुए भी इस प्रकार की चैतन्य सी जान पड़ती है, कि जैसे कोई परीक्षा करने के लिये वह कभी २ उमड़ पड़ती हो। कहावत है कि—'श्रेयांसि बहु विघ्नानि'। ठीक इसी के अनुसार, पण्डाल की तैयारी के समय उसका कोप हुआ और कार्यकर्त्ताओं के मार्ग में एक बहुत बड़ा विघ्न उपस्थित हो गया। बादल हुए, बिजली चमकी, जोर की हवा चली, आंधी आई और फिर अजमेर का प्रसिद्ध अन्धड शुरु हो गया। यह अन्धड (जोर की हवा) किसी तरह बन्द ही न होता था। इसी के परिणाम स्वरूप पण्डाल के ऊपरी भाग पर कार्य करने वाले तीन मजदूर बड़े ऊँचे पर से गिर पड़े। लेकिन सौभाग्य से वे तीनों चोट मात्र लग कर बच गये। जितने ऊँचे पर से वे लोग गिरे थे, सामान्यता उतने ऊंचे से गिरने वाला मनुष्य अपनी लीला समाप्त कर देता है। लेकिन वे बच गये, इसे कान्फ्रेंस के कार्यकर्त्ता की सद्भावना के परिणाम के अतिरिक्त और क्या कहा जा सकता है? अस्तु।

प्रकृति के इस कोप के कारण, आँधी के मारे पण्डाल का ऊपर वाला कपड़ा बडी दूर तक फट गया। दो तीन दिन तक जोर की वर्षा भी हुई, जिससे पण्डाल में पानी ही पानी भर गया। इस अवसर पर कान्फ्रेंस का अधिवेशन सफल होने की आशा स्वप्न सी जान पड़ने लगी। लोंकानगर में जिधर दृष्टि जाती थी क्षति ही क्षति दिखाई देती थी। यदि उसकी रचना का कार्य किसी सामान्य मनुष्य के जिम्मे होता तो अपने इस किये कराये पर पानी फिरता देख कर वह निश्चय ही हताश हो जाता और फिर कभी उस कार्य के सुधारने या पुनर्निर्माण का नाम भी न लेता। लेकिन नहीं, जो कर्मवीर इस कार्य में लगे हुए थे वे वर्षा-बिजली या पत्थर की कतई चिता करने वाले नहीं थे। एक तरफ वर्षा हो रही थी और दूसरी तरफ नियमित रूप से कार्य हो रहा था। प्रकृति और कर्मवीरों का यह युद्ध दर्शनीय था। अन्त में दो तीन दिन की परीक्षा के पश्चात्, कार्य करने वालों के अदम्य उत्साह और अनुपम साहस को देख कर मानो प्रकृति ने अपना हर्ष प्रकट किया और अपने अस्त्र वापस ले लिये। बादल खुल गये, धूप निकल आई और पण्डाल के पुनर्निर्माण का कार्य और अधिक जोर के साथ चलने लगा। थोड़े ही समय में निराशा वादियों ने देखा कि, लगभग क्षत-विक्षत पण्डाल फिर पहले से अधिक अच्छे स्वरूप में तैयार हो गया है।

इस समय अजमेर में दोहरा क्षोभ था। एक तो अखिल भारतवर्ष के प्रधान २ मुनिराजों के एक ही जगह दर्शन और दूसरा कान्फ्रेंस का अधिवेशन। इस दोहरे क्षोभ से आकर्षित होकर, स्थानकवासी समाज के हजारों नरनारी प्रतिदिन अजमेर आ रहे थे। यह बतलाने की आवश्यकता नहीं है, कि किस तरह इस अवसर पर बी० बी० एण्ड सी० आई रेल्वे ने कन्सेशन देने यहां तक कि स्पेशल ट्रेन का कन्सेशन देने तक से इनकार कर दिया और कहीं कहीं तो स्वीकार करके फिर इनकार कर दिया एवं मुसाफिरों के कष्ट की कुछ भी चिंता किये बिना लोगों को भारी भीड़ में डालकर अजमेर पहुंचाया। रेल्वे की इस कुवृत्ति के परिणाम स्वरूप अजमेर आने वाले यात्रियों को जिस भयी का कष्ट उठाना पड़ा, उसे भुक्त भोगी ही जान सकते हैं। सामान्य मनुष्य तो उसकी कल्पना भी नहीं कर सकता। इतना कष्ट होने पर भी हजारों नरनारी और बालक प्रति दिन अजमेर आ रहे थे। स्वागत समिति को, जहां तक और जितने किराये पर भी मकान मिले, उसने लेने की कसर न रक्खी। सैंकड़ों मकान गृहस्थों ने अपनी ओर से निशुल्क भी खोल दिये थे। इसी के परिणाम स्वरूप सारे अजमेर नगर में बाहर से आये हुए गृहस्थ लोग यत्र तत्र टिके हुए थे। गली-कूँचों में, नगर के बाहर भीतर जहां भी देखो स्थानकवासी जैन ही दीख पड़ते थे। इस अवसर पर अजमेरपुरी मानों जैनपुरी हो रही थी। एक तरफ बहु संख्यक मुनिराज विराजमान थे ही, दूसरी ओर अगणित सदस्य मय स्त्री बच्चों के अजमेर की शोभा बढ़ा रहे थे। इस अवसर का वर्णन लेखनी की शक्ति के बाहर है। उसका आनन्द तो वे ही लोग जान सकते हैं, जिन्होंने अजमेर नगर में उस समय रह कर यह दृश्य देखा हो। इतनी भारी भीड़ को ठहराने और उसकी सुविधा की व्यवस्था करने में, स्वागत समिति के उत्साही सदस्यों ने जिस तत्परता से कार्य किया, स्थानकवासी समाज के इतिहास में वह एक अद्वितीय वस्तु है।

इस दोहरे स्वर्ण-सुयोग को दृष्टि में रखकर जैन प्रकाश के विद्वान सम्पादक ने, अपने पत्र के मुख पृष्ठ पर, जो उत्साह वर्द्धक वाक्य भिन्न २ अङ्कों में छाप थे वे पाठकों के अवलोकनार्थ यहां ज्यों के त्यों दिये जाते हैं—

कान्फ्रेंस क्या करेगी ?

वाणीविलास का समय निकल चुका है।

भाषण के साथी भक्त अब काम नहीं दे सकते।

अत्यन्त परिश्रम से पैसा पैसा बचाकर संग्रह किया हुआ समाज का द्रव्य व्यर्थ न जाना चाहिये।

किये जाने वाले परिश्रम, खर्च होने वाले द्रव्य तथा समय और शक्ति के बलिदान को यदि सार्थक नहीं करोगे, तो समाज के शत्रु का कार्य कर बैठोगे।

त्यागियों को, अपने त्याग का पोषण करने के निमित्त समय रह, उनके आचार विचार को आंच न आवे, इसके लिये जिस वीर संघ की स्थापना की योजना बनी है, उसकी स्थापना इस महासभा में ही हो जानी चाहिए। जिससे सदस्य सेवाभावी श्रमणोपासक समयानुकूल शक्ति के अनुसार सेवा तथा त्याग का अनुभव करें। इसी सिद्धांत में से सच्चे त्यागी सच्चे साधु उत्पन्न होंगे।

वैरागियों को अपने साथ २ फिराने की उपाधि छूट जायगी और यह वीर संघ शिष्याभिलाषियों को सहायक हो जायगा। वैरागी लोग, त्याग रूपी महल की सीढियां चढ़ना सीखेंगे। इसी समय वे कसे जायेंगे और इस कसौटी पर चढ़ा हुआ सोना शुद्ध होने पर त्याग मार्ग को आलोकित करेगा। श्री सिद्धान्त शाला की योजना को भी यह वीर संघ निभा सकता है।

* * * * * * *

नवमें अंक की विशेषता—

साधु-महात्मा, अपने सुख विहार तथा सुविधायुक्त-क्षेत्र छोडकर, सूखा, बासी जो भी मिला, उसी से अपना निर्वाह करके, बाइस प्रकार के परिषह सहन करते २, आते जाते दो २ हजार माइल तक के लम्बे प्रवास पैर से चलकर, अपरिचित अजमेर नगर के प्रांगण में पधारे, ऐसी स्थिति में समझदार श्रावक लोग, सेलूनो या स्पेशल ट्रेनों में सोते २—आराम उठाते हुए, पकवान जीमते २ भी क्या अजमेर तक नहीं पहुंच सकेंगे।

नहीं करवाने हैं उपवास या एकाशना। नहीं विवश करना है चौविहार करने के लिये। साथ ही नहीं अर्ज करना है आपके एक भी सुख साधन छुडाने को। आपकी सम्पूर्ण अनुकूलताओं की रक्षा करके भी अजमेर पधारने की प्रतिज्ञा कीजिये हमें बधाई भेजिये और अपनी उपस्थिति से, आसपास के श्रावकों में उत्साह की वृद्धि कीजिये। यात्रा की 'छ' 'री' में से जितनी सम्हाली जा सके उनकी जतना रखियेगा।

झुकाने वाले, बनो झुकने के लिये तो दुनिया बड़ी संख्या में तैयार है।

अजमेर के प्रांगण में, इस अजर अमर उत्सव के समय, लोंकाशाह के वंशज पधारें, यह कुछ बेवाई (समधी) के मण्डप में नहीं जाना है। स्मरण रहे कि यह हम लोगों की पुण्य यात्रा है। आपको जिन २ अनुकूलताओं, सुविधाओं और सुख साधनों की आवश्यकता हो, वे सब अपने साथ ही लेते पधारियेगा।

'सेवाधर्म. परमगहनो योगिनामप्यगम्य' आपकी यह भावना सफल हो। अजमेर श्रीसंघ आपके उतारे, पानी और रोशनी का बन्दोबस्त करने की तैयारी कर रहा है।

अधिवेशन प्रबन्धक समिति आपकी सेवा के लिये एक पैर के बल तैयार खड़ी है।

* * * * * * *

तीर्थ आपके आंगन आये?

पवित्र मानी जाने वाली नदियों और तीर्थों के दर्शन करने के लिये अनेक कष्ट सहन करके तथा खर्च उठा कर उन तीर्थों के पास पहुंचना पडता है। किन्तु हम लोगों के स्वभाव से, चैतन्य-तीर्थ-महातीर्थ हम लोगों के आंगन में पधार कर दर्शन दे रहे हैं, हमें पवित्र होजाने के लिये उत्साहित कर रहे हैं।

जागृत होने के लिये ललकार रहे हैं।

हमारे आंगन में, यदि गंगाजी पधारें, तो हमें कितनी प्रसन्नता हो। फिर जहां ऐसी अनेक गंगाजी बह रही हों, वहां कैसा आनन्द होना चाहिये।

द्रव्य गंगामृत के लिये जब इतनी दौड़ धूप हो रही है, तो जहां भाव गंगाओं में बाढ़ आवे, वहां की तो बात ही क्या पूछनी है ?

* * * * * *

अजमेर के इस समय के हमारे उत्सव !

वे हम लोगों के लिये तो 'स्वर्णसंयोग' 'रत्नचिंतामणि' 'अमृतबेली' और रस कलश हैं।

यदि शक्ति हो, तो उनका स्पर्श करो, पियो और पचाओ। यदि न पचा सको, तो दूसरों को पीते देखकर आनन्द अनुभव करो और सुरम्य सुगन्धि से अपने दिमाग को तर करो।

मन के मैल को धोने के अवसर पर 'फूटरूपी कौआ' की कर्कश कांव कांव से परेशान तथा उत्तेजित होकर, उसे उड़ाने के लिये, कहीं इस अमूल्य चिन्तामणि–रत्न को ही न फेंक दीजियेगा।

यदि निर्जरा न कर सको तो भी आस्रव को रोककर संवर की साधना कीजियेगा।

दुराग्रह के फेर में पड़ कहीं इस अमृतबेलि को सुखा कर नष्ट न कर डालियेगा।

पक्षपात की बेहोशी में, पैर की ठोकर से कहीं यह रस कलश ढोल न दीजियेगा।

ऐसे स्वर्ण संयोग बारम्बार प्राप्त नहीं होते।

यह तो कोई मंगल मुहूर्त आगया है अथवा यों कहो, कि यह कोई अपूर्व बाग मिल गया है या कोई भाग्य से हो आने वाली गुदगुदी है, जिसमें कि 'गुबार के मां माती' होजाने वालीकण मौजूद हैं।

ऐसा पवित्र कर डालने वाला चौपड़िया फिर कब आयगा ?

इस बिद्युत् की चमक मोती में पिरो लीजियेगा। यदि प्रमाद कीजियेगा, तो पछताइयेगा।

यह अद्भुतता तो देखो ! भाग्यशालियों और पुण्यशालियों ! पधारो ! पधारो !!

इस पुण्यधाम के लिये होने वाली हलाली में साथ दो।

* * * * * *

भगवान् महावीर के उत्तराधिकारी प्रगति पथ पर–

अलौकिक आनन्द से उमड़ता हुआ वह अजर अमर अजमेर नगर ! और उसमें कैसा द्रव परिवर्तन ! ! !

जो अभी कलतक एक दूसरे से भिन्न समझे जाते थे, वे ही आज समभाव के सीमेण्ट से जुड़ रहे हैं। जो साधु, अभी कलतक परस्पर बातचीत करने में भी संकोच करते थे, वे ही आज एक स्थान पर एकत्रित होकर पारस्परिक-हित की मीठी २ सलाहें कर रहे हैं। जो कलतक एक दूसरे के साथ भी नहीं बैठ सकते थे, वे ही आज एक से आसन पर बैठकर, एक दूसरे को उत्सुकता पूर्वक भेंट रहे हैं और खूब प्रेम से एक दूसरे की सेवा शुश्रूषा कर रहे हैं।

कैसा सुन्दर दृश्य ! कैसा दुर्लभ-प्रसंग ! कैसा हृदय परिवर्तन।

ऐसे अपूर्व, अद्भुत और कल्पनातीत प्रसंग यदि अपनी दृष्टि से देखने की इच्छा हो तो अजमेर पधारने का निर्णय करो ! मण्डप की सीट और उतरने की जगह की व्यवस्था शीघ्र करो। स्मरण रहे, कि शीघ्रता करे, सो ही पहला रहता है।

इस तरह उत्साहवर्धक बातें, केवल, जैन प्रकाश ने ही नहीं, किसी न किसी रूप में अनेक पत्रों ने लिखी और अजमेर में होने वाले इन उत्सवों के प्रति अपना हर्ष प्रकट करते हुए उनकी सफलता की इच्छा प्रकट की।

सभापति का आगमन और स्वागत।

ता० २२, २३, २४, अप्रेल सन् १६३३ ई० को श्री श्वे० स्था० जैन कान्फ्रेंस का नवमा अधिवेशन होने वाला था, इस लिये ता० २१ को ही सभापति महोदय का अजमेर पधारना निश्चित हुआ। स्वागत समिति की ओर से, आपके स्वागत की समुचित व्यवस्था की गई थी।

निश्चित् समय पर, एक स्पेशल ट्रेन द्वारा श्री प्रेसीडेण्ट महोदय पधारे। उनके साथ उनके परिवार के अतिरिक्त ५०० प्रतिनिधि तथा अनेक प्रतिष्ठित सज्जन भी थे।

स्पेशल ट्रेन के अजमेर स्टेशन में घुसते ही कराची के सुप्रसिद्ध जैन-बैण्ड ने सभापति महोदय को सलामी दी। स्टेशन पर, यों तो बहुत बड़ी भीड़ स्वागतार्थ उपस्थित थी, लेकिन प्लेटफार्म पर जो लोग खासतौर पर गये थे, उनमें स्वागताध्यक्ष राजाबहादुर सेठ ज्वालाप्रसादजी जौहरी, स्वागत-मन्त्री द्वय श्री दुर्लभजी त्रिभुवन जौहरी तथा श्री नथमलजी चोरडिया, श्री सेठ गणेसमलजी थे। आप लोगों ने सभापति महोदय का सम्यक् प्रकारेण स्वागत किया और मालाएँ पहनाईं। तदुपरान्त मुख्य २ नेताओं से श्री सभापति महोदय का परिचय करवाया गया।

स्टेशन से बाहर, श्री सभापति महोदय के विराजने के लिये, चांदी के होदे से सजा हुआ हाथी तैयार था। बाहर पधारते ही आपको उस पर विठाया गया। आपकी बाईं तरफ, स्वागताध्यक्ष राजा बहादुर ज्वालाप्रसादजी विराजमान थे। होदे की पिछली बैठक पर, जैन ट्रेनिङ्ग कॉलेज-सम्मेलन के मनोनीत सभापति उत्साह की मूर्ति श्री आनन्दराजजी सुराणा जोधपुर निवासी, चांदी की डण्डी वाला

छत्र लिये और सभापति महोदय पर छाया करते हुए, अपनी निरभिमानिता एवं सेवाभाव का परिचय दे रहे थे।

इस तरह, स्टेशन से जलूस प्रारम्भ हुआ। जलूस १ मील लम्बा और उसमें ४० ५० हजार मनुष्य भाग ले रहे थे। इस जलूस को देखने के निमित्त, जिस मार्ग पर होकर उसके निकलने का प्रोग्राम था, हजारों स्त्री-पुरुष अट्टालिकाओं पर पहले से ही बैठे थे। यह जलूस जिस श्रेणी का था, उस श्रेणी का जलूस पहले कभी अजमेर की सड़कों पर निकला हो, ऐसा याद होने से वहाँ के वृद्धों ने भी नाहीं की। जलूस का दृश्य, राजाओं के जलूसों को मात कर रहा था। ऐसा जान पड़ता था, मानो किसी ऐतिहासिक सम्राट के राज्यारोहण काल में निकले हुए इस जलूस के साथ, ५० हजार जनता जय जयकार करती जा रही हो। जलूस की शोभा देखते ही बनती थी। स्टेशन से विदा होकर यह जलूस धुंगी-घर, म्युनिसिपल ऑफिस, नया बाजार, कड़क्काचोक, दरगाह बाजार, मदारगेट और केसरगंज में घूमता हुआ म्यूकैसल पहुँचा, जहाँ श्री सभापति महोदय के ठहराने की व्यवस्था की गई थी। मार्ग में नगर के प्रतिष्ठित २ महानुभावों ने सभापति महोदय का बड़े प्रेम से स्वागत सत्कार किया और लगभग १२ स्थानों पर जलूस रोककर, उन्हें सुन्दरी-मालाएँ पहनाई गई।

म्यूकैसल पहुँचने पर, जलूस समाप्त हुआ। जनता अपने २ स्थान को चली गई और सभापति महोदय बिना कुछ और किये, सब से पहले मुनिराजों के दर्शनार्थ पधारे।

* * * * * *

इसी दिन, लींबड़ी के माननीय ठाकुर सा० सर दौलतसिंहजी, मिस शारप (जो गारगी के नाम से प्रसिद्ध हैं) के साथ श्री श्वे० स्था० जैन पश्चिम में सम्मिलित होने तथा अजमेर में विराजमान मुनिराजों के दर्शनार्थ पधारे।

पण्डाल की रचना।

कान्फ्रेंस के निमित्त बनाये जाने वाले जिस पण्डाल के सम्बन्ध में पहले लिखा जा चुका है, उसकी रचना की वास्तविक छटा तो उन्हीं लोगों को मालूम हो सकती है जिन्होंने अजमेर के उस मंगलमय प्रसंग पर उपस्थित होकर उस भव्य पण्डाल का निरीक्षण किया हो। फिर भी संक्षेप में उसका कुछ वर्णन दे देना अनुचित न होगा। नकशा भी साथ में दिया गया है।

अजमेर नगर के ईशान्य-कोण में पुलिस माउण्ड के नाम से एक लम्बा-चौड़ा मैदान है। उसी में इस पण्डाल की रचना की गई थी। चारों ओर से चाबरों की दीवाल बनाकर, दक्षिण दिशा में केवल एक ही प्रवेश द्वार रखा गया था। इस सुन्दरतर प्रवेश द्वार के दोनों पार्श्वों पर दो द्वार पालों के चित्र बनाये गये थे। यों तो सारे ही द्वार पर की हुई रंगाई तथा चित्रकारी दर्शनीय थी, लेकिन द्वार के ऊर्ध्व भाग में राष्ट्रीय पताका लिये हुए, सिंह सहित भारतमाता का चित्र, दर्शक के नेत्रों को चल

भर अपनी ओर आकर्षित किये विना नही रहता था। उस विशालकाय दुर्लभ द्वार पर ऊपर से नीचे तक बिजली लगाई गई थी, जिसके कारण वह बड़ी दूर से दिखाई ही नहीं देता था, बल्कि दूर २ के लोगों को अपने पीछे बने हुए भव्य लोंकानगर की शोभा देखने का आमन्त्रण भी देता था। उसी के आकर्षण से प्रभावित होकर अथवा यों कहें कि उसी की मनमोहक छटा का अवलोकन करने के निमित्त प्रतिदिन सन्ध्या के समय हजारों नागरिक पण्डाल के बाहर सडक पर तथा मैदान मे जमा हो जाते थे। अस्तु।

इस प्रवेश द्वार के बाहर पूर्व से पश्चिम तक दो लाइने दुकानों की थी, जिनमें लोगो के जलपान भोजन आदि की व्यवस्था के अतिरिक्त स्वदेशी वस्त्रों की दुकानें, बुकसेलरों की दुकाने और खादी-भण्डार को शाखा खुली हुई थी। इस तरह, पण्डाल से बाहर ही एक छोटासा मेला लगा जान पड़ता था। इन दुकानों पर खूब भीडभाड रहती थी और बिक्री भी खूब होती थी।

प्रवेश द्वार के भीतर घुसते ही बाईं ओर पण्डाल समिति का दफ्तर था, जिसमें टेलीफोन की व्यवस्था की गई थी। प्रवेश द्वार के सन्मुख हो जो प्रधान मार्ग था उसका नाम चुन्नीलाल महता मेन रोड और फवारा से आगे की सड़क का बडे रास्ते का नाम कान्फ्रेंस के स्वागताध्यक्ष महोदय के स्वर्गीय पिता राजा बहादुर सुखदेवसहायजी के नाम से, 'सुखदेवसहाय मेन रोड' रक्खा गया था। इसी मेन रोड के दोनों किनारों पर, भिन्न २ सद्गृहस्थों के नाम पर भवन बनाये गये थे, जिनमें आगन्तुक प्रतिनिधियों तथा दर्शकों के ठहरने की व्यवस्था की गई थी। उन भवनों के नाम यों हैं—

(१) श्री देवीदास निवास
(२) रा० ब० भीमजीभाई भवन
(३) श्री नन्दलालजी भण्डारी भवन
(४) श्री रायचन्द भवन
(५) श्री बालमुकन्द भवन
(६) श्री मेघजीभाई भवन
(७) श्री हजारीमलजी भवन
(८) श्री हमीरमलजी भवन
(९) श्री कृष्ण भवन
(१०) श्री मानमलजी भवन
(११) श्री शम्भूमलजी भवन
(१२) श्री दुलीचन्दजी भवन
(१३) श्री दुर्लभ सामायिक गृह
(१४) श्री पन्नालालजी पौषधशाला
(१५) श्री कराची हाउस
(१६) श्री टी० जी० शाह भवन
(१७) श्री अम्बावीदास आरोग्य भवन
(१८) श्री वा० मो० शाह वाचनालय
(१९) श्री पूनमचन्दजी भवन
(२०) श्री ऋषभ भवन
(२१) श्री मुलतानमलजी भवन
(२२) श्री अचल भवन

इन भवनों के पीछे, बडी दूर २ तक छोटे २ और बडे २ कोड़ियों तम्बू लगे हुए थे। इन तम्बुओं में भी बाहर से पधारे हुए सज्जनों के ठहरने की व्यवस्था थी। मेनरोड के बीच में, एक सुन्दर होज के बीचोंबीच फव्वारा लगा हुआ था, जिससे उड़ता हुआ पानी, दर्शकों के हृदय में आनन्द की लहर उत्पन्न कर देता था। यों तो लोंकानगर में यत्रतत्र अनेक फव्वारे, थे लेकिन इस फव्वारे की छटा सर्वोपरि थी।

उपरोक्त भवनों के अतिरिक्त अन्य सद्‌गृहस्थों के नाम से, निम्नानुसार नाम करण किये गये थे।

(१) श्री सेठ अमरचन्दजी पीतलिया के नाम से	अमरचन्द पीतलिया स्ट्रीट
(२) राय सेठ चान्दमलजी रियांवाले के नाम से	चान्दमल पार्क
(३) श्री पीताम्बर हाथी भाई के नाम से	पीताम्बर पार्ट
(४) श्री सूरजमल भाई झवेरी के नाम से	सूरजमल स्ट्रीट
(५) श्री किशनदासजी मूथा के नाम से	किशनदास स्ट्रीट
(६) श्री छगनलालजी सा० रियांवाले के नाम से	छगनमल स्ट्रीट
(७) श्री किरतमलजी कोचर के नाम से	किरतमल लेन
(८) श्री अगरचन्दजी भैरोदानजी सेठिया के नाम से	सेठिया स्ट्रीट
(९) राजाबहादुर सुखदेवसहायजी के नाम से	सुखदेवसहाय मेन रोड
(१) श्री केशरीचन्दजी भण्डारी के नाम से	भण्डारी स्ट्रीट
(११) श्री वाडीलाल मोतीलाल शाह के नाम से	वाडीलाल वाचनालय
(१२) श्री बालमुकन्दजी सा मूथा के नाम से	बालमुकन्दजी स्ट्रीट
(१३) श्री मेघजीभाई थोमणभाई J P के नाम से	मेघजी स्ट्रीट
(१४) श्री नाथूलालजी गोदावत के नाम से	गोदावत स्ट्रीट
(१५) श्री अम्बावीदास भाई डोसाणी के नाम से	अम्बावीदास आरोग्य भवन

उपरोक्त नामकरण से अनुमान लगाया जा सकता है कि लोंकानगर कितना विशाल और सुरम्य रहा होगा। इस तरह बनाये हुए नगर में दर्शनार्थियों तथा प्रतिनिधियों की सुविधा के लिये जगह जगह पानी के नल, फव्वारे, स्नानागार आदि बने हुए थे। सड़कों के दोनों किनारों पर, हरियाली अपनी अपूर्व शोभा दिखला रही थी।

यह तो था लोंकानगर का अगला भाग। इस भाग के उत्तर में, एक बड़ी तथा सुन्दर कमानी वाला दर्शनीय द्वार बना हुआ था। यह सारी तैयारी जिस महत्त्वपूर्ण कार्य को सम्पन्न करने के निमित्त की गई थी वह तो इसी दरवाजे के भीतर होने वाला था। इस द्वार मे प्रवेश करने पर कान्फ्रेंस का वह भव्य पण्डाल दृष्टि गोचर होता था जिसमें १५ सहस्र नर-नारियों के बैठने की समुचित व्यवस्था की गई थी। पण्डाल के मध्य भाग में वक्ताओं के लिये प्लेट फार्म बना हुआ था और पूर्व भाग में सभापति तथा सम्मानित सदस्यों एवं प्रधान २ व्यक्तियों के बैठने के लिये मंच बना हुआ था। सारा पण्डाल बिजली की बत्तियों से सजाया गया था और सभी श्रोताओं को वक्ता के भाषण का आनन्द मिल सके इसके लिये लाउड स्पीकर (ध्वनि प्रसारक यन्त्र) की व्यवस्था की गई थी। प्राय देखा जाता है कि लाउडस्पीकर काम करता २ कभी २ फेल भी हो जाता है। किन्तु सौभाग्य से कान्फ्रेंस अधिवेशन के चार दिनों में वह एक क्षण के लिए भी नहीं रुका। इसी के परिणाम स्वरूप पन्द्रह हजार से अधिक की वह भीड़ धीरे से धीरे बोलने वाले वक्ता के भाषण को भी सम्पूर्णतया सुन सकती थी। अस्तु।

इस पण्डाल के पश्चिम की ओर स्वयं-सेवकों का कैम्प बना हुआ था, जिसमें कान्फ्रेंस के अवसर पर सेवा करने की इच्छा से आये हुए सेवाभावी-स्वयंसेवकों के कैप्टेन का ऑफिस तथा लगभग सभी

स्वयसेवको के ठहराने की व्यवस्था थी। इनके नेता, बम्बई के सुप्रसिद्ध बिजली के व्यौपारी तथा धनपति श्री टी० जी० शाह, अपने सैनिक-वेश मे इस कैम्प की शोभा बढाते थे। आपके नेतृत्व मे, पण्डाल के भीतर ही नहीं, बाहर भी स्वयंसेवकों ने जिस मुस्तैदी से सेवा की उसका वर्णन कर सकना कठिन है।

लोंकानगर, इस तरह केवल सडको, भवनो, तम्बुओ, कैम्पों आदि का ही नगर नहीं था। उस नगर में बडे २ विद्वान्, इंजीनियर, बड़े २ धनकुबेर और गरीब से गरीब लगभग १० हजार लोग निवास भी कर रहे थे। यही नहीं, उस नगर का नगर नाम सार्थक करने में जिस महत्वपूर्ण कार्यवाही ने सर्वोपरि सहायता पहुंचाई है, उसका वर्णन पाठको को अगले अध्याय में मिलेगा।

कान्फरेन्स-अधिवेशन।

पहला दिन ता० २२--४--३३ ई०

कान्फ्रेंस के जिस ऐतिहासिक-अधिवेशन की महीनों से तैयारियां हो रही थी, और जिसके लिये ३५-४० हजार गृहस्थ अजमेर नगर मे ठहरे हुए थे, उसका प्रथम अधिवेशन प्रारम्भ हुआ। यों तो अधिवेशन का कार्य, दिन को २ बजे से प्रारम्भ होने वाला था, किन्तु जनता की सुविधा की दृष्टि से दिन को १२ बजे से ही पण्डाल का द्वार खोल दिया था। पण्डाल का द्वार खुलते ही, हजारों स्त्री-पुरुष पण्डाल में प्रविष्ट होने का प्रयत्न करने लगे। स्त्रियों और पुरुषों के लिये अलग २ प्रवेश द्वार थे तथा पुरुषों के प्रवेश द्वार पर पुरुष स्वयसेवकों एव महिलाओं के प्रवेश द्वार पर महिला स्वयं-सेविकाएँ खडी अपने कर्तव्य का पालन कर रही थी।

ज्यो ही द्वार खोला गया, लोगों की भीड टूट पडी। कुछ समय के लिये तो ऐसा भय उत्पन्न हो गया, कि कहीं इस भीड में कोई आकस्मिक घटना न हो जाय। किन्तु सौभाग्य तथा स्वयंसेवकों के अनवरत परिश्रम के कारण ऐसा नहीं होने पाया। इस अवसर पर स्वयसेवकों ने जिस कठिनाई का मुकाबिला वीरतापूर्वक किया, सामान्यत' वैसी कठिनाई में मनुष्य घबरा सकता है। एक तो भीड़ की धक्कामुक्की और दूसरे अधिकतर सभा-सोसाइटियों के नियमों से अपरिचित लोगों की अव्यवस्था की गडबड। इस दोहरी मार को सहन करके जिन सेवाभावी सज्जनों ने दृढतापूर्वक अपने कर्तव्य का पालन किया, उनकी जितनी भी प्रशंसा की जाय, कम है। इस भीड मे जो लोग शिक्षित तथा सभाओ के नियमों के जानकार थे, वे तो चुपचाप अपना टिकिट बतला कर आगे बढ जाते थे। किन्तु, जो लोग इन बातों को नहीं जानते थे, वे—'मेरे पास टिकिट है' 'मैने टिकिट ले लिया' 'मेरा टिकिट घर रह गया है' 'मेरा टिकिट मेरे भाई के पास है, जो भीतर है' आदि बातें कहकर आगे बढने का प्रयत्न करते थे। नियम से विवश होकर, स्वयंसेवकों को ऐसे लोगों को रोकना पडता था, जिसके कारण लोग क्षणभर के लिये गड़बड करते थे।

पुरुषों के द्वार पर जितनी गड़बड़ हुई उससे अधिक हो-हल्ला स्त्रियों के प्रवेश द्वार पर हुआ। भीड़भाड़ का लाभ उठाने के उद्देश्य से, बहुत सी महिलायें बिना टिकिट जाने या बिना टिकिट अपने बड़े २ पुरुषों को साथ लेजाने का आग्रह करती थीं। स्वयंसेविकाओं ने बड़े धैर्य तथा शान्ति से इस अवसर पर व्यवस्था कायम रक्खी और यथासम्भव कम से कम गड़बड़ होने दी।

इस तरह लगभग दो बजे तक सारा पण्डाल खचाखच भर गया और विवश होकर अधिकारियों को टिकिट की बिक्री रोक देनी पड़ी। दूर २ से आये हुए गृहस्थों ने जब टिकिट बन्द होने का समाचार सुना तो एक प्रकार का तहलका सा मच गया। चूँकि इससे पहले ही कई बार यह बात घोषित कर दी गई थी कि ठीक समय पर टिकिट बन्द हो जाने की आशंका है, इस लिये लोग कोई जोर देने की गुंजाइश न देखकर, अधिकारियों के आग्रहानुसार पहले टिकिट न खरीद लेने की अपनी भूल पर पश्चात्ताप करने लगे। आखिर लोगों ने मन्त्रीजी से बारम्बार अनुरोध तथा अनुनय विनय प्रारम्भ की। तब, विवश होकर मन्त्रीजी ने लोगों से टिकिट की पीठ पर यह शर्त लिखवा कर उन्हें टिकिट दिलवाये, कि यदि हमें बैठने के लिये जगह न मिलेगी तो हम खड़े ही रहेंगे। इस तरह की व्यवस्था के होते हुए भी, सैंकड़ों लोगों को पहले टिकिट न खरीद लेने की अपनी भूल पर पश्चात्ताप करते हुए वापस ही जाना पड़ा।

लगभग दो बजे, कान्फ्रेंस के मनोनीत अध्यक्ष, श्री हेमचन्द्रभाई रामजीभाई महता, अन्य नेताओं के साथ पण्डाल में पधारे। स्वागत समिति के पदाधिकारियों ने आगे बढ़ कर आपका स्वागत किया और कराँची के बीन बैण्ड ने आपको सलामी दी।

इस समय मंच पर उपस्थित महानुभावों में, शान्ति निकेतन के प्रोफेसर श्री जिनविजयजी, गुजराती-भाषा के कवि श्री नानालाल दलपतराम और आगरे के पण्डित सुखलालजी, प्रमुख कांग्रेसवादी सेठ श्री अचलसिंहजी, बम्बई के सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री सेठ वेलजी लखमसी नप्पू, अहमदनगर के सेठ कुन्दनमलजी फिरोदिया, उदयपुर के डा० मोहनसिंहजी महता, पंजाब के रायसाहब ला० टेकचन्दजी, जम्मू के भूतपूर्व दीवान श्री विशनदासजी सी० आई० ई०, अजमेर के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता रायबहादुर गौरी-शंकर हीराचन्द ओझा और दीवान बहादुर हरबिलासजी शारदा, उदयपुर के भूतपूर्व दीवान कोठारीजी बलवन्तसिंहजी, श्री गुलाबचन्दजी ढड्ढा आदि २ नाम उल्लेखनीय हैं।

कान्फ्रेंस की ओर से उदासीन-से थे। किन्तु इस अधिवेशन में, 'हमारे इतने प्रतिनिधि होने चाहिएँ' 'विषय-विचारिणी समिति मे हमारे इतने प्रतिनिधि चुने ही जाने चाहिएँ' 'हमारे प्रान्त में अधिक बस्ती है, अत उसे एक पृथक प्रान्त स्वीकार करना चाहिये' आदि प्रश्न उपस्थित किये गये। इन सब प्रश्नों का निर्णय करने के लिये, विषय-विचारिणी-समिति की बैठक रात को डेढ़ बजे तक होती रही, किन्तु कुछ भी तय न हो सका। अन्त में, प्रान्त बढाने तथा बन्धारण में रद्दोबदल करने के लिये एक कमेटी नियुक्त करके तथा दूसरे दिन सबेरे ८ बजे से, श्री सभापति महोदय के निवास स्थान पर फिर समिति की बैठक करने का निश्चय करके, समिति की कार्यवाही समाप्त हुई।

दूसरे दिन, सबेरे ८ बजे से, विषय-विचारिणी समिति की बैठक पुन प्रारम्भ हुई और १२ बजे दिन तक होती रही। इस अवसर में केवल ७ प्रस्ताव पास हुए। तत्पश्चात, श्री सभापति महोदय तथा अन्य चार पांच सभ्य मिलकर, मुनिराजों के पास साधु सम्मेलन की कार्यवाही लेने के लिये चले गये।

दूसरे दिन की बैठक ता० २३-४-३३ ई०

कान्फ्रेंस के दूसरे दिन की बैठक, आज फिर लोंकानगर स्थित पण्डाल में दिन को तीन बजे से प्रारम्भ हुई। कल की भीड़ को देखकर, प्रबन्धकों ने आज पण्डाल वढा दिया था, अतः लोगों को कोई असुविधा न होने पाई। फिर भी, कल से आज अधिक भीड़ थी। किन्तु, लाउडस्पीकरों की सुव्यवस्था के परिणामस्वरुप, सभी लोग कान्फ्रेंस की कार्यवाही को भलिभाति सुन सकते थे, इसी लिये कोई गड़बड़ नहीं होने पाई।

अधिवेशन के प्रारम्भ में, मगलाचरण हुआ। तत्पश्चात्, बाहर से आये हुए सन्देश पढ़कर सुनाये गये। तदनन्तर, प्रस्तावों का कार्य शुरू हुआ। (कान्फ्रेन्स में स्वीकृत सभी प्रस्ताव आगे दिये जावेंगे, इसलिये यहा नहीं लिखे हैं।) प्रस्तावों के साथ-साथ, प्रस्तावक, अनुमोदक और समर्थक महानुभावों के, उन विषयों पर ओजस्वी भाषण भी हुए। इस तरह, सात महत्वपूर्ण प्रस्ताव पास करके, कान्फ्रेंस की आज की बैठक समाप्त की गई।

रात को, श्री० सभापति महोदय के स्थान पर विषय-विचारिणी-समिति की बैठक हुई। आज की यह बैठक, अत्यन्त महत्वपूर्ण थी। साधु-सम्मेलन की रिपोर्ट, आज की बैठक में पढकर सुनाई गई। तत्पश्चात् पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज तथा पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज की एकता के सम्बन्ध में काफी बहस हुई। पहले, यह बात घोषित कर दी गई थी, कि दोनों पूज्यों की एकता के लिये, मुनि-पञ्चों ने जो फैसला दिया है, वह दोनों पूज्यों को मजूर है। किन्तु, आज ऐसा मालूम हुआ, कि उस में कुछ रोड़े आगये हैं और उन्हीं के परिणामस्वरूप, लोगों में अनेक प्रकार के भ्रम उत्पन्न हो गये हैं। इसी वादविवाद के कारण, आज की विषय-विचारिणी-समिति कोई कार्य नहीं कर सकी, केवल सत्रह-गृहस्थों का एक डेपुटेशन, सबेरे ८ बजे मम्मैयों के नोहरे में, मुनिराजों से इस सम्बन्ध में निवेदन करने के लिये भेजना तय हुआ। इसके पश्चात्, रात को दो बजे समिति का कार्य समाप्त हुआ।

पुरुषों के द्वार पर जितनी गड़बड़ हुई उससे अधिक हो-हल्ला स्त्रियों के प्रवेश द्वार पर हुआ। भीड़भाड़ का लाभ उठाने के उद्देश्य से, बहुत सी बहिनें बिना टिकिट जाने या बिना टिकिट अपने बड़े २ बच्चों को साथ लेजाने का आग्रह करती थीं। स्वयंसेविकाओं ने, बड़े धैर्य तथा शान्ति से इस अवसर पर व्यवस्था कायम रक्खी और यथासम्भव कम से कम गड़बड़ होने दी।

इस तरह लगभग दो बजे तक सारा पण्डाल खचाखच भर गया और विवश होकर अधिकारियों को टिकिट की बिक्री रोक देनी पड़ी। दूर २ से आये हुए गृहस्थों ने जब टिकिट बन्द होने का समाचार सुना तो एक प्रकार का तहलका सा मच गया। चूँकि इससे पहले ही कई बार यह बात घोषित कर दी गई थी कि ठीक समय पर टिकिट बन्द हो जाने की आशंका है, इस लिये लोग कोई जोर देने की गुआइश न देखकर, अधिकारियों के आग्रहानुसार पहले टिकिट न खरीद लेने की अपनी भूल पर पश्चाताप करने लगे। आखिर लोगों ने मन्त्रीजी से बारम्बार अनुरोध तथा अनुनय विनय प्रारम्भ की। तब, विवश होकर मन्त्रीजी ने लोगों से टिकिट की पीठ पर यह शर्त लिखवा कर उन्हें टिकिट दिलवाये, कि यदि हमें बैठने के लिये जगह न मिलेगी तो हम खड़े ही रहेंगे। इस तरह की व्यवस्था के होते हुए भी, सैंकड़ों लोगों को, पहले टिकिट न खरीद लेने की अपनी भूल पर पश्चाताप करते हुए वापस ही जाना पड़ा।

लगभग दो बजे, कान्फ्रेंस के मनोनीत अध्यक्ष, श्री हेमचन्द्रभाई रामजीभाई महता, अन्य नेताओं के साथ पण्डाल में पधारे। स्वागत समिति के पदाधिकारियों ने आगे बढ़ कर आपका स्वागत किया और करांची के जैन बैण्ड ने आपको सलामी दी।

इस समय मंच पर उपस्थित महानुभावों में, शान्ति निकेतन के प्रोफेसर श्री जिनविजयजी, गुजराती-भाषा के कवि श्री नानालाल दलपतराम जैन, आगरे के पंडित सुखलालजी, प्रमुख कांग्रेसवादी सेठ श्री अचलसिंहजी, बम्बई के सुप्रसिद्ध देशभक्त श्री सेठ वेलजी लखमसी नपु, अहमदनगर के सेठ कुन्दनमलजी फिरोदिया, उदयपुर के डॉ० मोहनसिंहजी महता, पंजाब के रायसाहब ला० टेकचन्दजी, जम्मू के भूतपूर्व दीवान श्री विशनदासजी सी० आइ ई० अजमेर के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता रायबहादुर गौरीशंकर हीराचन्द ओझा और दीवान बहादुर हरबिलासजी शारदा उदयपुर के भूतपूर्व दीवान कोठारीजी बलवन्तसिंहजी, श्री गुलाबचन्दजी ढड्ढा आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

मंगलाचरण तथा स्वागत-गान होजाने के पश्चात कान्फ्रेंस के स्वागताध्यक्ष राजा बहादुर लाला ज्वालाप्रसादजी जौहरी का भाषण हुआ और श्री सेठ वर्धमानजी पीतलिया श्री वेलजी लखमसी नपु, सेठ अचलसिंहजी, श्री कुन्दनमलजी फिरोदिया के समर्थन से श्री हेमचन्द रामजी भाई मेहता ने सभापति का आसन सुशोभित किया।

कान्फ्रेंस अधिवेशन की समाप्ति के पश्चात्, विषय-विचारिणी समिति की बैठक प्रारम्भ हुई। कान्फ्रेंस के इससे पूर्व के सभी अधिवेशनों की अपेक्षा इस अधिवेशन में कई गुनी अधिक उपस्थिति थी। दूर २ के प्रदेशों से, पर्याप्त-संख्या में प्रतिनिधिगण पधारे थे। परिणामस्वरूप, पिछले किसी भी अधिवेशन में जो प्रश्न नहीं उपस्थित हुए थे, वे प्रश्न इस अधिवेशन में उपस्थित हुए। अब तक, कई प्रान्तों के लोग

(१) आज से, परस्पर बारह सम्भोग, जहां-जहां दोनों सम्प्रदाय के मुनि हो, वहां-वहां खुले किये जाते हैं। दोनो पूज्य, अभी इस सम्बन्धी सन्देश अपने मुनियों को भेज देंगे।

(२) धाराधोरण बनाने के लिये, निम्नानुसार व्यवस्था की जाती है—पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज, मुनि श्री हजारीमलजी म०, मुनि श्री छगनलालजी म० और पूज्य श्री जवाहिरलालजी म०, मुनि श्री गणेशलालजी म० तथा मुनि श्री हरखचन्दजी म०, इस तरह छ: मुनिराज एकत्रित होकर भविष्य के लिये धाराधोरण बनावें। यदि, इसमें कुछ मतभेद हो, तो छ:हों मुनिवर मिलकर एक सरपंच पसन्द करलें। यदि, सरपच के चुनाव में एकमत न हो, तो श्री० वरदभाणजी सा० पीतलिया तथा श्री० सोभागमलजी मेहता, ये दोनों साथ मिलकर मतभेद का समाधान करदें। यदि, इनके बीच भी मतभेद रहे, तो इन दोनों गृहस्थों ने सीलबन्द लिफाफा श्री० प्रेसीडेण्ट सा० को दिया है। उसमें लिखे हुए नाम-वाला पच, दोनों गृहस्थों के सरपच के रूप में जो निर्णय दे, वह अन्तिम-निर्णय माना जाय।

(३) मुनि श्री गणेशलालजी म० को युवाचार्यपद तथा मुनि श्री खूबचन्दजी म० को उपाध्याय पद, सं० १९९० की फाल्गुण फाल्गुण शुक्ला १५ से पहले ही दे देना निश्चित किया जाता है।

(४) फाल्गुण शु० १५ के बाद जो नये शिष्य हो, वे युवाचार्यजी की नेश्राय में रहें।

उपरोक्त निश्चय, कान्फ्रेंस के प्रेसीडेण्ट श्री० हेमचन्दभाई तथा डेपुटेशन के गृहस्थ और साधु-सम्मेलन में पधारे हुए मुनिराजों के सन्मुख पढ कर सुनाया गया और इसे सभी ने, स्वीकृत फरमाया है।

(ह०) हेमचन्द रामजीभाई मेहता,
प्रेसीडेण्ट कान्फ्रेंस
और १६ अन्य सदस्य

इस तरह, डेपुटेशन के सदस्यों की ८॥ घण्टे की कठिन तपस्या, जो उन्होंने मुनिमण्डल के साथ की थी, सफल हुई और लगभग ५० हजार जैन-जनता में तत्क्षण आनन्द की विद्युतलहर-सी फैल गई। अस्तु।

डेपुटेशन के सफल होजाने के बाद सन्ध्या के ७ बजे ब्ल्यूकैमल (सभापति महोदय के निवास-स्थान) पर विषय-विचारिणी-समिति की बैठक हुई और कान्फ्रेंस के आज होने वाले अधिवेशन के प्रस्ताव निश्चित किये गये।

तीसरे दिन की कार्यवाही ता० २४—४—३३ ई०

आज, कान्फ्रेंस के अधिवेशन का तीसरा दिन था। श्री साधु-सम्मेलन मे स्वीकृत प्रस्ताव, सम्मेलन के सहमत्री श्री धीरजलालभाई ने पढ़कर सुनाये। इसी अवसर पर, लोगो ने पूज्य श्री जवाहिर-लालजी महाराज द्वारा दिये हुए नोट को पढकर सुनाने का जोरों से आग्रह किया। लेकिन, श्री दुर्लभजी-भाई के यह कहने पर, कि जिस नोट को विषय-विचारिणी-समिति ने अस्वीकृत करके दाखिल दफ्तर करना निश्चित किया है, उसे सुनने का आग्रह आप लोगो को नहीं करना चाहिये और न उसे महत्व ही देना चाहिये, सभासद्गण शान्त हो गये। इसके बाद आपने अपना प्रभावशाली-भाषण दिया—

डेपुटेशन का स्तुत्य प्रयत्न।

विषय-विचारिणी-समिति के निश्चयानुसार, सवेरे ८ बजे निम्न १७ सद्गृहस्थों का एक डेपुटेशन मुनि महाराजों की सेवा में सम्मैयों के नोहरे में उपस्थित हुआ —

(१) सभापति श्री० हेमचन्दभाई मेहता
(२) श्री० सेठ अचलसिंहजी, आगरा
(३) " " वेलजीभाई लखमसी नपु
(४) " वी० व विरानलालजी सा०
(५) " रा० सा० मोतीलालजी मूथा
(६) " कुन्दनमलजी फिरोदिया
(७) " पूनमचन्दजी नाहटा
(८) " रा० सा० लाला टेकचन्दजी
(९) " सेठ भरदभाणजी पीतलिया
(१०) श्री० सेठ कन्हैयालालजी भण्डारी
(११) " " सोभागमलजी मेहता
(१२) " डा० वृजलाल श्री० मेघाणी
(१३) " सेठ दुर्लभजीभाई जौहरी
(१४) " सरदारमलजी छाजेड़
(१५) " जेठाभाई रामजीभाई
(१६) " चिम्मनलाल पोपटलाल शाह
(१७) " शान्तिलाल मंगलभाई

डेपुटेशन के भीतर जाने के समय कोई और गृहस्थ अन्दर नहीं आने पाया था। तत्पश्चात्, कुछ पंजाबी भाइयों ने, बाहर दरवाजे पर सत्याग्रह प्रारम्भ कर दिया और जब तक दोनों पूज्यों की एकता करवा कर डेपुटेशन बाहर न आवे, तब तक के लिये उन्होंने अन्न-पानी का त्याग कर दिया। साथ ही न किसी को बाहर से भीतर आने दिया और न किसी को भीतर से बाहर ही जाने दिया। परिणाम स्वरूप, नोहरे के दरवाजे पर, हजारों मनुष्यों की भीड़ एकत्रित हो गई। सूर्य भी खूब तप रहा था, जिसके कारण उपस्थित लोगों का कष्ट बढ़ता जाता था। किन्तु, समाधान का परिणाम सुनने की उत्कण्ठा के सन्मुख, उस कष्ट को लोगों ने गौण स्थान दिया। बीच-बीच में बहुत-सी झूठी अफवाहें भी फैलती थीं, जिनके कारण शोरगुल खूब बढ़ जाता था।

नोहरे के भीतर विराजमान लगभग दो सौ मुनिराजों और डेपुटेशन के सदस्यों को पानी भी नहीं पहुंचा था। श्री० दुलभजीभाई जौहरी के बेहोश हो जाने की बात से, लोगों में अनेक प्रकार की चर्चायें फैलीं। उस समय के लोकमत की चढ़िमता को देखकर स्पष्ट प्रतीत होता था, कि जनता शीघ्र ही एकता की इच्छुक है। अन्त में, शाम को साढ़े चार बजे समझौता हो जाने के कारण, लोगों में आनन्द उमड़ पड़ा। उस समय जनता का हर्ष और जैनशासन की विजय के मारे सुन तथा समझौते को कार्यरूप में परिणत हुआ देखने की उत्सुकता को अवलोकन करने से, एक अपूर्व-स्थिति जान पड़ती थी। निम्न लिखित समझौता श्री० सभापति महोदय ने हजारों जनता के बीच पढ़कर सुनाया —

आज सत्रह सद्गृहस्थों का डेपुटेशन, पूज्य मुनिराजों की सेवा में, पंचों के फैसले का अमल दरामद करने के लिये प्रार्थना करने आया था। जिसके परिणामस्वरूप, पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज और पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की संयुक्त-समिति में, पंचों के फैसले के अनुसार निम्नलिखित निर्णय हुआ जिसको दोनों पक्षों द्वारा स्वीकृत होना दोनों पूज्यों ने प्रकट किया है।

(१) आज से, परस्पर बारह सम्भोग, जहां-जहां दोनो सम्प्रदाय के मुनि हों, वहां-वहां खुले किये जाते हैं। दोनो पूज्य, अभी इस सम्बन्धी सन्देश अपने मुनियों को भेज देंगे।

(२) धाराधोरण बनाने के लिये, निम्नानुसार व्यवस्था की जाती है—पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज, मुनि श्री हजारीमलजी म०, मुनि श्री छगनलालजी म० और पूज्य श्री जवाहिरलालजी म०, मुनि श्री गणेशलालजी म० तथा मुनि श्री हरखचन्दजी म०, इस तरह छ: मुनिराज एकत्रित होकर भविष्य के लिये धाराधोरण बनावें। यदि, इसमे कुछ मतभेद हो, तो छ'हों मुनिवर मिलकर एक सरपंच पसन्द करलें। यदि, सरपच के चुनाव में एकमत न हो, तो श्री० वरदभाणजी सा० पीतलिया तथा श्री० सोभागमलजी मेहता, ये दोनों साथ मिलकर मतभेद का समाधान करदें। यदि, इनके बीच भी मतभेद रहे, तो इन दोनों गृहस्थों ने सीलबन्द लिफाफा श्री० प्रेसीडेण्ट सा० को दिया है। उसमें लिखे हुए नाम-वाला पच, दोनों गृहस्थो के सरपच के रूप में जो निर्णय दे, वह अन्तिम-निर्णय माना जाय।

(३) मुनि श्री गणेशलालजी म० को युवाचार्यपद तथा मुनि श्री खूबचन्दजी म० को उपाध्याय पद, सं० १६६० की फाल्गुण फाल्गुण शुक्ला १५ से पहले ही दे देना निश्चित किया जाता है।

(४) फाल्गुण शु० १५ के बाद जो नये शिष्य हो, वे युवाचार्यजी की नेश्राय में रहें।

उपरोक्त निश्चय, कान्फ्रेन्स के प्रेसीडेण्ट श्री० हेमचन्दभाई तथा डेपुटेशन के गृहस्थ और साधु-सम्मेलन में पधारे हुए मुनिराजों के सन्मुख पढ कर सुनाया गया और इसे सभी ने, स्वीकृत फरमाया है।

(ह०) हेमचन्द रामजीभाई मेहता,
प्रेसीडेण्ट कान्फ्रेंस
और १६ अन्य सदस्य

इस तरह, डेपुटेशन के सदस्यों की ८॥ घण्टे की कठिन तपस्या, जो उन्होंने मुनिमण्डल के साथ की थी, सफल हुई और लगभग ५० हजार जैन-जनता मे तत्क्षण आनन्द की विद्युतलहर-सी फैल गई। अस्तु।

डेपुटेशन के सफल होजाने के बाद सन्ध्या के ७ बजे ब्ल्यूकैसल (सभापति महोदय के निवास-स्थान) पर विषय-विचारिणी-समिति की बैठक हुई और कान्फ्रेंस के आज होने वाले अधिवेशन के प्रस्ताव निश्चित किये गये।

तीसरे दिन की कार्यवाही ता० २४—४—३३ ई०

आज, कान्फ्रेस के अधिवेशन का तीसरा दिन था। श्री साधु-सम्मेलन में स्वीकृत प्रस्ताव, सम्मेलन के सहमत्री श्री धीरजलालभाई ने पढकर सुनाये। इसी अवसर पर, लोगो ने पूज्य श्री जवाहिर-लालजी महाराज द्वारा दिये हुए नोट को पढकर सुनाने का जोरों से आग्रह किया। लेकिन, श्री दुर्लभजी-भाई के यह कहने पर, कि जिस नोट को विषय-विचारिणी-समिति ने अस्वीकृत करके दाखिल दफ्तर करना निश्चित किया है, उसे सुनने का आग्रह आप लोगों को नहीं करना चाहिये और न उसे महत्व ही देना चाहिये, सभासद्गण शान्त हो गये। इसके बाद आपने अपना प्रभावशाली-भाषण दिया—

"अजमेर के इस नवम-अधिवेशन की शोभा साधु-सम्मेलन से है। "साधु-सम्मेलन करने की आवश्यकता कैसे अनुभव हुई और उसे डेढ़ ही वर्ष के भीतर इस महान प्रयत्न में सफलता कैसे मिली, यह सारी कथा समय-समय पर जैनप्रकाश में प्रकाशित होती रही है। अगर उसे यहां विस्तारपूर्वक कहूँ, तो समय बहुत ज्यादा लगेगा। यह बात तो आप लोगों से छिपी ही नहीं है कि साधु-मार्गियों का आलम्बन साधु ही हैं। हम लोगों के धर्म का समस्त आधार मुनियों पर ही है। जिस तरह, जहाज पर यदि अच्छा कैप्टेन हो, तो वह मुसाफिरों को सुख तथा शान्तिपूर्वक पार लेजाता है। उसी तरह, यदि मुनिराज उच्च भावना तथा ऐक्यवाले होंगे, तो ही समाज की नौका पार लग सकेगी। कारण, कि ये ही हमारी समाजरूपी नौका के कैप्टेन हैं। हमारे साधुओं की क्रिया, संसार के सभी धर्माचारियों से उत्कृष्ट हैं, फिर भी दिन-प्रतिदिन हम लोगों की संख्या कम होती जाती है, इसके कारण पर विचार करने के लिये ही साधु-सम्मेलन की योजना की गई है। जहां, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से सम्भोग करने के लिये तैयार नहीं है, वहां आज भी शासनदेव की कृपा से ३२ सम्प्रदायें कष्ट उठाकर धर्मभक्ति की भावना से प्रेरित हो यहां पधारी हैं। आप सभी महानुभाव देख रहे हैं, कि २२० मुनिराज दूर दूर से चल कर सम्मेलन की सफलता के निमित्त यहां प्रयत्नशील हैं। इससे साबित होता है, कि सच्चे हृदय से जो कार्य किया जाय, उसमें अवश्य ही सफलता मिलती है। साधु-सम्मेलन की १५ दिन की कार्यवाही, सब्जेक्ट कमेटी में सुना दी गई है और वहां वह स्वीकृत भी हो चुकी है। यही नहीं, वह जैनप्रकाश में भी प्रकाशित कर दी जायगी। इसलिये, आप लोग इसके सम्बन्ध का प्रस्ताव स्वीकार कर लें और मुनिराजों ने १५ दिन के कष्ट-सहन के पश्चात् जो नियम बनाये हैं उनका पालन करें। यही मेरी आप लोगों से प्रार्थना है।

मुनिराज, हम लोगों के सिर के मुकुट या हमारे गले की माला हैं। आज, उस माला का एक रूपी धागा टूट गया है और सभी मोती पृथ्वी पर बिखर गये हैं, जिसके कारण उनमें फालतू चीजें भी मिल गई हैं। अब वह समय आगया है, जब कि असली मोती चुनकर माला की योजना की जाय। संघ के सद्भाग्य से, हमारे मोती अभी तक सच्चे मोती हैं, केवल ज्ञान, दर्शन और चारित्र के धागे में उन्हें पिरोकर माला बना लेने मात्र की आवश्यकता है। इससे, संसार में हमारे गौरव की वृद्धि होगी। यहां पधारे हुए सभी मुनिराज उत्कृष्ट क्रियावाले हैं। उनके मेल से, समाज और धर्म का कल्याण निश्चय है। अस्तु।

अन्त में, मैं एक प्रार्थना और करना चाहूँगा। वह यह कि यहां पधारे हुए सज्जनों के स्वागत तथा उनकी सेवा में बड़ी त्रुटियां रह गई हैं। किन्तु, इसके लिये सर्वथा विवशता थी। कारण, कि जितने गृहस्थों के पधारने का अनुमान था उससे लगभग ८ गुने गृहस्थ यहां पधार गये हैं। ऐसी स्थिति में, जो व्यवस्था अनुमान के अनुसार की गई थी, वह आठ भागों में बँट गई जिसका स्पष्ट ही यह अर्थ था कि यहां पधारे हुए सज्जनों को सुविधा की अपेक्षा असुविधा का अधिक मुकाबिला करना पड़ा। किन्तु, मेरा दृढ़ विश्वास है, कि आप सभी महानुभाव हम लोगों की विवशता और व्यवस्था के भार का ध्यान रखकर, इसके लिये क्षमा कर देंगे।

× × × × × ×

इसके बाद, अन्य अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास करके, आज का अधिवेशन भी समाप्त हुआ। चूँकि, कार्यवाही अभी तक समाप्त नहीं हुई थी, इसलिये घोषित किया गया, कि कान्फ्रेंस का अधिवेशन कल ११॥ बजे दिन से फिर होगा।

चौथे दिन की कार्यवाही ता० २५-४-३३

आज कान्फ्रेंस अधिवेशन का चौथा यानी अन्तिम दिन था।

आज सवेरे ८ बजे से ही, विषय-विचारिणी समिति की बैठक व्ल्यूकेसल मे प्रारम्भ हुई। चूंकि आज अधिवेशन का अन्तिम दिन था और सब कार्यवाही पूर्ण करनी थी, अत दोपहर को १२ बजे तक समिति की बैठक होती रही। इस काल में सभी अत्युपयोगी प्रस्तावो पर बहस होकर वे स्वीकृत कर लिये गये। दोपहर के एक बजे से, कान्फ्रेंस अधिवेशन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। इस दिन के भी समस्त प्रस्ताव आगे परिशिष्ट मे दिये गये हैं।

इन प्रस्तवों मे, पाईफण्ड की योजना का भी प्रस्ताव था। उसी के सिलसिले मे, श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री वल्लभजी रतनजी हीराणी और श्री सेठ हँसराजभाई अमरेली वालो ने चन्दे के लिये अपील की। श्री हंसराज भाई ने स्वय १५०००) पन्द्रह हजार रुपये शास्त्रोद्धार की योजना के निमित्त दान करने की घोषणा की।

श्री हेमचन्द भाई मेहता प्रेसीडेण्ट की ओर से यह प्रकट किया गया, कि वे स्वयं कान्फ्रेंस के जनरल फण्ड में ३०००) तीन हजार रुपये देंगे।

इसके बाद, धूलिया की जेल से भेजा हुआ श्री मणिलाल कोठारी का सन्देश सुनाया गया।

तदुपरान्त श्री नागरदास वाघजी का पत्र पढकर सुनाया गया, जिसमे उन्होंने लिखा था कि काठियावाड़ में जैन गुरुकुल की स्थापना हो, तो वे १०००) एक हजार रुपया स्वयं देंगे।

इसके बाद, भिन्न २ कार्यों के लिये जो चन्दे का आश्वासन मिला था, उसकी लिस्ट श्री धीरज-लाल भाई तुरखिया ने सुनाई।

तत्पश्चात्, काठियावाड़ मे गुरुकुल की स्थापना करने के निमित्त चन्दा हुआ, जिसमें अनेक महानुभावों ने बड़ी २ रकमें प्रदान की। इसी सिलसिले में, शास्त्रोद्धार के निमित्त १५०००) रुपये की मोटी रकम दान करने वाले श्री हंसराजभाई अमरेली वालों ने घोषित किया, कि यदि अमरेली में गुरुकुल की स्थापना हो, तो मैं अपनी तरफ से मकान दूंगा और २००) दो सौ रुपये वार्षिक पांच वर्ष तक देता रहूँगा।

इसके बाद, श्री सेठ नथमलजी चोरडिया ने कन्या-गुरुकुल या उद्योगशाला की स्थापना के निमित्त, ७००००) सत्तर हजार रुपये का दान करने की घोषणा की, जिससे सभा में एक विचित्र हर्ष उत्पन्न हो गया।

"अजमेर के इस नवम-अधिवेशन की शोभा साधु-सम्मेलन में है। साधु-सम्मेलन करने की आवश्यकता कैसे अनुभव हुई और उसे डेढ़ ही वर्ष के भीतर इस महान प्रयत्न में सफलता कैसे मिली, यह सारी कथा समय-समय पर जैनप्रकाश में प्रकाशित होती रही है। अगर उसे यहां विस्तारपूर्वक कहूँ, तो समय बहुत ज्यादा लगेगा। यह बात तो आप लोगों से छिपी ही नहीं है कि साधु-मार्गियों का आलम्बन साधु ही हैं। हम लोगों के धर्म का समस्त आधार मुनियों पर ही है। जिस तरह, जहाज पर यदि अच्छा कैप्टेन हो, तो वह मुसाफिरों को सुख तथा शान्तिपूर्वक पार लेजाता है। उसी तरह, यदि मुनिराज उच्च भावना तथा ऐक्यवाले होंगे, तो ही समाज की नौका पार लग सकेगी। कारण, कि वे ही हमारी समाजरूपी नौका के कैप्टेन हैं। हमारे साधुओं की क्रिया, संसार के सभी धर्माचारियों से उत्कृष्ट है, फिर भी दिन-प्रतिदिन हम लोगों की संख्या कम होती जाती है, इसके कारण पर विचार करने के लिये ही साधु-सम्मेलन की योजना की गई है। जहां, एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय से सम्भोग करने के लिये तैयार नहीं है, वहां आज भी शासनदेव की कृपा से ३२ सम्प्रदायें कष्ट उठाकर धर्मोन्नति की भावना से प्रेरित हो यहां पधारी हैं। आप सभी महानुभाव देख रहे हैं, कि २४० मुनिराज दूर दूर से चल कर सम्मेलन की सफलता के निमित्त यहां प्रयत्नशील हैं। इससे साबित होता है, कि सच्चे हृदय से जो कार्य किया जाय, उसमें अवश्य ही सफलता मिलती है। साधु-सम्मेलन की १५ दिन की कार्यवाही, सब्जेक्ट कमेटी में सुना दी गई है और वहां वह स्वीकृत भी हो चुकी है। यही नहीं, वह जैनप्रकाश में भी प्रकाशित कर दी जायगी। इसलिये, आप लोग इसके सम्बन्ध का प्रस्ताव स्वीकार कर लें और मुनिराजों ने १५ दिन के कष्ट-सहन के पश्चात् जो नियम बनाये हैं, उनका पालन करें। यही मेरी आप लोगों से प्रार्थना है।

मुनिराज, हम लोगों के सिर के मुकुट या हमारे गले की माला हैं। आज, उस माला का ऐक्य-रूपी धागा टूट गया है और सभी मोती पृथ्वी पर बिखर गये हैं, जिसके कारण उनमें फालतू चीजें भी मिल गई हैं। अब वह समय आगया है, जब कि असली मोती चुनकर माला की योजना की जाय। संघ के सद्भाग्य से, हमारे मोती अभी तक सच्चे मोती हैं, केवल ज्ञान, दर्शन और चारित्र के धागे में उन्हें पिरोकर माला बना लेने मात्र की आवश्यकता है। इससे, संसार में हमारे गौरव की वृद्धि होगी। यहां पधारे हुए सभी मुनिराज उत्कृष्ट क्रियावाले हैं। उनके ऐक्य से, समाज और धर्म का कल्याण निश्चय है। अस्तु।

अन्त में, मैं एक प्रार्थना और करना चाहूँगा। वह यह कि यहां पधारे हुए सज्जनों के स्वागत तथा उनकी सेवा में बड़ी त्रुटियां रह गई हैं। किन्तु इसके लिये सर्वथा विवशता थी। कारण, कि जितने गृहस्थों के पधारने का अनुमान था उससे लगभग ८ गुने गृहस्थ यहां पधार गये हैं। ऐसी स्थिति में, जो व्यवस्था अनुमान के अनुसार की गई थी, वह आठ भागों में बँट गई, जिसका स्पष्ट ही यह अर्थ था कि यहां पधारे हुए सज्जनों को सुविधा की अपेक्षा असुविधा का अधिक मुकाबिला करना पड़ा। किन्तु मेरा दृढ़ विश्वास है, कि आप सभी महानुभाव, हम लोगों की विवशता और व्यवस्था के भार का ध्यान रखकर, इसके लिये क्षमा कर देंगे।

× × × × × ×

इसके बाद, अन्य अनेक उपयोगी प्रस्ताव पास करके, आज का अधिवेशन भी समाप्त हुआ। चूँकि, कार्यवाही अभी तक समाप्त नहीं हुई थी, इसलिये घोषित किया गया, कि कान्फ्रेंस का अधिवेशन कल ११॥ बजे दिन से फिर होगा।

चौथे दिन की कार्यवाही ता० २५-४-३२

आज कान्फ्रेंस अधिवेशन का चौथा यानी अन्तिम दिन था।

आज सवेरे ८ बजे से ही, विषय-विचारिणी समिति की बैठक ब्ल्यूकेसल मे प्रारम्भ हुई। चूंकि आज अधिवेशन का अन्तिम दिन था और सब कार्यवाही पूर्ण करनी थी, अत दोपहर को १२ बजे तक समिति की बैठक होती रही। इस काल में सभी अत्युपयोगी प्रस्तावो पर बहस होकर वे स्वीकृत कर लिये गये। दोपहर के एक बजे से, कान्फ्रेंस अधिवेशन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। इस दिन के भी समस्त प्रस्ताव आगे परिशिष्ट में दिये गये हैं।

इन प्रस्तावों में, पाईफण्ड की योजना का भी प्रस्ताव था। उसी के सिलसिले में, श्री धीरजलाल के० तुरखिया, श्री वल्लभजी रतनजी हीराणी और श्री सेठ हँसराजभाई अमरेली वालो ने चन्दे के लिये अपील की। श्री हसराज भाई ने स्वय १५०००) पन्द्रह हजार रुपये शास्त्रोद्धार की योजना के निमित्त दान करने की घोषणा की।

श्री हेमचन्द भाई मेहता प्रेसीडेण्ट की ओर से यह प्रकट किया गया, कि वे स्वय कान्फ्रेंस के जनरल फण्ड मे ३०००) तीन हजार रुपये देगे।

इसके बाद, धूलिया की जेल से भेजा हुआ श्री मणिलाल कोठारी का सन्देश सुनाया गया।

तदुपरान्त श्री नागरदास वाघजी का पत्र पढकर सुनाया गया, जिसमें उन्होंने लिखा था कि काठियावाड़ में जैन गुरुकुल की स्थापना हो, तो वे १०००) एक हजार रुपया स्वय देंगे।

इसके बाद, भिन्न २ कार्यों के लिये जो चन्दे का आश्वासन मिला था, उसकी लिस्ट श्री धीरज-लाल भाई तुरखिया ने सुनाई।

तत्पश्चात, काठियावाड़ में गुरुकुल की स्थापना करने के निमित्त चन्दा हुआ, जिसमे अनेक महानुभावों ने बड़ी २ रकमें प्रदान की। इसी सिलसिले में, शास्त्रोद्धार के निमित्त १५०००) रुपये की मोटी रकम दान करने वाले श्री हंसराजभाई अमरेली वालों ने घोषित किया, कि यदि अमरेली मे गुरुकुल की स्थापना हो, तो मैं अपनी तरफ से मकान दूंगा और २००) दो सौ रुपये वार्षिक पांच वर्ष तक देता रहूँगा।

इसके बाद, श्री सेठ नथमलजी चोरडिया ने कन्या-गुरुकुल या उद्योगशाला की स्थापना के निमित्त, ७००००) सत्तर हजार रुपये का दान करने की घोषणा की, जिससे सभा में एक विचित्र हर्ष उत्पन्न हो गया।

इसके बाद, कुछ प्रस्ताव और पास हुए और फिर श्री सभापति महोदय ने भाषण के मंच पर पधार कर, सभा के सम्मुख यह प्रस्ताव उपस्थित किया, कि कान्फ्रेंस के मन्त्री श्री दुर्लभजीभाई जौहरी तथा श्री नथमलजी चोरड़िया को उनकी सेवाओं के पुरस्कार स्वरूप क्रमशः जैन धर्मवीर और जैन समाज भूषण की उपाधि दी जावे।

सभा ने, हर्षध्वनि तथा जय-जयकार के बीच इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

सभापति महोदय ने फिर कहना प्रारम्भ किया—महानुभावों! लगभग डेढ़-दो वर्ष से श्री दुर्लभजीभाई ने, श्री साधु सम्मेलन के लिये अनवरत परिश्रम किया है। उनका परिश्रम सफल हो गया, कारण कि सभी मुनिराजों ने यहां एकत्रित होकर अपना सम्मेलन किया, जिसकी कार्यवाही रातको हम लोग मंजूर कर चुके हैं। श्री दुर्लभजीभाई के इस प्रयास से साधुओं तथा श्रावकों का किसी न किसी अंश में सुधार होगा, यह तो निश्चित ही है। इस तरह अहर्निश परिश्रम करके श्री दुर्लभजीभाई ने समाज का जो उपकार किया है, उसके लिये उनका आदर करने के निमित्त, श्री साधु सम्मेलन समिति ने उन्हें नवरत्न पदक देना तय किया है। आप सभी लोग इस शुभ संवाद को सुनकर और अभी मेरे हाथ से उन्हें यह नवरत्न पदक पहनाया जाते देखकर निश्चय ही बहुत प्रसन्न होंगे।

इसके बाद, श्री सभापति महोदय ने, श्री दुर्लभजीभाई को वक्ता के मंच पर बुलाया और उन्हें वह नवरत्नपदक, जिसमें हीरा आदि नौ प्रकार के जवाहिरात जड़े थे और जिसे साधु सम्मेलन समिति के सदस्यों ने अपने खर्च से बनवाया था, धारण करवाया। तत्पश्चात, आपने श्री दुर्लभजीभाई की पीठ ठोकी और धन्यवाद दिया। सभा में जय जयकार मच गया। लोगों ने अपने हर्ष को प्रकट करने के निमित्त, नाना प्रकार के नारे लगाये।

इस अवसर पर, श्री दुर्लभजीभाई के नेत्रों में प्रेमाश्रु भर आये। उन्होंने, अवरुद्ध कण्ठ से सभासदों को सम्बोधन करके कहा—

सद्गृहस्थों! वीर संघ की स्थापना का प्रश्न चल रहा था, तब मैंने यह बात कही थी कि मैं सांसारिक उपाधियां छोड़ने का प्रयत्न कर रहा हूँ। मेरी इच्छा है कि मैं वीरसंघ का पहला दीक्षित होऊं। ऐसी स्थिति में, यह पदक देकर, आप लोग मुझे फिर संसार के बोझ से लाद रहे हैं। मैं वीरसंघ में सम्मिलित होने के निमित्त, जिस बोझ को अपने सिर से हलका करना चाहता हूँ उसे आप लोग बढ़ावें नहीं, बल्कि मुझे उसके शीघ्र हलका करने में सहायता दें। इस पदक के द्वारा श्रीसंघ ने मुझे जो सम्मान प्रदान किया है, उसे एक बार स्वीकार करके इस पदक को फिर श्रीसंघ के ही चरणों में अर्पण करता हूँ। इसे यहीं नीलाम कर दिया जाय और इससे प्राप्त होनेवाली रकम श्री जैन गुरुकुल ब्यावर को दे दी जाय।

इसके पश्चात, आपने उस नवरत्नपदक को अपने कोट से खोलकर, फिर श्री सभापति महोदय के कर कमलों में दे दिया। अब तो बड़ा प्रेमकलह प्रारम्भ हो गया। सभासदों तथा स्वयं श्री सभापति की राय थी, कि श्री दुर्लभजीभाई को उसे नीलाम करवाने का कोई अधिकार नहीं है और श्री दुर्लभजी भाई निरन्तर उस नीलाम करने की बात पर जोर दे रहे थे। बड़ी देर तक परस्पर एक दूसरे से आग्रह अनुरोध होता रहा। श्री सभापति महोदय ने, श्री कुन्दनमलजी सा० फिरोदिया से इस सम्बन्ध में पूछा कि आप मेरे कानूनदाँ मित्र की हैसियत से मुझे सलाह दीजिये, कि श्री दुर्लभजीभाई को इस पदक को

नीलाम करवाने का अधिकार कानूनन है या नहीं ? इसके उत्तर में उन्होंने कहा—कदापि नहीं। इस तरह सर्वानुमति तथा श्री सभापति महोदय के प्रबल अनुरोध से विवश होकर, श्री दुर्लभजीभाई को वह नवरत्न-पदक धारण ही करना पड़ा। जिस समय श्री सभापतिजी उन्हें वह पदक पहना रहे थे, तब आपने फिर कहा—इस समय मैं आप लोगों के अनुरोध से विवश होकर यह पदक पहने लेता हूँ। किन्तु, यदि वीर-संघ के नियम में ऐसी किसी चीज का रखना निषिद्ध हुआ, तो उस समय तो मैं इसे उतार ही दूंगा।

इसके बाद, श्री० धीरजलालभाई तुरखिया ने, जैन-गुरुकुल ब्यावर की ओर से, श्री दुर्लभजी-भाई को, गुरुकुल पर उनकी इस कृपा-दृष्टि के लिये शतशः धन्यवाद दिये।

तत्पश्चात्, अजमेर म्युनिसिपैलिटी और बी० बी० एण्ड सी० आई० रेल्वे के प्रति खेद के प्रस्ताव पास हुए, कारण कि इन दोनों की व्यवस्था सर्वथा असन्तोषजनक थी।

इसके बाद, भिन्न-भिन्न व्यक्तियों, संस्थाओं, स्वयंसेवकों, प्रचारकों, करांची-बेण्ड, समाचार-पत्रों, इंजीनियरो आदि का आभार माना गया।

इसी समय यह भी घोषित किया गया कि, सम्मेलन-स्वागत-समिति के प्राण भाई गणेशमलजी बोहरा, भावनगर स्टेट रेल्वे के इञ्जीनियर श्री० छबीलदास कोठारी और कच्छ स्टेट रेल्वे के इञ्जीनियर श्री हरिलाल मेहता को, उनकी कान्फ्रेंस के अवसर पर की हुई जी-तोड सेवाओं के सम्मानस्वरूप एक-एक स्वर्णपदक दिया जायगा।

स्वयंसेवकों को भी, उनकी सेवाओं के सम्मानस्वरूप, श्री० सभापति महोदय अपनी ओर से एक-एक रौप्य-पदक देंगे, ऐसा घोषित किया गया।

इसके पश्चात्, श्री० सभापति महोदय फिर मञ्च पर पधारे और अपना भाषण यों प्रारम्भ किया —

प्रिय बन्धुओ तथा बहिनो! मुझे जो कुछ कहना था, पहले ही दिन कह दिया है। अब कुछ भी कहना शेष नहीं रहा। इन चार दिनों के कार्य में, आप लोगों ने शान्तिपूर्वक मेरा जो सहयोग दिया, उसके कारण मेरा कार्य बहुत सरल हो पड़ा। इस अवसर में, सभी आवश्यक-आवश्यक कार्य पूर्ण हो गये हैं। बहुत-से लोगों की समझ में यह बात न आवेगी, कि इस तरह के प्रस्ताव पास करने से क्या लाभ हुआ? लेकिन, बहुत-से कार्य ऐसे होते हैं, जो लम्बी अवधि के बाद अपना लाभ दिखलाते हैं। कान्फ्रेंस ने, और कुछ चाहे किया हो या न किया हो, लेकिन इसमें किसी का भी मतभेद नहीं हो सकता, कि उसने समाज में जागृति उत्पन्न कर दी है। कान्फ्रेंस ने ही, वृद्धों और युवकों की विचारधारा में फर्क पैदा कर दिया है। हमारी कान्फ्रेंस ने, सबसे अधिक महत्वपूर्ण जो कार्य किया है, वह है—मुनि-सम्मेलन और एकता। साधु-सम्मेलन, नये नियमोपनियमों की रचना तथा ऐक्य, ये चीजें सबसे अधिक मूल्यवान हैं, इसे तो आप भी स्वीकार करेंगे। मुनि-महाराजों ने, यहां एकत्रित होकर, जो कार्य किया है, इसके लिये हम उनका उपकार नहीं भूल सकते। समाधान के लिये प्रयत्न करने में, जिन-जिन महानुभावों ने मेरा साथ दिया है, उन सब का भी मैं आभार मानता हूँ।

विषय-विचारिणी-समिति में, किसी-किसी बात का न मान देने के कारण, कुछ भाई अवश्य ही मुझसे रुष्ट हुए होंगे। किन्तु, ऐसा किये बिना छुटकारा नहीं था। मेरे सन्मुख, ४०० प्रस्ताव आये। यदि, मैं उन्हें उपस्थित होने दूं, तो ३० दिन में भी कार्य पूरा न हो। कान्फ्रेंस का काम कल पूरा होना चाहिये था। लेकिन वह आज पूरा होगा। इतने में ही बहुत-से लोग चले गये। ऐसी स्थिति में, यदि मैं सभी प्रस्ताव उपस्थित होने दूं, तो अन्तिम दिन इस पण्डाल में शायद अकेला सभापति ही नज़र आता। इस सम्बन्ध में, मेरे व्यवहार से जिन भाइयों को बुरा लगा हो, वे मुझे क्षमा करें।

इस कान्फ्रेंस में, खूब प्रस्ताव पास हुए हैं। जनता भी खूब थी। बहुत-से लोग तो केवल साधु-सम्मेलन के कारण ही यहाँ आये हैं। लगभग २०-२५ हजार जनता ने कान्फ्रेंस की कार्यवाही सुनी है। इस वर्ष में, बहुत-सा कार्य होने की आशा है। उसमें, आप लोग सहायता पहुँचावें, ऐसी प्रार्थना है।

इस कान्फ्रेंस का सभापति-पद, श्री वेलजीभाई को स्वीकार करना चाहिये था। किन्तु उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया। फिर भी, यहाँ पधार कर, अपनी अमूल्य सलाहों के द्वारा उन्होंने मेरी जो सहायता की है, उसके लिये मैं उनका आभार मानता हूँ।

फण्ड के सम्बन्ध में मैं यह निवेदन करूंगा, कि यह फण्ड दूसरे दिन होने के बदले चौथे दिन हुआ है, इसीलिये इसमें दसवां हिस्सा रकम भी नहीं मिली है। किन्तु, पाइफण्ड की योजना ऐसी है कि जिसे गरीब भी आसानी से पूरी कर सकता है। यदि, यह योजना व्यवहार में आजावे तो फिर कान्फ्रेंस को दूसरा चन्दा करने की आवश्यकता ही न रहे। सभी सद्गृहस्थ इस योजना में सहायक होंगे, ऐसी आशा है। श्री० मथमलजी सा० चोरड़िया और श्री० हंसराजभाई अमरलीवाले की उदारता के लिये, मैं उनका आभार मानता हूं। इस समय, कम-से-कम १० हस लाख रुपये का फण्ड होना चाहिये था। लेकिन, उसके बदले इतना थोड़ा फण्ड हुआ, जो दुःख की बात है। यह फण्ड, आज ही बन्द न हो जायगा। जो लोग चाहेंगे भविष्य में भी इसमें अपनी रकम दे सकते हैं। हमारी जाति के लोग, अन्य जातियों की तुलना में गरीब तो नहीं हैं। ऐसी स्थिति में, उन्हें तो लाखों रुपये निकालकर इस फण्ड में दे देने चाहिये।

अब तक, हम लोगों ने बहुत सुना है। अब, नियन्त्रण की आवश्यकता है। इसी के लिये स्टेण्डिङ्ग कमेटी की रचना की गई है। इस कमेटी की सत्ता विशाल है। सत्ता होने पर ही वह अधिक कार्य कर सकती है।

अन्त में, चार दिन धैर्यपूर्वक कान्फ्रेंस की कार्यवाही में भाग लेते रहने के कारण सब का पुनः आभार मानकर, आपने अपना भाषण समाप्त किया।

* * * * *

इसके पश्चात् कान्फ्रेंस के मन्त्री श्री० चोरड़ियाजी ने आगत सज्जनों की असुविधाओं के लिए क्षमा याचना की। श्री पीतलियाजी ने अध्यक्ष महोदय का आभार माना।

इसके बाद श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के छात्रों ने एक गायन गाया।

तत्पश्चात्, श्री० सभापति महोदय फिर मञ्च पर पधारे और कल जो फैसला पंच मुनिराजो ने दोनों पूज्यों के सम्बन्ध में दिया था, उसे केवल जनता की जानकारी के लिये, श्री० सेठ वरदभाणजी पीतलिया के अनुरोध से पढ सुनाया।

इसके बाद, आपने धन्यवाद आदि के उत्तर में कहा—मैंने, केवल अपने कर्त्तव्य का पालनमात्र किया है। श्री० पीतलियाजी ने मेरा जो उपकार माना है, उसके लिये मैं उनका उपकार मानता हूँ और सब महानुभावों का भी उपकार मानता हुआ कान्फ्रेंस के इस नवमे अधिवेशन को समाप्त करता हूँ।

इसके बाद, लोगों ने "भगवान् महावीर की जय" "श्री जैनधर्म की जय" आदि के नारों से पण्डाल को गुंजा दिया और कराची के जैन-बैण्ड की विदाई की सलामी के बीच, श्री० प्रमुख सा० तथा अन्य महानुभाव अपने-अपने स्थान को पधार गये।

इस तरह, कान्फ्रेंस का वह अभूतपूर्व-अधिवेशन समाप्त हुआ।

इस अधिवेशन मे स्वीकृत प्रस्ताव और कान्फ्रेंस के अवसर पर होने वाली युवक-परिषद्, महिला-परिषद् जैनट्रेनिंगकॉलेज परिषद्, शिक्षण-परिषद् आदि का वर्णन, पाठको को परिशिष्ट में मिलेगा।

साधु-सम्मेलन की कार्यवाही

जिस साधु-सम्मेलन के लिये, इतनी शक्ति खर्च हुई, मुनिराजों ने नाना प्रकार के कष्ट उठाये और जिसके परिणाम की आनुमानिक-झलक की प्रतिक्षा में, निरन्तर १५ दिन तक जनता हजारों की संख्या में सम्मैयो के नोहरे के बाहर खड़ी रहकर, स्वाती की बूंद की-सी प्रतीक्षा करती रहती थी, उस साधु-सम्मेलन में, भीतर क्या कार्यवाही हुई, इसका उस समय कुछ भी पता न लगा। यद्यपि, पीछे से कान्फ्रेंस मे, वहा की कार्यवाही का कुछ उपयोगी अश सुनाया गया था, किन्तु सब कार्यवाही नहीं प्रकट हुई। यहा, उसकी कार्यवाही की जो तीन गुजराती एवं एक हिन्दी कार्यवाही बुक प्राप्त हुई है, उसका उपयोगी अश दिया जाता है।

अखिल भारतवर्षीय श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी साधु-सम्मेलन में, सम्प्रदायवार, निम्नानुसार प्रतिनिधि उपस्थित हुए थे —

नाम सम्प्रदाय	प्रतिनिधि सख्या	नाम सम्प्रदाय	प्रतिनिधि सख्या
पूज्यश्री अमोलकऋषिजी महाराज	४	कच्छ आठकोटी मोटीपक्ष	३
,, धर्मसिंहजी महाराज	४	पूज्यश्री मोतीरामजी महाराज	१
,, छगनलालजी महाराज खम्भात	२	,, एकलिगजी महाराज	३
,, माधवमुनिजी महाराज	४	,, जयमलजी महाराज	५

„ मोहनलालजी महाराज पंजाब	५	„ नानकरामजी महाराज	२
„ जवाहिरलालजी महाराज	५	„ शीतलदासजी महाराज	१
„ मुन्नालालजी महाराज	४	„ रघुनाथजी महाराज	२
„ हस्तीमलजी महाराज	३	„ अमरसिंहजी महाराज	४
„ ज्ञानचन्द्रजी महाराज	३	„ स्वामीदासजी महाराज	२
लींबड़ी मोटी सम्प्रदाय	४	„ चौथमलजी महाराज	२
„ छोटी सम्प्रदाय	०	„ नाथूरामजी महाराज	२
बोटाद सम्प्रदाय	१	„ रामरतनजी महाराज	१
पूज्यश्री दौलतरामजी महाराज कोटा सं०	३		74

सम्मेलन की बैठक जमीन पर निम्नानुसार गोल थी। प्रत्येक मुनिराज जब कुछ बोलना चाहते थे, तब अपनी ही जगह पर खड़े होकर बोलते थे।
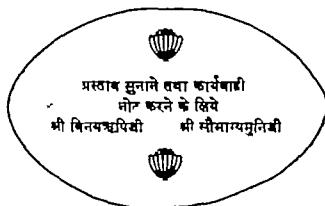
पहले, साधु सम्मेलन के जिस खुले अधिवेशन का वर्णन कर आये हैं, उसके निश्चयानुसार, उसी दिन यानी ता० ५-४-३३ को दोपहर को २ बजे, सम्मेलन के मोहरे के भीतर, प्रतिनिधि मुनिराजों का सम्मेलन शान्तिपूर्वक प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में, श्री शतावधानीजी महाराज ने, एक भावनामय प्रवचन किया। जिसके बाद विभिन्न चर्चायें हुई और तदुपरान्त निम्न कार्यवाही हुई—

(१) विषय चर्चा के पश्चात् प्रतिनिधि मुनियों की बैठक का निम्न समय सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ

प्रातःकाल—८॥ से ११ बजे तक दोपहर—१॥ बजे ४ बजे तक

प्रतिनिधि-मुनिगण की बैठक सम्बन्धी सूचना—

(अ) व्यक्तिगत आक्षेप किसी भी मुनि पर नहीं करना।

(ब) बैठक की अन्दर की बातें, गृहस्थों से नहीं कहना।

ये दोनों सूचनायें, सर्वानुमति से नियमावली में सम्मिलित कर दी गई हैं। बद पूर्ण नियमावली अगले दिन (ता० ६-४-३३) की बैठक में उपस्थित की जायगी।

(३) प्रतिनिधि-मुनिवरों की संख्या लगभग ७४ है। उनमें से अग्रगण्य और विचारक मुनियों का निर्वाचन हुआ और उस कमेटी का नाम 'विषय विचारिणी समिति' रक्खा गया। समिति के, निम्न-कार्य निश्चित किये गये।

(अ) अगले दिन जो प्रस्ताव रखने हों या कार्यवाही की जाने वाली हो, उसके सम्बन्ध में विचार करना।

(आ) कृत कार्यों के सम्बन्ध मे समीक्षा।

(इ) मन्त्रणा और समाधान।

इस समिति के निम्न सभ्य चुने गये—

१—श्री हर्षचन्द्रजी महाराज
२—पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज
३—श्री मोहनऋषिजी महाराज
४—श्री सौभागमलजी महाराज
५—श्री समर्थमलजी महाराज
६—उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
७—युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज
८—पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज
९—श्री चौथमलजी महाराज (अनुमोदक कोटा सम्प्रदाय तथा एकलिंगदासजी म० की सम्प्रदाय)
१ –पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
११–शतावधानी प० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
१२—कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज
१३—श्री मणिलालजी महाराज
१४—श्री माणिकचन्द्रजी महाराज
१५—पूज्य श्री छगनलालजी महाराज
१६—युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी महाराज
१७—श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज
१८—श्री पन्नालालजी महाराज
१९—श्री चौथमलजी महाराज मारवाडी
२०—श्री ताराचन्द्रजी महाराज मारवाडी
२१—श्री कुन्दनमलजी महाराज
२२—श्री छोगालालजी महाराज

ऊपर जो नाम लिखे गये हैं, उनमें से यदि कोई मेम्बर न आ सकें, तो उन्हें अपना मत, किसी और मेम्बर के द्वारा लिखित अथवा मौखिक भेज देना चाहिये।

(४) उपरोक्त कमेटी का कोरम, ११ का गिना जायगा। अर्थात् उपरोक्त मेम्बरों में से ११ के उपस्थित होने पर कार्य प्रारम्भ हो सकेगा।

(५) कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज ने प्रस्ताव किया कि 'मुनियो की सभा में शान्ति रखने के लिये, शान्ति स्थापक मुनियों का चुनाव होना चाहिये।

इसका समर्थन, युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज और पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज ने किया। सभा का मत लेने पर, गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज तथा शतावधानी प० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज, ये दोनों बहुमत से शान्ति स्थापक चुने गये। इनके लेखक के रूप में हिन्दी भाषा के लिये श्री उपाध्याय आत्मारामजी महाराज और गुर्जर भाषा के लिये मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज नियुक्त हुए। लेखकों की सहायता के लिये, श्री मदनलालजी महाराज तथा श्री विनयऋषिजी महाराज नियुक्त किये गये।

में, प्रत्यक्ष प्रमाण को ही प्रधानता दी जानी चाहिये। कारण कि कितनी ही वस्तुएँ, मद आदि दीखते हैं या नहीं, तो ऐसी बात स्पष्ट होने पर भी वहां क्या बाधा है ? शास्त्रों में, इस सम्बन्ध में जो बातें कही गई हैं, व सूर्य-चन्द्रमा के लिये ही हैं। मह नक्षत्र के लिये कुछ कहने की, उन परम-पुरुषों को कुछ आवश्यकता ही नहीं पड़ी। मेरा मन्तव्य यह है कि चातुर्मास बैठने के पश्चात्, ४९ वें या ५० वें दिन संवत्सरी अवश्य माना, तो बाधा दोष न लगे। भले ही आश्विन दो हों तो भी इस तरह लेने से अगला दोष आने की संभावना नहीं रहेगी। इतना कहकर, अपना स्थान लेने से पूर्व, आप सब के समक्ष यह निवेदन करता हूँ कि संवत्सरी-पक्खी आदि तिथि निर्णय के लिये कोई कमेटी नियुक्त हो अथवा किसी दूसरी तरह से इस प्रश्न का समाधान हो तो अच्छा ही है। किन्तु जो प्रश्न हाथ में लिया जाय, वह शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाय, यह वांछनीय है। इस सम्बन्ध में, हमारे गुरुदेव को बड़ा अच्छा ज्ञान था, यह बात सभी जानते हैं। अतः यदि उनके पात्रों की भी, इस कार्य की सेवा में आवश्यकता पड़े, तो मैं दे सकता हूँ।

यह कहकर, आप अपने स्थान पर बैठ गये। आपके बाद, श्री चतुरलालजी महाराज ने इस सम्बन्ध में अपना वक्तव्य इस प्रकार दिया।

पूज्यपाद मुनिराजों !

संवत्सरी-पक्खी आदि पर्व तिथियों के विषय में पंजाब प्रान्त में खूब चर्चा हो चुकी है। अब इस विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी संक्षेप में मैं यह अवश्य कहूँगा, कि जो भी तिथि, नक्षत्र करण आदि लिये जायें, वे सब कालानुकूल होने चाहिएँ। कोई शास्त्रानुसार चलना को कहता है और किसी का यहां तक कहना है, कि क्या प्रत्यक्ष प्रमाण आगम से बाधित है ? ऐसी अनेक प्रश्न परम्परा की उलझन में, मेरा मन्तव्य तो यह है कि प्रतिक्रमण के समय जो तिथि आती हो, उसी दिन वह तिथि मान लेनी चाहिये। तथा यह नियम बना देना चाहिये, कि बड़ी तिथि की साधना के लिये यदि छोटी तिथि की विराधना होती हो, तो उसे सहन कर लेना चाहिये। कारण कि जैन शास्त्र का गणित केवल तिथि आदि के निर्णय के लिये ही है। और इस सम्बन्ध में लोंकागच्छ के यति लोग प्रयास करके जो निर्णय करते हैं वह सर्वमान्य होता है। उस निर्णय के आधार पर ही निर्णय किया जाय, तो ठीक है। फिर पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के कथनानुसार, मध्यम मार्ग निकाल लेना चाहिये। लौकिक ज्योतिष में भी फर्क आता है। उसका कारण यह है, कि भास्कराचार्य ने जो गणित बनाया था, वह अमुक वर्ष के लिए ही था। किन्तु, १२००० वर्ष हो जाने पर भी वही काम में आरहा है। आज, शनैः शनैः २४ दिनों का उसमें अन्तर पड़ गया है। इसका कारण यही है कि उसमें परिवर्त्तन होना चाहिए था वह नहीं हुआ। क्रिश्चियनों को भी परिवर्त्तन करना ही पड़ा है। किन्तु, व विचक्षण हैं और सहनशील भी हैं। उन्होंने १० महीने के बदले १२ महीने किये, इस तरह दो महीनों की वृद्धि की। फिर १० दिन का भी परिहार किया है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहने की आवश्यकता है। किन्तु सारांश में अपनी इच्छा प्रदर्शित करता हूँ कि तिथि आदि का निर्णय तुरन्त हो जाना चाहिये और उसमें कोई खींचातानी न करे।

मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने श्री पन्नालालजी महाराज के वक्तव्य में ४९-५० दिन के सम्बन्ध में शंका की जिसका तपस्वी श्री गणेशजी स्वामी ने समाधान कर दिया।

आज सवेरे से शाम तक अपने प्रस्ताव पर होने वाली चर्चा को तटस्थ भावना एवं शान्त चित्त से सुनते रह कर, वीर युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने अपना वक्तव्य प्रारम्भ करते हुए कहा कि—

'आदरणीय मुनिवरों! इसी विषय में, बहुत समय व्यतीत हो गया, किन्तु कोई निर्णय न हो सका। मुनि महाराजों ने, खूब भाषण दिये। कोई शास्त्र को ही मानते है और कोई शास्त्र को मानने के लिये तैयार होते हुए भी कहते हैं, कि लौकिक को किस तरह भूला जाय? इस तरह, सभा दुरंगी हो गई। और परस्पर विरोधी उक्तियों को भी अनुमति प्राप्त हो गई। महानुभावों! मैं आपसे यही पूछूंगा, कि आप लोग शास्त्रों से सहमत हैं या नहीं। यदि शास्त्रों से सहमत हैं, तो वैसा बतलाइये, अन्यथा नाहीं कर दीजिये। किसी भी धर्म की तिथिया लोईसाई लो या इस्लामी लो पौराणिक लो। यदि शास्त्रों का आधार ही छोडना हो, तो फिर पक्खी सवत्सरी आदि की भी क्या आवश्यकता है? फिर, वीतराग-मार्ग की दीक्षा की भी क्या आवश्यकता है? शास्त्र से ह मेंसहमत होना है, या विमत? यदि शास्त्र से सहमत होना है तो फिर यह कैसे कह सकते हैं कि यदि शास्त्र प्रत्यक्ष प्रमाण से विरुद्ध जाते हों, तो उन्हे क्यों माना जाय? इस तरह की बातों को भी, बिना विचारे अनुमति देदी जाती है। पूज्यपादों! विचार करने की आवश्यकता है। यह, विद्वानों की सभा है, बच्चों का खेल नहीं। इसलिये मैं एक बात पूछता हूँ, कि शास्त्रानुसार तिथि आप लोगों को माननी है या नहीं? भले ही फिर वह प्रत्यक्ष बाधित हो, तो भी माननी ही चाहिये। आज का विज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाण से दूध में जीव मानता है। ऐसी दशा में, वह सचित हुआ या नहीं? फिर आप उसे अचित क्यों मानते हैं? इस तरह के अनेक दृष्टान्त मिलते हैं, जो कि प्रत्यक्षत बाधित से जान पडते हैं, किन्तु वस्तुत वैसे नहीं होते। इस लिये या तो शास्त्रो को मानो या अन्य बातों को। जिस शास्त्र को आप सर्वज्ञ प्रणीत मानते हैं, उसी में शंका लाओ, यह कैसे उचित है। भगवान् ने, आठ मास घूमने और चार मास एक जगह रहने को फरमाया, यह क्यों? इसलिये कि वर्षाऋतु मे जीव-जन्तुओं की उत्पत्ति खूब होती है और उस समय प्रवास करना महान् पाप का कारण हो सकता है। लेकिन वर्षा किस ऋतु में होती है? कब होती है? आषाढ महीना लगा और वर्षा शुरु हुई। यदि वर्षा में विहार करे, तो उसके लिये निशीथ सूत्र में प्रायश्चित भी फरमाया है। वर्षा में विहार नहीं करना और वर्षाऋतु आषाढ महीने से शुरु होती है, यह प्रत्येक मतवादी स्वीकारते हैं। जब यही बात है, तो फिर तिथि आदि मानने में क्या आपत्ति हो सकती है? आप सज्जनों ने, प्रत्यक्ष के विषय मे अंग्रेजी तथा अन्य धर्म वालों का दृष्टान्त दिया। उसे आपने किस तरह अपना बतलाया? मैं कहता हूँ, कि उनमें भी क्या फेर नहीं है? अवश्य है। जब फेर होते हुए भी वे अपनी जगह से नहीं डिगते, तो फिर आप लोग ही क्यो डिगें? आपके पास क्या साधन की कमी है? यदि वीतराग प्रणीतसूत्रों में साधन की कमी हो, तो आप लोग दूसरों को भी मानिये। किन्तु अभी तो आप लोगों के पास बहुतसा मसाला है, अत' मैं जोर देकर यह बात कहता हू कि पहले शास्त्रों की तरफ दृष्टि दौडाओ और वहा जिस चीज की कमी हो, उसके लिये दूसरो का मत भी लो। चन्द्र प्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति जैसे उत्तम ग्रन्थ क्या सार्थक नहीं हैं? यदि हम लोगों की अपूर्णता के कारण उसमें पूर्ण वस्तु न मिले, तो इसमें शास्त्र का क्या दोष? इसके अतिरिक्त, केवली प्ररूपित से भिन्न दूसरे किन शास्त्रों में गलती नहीं है? अत एक ही बात पर लक्ष्य दो और मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो, कि शास्त्रों को आप लोग सर्वज्ञ प्रणीत मानते हो या नहीं? यदि मानते हो तो सर्वज्ञ के वचनों से पल्लवित शास्त्रों में कुछ नहीं मिलता, ऐसी शका करना सर्वथा

(६) प्रतिनिधि मुनियों की बैठक के लिये, मोहरे में पीछे वाली खुली भूमि बहुमत से पसन्द की गई।

(७) बाहर से आये हुए तारों में से, निम्न तीन तार परिषद् के सन्मुख पढ़कर सुनाये गये।

१—अमृतसर संघ द्वारा—पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज का सन्देश।

२—सायला युवक संघ का तार।

३—चंजीवार संघ का तार।

इसके पश्चात, सभा की कार्यवाही, दूसरे दिन के लिये स्थगित कर दी गई।

० ० ० ० ० ० ०

दूसरे दिन, ता० ६—४—३३ की कार्यवाही।

आज सवेरे ८॥ बजे से अधिवेशन का कार्य प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में, श्री शतावधानीजी म० ने श्लोक के रूप में मंगल स्तुति फरमाई। तत्पश्चात श्री मणिलालजी महाराज ने, निम्न प्रस्ताव उपस्थित किया।

१—सायला सम्प्रदाय की जोखिमदारी, श्री मणिलालजी महाराज लेते हैं। कारण कि उस सम्प्रदाय ने इन्हें अपनी सम्मति दे रक्खी है। अत: ये, उसकी तरफ से श्री शिवलालजी महाराज (बोटाद-सम्प्रदाय) को नियुक्त करना चाहते हैं।

मत लेने पर, प्रस्ताव पास हो गया।

इसके बाद मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने, निम्न प्रस्ताव उपस्थित किया।

२—साधु सम्मेलन समिति ने भूतकालीन बातें सम्मेलन में न चर्चा जाय, यह ठहराव किया है। उसके बदले यह संशोधन स्वीकार कर लिया जाय कि 'भूतकालीन क्लेशोत्पादक विषय सम्मेलन में न होनी चाहिये।'

प्रस्ताव, सर्वानुमति से पास हुआ।

तत्पश्चात युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने, निम्न प्रस्ताव उपस्थित किया—

३—जब, अमृतसर में पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के पास डेपुटेशन आया, तब पत्रिका सम्बन्धी ऊहापोह हुआ था। इस पत्रिका की, कितनी ही बातें विचारणीय हैं। परन्तु फिर भी, संघ भ्रम का और शान्ति का कारण है। अत: ठहराव नं० १० के अनुसार, शास्त्रानुसार विधि आदि तथा दीक्षा और समाचारी आदि के सम्बन्ध में विचार विनिमय करने के लिये किसी उचित स्थान में साधु-सम्मेलन हो। वहां प्रत्येक प्रान्त के मुख्य मुनि मिलें एवं चर्चा की जाय। इस तरह ऐसी नई टीप तैयार की जाय जो सर्वमान्य हो सके और वह सभी सम्प्रदायों को मान्य हो। यदि ऐसा हो तो मैं एक वर्ष तक पत्रिका से सहमत हूँ।

इस प्रस्ताव को सुनकर, पण्डित श्री आनन्दऋषिजी महाराज ने सूचना दी, कि संवत्सरी-पक्खी निर्णय के सम्बन्ध में जो अपना वक्तव्य देना चाहें, वे लिखित दें यह इष्ट है।

परन्तु, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने, कुछ प्रासंगिक कहने की इच्छा दर्शाई और सक्षेप मे यह कहा कि जिस प्रकार से क्रिश्चियनों ने अपना मध्य मार्ग ले रक्खा है, उसी प्रकार से इस सम्बन्ध मे हमें भी मध्य मार्ग लेना चाहिये, जिससे निश्चित् शान्ति हो सके। अन्यथा कोई महान ज्योतिषी भी जैन भूगोल-खगोल में चचुपात करने को शक्तिमान् नहीं है और उसमें व्यर्थ ही समय व्यय होगा। समय व्यर्थ न जाय, इसके लिये मध्य मार्ग स्वीकार करना तथा तिथि एव टिप्पणे का आग्रह न करना चाहिये। कारण, कि अपने सम्मेलन का उद्देश्य ऐक्य है। और वह रहे, यही इष्ट है। इसके बाद पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने भी एक सुन्दर वक्तव्य दिया और पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज ने शास्त्रीय बाते कही।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के प्रस्ताव पर, निम्न मुनिराजो का अनुमोदन प्राप्त हुआ—

१—पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज
२—मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज
३—मुनि श्री शामजी महाराज
४—मुनि श्री सौभागमलजी महाराज
५—मुनि श्री वनसुखजी महाराज
६—मुनि श्री रामकुँवरजी महाराज
७—मुनि श्री माणिक्यचन्द्रजी महाराज
८—मुनि श्री कविवर नानचन्द्रजी महाराज
९—मुनि श्री शिवलालजी महाराज
१०—मुनि श्री छगनलालजी महाराज
११—युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी महाराज
१२—मुनि श्री समर्थमलजी महाराज
१३—मुनि श्री पन्नालालजी महाराज
१४—शतावधानी पं० श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
१५—पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
१६—मुनि श्री हर्षचन्द्रजी महाराज

श्री छगनलालजी महाराज ने, लोंकागच्छ-तिथिपत्र भी याद रखने को कहा। श्री मणिलालजी महाराज ने, बहुत अधिक जोर दिया और सूत्रों क सम्बन्ध में, अत्यधिक प्रमाण पूर्वक बातचीत की। लौकिक में भी हेरफेर रहता, यह बतलाया। उनके कथन का बडा प्रभाव पडा। और जैन तिथि को जग-व्यवहार में कौन पालता है, यह भी बतलाया।

श्री शतावधानीजी ने भी, लौकिक तिथियो के लिये अच्छा समन्वय किया। श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने, श्री मणिलालजी महाराज को दिनमणि (सूर्य) की उपमा दी। तत्पश्चात, इस सम्बन्ध मे एक कमेटी मुकर्रर करने का निर्णय करके, बैठक स्थगित करदी गई।

दोपहर को १॥ बजे से, अधिवेशन की कार्यवाही पुन प्रारम्भ हु । सबेरे, पक्खी सवत्सरी के सम्बन्ध में जो विचार विनिमय हुआ था, इस समय भी वही विषय चालू रहा और बैठक के प्रारम्भ में ही मुनि श्री पन्नालालजी महाराज ने अपना वक्तव्य यों दिया।

आज सवेरे से, पक्खी सवत्सरी इत्यादि विषयों की ही चर्चा हो रही है। इस प्रश्न का शीघ्र ही सर्वानुमति से निर्णय हो जाय यही इष्ट है। इस विषय मे, मैं यह कहना चाहता हूँ, कि चातुर्मास प्रारम्भ होने के पश्चात ४६ वें या ५० वें दिन सवत्सरी होनी ही चाहिये। और फिर ६६ या ७० दिन शेष रह जाते हैं। इस तरह, दिन की घटा बढी तो जब अधिक मास आता है, तब होती ही रहती है। तो मेरा यह कथन है कि पहला दोष टालना चाहिये, अर्थात् संवत्सरी तो निर्णीत होनी ही चाहिये। इस सम्बन्ध

में, प्रत्यक्ष प्रमाण को ही प्रधानता दी जानी चाहिये। कारण कि कितनी ही वस्तुएँ, मह आदि ठीक हैं या नहीं, तो ऐसी बात स्पष्ट होने पर भी वहां क्या बाधा है? शास्त्रों में, इस सम्बन्ध में जो बातें कही गई हैं, व सूर्य-चन्द्रमा के लिये ही हैं। ग्रह नक्षत्र के लिये कुछ कहने की, उन परम-पुरुषों को कुछ आवश्यकता ही नहीं पड़ी। मेरा मन्तव्य यह है कि चातुर्मास बैठने के पश्चात, ४६ वें या ५० वें दिन संवत्सरी अवश्य माना, तो बाधा दोष न लगे। भले ही आश्विन दो हों, तो भी इस तरह करने से अगला दोष आने की संभावना नहीं रहेगी। इतना कहकर, अपना स्थान लेने से पूर्व, आप सब के समक्ष यह निवेदन करता हूँ कि संवत्सरी-पक्खी आदि तिथि निर्णय के लिये कोई कमेटी नियुक्त हो अथवा किसी दूसरी तरह से इस प्रश्न का समाधान हो तो अच्छा ही है। किन्तु जो प्रश्न हाथ में लिया जाय, वह शीघ्र ही समाप्त कर दिया जाय, यह वांछनीय है। इस सम्बन्ध में, हमारे गुरुदेव को बड़ा अच्छा ज्ञान था यह बात सभी जानते हैं। अतः यदि उनके पत्रों की भी, इस कार्य की सेवा में आवश्यकता पड़े तो मैं दे सकता हूँ।

यह कहकर, आप अपने स्थान पर बैठ गये। आपके बाद, श्री चतुरलालजी महाराज ने इस सम्बन्ध में अपना वक्तव्य इस प्रकार दिया।

पूज्यपाद मुनिराजो !

संवत्सरी-पक्खी आदि पर्व तिथियों के विषय में पंजाब प्रान्त में खूब चर्चा हो चुकी है। अतः इस विषय में अधिक कहने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी संक्षेप में, मैं यह अवश्य कहूँगा, कि जो भी तिथि, नक्षत्र करण आदि लिये जायें वे सब कालानुकूल होने चाहिएँ। कोई शास्त्रानुसार चलने को कहता है और किसी का यहां तक कहना है, कि क्या प्रत्यक्ष प्रमाण आगम से बाधित है? ऐसी अनेक प्रश्न परम्परा की उलझन में मेरा मन्तव्य तो यह है, कि प्रतिक्रमण के समय जो तिथि आती हो उसी दिन वह तिथि मान लेनी चाहिये। तथा यह नियम बना देना चाहिये, कि बड़ी तिथि की साधना के लिये यदि छोटी तिथि की विराधना होती हो, तो उसे सहन कर लेना चाहिये। कारण कि जैन शास्त्र का गणित केवल तिथि आदि के निर्णय के लिये ही है। और इस सम्बन्ध में लोंकागच्छ के यति लोग प्रयास करके जो निर्णय करते हैं वह सर्वमान्य होता है। उस निर्णय के आधार पर ही निर्णय किया जावे, तो ठीक है। फिर पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के कथनानुसार, मध्यम मार्ग निकाल लेना चाहिये। लौकिक ज्योतिष में भी फर्क आता है। उसका कारण यह है, कि भास्कराचार्य ने जो गणित बनाया था, वह अमुक वर्ष के लिए ही था। किन्तु, १५ ०० वर्ष हो जाने पर भी वही काम में आरहा है। आज, शनैः शनैः २४ दिनों का उसमें अन्तर पड़ गया है। इसका कारण यही है कि उसमें परिवर्तन होना चाहिए था, वह नहीं हुआ। क्रिश्चियनों को भी परिवर्तन करना ही पड़ा है। किन्तु व विचक्षण हैं और सहनशील भी हैं। उन्होंने १० महीने के बदले १२ महीने किये, इस तरह दो महीनों की वृद्धि की। फिर, १ दिन का भी फेरफार किया है। इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहने की आवश्यकता है। किन्तु सारांश में अपनी इच्छा प्रदर्शित करता हूँ कि तिथि आदि का निर्णय तुरन्त हो जाना चाहिये और उसमें कोई खींचातानी न करे।

मुनि श्री घमण्डमलजी महाराज ने श्री पन्नालालजी महाराज के वक्तव्य में, ४६-५ दिन के सम्बन्ध में शंका की जिसका तपस्वी श्री शामजी स्वामी ने समाधान कर दिया।

आज सबेरे से शाम तक अपने प्रस्ताव पर होने वाली चर्चा को तटस्थ भावना एवं शान्त चित्त से सुनते रह कर, वीर युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने अपना वक्तव्य प्रारम्भ करते हुए कहा कि—

'आदरणीय मुनिवरो ! इसी विषय में, बहुत समय व्यतीत हो गया, किन्तु कोई निर्णय न हो सका। मुनि महाराजों ने, खूब भाषण दिये। कोई शास्त्र को ही मानते है और कोई शास्त्र को मानने के लिये तैयार होते हुए भी कहते हैं, कि लौकिक को किस तरह भूला जाय ? इस तरह, सभा दुरगी हो गई। और परस्पर विरोधी उक्तियो को भी अनुमति प्राप्त हो गई। महानुभावो ! मैं आपसे यही पूछूंगा, कि आप लोग शास्त्रो से सहमत हैं या नहीं। यदि शास्त्रों से सहमत हैं, तो वैसा बतलाइये, अन्यथा नाहीं कर दीजिये। किसी भी धर्म की तिथिया लोईसाई लो या इस्लामी लो पौराणिक लो। यदि शास्त्रों का आधार ही छोडना हो, तो फिर पक्खी सवत्सरी आदि की भी क्या आवश्यकता है? फिर, वीतराग-मार्ग की दीक्षा की भी क्या आवश्यकता है ? शास्त्र से ह मेंसहमत होना है, या विमत ? यदि शास्त्र से सहमत होना है तो फिर यह कैसे कह सकते हैं कि यदि शास्त्र प्रत्यक्ष प्रमाण से विरुद्ध जाते हो, तो उन्हे क्यों माना जाय ? इस तरह की बातो को भी, विना विचारे अनुमति देदी जाती है। पूज्यपादों ! विचार करने की आवश्यकता है। यह, विद्वानों की सभा है, बच्चों का खेल नहीं। इसलिये मैं एक बात पूछता हूँ, कि शास्त्रानुसार तिथि आप लोगों को माननी है या नहीं ? भले ही फिर वह प्रत्यक्ष बाधित हो, तो भी माननी ही चाहिये। आज का विज्ञान, प्रत्यक्ष प्रमाण से दूध में जीव मानता है। ऐसी दशा में, वह सचित हुआ या नहीं ? फिर आप उसे अचित क्यों मानते हैं ? इस तरह के अनेक दृष्टान्त मिलते हैं, जो कि प्रत्यक्षत बाधित से जान पड़ते हैं, किन्तु वस्तुत वैसे नहीं होते। इस लिये या तो शास्त्रों को मानो या अन्य बातों को। जिस शास्त्र को आप सर्वज्ञ प्रणीत मानते हैं, उसी में शका लाओ, यह कैसे उचित है। भगवान् ने, आठ मास घूमने और चार मास एक जगह रहने को फरमाया, यह क्यों ? इसलिये कि वर्षाऋतु में जीव-जन्तुओं की उत्पत्ति खूब होती है और उस समय प्रवास करना महान् पाप का कारण हो सकता है। लेकिन वर्षा किस ऋतु में होती है ? कब होती है ? आषाढ महीना लगा और वर्षा शुरु हुई। यदि वर्षा में विहार करे, तो उसके लिये निशीथ सूत्र में प्रायश्चित भी फरमाया है। वर्षा में विहार नहीं करना और वर्षाऋतु आषाढ महीने से शुरु होती है, यह प्रत्येक मतवादी स्वीकारते हैं। जब यही बात है, तो फिर तिथि आदि मानने में क्या आपत्ति हो सकती है ? आप सज्जनों ने, प्रत्यक्ष के विषय मे अंग्रेजी तथा अन्य धर्म वालों का दृष्टान्त दिया। उसे आपने किस तरह अपना बतलाया ? मैं कहता हूँ, कि उनमे भी क्या फेर नहीं है ? अवश्य है। जब फेर होते हुए भी वे अपनी जगह से नहीं डिगते, तो फिर आप लोग ही क्यों डिगें ? आपके पास क्या साधन की कमी है ? यदि वीतराग प्रणीत सूत्रो में साधन की कमी हो, तो आप लोग दूसरों को भी मानिये। किन्तु अभी तो आप लोगों के पास बहुतसा मसाला है, अत मैं जोर देकर यह बात कहता हूं कि पहले शास्त्रो की तरफ दृष्टि दौडाओ और वहां जिस चीज की कमी हो, उसके लिये दूसरो का मत भी लो। चन्द्र प्रज्ञप्ति और सूर्य प्रज्ञप्ति जैसे उत्तम ग्रन्थ क्या सार्थक नहीं हैं ? यदि हम लोगों की अपूर्णता के कारण उसमें पूर्ण वस्तु न मिले, तो इसमें शास्त्र का क्या दोप ? इसके अतिरिक्त, केवली प्ररूपिते से भिन्न दूसरे किन शास्त्रों में गलती नहीं है ? अत एक ही वात पर लक्ष्य दो और मेरे इस प्रश्न का उत्तर दो, कि शास्त्रों को आप लोग सर्वज्ञ प्रणीत मानते हो या नहीं ? यदि मानते हो तो सर्वज्ञ के वचनों से पल्लवित शास्त्रों में कुछ नहीं मिलता, ऐसी शका करना सर्वथा

असंगत है। अस्तु। इस लिये हे मुनिवरों! शास्त्र को सम्मुख रक्खो और उसी से काम लो। शास्त्रों पर रहने वाली श्रद्धा में यदि, जरा भी क्षति हुई, तो पतन निश्चित है। यदि इसकी परवाह नहीं है, तो फिर उत्थान के लिये इतने लम्बे २ विहारों का कष्ट सहन करके यहां आने की आवश्यकता ही क्या थी? अपने शास्त्रों को, केवलज्ञानी प्ररूपित मानना और उनमें की बात पर श्रद्धा नहीं रखनी, यह कैसे उचित कहा जा सकता है? यदि शास्त्र की जरूरत न हो, तो चातुर्मास २ महीने का मानो, चार महीने का मानो, ६ महीने का मानो, अर्थात् जो इच्छा हो, सो मानलो, कौन रोकता है? मेरे पास बहुत से प्रमाण हैं, तथापि कितने ही बोल 'विच्छेद गये' इस कारण न मिलने से दूसरे स्थलों से लो किन्तु शास्त्र के सम्मुख ही अपना ध्येय रखो।

इस प्रकार से श्री युवाचार्यजी का उत्तेजक वक्तव्य सुनकर, उसके समाधान के लिये, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने व्याख्यान देते हुए फरमाया, कि श्री युवाचार्यजी के कथनानुसार हम शास्त्र को सर्वज्ञ प्रणीत मानते हैं। इतना ही नहीं, किन्तु शास्त्र हमारा धन है—जीवन है। शास्त्र का त्याग ही मृत्यु है। परन्तु हम सर्वज्ञ पुत्र होते हुए भी श्वेताम्बरी, जो कि ११ अंगों को सर्वज्ञ-पिता के प्रणीत ही मानते हैं और सम्पूर्ण श्रद्धा रखते हैं उन अंगों के कथन में भी आज चाहिये वैसी आधारभूत शंका-निवारण के लिए क्या कोई तैयार है? मध्यम मार्ग कहकर भी हम, शास्त्र को प्रधानता देते हैं। किन्तु जब हम अपने शास्त्रों को ही समझने में असमर्थ हों तो? कारण कि भूगोल खगोल की बातें उन योगी पुरुषों ने किस ध्यान में बैठकर निर्मित की है, उसका साक्षात्कार तो हमें वैसी योग्यता प्राप्त करने के बाद ही होना सम्भव है। अतः आध्यात्मिक-विषय तो योगी ही बतला सकते हैं। हम लोग अपने घर में तो सर्वज्ञ पुत्र हैं, किन्तु पृथ्वी गोल फिरती है यह बात आज का विज्ञान बतलाता है। आज, उनकी बात का खण्डन कर, अपनी बात को प्रतिपादित करने के लिये कौन तैयार है? फिर सर्वज्ञदेव के वचन तो अबाधित हैं—सत्यरूप निश्चयरूप हैं। उन्हीं वचनों में, पांच व्यवहार रक्खे हैं। जीतव्यवहार को भी उनमें स्थान दिया है, यह किस लिये? इसमें उन जिनेश्वर देवों का आशय यही मालूम होता है, कि भविष्य में कितने ही विषयों को समझने की बुद्धि नहीं रहेगी अथवा विषवाद होगा। यही जानकर, पहले से ही शान्ति के निमित्त इस प्रकार का कथन करने की आवश्यकता प्रतीत हुई होगी और इस लिये तो जैन दर्शन स्याद्वाद शैली पर ही निर्भर है। मैं युवाचार्यजी से यह कहना चाहता हूं कि मध्यम मार्ग कहकर मैं शास्त्र को प्रथम लेना चाहता हूं। किन्तु, आपके कथन में यह बात आजाती है कि जो चीज न मिले उसके लिए क्या करना चाहिये? अर्थात् इस विषय की गहराई में उतरने पर कोई जबरदस्त ज्योतिषी भी इस विषय में हम लोगों को सन्तोष नहीं दिला सकता। अतः बारीकी में उतरने की आवश्यकता नहीं है। कारण कि बहुत अधिक भेद हैं। चित्तवृत्ति के मामले में बहुत अधिक विचार करने की आवश्यकता है। युवाचार्यजी! आप कहते हैं उसमें भी बाधा आवेगी। कोई पूछेगा, कि वर्षाऋतु में नीलागरी तथा लीलन-फूलन के कारण ही एक स्थान में रहने को फरमाया है, तो अब तो विहार करने में कोई बाधा नहीं है न? फिर कितनी ही जगह जमीन पर हरियाली होती और कितनी ही जगहों पर नहीं भी होती है। ऐसी स्थिति में क्या उत्तर दिया जावे? इस लिये वस्तु पर ही दृष्टि रखकर विचार करना चाहिये। इस सम्बन्ध में विद्वानों की एक कमेटी नियुक्त की जानी चाहिये जो शास्त्र प्रमाण तथा अन्य बातों को लेकर सर्व निर्णय करे। उस समिति के निर्णयानुसार ही सब लोग पर्वाराधन स्वीकार

करें। पजाब, मारवाड़, मेवाड़, गुजरात, काठियावाड आदि प्रत्येक स्थान पर वह एक आवाज पहुचे इससे बढ़कर धन्य भाग और क्या होगा और इसी मे अपने स्थानकवासी समाज का गौरव बढ़ सकता है। 'सुज्ञेपु किं बहुना।'

आपके भाषणोपरान्त, श्री मणिलालजी महाराज ने कहा कि—'बहुत-से स्थानों मे आषाढ महीने से पहिले ही वर्षा शुरु हो जाती है और देर से चातुर्मास करने में, साधुओं को पाप भी खूब लगता है। इसी लिये पुराने महापुरुषों ने कहा है, कि इस चातुर्मास में जो एक महीने का फेर पडता है, उसका निर्णय हो जाय, तो सरलता हो सकती है। इस सम्बन्ध मे किसी का विरोध न होना चाहिये। सूत्रों मे कहीं कहीं लेखकों (लेहियों) की भूल के कारण पाठान्तर भी दीखता है। इन सभी बातों का निर्णय हो जाना चाहिये।

इतने विवेचन के पश्चात, इस विषय के निर्णय के लिये एक कमेटी बना- गई और बहुमत से उसे सारी सत्ता दी गई। कमेटी मे, निम्न सदस्य चुने गये—

१—गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज
२—श्री मणिलालजी महाराज
३—शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
४—उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
५—युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज
६—मुनि श्री पन्नालालजी महाराज
७—मुनि श्री चतुरलालजी महाराज

कमेटी के मेम्बरों को— दूसरों से सहायता लेने की अनुमति है—

और निश्चय किया गया, कि यह समिति उ मियान किंवा एकाध वर्ष में अवश्य ही पू[illegible] है। चाहिये। जबतक निर्णय न हो, तबतक [illegible]

पुनश्च—इस सम्बन्ध मे, [illegible]

इसके पश्चात, उपाध्यायजी [illegible]

'पूज्य मुनिवरो! आज का [illegible] अत्यन्त आनन्द का विषय है। [illegible] शान्तिपूर्वक पूर्ण हुआ, यह बात [illegible] निर्णय न हो सके, तो दूसरा भी आधार केवल सामने दीखना ही नहीं है। इन्द्रिय ज्ञान ने जीतव्यवहार को भी [illegible]

इस के पश्चात, यह शंका होने [illegible] प्रतिनिधि मुनि-सम्मेलन में निश्चय हुआ। [illegible]

श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि–'कमेटी पर सारा भार रख दिया गया है। किन्तु सब सम्प्रदायों को यह बात स्वीकार करनी चाहिये कि यदि कमेटी में यह निर्णय हो गया, कि चातुर्मास एक मास पहले हो, तो वह भी स्वीकार होगा।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने फरमाया, कि–'एक संवत्सरी के लिये, चिरकाल से विचार-रणा चल रही है। अतः, अब अधिक समय न लेकर, कमेटी जो निर्णय करे, वह स्वीकार किया जाय यह मेरा नम्र अभिप्राय है और मेरे यह शब्द लिख लीजिये, कि यह कमेटी जो निर्णय करेगी, वह निर्णय संवत्सरी आदि पर्वों के लिये मुझे तो सब से पहले मंजूर है।

इसके बाद, सम्मेलन की सफलता के लिये आये हुए दो तार पढ़कर सुनाये गये और पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज द्वारा पेश किया हुआ एक प्रस्ताव भी पढ़कर सुनाया गया।

इतनी कार्यवाही के पश्चात्, बैठक का कार्य समाप्त किया गया।

° ° ° ° ° ° °

तीसरे दिन, ता० ७–४–३३ की कार्यवाही।

आज सवेरे ८ बजे से सम्मेलन की कार्यवाही पुनः प्रारम्भ हुई और सर्वानुमति से विषय-निर्वाचिनी समिति को, निम्न अधिकार दिये गये—

दूसरे दिन, जिन विषयों की चर्चा करनी हो उन विषयों का बहुमत से निर्णय करके दूसरे दिन सभा में सुना देना।

उपर्युक्त कमेटी को, आवश्यकतानुसार बुलाने की सत्ता, शांति रक्षक महानुभावों को सौंपी गई है।

विषय-निर्वाचिनी-समिति, भविष्य में कान्फ्रेंस के द्वारा निश्चित किये हुए विषयों के क्रम से ही कार्य चलाय।

पिछले दिन, विषय निर्वाचिनी-समिति में चर्चे हुए विषयों को ही सम्मेलन के सम्मुख लाना।

शान्तिरक्षक महानुभावों के अधिकार—

सम्मेलन के अधिवेशन में जो प्रतिनिधि बोलें वे शान्तिरक्षक महानुभावों की अनुमति से ही बोलें।

अधिवेशन में, किसी प्रतिनिधि को बोलने देना या नहीं बोलने देना तथा बोलते हुए रोक देना आदि समस्त अधिकार उन्हीं को सौंपे जाते हैं।

शारीरिक कारण के अतिरिक्त, यदि सभा से बाहर जाने की आवश्यकता हो, तो शान्ति रक्षक महानुभावों की अनुमति से जा सकते हैं।

अधिवेशन को समय परिवर्तन करने का अधिकार है।

अधिवेशन में या विषय निर्वाचनि समिति में, जो कोई अपना प्रस्ताव रखना चाहे, वे शान्ति-रक्षक महानुभावों के मार्फत ही रख सकते है।

उपर्युक्त अधिकार, सर्वानुमति से दिये गये हैं।

इसके पश्चात, मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने, अपना भाषण प्रारम्भ करते हुए कहा कि—

'पूज्य मुनिवरों! कल पक्खी-संवत्सरी निर्णय के लिये, जो समिति नियुक्त की गई है, उसके सम्बन्ध में अधिक स्पष्टीकरण हो, इसके लिए यह कह देना चाहता हूँ, कि आप लोग, मव्वाओ मुसावायाओ वेरमण' इस प्रतिज्ञा के धारक हैं, अर्थात् सत्यव्रत का नियम आपके लिये कायम है। कारण, कि साधु प्रतितिकारी है और इसी लिये उसकी सही नहीं ली जाती और गृहस्थो की ली जाती है। हम लोगो ने सर्वानुमति से पक्खी-संवत्सरी के निर्णय के लिये नियुक्त समिति को, इसकी सारी सत्ता सौंप दी है। यदि अब भी किसी के मन में शका हो, तो उसे प्रकट कर दें, अन्यथा जैन शासन की हँसी होने का भय है। अत अभी से विचार कर लीजियेगा, जिससे हम लोगो पर भी कोई जोखिमदारी न रहे।

'दूसरी बात यह है, कि हम लोगों को, अपनी इस सभा में, शब्द को अधिक न पकड़ते हुए, कार्यक्रम को आगे बढाना चाहिये। कारण कि, शब्दों के जाल में पडकर, केवल मगजपच्ची ही होती है, काम नहीं। चलते २ हम लोगों के पैर तो थक चुके हैं, अब मगज बाकी रहा है, उसे अकारण ही न थक जाने देना चाहिये। अर्थात्, मैं यह चाहता हूँ कि सम्मेलन-कार्य शान्तिपूर्वक तथा प्रसन्नता से चलना चाहिये।'

आपके भाषणोपरान्त, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने फरमाया, कि—

'प्रस्ताव पास होने के बाद, उस बात को पुन विशेष स्पष्टीकरण के लिये स्थान देने में, मैं पक्खी संवत्सरी निर्णायक समिति के सदस्यों की उदारता की परिसीमा देखता हूँ। किन्तु यह बात सभा की कमजोरी प्रकट करती है। अत, सभी को अपने निर्णय पर दृढ रहना तथा समिति का निर्णय स्वीकार करना चाहिये।'

इतनी कार्यवाही के पश्चात्, १० बजे शान्तिरक्षक महानुभावों ने सभा समाप्त करने की सूचना दी।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही, समय २ बजे से ४ बजे तक।

श्री शतावधानीजी ने, स्तुति करने के पश्चात् कहा कि—

'मुनिवरों! आज का विषय संगठन का है और उसी पर पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने अपना प्रस्ताव रक्खा है। परन्तु आज उस विषय को स्थगित रखकर दीक्षा का विषय लेना उचित है।'

इसके बाद, इस सम्बन्ध में प्रान्तिक सम्मेलनों के प्रस्ताव सुनाये गये। उन पर चर्चा करते हुए युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने, दीक्षा की वय तथा योग्यता अभ्यास और जाति इस तरह चार भागों में बांटकर इस विषय की चर्चा करने का प्रस्ताव रक्खा एवं अपनी सम्मति प्रकट की, कि माता-

पिता की आज्ञा के बिना १८ वर्ष से कम आयुवाला बालक दीक्षा न ले सके। परन्तु अभिभावकों की आज्ञा से तो आठ वर्ष का बालक भी दीक्षा ले सकता है।

इस सम्बन्ध में, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने बतलाया, कि दीक्षा की अवस्था के लिए यह प्रस्ताव उपस्थित हुआ है, इस सम्बन्ध में मेरा कथन यह है कि आगम से मिलती हुई बात का हम सब से पहले अनुसरण करना चाहिये। परन्तु, आठ वर्ष जैसी छोटी उमर के बालकों की दीक्षा के लिए तो आज्ञा लेनी और १८ वर्ष के उम्मीदवारों के अभिभावकों से पूछा भी न जावे, यह कहना उचित नहीं है। कारण कि 'साहम्मियाणं अदत्तं न गिन्हिज्जा' अर्थात्, साधर्मियों का अदत्त नहीं लेना चाहिए। व्यावहारिक-कानून, भले ही १८ वर्ष की आयु वाले को स्वतन्त्रता देता हो, पर साधु को तो हकदार से आज्ञा ले ही लेनी चाहिये। अन्यथा सम्प्रदाय की अव्यवस्था हो जायगी। देखो आज मन्दिरमार्गियों की क्या दशा है? हम, आज किसी को बहका कर या फुसला कर दीक्षा दे दें अथवा वेष पहराने की क्रिया दूसरी आदि बातों के साथ खाने पीने की चेष्टा करवा दें, तो मेरी मान्यता के अनुसार, तीसरे महाव्रत का खण्डन हो जायगा। खुद मालिक के होते हुए वारिस का भगड़ा क्यों लगाया जावे, यह मान्यता ठीक नहीं है। दांत खोदने का तिनका भी, उसके मालिक की आज्ञा के बिना न लेना चाहिये। ऐसी वीतराग की आज्ञा है। अतः अभिभावक की आज्ञा के बिना, दीक्षा कदापि न देनी चाहिये। वय के विषय में भी, प्रत्येक बालक को भावी हेमचन्द्राचार्य मानकर, दीक्षा नहीं दे सकते। इस लिये मेरी मान्यता के अनुसार तो मध्यम-मार्ग निकाल लेना चाहिये। शास्त्र की तरफ देखने पर तो आठ वर्ष के बालक को भी दीक्षा देने को फरमाया है। यह बात भी विचार करने योग्य है। उदाहरण के तौर पर मान लीजिये कि एक बाप दीक्षा ले रहा हो और उसके एक छोटा-सा पुत्र हो, जिसका कोई दूसरा वारिस न हो तथा बालक में योग्यता हो तो ऐसे समय क्या किया जाव? साध्वी को भी साधु की नेश्राय में दीक्षा लेने को कहा है। किन्तु यह तो आपत्ति मार्ग है। इस लिये शास्त्र के साथ ही देशकाल रखने की भी आवश्यकता है। विशेषतः तो संघ की प्रसन्नता से ही किसी को दीक्षित करना चाहिये। इस बार में मुझे स्पष्टरूप से यह बात कह देनी चाहिये कि सम्प्रदायों पर, आज निरंकुशता है। भले ही किसी ने आचार्य की चादर ओढ़ी हो किन्तु उसके शिष्य पर भी उसकी सत्ता नहीं चलती। गुरु की इच्छा हो या न हो किन्तु चेले की इच्छा होने पर, वह अपने शिष्य बनाने के काम में जरा भी नहीं रुकता। अतः इस सम्बन्ध में भी विचार करना आवश्यक है।

आपके भाषणोपरान्त उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा—

महाशयो! यह प्रस्ताव आप लोगों ने सुन लिया है। अब प्रश्न यह है, कि जब आठ वर्ष के बालक को भी दीक्षा देने का शास्त्र में विधान है, तो फिर शंका की क्या बात है? इसका उत्तर यही है, कि देशकाल का अनुसरण करना चाहिये। मेरा मन्तव्य यह है कि शास्त्र को बाधा न पहुँचे, उस तरह से इस विषय की चर्चा करनी चाहिये। मार्ग दो हैं। एक उत्सर्ग और दूसरा अपवाद। अतः इसके अनुसार, उत्सर्ग मार्ग में सोलह वर्ष के ऊपर आयु वाले को तथा अपवाद में तो इससे कम आयु वाले को भी दीक्षा दी जा सकती है। यद्यपि, छोटी आयु वाले को दीक्षा देने से क्या २ परिणाम होते हैं, इसका स्वयं मुझे ही काफी अनुभव है तथापि सम्मुच्चय देशकाल को देखते हुए कम से कम सोलह वर्ष की अवस्था व्यावहारिक दृष्टि से उचित कही जा सकती है।

तदन्तर श्री मणिलालजी महाराज ने फरमाया, कि इस देश की तो मुझे खबर नहीं है, किन्तु गुजरात और काठियावाड़ में तो मन्दिरमार्गियों के लिये छोटी अवस्था में दीक्षा देने के अनेक झगड़े चल रहे हैं। वडौदा की कोर्ट में तो इस आशय का फैसला भी हो चुका है, कि सोलह वर्ष से कम आयु वाले को दीक्षा दी ही नहीं जा सकती। इस लिये, मेरा मन्तव्य भी यही है, कि देशकालानुसार, सोलह वर्ष से कम आयु तो नहीं होनी चाहिये।

श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने कहा, कि श्री ताराचन्द्रजी महाराज तथा श्री नानचन्द्रजी म० एव श्री कजोडीमलजी महाराज की तरफ से मुझे बतलाया गया है, कि आठ वर्ष और १० वर्ष वाले बच्चों को दीक्षा देने के सम्बन्ध में, बहुत से विवाद हैं। किन्तु यदि विद्याभ्यास के लिये कोई योजना हो जाय, तो उस जगह रहकर वह बालक शिक्षा तथा योग्यता प्राप्त करे और योग्य आयु होने पर दीक्षा ग्रहण कर सके।

श्री जवाहिरलालजी महाराज ने बतलाया, कि इस तरह की संस्था आज न होने से, ऐसा हो सकना तो असम्भव सा है।

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने फरमाया, कि ऋषि-सम्प्रदाय के सम्मेलन में प्रस्ताव पास हुआ है, कि ११ वर्ष से नीचे की आयु वाले को दीक्षा न दी जाय। साथ ही, यह भी तय हुआ है, कि उम्मीदवार के अभिभावक एवं श्रीसघ की आज्ञा अवश्य ली जानी चाहिये। बचपन की दीक्षा न होनी चाहिये, इसे भी एकान्तरूप से न मान लेना चाहिये। कारण, कि बहुत से मुनि बालवय की दीक्षा से उन्नत अवस्था में पहुचे हैं, इसके प्रमाण मौजूद हैं। इसके विपरीत बड़ी आयु की दीक्षा के, अनेक असन्तोषप्रद-उदाहरण भी मिलते हैं। इस लिये एकान्त छोटी आयु की दीक्षा ही अच्छी होती है, ऐसा एकान्तिक मेरा कथन नहीं है। और यही कारण है, कि इस सम्बन्ध में खूब विचार करने की आवश्यकता है।

आपके बाद, कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि—दीक्षा की आयु के सम्बन्ध में यह बात है, कि हमारी और दूसरी अनेक सम्प्रदायों ने तो १६ वर्ष की आयु को ही देशकालानुसार उचित माना है। किन्तु मैं तो आयु की अपेक्षा योग्यता को प्रथम स्थान देता हूँ। पहले योग्यता तब आयु, इस बात का बड़ा सम्बन्ध है। बहुत से छोटी आयु में दीक्षित होकर भी रत्न जैसे होते हैं, जब कि अनेक ३० और ४० की आयु वाले होने पर भी निरे मूर्ख और बैल की तरह देखे जाते हैं। जब, कि एक श्रावक शिक्षित तथा कुशल होता है, तब उसी के सामने तरणतारण नाव के सदृश मुनिराज को कुछ भी अक्ल नहीं होती। आज योग्यता के अभाव के कारण ही, १००० मुनिराजों के होने पर भी समाज की कितनी अवनति है? आज का शिक्षित समाज, मुनिराजों के प्रति, अपने हृदय में कितनी इज्जत रखता है? साधु ४ महीने की तपस्या करे, तो भले ही हजारों मनुष्य वन्दना करने के लिये आवें। मुनिराजों! साधु क्या है? कितनी शक्ति का धारण करने वाला मनुष्य साधु हो सकता है? इस बात पर भी कभी विचार किया है? पूज्यपादों! आज मेरे यह शब्द कठिन लगते होंगे और कोई मानने को तो क्या, सुनने को भी तैयार न होंगे। लेकिन, मैं इसके लिये क्षमा चाहता हूँ। आज, समाज को आदर्श मुनियों की जरूरत है। इस लिये नूतन प्रवाह पर लक्ष्य दो और पहले हुए मुनिराजों के लिये भी आदर्श उपस्थित हो, इसके लिये शिक्षा आदि की व्यवस्था कराओ। हमारे यहा विराजमान पूज्य महाराज कहते हैं

कि शास्त्र देखो, शास्त्र में दीक्षा की आयु ८ वर्ष की कही है। लेकिन शास्त्रों में तो बहुत कुछ कहा है, ज्ञान के लिये भी कहा है। साधु होने से पूर्व, साधना करने की जरूरत है। संसार असार है, इसमें कुछ भी सार नहीं है इस तरह तोते की भांति वैरागी को कुछ बातें रटा देने से ही ज्ञान नहीं पैदा हो जाता। प्रथम 'सवरा' फिर 'नाणे सब 'विन्नाण'। विन्नाण शब्द का अर्थ क्या है, यह कोई बतला सकता है? विराजित पूज्यपादों! मुनिवरों! पहले योग्यता को देखो और इसके लिये नियमों की रचना करो। जिसमें सम्यक्त्व ही न हो, वह साधु कैसे हो सकता है? आज की समकित तो यही है न, 'मैं तेरा गुरु और तू मेरा चेला'। इसी से, समाज की व्यवस्था तथा संघ व्यवस्था कितनी निर्बल हो गई है। अतः इस तरफ लक्ष्य दो।

इसी समय, युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने फरमाया, कि यदि एक आचार्य हो जाय, तो यह सब झगड़े मिट जायें।

यह सुनकर, गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने जो कुछ कहा है उसके सम्बन्ध में मैं यह पूछना चाहता हूँ कि कार्य एक व्यक्ति से अच्छा होता है या ऐक्य से? आचार्य की योजना करने से पूर्व, परस्पर ऐक्य की साधना करो और दीक्षा की योग्यता अयोग्यता का निश्चय करो।

तत्पश्चात् पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने फरमाया कि मैं क्या बोलूं? इस समय, मैं व्यवहार के लिये बोलने उठा हूँ। निश्चय रूप से यदि हम लोग 'विज्ञान' शब्द पर विचार करेंगे तो समय नष्ट होगा और वह वस्तु स्थिति केवल कल्पना में ही रह जायगी। मैं तो यही जानना चाहता हूँ कि इस रोग की दवा क्या है? मन्दिरमार्गियों के झगड़े देखकर, हम लोगों को, दीक्षा के प्रश्न पर खूब विचार करना उचित है। मुनिवरों, यह कष्टदायक बात है। समाज का रोग असाध्य है। इस समय, वैद्य का केवल एक ही कर्तव्य है और वह यह कि रोगी को औषधि दे। इस लिए रचनात्मक-कार्य होना चाहिये। तेरहपन्थी मुझे अपना विरोधी समझते हैं। फिर भी गुण की दृष्टि से मैंने उनसे यही पाया, कि उनके साधुओं किंवा श्रावकों में जरा भी फूट नहीं है। भीतर ही भीतर, भले ही साधारण-मतभेद हों, लेकिन बाहर तो सुन्दर ही दीख पड़ता है। उनके संघ की कोई भी बात बाहर नहीं जाने पाती। मैं तो उनका यह गुण ही लेना चाहता हूँ। इसलिये, यदि एक आचार्य होने जैसी संगठन की योजना का रचनात्मक-रूप मिले तो इन सभी बातों को उचित न्याय प्राप्त हो सकेगा।

तत्पश्चात् मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने फरमाया, कि जिस शासन की विजयपताका चारों दिशाओं में फहराती थी, वही शासन आज कितना संकुचित हो गया है। जो यागीश्वर मुनि तपस्वीराज अन्य स्थानों पर भी अपने प्रभाव से दिग्विजय करते थे, उन्हीं के उत्तराधिकारी मुनिराजों का, आज अपने ही समाज में कैसा प्रभाव पड़ गया है इसे आप लोग स्वयं विचार सकते हैं। गुरु देवों! इसका मुख्य कारण यह है कि दीक्षा की योग्यता अयोग्यता नहीं देखी जाती। और योग्यता न देखने के कारण शिष्यलिप्सा है। जब मुनि समाज में शिष्य-लालसा इतना गम्भीर रूप पकड़ेगी, तब व्यवस्था रह ही कैसे सकती है और व्यवस्था के अभाव में, योग्यायोग्य का निर्णय नहीं हो सकता जिससे संघ भेद का पोषण चलि पड़ता है। उत्तराध्ययन सूत्र का २८ वां अध्ययन सम्यक्त्व-पराक्रम

का है। उसमें एक प्रश्न यह भी है, कि–'भन्ते! सहाय पच्चक्खाणेण जीवे भन्ते! किं जणयई।' अर्थात शिष्य के प्रत्याख्यान का यह कारण है। यह प्रश्न रखने की आवश्यकता ही तब पड़ती है, जब साहय्य–लिप्सा की वृद्धि होती है और जब उस वस्तु की वृद्धि हो, तो फिर नियम तो रह ही कैसे सकते हैं? हम लोगो को पुन २ यही विचार करना चाहिये, कि यह दीक्षा की योग्यता का प्रश्न सामान्य नहीं है। यह भावी समाज की बुनियाद का पाया है। यह पाया जितना ही सुन्दर तथा मजबूत होगा, उतनी ही समाज की व्यवस्था परिपक्व एवं दृढ बनेगी। सक्षेपु किं बहुना। मुझे स्वय अनुभव है, कि जिन गुरुओं को शिष्य की लालसा नहीं है, वे कैसे आदर्श मुनि बना सकते हैं और निःस्पृहता पूर्वक अपना तथा दूसरे का हित साधने में किस तरह तत्पर रह सकते हैं। यह बात हृदय की उदारता एवं विचार की है और इसी पर सघ–शान्ति तथा संघ-श्रेय का आधार है। पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के फरमाने के अनुसार, सचमुच ही यह असाध्य रोग है। इस लिये, अब वैद्य बनकर, समाजरूपी शरीर की योग्य-चिकित्सा करनी तथा निदान के अनुकुल औषधि भी उसे देनी चाहिये।

आपके भाषणोपरान्त, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया, कि—दीक्षा की योग्यता एवं वय विचार के सम्बन्ध में, भिन्न २ मुनिवरो ने, सुन्दर विवेचन किया है। बात भलिभांति समझ ली गई है। अब, रचनात्मक रीति से इस प्रश्न का निर्णय कर लेना चाहिये। यद्यपि, शास्त्रानुसार तो ८ वर्ष के बालक को भी दीक्षा देने में कोई बाधा नहीं है। तथापि, शास्त्र मे दो मार्ग कहे गये हैं। एक उत्सर्ग और दूसरा अपवाद। इस तरफ भी निगाह डालने की जरूरत है। देशकाल को भी देखने का शास्त्र में फरमान है। आज ८ वर्ष के बालक को दीक्षा देने के बाद, लोच तथा काया–क्लेशादि तपश्चर्या में कितनी और किस २ प्रकार की बाधाएँ उपस्थित होती हैं, इसका हम लोगों को अनुभव है। रोगी हो तो भी दीक्षा दे दी जाती है, बच्चा हो तब भी दे दी जाती है और यह सब केवल शिष्य लालसा से ही किया जाता है, यह कहने में क्या शंका हो सकती है? यह सब होंने से, शिष्यों को परम्परा तो चलती है। परन्तु रत्न नहीं तैयार होते। अत मेरे अभिप्रायानुसार, प्रत्येक प्रान्त में, दीक्षा परीक्षक-समिति नियुक्त की जानी चाहिये। साराश यह, कि आयु के लिये, उत्सर्ग-मार्ग में १६ और अपवाद मार्ग मे, उससे छोटी आयु वाले को भी दीक्षा दी जा सके, इस तरह की व्यवस्था बननी चाहिये।

श्री मणिलालजी महाराज ने, उपरोक्त कथन का अनुमोदन किया।

तत्पश्चात्, प्रस्ताव का कच्चा स्वरूप बनाया गया और ४ बज जाने के कारण, इस प्रश्न पर दूसरे दिन वादविवाद करने के निश्चय के साथ, सभा समाप्त हुई।

* * * * * * *

ता० ८–४–३३ की कार्यवाही।

सवेरे, ८॥ बजे से सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। मगलाचरण के पश्चात् उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज का यह सन्देश पढकर सुनाया—

'मेरी चित्तवृत्ति अशान्त होने से, मेरी तरफ से, मेरी जिम्मेवारी पर, मेरे आज्ञावर्ती मुनि हर्षचन्द्रजी को भेजा है। द० पूज्य जवाहिर का।"

इसे सुनकर, प्रतिनिधि मण्डल में यह चर्चा हुई, कि इस पत्र में तिथि तथा शाम्मिरचन्द का नाम नहीं है, इस लिये ये दोनों चीजें इसमें शामिल होनी चाहिये।

कवि श्री नानचन्द्रजी महाराज, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज के पास गये और उनसे खुलासा ले आये। इसके बाद सम्मेलन की कार्यवाही प्रारम्भ हुई। मुनि-सम्मेलन समिति के नाम आया हुआ, एक प्रतिष्ठित गृहस्थ का पत्र पढ़कर सुनाया गया। उस पत्र का सारांश यह था, कि समाज की स्थिति छिन्न-भिन्न है, धर्म-भावना घटती जा रही है शिक्षित वर्ग का साधुसंघ के प्रति आदर कम होता जाता है और धर्म जैसी उत्तम वस्तु का ह्रास हो रहा है। इसी स्थिति का विचार कर आप पूज्य मुनिराज कष्ट उठाकर यहां पधारे हैं। आपके तपोबल एवं ज्ञानबल से शास्त्र और समय का विचार करके तथा सहयोग की भावना से, संगठन की शक्ति पैदा करके, जैनज्योति का विस्तार कीजियेगा। जैन सिद्धान्त के पारदर्शी बनकर, तथा सादी शैली में साहित्य की रचना करके जैन एवं जैनेतरों में उसका प्रचार करने के लिये उद्यत हो जाइयेगा। क्रिश्चियन जाति का अनुकरण करके, चारों तरफ जैनसंघ की वृद्धि करने का प्रयत्न कीजियेगा। वाड़ों को भी तोड़ियेगा। साधुओं के वाड़े टूटने पर, श्रावकों के वाड़े भी टूट जायेंगे। छोटे २ भेदों को भूल जाइयेगा। दीक्षा के लिये, आदर्श-नियम बनाइयेगा। शिथिलाचार, अज्ञान दशा आदि का मूल मर्दन करके, साधु-सम्मेलन को सफल बनाइयेगा। यही आशा रखता हुआ आप सब को वन्दन करके, मैं अपनी प्रार्थना समाप्त करता हूँ।

आज की सभा का कार्यक्रम, कारणवशात् शिथिल चलता देखकर, पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने फरमाया, कि हे मुनिवरों! दूर २ देशों से कष्ट उठाकर यहाँ आने का उद्देश आप सभी जानते हैं। गृहस्थ लोग, अपना सम्मेलन, दो-तीन दिन में ही सफल कर लेते हैं। इसके विरुद्ध हम लोगों को आज चौथा दिन है, फिर भी हम लोगों का कार्य बहुत थोड़ा हो सका है। हमें समय का मूल्य समझना चाहिये। मुझे बड़ा खेद है कि आज बहुतसा समय व्यर्थ हो गया।

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने, समाधान करते हुए फरमाया कि वातावरण की शुद्धि के लिये यदि समय लग गे, तो वह अनुचित नहीं है। हां यह अवश्य है कि कार्य व्यवस्थित होना चाहिये।

श्री चौथमलजी महाराज ने फरमाया कि प्रतिनिधि सभा का भी कोरम हो जाना चाहिये। ताकि यदि कोई प्रतिनिधि उपस्थित न हो सके, तो भी कार्य चलता रहे।

आपकी इस बात को सब ने पसन्द किया और काम प्रारम्भ कर दिया गया।

श्री शतावधानीजी ने फरमाया कि दीक्षा का विषय कुछ अधूरा रह गया है अतः आज उसकी चर्चा होनी चाहिये। कल उत्सर्ग और अपवाद इन दो दिशाओं (मार्गों) का विचार हुआ था। बहुतों का मत यह है कि समाज में केवल एक ही मार्ग आना चाहिये अन्यथा नियम की रक्षा न हो सकेगी।

युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने कहा, कि छोटी आयु वाले वैरागी को, गुरुकुल में रख-कर, पहले शिक्षा देकर योग्य बना लिया जाय, तब दीक्षा दी जावे, तो फिर अपवाद की आवश्यकता ही न रहे।

श्री पन्नालालजी महाराज ने, इस बात का अनुमोदन किया और कहा, कि गुरुकुल मे प्रविष्ट हो जाने के बाद, उस वैरागी को बहका कर, कोई अपने पक्ष मे न ले।

श्री समर्थमलजी महाराज ने कहा, कि अपवाद मार्ग भी रहना चाहिये। जिससे शास्त्रीय-नियम को भी बाधा न पहुचे। हा, छोटी आयु के वैरागी की योग्यता की परीक्षा आचार्य स्वयं लें।

श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि इस विषय में काफी चर्चा हो चुकी है। इसमें शास्त्र की आज्ञा का कहा खण्डन होता है, यह समझ में नहीं आया। भगवती सूत्र के, सातवें शतक मे, दो प्रकार की क्रिया वाले बतलाये हैं। एक तो इरियावही और दूसर सांपरायिक। इरियावही क्रिया वाले तो यथा-तथ्य आगमव्यवहार को ही स्वीकार करते हैं और सांपरायिक क्रिया वाले के लिये पांच व्यवहार मे जितव्यवहार की भी आज्ञा है। अत द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव आदि को भी देखना चाहिये। राज्य भी, दो-तीन-सौ वर्षों के पश्चात् अपने कानून बदल डालता है, ठीक उसी तरह हमें भी अपने नियमों में, परिवर्तन करना चाहिये। आचार्य महाराज जब प्रायश्चित देते हैं, तब द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव का विचार करते हैं या नहीं? मुनिवरो! समय को पहचानो। आज वह समय आगया है, जब कि बालवय की दीक्षा ने गम्भीर रूप धारण कर लिया है और इसी लिये शास्त्र के सन्मुख राज्य-सत्ता को खड़ा होना पडा है और वह विवश होकर, बीस वर्ष से कम आयु वाले को दीक्षा न देने का प्रतिबन्ध लगा रही है। क्या यह बात विचारणीय नहीं है? गृहस्थ लाखों रुपये खर्च करके तुम्हारे सम्मेलन की सफलता देखने के लिये यहा उत्सुकतापूर्वक एकत्रित हो रहे हैं, कि मुनिराज शासन का उत्थान किस तरह और कैसा करते हैं। इस लिये आप लोग ऐसे कायदे कानून बनाइये जिनसे उन लोगों को भी सन्तोष हो जाय। मध्यस्थ-स्थिति के अनुसार, मुझे सौलह वर्ष की आयु बहुत उचित जान पड़ती है। इसमें हानि क्या है? दस वर्ष का वैरागी हों, तो वह भले ही छ वर्ष पढ़े, उसका वैराग्य पक्का होगा। इस लिये अपवाद मार्ग को लाने की कोइ आवश्यकता नहीं। ऐवन्तीकुमार और अभी के हेमचन्द्राचार्य ने भले ही नौ वर्ष की आयु में दीक्षा ली हो, इनके उदाहरण से, कोई विधान नहीं बन जाता है। इस लिये अब चर्चा में समय नष्ट न करके, जैन शासन की उन्नति करो तथा ऐसे अच्छे-शिष्य बनाओ, जो समाज का उद्धार करें।

आपके बाद, श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने फरमाया, कि—बड़ी दीक्षाएँ सभी अच्छी ही होती हैं, यह बात नहीं है। इसी तरह छोटी आयु के सभी दीक्षित अच्छे होते हों, यह बात भी नहीं है। दीक्षा का विषय, पूर्व संस्कार पर आधार रखता है। बडी आयु वालों को दीक्षा देने में, जोखिम कम जान पडती है। यदि छोटी आयु में ही दीक्षा देने की आवश्यकता जान पडे, तो भी उस वैरागी को पूर्ण-रूपेण शिक्षा देने की आवश्यकता है।

श्री शतावधानीजी महाराज ने फरमाया कि, कि—कोई अपवाद रखने के इच्छुक हैं और कोई नहीं। अपवाद में, भय भी बहुत अधिक है। इसलिये, सौलह वर्ष की आयु उत्सर्ग मार्ग मे ही रखी जाय तो अच्छा है।

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि दीक्षा किस लिये दी जाती है? शिष्य बढ़ाने को या संयम पालने को? तीर्थंकर की आज्ञा तो माननी, परन्तु उसके अनुरूप आचरण कैसे हो? शिष्य की आयु के मामले में तो शास्त्र को सामने लाते हो, परन्तु कषायों की तरफ भी देखना है या नहीं? यदि, जैन धर्म की उन्नति के लिये शिष्य बनाये जाते हों, तो लोभ छोड़ दो। मुनि-सम्मेलन के प्रस्ताव की तरफ, आज दुनिया देख रही है। अब, कोई राज्य-शक्ति सामने खड़ी हो जायगी, तब क्या आप उसे शास्त्र बतलाओगे? इसलिये अभी विचार कर लेना अच्छा है।

युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने फरमाया, कि वैरागी, साधुओं के साथ फिरे, यह भी अच्छा नहीं है।

यह सुनकर श्री मदनलालजी महाराज ने कहा, कि वैरागी को प्रासुक भोजी बनाना और अपने साथ रखकर प्रकृति का अनुभव भी करना चाहिये।

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने कहा कि साधुओं को स्वयं यह चिन्तवन करना चाहिये, कि वैरागी भावी-मुनि है इस लिये इसे आदर्श बनाने की आवश्यकता है। रुपये देकर खरीदने आदि सावद्य-प्रवृत्तियों को, मुनियों को सर्वथा छोड़ देना चाहिये।

तत्पश्चात, मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने कहा, कि दीक्षा की आयु जो पहले ठहराई गई थी वही रक्खी जाय तब तो ठीक है, अन्यथा मेरा विरोध समझिये।

इसके बाद सभा दोपहर के लिये स्थगित कर दी गई।

○ ○ ○ ○ ○ ○ ○

दोपहर की कार्यवाही—

प्रारम्भ में उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा कि अनेक प्रतिनिधि मुनिवर यहां नहीं पधारे हैं, अतः हम लोगों को कोरम की व्यवस्था भी रखनी चाहिये।

वादविवाद के पश्चात, कोरम ६० प्रतिनिधियों का निश्चित हुआ और कार्य प्रारम्भ हुआ। इसी समय यह भी निश्चित हुआ कि यदि कोई सभासद बिना सूचना दिये आधा घण्टा देर से आवे तो बैठक में अपना मत नहीं दे सकेगा।

श्री मदनलालजी महाराज ने अधूरे रहे हुए दीक्षा के विषय के सम्बन्ध में कहा कि—पूज्य महाराज के कथनानुसार, जीतव्यवहार को मान्य करके, देशकालानुसार दीक्षा की आयु में फेरफार कर दिया जावे, तो यह शास्त्र विरुद्ध नहीं है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा कि मैं पांचों व्यवहारों को मानता हूँ। आगम और जीतव्यवहार, दोनों ही देखना चाहिये। क्षेत्र के सम्बन्ध में भी, हमारे पास इस सारे हिन्दुस्तान के मुनिराजों का मत है। इस लिये प्रमाण देखना ही चाहिये। हम लोगों को मन्दिरमार्गियों को देखकर, सावधान रहना चाहिये। किन्तु जो कुछ भी हो वह सब की सम्मति से होना चाहिये। फिर बृहत्-कल्पसूत्र

में लिखा है, कि आठ वर्ष से कम आयु वाले बालक को नहीं, परन्तु उससे अधिक आयु वाले को दीक्षा देनी चाहिये। यह, विधिवाद ठहरता है। तो क्या उस शास्त्र को, सरकार के भय के कारण हम लोग न मानें?

श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि पूज्य श्री ने जो फरमाया, वह ठीक है, लेकिन समय भी तो देखना चाहिये न? शास्त्र में तो, साधु के लिये, साध्वी का कांटा निकाल देना भी लिखा है। लेकिन क्या आज ऐसा होता है? महाराज! समय भी देखना चाहिये।

यह सुनकर एक मुनि बोले, कि यदि अपवाद रहे. तो संघाधीन किंवा गच्छाधिपति के अधीन रहना चाहिये।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि आज्ञा के विना दीक्षा दी जाती है, तभी ऐसे परिणाम उत्पन्न होते है। छोटी आयु की दीक्षा वास्तव में बाधक नहीं है। इस लिये, दीक्षा गुप्त रीति से कदापि न होनी चाहिये। मेरे अपने ही शिष्यों के लिये, जबतक आज्ञा में, आनाकानी रही, तबतक मैंने दीक्षा नही दी। ऐसे अवसरों पर कभी कभी स्थानीय-संघ पक्ष में हो जाते हैं, तो भी विचार करने की आवश्यकता है। सारांश यह, कि यह नियम शास्त्रानुसार है, इसलिये सर्वानुमति से ही पास होना चाहिये.

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि मुनियों की कोई भी क्रिया अथवा नियम ऐसा नहीं है, जो शास्त्र सम्मत न हो। इसलिये, प्रत्येक विषय में सर्वानुमति की बाधा पैदा ही होगी। अत, द्रव्य, क्षेत्र, काल, और भाव देखने की भी आवश्यकता है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि—मै, इन दोनो को समान रखकर कहता हूँ।

वादविवाद के पश्चात, यह विषय स्थगित कर दिया गया।

तत्पश्चात, शिक्षा-प्रबन्ध का विषय प्रारम्भ करते हुए, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा, कि पूज्य मुनिवरो! आपकी योग्यता एवं विचार शक्ति पर ही शासन का उद्धार अवलम्बित है। इसलिये, शिक्षा-प्रबन्ध के सम्बन्ध में आचारांग, नन्दी, सस्कृत, हिन्दी आदि का अभ्यास प्रत्येक मुनि को होना ही चाहिये। स्थविर मुनि के समक्ष, सिद्धान्तशाला की योजना होनी चाहिये। खरतरगच्छ की पटावली में एक जगह लिखा है, कि चौरासी गच्छ साथ २ थे। इसी के परिणामस्वरूप, उदयदेवसूरि, मल्लिदेवसूरि जैसे अच्छे आचार्य तैयार हो सके। शास्त्र में भी लिखा है, कि प्रथम संहिता, फिर अर्थपठन और तब हित बांचनी, इस तरह योग्यतानुसार विषय लेने चाहिएँ।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि यह विषय रमणीय है। किन्तु, सब का एक जगह रहना, यह आचार्य, उपाचार्य आदि के हिसाब से, जबतक सभी सम्प्रदाएँ संयुक्त न हो जायँ तब तक अशक्य है।

श्री आनन्दऋषिजी ने कहा, कि—सिद्धान्तशाला आवश्यक है और उसमें यथासम्भव संस्कृत या प्राकृत जैन-साहित्य ही रखना चाहिये।

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि भिन्न २ जगहो पर पण्डित रखकर, समाज का हजारों रुपया खर्च करवाने में, उन मुनियों को, जिन्होंने अपरिग्रहव्रत धारण कर रक्खा है, अवश्य ही

विचार करना चाहिये। सिद्धान्तशाला से, पण्डितों का खर्च कम होगा और, अध्यापन से मुनियों का ज्ञान दृढ़ होगा। प्रत्येक प्रान्त में, पृथक २ शालाओं की आवश्यकता है। उनके पाठ्यक्रम की योजना मैंने तैयार करली है, उसमें संशोधन करके, यह क्रम जारी रखना चाहिये। उसके बाद, मैं यह बतला देना चाहूँगा, कि पढ़ने वालों के लिये, परीक्षा की भी आवश्यकता है। अन्यथा यदि, कोई स्वयं ही अपने नाम के साथ पण्डित विशेषण लगा ले, तो उसे कौन रोक सकता है? सिद्धान्तशाला की योजना से ज्ञानवृद्धि होगी, ज्ञानवृद्धि से विचार उच्च होंगे, और साधु-संस्था सुव्यवस्थित तथा आदर्श बनेगी, ऐसी मेरी मान्यता है।

श्री शतावधानीजी ने, उपरोक्त कथन का अनुमोदन करते हुए कहा, कि—शास्त्र में भी विद्या की आवश्यकता खूब समझाई है। इसलिये, शिक्षा तथा व्याख्यान की योग्यता प्राप्त करने की बड़ी आवश्यकता है।

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने कहा, कि—यदि सिद्धान्तशाला की योजना बने, तो मेरे मुनिगण बारह संभोग मुझे रखकर अभ्यास करने को तैयार हैं। और उससे, हमारे समाज में ज्ञान की वृद्धि होगी, जिसे देखकर, मैं अपना अहोभाग्य मानूंगा।

अन्त में, पाठ्यक्रम तयार करना निश्चित हुआ।

तत्पश्चात्, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि लोकमान्य तिलक ने स्वराज्य की व्याख्या करते हुए बतलाया है, कि एक बुढ़िया ने, देवता को अपने वश करके, एक ही वरदान में, सातवीं मंज़िल पर, तीसरे पुत्र की स्त्री को, सोने की मटकी में छाछ करते हुए *मांगकर*, अपना अभीष्ट प्रकट कर दिया। ठीक-इसी तरह से, वर्धमान संघ की योजना में, सब बातें आजावेंगी और एक सत्ता के नीचे कार्य भी अच्छा होगा। आज, शतमुखी कार्य चल रहा है। मले ही, श्रद्धा-प्ररूपणा में अन्तर न हो, लेकिन स्पर्शना में बड़ा अन्तर है। हम लोगों में फूट बहुत ज्यादा है। अतः ऐक्य करने के निमित्त वर्धमान संघ की आवश्यकता मुझे जान पड़ती है। जो महापुरुष इससे सहमत हों वे करें। अनेक पत्थर की पुतलीरूप, अनेक वस्त्र की पुतली के सदृश और अनेक शक्कर की पुतली के रूप में पधारे होंगे। जो शक्कर की पुतली के रूप में पधारे होंगे वे सम्मिलित हो जावेंगे। हम लोगों को, शक्कर की पुतलीरूप होकर मिल जाना चाहिये। इसलिये, व्यर्थ ही समय न खोकर, सफलता प्राप्त करनी चाहिये, यही मेरी भावना है। वर्धमान संघ में दाखिल होने वाले को, पहले आलोचना करनी पड़ेगी तभी वे संघ में शामिल हो सकेंगे—करो प्रारम्भ।

समय होजाने के कारण, इसके बाद कार्य समाप्त कर दिया गया।

* * * * * *

पांचवें दिन, ता० ६–४–३३ की कार्यवाही।

सवेरे की बैठक

प्रारम्भ में मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की योजना सुन्दर है। किन्तु उसमें अनेक बातें विचारणीय हैं। इस बात को पीछे रही हुई भावना की जांच करने की भी आवश्यकता है। यदि वह सौम्य ही होतो वह स्थानकवासी समाज की उन्नति का पाचक

है। यह योजना तभी पूरी हो सकती है, जब हृदय मे विशाल भावना हो। जो शास्त्र सम्मत शब्द है, उस शास्त्रसम्मत का निर्णय कौन करे? इसके अतिरिक्त, अनेक देश सम्बन्धी भी भेद हैं, उनका भी पहले विचार करना होगा। फिर आचार्य, उपाध्याय, उपाचार्य एक हो जाने से, गुरु शिष्य को अलग भी होना पडेगा। जब इतनी तैयारी हो जाय, तभी कार्य होना सम्भव है। अपना सम्मेलन, प्रेम और सगठन के लिये है। इसलिये हमें पहले ही एक बात पर विचार करना चाहिये। ट्रेन में मिले हुए सद्गृहस्थ, भिन्न २ जाति के होने पर भी परस्पर सम्भोग रखते हैं। हम लोगों को तो नमस्कार करते भी संभोग बीच में बाधक होता है। ऐसी स्थिति में, एक आचार्य की नेश्राय मे, रहना अशक्य मालूम होता है। और फिर आचार्य भी कैसा होना चाहिये? भगवतीसूत्र में लिखा है, कि आचार्य आदेय नाम कर्म का धनी, प्रभावशाला, नम्र और शान्ति स्वरूप होना चाहिये। किन्तु हम लोगो के समुदाय में आज ऐसा एक भी व्यक्ति दृष्टिगोचर नहीं होता। महात्मा-गाधीजी का कितना आदेय नामकर्म है। नाम सुनते ही और उनकी आवाज निकलते ही, आज भारतवर्ष तो क्या, अमेरिका आदि देश भी उसे ग्रहण करने को उत्सुक रहते हैं। जिस तरह १००० योजन का सर्प दूर से ही खींच लेता है, उसी तरह आचार्य का बल एव आकर्षण ऐसा होना चाहिये, कि दूर के मनुष्य को भी आकर्षित कर सके। यदि ऐसा हो, तभी एक आचार्य होना सम्भव है।

यह सुनकर एक मुनि बोले, कि पहले क्षेत्र विशुद्धि करो, तब दूसरे काम होने सम्भव हैं। अत. सब से पहले समाचारी रूपी क्षेत्र विशुद्धि ही कर्त्तव्य है।

श्री शतावधानीजी ने कहा, कि—जो स्कीम पूज्य महाराज ने सभा के सन्मुख रक्खी है, मैं उसकी प्रस्तावना के रूप में, दूसरी स्कीम रखता हूँ। यह कहकर आपने कुछ श्लोक कहे और उनका अर्थ बतला कर, उन पर सुन्दर विवेचन किया। बीच २ में, केशी तथा गौतम की पारस्परिक उदारता दृष्टान्त के तौर पर कहकर, छोटे २ भेद किस तरह मिटें, इसके सम्बन्ध में प्रभावशाली विवेचन किया। आपने फरमाया, कि समाचारी दो प्रकार की बन सकती है! मध्यम या जघन्य। यदि कोई उत्कृष्ट पाले तो भी उसे अभिमान न करना चाहिये। बल्कि गुण-गम्भीर बनना चाहिये, ताकि दूसरों के आदर्शरूप एव धन्यवाद के पात्र बनें। ऐक्य होने से, एक दूसरे के (संघर्षण) संसर्ग में, आने से, प्रेम की वृद्धि होगी। श्रावकों की क्रिया भी, जो भिन्न २ है उसमें समानता लाने की आवश्यकता है। ऐसा होने पर, गच्छ-भेदादि भी दूर हो जावेंगे—इत्यादि।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि शतावधानीजी ने, विस्तृत-व्याख्यान करके अपनी विद्वत्ता का परिचय दिया है। यह शान्ति और सन्तोष का कारण है। परन्तु उनके कथन में, किसी स्थल पर स्याद्वाद शैली का विधान होना चाहिये। हां, यह ठीक है, कि कषाय से संसारवृद्धि होती है। परन्तु कषाय से गच्छ के टुकड़े हुए हैं, यह सर्वथा सहमत होने योग्य बात नहीं है। उदाहरण के तौर पर तेरहपन्थियों का भेद क्रिया को लेकर ही हुआ है। अब हम लोगों को एक होना है, उसी के लिये यह योजना है। इस पर पूर्णतया विचार कीजिये और योजना में उचित संशोधन कीजिये। जिसे इसका पालन करना होगा, वह इस योजना में सम्मिलित होगा। हृदय के परिवर्तन की बड़ी आवश्यकता है। जिसकी इच्छा होगी, वह वर्द्धमान सागर में डुबकी मारेगा। यदि सबकी सम्मति हो, तब तो इसे

स्वीकार कीजिये, नहीं तो समय का अपव्यय न होना चाहिये। ऐसी सुधारक समाचारी जो लौकिक और लोकोत्तर दोनों दृष्टि से देखकर तैयार होगी, उसे जो स्वीकार करें, वे उसमें सम्मिलित हों। भविष्य में एक आचार्य की नेश्राय में साधु-साध्वी आदि नये शिष्य हों। इस समय, सभी का अपने २ गच्छ का आग्रह है और यह स्वयं मुझे भी है। परन्तु, फिर न रहना चाहिये। अर्थात फिर कोई आग्रह न रहे। परन्तु इस बात के लिये तैयार कौन २ है ?

श्री शतावधानीजी महाराज ने कहा, कि एक शंका है। हम लोग एकता करना चाहते हैं। एकता के लिये एक ही संघ होना चाहिये। पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज कहते हैं, कि मतभेद तो रहेगा ही। जबरदस्ती कोई उसमें सम्मिलित नहीं हो सकता। किन्तु, वर्धमान संघ की स्थापना करके, हम लोग संसार को बतला सकेंगे। इसलिये परस्पर देखरेख तथा सत्ता के नीचे कार्य होना चाहिये। अन्यथा व्यवस्था न रहेगी। हम फूट से नहीं डरते। सरलता से सभी कार्य होने चाहिये।

इस तरह, वादविवाद के बाद भी कोई निर्णय न होता देखकर, श्री छगनलालजी महाराज ने कहा, कि पूज्य मुनिवरो ! मैं आपसे नम्र प्रार्थना करूंगा, कि हम लोगों के यहां आने का उद्देश्य क्या है ? हम लोग नाना प्रकार के कष्ट उठाकर, यहां आये क्यों हैं ? क्या इसी लिये कि यहाँ आचार्यजी, उपाध्यायजी, उपाध्यायजी युवराजजी आदि अनेक महापुरुषों के दर्शन होंगे और उनके व्याख्यान श्रवण करने को मिलेंगे ? बाहर श्रावक-श्राविकाओं के झुण्ड दर्शन के लिये उत्सुक खड़े हैं। वे लोग तो अपने मन में सोचते होंगे कि भीतर ये सब महापुरुष खूब कार्य कर रहे हैं। और यहां की यह दशा है कि आज पांच दिन व्यतीत हुए हैं, अबतक का सारा समय पिष्टपेषण में ही व्यय हुआ है। मेरा अन्तः-करण यह सब देखकर दुःखता है। इस लिये कृपा करके शीघ्र ही कार्य कीजिये।

इसके बाद, ऐक्य के प्रस्ताव के सम्बन्ध में मत लिये गये, तो तीस सम्प्रदाएँ इससे सहमत हुई।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि हम लोगों को संघ की स्थापना का पुनरुद्धार करना चाहिये।

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने, नाम के सम्बन्ध में शंका की, कि वर्धमान संघ तो चल ही रहा है, उसकी स्थापना कैसे हो सकती है ? इस लिये संघ का यथार्थ नाम रखना चाहिये।

अन्त में 'वर्धमान शासन संघ की स्थापना' का प्रस्ताव रक्खा गया जिसे अनुमोदन प्राप्त हुआ। प्रस्ताव यों था—

'भिन्न २ सम्प्रदायों का ऐक्य करके 'श्री वर्धमान शासन संघ' की स्थापना करनी चाहिये।

प्रस्तावक—पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज
अनुमोदक—युवाचार्य श्री काशीरामजी म. आदि अनेक मुनिराज

मुनि श्री सौभाग्यमलजी ने उद्घोषणा की, कि मुनिराजो ! आप लोग पूर्णरूपेण विचार करके तथा दीर्घदृष्टि से खयाल करके, प्रस्ताव का अनुमोदन कीजियेगा। शिष्य, क्षेत्रबन्धन आदि सब कुछ छोड़ने की भावना आप लोगों में है न ? हम सब को छोड़कर, किसी अन्य जगह भी रह सकने में

शारीरिक, दैविक, अथवा कालिक आदि किसी भी प्रकार की बाधा तो आपको न होगी ? यदि इतनी तैयारी हो तभी अनुमोदन कीजियेगा।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने, उपरोक्त कथन का समर्थन किया और कहा, कि-हां पहले ही अपनी आन्तरिक-स्थिति जांच लेनी चाहिये, तब कोई कार्य करना उचित है।

यह सुनकर, अनेक मुनिराजो ने, अपनी पूर्णरूपेण सहमति प्रकट की।

समय अधिक होजाने के कारण, कार्य दोपहर के लिये स्थगित कर दिया गया।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही, समय १॥ से ४ बजे तक।

श्री शतावधानीजी ने स्तुति करने के बाद कहा, कि सबेरे जो योजना रक्खी गई है, वह विशिष्टतया स्पष्ट होनी चाहिये। जो जो सम्प्रदाएँ उस योजना से सहमत हो, वे अपनी २ स्वीकृति दें।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि-जो श्री वर्धमान शासन संघ में सम्मिलित होने के इच्छुक हो, उन्हें सम्मिलित होजाना चाहिये। हां, जो ऐक्य का द्वार रोकना चाहें, वे भले ही उससे भिन्न रहें।

यह सुनकर, श्री गणीजी महाराज ने फरमाया कि संगठन करना ही हम लोगों का उद्देश्य है और वह नियमावलि से होगा।

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज ने कहा, कि कार्य शनै २ ही होगा। सब से पहले तो पारस्परिक विश्वास एवं प्रेम उत्पन्न करने की आवश्यकता है। ताकि कार्य सुदृढ एव निश्चिन्त बने।

इसी तरह, बीच २ में अनेक चर्चाएँ होने के बाद मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि-शब्द २ पर टीकाएँ हुआ करती हैं। हम लोगों को शान्ति और प्रेमपूर्वक कार्य करना चाहिये। यदि कोई कार्य सर्वानुमति न हो सकता हो, तो उसे बहुमत से करना चाहिये। सब से पहले तो परस्पर सम्प्रदायों की फूट का नाश करना उचित है। हम सब लोग यहा ऐक्य एव शान्ति के लिये एकत्रित हुए हैं। इस लिये खुलकर बात करनी चाहिये, हृदय में रखकर नहीं।

श्री सौभाग्य मुनि ने कहा, कि-जो भी कार्य किया जावे, वह न्याय से एवं विचार पुरःसर करो। सवेरे संगठन सम्बन्धी जो प्रस्ताव पास हुआ है, उसमें से समाचारी आदि जो अंग बाकी रह गये हो उनका विचार करके, कार्य पूर्ण करना चाहिये।

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने कहा कि-सब से पहले समाचारी का विषय ही हाथ में लेना चाहिये।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया, कि हम लोग नवीन संघ नहीं बनाना चाहते बल्कि जो भिन्न २ हो रहा है उसे जोडना चाहते हैं।

श्री शतावधानीजी महाराज ने कहा, कि समाचारी और योजना दोनों ही का कमेटी के सम्मुख निर्णय हो जाय यह आवश्यक है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा कि—मेरा नम्र अभिप्राय यह है, कि श्री वर्धमान शासन संघ की अलग ही स्थापना होनी चाहिये। जिस तरह युद्ध की सेना में वही सैनिक बन सकता है, जो लड़ाई पर जाने के लिये तैयार हो, उसी तरह इस संघ में भी वही सम्मिलित हो सकेगा, जो इसके नियम का पालन करे।

गणिजी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि—यों नहीं, बल्कि पहले उसकी नियमावलि बनानी चाहिये। उसे सुनने के बाद ही प्रत्येक अपनी सम्मति ले, यह कुछ बुरा न होगा।

शतावधानीजी महाराज ने कहा, कि यदि पहले नम्बर की योजना पास न होती हो, तो यह दूसरी स्कीम मेरे पास है। मैं, उसे आप लोगों को सुनाता हूँ। पचास साधुओं और १०० साध्वियों का समूह जघन्य गण और यदि इससे अधिक संख्या हो, तो उत्कृष्ट गण कहलाता है। साधु यदि १५ से २० तक हों, तो वह कुल कहलाता है और कुलों के समूह को गण कहते हैं तथा गणों के समूह को मण्डल कहते हैं। कुल का अधिपति प्रवर्तक कहलाता है, गण का अधिपति गणाचार्य कहा जाता है और मण्डल का अधिपति मण्डलाचार्य कहलाता है। मण्डलाचार्य सब से ऊपर रहे। यह समर्थ, गीतार्थ और सर्वश्रेष्ठ होना चाहिये। इस पद के लिये तीन २ वर्ष के बाद चुनाव हो। श्रावकों को, उसी नाम की सम्मति दी जाय।

युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने कहा कि—अभी यदि इतना न हो सके, तो भिन्न २ छोटी २ सम्प्रदायें ज्यों की त्यों रहने देकर एक प्रधान आचार्य की नियुक्ति तो हो ही जानी चाहिये।

यह तीसरी योजना, सभी को पसन्द आई।

समय हो जाने के कारण, सभा समाप्त हुई।

* * * * * * *

छटे दिन ता० १० ४-३३ की कार्यवाही।

प्रातःकाल ८॥ बजे से ११ बजे तक

प्रारम्भ में, श्री शतावधानीजी महाराज ने वीर स्तुति की और फिर फरमाया, कि—पहले नम्बर की योजना सर्वोत्तम है। किन्तु क्षेत्र तैयार न होने के कारण उस प्रकार का बीज नहीं बोया जा सकता। यहां विराजमान मुनिराज शर्माशर्मी यदि पहली योजना स्वीकार कर लें, तो भी पालन तो कदापि नहीं कर सकेंगे। इसलिये सम्मेलन के दूसरे अधिवेशन तक यदि दूसरे नम्बर की योजना ही व्यवहार में आवे, तो भी अच्छा है।

मुनि श्री पृथ्वीचन्द्रजी महाराज ने कहा कि कल तीसरे नम्बर की योजना के लिये विचार प्रारम्भ हुआ था अतः आगे उसी पर विचार करना श्रेष्ठ है।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा—पूज्य मुनिवरो ! आप लोगों के सामने तीन स्कीमें हैं। इन तीनों में से, चाहे जो स्कीम निर्णीत हो जाय, इसमें पजाब-सम्प्रदाय को तो किसी भी तरह की बाधा नहीं है। किन्तु गण सम्बन्धी विचारो में, यदि गण छोटा हो और उसमें केवल चार पांच ही साधु हों, तथा जो दूसरी सम्प्रदाय से न मिल सकते हों, उन्हे अधिकार के बिना भी गण की संख्या मे ही गिना जावे। यदि गण की संख्या थोडे ही साधुओं से पूरी मानी जाय, तो अच्छा है।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि जिस तरह गुजरात तथा मारवाड़ में छोटी २ सम्प्रदाएँ मिल गई हैं, उसी तरह, यदि छोटी २ सम्प्रदाएँ अपने २ प्रान्त में एक दूसरे से मिल जायं, तो अधिक सरलता हो जाय।

गणि श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि जबतक परस्पर प्रेम न हो, तबतक भले ही छोटी २ सम्प्रदाएँ पृथक रहें। यदि, गण की बात निश्चित् होगी, तो उस गण से बाहर रहने से आपस में क्लेश उत्पन्न होगा और हमारा उद्देश्य सम्यक प्रकारेण सफल नहीं होगा। तथा यह कहने का मौका मिल जायगा, कि गुजरात, मारवाड़, पजाब आदि के मुनिवरों ने हमें दबाया, जिसके कारण हमने गण मे सम्मिलित होना स्वीकार कर लिया। ऐसा न होना चाहिये।

इस तरह, किसी भी कार्य का निश्चय न होते हुए, केवल चर्चा चलती देखकर, कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज ने कहा—मुनिवरो ! समदृष्टि जन जिस कार्य को एक घण्टे में पूरा करते हैं, उसे हम लोग आज छ दिन में भी पूरा नहीं कर सके। इसका कारण यह है, कि सब लोग अपनी २ इच्छानुसार कार्य करना पसन्द करते हैं। (उदयन और चण्डप्रद्योत का उदाहरण देते हुए बतलाया, कि) एक शिष्य ने, साधु-सस्था के विरुद्ध कार्य किया। इसके बदले उसके गुरु ने आत्मबलिदान दे दिया। यह क्यों ? सिर्फ इसलिये, कि शासन की अवहेलना न हो। हजारों मनुष्य, हम लोगों के चरणों की रज लेते हैं। इससे हम लोगों पर जितनी जवाबदारी आती है, उसे हम लोगों को सोचना चाहिये। यहां लगभग १५-२० हजार श्रावक आने वाले हैं और चार हजार तो आ भी गये। वे जब पूछेंगे तब क्या जवाब दीजियेगा ? यह कार्य करने का समय है, क्षण २ भर में बात को लौटिये पलटिये मत।

युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने भी इसका समर्थन किया।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा—हम लोगों को, समाचारी का प्रकरण सब से पहले हाथ में लेना चाहिये। समाचारी, चार प्रकार की कही हैं-(१) संयम समाचारी, (२) तप समाचारी (३) गण समाचारी, और (४) एकलबिहार समाचारी। गुरु, शिष्य को सब से पहले गण समाचारी का बोध देता है। गण का सम्बन्ध, बारह सम्भोगों से होता है। गण का सम्बन्ध, संघ के साथ भी होता है। इस बात की पुष्टि, आचाराग सूत्र से भी होती है। गण एकत्रित हो, तब यदि स्तमान्य समाचारी हो, तो बारह संभोग खुले रक्खे जाते हैं। कल्पना करो, कि यदि कोई गणभेद हो जाय तो तीन छोड़कर नौ हो सकते हैं। गणाचार्य तथा मण्डलाचार्य की व्यवस्था होने से, पारस्परिक निन्दा, ईर्ष्या आदि न होंगे और प्रेम की वृद्धि होगी। यदि दूसरी स्कीम पूरी होती न जान पड़े तो गण की स्थापना करके, तीसरी स्कीम व्यवहार में लानी चाहिये। किन्तु यदि कोई शिष्य दोषी हों, तो उन्हें निकालने का अधिकार मण्डलाचार्य को होना चाहिये। जो गणाचार्य हो उसकी सत्ता गण पर चलेगी। इस तरह की व्यवस्था

करने पर, ज्ञानधन की वृद्धि होगी। कुल के रूप में, आप गण में भी मिल सकते हैं। जिस तरह, श्री महावीर भगवान ने, ११ गण होने पर भी ९ गणों की स्थापना की थी। यदि परस्पर प्रेम होगा, तो पहली योजना पूर्ण हो सकेगी। इस लिये, शुद्ध हृदय से एवं विचार पूर्वक ही प्रत्येक कार्य करो।

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज ने कहा, कि यह स्वीकृति तो प्राय: हो ही चुकी है।

इसके पश्चात, पांच-सात सद्‌गृहस्थों के सन्देश सुनाये गये।

तदुपरान्त, समाचारी के सम्बन्ध में, निम्न सदस्यों की एक कमेटी चुनी गई—

१—मुनि श्री पन्नालालजी महाराज
२— „ हर्षचन्द्रजी „
३— „ मणिलालजी „
४— „ युवाचार्यश्री काशीरामजी महाराज
५— „ समरथमलजी महाराज
६—पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
७—युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी महाराज
८—पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी „
९—मुनि श्री सौभाग्यमलजी „
१०— „ चौथमलजी „
११—कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज
१२—पूज्य श्री जवाहिरलालजी „
१३—गणि श्री उदयचन्द्रजी „
१४—उपाध्याय श्री आत्मारामजी „
१५— श्री जुगनलालजी „
१६— „ चौथमलजी महाराज (मारवाड़ी)
१७— „ कुन्दनलालजी „
१८— „ मोगालालजी „
१९— „ समरथमलजी „

इतनी कार्यवाही के पश्चात् सभा दोपहर के लिये स्थगित कर दी गई।

दोपहर की कार्यवाही, समय १॥ बजे से ४ बजे तक

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा कि अब कार्य करने का समय हो गया है। इसी समय, शांति रक्षक महानुभावों से आज्ञा लेकर, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने, अपने एक साधु को, अपने पास लिखने के लिये रख लिया। तत्पश्चात, शतावधानी श्री रत्नचंद्रजी महाराज ने मंगलाचरण किया और सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ हुआ।

प्रारम्भ में, श्री० शतावधानीजी महाराज ने कहा, कि जो-जो महाराज अपनी समाचारी लाये हों वे सम्मेलन के सन्मुख प्रस्तुत करें॥

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि जो दो समाचारियां सबेरे पढ़ी गई हैं, उनमें से एक-एक बात लेकर यदि सम्मेलन में चर्चा की जावे तो शीघ्र निर्णय हो सकेगा। एक-एक बात में जो सहमत हों, वे हां करें। और यदि उन बातों के लिये भी कमेटी नियुक्त करनी हो, तो जैसी आप सब की इच्छा। इस मामले में मैं तटस्थ हूं।

पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज ने कहा, कि दोनों नियमावलि पढ़ी जावें और उनमें से जो बातें विवादास्पद हों उनके लिये भले ही कमेटी नियुक्त की जाय यह अधिक उचित होगा।

समाचारी के विषय प्रस्ता०-पू० श्री जवाहिरलालजी म०

(१) सवत्सरी पक्खी इत्यादि पर्व निर्णय के लिये जो कमेटी मुकर्रर की गई है, वह समिति, अपने बहुमत से जो निर्णय करे, उसे सब मान्य करें, यह ठहराया जाता है।

(२) चातुर्मासिक कल्प, मासिक कल्प इत्यादि विषयों की खूब चर्चा होने के बाद, शास्त्रसम्मत्यनुसार यह निर्णय हुआ, कि चातुर्मास व्यतीत हो जाने के बाद, मुनिराज यदि उसी जगह पुनः एक मास कल्प रहना चाहें, तो दो मास व्यतीत हो जाने के पश्चात, एक मास कल्प सुखेसमाधे रह सकते हैं। और दो चातुर्मास दूसरे क्षेत्र में व्यतीत करने के बाद तीसरा चातुर्मास भी उसी स्थान पर कर सकते हैं।

(क) चातुर्मास करने के बाद, शेषकाल कल्प में, जितने दिन जिस क्षेत्र में रहे हों, उनके अतिरिक्त मासकल्प में जितने दिन बाकी रहे हों, उतने दिन फिर आकर उसी क्षेत्र में रहा जा सकता है। और फिर यदि उसी क्षेत्र में, शेष रहे हुए दिनों से अधिक रहने की इच्छा हो तो दूने दिन दूसरे क्षेत्र में बिताकर, फिर वहीं रह सकते हैं।

(ख) जितने साधु चातुर्मास या शेषकाल में रहे हों, उन सब के कल्प के लिए उपरोक्त नियम अवश्य ही लागू होगा। कोई इसमें अपवाद न निकाल सकेगा, कि हम तो बड़ों के साथ थे, हमें बड़ों के कल्प के नियम लागू नहीं पड़ते-आदि इस तरह काम न चलाना होगा। किन्तु हां, जिन बड़े मुनिराज के साथ रहे हों, उनकी अपेक्षा दीक्षावृद्ध दूसरे साधुजी हों, तो उनके साथ रह सकते हैं।

(३) सवत्सरी आदि के प्रतिक्रमण कोई दो करते हैं और कोई सदैव एक ही करते हैं। कोई कायोत्सर्ग ४-१२-२०-४० लोगस्स का ध्यान करता है और कोई सदैव ४ का ही करता है तथा कोई ४-८-१२ लोगस्स का करता है। इस सम्बन्ध में भी खूब चर्चा चली। श्रावकों और साधुओं में, प्रतिक्रमण की क्रियाओं में भी फेर है। इन सब समस्याओं का जो निर्णय कमेटी कर दे, वह सर्वमान्य होगा।

नोट—यह प्रस्ताव पहले आया था, किन्तु मरुधर समिति, तथा पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय, पू० श्री ज्ञानचन्द्रजी म० की सम्प्रदाय और ऋषि सम्प्रदाय के मान्य न करने के कारण वापस ले लिया गया था। कारण कि, इस विषय में साधु-समिति, सर्वानुमति से प्रस्ताव पास करवाना चाहती थी। ताकि चारों तीर्थों में एकता हो और रहे।

(४) शय्यातरपिण्डनिर्णय। जब से मकान की आज्ञा ली जाय, तब से लगाकर, जबतक वह वापस न लौटाई जावे, तबतक उसके यहा से आहारादिक नहीं लेना चाहिये।

(५) शय्यातर का निर्णय। मकान का मालिक हो वह, या वह मकान पहले से ही जिसके सिपुर्द किया हो वह और यदि पचायती मकान हो तो उन पचों में से केवल एक ही शय्यातर गिना जाय।

(६) केले आदि पके फल लेने या नहीं? इस सम्बन्ध में उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज शतावधानीजी महाराज और पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज में परस्पर खूब चर्चा हुई। अन्त में

निर्णय हुआ, कि इस तथा अन्य सचित्ताचित्त वस्तुओं के सम्बन्ध में, कमेटी जो निर्णय कर दे, वह स्वीकार किया जाय।

इसके बाद सभा कार्य समाप्त हुआ।

० ० ० ० ० ० ०

सातवें दिन ता० ११–४–३३ को कार्यवाही।

सबेरे समय ८॥ से ११ बजे तक।

प्रारम्भ में मंगलाचरण हुआ और फिर सम्मेलन की कार्यवाही कल से आगे शुरु हुई—

(७) दर्शनार्थ आये हुए श्रावकों का आहारपानी कब लिया जाय।

निश्चित् हुआ कि साधुजी अपनी आ-ममाखी से, सदोष-निर्दोष का निर्णय करके, दर्शनार्थ आये हुए गृहस्थ से आहार पानी ले सकते हैं। इसमें, दिनों की कुछ भी मर्यादा न होगी।

(८) अपने साथ विहार में चलने वाले गृहस्थ से आहार पानी लिया जाय। यदि, कोई गृहस्थ अनायास ही आगया हो, तो उसकी बात अलग है।

(९) अ—दीक्षा के योग्य व्यक्ति देखकर ही, सम्प्रदाय के आचार्य, और यदि किसी सम्प्रदाय में आचार्य न हों, तो उस सम्प्रदाय के कार्यवाहक मुनि, श्रीसंघ की अनुमति से दीक्षा दे सकते हैं।

आ—दीक्षा लेने वाले की आयु उत्सर्ग मार्ग में सोलह वर्ष निश्चित की जाती है। अपवाद मार्ग का निर्णय श्री आचार्य और जिस सम्प्रदाय में आचार्य न हों उस सम्प्रदाय के कार्यवाहक मुनियों पर छोड़ा जाता है।

इ—अभ्यास के लिये, कम-से-कम श्रमण-प्रतिक्रमण तो आना ही चाहिये।

ई—जिन जातियों का आहार-पानी लिया जा सकता है वैसी उच्च-जाति का ही दीक्षा का उम्मीदवार होना चाहिये।

(इसी समय, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने ठाणांगसूत्र के चौथे ठाणे में आई हुई गणस्थिति और धर्म की चौभंगी कहके बतलाई तथा समय धर्म की ओर सब का लक्ष्य खींचा।)

(१०) सम्प्रदाय के आचार्य या कार्यवाहक आचारांग और निशीथसूत्र के ज्ञाता एवं देशकाल के जानकार को ही पृथक विचरने वाले (छोटे समुदाय) मुनियों के अग्रेसर बना सकते हैं। किन्तु वैयावच्च या अन्य कारणवश, इनके अलमिक्ष को भी छूट दी जा सकती है लेकिन वह भी आचार्य की आज्ञा से।

(११) विचरने में साधुजी कम-से-कम २ और साध्वी कम-से-कम ३ साथ रहनी चाहिये। अधिक से अधिक भी आचार्य स्थापना स्थविर ग्लान और विद्यार्थी के अतिरिक्त एक जगह पर पाँच से अधिक की संख्या में न रहें।

(आचार्य भी देशकाल को देखकर ही साधुजी को अपने पास रख सकेंगे।)

(१२) गोचरी-पानी आदि कारण के विना, गृहस्थ के घर में एकाकी मुनिराज न जायँ। स्थान से बाहर जाने की आवश्यकता पडने पर, अपने से वडों की आज्ञा लेकर जाना जाहिये।

(१३) दीक्षा के अवसर पर, दीक्षार्थी, अपने गुरु को इस प्रकार का प्रतिज्ञा पत्र लिखकर दे, कि में आपकी आज्ञा में ही सयम पालता हुआ रहूगा। आपकी आज्ञा के विना कोई कार्य न करूँगा। मेरे पास, शास्त्र, उपधि, पुस्तक इत्यादि सब चीजें, आचार्य की नेश्राक की हैं। इसलिये, जब तक में सम्प्रदाय और आपकी आज्ञा में रहूंगा, तभी तक मेरा उन पर अधिकार है।

इसके बाद दोपहर के लिये कार्य स्थगित कर दिया गया।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही

(१४) दीक्षा के अवसर पर, दीक्षा के उम्मीदवार को, कल्पानुसार जितने वस्त्र, पात्र, उपकरण इत्यादि लेने की आवश्यकता हो, उनसे अधिक उसके निमित्त न लिये जायं।

(१५) दीक्षा के अवसर पर श्रावक लोग अधिक आडम्बर करें, दीक्षोत्सव एक दिन से अधिक मनावें अथवा उसके निमित्त किंवा तपोत्सव लोचोत्सव या सवत्सरी के निमित्त अथवा साधुजी के दर्शन के लिये बुलाने की कुंकुमपत्रिकाएँ भेजें, तो साधुजी उपदेश द्वारा इन सब बातों को रोकने का प्रयत्न करे।

(१६) साधु लोग, रेशमी-वस्त्र उपयोग में न लें। जब तक मिले, शुद्ध-खादी ही और नहीं तो कम-से-कम स्वदेशी वस्त्र उपयोग में लें।

(१७) मुनि-वेश में रहकर, जिसने चौथे-व्रत का भग किया हो, ऐसा सप्रमाण सिद्ध हो जाने पर उसका वेश लेकर सम्प्रदाय से बाहर किया जा सकता है और दूसरी सम्प्रदाय वाले भी उसे दीक्षा न दे सकेंगे। हाँ, कदाचित यदि उसका मन चारित्र-मार्ग में स्थिर होजाय, तो प्रतीति होने के बाद साम्प्रदायिक-सघ की आज्ञा से, उसी सम्प्रदाय में वह दूसरी बार भी दीक्षित हो सकेगा।

(१८) यदि, किसी दूसरे गच्छ से कोई साधु-साध्वी आजाय, तो उसे समझा बुझाकर फिर उसी गच्छ में भेज देना चाहिये। और यदि उस गच्छ के मुखिया-मुनिजी की आज्ञा आजाय, तो योग्यता देख कर, यदि उचित समझा जाय तो अपनी सम्प्रदाय की मर्यादानुसार, अपने गच्छ में भी मिलाया जा सकता है।

(१९) सबल कारण के अतिरिक्त, दीक्षा छोडकर यदि कोई साधु-साध्वी चले जायँ और फिर लौटकर दीक्षा लेना चाहें तो सम्प्रदाय के मुख्य श्रावकों की अनुमति लेकर, तभी उन्हे दीक्षा दी जा सकती है। और अस्थिर दशा से, यदि दो बार ऐसा हो जाय, तो तीसरी बार तो किसी भी तरह दीक्षा न दी जानी चाहिये।

(२०) साधु-साध्वी, (विहार में) अपनी उपधि गृहस्थ से न उठवावें और न उनकी नेश्राय में ही रक्खें (और कहीं भिजवावें भी नहीं।)

(२१) मुनियों को, प्रकाशन कार्य से कोई सम्बन्ध न रखना चाहिये। इस कार्य को, कान्फरेन्स की उपसमिति को अपने हाथ में लेना चाहिये और पुस्तकों के क्रय-विक्रय के साथ उनका कोई सम्बन्ध न रहे, इसके लिये एक श्रावक-समिति बननी चाहिये। साहित्य भी खासतौर पर समायोपयोगी ही प्रकाशित हो, इसके लिये एक साहित्य परीक्षा-समिति स्थापित होनी चाहिये। यह विषय, साधु-समिति, श्रावक-सम्मेलन में चर्चने के लिए खासगी है।

इसके बाद कार्यवाही समाप्त हो गई।

* * * * * * *

आठवें दिन, ता० १२—४—३३ की कार्यवाही।

सवेरे, समय ८॥ से ११ बजे तक।

प्रारम्भ में प्रार्थना होने के पश्चात, समाचारी के सम्बन्ध में थोड़ी चर्चा हुई और फिर कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज ने अपना भाषण प्रारम्भ करते हुए कहा, कि—

समाचारी के बन्धारण का उद्देश, संयम के लिये है और वह अपने ही लिये है। और यदि यही बात है तो चाहे कितनी उत्कृष्ट-समाचारी स्वयं पालने की इच्छा हो, तो भी दूसरों के प्रति उनका प्रेम एवं मित्र भाव समान ही होना चाहिये। मध्यम समाचारी, सर्व साधारण है। उसमें, विवाद की कोई बात नहीं है। समाचारी चारित्र का साधन है और शास्त्रादिक ज्ञान के कारण हैं। जिस समाचारी या शास्त्रों से कषायों की वृद्धि हो, वे साधन शुद्ध नहीं कहे जा सकते। समकिती-जीव भी यदि एक पक्ष तक प्रबल कषायों का सेवन करे तो उसकी समकित चली जाय। समकिती पर श्रावक और श्रावक के ऊपर साधु, ये क्रम २ भूमि है। 'समयाए समणो होई, सव्वभूयप्पभूयस्स' इत्यादि वचन भी शास्त्र के ही हैं। ये यही बतलाते हैं, कि आचारविधि चारित्र की एकान्त-पुष्टि पर है। इसीलिये, उत्कृष्ट क्रिया पालने वाले भी अनेक पतित हो चुके हैं। सारांश यह कि मुनियों की प्रत्येक क्रिया हृदय की शुद्धिपूर्वक होनी चाहिये और हृदय की शुद्धि के लिये सद्विचार की आवश्यकता है तथा सद्विचार की प्राप्ति के लिये, ज्ञान की आवश्यकता है। इस प्रकार का ज्ञान सम्पादन करने के लिये मुनि लोग एकत्रित रह सकें, इसके लिये एक संस्था होनी ही चाहिये।

श्री शतावधानीजी ने फरमाया, कि समाचारी के एकीकरण के साथ हो सम्प्रदायों के गण और उन गणों के आचार्यों के मण्डल कायम किये जाने पर पारस्परिक संगठन का उत्तम कार्य हो सकेगा और इस प्रकार के संगठन से, भिन्न २ सम्प्रदायों के शास्त्राभ्यासक एवं प्रभावशाली-व्यक्ति साहित्य-प्रकाशन, प्रचार उपदेश और जैन धर्मियों की उत्तम भावनाओं को व्यक्त कर सकेंगे। आज आर्य समाज जैसी नई संस्था अपने धर्म का किस तरह से प्रचार कर रही है? वह किस तरह से उत्तम प्रचारकों को जन्म

दे रही है, इस तरफ दृष्टिपात करने के लिये ही आज विचार करना है। और आज का संगठन भी, अपने पूर्वजों के आदर्श को फिर लाने के लिये ही है।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने भी उपरोक्त कथन का अनुमोदन किया।

इसके बाद, गण की योजना के लिये निम्न नाम नोट किये गये—

	साधु संख्या	साध्वी संख्या
(१) पंजाब, पूज्य श्री मोहनलालजी महाराज	६१	७५
(२) (पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय) पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज	६७-६	
(३) पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज तथा कोटा सम्प्रदाय	५५	
(४) पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज तथा पूज्य श्री छगनलालजी महाराज	३२	६५
(५) मूलचन्दजी महाराज का परिवार काठियावाड़	४२	८४
(६) दरियापुरी सम्प्रदाय—	२२	६०
(७) कच्छ, मोटी पक्ष—	२२	३६
(८) मालवे का गण ?		
(९) पूज्य श्री जीवराजजी म० तथा भूधरजी महाराज	४१	२७५
(१०) मरुधर-श्रावक-समिति-गण।		

इसके बाद, समाचारी के जो नियम कल स्थगित कर दिये गये थे, वहीं से फिर कार्यवाही शुरू हुई—

(२२) साधु-साध्वी को, जब स्थिरवास रहने की आवश्यकता पड़े तब वे, आचार्य की आज्ञानुसार, जहां आचार्य बतलावें, वहां रहें। और आचार्य भी, जहां तक हो सके, वहां तक उनके लिये अलग २ क्षेत्र न रोकें

(२३) वैयावच्ची-मुनियों का भी, यथावसर परिवर्तन करते रहा करें।

(२४) प्रत्येक सम्प्रदाय के सभी साधु-साध्वी, दो तीन वर्ष में एक बार अपने आचार्य, और यदि आचार्य न हो, तो सम्प्रदाय के कार्यवाहक-मुनि से मिलें और सम्प्रदाय की भावी-उन्नति तथा साधु-आचार के विचारों को तय करें। यदि, कोई आचार्य की आज्ञा से दूर देश में विचरते हों, तो उनकी बात अलग है।

(२५) सभी मुनिराजों एवं साध्वियों को, यथा-सम्भव सभी प्रान्तों में विचरना चाहिये और छोटे-छोटे गांवों में भी जाना चाहिये।

(२६) सम्प्रदाय में, यदि कोई नया फेरफार करना हो, तो केवल आचार्य ही वैसा कर सकते हैं, किन्तु इस कार्य में उन्हें भी मुखिया-साधुओं की सलाह लेनी चाहिये। और यदि दूसरे मुनियों को कुछ फेरफार करना हो, तो आचार्य की स्वीकृति के बिना वे स्वयं न कर सकेंगे।

(२७) साधु तथा साध्वीजी, अपने दर्शन के लिये आने का उपदेश देकर, गृहस्थियों को नियम न करावें।

(२८) किसी गृहस्थ को दीक्षा लेने से पूर्व, मुनिवेश पहनने की सम्मति न देनी चाहिये और इस कार्य में उसकी सहायता भी न करनी चाहिये। "स्वयं दीक्षा ले लो" इस प्रकार की सलाह, उसके अभिभावकों की आज्ञा के बिना न दी जानी चाहिये। कदाचित, वह अपनी इच्छा से स्वयं ही दीक्षा ले ले, तो उसे साथ न रखना चाहिये और एक मकान में भी नहीं रखना चाहिये। उसे, आहार-पानी देना या दिलाना नहीं। यदि, कोई साधु-साध्वी इस तरह के कार्य करेगा, तो उसे शिष्य हरण का प्रायश्चित लेना पड़ेगा।

(२६) साध्वियों को साधु के स्थान पर और साधुओं को साध्वियों के स्थान पर, बिना कारण जाना या बैठना नहीं। और यदि आवश्यकता ही हो, तो पुरुष स्त्री की साक्षी के बिना न बैठें।

(३०) साधु-साध्वी, अपने फोटो न खिंचवावें और न इस कार्य का अनुमोदन ही करें। और यदि गुरु या शिष्य के पगले, छत्री, समाधि आदि बनवाने का कार्य होता हो, तो स्पष्ट रूप से उपदेश देकर रोकना उचित है, तो फिर इस प्रकार की प्रवृत्ति करने की तो बात ही कहां रह जाती है?

(३१) सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा-प्ररूपणा एक रहनी चाहिये।

(३२) प्रत्येक साधु-साध्वीजी को चारों काल स्वाध्याय करना चाहिये। चारों समय का स्वाध्याय, कम से कम १०० गाथाश्लोक का होना चाहिये। जिसे शास्त्र का ज्ञान न हो वह भले नवकार-मन्त्र का ही जाप करें।

(३३) सम्प्रदाय के आचार्य अथवा सम्प्रदाय के मुख्य सन्त किंवा सम्प्रदाय के कार्यवाहक की उचित आज्ञा से विरुद्ध होकर, पृथक विचरने वाले साधु-साध्वी के व्याख्यान संघ के श्रावक-श्राविका या साधु-साध्वी न सुनें और न उनका पक्ष ही लें। साथ ही साधुओं को करने योग्य विधिवन्दना एवं सत्कार आदि भी न करें। हां, अन्नादि देने का निषेध नहीं है।

(३४) व्याख्यान के अतिरिक्त, साधुओं के मकान में स्त्रियों को और साध्वियों के मकान में पुरुषों को न बैठना चाहिये। यदि, किसी कारण से बैठना ही पड़े तो साधुजी के मकान में समझदार पुरुष की और साध्वीजी के मकान में समझदार स्त्री की साक्षी के बिना नहीं बैठना चाहिये।

* * * * * * * *

नवमें दिन, ता० १३-४-३३ की कार्यवाही।

सवेरे, समय ८॥ से ११ बजे तक

प्रारम्भ में, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने मंगलाचरण किया। इसके बाद उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया कि खास विषय समाचारी का है। हम लोगों का ध्येय, संगठन

करना है। दिन २ जैनधर्मावलम्बियों की संख्या घटती ही जाती है। इसका सुधार कैसे हो? इस बात पर विचार करना चाहिये। साथ ही, ज्ञानवृद्धि की भी बडी आवश्यकता है।

इसके बाद समाचारी में से उपाश्रय का विषय हाथ में लिया गया। इसके सम्बन्ध में, युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने फरमाया, कि चाहे जो मकान हो, उसमे साधुजी उतर सकते हैं।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि यह प्रश्न विकट है।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा, कि प्रश्न भले ही विकट हो, किन्तु उसका निराकरण किये विना छुट्टी नहीं मिल सकती। पजाब में, पहले यही झगडा था, किन्तु पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज ने इसका निर्णय कर लिया था। हमारा मन्तव्य यह है कि, शब्द मे नहीं, बल्कि क्रिया से दोष है। शब्द में चाहे पौषधशाला हो या उपाश्रय हो, किन्तु जो निर्दोष है, उसमें उतरने में कोई बाधा नहीं है। शास्त्र में, 'समणोवस्सए' इस तरह का पाठ है। इससे क्या साधुओं का उपाश्रय हो गया? इसलिये शान्ति से एवं निष्पक्षता पूर्वक निर्णय करना चाहिये।

मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज ने कहा, कि स्थान के बिना धर्म नहीं टिक सकता, इसलिये स्थान तो चाहिये ही। किन्तु, जिस पर मुनियों का अधिकार है, उस स्थान का निर्णय होना चाहिये। यह व्यवस्था होने से, प्रत्येक सम्प्रदाय के मुनि, निर्विघ्नतापूर्वक एव शान्ति से रह सकेंगे।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि उपाध्यायजी का कथन ठीक है। निर्दोषिता ही देखनी चाहिये। बड़े बूढों ने, क्यों यह स्थान छोड दिये, इसका भी विचार तो करना ही चाहिये। किन्तु केवल पूर्वरूढि को पकड रखने के कारण ही आज, बहुत से मकान निर्दोष होते हुए भी उनमें प्रवेश नहीं करते। आज पारस्परिक प्रेम की वृद्धि कैसे हो, वही कार्य करने चाहिये। मैं, पजाब प्रदेश में विचरता था। तब मेरी यही भावना थी, कि निर्दोष मकान में उतरूं। जमना पार जाने पर मालूम हुआ, कि वहाँ जो स्थानक है, उनमें पूज्य श्री अमरसिंहजी महाराज के साधु उतरते हैं, इसलिये मैं भी उनमें ही उतरा। मैं भी यह बात मानता हूँ, कि धर्म स्थान के बिना धर्म नहीं टिक सकता। बौद्ध साहित्य भी इस बात की साक्षी देता है, कि ज्ञातपुत्र के साधुओं को आहरादि देने चाहिएँ, किन्तु स्थान नहीं। आज यदि श्रावक लोग अपनी धर्मकरणी करने के लिये स्थानक बनाते हों, तो हमें उन्हें न रोकना चाहिये। कारण कि धार्मिकों को धर्मस्थान की आवश्यकता होती है। यह चर्चा, यदि अभी न हो सके तो कमेटी के लिये छोड देनी चाहिये।

शतावधानी पः श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि जो मुनिराज, निर्दोष-स्थान होते हुए भी स्थानक में न उतरते हों, वे यदि उतरेंगे, तो उनकी उदारता मानी जायगी। यदि दोष की समीक्षा की जाय तो बने हुए मकानों की अपेक्षा, गृहस्थों के मकानों में उतरने में अधिक दोष लगता है, ऐसा मेरा अनुभव है। काठियावाड़ में, ऐसे कई प्रसंग आ भी चुके हैं। यदि, केवल निर्दोष-स्थान ही पसंद करना हो, तो फिर जगल में निवास करना अधिक अच्छा है। और, यदि समाज के साथ रहना है, व्यख्यान बाचने हैं, तो फिर श्रावकों के लिये बने हुए मकानों में उतरना ही उचित है। पहले भी पौषधशालाएँ होती ही

(२६) सम्प्रदाय में, यदि कोई नया फेरफार करना हो, तो केवल आचार्य ही वैसा कर सकते हैं, किन्तु इस कार्य में उन्हें भी मुखिया-साधुओं की सलाह लेनी चाहिये। और यदि दूसरे मुनियों को कुछ फेरफार करना हो, तो आचार्य की स्वीकृति के बिना वे स्वयं न कर सकेंगे।

(२७) साधु तथा साध्वीजी, अपने दर्शन के लिये आने का उपदेश देकर, गृहस्थियों को नियम न करवावें।

(२८) किसी गृहस्थ को दीक्षा लेने से पूर्व मुनिवेश पहनने की सम्मति न देनी चाहिये और इस कार्य में उसकी सहायता भी न करनी चाहिये। "स्वयं दीक्षा ले लो" इस प्रकार की सलाह, उसके अभिभावकों की आज्ञा के बिना न दी जानी चाहिये। कदाचित, वह अपनी इच्छा से स्वयं ही दीक्षा ले ले, तो उसे साथ न रखना चाहिये और एक मकान में भी नहीं रखना चाहिये। उसे, आहार-पानी देना या दिलाना नहीं। यदि, कोई साधु-साध्वी इस तरह के कार्य करेगा, तो उसे शिष्य हरण का प्रायश्चित लेना पड़ेगा।

(२९) साध्वियों को साधु के स्थान पर और साधुओं को साध्वियों के स्थान पर, *बिना कारण* जाना या बैठना नहीं। और यदि आवश्यकता ही हो, तो पुरुष और स्त्री की साक्षी के बिना न बैठें।

(३०) साधु-साध्वी, अपने फोटो न खिंचवावें और न इस कार्य का अनुमोदन ही करें। और यदि गुरु या शिष्य के पगले, छत्री, समाधि आदि बनवाने का कार्य होता हो, तो स्पष्ट रूप से उपदेश देकर रोकना उचित है, तो फिर इस प्रकार की प्रवृत्ति करने की तो बात ही कहां रह जाती है!

(३१) सभी सम्प्रदायों की श्रद्धा-प्ररूपणा एक रहनी चाहिये।

(३२) प्रत्येक साधु-साध्वीजी को, चारों काल स्वाध्याय करना चाहिये। चारों समय का स्वाध्याय, कम से कम १०० गाथाश्लोक का होना चाहिये। जिसे शास्त्र का ज्ञान न हो, वह भले नवकार-मन्त्र का ही जाप करें।

(३३) सम्प्रदाय के आचार्य अथवा सम्प्रदाय के मुख्य सन्त किंवा सम्प्रदाय के कार्यवाहक की उचित आज्ञा से विरुद्ध होकर, पृथक विचरने वाले साधु-साध्वी के व्याख्यान, संघ के श्रावक-श्राविका या साधु-साध्वी न सुनें और न उनका पक्ष ही लें। साथ ही, साधुओं को करने योग्य विधिवन्दना एवं सत्कार आदि भी न करें। हां आमादि देने का निषेध नहीं है।

(३४) व्याख्यान के अतिरिक्त, साधुओं के मकान में स्त्रियों को और साध्वियों के मकान में पुरुषों को न बैठना चाहिये। यदि किसी कारण से बैठना ही पड़े तो साधुजी के मकान में समझदार पुरुष की और साध्वीजी के मकान में समझदार स्त्री की साक्षी के बिना नहीं बैठना चाहिये।

* * * * * * *

नवमें दिन, ता०, १२-४-३३ की कार्यवाही।

सवेरे, समय ८॥ से ११ बजे तक

प्रारम्भ में, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने मंगलाचरण किया। इसके बाद उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया कि आज विषय समाचारी का है। हम लोगों का ध्येय, संगठन

न करनी चाहिये। हाँ, यदि किसी का व्यक्तिगत नाम लेकर कहें, तो उसे आक्षेप कहा जा सकता है।— आदि अत्यन्त सुन्दर युक्तियों से परिपूर्ण भाषण दिया।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि इस बात का निर्णय कमेटी करे, यह अधिक अच्छा है।

इतना कार्य होने के पश्चात्, सभा की कार्यवाही स्थगित करदी गई और व्यावर से आया हुआ मिश्रीलालजी मुनि के अनशन सम्बन्धी पत्र पढकर सुनाया गया।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही

आज, वर्षा के कारण, दोपहर को २॥ बजे से सम्मेलन का कार्य प्रारम्भ हुआ।

प्रारम्भ में, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज, मुनि श्री समर्थमलजी महाराज तथा शतावधानीजी एव युवाचार्यजी महाराज आदि ने एकान्त में जाकर अनेक बातों को नोट किया और उनपर विचार करके शय्यानिर्णय के निमित्त उन्हे सभा में पेश किया। किन्तु मुनि श्री पन्नालालजी महाराज ने, उचित शब्दों में उस योजना का विरोध किया और सभा ने उस योजना को अस्वीकृत कर दिया। इसके बाद यह प्रस्ताव सभा के सन्मुख रक्खा गया—

'साधु-साध्वियों के लिये, शय्या का निर्णय होना चाहिये।

प्रस्तावक—मुनि श्री चैनमलजी महाराज
अनुमोदक—सर्व सभासद गण

निर्णय हुआ, कि—

(३५) जो मकान श्रावकों के धर्मध्यान के लिये बना हो, उसका नाम लोकव्यवहार में चाहे जो हो, उस प्रकार के निर्दोष मकान का निर्णय करने के पश्चात्, मुनि वहां उतर सकते हैं। ऐसे मकान में उतरने वालों और नहीं उतरने वालों को, परस्पर एक दूसरे की टीका न करनी चाहिये।

सर्वानुमति से स्वीकृत।

इसके पश्चात्, सभा की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

* * * * * * *

दसवें दिन, ता० १४-४-३३ की कार्यवाही।

समय, प्रातःकाल ८॥ से ११ बजे तक

श्री शतावधानीजी ने, स्तुति कर चुकने के बाद फरमाया, कि—पूज्य मुनिवरो! कल सारे दिन में केवल एक ही प्रस्ताव हुआ और वह भी पूर्णतया नहीं। इसलिये मैं प्रार्थना करता हूं, कि सामान्य २ बातों में खींचातानी करने से, कोई भी कार्य पूर्ण नहीं हो सकेगा। जिसके सम्बन्ध में मतभेद हो, वह

थीं। आज, स्थानक नाम के सम्बन्ध में कितना आग्रह है ? इसके लिये, सोजत के उपाश्रय का दृष्टान्त मौजूद है।

पूज्य श्री जवाहरलालजी महाराज ने कहा, धर्मदासजी, आदि महापुरुष, समुदाय से पृथक क्यों हुए ? सिर्फ क्रियोद्धार के लिये। मेरे कथन का भाव यह है, कि किसी बात में एकान्त नहीं है। आचारांगसूत्र में, मूलगुणक्रिया और उत्तरगुण क्रिया का विधान है। उस पर से कोई निर्णय होगा। शताबधानीजी के प्रत्युत्तर में मुझे कहना चाहिये, कि भगवान् ने जिस तरह समाज से दूर रहने वाले मुनियों के लिये कहा है। उसी तरह समाज में रहने वाले मुनियों के सम्बन्ध में भी कहा है। बाह्य-क्रिया आडम्बर युक्त हो, तो इस बात को तो उस व्यक्ति का अन्तःकरण ही जान सकता है। जनता तो बाह्य का ही अधिक देख सकती है और यह नियम भी बाह्य क्रिया के ही लिये हैं नैतिक-नियम भी, गुप्त-चोरियों को पकड़ते हैं, लेकिन साहूकारी-चोरियों को नहीं। इस लिये, जिसमें सैद्धांतिक-बाधा न उत्पन्न हो, उस प्रकार का निर्णय होना चाहिये।

श्री सौभाग्यमुनि ने कहा—पूज्य श्री ! जैन सिद्धान्त की एक भी पंक्ति, एक भी शब्द शुद्ध व्यवहार का निषेध नहीं करता। सत्यशोधक बनकर निरीक्षण करना चाहिये। जिन आचारांगजी का शय्या नामक अध्ययन, मुनियों को उनके लिये बनाये हुए मकानों में महारम्भ-क्रिया का दोष बतलाता है उसी में यह भी लिखा मिलता है कि मुनियों को, गृहस्थियों के मकान में उतरने से भी-भयस्त दोष लगते हैं। फिर, यह बात भी लिखी है, कि साधुओं के निमित्त तैयार किये हुए मकान में, यदि गृहस्थ ने उसका उपयोग न किया हो तो—मुनिगण स्वाध्याय नहीं कर सकते। इन सबका निष्कर्ष यह है, कि मुनि को निर्दोष-स्थान में उतरना चाहिये, फिर उस स्थान का नाम चाहे जो हो। फिर, आपने फरमाया है, कि काठियावाड़ में सम्प्रदायों के नाम से उपाश्रय बनाये जाते हैं। उसका स्पष्टिकरण यह है, कि वे श्रावकों के स्वयं के बनाये हुए विभाग हैं, उनमें मुनिलोग निमित्त भूत नहीं हो सकते। उदाहरणार्थ आठकोटि स्थानक, छ कोटि स्थानक आदि। क्या आठ कोटि या छ कोटि मुनियों की हो सकती है ? इससे निश्चित होता है, कि मुनियों के लिये इस प्रकार के मकानों की रचना नहीं की गई है।

पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज ने, उपरोक्त कथन का अनुमोदन किया। अन्त में निश्चय हुआ, कि इस प्रश्न का निर्णय एक कमेटी करे, तो अच्छा है।

मुनि श्री आनन्दऋषिजी महाराज ने कहा, कि स्थानक नाम से मुनियों को द्वेष न होना चाहिये। आपने इस सम्बन्ध में बहुत कुछ कहा और दृष्टांत भी दिये।

युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने कहा, कि मेरी समझ में, इस प्रकार का आग्रह किसी को है या नहीं, इसलिये "द्वेष" यह शब्द कहीं आक्षेप सूचक तो नहीं है ?

मुनि श्री माणकचन्द्रजी महाराज ने अत्यन्त प्रभावशाली—भाषा में स्पष्ट रूप से कहा, कि इसे आक्षेप नहीं कह सकते। शास्त्रों में कहा है, कि—क्रोध की निंदा करो किंतु क्रोधी की नहीं बोलने वाला अपने सार्वजनिक-विचारों (कोई व्यक्तिगत नहीं) को प्रकट करे, तो उसमें आक्षेप की सम्भावना

हुआ भी। वैसे ही मतभेद, यहाँ भी है। मतभेद मिट जाय, तो फिर कुछ भी दुख न रहे। और यह समाचारी से ही सम्भव है। केसी और गौतम, ये आगमविहारी थे। और उन्होंने, परस्पर जो आमन्त्रण किया है, वह विना सम्भोग के भी हो सकता है। आचारांग सूत्र में पाठ है कि—

"साहम्मियाण समणुन्नाण पीढेहिं फलगेहिं निमंत्तिज्जा"

इसलिये, सम्भोग को आगे न रखकर, वात्सल्यभाव से भी एक ही स्थान पर व्याख्यान होने पर मेरा कोई विरोध नही है। किन्तु, मैं यह बात अवश्य ही कहूँगा कि—एक व्यक्ति भी अपना विरोध अवश्य ही प्रकट करे और यदि वह विरोध शास्त्र सम्मत हो, तो उस पर अवश्य ही विचार किया जाना चाहिये।

सौभाग्य मुनि ने, पूज्य श्री के वक्तव्य के उत्तर मे कहा कि—आचारांगजी मे जो पाठ है, उसमें 'साहम्मियाण' शब्द है। वही बतलाता है, कि—चाहे गण से भिन्न ही हो, किन्तु समनोज्ञ हो, तो इस प्रकार क निमन्त्रण करने में कोई आपत्ति नहीं है। केसी और गौतम का पारस्परिक आसनादि प्रदान भी, बारह प्रकार के सम्भोगों में के सम्भोग ही हैं। इससे सिद्ध होता है कि १२ सम्भोगों से कम सम्भोग खुले रखने वाले भी पारस्परिक सम्बन्ध रख सकते हैं। अब रहा संघ की फूट का प्रश्न। मुनियो का इस तरह का पारस्परिक प्रेम, फूट को अवश्य ही दूर कर देगा। सघ में, जो फूट उत्पन्न हो गई है, उसके पोषक-कारणों का अभाव और सगठन-साधन का उपाय, इसी प्रकार के पारस्परिक व्यवहार से हो सकता है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि यदि इस सम्बन्ध में सघ स्वयं ही समझने लगे तो यह कार्य दृढ हो जायगा।

इस तरह बहुतसी चर्चा होने के पश्चात निश्चित हुआ कि—

स्थानीय स्थानकवासी सकल संघ की सम्मति से, सघ जिस गण को विनती करे, वही गण उस नगर में चातुर्मास करे। यदि सकल सघ सम्मिलित होकर विनती न करे, तो किसी भी गण को वहां चातुर्मास न करना चाहिये। शेषकाल और चातुर्मास में, स्थानीय सकल सघ की प्रार्थना से, एक ग्राम या नगर में, केवल एक ही व्याख्यान करना चाहिये। यदि कारणवश कोई मुनिराज वहा रहे हों, तो भी पृथक २ व्याख्यान न दें।

नोट—जहां स्थानीय सकल सघ की विनती से साध्वीजी का चातुर्मास हो, वहा साधुजी चातुर्मास न करें। जहां मुनिजी विराजमान हों, वहा आर्याओं का, मुनियों की आज्ञा के बिना, सबेरे का व्याख्यान न होगा।

यह प्रस्ताव, ज्ञानचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के पाच मुनियों के विरोधी मतों के विरुद्ध, ६८ के बहुमत से पास हो गया। विरोधी पाचों मुनिराजों की सम्मति थी, कि यदि श्रीसंघ विनती करे तो आर्याजी भी, साधुजी के होते हुए व्याख्यान दे सकें। किन्तु सभा के भारी बहुमत ने इसे स्वीकार नहीं किया।

श्री शतावधानीजी ने प्रस्ताव किया, कि—साहित्ययोजक मण्डल या व्याख्यातृमण्डल किंवा विद्यार्थी मण्डल में जो प्रविष्ट होना चाहें, उनके परस्पर बारह सम्भोग खुले कर देने चाहिये।

प्रस्ताव बहुमत से पास होना चाहिये। ऐसे अवसर पर, सर्वानुमति का आग्रह छोड़ देना चाहिये। समाचारी के विषय में, हम लोगों का बहुतसा समय खर्च हो चुका है। अब, इस विषय को शीघ्र ही समाप्त कर देना चाहिये।

शतावधानीजी के इस कथन का, उपाध्यायजी, गणीजी, मुनि श्री पन्नालालजी महाराज और मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने समर्थन किया।

तत्पश्चात् श्री शतावधानीजी महाराजने यह प्रस्ताव उपस्थित किया, कि—

"किसी भी ग्राम या नगर में, केवल एक ही चातुर्मास होना चाहिये। इससे, वाड़ाबन्दी टूटेगी। और संघ का संगठन होगा। जो क्षेत्र वाड़े के हों, वहां भले ही क्रमश प्रत्येक-सम्प्रदाय के चातुर्मास होते रहें।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने, इस प्रस्ताव का समर्थन किया और कहा, कि यदि कभी दो चातुर्मास ही हों, तो भी व्याख्यान तो एक ही होना चाहिये। और वह व्याख्यान दोनों चातुर्मास के मुनि साथ २ बैठ कर दें, यह वांछनीय है।

मुनि श्री समर्थमलजी महाराज ने कहा, कि—संघ में शांति उत्पन्न हो, यह वांछनीय है और एक व्याख्यान होने पर वह उत्पन्न भी होगी। किन्तु, इसके लिये समाचारी का ऐक्य आवश्यक है। जहां तक समाचारी का ऐक्य न होगा, वहां तक ऐसा हो सकना असम्भव है। कारण, कि उसका सम्बन्ध समाचारी से ही है।

गणी श्री उदयचन्दजी महाराज ने कहा, कि—आपका कथन युक्ति संगत नहीं है। कारण कि समाचारी के साथ इसका सम्बन्ध नहीं है। यदि प्रत्येक कार्य में, इसी तरह दो-चार व्यक्तियों की ओर से विरोध हुआ करेगा, तो फिर कोई भी कार्य सफल नहीं हो सकता। और यदि ऐसा ही करना हो, तो हम समय को व्यर्थ व्यय नहीं करना चाहते। फिर, यदि सबकी समाचारी समान करने का प्रयत्न किया जावे, तो पेश सम्बन्धी प्रश्न तो सब का रहेगा।

मुनि श्री पन्नालालजी महाराज ने कहा, कि—यह क्या है? पहले समाचारी की रचना करो, तो हम लोग परस्पर सम्भोग खोलें। उत्तराध्ययन सूत्र के २३ वें अध्ययन में, केशी और गौतम की समाचारी समान न होते हुए भी, पारस्परिक आमन्त्रणादि देने का व्यवहार तो हुआ है, या नहीं? प्रिय महानुभावों! यही आदर्श उपस्थित करना चाहिये। यदि हम लोगों में पारस्परिक प्रेम उत्पन्न हो गया, तो समाचारी समान होजाने में कुछ भी कठिनाई न होगी।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज न फरमाया, कि—एक ही व्याख्यान हो और वह भी एक ही जगह पर हो इसे मैं आवश्यक समझता हूं। ऐसा होना उचित तो है लेकिन इसका आधार स्थानीय-संघ पर है। संघ में मतभेद पड़ने पर यदि अलग विनती हो, ऐसी सूरत में फिर वहां क्या किया जावे? मुझे याद है, कि मोरवी में पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज पधारे थे। उस समय, वहां के श्रीसंघ ने चातुर्मास की विनती की। श्रीलालजी महाराज, शतावधानीजी को अपने साथ रखना चाहते थे। किन्तु, वहां के संघ ने कहा, कि हमारे यहां एक ही सम्प्रदाय के मुनिराज का चातुर्मास हो सकता है। और ऐसा ही

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा—पूज्य मुनिराजो ! कुलधर्म और गणधर्म क्या है ? इसके सम्बन्ध में कहूँगा, कि एक ही गुरु का जितना परिवार हो, उसका नाम कुल है। और इस प्रकार के कुलो के समूह का नाम गण है।

बारह सम्भोग शास्त्र में नहीं हैं। यह बात यदि सूत्र सम्पन्न हो, तो मान्य हो सकती है। अन्यथा नहीं। कुलों में, परस्पर जो त्रुटिया जान पडे, उनका निर्णय गणाचार्य करें। भिन्न २ गुरुओं के शिष्यों के ऐक्य का नाम गण है। इसके अतिरिक्त, कुल भी परस्पर ७, ८, ९, १०, ११ चाहे जितने सम्भोग खोल सकते हैं। परस्पर बारह सम्भोग करें, ऐसा कोई प्रमाण नहीं है। कारण कि ठाणागसूत्र के पांचवे ठाणे में बतलाया है, कि पांच प्रकार से क्लेश हो, तभी उस साधु को कुल से बाहर निकाला जा सकता है। उन पांच में से-पहला आज्ञा, दूसरा विधि, तीसरा कीतिकर्म, चौथा वन्दना व्यवहार, पाचवा सूत्र पठन, छठा रोगीग्लान को परिचर्या। इसमें आहार का विधान नहीं है। बारह सम्भोग किये हों, ऐसा नहीं लिखा है। फिर अभी कल, ठाणागसूत्र के दूसरे ठाणे में, वृत्तिकार ने लिखा है, कि—हिंसार्थमेव प्रमत्तादीनि प्रेक्षतेऽसौ क्षुद्रप्रेक्षी'। किन्तु, यदि केवल हिंसाप्रेक्षी तात्पर्य होता, तो सूत्रकार द्विरुक्ति न करते। इसी सम्बन्ध में प्रश्न व्याकरण सूत्र में, जहा पहले महाव्रत की पाच भावनाओं का विधान आता है, वहां प्रथम ईर्याभावना के स्पष्टार्थ में लिखते हैं, कि सूक्ष्म जीवों को भी 'न निन्दियव्वा, न परितावेयव्वा, न हन्तव्वा' इससे यही प्रकट होता है कि निन्दा भी एक प्रकार की हिंसा है। अत इस प्रकार के कार्यों के लिये दसवा पारचित प्रायश्चित अनुचित नहीं है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने उपरोक्त कथन का विरोध करते हुए कहा, कि–छिद्र का अर्थ यदि हम लोग केवल हीलना ही लेंगे तो यह वहा घटित नहीं होता। क्या सारणा, वारणा, प्रचारणा इत्यादि करने से भी हिंसा हो जायगी ? छिद्र देखना, यह एक भिन्न वस्तु है और हिंसा एक भिन्न चीज। यही बतलाने के लिये टीकाकार ने, अपभ्राजना शब्द रक्खा है। राजा परदेशी के लिये, सूरीकन्ता और रेवती ने, अपनी सौतों के छिद्र देखे थे। किन्तु उनका लक्ष्य हिंसा की तरफ था, इसी लिये 'पारंचित्त योग्य प्रमतादीनि प्रतिसेवनाकारी छिद्रप्रेक्षी' इस तरह अभिधान राजेन्द्र कोष में भी लिखा मिलता है।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया, कि—हितशिक्षा के लिए जो बात कही जाय उसे छिद्र कदापि नहीं कहे जा सकते। जिस तरह से, डॉक्टर ऑपरेशन करता है, तो वह द्रव्य हिंसक है, किन्तु भावहिंसक नहीं। कारण कि उसकी दृष्टि हिंसामय नहीं होती। इसी तरह हितशिक्षा के लिए जो कुछ कहा जावे, वह छिद्रगवेषणा नहीं है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने, गण के सम्बन्ध में फरमाया, कि—'एक वाचनाऽऽ चार क्रियास्थाना परस्पर सापेक्ष कुलानामनेकाना समुदायो गण' आदि यही बतलाते हैं, कि समान समाचारी वाले परस्पर सम्भोग खोल सकते हैं और बारह प्रकार से ही ऐसी मेरी मान्यता है।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि बारह सम्भोग समझना भी उचित नहीं है। कारण कि सम्भोगी का अर्थ—'सम्भोग –सभोगा व सन्तियस्य स सम्भोगी' इस तरह समझना चाहिये।

इसके पश्चात्, मुनि श्री नानचन्द्रजी महाराज ने, यह प्रस्ताव किया, कि–जो वैरागी दीक्षा लेना चाहे, उसे सिद्धान्तशाला में १ वर्ष से लगाकर तीन वर्ष तक रहकर, दीक्षा लेने जैसी योग्यता प्राप्त करनी चाहिये। तत्पश्चात् अध्यापकों की अनुमति प्राप्त करके दीक्षा ले, यह अधिक अच्छा है।

इसके पश्चात्, निम्न प्रस्ताव, विधिवत् सभा के सम्मुख रखा गया—

(३६) साहित्य योजक मण्डल, व्याख्यात् शिक्षा मण्डल, और अध्ययन कर्ता मण्डल में, जो कोई मुनि अध्यापक या विद्यार्थी के रूप में दाखिल हों, वे यदि चाहें, तो परस्पर बारह सम्भोग अपनी मर्जी से खुले कर सकते हैं।

यह प्रस्ताव, सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ। तीनों मण्डलों की योजना का कार्य शेष रह गया।

बीच में, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने, ठाणांगसूत्र के पांचवें ठाण के प्रथम उद्देश से १० छेद के अधिकारी सम्बन्धी पांच बोलों में से दो बोल कहे। प्रथम गणभेदी–साधुभेदी और दूसरे हिंसाभेदी, छिद्रभेदी इत्यादि। तत्पश्चात् इनकी व्याख्या की।

इसके पश्चात्, सभा के सन्मुख यह प्रश्न उपस्थित किया गया, कि चातुर्मास कब निश्चित किये जावें, इसका निर्णय हो जाना चाहिये।

निश्चित हुआ कि—

(३७) फाल्गुन शुक्ला १५ से पूर्व किसी भी गण को विनती न स्वीकार करनी चाहिये। और विनती भी आचार्य के पास ही करनी चाहिये।

साथ ही यह भी निश्चित हुआ, कि—किसी भी सम्प्रदाय के वैरागी या वैरागिन अथवा शिष्य किंवा शिष्या को, अपनी सम्प्रदाय में मिलाने के लिये न भरमाया जावे।

इसके बाद, प्रातःकाल की कार्यवाही समाप्त हुई।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही, समय २॥ से ४ बजे तक।

श्री शतावधानीजी ने स्तुति करने के बाद फरमाया कि–आज ही कार्य पूरा हो, तो कमेटी का कार्य हो सकता है।

(१) आज सब से पहले गण का निश्चय करना चाहिये और परस्पर प्रेमभाव की वृद्धि हो, इस प्रकार के नियमों की रचना की जाय।

(२) तत्पश्चात् गणाचार्य और मण्डलाचार्य की नियुक्ति होजाय तो सब काम ठीक होजाय।

शंका समाधान—कुलों के समूह का नाम गण है और गणों के समूह को मण्डल कहते हैं। उस मण्डल के अधिष्ठाता–मण्डलाचार्य। इस प्रकार की व्यवस्था करनी चाहिये। जिनके गण का चुनाव न हुआ हो वे करलें।

ग्यारहवें दिन, ता० १५-४-३३ की कार्यवाही।

सवेरे, ८॥ से ११ बजे तक

आज, सवेरे के वक्त कोई खास बात नहीं हो सकी। सभा में, कुछ गड़बड़ ही रही। जिसके कारण, बहुत से प्रतिनिधियों को दुःख भी हुआ। कारण, कि कार्य बहुत थोड़े परिमाण में हो सका। अन्त में सब मुनिराजों से यह निवेदन करके, कि जिससे सन्तोष उत्पन्न हो, उसी तरह का कार्य करना चाहिये। प्रातःकालीन बैठक समाप्त कर दी गई।

* * * * * * *

दोपहर की बैठक समय २॥ से ४ बजे तक।

कल के प्रस्ताव के सम्बन्ध मे, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज, अपना जो नोट लिखवाना चाहते थे, उसके सम्बन्ध मे, गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने प्रारम्भ ही में कहा—प्रतिनिधि महानुभावो! प्रस्ताव पास हो जाने के पश्चात, नोट न लिखा जाना चाहिये ऐसी मेरी मान्यता है। कल के प्रस्ताव पर पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने अपना अभिप्राय दिया है। उसे, नोट के रूप में रक्खा जाय या नहीं, इस सम्बन्ध में आप लोगों का क्या मत है?

अन्त में लगभग सर्वानुमति से निश्चित हुआ, कि वह नोट न लिया जाय। और तदनुसार वह नहीं लिया गया।

तत्पश्चात, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा कि—फूट मिटाने के लिये किसी को मण्डलाचार्य बनाने की आवश्यकता है। उन मण्डलाचार्य का कर्त्तव्य यह हो, कि जब कभी धर्म पर कोई संकट आवे, तभी उसका निराकरण करें आदि २। अब नाम पसन्द करने की बात रही। मेरी सम्मति में तो, पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज ही इसके लिये योग्य हैं। कारण कि वे महानुभाव ही हमारे इस सम्मेलन के जन्मदाता हैं। उनका परिवार भी कितना उदार है, कि वे कहते हैं, कि किसी भी सम्प्रदाय के साथ हम ६, १०, या १२ सम्भोग से मिलने को तैयार हैं। वे गण की रचना करने के लिए भी तैयार हैं तथा एक समाचारी कर लेने के लिये भी प्रस्तुत हैं। जिस परिवार में, ऐसी उदारता हो वह परिवार धन्य है। उसी परिवार के मालिक को यह जवाबदारी सौंपी जाय, यह अधिक उचित है। साथ ही उपयुक्त भी है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा—गणादि विवाद अथवा धार्मिक चर्चाओं का प्रत्युत्तर देने के लिये, सघाचार्य की आवश्यकता है। परन्तु, इस सम्बन्ध में मैं यह कहना चाहता हूं, कि संघाचार्य की योग्यता आदि और शास्त्रीयनियम के अनुसार यावज्जीवन सघाचार्य रह सकें, इसके लिये अध्यक्ष की तरह चुनाव करना उचित है।

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने कहा—जितने भी सम्प्रदाय कम होजाय उतने ही हितावह है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा—हितावह होते हुए भी, इस प्रकार के संघटन के लिये दृढ़ता की आवश्यकता है। आज की कार्यवाही शिथिल है। पगु, गिरि पर चढ़े और फिर गिर पड़े

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने कहा कि—प्रश्न यह है, कि सम्भोग के सम्बन्ध में इतना आग्रह क्यों किया जारहा है, कि यदि हो तो बारहो हों अन्यथा एक भी नहीं? आचारांगसूत्र में, 'असम्भोइयाणं समणुआणं' आसन प्रदान करने के लिये जो विधान है, वही बतलाता है कि अन्य कुल की समाचारी पृथक होते हुए भी सम्भोग की बाधा उसमें न होनी चाहिये। आसन प्रदान, यह एक प्रकार का सम्भोग ही है, इसमें सन्देह नहीं। वाचना, प्रच्छना और वैयावृत्य इन सम्भोगों की आवश्यकता, कुलों में परस्पर होनी ही चाहिये। किन्तु भोजन शिष्यादि का लेना देना, प्रतिक्रमण, साथ साथ २ करना, ये तीन सम्भोग पृथक होते हुए भी परस्पर गणव्यवस्था में कोई बाधा नहीं आती। और यों तो, एक ही गुरु के परिवार में भी पृथक गोचरी लाकर आहार कर सकते हैं। इस बात की साक्षी भी दशवैकालिकादिक सिद्धान्तों से मिलती है। अब सूत्र का प्रश्न रहा, कि सूत्रों में, सम्भोगों का स्पष्टतया-विधान क्यों नहीं मिलता? तो इस शंका का समाधान बुद्धि के द्वारा स्वयं ही किया जा सकता है। किन्तु इतना तो सिद्धान्त अवश्य ही प्राप्त करवाता है, कि जैन दर्शन स्याद्वाद का आदर्श है। इसलिये किसी जगह विधि होती है और उसी बात का क्वचित निषेध भी होता है। विधि और निषेध, ये दोनों परस्पर विरोधी वस्तुएँ होते हुए भी मूल आशय नहीं नष्ट होता। यही जैन दर्शन की विशेषता है। जिससे परस्पर प्रेम की वृद्धि होती हो, संघ में शान्ति उत्पन्न होती हो, उस बात का बाधक जैनसिद्धान्त कभी नहीं हो सकता। इस बात की ओर खासतौर पर ध्यान देने की, मेरी नम्र प्रार्थना है। यदि शब्द के विचार में उतरेंगे, तो 'एक वाचनाऽऽचार क्रियास्थानां कुलानां समुदाय' ऐसा जहां लिखा है, वहां क्रिया और आचार को भिन्न क्यों माना गया है? फिर, वाचना इत्यादि पद स्पष्टतया दिये हैं, उसी तरह दूसरे सम्भोगों को भी साथ ही पदरूप में जोड़ सकते थे। वहां अनेक तर्कों की गुंजाइश है। और इसीलिये, असंभोगी यानी एक भी सम्भोग वाले नहीं तथा सम्भोगी यानी बारह संभोग वाले, ऐसा मान लेने के लिये, कोई समर्थक प्रमाण नहीं मिलता।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि—हम लोगों का ध्येय, सम्प्रदायों की संख्या घटाना है। और ये सम्प्रदायें गण के रूप में संगठित होने पर जितने सम्भोगों की उदारता दिखावें उतना ही अच्छा है। फिर भले ही व सम्भोग नौ हों दस हों या ग्यारह हों।

आपने अपने गण के भीतर के कुलों में परस्पर जितने सम्भोग खोले जावें, वे सब रह सकते हैं इसमें विवाद की गुंजाइश नहीं है। इसके बाद आपने अपनी तरफ से यह प्रस्ताव सभा के सन्मुख रक्खा।

'गण के समूह को मण्डल कहा जाय। मण्डल के अन्तर्गत गणों के सम्भोग के सम्बन्ध में गण वाले जितना रखना चाहें उतने रख सकते हैं।

इस प्रस्ताव का पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने विरोध किया, किन्तु फिर भी वह बहुमत से पास हो गया।

० ० ० ० ० ० ०

के स्वामी भी हैं। सामुदायिक-संगठन को सम्यक् प्रकारेण सफल बनाने के लिये, प्रत्येक सम्प्रदाय को कुछ न कुछ बलिदान करना ही होगा। एक प्रतिनिधि जिस तरह की बाधा डाले, उसी तरह यदि सभी अनुकरण करें और यदि ऐसी ही स्थिति रहे तो फिर कोई भी कार्य सुदृढ नहीं हो सकता। हम पूज्यजी महाराज से प्रार्थना करेंगे, कि वे अपनी उदारता का परिचय दें।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने फरमाया कि अभी सम्प्रदाए परस्पर नौ सम्भोग खोल-कर अन्य सम्प्रदायों के साथ मिल, गण की व्यवस्था करें। गण गण में भी परस्पर वात्सल्य की वृद्धि हो, इस प्रकार का वर्त्ताव होना चाहिये। तीन वर्ष के पश्चात गण में ऐक्य हो जाने पर दूसरे गणों के साथ भी बारह सम्भोग खोलने का मौका मिले तो संघ की उन्नति का अद्वितीय कार्य हुआ समझा जाय। अभी हम लोगों को एक कार्यवाहक समिति का भी चुनाव करना पडेगा। वह चुनाव इस तरह किया जाना चाहिये। जिस सम्प्रदाय में कम से कम इक्कीस साधु हों उनमें से एक, बाइस से पचास तक दो, इक्कावन से पचहत्तर तक तीन और इससे अधिक हों तो चार तथा प्रत्येक सम्प्रदाय में जितनी साध्वी हों, उनकी तरफ का एक प्रतिनिधि। इस तरह चुने हुए प्रतिनिधियों की एक समिति बनाई जाय और उस समिति के संचालन के लिये, दो मन्त्रियों का चुनाव किया जाय। साथ ही उन पर एक अध्यक्ष नियुक्त कर दिया जाय। उस अध्यक्ष की सूचना तथा समिति की सलाह से ही संचालन कार्य होगा। जिसमें मुख्य कार्य, साधु सम्मेलन में पास हुए प्रस्तावों का पालन करवाना है। सम्प्रदायों में परस्पर प्रेम की वृद्धि हो, इस तरह का प्रचार कार्य करना तथा छोटे कुलों (सम्प्रदायों) को मिलाकर गण बनाने का प्रयत्न करना भी आवश्यक समझा जाय।

इसके बाद, प्रात कालीन बैठक समाप्त हो गई।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही।

समय २॥ बजे से ४ बजे तक

श्री शतावधानीजी के स्तुति कर चुकने के बाद, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया कि जो गण के रूप में सम्प्रदाएँ बन गई हैं और जो बनने वाली हैं, उनमें से हम लोगों को मेम्बरों का चुनाव करना है। इसके सम्बन्ध में, शतावधानीजी ने सबेरे कहा भी है। उस तरह की समिति के द्वारा हमारा सघ सुव्यवस्थित होगा। गणों में, परस्पर प्रेम की वृद्धि होगी। परस्पर एक दूसरे की हीलना न करें, अपमानसूचक वार्त्तालाप का प्रसंग भी न आवे, इसी उद्देश्य से हम लोगों का प्रयास है। बाकी रहा, परस्पर सम्भोग के सम्बन्ध में सूत्रविधान। सूत्रकारों ने, जो जो नियम बनाये हैं, उनके आशय का अनुसरण करके, देशकालानुसार परिवर्त्तन होता ही रहता है। आज हम लोग लेखनी का उपयोग करते हैं। यह बात किस शास्त्र में लिखी है, कि हमें लेखनी का उपयोग करना चाहिये? किन्तु हम लोगों के उसके उपयोग में लेने का उद्देश्य यह है कि वह वस्तु ज्ञानवृद्धि का साधन है। इससे स्पष्ट ही समझा जा सकता है, कि किसी भी तरह सघ में जितने भी अंश में शान्ति हो सकती हो, उतनी ही साधने में, शास्त्र किसी तरह प्रतिकूल नहीं हैं।

ऐसा न होना चाहिये। असफल होने के भय से हम लोग बाह्य प्रदर्शन अच्छा कर दें, तो इस प्रकार की बाह्य सफलता की कोई कीमत नहीं है। मिथ्या सफलता की अपेक्षा असफलता अच्छी है।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा – मुनिवरो! आज आनन्द की बात है, कि हम लोग परस्पर मिले हैं। हम लोग जितने अंश में नजदीक आ सकें, उतना ही अच्छा है। अभी यदि बारह सम्भोग न हो सकें, तो नो अथवा जितने खुल सकें, उतने खोलने चाहिएँ। गण की व्यवस्था पहले भी थी, यह बात वेदकल्प के चौथे अध्याय में पर्याप्त बातों से प्रकट है। उसमें लिखा है कि गणाचार्य, अपने गण को पूछ कर, दूसरे को अपने पद पर नियुक्त करके, किसी दूसरे गण में शामिल हो सकता है। यदि अपना गण शिथिलाचारी हो जाय, तो किसी से पूछे बिना भी किसी उत्तम गण में जा सकता है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा—गण को तो मैं भी मानता हूँ। किन्तु गण में कितने सम्भोग होने चाहियें, इसी प्रश्न पर मेरा विरोध है। समवायांग सूत्र में लिखा है कि—'सम्भोजियाणं सह संभोगसयं' याना एक साथ भोजन करने वालों के लिये ही संभोग शब्द लागू होता है ऐसी मेरी मान्यता है। भले हो वैसा होते हुए भी गण होवे हों, तो उसमें मेरा को विरोध नहीं है।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा—गणों में परस्पर नौ से १२ तक चाहे जितने सम्भोग खुलें, किन्तु आज तो संघ व्यवस्था के लिये संगठन करना ही पड़ेगा। और उन गणों के समूह का नाम 'श्री वर्द्धमान शासन संघ' रखा जावे तथा उस संघ के नायक के रूप में, पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज को चुन लिया जावे, यह मेरा नम्र निवेदन है।

समय हो जाने के कारण कार्य समाप्त हो गया।

* * * * * * *

बारहवें दिन, ता० १६–४–३३ की कार्यवाही।

समय सवेरे ९ से ११ बजे तक

प्रार्थना के पश्चात्, श्री शतावधानीजी ने कहा—कि आज कुछ विलम्ब हो गया है किन्तु वह सकारण ही हुआ है। आज, कल का ही कार्य फिर से हाथ में लेना चाहिये।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि मैं सम्प्रदाय की ओर से जवाबदार व्यक्ति के रूप में यहाँ आया हूँ, प्रतिनिधि के रूप में नहीं। इसलिये मेरा कर्तव्य है, कि जो प्रस्ताव मुझे खरी कार्य जान पड़, उसके सम्बन्ध में मैं अपना मोट दूँ।

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने कहा कि—जिस तरह से पूज्यजी महाराज अपनी सम्प्रदाय की जवाबदारी लेकर पधारे हैं उसी तरह सभी मुनिराज अपनी २ सम्प्रदाय की जवाबदारी लेकर यहाँ पधारे हैं और यह बात अपनी २ सम्प्रदाय की ओर से भरकर आये हुए फार्म से जानी जा सकती है। जो २ मुनिराज यहाँ पधारे हैं, वे संगठन के उद्देश्य से ही पधारे हैं और वे सभी समान अधिकार

के स्वामी भी हैं। सामुदायिक-सगठन को सम्यक् प्रकारेण सफल बनाने के लिये, प्रत्येक सम्प्रदाय को कुछ न कुछ बलिदान करना ही होगा। एक प्रतिनिधि जिस तरह की बाधा डाले, उसी तरह यदि सभी अनुकरण करें और यदि ऐसी ही स्थिति रहे तो फिर कोई भी कार्य सुदृढ नहीं हो सकता। हम पूज्यजी महाराज से प्रार्थना करेंगे, कि वे अपनी उदारता का परिचय दें।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने फरमाया कि अभी सम्प्रदाए परस्पर नौ सम्भोग खोल-कर अन्य सम्प्रदायों के साथ मिल, गण की व्यवस्था करें। गण गण में भी परस्पर वात्सल्य की वृद्धि हो, इस प्रकार का बर्त्ताव होना चाहिये। तीन वर्ष के पश्चात गण में ऐक्य हो जाने पर दूसरे गणों के साथ भी बारह सम्भोग खोलने का मौका मिले तो सघ की उन्नति का अद्वितीय कार्य हुआ समझा जाय। अभी हम लोगों को एक कार्यवाहक समिति का भी चुनाव करना पडेगा। वह चुनाव इस तरह किया जाना चाहिये। जिस सम्प्रदाय में कम से कम इक्कीस साधु हो उनमे से एक, बाइस से पचास तक दो, इक्कावन से पचहत्तर तक तीन और इससे अधिक हों तो चार तथा प्रत्येक सम्प्रदाय में जितनी साध्वी हों, उनकी तरफ का एक प्रतिनिधि। इस तरह चुने हुए प्रतिनिधियों की एक समिति बनाई जाय और उस समिति के संचालन के लिये, दो मन्त्रियों का चुनाव किया जाय। साथ ही उन पर एक अध्यक्ष नियुक्त कर दिया जाय। उस अध्यक्ष की सूचना तथा समिति की सलाह से ही संचालन कार्य होगा। जिसमें मुख्य कार्य, साधु सम्मेलन में पास हुए प्रस्तावों का पालन करवाना है। सम्प्रदायों में परस्पर प्रेम की वृद्धि हो, इस तरह का प्रचार कार्य करना तथा छोटे कुलों (सम्प्रदायों) को मिलाकर गण बनाने का प्रयत्न करना भी आवश्यक समझा जाय।

इसके बाद, प्रात कालीन बैठक समाप्त हो गई।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही।

समय २॥ बजे से ४ बजे तक

श्री शतावधानीजी के स्तुति कर चुकने के बाद, उपाध्याय श्रीआत्मारामजी महाराज ने फरमाया कि जो गण के रूप में सम्प्रदाएँ बन गई हैं और जो बनने वाली हैं, उनमें से हम लोगों को मेम्बरों का चुनाव करना है। इसके सम्बन्ध में, शतावधानीजी ने सबेरे कहा भी है। उस तरह की समिति के द्वारा हमारा सघ सुव्यवस्थित होगा। गणों में, परस्पर प्रेम की वृद्धि होगी। परस्पर एक दूसरे की हीलना न करें, अपमानसूचक वार्त्तालाप का प्रसग भी न आवे, इसी उद्देश्य से हम लोगों का प्रयास है। बाकी रहा, परस्पर सम्भोग के सम्बन्ध में सूत्रविधान। सूत्रकारों ने, जो जो नियम बनाये हैं, उनके आशय का अनुसरण करके, देशकालानुसार परिवर्त्तन होता ही रहता है। आज हम लोग लेखनी का उपयोग करते हैं। यह बात किस शास्त्र में लिखी है, कि हमें लेखनी का उपयोग करना चाहिये? किन्तु हम लोगों के उसके उपयोग में लेने का उद्देश्य यह है कि वह वस्तु ज्ञानवृद्धि का साधन है। इससे स्पष्ट ही समझा जा सकता है, कि किसी भी तरह सघ में जितने भी अंश में शान्ति हो सकती हो, उतनी ही साधने में, शास्त्र किसी तरह प्रतिकूल नहीं हैं।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने, गण सम्बन्धी अपने सात प्रश्न उपस्थित करते हुए कहा, कि हम लोगों को जो मकान बनाना है, उसे पक्का तथा सुदृढ़ बनाना है। इसलिये उसकी नींव भी उतनी ही मजबूत होनी चाहिये। इसलिये अभी गण व्यवस्था में मेरे मन को सन्तोष नहीं होता। उसे सुदृढ़ रीति से बनाने की आवश्यकता है।

इसके पश्चात् सभा की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।

० ० ० ० ० ० ०

तेरहवें दिन, ता० १७–४–३३ की कार्यवाही।

समय, सवेरे ९ बजे से ११ बजे तक।

स्तुति के पश्चात् उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा कि हम लोगों का सम्मेलन केवल दो बातों के लिये ही है। एक तो विद्या, दूसरे चारित्र। इन्हीं से संसार का पार मिलता है। पहले ज्ञान तब क्रिया। आज हमारे समाज में, विद्या की प्रायः अपूर्णता ही ज्ञात पड़ती है। हम लोगों की सूत्रभाषा के जानकार भी बहुत थोड़े ही हैं। देखो वैदिक मत में, विद्यार्थीगण ऊँचे दर्जे के तैयार हैं। सम्राट अशोक के काल में, हमारी प्राकृत भाषा का कितना गौरव था। संस्कृत भाषा और प्राकृत भाषा का कितना सम्बन्ध है, यह मैं आप लोगों को समझाता हूँ। दुग्ध का दूध, विभीतक का बहेड़ा, हरितकी का हरड़ा, गृह का घर बना है। मैं मानता हूँ कि अपरस शब्द में से ही अपभ्रंश बने हैं। आज भाषा के मूल के लिये, साहित्य के प्रचार की आवश्यकता है। भाषा शुद्धि की न्यूनता के कारण बत्तीस सूत्रों के पाठी होते हुए भी, उच्चारण की शुद्धि नहीं होती। आज, क्रिया में जो शिथिलता दीख पड़ती है, उसका कारण ज्ञान का अभाव है। इसके लिये, प्रामाणिक–संस्था की आवश्यकता है। साहित्य दो प्रकार का होता है। आगम साहित्य और सामान्य साहित्य। इन दोनों अंगों पर जोर देने की आवश्यकता है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा कि आज हम लोगों की श्रद्धा और प्ररूपणा में अत्यधिक अन्तर पड़ गया है। बाईसों सम्प्रदायों की श्रद्धा एक होनी चाहिये और सूत्र प्रचार होना चाहिये। तेरहपन्थियों की श्रद्धा और उनके संस्कार कैसे जमा जाते हैं यह बात समझ में नहीं आती। थाड़ु गा में, मुझे इस बात का खूब अनुभव हुआ। इसी लिये मेरी ऐसी मान्यता हो गई है, कि एक अच्छी से अच्छी पुस्तक तैयार की जावे और हम लोगों का कार्य सगठित-रीति से हुआ करे। मण्डन के प्रति मुझे श्रद्धा नहीं है एक ही व्यक्तिगत कार्य होना चाहिये और इस प्रकार का कार्य ही कुछ रचनात्मक कार्य हो सकेगा, ऐसा मुझे ज्ञात पड़ता है। साहित्य पाचना के सम्बन्ध में मैं १९८६ के साल से मेरा तेरहपन्थियों के साथ सम्बन्ध है। उनके ग्रन्थों का मैंने अपनी बुद्धि के अनुसार खूब परिशीलन किया है। और यही कारण है कि उनकी श्रद्धा के खण्डन में सद्धर्म मण्डन तथा अनुकम्पाविचार नामक पुस्तकें मैंने बनाई हैं। इन ग्रन्थों की संशुद्धि, आप विद्वानगण करें, तो सुन्दर रीति से कार्य हो सकता है। दूसरा नम्बर आता है मूर्तिपूजकों का। अंग उपांग के सम्बन्ध में तो हम लोग उनसे भिन्न मतक हैं। आचार और क्रियाओं की भिन्नता, समदृष्टि से समन्वय का प्रयत्न किया जाय तथा इसके लिये योग्य साहित्य की रचना की जाय। अब दिगम्बरों की बात रह गई। ये हम लोगों के साथ जैन

(फिलासफी) तत्वज्ञान में तो अवश्य ही मिलते हुए हैं। फिर भी, हम उनके साथ कैसे मिल सकें, इस पर विचार करना चाहिये। इसी तरह आर्यसमाजी तथा वेदान्तादि अन्य मतो के आक्षेपों का निवारण करने के लिये, कोई मर्मज्ञ ग्रन्थ प्रकाशित होना चाहिये, जिसका लोहा वे भी मानें। शास्त्रीय-साहित्य भी आज शुद्ध अशुद्ध छप रहा है। इसलिये सभी विद्वानों को मिलकर, प्राकृत से सस्कृत और उससे हिन्दी इस तरह अनुवाद करना चाहिये। लम्बी टीकाओं में, भेद पड़ जाता है। इस तरह के साहित्य की योजना में मेरा सहयोग है। किन्तु इस योजना के लिये मण्डल की आवश्यकता नहीं है। एक २ व्यक्ति पृथक रहकर भी अपना कार्य कर सकता है। मण्डल आदि से साधुधर्म में जितनी आपत्तियां आवेंगी, उनका निवारण करने के लिये क्या करोगे ? क्रियामार्ग का, इस तरह से व्यक्त या अव्यक्त-रूप में खण्डन न हो, इस बात पर खूब विचार कर लेना चाहिये।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया, कि—पूज्य श्री के कथन के प्रत्युत्तर में यह कहना चाहता हूँ, कि मण्डल की रचना क्यों की जा रही है, इस पर पहले ध्यान देने की आवश्यकता है। उसका उद्देश्य यह है कि समालोचक विद्वान-व्यक्ति, भिन्न २ प्रदेशों में रहकर कार्य नहीं कर सकते, इसलिए साथ २ रहें और किसी तरह की बाधा न उत्पन्न हो, इस तरह विचरें। समाज, जिन पर विश्वास करे, ऐसे योग्य व्यक्ति ही साहित्य के विषय में लगें। महात्मा गौतमबुद्ध और महावीर का साहित्य, समान रूप से मिलता है। इसी लिये, उस साहित्य का भी, अपने साहित्य की पुष्टि के निमित्त निरीक्षण करना लाभप्रद तथा आवश्यक है।

इसके पश्चात, मुनि श्री सोभाग्यचन्द्रजी महाराज ने, साहित्य के सम्बन्ध में, अपना वक्तव्य प्रारम्भ करते हुए कहा, कि—भाषा के सम्बन्ध में, मैं यह कहना चाहता हूं, कि आज हमारी सूत्रभाषा सादी, सरल और सुन्दर होते हुए भी, उसे सीखना कठिन हो पड़ा है। इसका कारण यह है, कि भाषा एक नैसर्गिक-वस्तु है और जीवन के साथ उसका सम्बन्ध होने के कारण, काल के अनुसार, उसमें परिवर्तन भी होता रहता है। उदाहरणार्थ-कच्छी और गुजराती भाषा को ही देखिये। ये भाषाएं प्राकृत से मिलती जुलती और सस्कृत से अपभ्रष होकर बनी हैं। उदाहरणार्थ—कच्छी भाषा में 'कित विंजतो' सस्कृत के 'कुत्र व्रजति' से बना है। कुत्र से कुत और फिर कित तथा व्रज से विंज बन गया। भाषाओं के वश की खोज करने, पर प्रत्येक भाषा के अश, मूलरूप से एक ही प्रकार के होते हैं। आज की सूत्र-भाषा इतनी क्लिष्ट हो पडी है, कि हम लोग सीधे उसमें प्रवेश ही नहीं कर सकते। इसलिये, विवश होकर सस्कृत सीखनी ही पडती है। उपाध्यायजी के कथनानुसार, आज सूत्रपाठ में भी, भाषाशुद्धि क्वचित ही दीख पड़ती है। इसका कारण, उस भाषा की अनभिज्ञता है। इसलिये, इस दृष्टि से तो व्याकरण की आवश्यकता है। इसी तरह, व्याख्यान कला सीखने के लिये भी साहित्य-ज्ञान की आवश्यकता है। साहित्य के निर्माण के सम्बन्ध में भी, हम लोगों को शीघ्र ही तैयारी करने की आवश्यकता है। हम लोगों के पास, आज एक भी ऐसा ग्रन्थ नहीं है, जिसे अन्य दर्शनियों के सामने रखकर, सम्पूर्ण जैन-फिलॉसफी की उस पर छाप डाल सकें। श्रीमद्भगवद्गीता और महाभारत जैसे ग्रन्थों का, वैष्णवों ने कितना गौरव बढ़ाया और अपने मत का प्रचार किया है। सद्भाग्य से, आज हम लोग सम्मिलित हो सके हैं। इसलिये, उस योजना को तत्क्षण ही अपना लेने के समय को न भूल जाना चाहिये, अनेक

सद्गृहस्थ भी, अपने क्षेत्र में रहते हुए, योग्य सहायता करने की इच्छा रखते हैं। आगमोद्धार-साहित्य के लिये, हंसराजभाई ने अच्छा सहयोग दिया है। साहित्य-प्रकाशन के साथ ही साथ, मुनि-समाज में भी ज्ञान का प्रचार हो, इस प्रकार की योजना की अत्यन्त आवश्यकता है। जिस समाज में, सुन्दर साहित्य और अच्छे विद्वान् नहीं होते, उस समाज का अस्तित्व बहुत दिनों तक नहीं रह पाता। इसलिये त्यागीवर्ग में तो, निवृत्ति विशेष मिलने के कारण, ज्ञानविकास शीघ्र हो सकता है। मुनियों में, ज्ञान का प्रचार हो, उसके साथ ही साथ, पदवियों का भी विधान होना चाहिये। जिससे, उत्साह की वृद्धि हो। यदि, यह सब कार्य हमारे समाज के विद्वान् एकत्रित रहकर करें, तो सदैव के लिये एक सुव्यवस्थित कार्य हो जाय। इसके बाद, विद्यार्थियों के लिये पाठ्यक्रम, त्योंही व्याख्यातृवर्ग के लिये योग्यता, पदवी-प्रदान इत्यादि के सम्बन्ध में जो योजना उनके पास थी वह पढ़कर सभा को सुनाई।

आपके कथन का समर्थन करते हुए, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा, कि वास्तव में इस चीज की अनिवार्य आवश्यकता है। आपने, साहित्य के विषय में फरमाया, कि तत्त्वार्थाधिगम, जो कि हजार वर्ष से भी पहले का ग्रन्थ है, सूत्रों का साररूप है, ऐसा मुझे ज्ञान पड़ता है। उसमें, जहाँ-जहाँ उसके सूत्र हैं तहाँ-तहाँ उसी से मिलते-जुलते, सिद्धान्त के मालूम-पाठ भी रख दिये हैं, जिससे, एक तो वह स्वोपज्ञ नहीं है, यह सिद्ध होता है और दूसरे यह, कि सिद्धान्त उससे भी प्राचीन हैं। इस प्रकार के अनेक साहित्यों का प्रकाशन और विचारोत्तेजन हो सके, इसके लिए जो मुनिराज इस योजना में भाग ले सकें, वे सब एक ही जगह रहकर कार्य करें, तो काफी सफलता मिल सकती है, ऐसी मेरी दृढ़ मान्यता है।

श्री आनन्दऋषिजी महाराज ने भी, उपरोक्त कथन का समर्थन करते हुए कहा, कि स्थानकवासी समाज में दूसरे मतों का प्रतिकार करने वाला, एक भी ग्रन्थ नहीं है। आपने उदाहरण देते हुए बतलाया, कि भुसावल में, एक गृहस्थ ने मुझसे कहा, कि महाराज! भगवतीसूत्र में माँस भक्षण का पाठ आता है, ऐसा दिगम्बरी लोग कहते हैं। तो क्या यह बात सत्य है? मैंने, उसे आधुनिक कोश दिखला कर उसका समाधान करने का खूब प्रयत्न किया, किन्तु उसने कहा, कि जिसने मुझसे यह बात कही है वह आधुनिक कोशों को प्रमाण नहीं मानता। कोई और प्रमाण हो तो बतलाइये। इस तरह की अनेक बातें हैं, जिनके कारण मैं पूरी तरह समर्थन करता हुआ यह बात कहूँगा, कि मुनिराजों के लिये इस तरह की संस्था की आवश्यकता है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि भिन्न-भिन्न वक्ताओं ने, विद्याप्रचार के सम्बन्ध में जो सुन्दर भावना दिये हैं, उनके उन कथनों से मैं भी सहमत हूँ, लेकिन वह सब मण्डल के रूप में होकर नहीं। कारण, कि भिन्न भिन्न सम्प्रदाय के मुनियों का, साथ-साथ रहना सम्भव नहीं है। दूसरी बात यह, कि समिति आदि कार्य होने पर, मुनियों की प्रवृत्तियाँ बढ़ेंगी, जिनसे क्रिया को हानि पहुँचेगी। 'जहा दुमस्स पुप्फेसु' इस तरह मुनियों को रहना चाहिये। क्रिया के उद्धार से महापुरुषों—लवजी ऋषिजी आदि मुनियों ने शासन का उत्थान किया था। विरोध में मैं यह कहूँगा कि हम लोग आज सम्मेलन की सफलता और असफलता के झमेले में पड़ गये हैं। 'वीरसंमत्तदंसिणो नत्थि सफल हो सम्मतो' अर्थात वीर पुरुषों के लिये असफलता क्या चीज है? श्रावकों ने, जो कुछ खर्च आदि किया

हो, वह तीर्थ-दर्शन के लाभ के लिए है। इसलिये, जो कुछ हो चुका है, वह ठीक ही हुआ है और ठीक ही होगा। बाह्य-क्रिया भी आवश्यक है। केवल आध्यात्मिकता से ही कार्य नहीं चल सकता। साम्प्रदायिकता रखने के लिये यदि क्वचित् वल्लीकरण क्रिया भी करनी पडे, तो उसमे शास्त्रीय-बाधा नहीं आती।

इसके बाद, सभा का कार्य समाप्त हो गया।

दोपहर की कार्यवाही

आज दोपहर को, पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज और पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की सन्धि-सम्बन्धी वार्त्ता चलने के कारण, कोई कार्य न हो सका।

* * * * * * *

चौदहवें दिन, ता० १८—४—३३ ई० की कार्यवाही।

समय, सवेरे ९ बजे से ११ बजे तक।

प्रारम्भ में, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने स्तुति की। तत्पश्चात्, कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज ने फरमाया, कि आज मैं गुजराती भाषा में ही बोलूँगा। कारण कि उसे आप सब समझ सकते हैं। छः-सात दिन हो चुके हैं, तब से केवल गण-सम्बन्धी विचार ही चल रहा है। अब समय बहुत कम बाकी रह गया है इसलिये जितने गण बन गये हैं, वे गण के रूप में रहें और जो न बने हों, वे बनने का प्रयत्न करें। गण बनाने के लिये उन पर जोर डालने की आवश्यकता नहीं है। परन्तु जिन्होंने अभी तक कुछ नहीं किया है, वे धीरे-धीरे प्रेम बढ़ा कर गण बनावें अथवा समिति के रूप में ही संगठित हो जायें। अब इस सम्बन्ध में अधिक ऊहा-पोह करने की आवश्यकता नहीं है। हम लोगों के सम्मेलन की सफलता ही है। कारण, कि महा-पुरुषों के दर्शन हुए और परस्पर प्रेम की वृद्धि हुई। इससे अधिक और चाहिये भी क्या? जहाँ आन्तरिक-प्रेम है, वहीं सच्चा संगठन है। यदि प्रेम ही न होगा, तो संगठन टिकेगा कैसे? मैं फिर पहले दिन की याद दिलाऊँगा, कि श्री शतावधानीजी ने, गिरि पर चढने की बात कही थी और पूज्य हस्तीमलजी महाराज ने उत्थान के सम्बन्ध में कहा था। किन्तु ये दोनों कार्य तभी हो सकते हैं, जब कि बोझा कम हो जाय। जो कचरा भरा हुआ है, उसे निकाल डालना चाहिये। हम लोगों के धारा-धोरण या नियम, संयम का पालन करने के लिए हैं। धारा-धोरण शरीर की तरह हैं और संयम आत्मा की भाँति, यदि कोई कहे कि शरीर का त्याग कैसे किया जावे, तो मैं कहूँगा कि आत्मा के बिना शरीर किस काम का? अब, शास्त्रानुसार बर्ताव करने के सम्बन्ध में मैं यह कहूँगा, कि शास्त्र भी आन्तरिक क्रियाओं के लिये, बाह्य-क्रियाओं के बोधक हैं। आचारांगजी और दशवैकालिक-सूत्र में बहुत लिखा है और इसी तरह दूसरे सूत्रों में भी इस तरह के पाठ मिलते हैं, कि जो विधि-रूप होते हुये भी, हम लोगों को लोक-व्यवहार बाधित हैं। जिस तरह कि यदि साधु के पैर में काँटा चुभे, तो उसे गृहस्थ से न निकलवावें। हाँ, आर्याजी से निकलवा सकते हैं। किन्तु आचार्यों ने, देशकाल को देखते हुये ऐसा करने का निषेध कर दिया। जो-जो नियम देशकाल से न मिलते हों, संयम की वृद्धि के लिये उपयोगी न हों, उन नियमों को आचार्यगण बदल सकते हैं। वस्तुतः दस प्रकार के यति-धर्म पर ध्यान देना चाहिये। आज हम लोगों की क्या दशा है? विचार करने पर सरलता से जाना जा सकता है, कि क्या स्थिति है।

नवकोटि से प्रत्याख्यान करने वाले त्यागी को अन्तःकरण-पूर्वक पूछा जावे, कि क्या आपका शिष्य-मोह कम हुआ है ? पुस्तक पात्र, उपधि इत्यादि की ममता कम हुई है या नहीं ? और शिष्य के मोह के कारण गृहस्थियों से रुपये दिलवाना, यह सब क्या इस प्रकार के त्यागियों के लिए उपयुक्त है ? सच्चे संयम के विकास की बात पर तो आज ध्यान ही नहीं दिया जाता। कपड़े किस तरह के पहनने मुख पत्ती और ओघा किस तरह का रखना, उपाश्रय में उतरना या स्थानक में ? इत्यादि नियमों की खूब रचना की जाती है। मुनिवरो ! संयमी-जीवन का विकास हो, इस तरह के नियमों की रचना करो।

तत्पश्चात्, दीक्षा के अपवाद के नियम पर, कविवर ने यह नोट लिखवाया, कि—'दीक्षा के उम्मीदवार को योजित साधु-संस्था में दो वर्ष तक रख कर, वहाँ अभ्यास करवा एवं प्रकृति तथा स्वभाव का परिचय प्राप्त करके, योग्य-व्यक्ति को ही दीक्षा देनी चाहिये।'

आपका, युवक-मुनिराजों ने समर्थन किया।

दोपहर को कार्यवाही

समय २ बजे से ४ बजे तक।

स्तुति के पश्चात् शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि—आज तीन दिन की बैठकों का समय का व्यय सार्थक हुआ है। कारण कि आज पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के दोनों भागों की एकता हो गई है, पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज तथा पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज दोनों के उदारता-पूर्ण पारस्परिक मिलन से, आज सन्तोष उत्पन्न हुआ है।

इसके पश्चात् एक प्रस्ताव इस आशय का पेश हुआ कि सभी कोटी २ सम्प्रदायें, एक ही में मिल जायें और उनमें से मन्त्री आदि का चुनाव हो जाय। इस तरह चुने हुये मन्त्री अन्य मन्त्रियों के साथ मिल कर, स्थानकवासी-समाज की रक्षा-रक्षा का कार्य करें। इस प्रकार की मन्त्रियों की एक समिति की आवश्यकता है।

उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने कहा कि आज, हम लोगों को शान्ति रखनी चाहिये। हम लोगों में परस्पर प्रेम की वृद्धि कैसे हो उस प्रकार के कार्य करने चाहिए। मैं भी मानता हूँ, कि इस प्रकार की समिति की परम आवश्यकता है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने इस प्रस्ताव पर अपना नोट देना चाहा। किन्तु, युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज ने कहा कि नियम तो यह है कि जो नोट दे उसे प्रस्ताव स्वीकार ही करना चाहिये। यदि प्रस्ताव से सहमत न हों तो फिर नोट देने की भी क्या आवश्यकता है ?

यह प्रस्ताव सर्वानुमति से स्वीकृत हुआ।

तत्पश्चात् निम्न प्रस्ताव सभा के सम्मुख पढ़कर सुनाये गये —

(३८) किसी भी सम्प्रदाय के वैरागी-वैरागिनि या शिष्य-शिष्या को, अपनी सम्प्रदाय में मिलाने के लिए न भरमाया जावे।

(३६) साहित्य-योजकमण्डल, व्याख्यातृ शिक्षणमण्डल तथा अध्ययनकर्तृ-मण्डल में, जो भी मुनि, सम्पादक, अध्यापक, वक्ता या विद्यार्थी के रूप में दाखिल हों, वे अपनी मर्जी से, परस्पर बारह प्रकार के सम्भोग खुले रख सकते हैं।

(४०) प्रस्ताव नं० ३६ में लिखे अनुसार, ज्ञानप्रचारक-मण्डल की तीन प्रकार की योजना (साहित्ययोजकवर्ग, व्याख्यातृवर्ग और विद्यार्थीवर्ग) की कार्यवाही करने तथा किस प्रकार का साहित्य प्रकाशित होना चाहिये, इस बात का निर्णय करने के लिये, निम्नलिखित मुनियों की समिति कार्य करेगी –

(१) श्री शतावधानीजी महाराज
(२) श्री आनन्दऋषिजी महाराज
(३) पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
(४) उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
(५) मुनि श्री चाँदमलजी महाराज
(६) मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज
(७) प० श्री हर्षचन्द्रजी महाराज

(४१) शास्त्रानुसार, तेलादितप तक धोवण लिया जावे, परन्तु, उसके बाद की तपस्या यदि धोवणपानी का उपयोग करके की जावे, तो उसे अनशन में नहीं मिला सकेंगे।

(४२) लोकव्यवहार में जिसका व्यवहार शुद्ध है, उस प्रकार के साधु-साध्वियो के साथ, परस्पर प्रेम, सत्कार और सम्मान के साथ व्याख्यान देना आदि वात्सल्यभाव रखना चाहिये।

(४३) स्थानकवासी-साधुसमाज में, किसी भी सम्प्रदाय या व्यक्ति के विरुद्ध निकलने वाले हैण्डबिलों को, उपदेश देकर रोका जाय।

(४४) स्वसम्प्रदाय या अन्य सम्प्रदाय के मुनियों की लघुता बतलाने के भाव से, उस सम्प्रदाय के आचार्य अथवा प्रमुख-मुनिराज को सूचित किये बिना, गृहस्थों के सन्मुख उनके दोष न प्रकट किये जायँ।

(४५) बिना नाम के जो पत्र आवें, उन पर कोई ध्यान न दिया जाय।

(४६) एकलविहारी मुनियों को, यह सम्मेलन सूचित करता है, कि वे छः मास के भीतर ही, कम से कम दो को सख्या में सगठित हो जायँ और जो उचित समझें, वे अपनी ही सम्प्रदाय में फिर मिलकर, उस सम्प्रदाय के आचार्य अथवा जिस सम्प्रदाय में आचार्य न हों, उस सम्प्रदाय के मुख्य-मुनि की आज्ञा में विचरें। इस तरह विचरने वाले मुनि ही सम्मेलन की आज्ञा में गिने जावेंगे। अन्यथा, उस प्रकार के मुनिराजों के साथ, आहार-पानी और मकान के अतिरिक्त, और किसी भी तरह का सत्कार-सम्बन्ध श्रीसघ न रख सकेगा।

इस प्रश्न का शीघ्र निर्णय करने के लिये, एकलविहारी और स्वच्छन्दाचारियों से निवेदन है, कि वे साधु-समिति को अपनी बातें बतलावें, जिन्हें ध्यान में रखकर समिति उचित निर्णय कर सके।

(४७) एक से अधिक की सख्या में विचरने वाले, जो कि आचार्य अथवा गुरू की आज्ञा के विरुद्ध, स्वच्छन्दतापूर्वक विचरते हैं, उस तरह के मुनिराजों को, एक वर्ष के भीतर ही अपनी सम्प्रदाय में

मिल जाना चाहिये या किसी और सम्प्रदाय में मिल जाना चाहिये। ऐसा करने वाले, साधु-सम्मेलन की आज्ञा में ही गिने जावेंगे। अन्यथा, उस प्रकार के मुनिराजों के साथ भी एकलविहारियों का-सा वर्ताव रक्खा जाय।

(४८) आचार्य तथा सम्प्रदाय के मुख्य-मुनिराजों से नम्र निवेदन है, कि उन्हें प्रकृति या ज्ञान की कमी के कारण अपने से अलग हुए मुनिराजों को, अपनी सम्प्रदाय में मिला लेने के लिये, लगातार बारह महीने तक प्रयत्न करना चाहिये। फिर भी यदि वे न मिल सकें, तो उन्हें अन्य सम्प्रदाय में चले जाने की आज्ञा दे देनी चाहिये।

नोट —४९ और ५० नं के प्रस्ताव सभा के बहुमत के विरोध के कारण अस्वीकृत हो गये थे।

(५१) टिकिट लगे हुए कार्ड या लिफाफे, अपने पास न रक्खे जावें।

(५२) फाउन्टेनपेन, घड़ियाँ लाकर भी अपने उपयोग में न ली जाय।

(५३) प्रतिदिन साधु-साध्वीजी, सबेरे प्रार्थना करें। जिसमें लोगस्स अथवा नमोत्थुणं की स्तुति करें।

(५४) नई समकित देते समय प्रत्येक पंचमहाव्रतधारी को अपने गुरु के सदृश माने, इसी प्रकार का बोध दिया जाय।

(५५) प्रस्ताव नं० ३१ में लिखे अनुसार उसी प्रकार की संस्था साध्वीजी के लिये भी होनी चाहिये। जिसमें साध्वीजी तथा गृहस्थ बाइयाँ शिक्षा दें। इस तरह की व्यवस्था हो जाने के बाद, आर्याजी को पुरुष शिक्षक से शिक्षा प्राप्त करवाने का नियम बन्द कर दिया जाय।

(५६) ज्ञान प्रचारक मण्डल की योजना के अनुसार संस्था की स्थापना हो जाने के पश्चात्, भिन्न २ स्थानों पर शास्त्री रखने की प्रणाली बन्द कर दी जाय।

(५७) अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी मुनि सम्मेलन की योजना के जन्मदाता (उत्पादक) पंजाब केसरी पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज का यह मुनि सम्मेलन अन्तःकरणपूर्वक आभार मानता है और उन महानुभाव के आशीर्वाद तथा अनुमत की निरन्तर आशा करता है।

सर्वानुमति से स्वीकृत।

(५८) इस साधु सम्मेलन की योजना को पूर्ण करने के लिये अविश्रान्तरूप से प्रयत्न करने वाले अखिल भारतीय स्थानकवासी जैन कान्फ्रेंस के सदस्यों तथा स्थानकवासी साधु सम्मेलन-समिति के सभ्यों की धर्म भावना के सम्बन्ध में, यह सम्मेलन हार्दिक प्रमोद प्रकट करता है।

बहुमत से स्वीकृत।

(५९) मरुभूमि के निवासी मुनिराजों ने स्वयंसेवक के रूप में रहते हुए, दूर २ से पधारने वाले मुनिराजों की परिचर्या का लाभ उठाया है। इसके लिये यह सम्मेलन उन्हें धन्यवाद देता है।

(६०) दूर २ से, अनेक प्रकार के परीषह सहन करते हुए, जो २ मुनिराज यहाँ पधारे हैं और यहाँ पधार कर जिन्होंने अपने अनुभव का लाभ देकर, सम्मेलन को सफल बनाने का पूरी तरह प्रयत्न किया है तथा सहायता पहुँचाई है, उन सभी महानुभावों का यह सम्मेलन उपकार मानता है।

(६१) इस सम्मेलन के प्रतिनिधियों की बैठक में शान्ति बनाये रखने के लिये, शान्तिरक्षक का कार्यभार सम्हालते हुए, गणि श्री उदयचन्द्रजी महाराज और शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज ने सम्मेलन का कार्य सुचारु रूप से समाप्त किया है, जिसके लिये यह सम्मेलन उनका आभार मानता है।

(६२) मुनि सम्मेलन जैसे अपूर्व अवसर की स्थायी स्मृति के लिये, अखिलभारतवर्षीय स्थानकवासी जैन, चैत्र शु० १० का दिन स्थानकवासी साधु सम्मेलन-जयन्ती के रूप में मनावें और उस दिन सम्मेलन में बनाये हुए नियमो की समालोचना करें, ऐसी इस सम्मेलन की इच्छा है।

(६३) जिन २ सम्प्रदायों ने सम्मेलन से पूर्व या सम्मेलन के पश्चात अपना सगठन किया है, उन सभी को यह सम्मेलन धन्यवाद देता है।

(६४) सम्मेलन की सफलता और उसके प्रति सहानुभूति प्रकट करने वाले, जो २ सन्देश प्राप्त हुए हैं, उनकी शुभ भावनाओं को, यह सम्मेलन सादर स्वीकार करता है।

(६५) प्रत्येक सम्प्रदाय के मुख्य मुनिराजों से, यह सम्मेलन प्रार्थना करता है, कि उन्हें अपनी सम्प्रदाय की आर्याओं का भी सुव्यवस्थित संगठन करना तथा उनमें ज्ञान की वृद्धि हो, ऐसे उपायों की योजना करनी चाहिये।

(६६) अधिक से अधिक ११ वर्ष में तो प्रत्येक प्रान्त के मुनिराजों का सम्मेलन फिर होना ही चाहिये, ऐसी इस सम्मेलन की इच्छा है।

(६७) सम्मेलन के अवसर पर पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय के पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज और पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने, त्योंही पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय के पूज्य श्री ज्ञानचन्द्रजी महाराज के मुनि तथा पूज्य माधव मुनि महाराज के मुनियों ने परस्पर संगठन कर लिया, जिसके लिये यह सम्मेलन अपना प्रमोद प्रकट करता है।

(६८) भिन्न २ प्रदेशों में विचरने वाली साध्वीजी भी, अनुकूलता देखकर अपने प्रान्तीय सम्मेलन करें।

(६८ क) इस सम्मेलन में पास हुए सभी प्रस्तावों का सम्यक्प्रकारेण पालन करने के लिये, यह सम्मेलन चतुर्विधि श्रीसघ से प्रार्थना करता है।

(६९) मुनि महाराज भी, अपने उपदेश में श्रावकों से यही कहें, कि पचमहाव्रतधारी प्रत्येक साधु-साध्वी का सत्कार करना चाहिये। साथ ही, उनके व्याख्यान का भी लाभ उठाना चाहिये।

(७०) श्री वर्द्धमान शासन संघ की स्थापना करके बत्तीसों सम्प्रदायों को एक ही सूत्र में ग्रथित करना इस सम्मेलन का ध्येय है। इसलिये, जबतक दूसरा सम्मेलन न हो, तबतक निकटवर्ती-सम्प्रदायें एक दूसरे से मिलकर, वर्धमान शासन सघ की सफलता के लिये, क्षेत्र की विशुद्धि करें, यह इस सम्मेलन की प्रार्थना है।

* * * * * * *

साधु सम्मेलन की ओर से, कान्फ्रेंस के नवमे अधिवेशन का ध्यान खींचने के लिये सूचनायें

(१) सादड़ी (मारवाड़) वाले स्वधर्मी-भाइयों की धर्मवृद्धि तथा उनकी रक्षा के लिये, पर्याप्त ध्यान देना।

(२) कन्याविक्रय, मृत्युभोज वृद्धविवाह, बालविवाह, कुमेल-विवाह आदि कुरीतियां रोकने तथा अनावश्यक खर्च कम करने का प्रयत्न करना।

(३) जैन-जाति में, किसी भी प्रसंग पर, आतिशबाजी, वेश्यानृत्य इत्यादि कुरीतियों का सर्वथा त्याग समझा जाय, इसके लिये प्रयत्न करना।

(४) अहिंसा की दृष्टि से देखते हुए, हाथीदांत के चूड़े आदि जो रूढ़ परम्परा के कारण उपयोग में लिये जा रहे हैं, उनका पूर्णतया निषेध करना।

(५) जैन धर्म का प्रचार बढ़े, इसके लिये जैनेतर वर्ग के जिस व्यक्ति ने जैन धर्म स्वीकार किया हो, उसके प्रति भी सहानुभूति एवं प्रेमभाव की वृद्धि की जाय। अर्थात् उसके साथ भी समान भाव रक्खा जाय।

(६) विदेशों में भी जैन धर्म का प्रचार किया जाय।

(७) समाज में, शिक्षा का प्रचार किया जाय।

(८) अनाथ तथा विधवा-बहिनों इत्यादि दुःखी स्वधर्मी बन्धुओं तथा बहिनों की रक्षा करना।

(९) अश्लील गीतों तथा वचनों के प्रयोग और ठूँटिया जैसी गन्दी-रूढ़ि आदि कुरीतियों का सर्वथा त्याग करना।

(१०) तपोत्सव तथा चातुर्मास में दर्शन करने के लिये, यदि भाविकगण जायें, तो उन्हें बारी २ से लोगों के घर अथवा पंचायती रसोड़े में भोजन न करना चाहिये।

(११) दीक्षामहोत्सव तपमहोत्सव तथा संथारे के प्रसंग पर, आमन्त्रण-पत्रिकाएँ न भेजी जावें। इसी तरह क्षमापणा-पत्रिका भी न भेजी जाय।

उपरोक्त बातों पर, कान्फ्रेंस में प्रस्ताव लाकर विचार होना उचित है।

पन्द्रहवें दिन ता० १६ ४ ३३ की कार्यवाही।

समय, सवेरे ९ बजे से ११ बजे तक।

शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के स्तुति कर चुकने पर, उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज ने फरमाया कि आज नित्य पिण्ड और प्रतिक्रमण का निर्णय हो जाना चाहिए। सब से

पहले, यह जानने की आवश्यकता है, कि नित्यपिण्ड का अर्थ क्या है? मैं मानता हूँ, कि—'नियागं अभिहिडाणिय' वहां टीकाकार ने, नियाग का आमन्त्रित-पिण्ड अर्थ क्या है। और वह अनाचीर्ण है।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा, कि नित्यपिण्ड का अर्थ परम्परा से तो यह होता है, कि सदैव का आहार। और इसलिये एक ही घर का आहार, एक दिन छोड़कर लिया जा सकता है, यह प्रणाली प्रायः सर्वत्र व्याप्त है।

मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज ने कहा, कि नित्यपिण्ड अनाचीर्ण है, ऐसा मानने पर, कोई अनाचीर्ण नित्यपिण्ड सूचक न आने के कारण, प्रमाण नहीं मिल सकता। फिर आमत्रित-पिण्ड और नित्यपिण्ड में महान् अन्तर है। नित्यपिण्ड के निषेध का कारण यह है कि एक ही घर से सदैव लेने पर आधाकर्मादि दोष की सम्भावना रहती है। इसी उद्देश्य से, टालने का विधान होना चाहिये। अन्यथा, अतिथिसंविभाग में तो, श्रावक को प्रतिदिन भावना करना कर्त्तव्य है। परन्तु, मुनिधर्म तथा श्रावकधर्म इन दोनों का ध्येय भक्ति और संयमनिर्वाह है। इसलिये, नित्यपिण्ड के सम्बन्ध मे, जो परम्परा चल रही है, वही उचित है।

मुनि श्री कुन्दनलालजी महाराज ने, निम्नलिखित प्रश्न सभा के सन्मुख उपस्थित किये।

(१) पन्नवणासूत्र के नवमे-पद में, तीन प्रकार की योनिया वतलाई हैं। सचित्त, अचित्त और मिश्र। ये तीनों पैदा हो सकती हैं या नहीं?

(२) धान्यवर्ग में, जो २४ प्रकार का अनाज बतलाया है, और जिनकी आयुष्य सूत्रों में ३ से लगाकर ६ वर्ष तक लिखा है, उन्हें नियमित-अवधि के पश्चात् सचित्त समझा जाय या अचित्त?

(३) पांचों स्थावरों में एक जीव रहता है या नहीं? यदि एक ही जीव रहता है तो उसकी आहारविधि क्या है?

इन प्रश्नों के साथ ही, आपने अपना यह निश्चय भी प्रकट किया, कि सम्मेलन में, इन प्रश्नों का बहुमत से जो निर्णय होगा, वह मुझे मान्य होगा।

इन प्रश्नों का निर्णय करने के लिये निम्नलिखित आठ सभ्यों की एक समिति बना दी गई।

१—पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज
२—पूज्य श्री छगनलालजी महाराज
३—पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
४—मुनि श्री मणिलालजी महाराज
५—युवाचार्य श्री नागचन्द्रजी महाराज
६—कविवर श्री नानचन्द्रजी महाराज
७—मुनि श्री समर्थमलजी महाराज
८—मुनि श्री श्यामजी महाराज

सलाहकार पूज्य श्री जवाहिरलालजी म०

उपरोक्त आठ सदस्यों ने, छः के बहुमत से, निम्न निश्चय किया।

सचित्त, अचित्त और मिश्र, इन तीनों योनियों से जीव पैदा हो सकते हैं।

चौबीस प्रकार के धान्य, शास्त्रीय प्रमाण से तो वर्ष, पांच वर्ष या सात वर्ष के परचात बीज रहित हो जाते हैं। साथ ही योनि का भी विध्वंस हो जाता है। इसलिये, अबीज और अयोनि-धान्य अचेत होना ही सम्भव है।

शास्त्र में, "बीयाणि हरियाणि य परिवज्जन्तो चिट्ठेज्जा" इत्यादि स्थान में, बीज के संघट्ट का सूत्रकार निषेध करते हैं। किन्तु, अबीज का नहीं। और स्थानांगादि सूत्र में भी, ३, ५, ७ वर्ष के बाद बीज को अबीज कहा है। इसलिये अबीज को अचित मानना आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। परन्तु लोक व्यवहार के लिये संघट्ट न करना चाहिये, बल्कि संघट्ट टाल देना चाहिये।

चार स्थावर से, भिन्न-भिन्न वनस्पतियों का निरूपण शास्त्र में मिलता है। जिस तरह की ३, ५, ७ वर्ष तक धान्य बीज के रूप में रह सकता है। बीज सचित्त होने के कारण, सूत्रों में अनेक जगह उसके संघट्ट का निषेध किया है। इसलिये प्रत्येक बीज में एक जीव का होना, आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। आहार का विधान चूंकि वनस्पति की अनेक जातियां हैं इसलिए यह निश्चय ज्ञानीगम्य है।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही

समय, २॥ बजे से ४ बजे तक।

प्रतिक्रमण के विषय में, खूब चर्चा हुई। अन्त में यह प्रस्ताव पेश हुआ, कि इस सम्बन्ध में कमेटी जो निर्णय करे, वह स्वीकार किया जाय। परन्तु, मारवाड़ी मुनिराजों तथा पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनिराजों ने, कुछ विरोध प्रकट किया। यह प्रस्ताव सर्वमान्य होने पर ही पास हुआ समझ जाने को था, इसलिये उसे निकाल डाला गया। और भी अनेक प्रस्ताव सभा के सम्मुख रक्खे गये, जिनमें से पास हुए प्रस्ताव, पहले लिख चुके हैं। इसी समय, पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय में से माधव मुनि के मुनियों और ज्ञानचन्द्रजी महाराज के मुनियों—जो १५-२० वर्षों से पृथक २ विचरते थे, के संगठन का समाचार सुनकर, सभा में हर्ष फैल गया। इसके परचात, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के मंगलमय-मंगलाचरण के साथ जो प्रस्ताव पास हुए थे, उन्हें फिर सुनाने के लिये, ता० २१ का दिन निश्चित किया गया। शेष कार्य का भार, पक्खी-संवत्सरी निर्णायक-समिति, ज्ञानप्रचारक समिति और सचित्ताचित्त-निर्णायक समिति पर छोड़ दिया गया।

* * * * * * *

सोलहवें दिन, ता० २०-४-३३ की कार्यवाही।

समय, सवेरे ८॥ बजे से ११ बजे तक।

विधि-निर्णायक-समिति का खानगी-कार्य प्रारम्भ हुआ। पहले, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी म० ने मंगलस्तुति की और कहा, कि शासनदेव सब को सद्बुद्धि दे और हम लोगों का यह विषय शीघ्र ही समाप्त हो जाय यही मेरी इच्छा है।

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने, नियमावली सुनाई।

(१) अरिहन्थ सिद्ध भगवान् की साक्षी से, निष्पक्ष भावना और सघहित की दृष्टि से कार्य करेंगे।

(२) यदि किसी गृहस्थ या साधु की, इस विषय में सलाह लेने की आवश्यकता जान पड़े, तो सब की सम्मति से उन्हें बुलाया जाय।

(३) जो प्रस्ताव समिति के सन्मुख आवें, वे बहुमत से स्वीकृत होने पर स्वीकृत समझे जायँ।

(४) जिससे सलाह लेनी हो, उससे कमेटी में ही ली जावे और दूसरी बातो का उसे पता न लगने दिया जाय।

(५) जो निर्णय हो, वह शास्त्र का अविरोधी तो हो ही, लेकिन प्रत्यक्ष को भी दृष्टि में रखकर होना चाहिये।

(६) लौकिक-लौकोत्तर अविरोध और मध्यम श्रेणी का निर्णय करके, तिथिपर्व का निर्णय करना चाहिये।

(७) कमेटी में जो चर्चा हो, उसका वर्णन अन्य प्रतिनिधियों अथवा दूसरों के सन्मुख न किया जाय।

(८) जबतक कमेटी कोई पूरा निर्णय न कर सके, तबतक, यदि बीच में प्रस्ताव स्थगित करने का प्रसग आवे, तो सर्वसम्मति से किया जाय।

(९) कमेटी के सात मेम्बरों के नाम—

१—गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज
२—मुनि श्री मणिलालजी महाराज
३—शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
४—उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
५—मुनि श्री पन्नालालजी महाराज
६—मुनि श्री चतुरभुजजी महाराज
७—युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज

समिति के सलाहकार, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज और वक्तव्य लेखक श्री मदनलालजी महाराज तथा श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज होंगे।

(१०) समिति, सवेरे ८॥ बजे से ११ बजे तक और दोपहर को १॥ बजे से ४ बजे तक कार्य करेगी।

(११) समिति के कार्यकाल मे, यदि व्याख्यान आदि का प्रसग पड़े, तो कमेटी का कार्य स्थगित कर दिया जाय।

तत्पश्चात्, मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने, अपना वक्तव्य यों दिया—

यदि, सभी बातों का निर्णय करने में हम लोग लगेंगे, तो कार्य न हो सकेगा और समय बहुत खर्च हो जायगा, इसलिये ऐसा करना चाहिये, जिससे मध्यम मार्ग निकल आवे। श्री समवायांग सूत्र की प्राचीन-प्रति में, नवासी पक्ष आदि गिने हैं और निर्वाण के बाद पैंतीस पक्ष रहते हैं। अब, सौलह प्रतियों

चौबीस प्रकार के धान्य, शास्त्रीय प्रमाण से तीन वर्ष, पांच वर्ष या सात वर्ष के पश्चात बीज रहित हो जाते हैं। साथ ही योनि का भी विध्वंस हो जाता है। इसलिये, अबीज और अयोनि-धान्य अचेत होना ही सम्भव है।

शास्त्र में, "बीयाणि हरियाणि य परिवज्जन्तो चिट्ठेज्जा" इत्यादि स्थान में, बीज के संघट्ट का सूत्रकार निषेध करते हैं। किन्तु, अबीज का नहीं। और स्थानांगादि सूत्र में भी, ३ ५, ७ वर्ष के बाद बीज को अबीज कहा है। इसलिये अबीज को अचित्त मानना आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। परन्तु लोक व्यवहार के लिये संघट्ट न करना चाहिये, बल्कि संघट्ट टाल देना चाहिये।

चार स्थावर से भिन्न-भिन्न वनस्पतियों का निरूपण शास्त्र में मिलता है। जिस तरह की ३, ५, ७ वर्ष तक धान्य बीज के रूप में रह सकता है। बीज सूचित्त होने के कारण, सूत्रों में अनेक जगह उसके संघट्ट का निषेध किया है। इसलिये प्रत्येक बीज में एक जीव का होना, आगम प्रमाण से सिद्ध होता है। आहार का विधान, चूंकि वनस्पति की अनेक जातियां हैं इसलिए यह निश्चय ज्ञानीगम्य है।

* * * * * * *

दोपहर की कार्यवाही

समय, २।। बजे से ४ बजे तक।

प्रतिक्रमण के विषय में, खूब चर्चा हुई। अन्त में यह प्रस्ताव पेश हुआ, कि इस सम्बन्ध में कमेटी जो निर्णय करे, वह स्वीकार किया जाय। परन्तु, मारवाड़ी मुनिराजों तथा पूज्य श्री धर्मसिंहजी महाराज की सम्प्रदाय के मुनिराजों ने, कुछ विरोध प्रकट किया। यह प्रस्ताव सर्वमान्य होने पर ही पास हुआ समझ जाने को था, इसलिये उसे निकाल डाला गया। और भी अनेक प्रस्ताव सभा के सम्मुख रक्खे गये, जिनमें से पास हुए प्रस्ताव, पहले लिख चुके हैं। इसी समय, पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज की सम्प्रदाय में से माधव मुनि के मुनियों और ज्ञानचन्द्रजी महाराज के मुनियों—जो १५-२० वर्षों से पृथक २ विचरते थे के संगठन का समाचार सुनकर, सभा में हर्ष फैल गया। इसके पश्चात, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज के मंगलमय-मंगलाचरण के साथ जो प्रस्ताव पास हुए थे, उन्हें फिर सुनाने के लिये, ता० २१ का दिन निश्चित किया गया। शेष कार्य का भार, पक्खी-संवत्सरी निर्णायक-समिति, ज्ञानप्रचारक समिति और सचित्ताचित्त निर्णायक समिति पर छोड़ दिया गया।

* * * * * * *

सोलहवें दिन, ता० २०-४-३३ की कार्यवाही।

समय, सवेरे ८।। बजे से ११ बजे तक।

तिथि-निर्णायक-समिति का खानगी-कार्य प्रारम्भ हुआ। पहले, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी म० ने मंगलस्तुति की और कहा, कि शासनदेव सब को सद्बुद्धि दे और हम लोगों का यह विषय शीघ्र ही समाप्त हो जाय ऐसी मेरी इच्छा है।

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने, नियमावली सुनाई।

(१) अरिहन्थ सिद्ध भगवान् की साक्षी से, निष्पक्ष भावना और संघहित की दृष्टि से कार्य करेंगे।

(२) यदि किसी गृहस्थ या साधु की, इस विषय में सलाह लेने की आवश्यकता जान पड़े, तो सब की सम्मति से उन्हें बुलाया जाय।

(३) जो प्रस्ताव समिति के सन्मुख आवें, वे बहुमत से स्वीकृत होने पर स्वीकृत समझे जायँ।

(४) जिससे सलाह लेनी हो, उससे कमेटी में ही ली जावे और दूसरी बातों का उसे पता न लगने दिया जाय।

(५) जो निर्णय हो, वह शास्त्र का अविरोधी तो हो ही, लेकिन प्रत्यक्ष को भी दृष्टि में रखकर होना चाहिये।

(६) लौकिक-लौकोत्तर अविरोध और मध्यम श्रेणी का निर्णय करके, तिथिपर्व का निर्णय करना चाहिये।

(७) कमेटी में जो चर्चा हो, उसका वर्णन अन्य प्रतिनिधियों अथवा दूसरो के सन्मुख न किया जाय।

(८) जबतक कमेटी कोई पूरा निर्णय न कर सके, तबतक, यदि बीच में प्रस्ताव स्थगित करने का प्रसग आवे, तो सर्वसम्मति से किया जाय।

(९) कमेटी के सात मेम्बरों के नाम—

१—गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज
२—मुनि श्री मणिलालजी महाराज
३—शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी महाराज
४—उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
५—मुनि श्री पन्नालालजी महाराज
६—मुनि श्री चतुरभुजजी महाराज
७—युवाचार्य श्री काशीरामजी महाराज

समिति के सलाहकार, पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज और वक्तव्य लेखक श्री मदनलालजी महाराज तथा श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज होंगे।

(१०) समिति, सवेरे ८॥ बजे से ११ बजे तक और दोपहर को १॥ बजे से ४ बजे तक कार्य करेगी।

(११) समिति के कार्यकाल में, यदि व्याख्यान आदि का प्रसंग पड़े, तो कमेटी का कार्य स्थगित कर दिया जाय।

तत्पश्चात्, मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने, अपना वक्तव्य यों दिया—

यदि, सभी बातों का निर्णय करने में हम लोग लगेंगे, तो कार्य न हो सकेगा और समय बहुत खर्च हो जायगा, इसलिये ऐसा करना चाहिये, जिससे मध्यम मार्ग निकल आवे। श्री समवायांग सूत्र की प्राचीन-प्रति में, नवासी पक्ष आदि गिने हैं और निर्वाण के बाद पैंतीस पक्ष रहते हैं। अब, सौलह प्रतियों

में से एक प्रति तेरहवीं सदी की है और उसमें ऐसा पाठ मिलता है। इसलिये युग के आदि का निर्णय नहीं हो सकता। सौ वर्ष में ७४ दिन का अन्तर आता है। और यदि विकल्प के २० दिन भी इसमें जोड़े जावें, तो ९४ दिन हो जाते हैं। पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज के अन्तर से मेरा समाधान नहीं हुआ। युग की आदि, आपी पावसऋतु से गिनी जाती है और चन्द्रऋतु आधी हेमन्तऋतु से गिनी है। इसी कारण, युग की आदि निकालना कठिन है। कारण कि काल का वर्णन तथा आयुष्य, ऋतुसंवत्सर पर है, किन्तु नक्षत्र-संवत्सर के साथ उसका संयोग करना पड़ता है। ऐसी स्थिति में, किस संवत्सर के आधार पर उसका विचार करना चाहिये। युग की आदि के सम्बन्ध में तीन मत हैं। (दीवालीकल्प, कल्पसूत्र आदि में) पहले मत के अनुसार, वीर स० ४७० वर्ष पश्चात् विक्रम सं० का प्रारम्भ हुआ। दूसरे मत में तेरह वर्ष का और तीसरे मत के अनुसार १६ वर्ष का अन्तर आता है। ऐसी स्थिति में तीनों मतों पर विचार करने पर, युगादि समय का निर्णय नहीं हो सकता। फिर दिन (वार) की चर्चा जैन सूत्रों में नहीं है तो युगादि का कौनसा दिन निकाला जाय।? यह निश्चित नहीं हो पाता। पक्खी चौमासी, संवत्सरी इत्यादि पर्वतिथियाँ चन्द्रसंवत्सर पर ग्रहण की जावें या ऋतुसंवत्सर पर इसका निश्चय नहीं हो पाता। लौकिक में १६ वर्षों में ७ अधिकमास आते हैं और बत्तीस वर्षों में पन्द्रह आते हैं जब कि जैनसिद्धान्तानुसार बीस वर्ष में आठ अधिकमास तथा चालीस वर्ष में सोलह अधिक मास होते हैं? यह अन्तर कैसे निकाला जाय? सिद्धान्त की अपेक्षा से दिनमान ३६ घड़ी का है और लौकिक में ३४ के आसपास है। इसलिये, यह बात भी विचारणीय है। देशान्तरणी का भी विचार करने की आवश्यकता है। लौकिक पंचांग में,, "अर्कमानु" इस तरह संक्रान्ति में २४ दिन का अन्तर है। इसे मानते हुए, सिद्धान्त की आराधना नहीं हो सकती। इसलिये, कोई बीच का मार्ग ढूंढ निकालना चाहिये।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा कि—ज्योतिष के सम्बन्ध में, अमरिका के ज्योतिषी भी निर्णय नहीं कर सकते। जैनपंचांग के सम्बन्ध में, अभी हम लोग कोई निर्णय कर सकें, इतनी शक्ति नहीं है। इसलिये, लौकिक से बहुत-विरुद्ध न जाकर कोई मध्यम-निर्णय होना चाहिये।

मुनि श्री चतुरलालजी महाराज ने कहा, कि शास्त्र में पांच प्रकार के संवत्सर कहे हैं। नक्षत्र ऋतु चन्द्र सूर्य और अभिवर्द्धन। हम लोगों को तिथि का निर्णय करना है, इसलिये चन्द्रसंवत्सर देखने की आवश्यकता है। कारण कि तिथि चन्द्र की कला है। इसलिये सूर्य संवत्सर के अन्तर के साथ हमारा कोई मतलब नहीं है। चन्द्र और सूर्य के मिलन के पश्चात् जब पार्थक्य होता है, तब बारह अंश के लगभग पार्थक्य का नाम तिथि और फिर एकत्रित होने का नाम अमावस्या है। चन्द्रमा की चाली तीन प्रकार की है। उत्कृष्टा, मध्यमा और स्पष्टा। ग्रहों के आकर्षण के अनुसार इसमें घटबढ़ होती रहती है। इसके विरुद्ध जैन मत में तो स्पष्ट ही मध्यम प्रमाण ले लिया है, उसमें किसी समय हानि वृद्धि का हिसाब ही नहीं रक्खा है। लौकिक-दृष्टि से देखने पर किसी समय बढ़कर ६० और कभी घट-कर ५४ हो जाता है यह जैनमत का अन्तर है। इसलिये उसका निर्णय नहीं हो सकता।

गणी श्री उदयचन्द्रजी महाराज ने पूछा कि हायमान और वर्धमान की परीक्षा किस तरह हो? ज्यो पर मिला कि मरती आना और चन्द्रदर्शन होना ये दो स्पष्ट प्रमाण हैं।

मुनि श्री चतरलालजी महाराज ने कहा, कि पचाग किसे कहते हैं, इस बात पर विचार करना चाहिये। पचाग यानी पांच अग। पहला तिथि, दूसरा वार। वार के सम्बन्ध में वे किस तरह गणना करते हैं, इसके निम्न कोष्टक है।
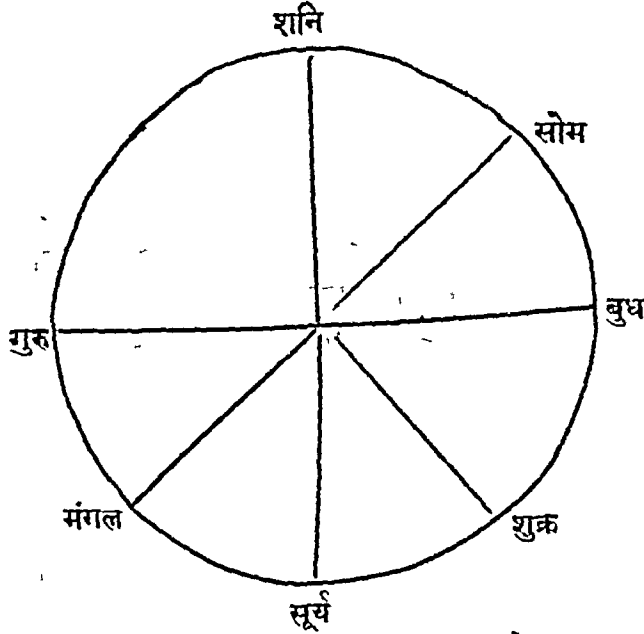
इसमें पहला वार शनि है। कारण, कि वह सब से अन्तिम है। दूसरा वार निकालना हो, तो बीच के दो छोड़कर तीसरा लिया जाय, इस तरह अनुक्रम से सातों वार आजावेंगे। तीसरा अग नक्षत्र है। आकाश के १८० भाग किये हैं। ये भाग नित्य दीख पड़ते हैं और शेष १८० भाग गुप्त हैं। इन तीन-सौ साठ भागों को, बारह राशियों में विभक्त किया है। इस तरह तीस भाग आये, जिनका नाम है—दिवस। ताराओं के समूह का नाम नक्षत्र है। जिस नक्षत्र के साथ चन्द्रमा होता है, वही नक्षत्र गिना जाता है। चन्द्रमा, सूर्य से मिलकर फिर पृथक हो जाय, इसका नाम है चन्द्रमास। इस तरह के बारह मिलकर चन्द्रसवत्सर कहलाता है। अब प्रश्न यह है, कि तिथि कैसे टूटी जाती है? यह जांचना चाहिये। जैनसिद्धान्त में, मध्यम-प्रमाण ही लिया है, जब कि पचाग में स्पष्ट-चाल ली गई है। ऐसी सूरत में, इन दोनों का मिलान कैसे हो सकता है?

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने कहा—मुझे तो ऐसा जान पडता है, कि हमारे महापुरुषों ने, लोगों को इस झगड़े में न डालकर, निवृत्ति रखने के लिये ही इस तरह से कहा होगा।

मुनि श्री चतुरलालजी महाराज ने कहा—मुझे तो ऐसा जान पड़ता है, कि वार स्पष्ट हैं, इसलिये वे देने की जैन शास्त्रकारों को आवश्यकता नहीं जान पडी। पौषध के लिये भी तिथि का विधान है और अन्य दर्शन में गीताजी में भी तिथि ही रक्खी गई है। जितने आर्य हैं, वे वार को अधिक महत्व नहीं देते। अनार्यों में तो वह प्रथा है ही। बीच में विषयान्तर तो अवश्य होगा, लेकिन मैं कहूँगा, अंग्रेजों

में पहले दस ही महीने थे। जनवरी और फरवरी, ये दो महीने पीछे से मिलाये गये हैं। इसी तरह, यदि हमलोग भी सामान्यसा फेरफार कर लें, तो हो सकता है। जहां सूर्य फिरता है उसके सत्ताइस भाग करके, उनको नक्षत्र का नाम दे दिया गया है। इसलिये, वह तेरह अंश, बीस कला और तीस विभागों में बारह कला, उनका नाम तिथि।

इसके पश्चात समिति का कार्य स्थगित हो गया।

* * * * * * *

सत्रहवें दिन ता० २१-४ ३३ की कार्यवाही।

प्रारम्भ में, मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि यदि हम लोग वादविवाद में पड़ेंगे, तो इस विषय का कभी पार नहीं मिल सकता। इसलिये लोकोत्तर को बाधा न पहुंचाते हुए, जितना लौकिक मिल जाय, उतना लेना, यही सरल-मार्ग है। पचास दिन में संवत्सरी करना और उसके बाद तीस दिन रखना, इस तरह मेल मिला दिया जाय।

पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने शंका की, कि १२० दिन का चातुर्मास तो ठीक है, लेकिन अधिक मास आवे उसका क्या किया जाय।

मुनि श्री चतुरलालजी महाराज ने कहा, कि—आचारांगसूत्र में, भगवान महावीर के कल्याणक काल में, तिथि नक्षत्र समान आते हैं, उसी के अनुसार विचार करना ठीक है।

मुनि श्री मणिलालजी महाराज ने कहा, कि—जब चन्द्रसंवत्सर आवेगा, तब क्या करेंगे? इसलिये, मेरी राय के अनुसार, सिद्धान्त के अनुकूल और लौकिक में भी बाधा न आवे, इस तरह का प्रयास मैंने किया है वह योजना मैं आप लोगों को सुनाता हूँ। आर्द्रानक्षत्र, जून महीने की २२ तारीख को बैठता है। वह दिन सब दिनों से बड़ा होता है और दिसम्बर में यही दिन सब से छोटा होता है। इसलिये जून महीने की बाईसवीं तारीख के पश्चात, जो पूर्णिमा आवे, उसी से चातुर्मास माना जाय।

अठारहवें दिन, ता० २२ ४ ३३ की कार्यवाही।

श्रावक प्रतिक्रमण और साधु प्रतिक्रमण के विधि पाठ की शुद्धाशुद्धि का निर्णय तथा दीक्षाविधि और प्रत्याख्यान-विधि का निर्णय करने के लिये, निम्नलिखित मुनियों की एक समिति नियुक्त की गई। और निश्चय हुआ, कि यह समिति बहुमत से जो निर्णय करे, वह सब को स्वीकार हो।

१—पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज
२—पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज
३—उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज
४—मुनि श्री मगनमलजी म० (मारवाड़ी)
५—मुनि श्री सौभाग्यमलजी महाराज
६—मुनि श्री सौभाग्यचन्द्रजी महाराज
७—मुनि श्री शामजी महाराज

मुनि–प्रतिक्रमण के लिये, देवसी, रायसी, पक्खी, चौमासी और सवत्सरी का एक ही प्रतिक्रमण करें और कायोत्सर्ग के लिये, देवसी रायसी के ४, पक्खी के ८, चौमासी के १२ तथा सवत्सरी के २० प्रतिक्रमण करने चाहिये। इसी प्रकार के बर्ताव के लिये, श्रावकों से भी यह सम्मेलन सिफारिश करता है।

प्रायश्चित–विधि का निर्णय करने के लिये, पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज तथा पूज्य श्री अमोलकऋषिजी महाराज एवं मुनि श्री मणिलालजी महाराज को नियुक्त किया जाता है। ये, जो निर्णय कर देंगे, वह सब को मान्य होगा, ऐसा निश्चित् किया गया।

स्थानक के सम्बन्ध में–

गृहस्थों ने, अपने धर्म–ध्यान के लिये जो मकान बनाया हो, उस मकान का स्थानीय–संघ से निर्णय करके, उसमें मुनि उतर सकते हैं। लोक व्यवहार में उसका नाम चाहे कुछ भी हो।

सचित्ताचित्त के निर्णय के लिये, श्री शतावधानीजी महाराज तथा उपाध्याय श्री आत्मारामजी महाराज की समिति नियुक्त की जाती है। पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज को, सलाहकार नियुक्त किया जाता है। ये लोग जो निर्णय कर देंगे, वह स्वीकृत होगा।

मुनि-मण्डल के सन्मुख, यू० पी० से आई हुई दर्ख्वास्त पर विचार करके यह सम्मेलन समझता है, कि कान्फ्रेंस को अपनी तरफ से एक आक्षेप निवारिणी–समिति कायम करनी चाहिये, जिससे समाज पर होने वाले आक्षेपों का निवारण किया जा सके। इस समिति को, यदि मुनि मण्डल से साहित्य आदि की सहायता की आवश्यकता होगी, तो वह मिल सकेगी।

नोट—इस प्रस्ताव के साथ, युक्तप्रान्त की दरख्वास्त, पुस्तकें और पत्र भेजा जाय।

* * * * * * *

सचित्ताचित्त–निर्णायक-समिति की कार्यवाही।

केले के सम्बन्ध में दिया हुआ निर्णय।

बृहत्कल्पसूत्र में, तालपलब शब्द है। उसमें, ताल शब्द से ताड़फल का आशय आता है और पलब शब्द से भाष्यकार के मतानुसार उपयोगी फलमात्र लिये गये हैं। टीकाकार ने, कदलीफल भी स्पष्टरूप से लिया है। ताल शब्द से कदली शब्द नहीं लिया है, बल्कि पलब शब्द से कदलीफल का अर्थ लिया है। एक अनुभवी माली, कदली फल के लिये लिखता है, कि हजारों केले के वृक्षों में कहीं एकाध केला बीज वाला लगता है। जिसमें, बैंगन के सदृश बीजों का झुण्ड रहता है। वे बीज सूखने पर उग भी सकते हैं। ऐसा बीज वाला केला बहुत बड़ा होता है और वह और केलों से भिन्न ही दीख पड़ता है।

इसी माली के अनुभव से तो, सामान्य केले की जाति अचित ही मानी जाती है। कोई विरला केला बीज वाला होता है, वह सचित्त होगा। लेकिन सामान्य केला सचित्त नहीं माना जाता।

किसी २ केले में, काली-मई सी दीखती है वह क्या है, इसका निर्णय माली से कर लेना चाहिये।

इस तरह केले के सम्बन्ध में निर्णय हो गया। शेष शंकास्पद बातों के लिये, कमेटी से पूछने पर निर्णय हो सकेगा।

नोट—धन्यवाद आदि से अन्तिम-प्रस्ताव पहले आ चुके हैं।

तिथि पर्व के निर्णय के लिये मात सदस्यों की जो एक समिति बनाई गई थी, वह समय न मिल सकने के कारण कोई निर्णय न कर सकी। इसलिये उक्त समिति से, प्रतिनिधि मुनि मण्डल अनुरोध करता है, कि कमेटी के सब मम्बर मिलकर, तिथिपर्व के निर्णय की रिपोर्ट तैयार करें। जबतक यह रिपोर्ट तैयार न हो, तबतक कान्फ्रेंस की तरफ से जो तिथिपर्व की पत्रिका निकले उसी के अनुसार सब सम्प्रदाय वाले, पक्खी, चातुर्मास, संवत्सरी आदि तिथिपर्वों की आराधना करें। को मी सम्प्रदाय, कान्फ्रेंस की पत्रिका के विरुद्ध दूसरी तिथिपत्रिका न छपावे और न उसके विरुद्ध आचरण करे। यह प्रतिनिधि मण्डल उपरोक्त समिति से पुनः अनुरोध करता है, कि जहाँ तक हो सके एक वर्ष के भीतर ही अपनी रिपोर्ट तैयार कर डालें। रिपोर्ट तैयार हो जाने पर, तिथि-पर्व-निर्णायक-समिति के मेम्बरों के बहुमत से जो निर्णय हो, वह सर्वमान्य समझा जाय।

यह निर्णय, सभी प्रतिनिधि-मुनियों की उपस्थिति में हुआ है।

° ° ° ° ° ° °

ता० २७ ४ ३३ की कार्यवाही।

तिथिपर्व-निर्णय के सम्बन्ध में, उपरोक्त निर्णय हो जाने के पश्चात् मुनिराजों में भीतर ही भीतर नाना प्रकार के तर्क-वितर्क होने लगे। अनेक मुनिराज किसी निश्चित-निर्णय पर पहुँच जाने को, कमेटी की रिपोर्ट की प्रतीक्षा से अच्छा समझते थे। इसलिये, आज ता० २७-४-३३ को प्रतिनिधि-मुनिराजों की बैठक फिर हुई और काफी विचार-विनिमय के पश्चात् निम्न निर्णय हुआ—

पक्खी चौमासी संवत्सरी आदि तिथिपर्व काय निर्णय करने के लिये नीचे हस्ताक्षर करने वाले मुनिराज, निश्चयपूर्वक यह सत्ता कान्फ्रेंस आफिस को देते हैं कि आफिस निष्पक्ष एवं लौकिक लोकोत्तर ज्योतिष शास्त्र के ज्ञाता विद्वान मुनियों तथा श्रावकों की तथा लोका-गच्छीय विद्वानों एवं अन्य विद्वानों की सलाह लेकर, लौकिक तथा लोकोत्तर मार्ग के अविरोधी सम्यक् श्रेणी के मार्ग का निर्धारण करके, जो पक्खी चौमासी संवत्सरी आदि तिथिपर्वों का सदा के लिये निर्णय देगी उसे हम सब सम्प्रदायों के सर्व मान्य करेंगे और उस निर्णय के विरुद्ध पक्खी चौमासी, संवत्सरी आदि तिथिपर्व कदापि न करेंगे।

नोट—(१) यह निर्णय कान्फ्रेंस की छपी हुई टीप पूर्ण होने से पहले ही होना चाहिये।

(२) पंजाब देश में, पूज्य श्री सोहनलालजी महाराज की सम्प्रदाय तथा गुजरात, काठियावाड़ और कच्छ देश की सम्प्रदायों के मुनि, सब, सब पर्व और तिथि कान्फ्रेंस की टीपानुसार करेंगे, किन्तु पक्खी, चौमासी और संवत्सरी तो सभी प्रान्तों की सभी सम्प्रदायें एक ही करेंगी।

द० गणि उदयचन्द्र
द० छगनमल का छै
महाराज माणकचन्द्र जी स्वामी बोटाद सम्प्रदाय की ओर से शिवलालजी मुनि
द० दयालचन्द का छै
महाराज सघजी स्वामी सायला सम्प्रदाय की ओर से
द० मुनि शिवलाल
द० मुनि सौभाग्य
द० पन्नालाल का है
द० छोगालाल
द० सूर्य मुनि
द० सहसमल मुनि ने किया
द० मुनि नानचन्द्र
द० धनचन्द्र जैन मुनि का
द० मुनि श्रेयमल
द० मुनि चेनमल
द० पृथ्वीचन्द का
द० मदन मुनि
द० मुनि पूरणमल
द० मुनि बगतावरमल

द० पू० जवाहिरलाल का
द० ताराचन्द
द० मु० इन्द्र
द० पू० मन्नालाल का
द० उपाध्याय आत्माराम
द० कृष्ण मुनि
द० मुनि रूपचन्द्र
द० मुनि छगनलालजी खम्भात
द० मुनि रतनचन्द्रजी खम्भात
द० मुनि मणिलालजी
द० मुनि खूबचन्द
द० हर्षचन्द
द० मोतीलाल का
द० गणेशमल
द० मुनि सोभाग्य
द० मुनि जोधराज का
द० मुनि फतहचन्द का छै
द० मुनि चौथमल
द० भूरालाल
द० सुन्दरजी मुनि
द० मुनि वनराज

द० काशीराम
द० चांदमल
द० मु० शामजी
द० पू० अमोलक ऋषि
द० ताराचन्द का छै
द० मुनि रत्नचन्द्र
द० मुनि हेमराज का
द० मुनि नारायणदास
द० पुरषोत्तमजी
द० आनन्दऋषि
द० मुनि वृद्धिचन्द का
द० रामजीलाल
द० वृद्धिचन्द्र मुनि का
द० मुनि धीरजमल
द० रामकुवार मुनिका
द० हजारीमल
द० हस्तीमल सामुदायिक प्रतिनिधि मुनियों की तरफ से भी
द० मुनि भायचन्दजी
द० मुनि मिश्रीमल का

-: सम्प्रदायों का परिचय :-

श्रीमान् लौंकाशाहजी के बाद पाँच महान् सुधारक हुये हैं। उनमें प्रथम सुधारक श्री जीवराजजी महाराज हुये हैं। श्री जीवराजजी महाराज लौंकाशाहजी के बाद आठवें पाट पर हुये हैं। जीवराजजी महाराज ने सं० १६०८ में क्रियोद्धार किया और मारवाड में शुद्ध जैन-धर्म का प्रचार किया। इनमें से निम्न पाँच सम्प्रदायें निकलीं —

१ पूज्य श्री नानगरामजी महाराज सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री नानगरामजी म० सा०, जीवराजजी म० के ५ वे पाट पर हुये हैं। पूज्य श्री नानगरामजी म० सा० के बाद ५ आचार्य हुये हैं और छठे पाट पर प्रवर्त्तक मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० हुये, जो अभी मौजूद हैं। आप ज्योतिष विद्या के अच्छे जानकार हैं। श्री नानक श्रावकसमिति, विजयनगर तथा श्री नानक छात्रालय, गुलाबपुरा के जन्मदाता आप ही हैं। व्याख्यान-छटा भी आपकी अच्छी है। राजपूताना के प्रसिद्ध मुनिराजों में से आप एक हैं। जैन जनता पर आपका अच्छा असर है। इस समय आपके पास श्री मुनि श्री छोटमलजी म० सा०, देवीलालजी म० सा० आदि पाँच सन्त हैं।

इसी सम्प्रदाय मे से एक मुनि श्री हगामीलालजी म० भी हैं। मुनि श्री हगामीलालजी अकेले हैं और अजमेर के आस-पास विचरते हैं।

२ पूज्य श्री स्वामीदासजी म० सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री स्वामीदासजी म० सा०, पूज्य श्री जीवराजजी म० सा० के चौथे पाट पर हुये हैं। १० वें पाट पर प्रवर्त्तक मुनि श्री फतेहलालजी म० सा० हैं। आप सरल स्वभावी हैं। आपके साथ मुनि श्री प्रतापमलजी म० सा० तथा कन्हैयालालजी म० सा० हैं। कन्हैयालालजी म० सा० ने न्याय तथा संस्कृत का अच्छा अभ्यास किया है।

प० रत्न मुनि श्री छगनलालजी म० सा० इस सम्प्रदाय के मन्त्री हैं तथा स्तम्भ हैं। अच्छे विद्वान वक्ता तथा क्रियापात्र हैं। आप बहुत स्पष्ट वक्ता हैं। जैनसमाज पर आपका अच्छा प्रभाव है। आपके शिष्य मुनि श्री गणेशीलालजी म० हैं।

सम्प्रदाय में कुल सन्त ५ तथा महासतियाजी १२ हैं।

३ पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराजजी म० सा० के तीसरे पाट पर पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० हुए हैं। पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० के बाद अनेक महान् त्यागी मुनिवर हुये हैं। इस समय सम्प्रदाय के प्रमुख मुनि मंत्री मुनि श्री ताराचन्दजी म० सा० हैं। आपके शिष्य श्री पुष्कर मुनिजी ने दर्शन तथा संस्कृत का अच्छा अभ्यास किया है।

आपकी सम्प्रदाय में इस समय मुनि श्री हंसराजजी, नारायणदासजी म०, प्रतापमलजी म० आदि आठ सन्त हैं।

4 पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराजजी म० सा० के चौथे पाट पर पूज्य श्री शीतलदासजी म सा० हुये हैं। पूज्य श्री शीतलदासजी म० सा० की सम्प्रदाय में अभी मुनि श्री कजौडीमलजी म० सा०, भूरालालजी म० सा०, छोगालालजी म०, गोकुलचन्दजी म० तथा श्री फूलचन्दजी म० सा० विद्यमान हैं।

सम्प्रदाय में कुल सन्त ५ तथा महासतियांजी ११ मौजूद हैं।

5 पूज्य श्री नाथूरामजी म० सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री जीवराजजी म० सा० के चौथे पाट पर पूज्य श्री नाथूरामजी म० सा० हुये हैं। आठवें पाट पर पूज्य श्री फकीरचन्दजी म० हुये हैं। पूज्य श्री फकीरचन्दजी म० के शिष्य पं० मुनि श्री फूलचन्दजी महाराज अच्छे विद्वान् एवं वक्ता हैं। आपने भारत के बहुत बड़े भाग का भ्रमण किया है। करांची और कलकत्ता जैसे दूर देशों में जाकर जैन धर्म का प्रचार सर्व प्रथम आपने ही किया है। भामीणों में जैनधर्म का प्रचार अच्छे ढङ्ग से करते हैं। आपके शिष्य श्री सुमित्रदेवजी हैं। श्री कुन्दनलालजी म० का भी इसी सम्प्रदाय से सम्बन्ध है।

संवत् १७८५ में हरजी ऋषि आदि ६ आत्मार्थी मुनि यतिवर्ग की शिथिलता से दुःखी होकर बाहर निकले और शुद्ध संयम पालते हुये जैनधर्म का प्रचार करने लगे। इनका कार्यक्षेत्र मारवाड़ रहा।

6 कोटा सम्प्रदाय

पूज्य श्री हरजी ऋषिजी के ७ वें पाट पर पूज्य श्री दौलतरामजी म० सा० हुये हैं। कोटा सम्प्रदाय इन्हीं के नाम से प्रसिद्ध है। १२ वें पाट पर पं० मुनि श्री प्रेमराजजी म० सा० हुये हैं। प्रेमराजजी म० सा० के अनुयायी प० मुनि श्री गणेशीलालजी म० सा० आदि हैं। जो दक्षिण में अधिक विचरते हैं। शुद्ध खद्दर तथा जीव दया के प्रखर प्रचारक हैं। तपस्वी एवं स्पष्ट वक्ता भी हैं। दक्षिण में कई संस्थाएं स्थापित करवाई हैं। दक्षिण में आपका बहुत प्रभाव है।

इसी सम्प्रदाय में दूसरा विभाग पूज्य श्री अनोपचन्दजी म० सा० का है। जिसमें प्रसिद्ध मुनि श्री हरकचन्दजी म० सा० आदि हुये हैं।

7 पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० सा० की सम्प्रदाय

हरजी ऋषि के नवें पाट पर जैनाचार्य पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० सा० हुए हैं। इनके आगे पूज्य श्री उदयसागरजी म० पूज्य श्री श्रीलालजी म०, पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० आदि आचार्य महान प्रभावशाली हुए हैं। १४ वें पाट पर पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० हैं। आप स्पष्ट वक्ता एवं प्रतिभाशाली आचार्य हैं। साधुता का आपको ध्यान रहता है। भारत प्रसिद्ध हैं। स्थानकवासी समाज के बड़े भाग पर आपका प्रभाव है। आपकी नेश्राय में विचरने वाले साधुओं में अच्छे विद्वान एवं तपस्वी सभी तरह के मुनि हैं।

वायकलालजी म सा० जैन वयोवृद्ध एवं आगमार्थी मुनि पं० मुनि श्री सिरेमलजी म० सा० पं० मुनि श्री जवाहिरलालजी म० सा० जैसे विचक्षण प्रतिभाशाली एवं वक्ता मुनि पूनमचन्दजी म० सा० जैसे तपस्वी मुनि। सिरेमलजी म० सा० ने पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० के पास रहकर गम्भीर ज्ञान प्राप्त किया है।

पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० सा० की सम्प्रदाय मे पूज्य श्री श्रीलालजी म० सा० के समय भेद हो गये। कुछ सन्तो का एक अलग दल हो गया और पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० को आचार्य बनाया। पूज्य श्री मुन्नालालजी महाराज साहब के बाद पूज्य श्री खूबचन्दजी महाराज हुये। आपके स्वर्गवास के पश्चात् किसी को आचार्य पद नहीं दिया गया। युवाचार्य पद प० मुनि श्री छगनलालजी म० सा० आसीन हैं। इस सम्प्रदाय में प्र० व० पं० मुनि श्री चौथमलजी सा० के व्याख्यानों तथा गायनों का प्रभाव भारत-प्रसिद्ध है। भारत के बडे भाग पर आपका प्रभाव काफी वृद्ध होते हुये भी व्याख्यान फरमाते समय गर्जना करते हुये जनता को मन्त्र-मुग्ध कर देते उपाध्याय मुनि श्री सेंहसमलजी म० सा० अच्छे वक्ता एव समयज्ञ मुनि हैं। जैनसमाज पर अच्छा असर

कुछ वर्षों से तीसरा भेद भी हो गया है। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० की सम्प्रदाय मुनि श्री घासीलालजी म० सा० कुछ सन्तों को लेकर अलग हो गये। इन्हें शास्त्रों का अच्छा ज्ञान इन निकले हुए सन्तो में मुनि श्री सुन्दरलालजी म० सा० अच्छे तपस्वी एव सरल स्वभावी थे।

8 ऋषि सम्प्रदाय

पूज्य श्री लवजी ऋषि के चार सम्प्रदाय विद्यमान हैं। जिनका परिचय क्रमश. नीचे दिया जाता

पूज्य श्री कानजी ऋषि का सम्प्रदाय—इस सम्प्रदाय का प्रभाव मालवा, दक्षिण तथा खानदेश पर अधिक रहा है। लवजी ऋषि के बाद सोमजी ऋषि तथा तीसरे पाट पर कानजी ऋषि हैं। कानजी ऋषि के नाम से ऋषि सम्प्रदाय प्रसिद्ध हुआ है। इस सम्प्रदाय में तिलोक ऋषिजी, ऋषिजी, दौलत ऋषिजी, प्रेम ऋषिजी, पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी तथा पूज्य तपस्वी श्री देवजी ऋ प्रसिद्ध हुए हैं। पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी ने बिखरे हुए सम्प्रदाय को एक सूत्र में बाधा। आपने आगमों का अनुवाद किया। इस बत्तीसी से समाज ने बहुत लाभ उठाया। पूज्य श्री अत्यन्त स्वभाव के थे। अभी पूज्य पद पर आनन्द ऋषिजी म० सा० विद्यमान् हैं। आप अच्छे विद्वान् तथा सगीतज्ञ हैं। कई संस्थाओं की स्थापना भी आपने की है। दक्षिण में आप बहुत प्रभाव रखते आपका कण्ठ इतना मधुर है कि आप दक्षिण के कोयल कहलाते हैं। इस सम्प्रदाय में प० मुनि मोहन ऋषिजी म० सा० एक विद्वान् एव आत्मार्थी मुनि हैं। आपके उपदेश से अनेक शिक्षण-सं खुली हैं। ब्यावर गुरुकुल की स्थापना में भी आपका प्रमुख हाथ रहा है। आपके शिष्य विनय ऋ दर असल विनयवान् हैं।

इस सम्प्रदाय में अनेक महासतिया भी काफी विदुषी हुई हैं। अभी रतनकँवरजी महासति अतिरिक्त प्र० म० श्री उज्ज्वलकुवरजी एक अच्छी वक्ता तथा विदुषी महासति हैं। दक्षिण मे आ बहुत प्रभाव है। आपके व्याख्यानों के लिए जनता काफी तरसती है।

9 खम्भात सम्प्रदाय

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी के चौथे पाट पर पूज्य श्री ताराचन्दजी म० सा० तथा १३ वें पाट पूज्य श्री छगनलालजी म० सा० हुए हैं। पूज्य श्री छगनलालजी म० सा० अच्छे क्रियापात्र तथा स्पष्ट एव निर्भीक आचार्य हुए हैं।

10 पञ्जाब सम्प्रदाय

पूज्य श्री लवजी ऋषिजी म० सा० के पाट पर पूज्य श्री हरदासजी म० सा० हुये हैं। पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा०। पूज्य श्री अमरसिंहजी म० सा० के बाद से ही [illegible]

हुआ है। आगे पूज्य श्री रामबक्षजी म०, पूज्य श्री मोतीरामजी म० सा०, पूज्य श्री सोहनलालजी म० सा०, पूज्य श्री काशीरामजी म० सा० आदि प्रसिद्ध आचार्य हुये हैं।

इस सम्प्रदाय का पंजाब प्रान्त पर एक छात्र प्रभाव रहा है। इस सम्प्रदाय में तपस्वी मुनि श्री वदयचन्दजी म० सा० जैसे तपस्वी, उपाध्याय श्री आत्मारामजी म० सा० जैसे विद्वान्, पं० मुनि श्री प्रेमचन्दजी म० सा० तथा मदनलालजी म० सा० जैसे प्रसिद्ध वक्ता तथा विद्वान् पं० मुनि श्री शुक्लचन्दजी म० सा० जैसे कवि मुनि मौजूद हैं।

उपाध्याय मुनि श्री आत्मारामजी म० सा० ने अनेक आगमों पर टीकाएँ लिखी हैं तथा उनका अनुवाद किया है। उच्चकोटि के विद्वान् मुनि हैं। मुनि श्री प्रेमचन्दजी म० सा० की वक्तृत्वशक्ति बहुत प्रसिद्ध है। १०-१२ हजार जनता की सभाओं में भी आपकी आवाज बराबर पहुंचती है। जैनसमाज के अतिरिक्त जैनेतर समाज पर भी आपके व्याख्यानों का काफी असर है।

११ गोंडल सम्प्रदाय

पूज्य श्री डूंगरसी स्वामी जीमनजी से गोंडल गये और गोंडल सम्प्रदाय की स्थापना की। पूज्य श्री डूंगरसी स्वामी के तीन शिष्य थे। वीरजी स्वामी, रवजी स्वामी और रामचन्द्रजी स्वामी।

१२ बरवाला सम्प्रदाय

पं० मुनि श्री बनाजी स्वामी के शिष्य कानजी स्वामी ने बरवाला पधारकर बरवाला सम्प्रदाय की स्थापना की। पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के तीसरे पाट पर बनाजी स्वामी, छठे पाट पर कानजी स्वामी तथा १० वें पाट पर पूज्य श्री मोहनलालजी स्वामी हुए हैं।

१३ बोटाद सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के बाद पूज्य श्री मूलचन्दजी स्वामी हुये। पूज्य श्री ने १८ वर्ष की अवस्था में दीक्षा ली। आप अहमदाबाद निवासी थे। दीक्षा लेकर आपने शास्त्रों का गम्भीर अध्ययन किया। १७६४ में आपको आचार्य पद दिया गया। आपने गुजरात में घूमकर खूब धर्म-प्रचार किया। आपके सात शिष्य थे। ८१ वर्ष की अवस्था में संथारा करके आप स्वर्ग पधारे।

(१) गुलाबचन्द्रजी स्वामी (२) पचाणजी स्वामी, (३) बनाजी स्वामी (४) इन्द्रजी स्वामी (५) बणारसीजी स्वामी (६) विट्ठलजी स्वामी (७) इच्छाजी स्वामी

पं० श्री पचाणजी स्वामी के शिष्य रतनसी स्वामी और उनके शिष्य डूंगरसी स्वामी हुए जिन्होंने गोंडल सम्प्रदाय की स्थापना की।

पूज्य श्री बनाजी स्वामी के शिष्य पूज्य श्री कानजी स्वामी ने बरवाला सम्प्रदाय की स्थापना की।

बणारसी स्वामी के शिष्य जयसिंहजी और उदयसिंहजी स्वामी ने चूड़ा सम्प्रदाय की स्थापना की।

विट्ठलजी स्वामी के शिष्य भूपणजी स्वामी ने मोरबी तथा भूपणजी के शिष्य वनरामजी ने ध्रांगध्रा सम्प्रदाय की स्थापना की।

इन्द्रजी स्वामी के शिष्य श्रीकरसनजी स्वामी ने कच्छ में पधारकर कच्छ आठ कोटी सम्प्रदाय की स्थापना की।

इच्छाजी स्वामी लींबडी पधारे और उनके एक शिष्य रामजी ऋषि उदयपुर पधारे और उदयपुर सम्प्रदाय की स्थापना की।

पं० श्री इच्छाजी स्वामी के शिष्य गुलाबचन्दजी उनके चौथे पाट पर अजरामरजी स्वामी हुये, जिनके नाम से लींबड़ी सम्प्रदाय पहिचानी जाती है। बोटाद सम्प्रदाय में अभी पूज्य श्री माणकचन्दजी स्वामी के शिष्य कानजी स्वामी, शिवलालजी स्वामी, अमूलजी स्वामी, नवीचन्द्रजी स्वामी।

14 कच्छ आठ कोटी मोटी पक्ष

संवत १८४४ मे मुंद्रा शहर में पूज्य श्री कृष्णजी स्वामी तथा पूज्य श्री अजरामरजी स्वामी के चातुर्मास हुये। दोनों ने मिलकर उक्त मधाडे का वंधारण किया। सम्प्रदाय के सब नियमोपनियम बनाये।

उक्त वंधारण १२ वर्ष मात्र चला। स० १८५६ में पूज्य देवजी स्वामी तथा देवराजजी म० के चातुर्मास माडवी में हुये। इस चातुर्मास में छ कोटी आठ कोटी के झगडे खडे हुये। सब अलग २ होगये।

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के ७ वें पाट पर कृष्णजी स्वामी, १८ वें पर कानजी स्वामी तथा १६ वें पर नागचन्दजी स्वामी हुये हैं।

कच्छ आठ कोटी नानी पक्ष में सन्त बहुत कम रह गये हैं।

15 दरियापुरी आठ कोटी सम्प्रदाय

श्री लौकागच्छ में श्रीमान शिवजी स्वामी के पास श्रीमान् धर्मसिंहजी मुनि थे। उन्होंने २० सूत्रों पर टब्बे लिखे। १८६५ में २० मुनियों के साथ वे अलग हुये। स० १८८५ में अहमदाबाद में दीक्षा अंगीकार की। उन्हीं से दरियापुरी आठ कोटी सम्प्रदाय का आरम्भ हुआ। पहले पाट पर आप ही बिराजे। इस समय उनके २० वें पाट पर पूज्य श्री ईश्वरलालजी महाराज बिराजमान हैं।

पूज्य श्री ईश्वरलालजी म० ने स० १६४८ में दीक्षा अंगीकार की। आप बाल-ब्रह्मचारी हैं। इस समय आपकी आयु ७८ वर्ष की है। आप बड़े विद्वान् हैं। ३२ सूत्र मुख पर हैं। अन्य जैन साहित्य का भी गहरा अध्ययन किया है। इस समय आपकी आज्ञा में २८ मुनिराज और ५५ महासतियांजी विचर रहे हैं। जिनमें मुनि श्री हर्षचन्द्रजी म०, श्री भायचन्द्रजी म० आदि भी बडे विद्वान् सन्त पुरुष हैं। मुनि श्री हर्षचन्द्रजी अच्छे लेखक भी हैं।

16 सायला छः कोटी संप्रदाय

लींबडी सघाड़ा के पूज्य श्री कानजी स्वामी स० १८२२ में गादीधर विराजमान हुए। उस समय तमाम साधु एक ही सम्प्रदाय में गिने जाते थे। स० १८४५ की साल में अलग-अलग सम्प्रदायों में साधु विभक्त हो गए। उनमें से पूज्य श्री मानाजी स्वामी के शिष्य श्री नागजी स्वामी आदि ठा० ४ सायले पधारे। सं० १८७२ की साल में सायला सम्प्रदाय की स्थापना हुई। उस समय सातों सघाड़ों के आहार पानी शामिल थे और साधु समाचारी भी एक थी। बाद में पूज्य श्री नागजी स्वामी ने सायले की गादी

पर पधारकर घोर तपश्चर्या प्रारम्भ की। छट्ठ-छट्ठ के पारणे में विगय रहित आहार करते थे। वे बड़े अभिग्रहधारी भी थे। उनके शिष्य श्री भीमजी स्वामी भी वैसे ही तपस्वी और ज्ञानी थे। उनके दूसरे शिष्य श्री हीराचन्दजी स्वामी चारित्रवान् और सूत्रों के गहरे अभ्यासी थे। सं० १८७२ में सानन्द में स्थानकवासियों के सामने अहमदाबाद के मूर्ति-पूजकों ने बड़ा घम-विरोध उठाया था उनके विरुद्ध स्थानकवासी समाज की तरफ से सामना करने के लिए गुजरात, कच्छ काठियावाड़ के श्रावकों और साधुओं ने मिलकर ऐसा निश्चय किया कि सायले संघाड़े में से पूज्य श्री मूलचन्दजी स्वामी तथा मारवाड़ में से शास्त्र-विशारद श्री जेठमलजी स्वामी आवें तभी अपनी विजय हो सकती है। इसलिए इन्हें स्थानकवासी सम्प्रदाय के पक्ष के समर्थन के लिए अहमदाबाद बुला लाए। दोनों मुनिराजों ने स्थानकवासियों का पक्ष सम्पूर्ण सिद्ध करके स्था० की पूर्ण विजय कराई। गुजरात, काठियावाड़ में स्थानकवासियों का अस्तित्व इन्हीं के आधार पर टिक पाया है। इनके शिष्य श्री केवलचन्दजी स्वामी तथा श्री अमीचन्दजी स्वामी हैं। इनके मुख्य ४ शिष्य थे।

१७ लींबड़ी मोटो सघाड़ो (श्री अमरामरजी महाराज का संघाड़ा)

पूज्य श्री धर्मदासजी स्वामी सं० १७१६ में अहमदाबाद में बादशाह की वाड़ी में १७ व्यक्तियों के साथ चारित्र स्वीकार किया। १७०१ में जन्म हुआ। सरखेज के निवासी थे। चारित्र स्वीकार करने के बाद ९९ शिष्य हुए और २२ सम्प्रदाय हुए उनमें से १ पक्ष (संघाड़ा) मारवाड़ व पञ्जाब में विचरने लगे और एक काठियावाड़ में रहा। उनके मुख्य शिष्य मूलचन्दजी म० के ७ शिष्य हुए और सातों के अलग-अलग सम्प्रदाय कायम हुए। उनमें से एक श्री अजरामरजी म० थे। इनका जन्म काठियावाड़ में 'परगना' नामक गाँव में हुआ। जन्म सं० १८०९ में। पिता का नाम मानकचन्दजी और माता का नाम कंकु बाई था। माताजी के साथ सं० १८१९ में माघ सुद ५ गुरुवार को दीक्षा अंगीकार की। सं० १८४५ में आचार्य पद पर आये।

उनके १४ वें पाट पर वर्तमान विद्यमान पूज्य श्री गुलाबचन्दजी स्वामी म० १९९४ में गादी पर विराजमान हुये। सं० १९२१ में जन्म हुआ। स० १९३६ महा सुद १ गुरुवार को दीक्षा ली। सं० १९८७ जेठ सुद १ को आचार्य पद। मुनि २३ साध्वीजी ४१।

१८ पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के दूसरे शिष्य श्री धन्नाजी म० की पट्टावली

धन्नाजी, सांचोर मारवाड़ के निवासी थे। १७२७ में पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के पास दीक्षा ली। धन्नाजी महान तपस्वी तथा क्रियापात्र थे। शास्त्राभ्यास का कठोर नियम किया। शास्त्राभ्यासकाल में एक पात्र तथा एक चद्दर से ज्यादा पात्र तथा वस्त्र का त्याग किया। कई वर्ष तक एक मुट्ठी मात्र अन्न का व्रत रक्खा। वृद्धावस्था में शरीर क्षीण हो गया अतः अपने शिष्य भूधरजी स्वामी को आचार्य पद देकर सं० १७८४ में संथारा पालते हुये काल धर्म को प्राप्त हुए।

१९ पूज्य श्री भूधरजी महाराज

सोजत के रहने वाले थे। विपुल धन धान्यादि का त्याग कर सं० १७७३ में धन्नाजी म० सा० के पास दीक्षा धारण की। आपके महान् प्रभावशाली तीन शिष्य थे।

पूज्य श्री जयमल्लजी म० मा०, पूज्य श्री रुघनाथजी म० सा० तथा पूज्य श्री कुशलाजी म० सा० ।

पूज्य श्री भूधरजी म० अपना आयुष्य नजदीक समझ अपने पाट पर जयमल्लजी को बैठाकर सं० १८०४ में कालधर्म को प्राप्त हुये ।

२० पूज्य श्री जयमलजी महाराज

मारवाड़ में लांबिया गाव के श्री सेठ मोहनदासजी मूथा के सुपुत्र थे । माता का नाम मेमादे था । पुत्र बहुत सदाचारी एव सस्कारी था तथा कुशाग्र बुद्धि का था । २२ वर्ष की उम्र में विवाह हुआ । व्यापार के लिए मेड़ता गये । वहा पूज्य श्री भूधरजी स्वामी पधारे । आपके व्याख्यान बहुत प्रभावशाली थे । व्याख्यान सुनने एक रोज जयमलजी भी गये । आप पर व्याख्यान का अजब असर हुआ । दीक्षा के लिए लालायित हुये । नौकर के साथ घर समाचार भेजे । माता, पिता, पत्नि सब मेडता पहुंचे । जयमल्लजी दीक्षा न लेने तक अन्न-जल का त्याग कर चुके थे । माता-पिता आदि ने बहुत समझाया किन्तु सब व्यर्थ हुआ । महापुरुष अपने निश्चय से कभी च्युत नहीं होते ।

आखिर स० १७७६ मे पत्नि सहित दीक्षित हुये । मुनि श्री जयमल्लजी महाराज बुद्धिमान तो थे ही—थोडे ही दिनों में आपने अनेक सूत्रों को कठस्थ कर लिये । व्याख्यान छटा भी निराली थी ।

जयमल्लजी महाराज को योग्य समझकर आचार्य पद देकर भूधरजी स्वामी स्वर्गवासी हुये ।

पूज्य श्री जयमल्लजी महाराज ने दीक्षा लेने के बाद १६ वर्ष तक एकान्तर उपवास किये । ५२ वर्ष तक सयम पाला । स० १८३६ मे आपने शिष्य रामचन्द्रजी स्वामी को आचार्य पद दिया । अन्तिम दिनों में आपने मात्र जल पर रहने का निश्चय किया । सं० १८५२ में स्वर्गवासी हुये ।

पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज के तीसरे पाट पर भूधरजी स्वामी, चौथे पाट पर जयमलजी स्वामी हुये । आपके बाद पूज्य श्री कानमलजी स्वामी, जोरावरमलजी म० सा० आदि अनेक प्रभावशाली सन्त हुये हैं ।

अभी प्रवर्त्तक मुनि श्री हजारीमलजी म० सा०, मन्त्री मुनि श्री चौथमलजी म० सा०, प० मुनि श्री चादमलजी म० सा०, प० मुनि श्री जीतमलजी म० सा०, प० मुनि श्री लालचन्दजी म० सा० आदि अनेक प्रभावशाली सन्त मौजूद हैं ।

उक्त सम्प्रदाय के सन्त अधिकतर मारवाड में ही विचरते हैं । मारवाड में इस सम्प्रदाय का अच्छा प्रभाव है ।

२१ पूज्य श्री रुघनाथजी म० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के तीसरे पाट पर भूधरजी म० सा०, चौथे पाट पर रुघनाथजी म० सा० हुये हैं ।

रुघनाथजी महाराज का परिचय :—

पूज्य श्री रुघनाथजी म० अपने समय के बहुत बडे विद्वान् तथा शास्त्रज्ञ थे । समूचे मारवाड पर आपका प्रभाव था । जिस वैराग्य से आपने दीक्षा धारण की, उसी तरह उसे निभाया । आप क्रियापात्र

तथा तपस्या में पूरे थे। मारवाड़ में आज भी भूधरजी, जयमलजी, रूपनाथजी तथा कुशलाजी का नाम बड़ी श्रद्धा से लिया जाता है। मारवाड़ में जैनधर्म का आज जो प्रभाव है, वो आप महापुरुषों की कृपा का ही फल है।

इस सम्प्रदाय में सन्तों का अभावसा ही है। अभी प्रवर्तक श्री धीरजमलजी म० तथा मन्त्री श्री मिश्रीमलजी म० सा० हैं।

तेरहपन्थी सम्प्रदाय का जन्म इसी सम्प्रदाय में से हुआ है। पूज्य श्री रुघनाथजी म० सा० के शिष्य श्री भीषणजी स्वामी थे। आप अच्छे विद्वान् थे किन्तु कुछ उल्टी मान्यता हो गई। आप दया और दान का निषेध करने लगे। अतः पूज्य श्री ने आपको उपालम्भ दिया। भीषणजी अपनी मान्यता पर दृढ़ रहे और १२ सन्तों को साथ लेकर अलग हो गये। इसी से तेरहपन्थी पन्थ चला। तेरहपन्थी समाज अधिकतर मेवाड़ तथा थली प्रदेश में है।

२२ पूज्य श्री चौथमलजी महाराज सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के ८ वें पाट पर पूज्य श्री चौथमलजी म० सा० हुए हैं। आप ही इस सम्प्रदाय के जन्मदाता थे।

इस समय प्र० श्री शार्दूलसिंहजी म० सा० हैं। सन्त सम्प्रदाय में बहुत कम हैं। शार्दूलसिंहजी के शिष्य श्री रूपचन्दजी महाराज हैं।

२३ पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदासजी के एक कम सौ शिष्य थे जिनमें धन्नाजी प्रमुख थे। आपका परिवार मारवाड़ में बहुत फैला हुआ है। आपके शिष्य भूधरजी तथा भूधरजी के शिष्य कुशलाजी थे जिनके सम्बन्ध में एक दोहा है—भूधर के शीश दीपता चारों चातुर भेव।

धन रघुपति धन जैतसी* जयमल ने कुशलेश ॥

आज तक भी लोगों में काफी प्रसिद्ध है।

२४ १—पूज्य श्री कुशलाजी म० की जीवनी —

मरुधरा की राजधानी जोधपुर नगर से १२-१५ कोस दूर रोडों की रीयां, नाम का एक ग्राम है। विक्रम की अठारहवीं शताब्दी में यह एक बड़ा शहर था जिसमें लगभग २०० ओसवालों के घर थे। धार्मिकता में अन्य ग्रामों की अपेक्षा बढ़ा चढ़ा था। बहुत बार बड़े-बड़े महात्माओं ने इस ग्राम को अपने चरणरज से पूत किया था। पर दुर्दैव से आज वहाँ केवल १० ही घर हैं। शेष अपनी आजीविका की खोज में बाहर चले गए एवं वहीं बस भी गये जिससे वर्तमान में वह रीयां वीरान-सा दीखता है। इसी रीयां ग्राम में ओसवाल वंश शिरोमणि लादूरामजी चंगेरिया नाम के एक साहूकार रहते थे। आपकी धर्मपत्नी का नाम कानूदेवी था। वि० सं० १७६७ में आपकी पवित्र कुक्षि से आप श्री कुशलाजी (कुशलराजजी) ने जन्म लिया। आपका व्यावहारिक शिक्षण भी अच्छा हुआ तथा अवस्था प्राप्त होने पर एक कुलीन कन्या से आपका विवाह-सम्बन्ध भी हो गया। किन्तु आपको इस धनदारा के संग्रह में

*आप इनके शिष्य जयमलजी थे। ऐसा भी कहा जाता है।

मानन्द नहीं आया। पूज्य श्री भूधरजी महाराज सा० का आपको सौभाग्य से आनन्ददायक समागम मिल ही गया, पूज्य श्री के सदुपदेश से प्रभावित होकर सं० १७६४ की फाल्गुण शुक्ला ७ को श्री कुशलाजी ने साधु दीक्षा स्वीकार कर ली। आपकी दीक्षा के समय आपके एकमात्र पुत्र हेमराजजी जो केवल १७ के मास थे उनका वंश सोनइ व हिवडा में अभी भी मौजूद है। पूज्य श्री कुशलाजी म० से ही रत्न सम्प्रदाय का आरम्भ होता है। सं० १८४० के ज्येष्ठ वद ६ को ३ दिन का सथारा करके आप इस अनित्य ससार को छोड स्वर्ग सिधार गये। आपने ४० चातुर्मास किये जिनमें अन्तिम ६ नागौर में हुये थे।

२–पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी महाराज :—

जोधपुर नगर में माहेश्वरी वंश में आखा नाम के एक सेठ बसते थे। आपकी धर्मपत्नि का नाम चेना बाई था। आपकी पवित्र कुक्षि से गुमानचन्द्रजी का शुभ जन्म हुआ। युवावस्था में आप मेडता पधारे—जहा पूज्य श्री कुशलाजी म० विराजते थे। आप दोनों १५ दिन पूज्य श्री की सेवा में रहे। पूज्य श्री प्रतिदिन वैराग्योपदेश दिया करते एव प्रात काल वीर-स्तुति का पाठ फरमाते थे। जिसको ये दोनो पिता-पुत्र बड़े प्रेम से सुनते। पूज्य श्री ने एक रोज फरमाया कि यदि यह लडका दीक्षा ले ले तो जैनधर्म का अच्छा प्रचार कर सकता है। पूज्य श्री के वचन से प्रभावित हो वे दोनों पिता पुत्र दीक्षा के लिए तैयार हो गए। निदान वि० स० १८१६ मार्गशीर्ष शुक्ला ११ के दिन श्री सघ की अनुमति से उनको प्रवर्जित किया। आप बहुत बडे विद्वान् एव क्रियानिष्ठ मुनि थे। अतएव पूज्य कुशलाजी के बाद द्वितीय पूज्य आप ही हुये। आपके १२ शिष्य थे जिनमें मुख्य दो थे—रतनचन्द्रजी एवं दलीचन्द्रजी। सं० १८५८ का चातुर्मास पूज्य श्री का मेडता नगर में हुआ था। इस चातुर्मास में कार्तिक कृष्णा ८ को आपने संथारा किया जो चार पहर का हुआ। आप समाधि मरण पूर्वक सद्‌गति के अधिकारी बने।

३–पूज्य श्री रतनचन्द्रजी—

मरुधर देश में एक बहुत छोटा एव अप्रसिद्ध कुडगाम नाम का खेड़ा है। वहाँ पर लालचन्द्जी नाम के वड्‌जात्या जातीय एक श्रावगी जैन बसते थे, जिनकी धर्मपत्नी का नाम हीरा देवी था। स० १८३४ वैषाख शुक्ला ५ को इनके पवित्र उदर से श्री रतनचन्द्रजी का शुभ-जन्म हुआ। आपके तीन और बडे भाई थे। जिनका क्रमश लखीचन्द्रजी, पूरणचन्द्रजी तथा पेमचन्द्रजी नाम था। आप अवस्था मे सब से छोटे होते हुये भी भाग्य एव प्रतिभा में सब से बेजोड थे। इधर नागोर निवासी सेठ गंगारामजी के कोई उत्तराधिकारी न था अत सेठ सा० इसके लिए फिक्रमन्द थे। आपने परम्परा से यह सुना कि कुडगाँव वाले सेठ लालचन्द्र के चार लडके हैं जिनमे सब से छोटा रतनचन्द्र बडा होनहार है, फिर क्या था सेठ गंगारामजी ने लालचन्द्रजी से रत्नचन्द्र को माँग उन्हें दत्तक पुत्र बना अपनी पुत्र कामना पूर्ण कर ली। उस समय नागोर एक उच्च धार्मिक क्षेत्र समझा जाता था, क्योंकि बडे-बडे सन्त महात्मा अधिकायत से वहाँ विराजमान रहा करते थे। नागोर निवासियों के सद्‌भाग्य से स० १८४७ मे पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म० का ७ मुनियों के साथ वहीं चातुर्मास हुआ। पूज्य श्री के व्याख्यान से प्रभावित होकर श्री रत्नचन्द्रजी भी निरन्तर सेवा में उपस्थित रहते तथा व्याख्यान को बडे चाव से सुना करते थे। इस व्याख्यान का प्रभाव रत्नचन्द्रजी पर इतना पडा कि आप सासारिक सुखों को तुच्छ एव आत्मबन्धन का कारण समझ अपनी माता से सयम के लिए आज्ञा की माँग पेश कर दी। भला खोज कर लाये हुये (रत्नचन्द्र) को बूढ़ी माँ अपने पास से अलग होने को कैसे आज्ञा देती, अत वह इन्कार हो गई। किन्तु रतनचन्द्र कब मानने वाले थे। आखिर एकमात्र काका की आज्ञा लेकर एक दिन घर से निकल

हो गये। कुछ दिन आप इधर-उधर घूमकर मिखाचरी की। अन्त में सं० १८४८ वैशाख शुक्ला पंचमी के शुभ दिन पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी महाराज के आज्ञानुवर्ती मुनि श्री लक्ष्मीचन्द्रजी म० के द्वारा मण्डोर के नागादरी स्थान में आम्रवृक्ष के नीचे आपका दीक्षा-संस्कार सम्पन्न हो गया। श्री रत्नचन्द्रजी म० ने शास्त्रों का असाधारण अध्ययन किया और अल्प समय में ही बेजोड़ विद्वान् बन गये। परम्परा से यह खबर जब मां को लगी तब वह भी काम-धन्धों को छोड़ पाली (मारवाड़) में विराजमान मुनि श्री रत्नचन्द्रजी म० के पास पहुंची और नागोर पधारने की विनती की। जिसको पूज्य श्री की आज्ञा से मुनि श्री रत्नचन्द्रजी ने भी स्वीकार कर ली और सब के सब नागोर पधार। मुनि श्री रतनचन्द्रजी ने वहाँ के लोगों को अपनी प्रखर विद्वत्ता से मुग्ध कर लिया। दुर्दैव से पूज्य श्री गुमानचन्द्रजी म० का देहान्त हो गया। स्थविर मुनि श्री दुर्गादासजी म० ने प्रतिभा, शान्ति विद्वत्ता आदि सद्गुणों से आप श्री को गच्छ चलाने में समर्थ जान पूज्यपद लेने को कहा, किन्तु वयोवृद्ध व ऐसे गुण-सम्पन्न को रहत आप ऐसा करने पर राजी न हुये। अन्ततोगत्वा सिद्धान्त यह निकला कि मुनि श्री दुर्गादासजी आपको पूज्य कहा करते और आप श्री दुर्गादासजी को। सावन के झूलों की तरह कभी इधर और कभी उधर झूलने वाला यह पूज्य पद तब तक स्थिर नहीं हुआ जब तक मुनि श्री दुर्गादासजी म० स्वर्ग न पधारे। १८८२ मागशीर्ष शुक्ला त्रयोदशी को जोधपुर नगर में चतुर्विध श्री संघ की ओर से आपको स्थायी पूज्य पद मिला। मरुधर देश के राजा श्री तख्तसिंहजी के दीवान मूथा श्री लक्ष्मीचन्द्रजी आपके गुण पर मुग्ध से हो गये थे अतः राज-काज से समय बचा बराबर आपकी सेवा में उपस्थित रहा करते थे। तथा पूज्य श्री का शरीर क्षीण देख उन्हें जोधपुर पधारने की विनती की परन्तु पूज्य श्री ने यहा जवाब दिया—देखा जायगा। विहार करते चैत्र में जोधपुर पधार गये।

काल की गति विचित्र है। तदनुसार जोधपुर नगर में सेवा एवं औषधियों की भरमार रहते भी जेष्ठ शुक्ला १४ को मध्याह्नकाल तक संथारा पालत पूज्य श्री स्वर्ग पधार गये।

पू० श्री एक असाधारण विद्वान् एवं पहुँचे हुए त्यागी थे। उपदेश आपका इतना अचूक होता था कि विपक्षी भी सुनकर दंग रह जाते थे। पूज्य श्री ने बहुत ग्रन्थों का निर्माण कर जैनागम के महत्त्व को बढ़ाया। इसी से यह सम्प्रदाय भी आपके नाम से ही प्रसिद्ध हो गई।

पूज्य श्री रतनचन्द्रजी म० के बाद पूज्य श्री हमीरमलजी पूज्य श्री कजोड़ीमलजी म०, पूज्य श्री विनयचन्द्रजी म० आदि अनेक आचार्य एवं मुनिराज महान् विद्वान् एवं त्यागी हुये हैं। जिन्होंने समस्त राजपूताने पर अपनी विद्वत्ता तथा संयम की छाप जमाई थी। आपके बाद पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज आ० हुए।

८—पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज—

जोधपुर शहर में श्री भगवानदासजी की धर्मपत्नि श्री पार्वतीदेवी के पवित्र उदर से स० १९१४ में श्री शोभाचन्द्रजी का शुभ जन्म हुआ। बाल्यकाल में ही आपके माता-पिता स्वर्ग सिधार गये। अतः आप इस असार संसार से विरक्त-से बन गये। सौभाग्यवश इसी सिलसिले में पूज्य श्री कजोड़ीमलजी महाराज विहार क्रम से जोधपुर पधारे। पूज्य श्री के व्याख्यान का प्रभाव शोभाचन्द्रजी पर काफी पड़ा और आप दीक्षा के लिए तैयार हो गये। इनकी भक्ति एवं उत्कट लगन देख सं० १९२७ में पूज्य श्री ने इन्हें दीक्षा दे दी। दीक्षा के बाद इन्होंने अपने जीवन के दो ही उद्देश्य रक्खे। प्रथम पूज्य चरण की

सेवा, दूसरा जैनागम सम्बन्धी ज्ञानाभ्यास। आपको ७ सूत्र कण्ठाग्र थे। सारस्वत प्रक्रिया, अमरकोष आदि का भी अभ्यास अच्छा था। आपकी शान्ति, नम्रता, सहिष्णुता, निस्पृहता, विरक्तता आदि गुणमाला इतनी अलौकिक थी कि शायद ही कोई अन्य इसे धारण करने वाला मिले। आपके सहवास से जैन जैनेतर सभी प्रकार का जनसमूह-प्रमोद का अनुभव करते थे। आज भी जोधपुर, जयपुर आदि की परिचित जनता इस बात को बराबर अनुभव कर रही है। आपको स० १९७२ फाल्गुन कृष्णा ८ को अजमेर में चतुर्विध श्री संघ की साक्षी से स्वामी श्री चन्दनमलजी म० ने आचार्य पद प्रदान किया था। पूज्य श्री श्रीलालजी म० भी इस प्रसंग पर मौजूद थे। ५६ वर्ष तक भव्य जीवों को आत्मकल्याण का श्रेष्ठ उपदेश देकर सं० १९८३ आषाढ कृष्णा अमावस को जोधपुर में दिन के १२ बजे आप इस अनित्य-देह को छोड़ स्वर्गगामी हुये।

१४ ८—वर्तमान पूज्य श्री हस्तिमलजी महाराज—

पूज्य श्री रतनचन्द्रजी महाराज की सम्प्रदाय के वर्तमान पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज हैं। पूज्य श्री शोभाचन्द्रजी महाराज के स्वर्ग सिधारने के बाद स० १९८७ बैसाख शुक्ला अक्षय तृतीया को जोधपुर नगर में बड़े समारोह के साथ अल्प वयस में ही आप पूज्य पद पर विराजित हुये हैं। आपकी बुद्धि बडी तीव्र है। विद्या मे आपका व्यासंग अनुपम है। आप तन, मन से तीर्थंकर प्रणीत तीर्थों का अभ्युदय चाहते हैं। आपसे समाज बडी आशा रखती है। स० १९७७ माघ शुक्ला २ को १० वें वर्ष के प्रारम्भ में आपने दीक्षा ली है।

आपने छोटीसी अवस्था में जो गम्भीर ज्ञान प्राप्त किया है। वह अन्य मुनिराजों के लिए अनुकरण की चीज है। वक्तृत्वशक्ति भी सुन्दर है।

२९ पूज्य श्री एकलिंगदासजी महाराज की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के ५ व पाट पर पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० सा० तथा छठे पाट पर पूज्य श्री मोतीलालजी म० सा० हुये हैं।

पूज्य श्री एकलिंगदासजी म० सा० महान् त्यागी एव प्रभावशाली आचार्य हो गये हैं। आपका समस्त मेवाड पर काफी प्रभाव था। आज भी आपका सम्प्रदाय मेवाड़ी सम्प्रदाय के नाम से प्रसिद्ध है। अनेक रईस लोग भी आपके भक्त थे।

अभी पूज्य श्री मोतीलालजी म० सा० आचार्य पद पर हैं। आपकी व्याख्यान शैली अच्छी है। आपके श्री भारमलजी म०, अम्बालालजी म० आदि ५ शिष्य हैं। आपके सिवाय जोधराजजी म० सा० कन्हैयालालजी म० युवाचार्य श्री मागीलालजी महाराज अलग विचरते हैं। जोधराजजी म० सा० सरल स्वभावी थे। मेवाड की जनता पर अच्छा प्रभाव रखते थे।

३० पूज्य श्री मनोहरदासजी महाराज की सम्प्रदाय

श्री सुधर्मा स्वामीजी म० के गच्छ में पूज्य श्री मनोहरदासजी म० बडे ही प्रतापी-पुरुष हुये हैं। आप नागौर (जोधपुर) के प्रसिद्ध सुराना वंश के नररत्न थे। आपने श्री सदारंगजी म० के पास दीक्षा ग्रहण की और क्रियोद्धार करके नवीन सम्प्रदाय की नींव डाली। आज से करीब ३०० वर्ष पहले की

धन्ना है। पूज्यपाद श्री रामचन्द्रजी म० भी इसी सम्प्रदाय के बड़े ही प्रतापी पुरुष हुये हैं। आगरा लोहा मण्डी क्षेत्र आपने ही प्रतिबोधा है।

(१) पूज्य श्री मनोहरदासजी म० (२) पूज्य श्री भागचन्द्रजी म० (३) पूज्य श्री शिवरामजी म० (४) पूज्य श्री नूणकरणजी म०, (५) पूज्य श्री रामसुखदासजी म०, (६) पूज्य श्री खयालीरामजी म०, (७) पूज्य श्री मंगलसेनजी म०, (८) पूज्य श्री मोतीरामजी म०

जाति अग्रवाल, जन्मभूमि सिंघाणा (जयपुर) जन्म सं० १९२५ जेष्ठ सुदी ७ दीक्षा सं० १९४१ वैशाख सुदी १०, आचार्य पद १९५८ फाल्गुन बदी ५ महेन्द्रगढ़ (पटियाला) आचार्योत्सव ला० ज्वालाप्रसादजी ने अपने ही व्यय से महेन्द्रगढ़ में कराया था। स्वर्गवास १९९२ श्रावण कृष्णा १४ सोमवार। हैदराबाद दक्षिण वाले ला० ज्वालाप्रसादजी आपके मुख्य भक्त थे। ला० सुलतानसिंह बड़ौत ला० ज्वाहरमल बिनौली आदि भी आपके मुख्य भक्त हैं।

(६) पूज्य श्री पृथ्वीचन्द्रजी म०—दीक्षा सं० १९५७ फाल्गुन सुदी १५ महेन्द्रगढ़, आचार्य सं० १९९३ माघ सुदी १३ नारनौल। आप वर्तमान में बड़े ही प्रतापी पुरुष हैं। जमना-पार, राजपूताना—जयपुर, अलवर, यू० पी०, पंजाब देहली प्रान्त में आपका विशेष प्रभाव है। आपने दादा टीकरी कुरड़ी, कासन आदि नवीन क्षेत्र प्रतिबोधित किये हैं। आपके प्रभाव से श्री मनोहर सम्प्रदाय की बड़ी उन्नति हुई है। पूज्य श्री मोतीरामजी म० के संघ का नेतृत्व बड़े ही शानदार ढङ्ग से कर रहे हैं। पूज्य श्री की सम्प्रदाय के महनीय मुनिराज सरल स्वभावी गणी श्री श्यामलालजी म हैं। आप पं ऋषिराजजी म० के शिष्य हैं। आप बड़े ही मधुरभाषी, शान्त स्वभावी पूज्य श्री के सच्चे सलाहकार हैं।

इस सम्प्रदाय में प० मुनि श्री अमरचन्दजी म० सा० अच्छे विद्वान् एवं कवि हैं। आपने अनेक पुस्तकें लिखी हैं। समाज पर आपका अच्छा प्रभाव है। सरल स्वभावी एवं अच्छे वक्ता हैं।

उक्त सम्प्रदाय के वर्तमान में मुख्य-मुख्य गृहस्थ निम्न हैं —
दानवीर सेठ रतनलालजी मित्तल आगरा ला सुलतानसिंह अमोलकचन्द चेयरमैन, बड़ौत (मेरठ) जैनसमाज-भूषण सेठ ज्वालाप्रसादजी के सुपुत्र—ला० मानकचन्द महावीरप्रसाद, कलकत्ता आदि आदि।

॥ पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० की सम्प्रदाय

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के दूसरे पाट पर रामचन्द्रजी म० सा० ६ वें पाट पर श्री मोखमसिंहजी म० सा० १० वें पाट पर नन्दलालजी म० सा०, ११ वें पर श्री माधवमुनिजी तथा १२ वें पर श्री चम्पालालजी म० सा० हुये। अभी प्र० मुनि श्री ताराचन्दजी म० सा० विद्यमान हैं—

संगमयुग प्रधान पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० के सम्प्रदाय के पूज्यपाद प्रवर्तक श्री १००८ श्री ताराचन्दजी म० सा स्थानकवासी समाज के जाज्वल्यमान नक्षत्र हैं। आपकी दीक्षा इस समय ५६ वर्ष की है। सं० १९५६ में आपने दीक्षा अंगीकार की थी। श्रीमज्जैनाचार्य पूज्य श्री मोखमसिंहजी म० सा० की सेवा का लाभ आपने लगातार सोलह वर्ष तक उठाया। दीक्षा काल से ही आपकी वैराग्यवृत्ति और वैयावच्च की भावना अति उग्र रही है। वृद्धावस्था होते हुए भी आपका उत्साह और धर्मविहार अनुपम है। इसका सबल प्रमाण यह है कि ७५ वर्ष की उम्र में आप दक्षिण भारत के मद्रास मैसूर

बैंगलोर, हैदराबाद जैसे दूरवर्ती क्षेत्रों में अनेक कष्ट व मार्ग मे होने वाले परिषहों को सहन करके धर्म-विहार करते हुये पधारे। और जहाँ धर्म की भावना सुषुप्त थी, जहाँ कोई साधु मुनिराज नहीं पधारते थे। वहाँ आपने धर्मविहार करके धर्म का उद्योत किया। धर्मोद्योत की भावना से प्रेरित होकर आपने इस वृद्धावस्था में उग्र विहार किया। आपकी प्रकृति बडी सरल है। आपकी भद्रिकता अजोड है। आप अपनी भद्रिक प्रकृति के कारण चौथे आरे के साधुओं की याद कराते हैं। आपका सारा समय ज्ञान, ध्यान, स्वाध्याय और प्रार्थना में व्यतीत होता है। वर्तमान समय में आप श्री धर्मदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के आचार्य समान प्रवर्त्तक पद से सुशोभित हैं। आपकी छत्रछाया में संप्रदाय और समाज की खूब उन्नति हुई है।

३२ श्री प० किशनलालजी महाराज—

आप अखण्ड यशधारी पूज्य प्रवर श्री नन्दलालजी म० सा० के सुशिष्य हैं। आपकी व्याख्यान-छटा और प्रतिभा अनोखी है। आपका शास्त्रीय ज्ञान, विभिन्न ग्रन्थों का वाचन तथा अनुभव अति गहन और विस्तृत है। आपकी व्याख्यानशैली अति आकर्षक और लाक्षणिक है। आपकी तार्किक बुद्धि और वस्तुतत्व समझाने की कला आश्चर्योत्पादक है। आपने कई कविताओं की रचना की है। दक्षिण भारत, में गुजरात, काठियावाड, मारवाड, खानदेश और महाराष्ट्र आदि दूर-दूर देशों में विहार करके धर्मोद्योत किया है। आपके सुशिष्य प्रसिद्ध वक्ता प० रत्न श्री सौभागग्यमलजी म० सा० आज जैन-समाज के एक ज्योतिर्मय चमकते सितारे हैं। प० श्री किशनलालजी महाराज सा० सांसारिक जाति से ब्राह्मण हैं। ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर भी आपने जैनधर्म में दीक्षित होकर जैनधर्म की बहुत सेवा बजाई है।

३३ प्रसिद्ध वक्ता पं० श्री सौभाग्यमलजी महाराज —

प्र० वक्ता प० श्री सौभाग्यमलजी म० सा० जैनसमाज-रूपी आकाश के देदीप्यमान सूर्य हैं। आपने अपने ज्ञान बल और वक्तृत्वबल के कारण जैनशासन की बहुत प्रभावना की है। आप मे बाल्य-काल से ही ऐसे लक्षण दृष्टिगत होते थे जो ज्योतिष शास्त्रानुसार यह सूचित करते थे कि यह होनहार बालक भविष्य में या तो राज्योपभोग करेगा या सयम अवस्था में वैसी ही लब्धि प्राप्त करेगा। यह बात निस्सन्देह सही निकली। आज आप श्री के चरणकमलों में बडे-बड़े नरेश श्रद्धा के साथ सिर झुकाते हैं। यह आपकी पुण्य प्रकृति को सूचित करता है। दीक्षा अंगीकार करने के बाद आपने ज्ञान उपार्जन किया। शास्त्रों का अवलोकन एव मनन किया। आपने अपनी वक्तृत्वशक्ति का ऐसा विकास किया कि आपको प्रसिद्ध वक्ता की उपाधि प्राप्त हुई है। आपकी ओजस्विनी वाणी में ऐसी मन्त्रमुग्ध करने की क्षमता है कि जो अन्यत्र अति विरल दृष्टिगत होती है। आपने अपने सुन्दर एव लोकहितकारी व्याख्यानों के कारण जैनशासन की बहुत सेवा बजाई है। मद्रास, बैंगलोर, मैसूर, हैदराबाद, मुंबई, खानदेश, महाराष्ट्र, गुजरात और काठियावाड, मारवाड, मालवा, राजपूताना इत्यादि क्षेत्रों में उग्रविहार करके धर्म का उद्योत किया है। अनेक राजाओं ने, अनेक देशनेताओं ने आप श्री के व्याख्यानो का लाभ लिया है। मैसूर नरेश और मैसूर के उस समय के प्रधान मन्त्री (दीवान सर मिरजा इस्माइलखा) ने आपके प्रति अति भक्ति प्रदर्शित की थी। इसी तरह काठियावाड के नरेशो ने—भावनगर, जसदण, लाठी, लखतर, पालीताना आदि के राजाओं ने मुनि श्री के व्याख्यान श्रवण किये और जीवदया के पट्टे लिखकर भेंट किए।

मुनि श्री की समाज-सेवाएँ अति बहुमूल्य हैं। आपने स्थानकवासी समाज को एक सूत्र में बाँधने के लिए वीर-संघ की योजना के निर्माण में और उसे सफल बनाने के लिये पूरा प्रयास किया। घाटकोपर श्री संघ ने जब साधुसमिति बुलवाई तब आप श्री हैदराबाद से विहार कर मार्ग परीषहों को सहन करते हुये समय कम होते हुए भी घाटकोपर पधारे और वहाँ वीरसंघ की योजना तैयार की। इसके बाद जब काठियावाड़ में सोनगढ़ के कानजी स्वामी ने स्थानकवासी समाज के विरुद्ध अपनी प्रवृत्ति शुरू की और स्थानकवासी समाज को छिन्न-भिन्न करने का प्रयत्न हुआ, तब काठियावाड़ प्रांतीय समिति और राजकोट श्री संघ के आग्रह को मान देकर आप भयंकर गर्मी में काठियावाड़ पधारे। और वहां भ्रमण करके स्थानकवासी समाज की अपूर्व सेवा बजाई। आपने उस समय जो सेवाएँ की उनके अनुसार आप शासनोद्धारक कहला सकते हैं। इस तरह आपने सामाजिक उन्नति के कई कार्य किए हैं। आपने श्री श्रमण जैन सिद्धान्तशाला रतलाम श्री धर्मदास जैनमित्रमण्डल रतलाम जैसी लोकोपयोगी संस्थाओं को प्रेरणा दी है।

आप इतने सुप्रतिष्ठ और सम्प्रदाय के नायक तुल्य हैं तदपि अहंकार तो आपको छू भी नहीं गया है। आपकी प्रकृति बड़ी शान्त गम्भीर और सहिष्णु है। आप स्थानकवासी समाज की जो सेवाएँ बजा रहे हैं उनके लिए समाज आपका ऋणी है। आपको पाकर समाज गौरवान्वित है।

३५
शतावधानी श्री प० कवलचन्द्रजी महाराज—

आप प्रसिद्ध वक्ता प० श्री सौभाग्यमलजी म० सा० के सुशिष्य हैं। आप शतावधानी हैं। आपने अपनी स्मरण शक्ति का अद्भुत विकास किया है। सतताभ्यास और सतत प्रयत्न से आपने यह अद्भुत शक्ति प्राप्त की है। हैदराबाद, मद्रास बेंगलोर, नासिक खानदेश, इन्दौर धार, रतलाम आदि विविध क्षेत्रों में आपने अवधान प्रयोग सफलतापूर्वक प्रदर्शित किये हैं। अवधान के द्वारा आपने जैन जैनेतरों पर बहुत प्रभाव डाला है और जैनशासन का उद्योत किया है। आप संस्कृत के अच्छे विद्वान हैं। विद्वत्ता और अवधानशक्ति के साथ ही साथ आपकी प्रकृति बड़ी सरल शान्त और सेवाप्रिय हैं। वैयावृत्य का गुण भी अद्भुत है। आप जैनसमाज के एक रत्न हैं। सुप्रसिद्ध गुरुदेव के आप सुशिष्य हैं।

पूज्यपाद प्रवर्त्तक श्री ताराचन्द्रजी म० सा० के आज्ञानुयायी मुनिराजों की नामावली इस प्रकार है–

(१) प्रवर्त्तक श्री ताराचन्द्रजी म० सा० (२) प० रत्न श्री किशनलालजी म० सा० (३) प्रसिद्ध वक्ता प० श्री सौभाग्यमलजी महाराज सा० (४) सरल स्वभावी श्री बन्द्रराजजी म० सा० (५) कविरत्न पं० श्री सूर्यमुनिजी म० सा० (६) तपस्वी श्री बसन्तीमलजी म० सा० (७) शतावधानी पं० मुनि श्री कवलचन्द्रजी म० सा० (८) आत्मार्थी श्री मोहनमुनिजी म० सा० (९) प० रत्न श्री सागरमुनिजी म० सा० (१०) सेवाभावी श्री नमि मुनिजी म० सा० (११) मनोहर व्याख्यानी श्री माणक मुनिजी म० सा० (१२) सुललित व्याख्यानी श्री विनयमुनिजी म० सा० (१३) मधुर व्याख्यानी श्री मधुकर मुनिजी म० सा० (१४) विद्याभिलाषी श्री सुरेन्द्र मुनिजी म० सा० (१५) प्रिय व्याख्यानी श्री हीरा मुनिजी म० सा० (१६) वयोवृद्ध श्री नगराज मुनिजी म० सा० (१७) तपस्वी श्री लाभचन्द्रजी म० सा० (१८) विद्याभिलाषी श्री मानमलजी म० सा० (१९) विद्यानुरागी श्री कुसुम मुनिजी म० सा० (२०) बालमुनि श्री कन्हैयालालजी म० सा० (२१) सेवाभावी विद्याभिलाषी श्री चन्दनमुनिजी म० सा० (२२) नवदीक्षित श्री मगन

पूज्य श्री ज्ञानचन्दजी महाराज की सम्प्रदाय

यह सम्प्रदाय पूज्य श्री धर्मदासजी महाराज सा० की सम्प्रदाय का एक अंग है। इस सम्प्रदाय में इस समय सब से वयोवृद्ध मुनि श्री रतनचन्दजी म० सा० हैं। आप बहुत सरल स्वभावी तथा क्रिया-पात्र मुनि श्री हैं। आपकी आज्ञा मे इस समय तपस्वी मुनि श्री मिश्रीमलजी म० सा०, प० मुनि श्री इन्दरलालजी म० सा०, पं० मुनि श्री समरथमलजी म० सा० आदि कई सन्त हैं। उक्त सम्प्रदाय का ध्यान क्रियाकाण्ड की ओर काफी है।

पूज्य श्री धर्मदासजी म० सा० की सम्प्रदाय मे एक तीसरा प्रभेद और है जो रामरतनजी म० के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें अभी २-३ सन्त मात्र हैं। प्रमुख सन्त वीर पुत्र धनसुखजी म० सा० हैं। उत्साही तथा समाज सेवा की भावना वाले हैं।

उप-संहार

साधु-सम्मेलन अजमेर में सन् १९३३ में हुआ। समाज के लगभग सभी प्रमुख आचार्य तथा मुनिराज अजमेर पधारे थे। यदि कारणवशात् कोई नहीं पधार सके तो उनके प्रतिनिधि पधारे थे। साधु सम्मेलन, स्थानकवासी समाज का एक ऐतिहासिक उत्सव था। सम्मेलन कराने का उद्देश्य तो बहुत गम्भीर एवं सुन्दर था। समाज भले ही उस उद्देश्य में पूरी तरह सफल न हो सका हो, फिर भी उससे हुआ लाभ ही है। इस तरह के यदि १० ५ सम्मेलन हो जायें तो समाज कुछ और ही बन जाये। सम्प्रदायें जो एक दूसरी से बहुत दूर थीं, काफी नजदीक आ गई हैं। सम्मेलन ने समाज में संगठन का बीजारोपण कर दिया है। बीज जोर मारेगा, पौधा होगा वृक्ष बनेगा और फल भी प्राप्त होगा।

सम्मेलन के इतिहास के साथ भूत तथा भविष्य का थोड़ासा परिचय देना भी जरूरी हो जाता है। स्थानकवासी समाज के इतिहास से लोग पूरी तरह परिचित नहीं हैं। इस सम्बन्ध में काफी भ्रम भी है। स्थानकवासी स्थानकवासी होने पर भी जैन तो हैं ही। अतः उसका आदि समय वही होगा जो जैनसमाज का होगा। बीच का ऐसा युग आया, जिसमें शिथिलता का बोलबाला रहा। धर्म-प्राण लोगों के लिये यह स्थिति असह्य-सी रही। ऐसे भले कोई कुछ भी करे, लोग ज्यादा ध्यान नहीं देंगे, किन्तु धर्म के नाम पर यदि कोई अन्याय करता है तो जरूर ध्यान जायगा।

उस समय के साधु समाज में काफी शिथिलता व्याप्त हो गई थी। साथ ही श्रावक-समाज भी उसी प्रवाह में बहने लगा। धर्म के नाम पर खुले आम अधर्म होने लगा। द्रव्य-पूजा तथा मन्त्रादि का काफी प्रचार हो चला। इस ओर उस समय के महान् उत्साही शास्त्रज्ञ, तथा विद्वान् श्रीमान् लौंकाशाहजी का ध्यान गया। उन्होंने उस समय के बाह्य धार्मिक नियमों तथा क्रियाकाण्ड का विरोध किया। विरोध ने जोर पकड़ा। लौंकाशाहजी के अनेक समर्थक बने। कुछ समय बाद तो लौंकाशाहजी द्वारा प्ररूपित संगठन एक समाज के रूप में प्रसिद्ध होने लगा। आगे जाकर तो बाकायदा स्थानकवासी समाज या साधुमार्गी समाज के नाम से एक स्वतन्त्र संगठन बन गया। इसमें उस युग में धर्मदासजी धर्मसिंहजी तथा लवजी ऋषिजी जैसे महान् क्रियोद्धारक क्रियाकाण्डी विद्वान आचार्य हुये। उसके बाद लगभग दो सौ वर्ष तक या इससे अधिक समय तक इस समाज का काफी बोलबाला रहा। इस समाज की क्रियाओं की छाप अन्य समाजों पर काफी पड़ी। यतियों तथा अन्य समाजी आचार्यों एवं मुनियों को भी जागृत होने का अवसर मिला।

स्थानकवासी समाज के मुनियों की क्रिया काफी कठोर होती है। आत्मकल्याण की सच्ची भावना रखने वाले ही मुनि क्रिया का पालन कर सकते हैं।

धीरे २ इस समाज में भी शिथिलता आ गई। जिस संगठन ने समाज में एक क्रान्ति पैदा की और उस क्रान्ति के आधार पर सारे भारतवर्ष में उथल-पुथल मच गई। उस समाज की भी आगे जाकर ऐसी स्थिति होगी यह आशा नहीं की जा सकती थी। लेकिन कुछ तो समय ही ऐसा है। समय का प्रभाव प्रत्येक प्राणी पर पड़ता है। अतः साधु-समाज अछूता कैसे रह सकता था। साधु-समाज में

शिथिलता ने स्थान किया और धीरे २ वह शिथिलता बढ़ती भी गई। समाज के कुछ मुनियो तथा श्रावकों ने संगठन तथा सुधार के सम्बन्ध में आवाज बुलन्द की। कई वर्षों के प्रयत्न के बाद अजमेर का साधु-सम्मेलन हुआ।

आज भी पुरानी बातें याद आती हैं। प्रारम्भ के आचार्यों की बातें जाने दीजिये। मध्यम युग भी सुन्दर रहा है। कठोर तपस्वी, महान् क्रियाकाण्डी, विद्वान् आचार्य तथा मुनिराज हुये हैं।

पूज्य श्री जयमल्लजी, भूधरजी, रघुनाथजी, कुशलेशजी, हुक्मीचन्दजी, कानजी ऋषिजी, अमरसिंहजी, दौलतरामजी, अजरामरजी, नानगरामजी, शीतलदासजी आदि महान विभूतियां हुई हैं। जिनका प्रभाव सर्वतोमुखी रहा है। उनका त्याग, वैराग्य तथा प्रभाव भी वैसा ही था।

इस नवीन युग में भी अनेक ऐसी महान विभूतिया हुई हैं। पूज्य सोहनलालजी महाराज दर असल पजाबकेशरी थे। अजब प्रभाव था। शास्त्रज्ञ थे। समूचे पजाब पर एक छात्र शासन था। पूज्य श्री श्रीलालजी महाराज, पूज्य मुन्नालालजी महाराज, पूज्य शोभालालजी महाराज, प० मुनि श्री माधव मुनिजी महाराज आदि अच्छे प्रभावशाली आचार्य एवं मुनि हुये हैं। जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज ने तो एक नई चीज समाज को दी है। उनका साहित्य अपूर्व साहित्य है। अनेक मौलिक विचार समाज के सामने नये रूप में रक्खे हैं। उनका प्रभाव, उनकी व्याख्यानशैली अपूर्व थी। स्वयं महामना प० मदनमोहनजी मालवीय ने उनकी व्याख्यानशक्ति की मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की थी। शतावधानी श्री रतनचन्द्रजी स्वामी ने अर्ध मागधी कोप आदि अनेक ग्रन्थों की रचना कर समाज का मुख उज्ज्वल किया है। पूज्य श्री अमोलक ऋषिजी महाराज जैसे विद्वान् आचार्य भी इतने सरल हो सकते हैं, यह अपूर्व आदर्श समाज के सामने पेश किया।

पूज्य श्री आत्मारामजी महाराज, पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज, प० मुनि श्री मणीलालजी महाराज, प० मुनि श्री शौभाग्यचन्द्रजी महाराज आदि ने काफी साहित्य-सेवा की है।

आज भी प्र० व० प० मुनि श्री चौथमलजी महाराज, जैनाचार्य पूज्य श्री गणेशीलालजी महाराज, जैनाचार्य पू० श्री हस्तीमलजी महाराज, प० रत्न मुनि श्री शौभाग्यमलजी महाराज, प० रत्न मुनि श्री प्रेमचन्दजी म०, मदनलालजी म०, अमरचन्दजी म०, पूज्य श्री आनन्द ऋषिजी म०, नानचन्दजी म०, कृष्णलालजी म०, पन्नालालजी म०, आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म०, प० मुनि श्री समर्थमलजी म० मु० श्री मिरेमलजी म० आदि अनेक प्र० वक्ता हैं। तपस्वी एव क्रियाकांडी सतों की भी कमी नहीं। किंतु साथ ही यह भी कहना पड़ेगा कि आज समाज में शिथिलचारी मुनि भी काफी हो गये हैं। यद्यपि समय के प्रवाह को देखते यदि उन्होंने अपने आप को नहीं सुधारा तो गोचरी प्राप्त करने के अतिरिक्त समाज से कुछ नहीं ले सकेंगे। इस युग में बिना योग्यता के समाज में पूजा प्राप्त करना नामुमकिन है। गुण की पूजा होगी, वेश की नहीं, वह युग शीघ्र आने वाला है। साधु-सम्मेलन के समय से ही संगठन की आवाज बुलन्द हो चुकी है। प्रत्येक आदमी सगठन का इच्छुक है, किन्तु क्रियापात्रता के साथ, शिथिलता का निभाव मुश्किल है। अत. पहिले क्रिया आदि के सम्बन्ध में सामान्य नियम, समाचारी के रूप मे बन जायँ। उसका पालन करने वाले सगठन मे रहें। ऐसा सगठन तो सगठन रहेगा, अन्यथा तमाशा होगा। थूक से चिपकाया हुआ, साधारण हवा के झोंके को भी नहीं सह सकता तो फिर प्रबल वेग से बहने वाली आंधी की तो बात ही क्या ?

सुधार और संगठन के साथ समाज आगे बढ़े यही भावना।

---

* परिचय *

१ श्री हेमचन्द भाई रामजी भाई मेहता, भावनगर

२१ नवम्बर सन् १८८१ ई० को मोरवी काठियावाड़ में दशा श्रीमाली कुटुम्ब में श्री हेमचन्द भाई का जन्म हुआ। मोरवी जैनशाला में जैनधर्म का प्राथमिक अभ्यास सद्‌गत श्री दुर्लभजी भाई के पूज्य पिता श्री त्रिभुवनदास भाई के पास करने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ था। दुर्लभजी भाई श्री हेमचन्द भाई के खास स्नेही थे।

इन्जीनियरिंग ग्रेज्युएट की अन्तिम परीक्षा १६०६ में पास की। उसके बाद ३५ वर्ष तक ग्वालियर, बड़ौदा, मोरवी, गोंडल, कच्छ तथा भावनगर स्टेट की जवाबदारी पूर्ण सेवा के बाद सन् १६४२ में रिटायर हुये। इसके सिवाय समय २ पर भोपाल, पन्ना, झालरापाटन, सिरोही, मांगरोल आदि स्टेटों को रेल्वे सम्बन्धी सलाह देने का काम करते रहे हैं।

सन् २७ में नामदार वायसराय लोर्ड इरविन कच्छ में पधारे तब कच्छ स्टेट ने भावनगर स्टेट से आपको २ वर्ष के लिये मांगा। आपने वहां जाकर रेल्वे सम्बन्धी जिस योग्यता का प्रदर्शन किया उससे स्वयं वायसराय महोदय भी काफी प्रसन्न हुए।

सन् १८३० में भावनगर स्टेट ने यूरोप की रेल का विशेष अनुभव प्राप्त करने के लिए यूरोप भेजा।

सन् ३३ में अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेन्स के अजमेर अधिवेशन के अध्यक्ष मनोनीत किये गए। इस अधिवेशन में करीब ६० हजार मनुष्य एकत्रित हुए थे। दो मील लम्बा तो अध्यक्ष का जुलूस था। आप आठ वर्ष तक कान्फ्रेन्स के अध्यक्ष रहे। अब भी यथाशक्ति समाज सेवा के कामों में भाग लेते रहते हैं।

आपकी सामाजिक, धार्मिक तथा राजकीय सेवाओं के बदले करीब २७ मानपत्र तथा अनेक प्रमाण-पत्र भी दिये गये हैं। जिनमें आपकी सेवाओं का वर्णन है।

आपकी पत्नि श्रीमती नवलगौरी बहन घाटकोपर कान्फ्रेंस के साथ होने वाली अ० भा० स्था० जैन महिला परिषद् की अध्यक्षा थीं।

---

२ श्री सेठ सागरमलजी लूंकड़, जलगांव

सेठ सागरमलजी का जन्म सं० १६५१ में लोणवणी गांव में हुआ था। आपके पिता श्री सेठ सुगालचन्दजी बहुत धर्मपरायण श्रावक थे। सेठ सागरमलजी की शिक्षा साधारण थी, किन्तु बुद्धि तेज थी अतः व्यापार में काफी उन्नति की। आपका व्यवसाय विशेष रूप से जलगांव खानदेश में रहा है। व्यापार में आपने लाखों रुपया अपने हाथ से कमाया। अब तो आपने व्यापार काफी बढ़ा लिया है। ...रानपुर, इन्दौर, कानपुर, चालीस गांव आदि स्थानों पर कपड़े की दुकानें हैं।

जलगाव के प्रमुख व्यापारियों में आपका स्थान है। स्थानीय स्था० जैन बोर्डिंग हाउस के व्यवस्थापक आप ही हैं। पांजरापोल के आप जनरल सेक्रेटरी हैं। आपका सागर भवन धार्मिक कार्यों के लिए ही है। इन्दौर में आपकी ओर से कन्याशाला चल रही है। सेठ सागरमलजी के चार पुत्र हैं। श्री नथमलजी पुखराजजी, मोहनलालजी और चन्दनमलजी।

श्री सेठ सागरमलजी के स्वर्गवास के बाद सारा कार्यभार श्री नथमलजी पर आ पड़ा। आप बहुत योग्यता तथा कुशलता से व्यापार तथा सब कामों का संचालन कर रहे हैं। आप पक्के कांग्रेसवादी हैं। कई बार म्यूनीसिपल कमिश्नर भी बन चुके हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में काफी रस लेते हैं। व्यवसाय को भी आपने काफी बढ़ाया है। आपने अपने पिता श्री के नाम से एक मिल की योजना बनाई है। मिल सम्भवतः बहुत शीघ्र चालू हो जायगा। संस्थाओं में भी आप काफी सहायता देते रहते हैं। श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के १६ वें उत्सव के आप स्वागताध्यक्ष थे। २५००) भेंट किये। आप मूक किन्तु कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। श्री पुखराजजी आदि अन्य भाई अपने ज्येष्ठ बन्धु श्री नथमलजी के कार्य में पूरा सहयोग देते हैं।

श्री परतापमलजी बुधमलजी लूंकड़, जलगांव

प्रतापमल बुधमल की फर्म खानदेश में प्रसिद्ध फर्म है। इसके मालिक श्री सेठ जुगराजजी लूंकड़ हैं। आप मूल निवासी सिलाड़ी मारवाड़ के हैं। आपके पिताजी का नाम बादरमलजी था। बादरमलजी के दो पुत्र श्री शिवराजजी और जुगराजजी। जुगराजजी बालकपन में ही जलगांव निवासी प्रतापमल बुधमल के वहां गोद चले गये। साधारण शिक्षा प्राप्त करके व्यवसाय में लग गये। आपने व्यापार को खूब बढाया। मामूली स्थिति से बहुत ऊंची स्थिति प्राप्त की लाखों रुपया अपने हाथों से कमाया। बहुत कुशल व्यवसायी हैं। कुछ समय बाद अपने बड़े भ्राता श्री शिवराजजी को भी यहां बुलवा लिया। दोनों भाई व्यापार में लग गये। जुगराजजी के सुपुत्र श्री भंवरलालजी भी अपने पिता श्री की तरह कुशल व्यवसायी, मिलन सार, उदार तथा होनहार युवक हैं। इस छोटी सी अवस्था में ही आपने सारे कारोबार को बहुत अच्छी तरह संभाल लिया है तथा कुशलतापूर्वक उसका संचालन कर रहे हैं। जलगाव के अतिरिक्त एलीचपुर, चालीस गाव, इन्दौर आदि स्थानों पर भी आपकी दुकानें हैं। भंवरलालजी के बंसीलालजी तथा भागचंद दो भाई तथा कमलाकुमारी एक बहन है। पूरा कुटुम्ब सुधार-प्रिय भावना वाला है। धार्मिक भावना भी स्तुत्य है। शिवराजजी के तीन सुपुत्र श्री जवाहरलालजी, पुखराजजी तथा सोहनलालजी।

जवाहरलालजी अच्छे विचारों के होनहार युवक हैं। श्री भंवरलालजी के साथ योग्यता पूर्वक व्यवसाय को संभालते हैं। खद्दर पहिनते हैं।

उक्त कुटुम्ब सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में उत्साह पूर्वक भाग लेता है। संस्थाओं में यथाशक्ति सहायता देते रहते हैं तथा छात्रों को छात्रवृत्तियां भी।

दानवीर सेठ सरदारमलजी पुंगलिया, नागपुर

आपके दादाजी का नाम कनीरामजी था। उनके तीन भाई थे—भैरूँदानजी, सुगनचन्दजी, छोगमलजी। कनीरामजी के सुपुत्र का नाम लाभचन्दजी। यहां व्यापारार्थ लगभग १०० वर्ष पूर्व श्री

भैरूँदानजी आये और दुकानी प्रारम्भ की। सुगनचन्दजी अमरावती चले गये। सोगमलजी भी वहीं थे। सुगनचन्दजी के सन्तान नहीं थी, अतः नेमीचन्दजी को गोद लाये।

लामचन्दजी के दो पुत्र नेमीचन्दजी व सरदारमलजी। यहां का व्यापार भैरूँदानजी ने संभाला और बाद में सरदारमलजी ने।

सरदारमलजी का जन्म सं० १६४४ मगसर सुद १०। १६ वर्ष की अवस्था में ही आपने कारोबार हाथ में ले लिया। आपने अपने व्यवसाय को खूब बढ़ाया। लाखों रुपये अपने हाथों से कमाये। और शुभ कामों में लगाये। आपके दो विवाह हुये। पहली पत्नि का स्वर्गवास कुछ समय बाद ही हो गया। दूसरा विवाह पारसूनी निवासी मानमलजी मकनचन्दजी की सुपुत्री मगनी बाई के साथ हुआ। आपके अनेक सन्तानें हुई किन्तु कोई लम्बे काल तक जीवित नहीं रही। आपकी एक सुपुत्री सूजा बाई का विवाह उदयकरणजी पारख के साथ हुआ था। वह भी शादी के कुछ समय बाद ही स्वर्गवासी हो गई। इसके इलाज में आपने हजारों रुपये खर्च किये। दूसरी पुत्री जमना बाई भी ७ वर्ष की अवस्था में चल बसी।

आपने अपने हाथ से लगभग २ लाख रुपया शुभ कामों में लगाया। -

श्री जैन गुरुकुल में एक मुश्त २०५०) देकर मगनी बाई भवन बनाया।

१६००) लगाकर नागपुर में धर्म स्थानक बनवाया मामली में धर्मस्थानक बनवाया। रतलाम स्थानक का ऊपर का हॉल आपने बनवाया।

३०००) महावीर भवन के लिये दिये।

१०००) जैन मन्दिर में दिये।

१०००) सिद्धान्तशाला

१५००) नागपुर टाइम्स

५०१) साहित्यसमिति

इनके सिवाय परचूरण तथा वार्षिक सहायताओं का तो कोई हिसाब ही नहीं।

आतिथ्य सत्कार का आपको शौक था। जिस रोज अतिथि नहीं होता उस रोज आप बहुत उदास रहते थे।

मुनिराजों की पढ़ाई के लिये गुप्त रूप से काफी रुपया भेजते थे। साहित्य प्रकाशन में आपने हजारों रुपये लगाये। आपकी दुकान पर आया हुआ कोई खाली नहीं जाता। मोहल्लों में जाते हैं तो बच्चों को पैसे बांटते जाते हैं। बच्चे भी मांगने के आदि हो गये। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय सब क्षेत्रों में आप खुले दिल से पैसा खर्च करते थे। अजमेर साधु-सम्मेलन में तथा पूज्य श्री देवजी ऋषिजी म० के आचार्य पदोत्सव तथा आनन्द ऋषिजी महाराज के युवाचार्य पदोत्सव में आपने काफी खर्च किया।

आपको जैनधर्म भूषण की उपाधि दी गई थी। अनेक गरीबों को दुकानें खुलवा दीं।

नागपुर श्री संघ के आप प्रधान श्रावक थे। आप गुप्त दानी भी थे। जबान से कहे हुए पैसे को अपने पास नहीं रखते थे। आप सब सम्प्रदाय के सन्तों की एक भावना से सेवा करते थे। पूज्य श्री देवजी ऋषिजी के परम भक्त थे। श्री धूँगलियाजी की धर्मपत्नि मगनी बाई भी बहुत धर्मपरायणा तथा उदार दिल की हैं। आपने अपने।

५ —: सेठ भैंरोदानजी जेठमलजी सेठिया बीकानेर :—

बीकानेर तथा कलकत्ता में अगरचंद भैंरोदान नामक फर्म काफी ख्याति प्राप्त फर्म है। आपके पिता श्री का नाम धर्मचन्दजी था। आपके तीन भाई और थे प्रतापमलजी, अगरचन्दजी दो बडे तथा श्री हजारीमलजी छोटे। सेठ अगरचन्दजी एक धर्मनिष्ठ श्रावक थे। सेठ भैंरोदानजी का जन्म स० १६२३ की विजयादशमी को हुआ। स० ४८ तक आप बीकानेर, कलकत्ता तथा बम्बई आदि में अस्थाई रूप से काम करते रहे। संवत ४८ में कलकत्ता मे रग तथा मनिहारी का व्यापार प्रारम्भ किया। १-२ साल में ही आपने व्यापार को इतना बढाया कि आपको बेल्जियम, स्विटजरलेंड तथा बर्लिन के रग के कारखानो की तथा गबलंज आस्ट्रिया के मनिहारी कारखानों की सोल एजेन्सिया मिल गई। अब तों सेठ अगरचन्दजी भी आपके साथ मिल गये। दुकान ए० सी० बी० सेठिया के नाम से चलने लगी। थोड़े ही दिनों बाद रग का अनुभव करके आपने हावड़ा में दी सेठिया कलर एण्ड केमिकल वर्क्स लिमिटेड नामक कारखाना खोला। यह कारखाना भारत में रग का सर्व प्रथम कारखाना था।

आपकी प्रथम पत्नि का सवत् ५७ में स्वर्गवास हो गया था। उस समय आपके दो पुत्र जेठमल जी, पानमलजी तथा एक पुत्री बसन्तकवर तीन सतानें थीं। थोडे ही रोज बाद आपका दूसरा विवाह हो गया। संवत् ७१ में महायुद्ध प्रारम्भ होने से रग आदि में आपने लाखो रुपया कमाया।

आपने धन कमाना ही नहीं सीखा, खर्च करना भी सीखा है। आपने ५ लाख का ट्रस्ट कायम कर दिया। जिससे अनेक सस्थाएँ चल रही है। स्था० समाज में इतना अच्छा फण्ड शायद ही हो। आपके सेठिया सस्कृत विद्यालय ने अनेक विद्वान समाज को दिये। इसके अतिरिक्त स्त्रियों, बालिकाओं, बालकों आदि के लिये अलग सस्थायें चल रही हैं। दिन भर काम करने वाले भी आगे बढ सकें, इस दृष्टि से आपने नाइट कालेज स्थापित किया, जिसमें मैट्रिक, एफ० ए० बी० ए० के अनेक छात्र पढ़ते हैं और प्राईवेट परीक्षाएँ देकर पास होते हैं। पढाने के लिये भी योग्य स्टाफ है। बीकानेर तथा बाहर पढने वाले छात्र एव छात्राओं को आप छात्र वृत्तिया तथा लोन भी देते रहते हैं।

आपका होमियों पेथिक ज्ञान भी काफी गहरा है। अनेक मरीज विश्वास पूर्वक आपके पास इलाज के लिये आते हैं और स्वस्थ होकर जाते हैं। आप कुशल व्यवसायी, दूरदर्शी, आदर्श श्रावक तथा योग्य नेता हैं। आप ८० वर्ष की इस वृद्धावस्था में भी लगभग १० १२ घन्टे परिश्रम करते हैं। दिन में आराम नहीं करते। बिना सहारे बैठ कर साहित्यिक काम करते हैं तथा पण्डितों से करवाते हैं। आप अखिल भारतवर्षीय स्था० जैन कान्फ्रेंस के बम्बई अधिवेशन के सभापति थे। बीकानेर में राज्य तथा प्रजा दोनों के प्रेम भाजन हैं। जनता की आपके प्रति अटूट श्रद्धा है। अनेक लोग अपने झगड़ों के फैसले तक करवाने आपके पास आते हैं। आपके इस समय ५ पुत्र तथा एक पुत्री है। श्री जेठमलजी, पानमलजी, लहरचन्दजी, जुगराजजी तथा ज्ञानपालजी तथा सुपुत्री का नाम मोहनीबाई। सेठ अगरचन्दजी के कोई सन्तान नहीं होने से जेठमलजी उनके दत्तक पुत्र के रूप में रहे। जेठमलजी एक आदर्श पितृ तथा मातृभक्त हैं। समाज तथा धर्म सेवा के कार्यों में अगुवा रहते हैं। सेठिया पारमार्थिक सस्थाओं के मन्त्री तथा सचालक का काम आप ही योग्यतापूर्वक कर रहे हैं। आप कलकत्ता या बाहर होते हैं उस समय आपके सुयोग्य पुत्र श्री माणकचन्दजी कार्य सभालते हैं। आप भी जेठमलजी सा० की तरह ही उदार, विनयी एव० सेवा भावी हैं। राष्ट्रीय विचार भी स्तुत्य है। शेष पुत्र याने श्री पानमलजी,

भैरूँदानजी थाय और दलाली प्रारम्भ की। सुगनचन्दजी अमरावती चले गये। छोगमलजी भी वहीं थे। सुगनचन्दजी के सन्तान नहीं थी, अतः नेमीचन्दजी को गोद लाये।

लामचन्दजी के दो पुत्र नेमीचन्दजी व सरदारमलजी। यहाँ का व्यापार भैरूँदानजी ने संभाला और बाद में सरदारमलजी ने।

सरदारमलजी का जन्म सं० १६४४ मगसर सुद १०। १६ वर्ष की अवस्था में ही आपने कारोबार हाथ में ले लिया। आपने अपने व्यवसाय को खूब बढ़ाया। लाखों रुपये अपने हाथों से कमाये। और शुभ कामों में लगाये। आपके दो विवाह हुये। पहली पत्नि का स्वर्गवास कुछ समय बाद ही हो गया। दूसरा विवाह पारसूनी निवासी मानमलजी मकुनचन्दजी की सुपुत्री मगनी बाई के साथ हुआ। आपके अनेक सन्तानें हुईं किन्तु कोई लम्बे काल तक जीवित नहीं रही। आपकी एक सुपुत्री सूका बाई का विवाह उदयकरणजी पारख के साथ हुआ था। वह भी शादी के कुछ समय बाद ही स्वर्गवासी हो गई। इसके इलाज में आपने हजारों रुपये खर्च किये। दूसरी पुत्री कमला बाई भी ७ वर्ष की अवस्था में चल बसी।

आपने अपने हाथ से लगभग २ लाख रुपया शुभ कामों में लगाया।—

श्री जैन गुरुकुल में एक मुश्त २०४०१) देकर मगनी बाई भवन बनाया।

१६००) लगाकर नागपुर में धर्म स्थानक बनवाया मामली में धर्मस्थानक बनवाया। रतलाम स्थानक का ऊपर का हॉल आपने बनवाया।

३००१) महावीर भवन के लिये दिये।

३०००) जैन मन्दिर में दिये।

१००१) सिद्धान्तशाला

१५००) नागपुर टाइम्स

५०१) साहित्यसमिति

इनके सिवाय परचूरण तथा धार्मिक सहायताओं का तो कोई हिसाब ही नहीं।

आतिथ्य सत्कार का आपको शौक था। जिस रोज अतिथि नहीं होता उस रोज आप बहुत उदास रहते थे।

मुनिराजों की पढ़ाई के लिये गुप्त रूप से काफी रुपया भेजते थे। साहित्य प्रकाशन में आपने हजारों रुपये लगाये। आपकी दुकान पर आया हुआ कोई खाली नहीं जाता। मोहल्लों में जाते हैं तो बच्चों को पैसे बांटते जाते हैं। बच्चे भी मांगने के आदि हो गये। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय सब क्षेत्रों में आप खुले दिल से पैसा खर्च करते थे। अजमेर साधु-सम्मेलन में तथा पूज्य श्री देवजी ऋषिजी म० के आचार्य पदोत्सव तथा आनन्द ऋषिजी महाराज के युवाचार्य पदोत्सव में आपने काफी खर्च किया।

आपको जैनधर्म भूषण की उपाधि दी गई थी। अनेक गरीबों की दुकानें खुलवा दीं।

नागपुर श्री संघ के आप प्रधान श्रावक थे। आप गुप्त दानी भी थे। जबान से कहे हुये पैसे को अपने पास नहीं रखते थे। आप सब सम्प्रदाय के सन्तों की एक भावना से सेवा करते थे। पूज्य श्री देवजी ऋषिजी के परम भक्त थे। श्री पुँगलियाजी की धर्मपत्नि मगनी बाई भी बहुत धर्मपरायणा तथा उदार स्त्री हैं। आपने अपने हाथों से हजारों रुपया शुभ कार्यों में लगाया है।

(९) साधु सम्मेलन अजमेर के काम में आपका प्रमुख हाथ था।

(१०) अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेंस के आप सभापति हैं।

(११) बम्बई प्रान्तीय धारा सभा के आप सभापति अभी चुने ही गये हैं।

उक्त बातों से पता लग सकता है कि आपकी योग्यता सर्वतोमुखी है तथा कार्यक्षेत्र बहुत विशाल है। समाज में ऐसे योग्य नर रत्न कम मिलेंगे, जिनके पास पैसा हो, काम करने की शक्ति हो तथा योग्यता हो। आपके पास सब ही चीजें है।

बम्बई प्रान्तीय धारा सभा के सभापति पद को प्राप्त कर आपने स्था० जैन समाज को गौरवान्वित किया है।

सामाजिक क्षेत्र में भी आपने अनेक महत्वपूर्ण सुधार किये हैं।

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री नवलमलजी फिरोदिया भी आप ही के पदचिन्हों पर चलने वाले समाज-धर्म तथा देश सेवक हैं। योग्यता पूर्वक सार्वजनिक सेवा में काफी भाग लेते हैं।

७ —: सेठ मिश्रीलालजी वैद, फलोदी :—

आपका जन्म सवत् १९४५ के मिती भादवा सुद १० को हुआ। आपके पिताश्री का नाम आईदानजी था। आप १९६० में सेठ सूरजमलजी के गोद चले गये। आपका व्यापार खासकर नीलगिरी, उटकमन्ड, कुनूर, वेलिंगटिन, बम्बई आदि में होता है। श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के सस्थापकों में से एक आप हैं और जीवनकाल से आज तक सभापति पद पर आसीन हैं। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया है और खर्च किया है। गुरुकुल, ब्यावर को ही अब तक २५ हजार कराब दे चुके। स्थानीय पाजरापोल के भी आप प्रमुख सचालक हैं। हर वर्ष गायों को हजारों रुपयो का घास डलवाते हैं। गरीबों को दवाइया तथा वस्त्र देते हैं। धार्मिक विचार भी आपके अच्छे हैं। आपके कोई सन्तान न होने से श्री पन्नालालजी को गोद लिये। उन्हें पाला, पोषा, बडा किया। सन् ९८ में मोलिया बधा २००२ के फाल्गुण में विवाह हुआ और उसी वर्ष जेठ वद २ को स्वर्गवास हो गया। लड़का बड़ा होनहार प्रतीत होता था। इस मृत्यु का सेठजी को बहुत धक्का लगा। सेठजी आये हुये का हमेशा सम्मान करते हैं। अच्छे उदार चित्त श्रावक हैं।

८ —: श्री मूलचन्दजी वैद, फलोधी :—

आपके पिता श्री का नाम कवरलालजी वैद हैं। आपका विवाह १९८९ के माह में श्री मिश्रीलालजी वैद ने उत्साह से किया। नीलगिरी, उटकमन्ड, बम्बई आदि में व्यवसाय है। उत्साही तथा सरल स्वभावी युवक हैं। धार्मिक लगन भी अच्छी है। ज्यादातर बाहर ही रहते हैं।

९ श्रीमान् सरदारमलजी मूलचन्दजी, खारची

श्री बाबू मूलचन्दजी सरदारमलजी साहब के सुपुत्र तथा दानवीर सेठ छगनमलजी साहब के कनिष्ठ भ्राता हैं। आपकी खारची के अतिरिक्त बैंगलोर, मैसूर, कोल्हार आदि में फर्मं चलती हैं। आप बहुत उदार, सरल तथा होनहार युवक हैं। लक्षाधिपति होते हुये भी अभिमान तो आपको छूने तक नहीं

माहरचन्दजी, सुगरामजी, कानमलजी आदि अपने व्यवसाय कार्य में व्यस्त हैं। धार्मिक दृष्टि से आपका कुटुम्ब महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। प्रत्येक धार्मिक प्रवृत्ति में आप ही सब से आगे होते हैं। इस समय सठियाजी अधिक समय साहित्य सेवा में अर्पण कर रहे हैं। आपके सब से छोटे पुत्र श्री अगरचन्दजी अच्छे साहित्यिक हैं। आपने शादी नहीं की। ब्रह्मचारी रहना ही पसन्द करते हैं।

सेठ भैरोंदानजी सेठिया को समाज ने उनकी सेवाओं के कारण धर्मभूषण पद से विभूषित किया।

६—. श्रीमान् कुन्दनमलजी फिरोदिया अहमदनगर .—

सेठ कुन्दनमलजी फिरोदिया देश धर्म तथा समाज के परखे हुए सैनिकों या नेताओं में से एक हैं। आपका कार्य क्षेत्र प्रारम्भ से ही बहुत विशाल रहा है। संकुचितता तथा रूढ़ियों के तो आप प्रारम्भ से ही शत्रु हैं। आपका जन्म सन् १८८५ के १२ नवम्बर को अहमदनगर में हुआ। आपके पिता श्री का नाम शोभाचन्दजी था। आपने १९१० में वकालत की परीक्षा पास की। सन् ४२ तक सार्वजनिक सेवा करते हुए वकालत करते रहे। सन् ४१ में व्यक्तिगत सत्याग्रह में जेल पधारे। सन् ४२ की ९ अगस्त को सब नेताओं के साथ आप भी गिरफ्तार कर लिये गए और ५ मई सन् ४४ को रिहा हुए। इसके बाद आपने अपना वकालात पेशा छोड़ दिया और पूरा समय सार्वजनिक सेवाओं में देने लग गये। आप बम्बई प्रान्तीय असेम्बली के २३ बार सदस्य चुने जा चुके हैं।

स्थानकवासी समाज के तो आप सर्वमान्य सर्वश्रेष्ठ नेता हैं। मान्यता की दृष्टि से आपका स्थान सब नेताओं या कार्यकर्त्ताओं से ऊंचा है। किसी सम्मेलन या कान्फ्रेंस में या समाज में किसी भी कार्य में जब कभी कोई खास झगड़ा या मतभेद खड़ा हो जाता तो आप ही अपनी योग्यता से उसके समाधान का रास्ता निकालते। दोनों दलों को सन्तुष्ट भी रखते। आप वर्षों से अ० भा० स्था० जैन कोन्फ्रेंस के सभासद हैं और लगभग ४५ वर्षों से तो आप कोन्फ्रेंस के अध्यक्ष हैं। आप ऐसे तो अनेक संस्थाओं के सभासद मंत्री या अध्यक्ष हैं, किन्तु यहां सब का परिचय न देकर कुछेक का नाम मात्र दे देते हैं।

(१) आप आयुर्वेद विद्यालय नगर के जन्म देने वाले सदस्यों में से एक हैं और कई वर्ष तक उसके सभापति रहे हैं।

(२) अहमदनगर एजूकेशन सोसायटी के वर्षों चेयरमन रहे हैं।

(३) तिलक स्वराज्य फण्ड के लिये चन्दा कराने में आपका प्रमुख हाथ रहा है। सन् २७ में नगर जिले में खादी के लिए चन्दे के सम्बन्ध में महात्माजी के प्रवास में व्यवस्थापक आप ही थे।

(४) म्युनिसिपल कमेटी नगर तथा डिस्ट्रिक्ट लोकल बोर्ड नगर के कई वर्षों तक सभापति रहे हैं।

(५) नगर डिस्ट्रिक्ट अरबन सेन्ट्रल को आपरेटिव बैंक लि० के कई वर्ष तक चेयरमैन रहे हैं।

(६) डिस्ट्रिक्ट होम रूल लीग के जनरल सेक्रेट्री रह चुके हैं।

(७) सन् २१ से ही आप स्थानीय, जिला तथा प्रान्तीय कांग्रेस कमेटियों के सदस्य या पदाधिकारी रहते आये हैं।

(८) पूना बोर्डिंग के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से आप एक रहे हैं।

(९) साधु सम्मेलन अजमेर के काम में आपका प्रमुख हाथ था।

(१०) अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेंस के आप सभापति हैं।

(११) बम्बई प्रान्तीय धारा सभा के आप सभापति अभी चुने ही गये हैं।

उक्त बातों से पता लग सकता है कि आपकी योग्यता सर्वतोमुखी है तथा कार्यक्षेत्र बहुत विशाल है। समाज में ऐसे योग्य नर रत्न कम मिलेंगे, जिनके पास पैसा हो, काम करने की शक्ति हो तथा योग्यता हो। आपके पास सब ही चीजें है।

बम्बई प्रान्तीय धारा सभा के सभापति पद को प्राप्त कर आपने स्था० जैन समाज को गौरवान्वित किया है।

सामाजिक क्षेत्र में भी आपने अनेक महत्वपूर्ण सुधार किये हैं।

आपके ज्येष्ठ पुत्र श्री नवलमलजी फिरोदिया भी आप ही के पदचिन्हों पर चलने वाले समाज-धर्म तथा देश सेवक हैं। योग्यता पूर्वक सार्वजनिक सेवा में काफी भाग लेते हैं।

७ —: सेठ मिश्रीलालजी वैद, फलोदी :—

आपका जन्म सवत् १९४५ के मिती भादवा सुद १० को हुआ। आपके पिताश्री का नाम आईदानजी था। आप १९६० में सेठ सूरजमलजी के गोद चले गये। आपका व्यापार खासकर नीलगिरी, उटकमन्ड, कुनूर, वेलिंगटिन, बम्बई आदि में होता है। श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के संस्थापकों में से एक आप हैं और जीवनकाल से आज तक सभापति पद पर आसीन हैं। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया है और खर्च किया है। गुरुकुल, ब्यावर को ही अब तक २५ हजार करीब दे चुके। स्थानीय पाजरापोल के भी आप प्रमुख सचालक हैं। हर वर्ष गायों को हजारों रुपयों का घास डलवाते हैं। गरीबों को दवाइया तथा वस्त्र देते हैं। धार्मिक विचार भी आपके अच्छे हैं। आपके कोई सन्तान न होने से श्री पन्नालालजी को गोद लिये। उन्हें पाला, पोषा, बडा किया। सन् ४८ में मोलिया वधा २००२ के फाल्गुण में विवाह हुआ और उसी वर्ष जेठ बद २ को स्वर्गवास हो गया। लड़का बड़ा होनहार प्रतीत होता था। इस मृत्यु का सेठजी को बहुत धक्का लगा। सेठजी आये हुये का हमेशा सम्मान करते हैं। अच्छे उदार चित्त श्रावक हैं।

८ —: श्री मूलचन्दजी वैद, फलोधी :—

आपके पिता श्री का नाम कवरलालजी वैद हैं। आपका विवाह १९८९ के माह में श्री मिश्रीलालजी वैद ने उत्साह से किया। नीलगिरी, उटकमन्ड, बम्बई आदि में व्यवसाय है। उत्साही तथा सरल स्वभावी युवक हैं। धार्मिक लगन भी अच्छी है। ज्यादातर बाहर ही रहते हैं।

९ श्रीमान् सरदारमलजी मूलचन्दजी, खारची

श्री बाबू मूलचन्दजी सरदारमलजी साहब के सुपुत्र तथा दानवीर सेठ छगनमलजी साहब के कनिष्ठ भ्राता हैं। आपकी खारची के अतिरिक्त बेंगलोर, मैसूर, कोल्हार आदि में फर्में चलती हैं। आप बहुत उदार, सरल तथा होनहार युवक हैं। लक्षाधिपति होते हुये भी अभिमान तो आपको छूने तक नहीं

पाया। मिलने वाले साधारण से साधारण आदमी को देखकर हरे हो जाते हैं। आपकी ओर से अनेक संस्थाओं को सहायतायें जाती हैं। सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक प्रत्येक काम में आप यथाशक्ति सहायता देने का भाव रखते हैं। आपका विवाह सेठ छगनमलजी ने बहुत उत्साह से किया। ब्यावर में इतनी विशाल और सजी हुई बरात शायद ही आई हो। विवाह में लगभग ६० हजार रुपया खर्च किया। आपका विवाह ब्यावर निवासी सूरजमलजी बोहरा की सुपुत्री से हुआ।

बाबू मूलचन्दजी की आतिथ्यभावना भी स्तुत्य है। आप अधिकतर बैंगलोर में ही रहते हैं।

१० —' श्रीमान् वालचन्दजी झूमरलालजी, सारची —

सेठ बालचन्दजी एक बहुत सरल स्वभावी तथा उदार श्रीमन्त सज्जन हैं। आप एक रईस की भाँति ही रहते हैं। आप दानवीर सेठ छगनमलजी तथा बाबू मूलचन्दजी के काका हैं। दोनों बन्धुओं की आपके प्रति काफी श्रद्धा है। आपकी कोलार, मद्रास आदि में दूकानें हैं। आपके कोई सन्तान न होने से जोधपुर से श्री झूमरलालजी को गोद लाये। श्री झूमरलालजी मेट्रिकूलेट हैं। सेठ छगनमलजी के पास ही व्यापारिक अनुभव प्राप्त कर रहे हैं। आपका विवाह सेठ धीरजमलजी रतनचन्दजी रांका बगड़ी वालों के यहां हुआ है।

११ — श्रीमान् सेठ राजमलजी ललवाणी, जामनेर —

आपका जन्म १९५१ में आऊ फलौदी में हुआ। आपके पिता श्री का नाम रामलालजी था। आठ वर्ष की अवस्था में मूंडो खानदेश आये, वहां से भाग कर मदाना चले गये और ५) रु० उधार लेकर व्यापार शुरू किया। अच्छा पैसा कमाया। पिताजी आदि भी वहीं आ गये। जामनेर के प्रसिद्ध सेठ लखीचन्दजी के कोई सन्तान नहीं थी। वे पुत्र की फिराक में थे। राजमलजी की खबर मिली देखने गये। पसन्द आ गये अतः गोद ले लिये। १३ वर्ष की अवस्था में पिताजी का स्वर्गवास हो गया। सारा भार इस अल्पवय में आ पड़ा। आपने धैर्य-पूर्वक उसे सम्भाला। लाखों रुपया अपने हाथों से कमाया और खर्च किया। आप एक निर्भीक, उदार तथा कुशल कार्यकर्त्ता हैं। आपकी उदारता सर्वतोमुखी है। सामाजिक धार्मिक तथा राजनैतिक सभी क्षेत्रों में तथा भारत के सभी प्रान्तों में आपका अच्छा सम्मान है। परिणाम-स्वरूप आप बम्बई प्रान्तीय धारा सभा के कई बार सदस्य बन चुके। एक बार केन्द्रीय असेम्बली के लिये खड़े हुये और हजारों मतों से विजयी हुये। आदर्श सुधारक हैं। गरीबों की सेवा करना अपना धर्म समझते हैं। ओसवाल महासम्मेलन के अध्यक्ष रह चुके हैं। साधु-सम्मेलन अजमेर की समिति के सदस्य के रूप में भी आपने काफी सेवा दी थी। देशभक्ति भी आपकी स्तुत्य है। कांग्रेस के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं। आपका व्यवसाय जामनेर के अतिरिक्त जलगाँव आदि में भी बैंकिंग का होता है। बड़े पैमाने पर कृषि का धन्धा भी होता है। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया शुभ-कार्यों में खर्च किया है। गरीब तथा योग्य छात्रों को छात्रवृत्तियां देना अनाथों एवं विधवाओं तथा मूक राष्ट्रीय कार्यकर्त्ताओं के घर गुप्त सहायता भिजवाना अपना धर्म समझते हैं। सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष तथा ट्रस्टी हैं। समाज में आपका बहुत ऊँचा स्थान है। अन्य पैंजीपति लोगों के लिये आदर्श-रूप हैं। हमेशा न्याय का पक्ष लेते हैं। आपकी सुपुत्री का नाम मायाबाई है। इनका विवाह माजरोद निवासी धीरचंदजी के साथ किया है।

१२ —: रीयां वाले सेठों का परिचय :—

रीया निवासी सेठ जीवणदासजी को महाराजा सर विजयसिंहजी, जोधपुर ने "सेठ" की उपाधि दी तथा बहुतसी ताजीम व बगसीस दी। सन् १९११ में व्यापार के निमित्त आने वाले माल का भी आधा कर माफ करने का हुक्म हुआ। महाराजा मानसिंहजी ने मारवाड़ को ढाई घर में बांटा। एक में रीयां के सेठ, एक में बीलाडा के दीवान तथा आधे में राज्य की सारी प्रजा। महाराजा सेंधिया, उदयपुर मेवाड़ तथा कोटा राज्य में भी आपकी भारी इज्जत थी। बुन्देलखण्ड के गवर्नर, राजपूताना के चीफ कमिश्नर तथा पंजाब व सी० पी० आदि के गवर्नरों से भी सेठ हमीरमलजी ने काफी सम्मान पाया। रा० सा० सेठ चांदमलजी बहुत उदार श्रीमान् थे। गुप्तदानी थे। अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेन्स के प्रथम अधिवेशन मौरवी के आप अध्यक्ष थे। वहां राजा तथा प्रजा ने आपका भारी सम्मान किया। सं० १९६४ में आपने अजमेर में कान्फ्रेन्स का अधिवेशन करीया। रा० सा० सेठ चांदमलजी का नाम अजमेर तक ही नहीं था, वरन् भारतभर में प्रसिद्ध थे। पूना में श्वे० जैन दादावाडी आपने ही बनवाई थी। अजमेर की जनता तो आपके इशारे पर चलती थी। आपके चार पुत्र थे—सेठ घनश्यामदासजी, रा० ब० सेठ छगनमलजी, सेठ मगनमलजी, सेठ प्यारेलालजी। रा० ब० सेठ छगनमलजी कान्फ्रेन्स के कई वर्षों तक जनरल सेक्रेट्री रहे हैं। शेष तीनों भाई छोटी अवस्था में ही स्वर्गवासी हो गये। सेठ घनश्यामदासजी के दो पुत्र थे—सेठ नवरत्नमलजी व रिखबदासजी। सेठ नवरत्नमलजी के दो पुत्र—बल्लभदासजी व सूरजमलजी। सेठ नवरत्नमलजी का भी स्टेटों से काफी सम्बन्ध है। अजमेर साधु-सम्मेलन में आपका अच्छा सहयोग था। कान्फ्रेन्स के तो आप उपस्वागताध्यक्ष थे। आनासागर का पानी सूखा तब मछलियों की रक्षा कार्य में आपका प्रमुख सहयोग था।

१३—: सेठ विजयलालजी गुलेच्छा, खींचुन :—

श्री जयकरणदासजी के व्यापारकुशल चार पुत्र थे—जालमचन्दजी, सागरचन्दजी, रूपचन्दजी, बाघमलजी। इनमें से द्वितीय श्री सागरचन्दजी के पौत्र श्री सुजानमलजी के पुत्र श्री विजयलालजी हैं। आपके दो बड़े भाई युवावस्था में ही कराल काल द्वारा ग्रसित हो गये। सब से बड़े शिवराजजी के सुपुत्र श्री चम्पालालजी अच्छे व्यापारकुशल तथा होनहार हैं। दूसरे श्री किशनलालजी के तीन पुत्र हैं—गुलराजजी, आशकरणजी तथा वर्धमानचन्दजी। आपके वंशजों की अधिकांश दूकानें मद्रास तथा उसके आसपास चलती हैं। आपने अपने जीवन में अनेक उपकार के काम किये हैं तथा लाखों रुपया दान में दिया है।

१—खींचुम में आपने अपने पिता श्री के नाम से तालाब बनवाया है। उसे गहरा तालाब बनाने के लिये प्रतिवर्ष खुदवाते हैं।

२—फलौधी से आगे रुणीजा रामदेवजी का मेला भरता है। पहिले ट्रेन फलौधी तक ही थी अतः यात्री यहा आकर उतर जाते थे। यहा उन्हें खाने की तकलीफ पड़ती। अतः आपने सं० १९८६ में एक अन्नक्षेत्र खोला, जिसमें हजारों आदमी हमेशा भोजन करते थे। वह अन्नक्षेत्र गत वर्ष तक चलता रहा।

३—आप अच्छे चिकित्सक हैं। कई लोग इलाज के लिये आपके पास आते हैं। आपकी ओर से खींचुन में एक आयुर्वैदिक औषधालय भी चल रहा है।

४—महावीर जैन विद्यालय श्रीपुन का आधा खर्च आप देते हैं।

५—कुमारी टारलेटन की अपील पर आपने टी. बी. वार्ड बालकों के लिये बनवाने को उम्मेद होस्पिटल को सत्तावन हजार रुपये दान दिये।

आप अच्छे उदार तथा धार्मिक वृत्ति के भावक हैं। जोधपुर राज्य में भी आपका अच्छा सम्मान है। राज्य की ओर से आपको सोना तथा पालकी आदि मिले हुये हैं।

१८—सेठ छगनलाल भाई जौहरी, जयपुर :—

आपका जन्म १९४६ के भादवा सुद ९ को मौरवी में एक कुलीन घराने में हुआ है। आप बाल्यकाल में अपने बड़े भाई श्री दुर्लभजी भाई के साथ जयपुर व्यापारार्थ आ गये। दोनों भाइयों ने परिश्रम से व्यापार किया और अच्छी सफलता प्राप्त की। १५ वर्ष तक साथ में मौरवी मनुलाल के नाम से फर्म चलती रही। बाद में आपने अपने पुत्र कांतिलाल छगनलाल के नाम से दुकान शुरू की। ५-७ वर्ष में ही उस पेढ़ी ने अच्छी प्रतिष्ठा प्राप्त कर ली। सन् ३६-३८ में दो बार विदेश यात्रा भी की। फ्रांस, इंगलैंड, बेल्जियम, जर्मनी, स्विटजरलैंड, इटली, डेनमार्क आदि की यात्रा की। आपके दो पुत्र हैं—श्री कांतिलाल और कुसुमचन्द। कान्तिलाल बम्बई दुकान का तथा कुसुमचन्द्र जयपुर दुकान का काम योग्यतापूर्वक सम्भाल रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी भी स्वभाव से बहुत अच्छी हैं। श्री छगन भाई सब तरह से सुखी हैं। अच्छे उदार एवं धर्मनिष्ठ भावक हैं। बम्बई में भी आपका व्यापार अच्छा चलता है।

१५—श्री मूलचन्दजी पारख फलौदी —

आपके पिता श्री का नाम आनन्दरामजी पारख था। आपके पिता श्री फलौदी के एक बहुत प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपके पिता श्री के स्वर्गवास के समय आप मात्र ४ वर्ष के थे। उनके स्वर्गवास के बाद आपकी सुयोग्य मातु श्री ने दोनों का लालन पालन किया। तथा व्यापार के सहायक श्री मिश्रीलाल जी वैद तथा फूलचन्दजी पारख बने। आपके मातु श्री ने त्रिचनापल्ली में ५१०) रु लगा कर गौशाला कायम कराई जो अब तक चल रही है। १९९३ में आपकी मातु श्री का भी स्वर्गवास हो गया। आपका शिक्षण भले बहुत ऊँचा न हो किन्तु व्यापार कुशलता अद्भुत है। आप तथा आपके छोटे भाई खेतमलजी योग्यता पूर्वक अपने व्यवसाय को संभाल रहे हैं। अभी आपका व्यापार विशेषतया त्रिचनापल्ली तथा फलौदी में चल रहा है। त्रिचनापल्ली में फौजमलजी आनन्दरामजी के नाम से तथा फलौदी में आनन्द राम मूलचन्द के नाम से दुकानें चल रही हैं। आपने अपने हाथों से हजारों रुपया शुभ कामों में लगाया। सं० १९९८ में अकाल के कारण फलौदी में गायें आईं। आपने खूब रुपया खर्च किया तथा सेवा की। सं० १९९८ में मारवाड़ के अकाल पीड़ितों को सस्ते मूल्य पर अनाज बांटने में भी आपने प्रमुख भाग लिया। रामदेवजी के मेले के समय आप हजारों यात्रियों को भोजन कराते हैं। गुरुकुल ब्यावर के स्थापना में भी आप बने थे और २१०) रुपया भेंट किया। आपके भाई खेतमलजी भी अच्छे सुयोग्य सज्जन हैं। दोनों भाई सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। अभी भी अनाज का सब जगह संकट है। गरीबों को सस्ते भाव से अनाज देने की व्यवस्था की उसमें भी आपका प्रमुख हाथ था।

१५ —: सेठ चम्पालालजी बांठिया भीनासर :—

भीनासर का बांठिया परिवार प्रसिद्ध है। सेठ चम्पालालजी बांठिया के पिता श्री का नाम हमीरमलजी बांठिया था। सादगी सरलता तथा धार्मिकता की दृष्टि से बीसवीं सदी के श्रावकों के लिये आदर्श रूप थे। बोलचाल में भी काफी मीठे थे। इतने बड़े लक्ष्मी पति होते हुए भी कभी फोटो नहीं उतरवाया, पक्के क्रियाकाण्डी थे। अपूर्व दानी भी थे। जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० के उपदेश से सं० १९८४ में आपने ५१०००) का दान निकाला। ११ हजार एक मुश्त साधुमार्गी जैन हितकारिणी सभा को भेंट किये। आपको गुप्त दान का शौक सा था। आपके तीन पुत्र हैं। (१) सेठ कनीरामजी (२) सेठ सोहनलालजी तथा सेठ चम्पालालजी।

सेठ चम्पालालजी उदीयमान समाज सेवक हैं। आपके पिता श्री के गुणों को आपने जीवन में काफी उतारे हैं। आपकी उदारता प्रशंषनीय है। अपने पिता श्री के स्मारक में हमीरमल बांठिया बालिका विद्यालय की स्थापना की। बालिका विद्यालय बहुत अच्छी तरह चल रहा है तथा सेठ चम्पालालजी योग्यता पूर्वक उसका सचालन कर रहे हैं। आपने एक प्रसंग पर एक मुश्त ७५०००) रु० का दान देकर अपनी उदारता का परिचय दिया। शिक्षा प्रेम भी आपका प्रशंषनीय है। श्री जवाहिर विद्यापीठ की देख रेख भी आप ही करते हैं। उसे आदर्श विद्यापीठ बनाने के लिये आप प्रयत्नशील हैं।

जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० की अन्तिम बीमारी के समय जो अनुपम सेवा की है उसे कोई नहीं भूल सकता। आजकल आप भीनासर के सार्वजनिक जीवन के एक सचालक हैं। आप बीकानेर राज्य के ट्रेड एण्ड इन्डस्ट्रीज एसोसियेशन के सभापति हैं। बीकानेर धारा सभा के माननीय सदस्य हैं। राज्य में भी आपकी काफी प्रतिष्ठा है। स्टेट की ओर से कई सम्मान प्राप्त हैं।

इस समय कलकत्ता, बम्बई, दिल्ली, लाहोर, बीकानेर आदि में आपके व्यापारिक फर्म चल रहे हैं। इतने बड़े व्यापार को सभालते हुए भी आप सार्वजनिक कामों में काफी सहयोग देते हैं। साहित्य प्रेम भी आपका अच्छा है। जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० के साहित्य प्रकाशन में आप काफी उत्साह दिखा रहे हैं।

छोटी अवस्था में ही आप समाज में काफी लोकप्रिय बन गये हैं। आप अच्छे मिलनसार तथा मृदुभाषी हैं। धार्मिक विषयों में आपके विचार काफी सुधार पूर्ण तथा क्रांतिकारी हैं।

१६ —: श्री सोहनलालजी बांठिया भीनासर :—

इस परिवार में सेठ मौजीरामजी बडे प्रतिभा सम्पन्न व्यक्ति हुए हैं। वे खुश्की रास्ते से कलकत्ता गये और व्यापार प्रारम्भ किया। उनके पुत्र का नाम पन्नालालजी था। उनके पुत्र श्री हजारीलालजी थे। ये बड़े प्रतिभाशाली उदार तथा आदर्श श्रावक थे। इनके तीन पुत्र हुए। दूसरे नम्बर के पुत्र श्री सोहनलालजी हैं। आपने अपने व्यापार को बहुत उन्नत बनाया। आपका व्यापार कवर सम्पतलालजी की देख रख में हो रहा है। मौजीराम पन्नालाल के नाम से इम्पोर्ट व एक्सपोर्ट का काम व छातों का काम बडे पैमाने पर होता है। हमीरमल सोहनलाल के नाम से आडत का व्यापार होता है। बाहर अनेक शाखायें भी हैं। आपने ५००००) रु० आयुर्वैदिक औषधालय के मकान के लिये बीकानेर सरकार को

दिये। आपके निजी खर्च से एक विशाल आयुर्वेदिक औषधालय तथा एक प्याऊ ६ वर्षों से चला रहे हैं। आपने एक धर्मशाला का भी निर्माण करवाया। स्टेट स्कूल भीनासर में ५ कमरे व एक हॉल आपने बनवा कर मिडिल तक स्कूल करवा दी है। कलकत्ते में साधुमार्गी स्कूल के मकान खरीदने में भी आपने ५१०१) रु० दिये। बीकानेर स्टेट की ओर से सोने की छड़ी, चाँदी की चपड़ास सेठ तथा कैफियत आदि इज्जत मिली हुई है। स्टेट में भी आपकी फेमिली का अच्छा सम्मान है। विवाह शादी में घोड़े रथ, नगाड़ा निशान तथा फौजी आदमी भी आते हैं। आपके चार आज्ञाकारी पुत्र हैं। और भी कई संस्थाओं में आप समय २ पर सहायता पहुंचाते रहते हैं।

१८— श्री चम्पालालजी वैद भीनासर —

श्री चम्पालालजी अपने दोनों भाई छगनलालजी तथा मोहनलालजी वैद के साथ भीनासर में रहते हैं। आपका व्यवसाय अधिकतर कलकत्ता में है। लाखों रुपया आपने अपने हाथों से कमाया है। अच्छे व्यवसाय कुशल हैं। धार्मिक तथा सामाजिक प्रवृत्तियों में रस लेते हैं। भीनासर में आपकी अच्छी प्रतिष्ठा है। सेठ चम्पालालजी बांठिया के पार्टनर भी रहे हैं। हजारों रुपया शुभ कामों में खर्च भी करते रहते हैं।

१९— सेठ धोंडीरामजी दलीचन्दजी खींवसरा, पूना —

इस परिवार का मूल निवास मादलसर (जोधपुर स्टेट) में है। पूना में यह फर्म बहुत प्रतिष्ठित मानी जाती है। यहां के ओसवाल समाज में आपकी फर्म अग्रगण्य है। आपके यहां कपड़े का धंधा चलता है। आपकी बम्बई में "हीराचन्द दलीचन्द" नाम से आढ़त की दूकान है। वहां आढ़त का और बैंकिंग का व्यवहार होता है। कुछ मास पूर्व आपने पूना में सोना चांदी की दूकान शुरू की है।

सेठ धोंडीरामजी खींवसरा ऑनरेरी मजिस्ट्रेट :—

आपका जन्म सन् १८८६ में परिंचे (पूना) नामक गांव में हुआ। आपके हाथों से व्यापार की विशेष उन्नति हुई। आरम्भ से ही समाज-सुधारणा की भावनायें आपके मन में बलवती थीं। आपने सन् १९०८ में "जैनोन्नति' नामक मासिक-पत्र निकाला था। इस मासिक-पत्र के द्वारा आपने जैन-समाज में बहुत जागृति की। आप नव मन्वन्तर (नया युग) नामक पत्र के उप-सम्पादक थे। सन् १९११ में पूना में एक जैनबोर्डिंग स्थापित करवाया। जिसका रूपान्तर स्था० जैन बोर्डिंग है। आपने ज्ञानमण्डल स्थापित कर छात्रों को स्कालरशिप देने की व्यवस्था की। आपको सरकार ने कुछ वर्ष पूर्व ऑनरेरी मजिस्ट्रेट की जगह पर नियुक्त किया है। पूना जिले में आप ही पहिले ऑनरेरी मजिस्ट्रेट हैं। आप "महाराष्ट्र प्रांतिक कांग्रेस हाउस' के ट्रस्टी हैं। आपने जैनशास्त्रों का रसमयी पद्धति से अध्ययन किया है। (आपकी कन्या सौ० नन्दू बाई ओसवाल मराठी और हिन्दी की एक प्रमुख लेखिका है। आपके लेख हिन्दी और मराठी पत्रों में नियमित आते हैं। आप मालेगांव महिला अधिवेशन की अध्यक्षा थीं।) आपके माणिकलालजी और मोतीलालजी नाम के दो पुत्र हैं।

सेठ हीराचन्दजी खींवसरा—आप सेठ धोंडीरामजी के छोटे भाता हैं। आपने व्यापार में बहुत सफलता प्राप्त की है। आपने जैन-समाज की उन्नति के लिये बहुत कष्ट उठाया है। आपने जैन धर्मशास्त्र के ३२ सूत्रों का अध्ययन किया है। आप श्री फतेचन्द जैन विद्यालय चिंचवड के ट्रस्टी हैं। आपके दो पुत्र हैं—चिरंजीलालजी और कांतिलालजी। चिरंजीलालजी व्यापार में भाग लेते हैं और कांतिलालजी पढ़ते हैं। आपके छोटे भ्राता दलीचन्दजी हैं। आप सुस्वभावी एवं प्रतिष्ठित नागरिक हैं। आपके तीन पुत्र हैं—चरीलालजी कन्हैयालालजी और चन्द्रकान्तजी पढ़ते हैं।

२० श्री जमनालालजी रामलालजी कीमती, इन्दौर

श्रीमान् मुंतजिम बहादुर राय साहब स्वधर्म-भूषण जमनालालजी रामलालजी कीमती की दुकान संयुक्त नाम से हैदराबाद दक्षिण सुलतान बाजार में एवं इन्दौर मालवा खजुरी बाजार में चलती है। आप श्वेताम्बर स्थानकवासी जैनधर्म के अनुयायी हैं। आपकी तरफ से लाखों रुपयो का सुकृत कार्य किया गया। अभी हाल में एक लाख रुपये का कीमती जैन ट्रस्ट कायम किया गया है। आपकी तरफ से हैदराबाद में निहायत खुशनुमा कबूतरों के लिए प्रेम टावर बना हुआ है वैसे ही हिन्दी लायब्रेरी चालू है। हाल में एक विशाल लाला कीमती जैन स्थानक बनाया जा रहा है। सिकन्द्राबाद में अपाहिजों के लिए डिसेबल्ड होम भी बना हुआ है। तीन सेंटरों में किंगजार्ज मेमोरियल प्लेग्राउन्ड जारी है। श्री कुलपाक जैन क्षेत्र में धर्मशाला भी बनाई है इन्दौर मे कन्यापाठशाला चलती है। इन्दौर छावनी में हॉस्पिटल में असेम्बली हाल बनाया है। रामपुरा जन्मभूमि में आई हॉस्पिटल एवं कीमती जैन लायब्रेरी चालू है। ब्यावर जैन गुरुकुल में कीमती हुनर उद्योग मन्दिर भी है। जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला पंजाब में कीमती बोर्डिंग हाउस चालू है। आपकी तरफ से लाखों शिक्षाप्रद पुस्तकें प्रकाशित होकर मुफ्त वितीर्ण की गई है और भी सुकार्य ट्रस्ट के अन्तर्गत किये जा रहे हैं। आपके सुपुत्र मदनलाल सम्पतलाल कीमती हैं।

---

२१ श्री केशूलालजी ताकडिया, उदयपुर

श्री केशूलालजी का जन्म सं० १६४७ के पौष महीने में हुआ था। पिताजी का नाम मोडीलालजी है, किन्तु बाद में आप मोतीलालजी के गोद आये। आपने बाल्यकालीन शिक्षा लेकर जवाहिरात का कार्य प्रारम्भ किया। अल्प काल में ही अच्छी कुशलता प्राप्त कर बडी योग्यता के साथ व्यवसाय करने लगे। रत्नों के तो आप बहुत अच्छे पारखी हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राजकीय क्षेत्र में आपका अच्छा स्थान है। उदयपुर श्री संघ के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से आप एक हैं। आपकी दो शादियां हुईं। दूसरी के स्वर्गवास के समय भी आपकी अवस्था बहुत छोटी थी। फिर भी आपने तीसरी शादी न करने की प्रतिज्ञा मुनि श्री से ली।

जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी महाराज की सम्प्रदाय के प्रमुख श्रावको मे से आप हैं। हितेच्छु श्रावक मण्डल के प्रारम्भकाल में चार वर्ष तक मन्त्री भी रह चुके हैं। उस समय में आपने परिश्रम कर ३० हजार का फण्ड भी एकत्रित किया।

स्थानीय जैन शिक्षण संस्था के भी आप प्रधानमन्त्री रहे हैं। उसकी उन्नति में प्रमुख हाथ आपका था। आप अच्छे शिक्षाप्रेमी हैं। छात्रों को छात्रवृत्तियां देने तथा दिलाने मे भी, आप हमेशा काफी सहयोग देते हैं।

आपके एक सुपुत्र हैं। जिनका नाम परमेश्वरीलाल है। २१ वर्ष की अवस्था है। बी. ए. में अध्ययन कर रहे हैं। पिता की सेवा किये बिना कभी नहीं सोते। अंग्रेजी शिक्षा प्राप्त करते हुए भी आपके धार्मिक-संस्कार अच्छे हैं। आपका पाणीग्रहण थादला निवासी सेठ सौभाग्यमलजी की सुपुत्री के साथ हुआ। पुत्रवधू का स्वर्गवास अल्पकाल में ही हो गया। पीछे एक पुत्री छोड़कर स्वर्गवासी हुईं।

---

२२ श्री नरेन्द्रकुमार विनयचन्द्र जौहरी

श्री नरेन्द्रकुमार का जन्म ता० २० ११-३० को हुआ। पिता श्री का नाम विनयचन्द्र भाई दुर्लभजी जयपुर। बालक होनहार प्रतीत होता था। हर कार्य बुद्धिमानी से करता था। विनयचन्द्र भाई ने उसको पढ़ने ग्वालियर तथा पंचगनी भेजा। बाल्यकाल से ही बालक कुशल तथा अभ्यास में होशियार था। जहां पढ़ता वहीं अध्यापकों का प्रिय बन जाता था। ऐसी अच्छी चीज ज्यादा नहीं ठहरती। १४ वर्ष की आयु में ही याने ११-३-४४ को स्वर्गवासी हो गया। जिस स्कूल में पढ़ता था, वहां शोक-सभा की गई तथा स्कूल बन्द रक्खा गया।

नरेन्द्र बाबू के स्मारक में नरेन्द्र श्री दुर्लभजी बालमन्दिर स्थापित किया गया। नरेन्द्र बाबू की स्मृति में ही श्री विनयचन्द्र भाई ने ५००) हमें भेजे। २०० पुस्तकें उचित मूल्य पर बेचकर उचित उपयोग करेंगे।

---

२३ मुंतजिम बहादुर सेठ इन्द्रलालजी जैन, इन्दौर

श्री सेठ इन्द्रमलजी का जन्म १२-१२-१२ को धार में हुआ। आप आज से ५-६ वर्ष पूर्व एकदम साधारण स्थिति के गृहस्थ थे और २५) रु० माहवार में स्थानीय इन्दौर मिल में नौकरी करते थे, किन्तु अपनी कुशलता के कारण आज लाखों की सम्पत्ति के मालिक हैं। इन्दौर में आप काफी लोक प्रिय हैं। आये हुये प्रत्येक आदमी का सम्मान करना आप अपना कर्तव्य समझते हैं। समाज की अनेक संस्थाओं को आपने सहायता दी है। समाज व राज्य दोनों में आपकी अच्छी इज्जत है। होल्कर स्टेट ने आपको मुन्तजिम बहादुर तथा मध्यभारतीय स्था० जैन सम्मेलन ने "जैनरत्न" की उपाधि से विभूषित किया है। इन्दौर संघ को स्थानक बनाने में सब से बड़ी ७०००) की रकम आपने ही दिलाई है। आप ईस्ट इण्डिया कोटन एसोसियेशन बम्बई मारवाड़ी चेम्बर ऑफ कोमर्स बम्बई ब्रोकर असोसियेशन आदि के सदस्य हैं। मध्यभारतीय स्था० जैन सम्मेलन के स्वागताध्यक्ष भी आप ही थे। आप अच्छे उदारचित्त सज्जन हैं।

---

२४ श्री चन्दूलाल छगनलाल शाह, अहमदाबाद

श्री चन्दूलाल भाई शाह का अहमदाबाद बम्बई तथा मदुरा में कपड़े का अच्छा व्यवसाय होता है। श्री भारत यू० व वर्क्स कलोल के मालिक हैं। शेयर कोटन कापड तथा सोना चांदी के प्रसिद्ध दलाल हैं। अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेंस के गुजरात प्रान्तीय मन्त्री हैं। श्री स्था० जैन छे० ज्ञाति अहमदाबाद श्री स्था० जैन मित्र मण्डल तथा समस्त स्था० जैन संघ अहमदाबाद के मन्त्री हैं।

आप स्थानकवासी समाज के प्रसिद्ध चित्रकार हैं। कल्प सूत्र के चित्र निर्माता आप ही हैं। गुजरात कला प्रवर्तक मण्डल के मानद् मन्त्री हैं।

---

२५ श्रीमान रायबहादुर सेठ वीरजी भाई

श्रीमान् सेठ वीरजी भाई बर्मा के प्रसिद्ध व्यापारी हैं। आपका जीवन बहुत सार्वजनिक बना हुआ है। पिछले पचीस वर्षों से आप कितनी ही जाहिर संस्थाओं में काम कर रहे हैं। अपने

जीवन की अनेक प्रवृत्तियो के होने पर भी आप, बरमा इन्डियन चेम्बर ऑफ कॉमर्स, राइस मर्चेन्ट एसोसियेशन, गुजराती स्कूल, पोर्टट्रस्ट रगून, स्थानकवासी जैन-संघ तथा स्थानकवासी डिस्पेन्सरी, जीवदया मण्डल, गुजरात एसोसियेशन, बोम्बे क्लब, इन्डियन एसोसियेशन आदि अनेक विभागों में उत्साहपूर्वक अग्रगामी भाग ले रहे हैं। आप कितना ही सस्थाओं के प्रमुख, उप प्रमुख, सेक्रेटरी, पेट्रन तथा लाइफ मेम्बर हैं। वर्षों से वर्मा के स्थानकवासी जैन सघ के सेक्रेटरी हैं और अपनी धार्मिक श्रद्धा से श्री सघ को एक जीवती जागती परोपकारी सस्था बनादी है। आप रिजर्व बैंक तथा वर्मा नेशनल इन्श्योरेन्स कम्पनी के डाइरेक्टर हैं। आप चावल के प्रसिद्ध व्यापारी हैं। आप चावल के निकास (Export) का कामकाज करते है।

आप व्यापारी होते हुये भी अँग्रेजी, हिन्दी व गुजराती में अच्छी तरह भाषण कर सकते हैं। नामदार गवर्नर प्रधान तथा दूसरे अधिकारी या यूरोपियन व्यापारी आपकी मुलाकात और सलाह की मांगणी किया करते हैं।

आपकी सार्वजनिक सेवाओं एवं कार्यों की कदर करके नामदार वायसराय ने आपको रायबहादुर का माननीय खिताब भेंट किया है।

जब कभी सार्वजनिक कार्य करने के अवसर आते हैं तब अपने निजी कार्य को छोडकर भी आप उन कार्यों को बडी दूरदर्शिता से पार लगा देते है।

---

२५ श्रीमान सेठ गोकुलदास भाई प्रेमजी

आप काठियावाड के अन्तर्गत मागरोल गाव के निवासी थे। आपका जन्म स० १६२६ भादवा सुदी पूर्णिमा को हुआ था। आप आठ वर्ष की अवस्था में बम्बई आये थे। आपने अपने बुद्धिबल से व्यापार प्रारम्भ किया और उसमें सफलतापूर्वक लाखों रुपये कमाये। आपने कपड़े का व्यवसाय किया था। आपकी दूरदर्शिता समय को पहिचानने की शक्ति उच्चकोटि की थी। यही कारण है कि व्यापारिक क्षेत्र में लाखों कमाने के उपरान्त आपका समस्त व्यापारियो पर तथा मुंबई के श्री सघ पर अद्वितीय प्रभाव पडता था। आप लगभग ३४ वर्ष तक मुंबई के स्थानकवासी श्री सघ के मानद मंत्री के जिम्मेदार पद पर रहे और अत्यन्त सुचारु रूप से सघ की व्यवस्था करते रहे। आपके व्यक्तित्व की छाप दूसरों पर बहुत अधिक पड़ा करती थी। आपकी धार्मिक श्रद्धा अजोड थी। साधु-साध्वियों की आपने खूब सेवाएँ की। यही कारण है कि जनता उनका स्वर्गवास होजाने पर भी हमेशा उनके कार्यों की याद किया करती है। आपका स्वर्गवास स० १६६५ में हुआ। आपकी सेवाओं तथा कार्यों की कदर करने के लिये आपके नाम का अलग स्मारक फन्ड मुंबई श्री सघ ने खोला है। आपके स्वर्गवासी होजाने के दिन—मुंबई का मगलदास मारकीट, आदि बाजार बद रहे थे। आपके स्मारक फण्ड में बडे २ व्यापारियों ने रकम भरी हैं। आज भी मुबई निवासी जो उनके सम्पर्क में आये हैं, उनके गुणों को याद करते हैं, उनके कार्यों की सराहना करते हैं। आपने मुबई सघ की तन, मन, धन से जो सेवा की वह अवर्णनीय है। आपका धार्मिकजीवन, सामाजिक-जीवन तथा व्यापारिक-जीवन आदर्श था। आप अपने समाज के एक रत्न थे।

---

२५ श्री शोभाग्यमलजी जैन एडवोकेट, शुजालपुर

श्री शोभाग्यमलजी का जन्म अच्छे सम्पन्न परिवार में हुआ था। मिडिल में फेल होने पर आपको काफी धुणा हुई। तीन वेग से पढ़ाई में लगे। वकालात पास की। धार्मिक ग्रन्थों तथा शास्त्रों का भी अच्छा अभ्यास किया। आपका संस्कृत, उर्दू फारसी अंग्रेजी तथा गुजराती का अच्छा अभ्यास है। आपको पुस्तकें पढ़ने का अच्छा शौक है। गृह का अच्छा मासिक पुस्तकालय भी है। आप शुजालपुर के प्रमुख वकीलों में से एक हैं। रूढ़ियों और आडम्बरों के आप कट्टर शत्रु हैं। पोरवाल कान्फ्रेन्स के मंत्री भी रह चुके हैं। आप ग्वालियर राज्य के प्रमुख कार्यकर्ताओं में से एक हैं। स्थानीय म्यूनीसिपल कमेटी जिला बोर्ड तथा परगना बैंक के सम्मालनीय सभासद हैं। राष्ट्रीय विचारों के कारण आपको ग्वालियर राज्य की जनता ने स्टेट असम्बली अपर हाउस का सदस्य चुना है। आप अच्छे सिद्धान्तवादी एवं कर्मठ कार्यकर्ता हैं।

२८ श्री रघुनाथमलजी कोचर, अमरावती

श्री रघुनाथमलजी का जन्म सन १६१४ में सिरजगांव तालुका चांदुर में हुआ था। आपके दो भाई और हैं। आपने मैट्रिक तक अभ्यास किया। सन १९३० के जंगल-सत्याग्रह के समय स्कूल छोड़ कर सत्याग्रह में भाग लिया। आपका पहला विवाह सन् ३४ में हुआ। दूसरा विवाह श्री मायकचन्दजी भण्डारी इन्दौर वालों की सुपुत्री सुशीला हिन्दीरत्न के साथ सन ३६ में हुआ। आपका समाज में अच्छा स्थान है। सी० पी० बरार ओसवाल सम्मेलन के जनरल सेक्रेटरी थे। आप सन् ३० से बराबर हर आन्दोलन में जेल जाते रहे हैं। अब तक ५ बार जेल-यात्रा कर चुके हैं। अमरावती नगर कां० कमेटी के कई वर्षों से प्रधान हैं। आजीविका के लिये सर्राफी दुकान चलाते हैं। स्थानीय युवकों के आप साथ हैं। सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय क्षेत्र में आपका महत्वपूर्ण स्थान है।

२६ श्री केवलचन्दजी चोपड़ा सोजत सिटी

आप सोजत के रहने वाले अति उदार सज्जन हैं। अभी उम्र मात्र ३५ वर्ष की है। आपके पिताजी का नाम गोपालचन्दजी है। आपकी फर्म बम्बई में है। नाम मघराज बस्तीमल पड़ता है।

आपकी देख-रेख में श्री जैनेन्द्र ज्ञान मन्दिर सिरियारी श्री गौतम गुरुकुल सोजत, श्री अमर गौशाला सोजत श्री जीवदया कबूतरशाला सोजत आदि अच्छी प्रगति कर रहे हैं। आपने यहाँ जनता के सहयोग से एक विशाल धर्मशाला तथा स्थानकजी का निर्माण करवाया। कोटा प्रान्त ने आपको धर्मवीर की पदवी से विभूषित किया है।

भाद्रपद सुद ७ को मु० श्री मिश्रीलालजी महाराज का आरोग्य दिवस मनाया गया, उसमें आपका सिरोपाव दिया गया।

आपके छोटे भाई श्री पूनमचन्दजी भी एक उदार तथा धर्मप्रेमी सज्जन हैं।

३० श्री हुक्मीचन्द्रजी सा० सांड (पुनमिया) सादड़ी

श्रीमान् जयस्वरूपजी के सुपुत्र हुक्मीचन्दजी सा० पुनमिया का नाम सादड़ी के सुप्रतिष्ठित श्रावकों मे गिना जाता है। आप प्रत्येक कार्य में अग्रसर रहते हैं। आपकी दूकान प्रथम बम्बई में दागिना बाजार मे सा० चतुरभुज शिवाजी के नाम से थी, लेकिन अपनी बीमारी के कारण आपने अभी दूकान बन्द कर दी है। मारवाडी बाजार के स्थानक की देख-रेख आप ही करते थे। सादडी में भी जयस्वरूपजी के पिताजी ने कई अनमोल कृत्य किये हैं जैसे—हमेशा के लिये (चार मास) गांची घाणी बन्द करवाई। इसका अब भी पक्का बन्दोबस्त है। आपको स्थानकवासी सादड़ी समाज की तरफ से 'नगर सेठ' की पदवी प्रदान की गई है। आपका जीवन हमेशा समाज के सुकार्यों की ओर झुका रहता है। आप सादड़ी के रत्न हैं।

३१ हीराचन्दजी उदयरामजी सेमलानी, सादड़ी

उदयरामजी के दो पुत्र हैं—(१) हीराचन्दजी व (२) रतनचन्दजी। हीराचन्दजी सादड़ी के एक प्रतिष्ठित एवं धर्मप्रेमी सज्जन हैं। आपका हृदय उदार है। बच्चों को देखकर तो आप बहुत ही प्रसन्न होते हैं। आपकी उम्र करीब ५६ वर्ष के लगभग है। आपके एक पुत्र है जिसका नाम नेमीचन्द है व तीन लड़कियां हैं। लड़का होनहार है। वह अभी गुरुकुल मे ही पढ़ता है।

हीराचन्दजी ने समाज में भी अच्छे कार्य किये हैं-अभी आपकी तरफ से आयम्बिल खाता के लिए भव्य मकान सादड़ी में बन चुका है।

रतनचन्दजी समाज के अग्रगण्य सज्जन हैं। आपकी दुकान अभी बोम्बे बादरा में चल रही है।

३२ श्री जेंवतराजजी सोलंकी, सादड़ी

प्रथम आपने १८ साल तक सेठ रामचन्द हिम्मतमल पूना वालों की दुकान पर नौकरी की। तदनन्तर आपने अपने बहनोईजी के साझे मे पूना में दुकान की। उस दुकान के व्यापार को आपने बहुत बढाया। आपका जन्म सं० १९१७ में हुआ था। चतरींगजी सेठ ने सादडी में कई धार्मिक कार्य किये। आपने रानकपुरजी के मेले में ७०००) रु० आबूजी आदि के संघ में ३५०१) रु० तथा न्यात के श्वे० स्था० नोहरे मे ३१००) रु० लगाये। आपके पुत्र केशूरामजी का जन्म सं० १९४४ में हुआ। आप इस समय व्यापार का संचालन करते हैं। केशूरामजी के पुत्र (१) सागरमलजी तथा (२) जेंवतराजजी हैं। सागरमलजी होशियार युवक हैं, व्यापार कुशल हैं।

आपके तीन पुत्र हैं—(१) गुमानचन्द (२) मिलापचन्द (३) नगराज। जेंवतराजजी होनहार नवयुवक हैं। आपसे समाज को काफी आशाएँ हैं। आपकी प्रथम दुकान अभी मेन स्ट्रीट नं० ७४ अंबिका स्टोर के नाम से पूना में तथा दूसरी सागरमल जेंवतराज & Co सेन्ट्रल स्ट्रीट (बेंकिंग) के नाम से पूना में चल रही है। अस्पताल में वॉर्ड बनाने में व ओपनिंग सिरेमनी में १८०००) रु० कुल खर्च किये। इस पर महाराजाधिराज सा० ने खुश होकर सेठ केशरीमलजी को 'सेठ' की पदवी दी और कस्टम व कैफियत माफ।

३३ श्री सेठ रूपचन्द ताराचन्द पुनमिया, सादड़ी

इस वंश का मूल निवासस्थान सादड़ी (मारवाड़) है। आप स्थानकवासी समाज के प्रतिष्ठित व्यक्ति हैं। सेठ रूपचन्दजी का जन्म वि० सं० १९४४ में और सेठ ताराचन्दजी का जन्म वि० सं०

१६२२ में हुआ है। आपने अपनी आयु में सार्वजनिक व समाज समहित के शुभ कार्य करके अच्छी ख्याति प्राप्त की है। सेठ ताराचन्दजी के दो पुत्र (१) मूलचन्दजी (२) जीवनरामजी हैं व दो पुत्रियां हैं। सेठ रूपचन्दजी के एक पुत्री है।

(१) आपने सादड़ी में एक सार्वजनिक यूनानी दवाखाना खोल अपने खर्च से चलाया और बाद में एक होसीटल बनवा कर जोधपुर सरकार (स्टेट) को भेंट कर सादड़ी में सर्व जनहित का प्रथम कार्य किया।

(२) एक पुस्तकालय-भवन सार्वजनिक हित के लिये बनवाकर श्री जैन श्वे० स्था० ज्ञान वर्धक सभा को भेंट किया।

(३) अजमेर में जो साधु-सम्मेलन वि० सं० १६८६ में हुआ था उसमें आपकी तरफ से ७०० आदमियों को स्पेशल ट्रेन से संघ बनाकर ले गये थे जिसका सब खर्च आपने ही दिया था।

(४) नवलाजी दीपाजी कम्पनी बम्बई में जिसमें दोनों महानुभाव भागीदार थे। इस कम्पनी के रुपयों से वि० सं० १६६६ की कहतसाली में सेठ ताराचन्दजी ने अपने तन मन से सख्त परिश्रम उठाकर एक १६ मील की पहाड़ी सड़क जो कि श्री परशुराम महादेव को जाती है बनवाई। सड़क बनवाकर जोधपुर सरकार को भेंट की।

(५) आपके शुभ कार्यों से प्रभावित होकर जोधपुर सरकार ने आपको कैफियत और घोड़ा सिरोपाव देकर आपके मान में उचित वृद्धि की है।

इस तरह आपने अपने जीवनकाल में कई परोपकार के कार्य किये हैं।

सेठ ताराचन्दजी का स्वर्गवास ता० ३१ दिसम्बर सन १६४४ को हो चुका है। वास्तव में आप सादड़ी के एक रत्न ही थे। परमात्मा मृत आत्मा को शान्ति प्रदान करें।

३७ श्री शोभाचन्दजी बोहरा, अहमदनगर

रीयां मारवाड़ का एक छोटासा किन्तु प्रख्यात ग्राम है। वहां से सेठ नारायणदासजी व्यापारार्थ दक्षिण की ओर गये और पीपला गांव में व्यवसाय करने लगे। व्यापार में श्री बोहराजी बहुत प्रामाणिकता से काम लेते थे। प्रामाणिकता के कारण वे आस पास के गांवों की जनता तक के लिए भी काफी लोकप्रिय बन गये थे। लोकप्रियता के कारण उनका व्यापार खूब बढ़ा और धनप्राप्ति के साथ काफी यश एवं ख्याति भी प्राप्त की। नारायणदासजी के दो पुत्र थे। हुकमचन्दजी और रतनचन्दजी हुकमचन्दजी के दो पुत्र हुये—(१) बुधमलजी (२) रूपचन्दजी। दोनों का धर्मप्रेम स्तुत्य था। बुधमलजी के तीन पुत्र हुये—कीसनरामजी उम्मेदमलजी व भगवानदासजी। कीसनरामजी धार्मिक तथा व्यावहारिक कामों में काफी कुशल थे। महात्मा रतन ऋषिजी के अनन्य भक्त थे। कीसनरामजी के दो पुत्र हुये। चांदमलजी और शोभाचन्दजी। दोनों भाई बहुत मिलनसार एवं धर्मप्रवृत्ति के हैं। आप सिद्धांत रत्न परीक्षा बोर्ड के संरक्षक हैं। चांदमलजी के ३ पुत्र नवलमलजी, शीतलरामजी तथा रतनचन्दजी। शोभाचन्दजी के दो पुत्र मिश्रीमलजी और कुन्दनमलजी। उक्त कुटुम्ब नगर का प्रसिद्ध कुटुम्ब है।

३८ श्री मोतीलालजी सुराणा, रामपुरा

रामपुरा (होल्कर स्टेट) निवासी श्रीमान् डमराजजी सुराणा के सुपुत्र श्री मोतीलालजी जो कि दि० स्वरूपलाल भण्डारी एजुकेशन सिरम देवास जूनियर के मेम्बर हैं उत्साही युवक हैं। रामपुरा

इन्दौर, अमृतसर आदि स्थानों पर आपने समाज-सेवा का अच्छा परिचय दिया। इन्दौर में स्था० जैन लायब्रेरी व वाचनालय के पुन. चालू होने का अधिक श्रेय आपको है। अमृतसर की श्री पूज्य सोहनलाल जैन कन्या पाठशाला के आप चार वर्ष तक अवैतनिक मैनेजर रहे। अमृतसर से विदा होते समय आपको मानपत्र दिया गया। व्यवसाय व उद्योग क्षेत्र में भी आपको काफी सफलता मिली है।

३५ श्री जबरचन्दजी मेहता, सोजत सिटी

कु० जबरचन्दजी मेहता सोजत के उत्साही युवक हैं। उनके पिता श्री का नाम जिनराजजी तथा माताजी का नाम दाखाजी है। अभी आपकी अवस्था २६ वर्ष की है।

स्थानीय स्था० जैन पाठशाला की स्थापना में प्रमुख हाथ आपका है। यहा व्यावहारिक तथा धार्मिक शिक्षण की अच्छी व्यवस्था है। अभी ६० छात्र हैं। आपने जवाहिर जैन जम्नेशियम वर्धमानं वाचनालय, लौंकाशाह जैन क्लब आदि सस्थाओं की स्थापना की। स्थानीय संस्थाओं के आप प्राण गिने जाते हैं।

आपको कविता बनाने तथा लेख लिखने का भी अच्छा शौक है। कविताओं के उपलक्ष मे आपको अच्छे २ पारितोपिक भी मिले हैं। स्थानीय ओसवाल पचों की दुकान के आप सेक्रेटरी हैं। आपके एक छोटे भाई थे जो बी ए में पढते थे किन्तु क्षयरोग के कारण आप स्वर्गवासी हो गये। उनके वियोग में आपने शक्कर तथा हरी के त्याग कर दिये। आपकी फर्म का नाम किशनराज जिनराज सर्राफ है। सोजत रोड पर भी आपकी फर्म है। नाम जिनराज पन्नालाल सर्राफ है।

सामाजिक तथा धार्मिक कामों मे आप खूब दिलचस्पी लेते हैं।

३६ श्री एम. एल. जी मुलतानमल रांका, सिवाना

श्री मुलतानमलजी का परिवार धार्मिक-दृष्टि से काफी महत्व रखता है। आपके घराने मे अनेक सज्जन दीक्षाय लेकर आत्मकल्याण करते हुये समाज सेवा करते रहे हैं।

१७ वी शताब्दी में सोमचन्द्रजी रांका ने दीक्षा ली। इसके बाद १६ वी सदी में अक्षयचन्द्रजी ने यतीधर्म अंगीकार किया। श्री हिन्दूमलजी राका ने दीक्षा ली और जीवन-पर्यन्त पाचों विगय का त्याग किया। हिन्दूमलजी के पुत्र बस्तीमलजी की धर्मपत्नि ने दीक्षा ली। आपके मातु श्री ने भी दीक्षा लेने का निश्चय किया, किन्तु बीमार हो जाने से दीक्षा नहीं ले सकीं। मरते समय अपने पुत्र तथा पुत्रवधू को कहा कि मैं अपनी प्रतिज्ञा नहीं पाल सकी। इस पर इनकी पुत्रवधू ने प्रतिज्ञा ली कि इसकी पूर्ति मैं करूँगी। उन्होंने शादी के थोडे ही दिनों बाद दीक्षा ली और सात साल के बाद सथारा करती हुई स्वर्गवासी हुई।

श्री मुलतानमलजी सिवाना के रहने वाले हैं। आपका जन्म १९७० के कार्तिक शुक्ला १० को हुआ था। दो वर्ष की अवस्था में ही पिता श्री का स्वर्गवास हो गया। पहली शादी १९८४ में हुई। पहली पत्नि ने दीक्षा ले ली। दूसरी शादी १९९३ के माघ कृष्णा ४ को हुई। दोनों पति पत्नि अच्छे श्रद्धालु हैं। आपका व्यवसाय कडपा में है।

३८ श्री लालचन्दजी गुलेछा, खींचन

अगरचन्दजी के ५ पुत्र व १ पुत्री है। (१) कवरलालजी (२) भेवरचन्दजी (३) बीजेलालजी (४) नेमीचन्दजी (५) लालचन्द्रजी

आपके चारों बड़े भाई व्यापारकुशल व धर्मप्रेमी सज्जन हैं। जीवन में आपका उच्च घराना है। आपकी दुकान मद्रास में रायतमल करणीराम एण्ड को० नाम से है।

आपने प्रथम दो वर्ष ब्यावर में ही 'वीराश्रम' में संस्कृत की पढ़ाई की व बाद में ४ वर्ष तक श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में विद्याध्ययन किया। आप गुरुकुल, ब्यावर के सर्वप्रथम स्नातक हैं। आपने अपना विवाह अपनी गुरुकुल प्रतिज्ञा के मुताबिक १८ वर्ष की वय (उम्र) में सादगी व नये तरीके से एवं कम खर्च में किया है।

आपने विशारद की परीक्षा (Second Devision) में उत्तीर्ण की। छात्रों को धार्मिक में अच्छी योग्यता प्राप्त कराने पर पाथर्डी (अहमदनगर) की तरफ से आपको 'पदक के साथ जैनधर्म कोविद' का सार्टीफिकेट प्रदान किया गया है।

आपका जीवन सादा व सरल है। आप अभी करीब १॥ वर्ष से सादड़ी (मारवाड़) में श्री लौंकाशाह जैन गुरुकुल में प्रधानाध्यापक के पद पर सेवा दे रहे हैं।

श्री चम्पालालजी पन्नालालजी आछीजार, ब्यावर

आप मूल निवासी बिराटिया (मारवाड़) के हैं। श्री चम्पालालजी यहां गोद आये। आपकी फर्म सिकन्द्राबाद में चलती है। आप बहुत ही सरल स्वभावी तथा उदारचित्त युवक हैं। अक्सर टीपें आपके यहां से प्रारम्भ होती हैं। आये हुये को इन्कार तो आप करते ही नहीं। यहां की धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख हाथ होता है। आपके छोटे भाई का नाम श्री पन्नालालजी हैं। आपके राष्ट्रीय भावनाओं के युवक हैं। सामाजिक तथा राष्ट्रीय कामों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। स्थानीय श्री जैन गुरुकुल ब्यावर तथा यूथ मर्चेन्ट्स एसोसियेशन के सेक्रेटरी हैं। प्रसिद्ध फर्म गणेशराम गुलराज के मालिक हैं। दोनों भाई होनहार युवक हैं।

श्री गुलाबचन्दजी मुणोत, ब्यावर

श्री गुलाबचन्दजी मुणोत के पिता श्रीमान मिश्रीमलजी मुणोत थे। आप बहुत ही सरल स्वभाव के श्रावक थे। साधु-सन्तों की सेवा में हमेशा तत्पर रहते थे। गरीबों की सेवा तथा सहायता का भी अच्छा शौक था। सार्वजनिक प्रवृत्तियों में हमेशा भाग लेते थे तथा यथाशक्ति सहायता देते थे। मूल निवासी पाली के थे किन्तु व्यापार तथा रहना आदि बहुत वर्षों से यहीं पर है। यहां के प्रमुख मटोरिये थे। यहां के प्रमुख श्रावकों में से एक थे। आपके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियां हैं। आपके पीछे श्री गुलाबचन्दजी मुणोत भी सामाजिक तथा धार्मिक कामों में काफी रस लेते हैं। अभी आपकी सराफी तथा कपड़े की दुकानें हैं। श्री लक्ष्मीचन्दजी सराफी तथा कमलचन्दजी कपड़े की दुकान का काम सम्भालते हैं। राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में भी अच्छा रस लेते हैं। श्री मुणोतजी की मातु श्री बहुत धर्मनिष्ठ श्राविका है। आतिथ्य सत्कार का आपका गुण अनुपम है।

श्री मूलचन्दजी मुणोत, ब्यावर

श्री मूलचन्दजी मुणोत कस्तूरीमलजी के सुपुत्र हैं। श्री कस्तूरीमलजी पाली के निवासी थे। वहीं व्यापार धन्धा करते थे। उनके स्वर्गवास के बाद ये ब्यावर आ गये और उनके बड़े पिता श्री मिश्रीमलजी के साथ ही रहते थे। आप गणेशराम मूलचन्द फर्म के मालिक हैं। अभी आपने पाली में भी कपड़े की दुकान खोली है। आपकी धर्मपत्नी है। आपके एक सुपुत्री है। धार्मिक कामों में अच्छा रस

लेते हैं। आपके पिता श्री केशरीमलजी का स्वर्गवास छोटी उम्र में ही हो गया। आपने गुरुकुल ब्यावर में विशाल सामायिक भवन बनाया है।

८२ श्री बिरदीचन्दजी भसाली, ब्यावर

आपके दादा श्री मेघराजजी भसाली गिरी से ब्यावर आये। यहा की प्रसिद्ध फर्म पूनमचन्द पेमराज के यहा मुनिमात करने लगे। आप बहुत प्रसिद्ध मुनीम थे। बाजार में अच्छा प्रभाव था। मेघराजजी के छ पुत्र—श्री रामचन्द्रजी, पूनमचन्दजी, केशरीचन्दजी, कन्हैयालालजी, धनराजजी तथा सिवराजजी। धनराजजी के दो सुपुत्र श्री बिरदीचन्दजी तथा चन्दनमलजी। बिरदीचन्दजी अभी धनराज बिरदीचन्द फर्म के मालिक हैं। कपडे के व्यवसायी हैं। आपने अपने परिश्रम से अच्छा पैसा कमाया। बिरदीचन्दजी के एक पुत्र श्री भँवरलालजी। दोनों पिता पुत्र अपने व्यवसाय को सम्भालते हैं।

८३ श्री रामचन्द्रजी भंसाली, नानणा

रामचन्द्रजी के पिता का नाम मेघराजजी था। मूल निवासस्थान गिरि था, किन्तु बाद मे नानणा आईदानजी के वहां गोद चले गये। १२–१३ वर्ष की अवस्था में ही व्यापार को सम्भाल लिया। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया तथा खर्च किया। बहुत उदार तथा दयालु श्रावक थे। राज्य में भी आपका अच्छा सम्मान था। केलडी तथा गिनती टेक्स आज तक भी माफ है। आपके सुपुत्र श्री अमरचन्दजी भी अपने पिता श्री की तरह ही दयालु सज्जन हैं। अमरचन्दजी के तीन पुत्र हैं—श्री सुगनचन्दजी, मीठालालजी तथा जौहरीलालजी। चारो पिता पुत्र अपने कारोबार को कुशलता-पूर्वक सम्भाल रहे हैं।

८४ श्री मांगीलालजी राठौड़, नीमच सिटी

श्री मागीलालजी राठौड़ के पिता का नाम मुन्नालालजी राठौड़ था। आप ५–६ पीढी से यहीं रहते है। फर्म का नाम चौथमल मन्नालाल है।

आप अच्छे सुधारक, शिक्षाप्रेमी तथा निर्भीक हैं। पर्दा प्रथा के आप बहुत विरोधी हैं। अभ्यास करने वाले गरीब छात्रों को पढाई के लिए बिना ब्याज लोन देते हैं। चौरडिया कन्या गुरुकुल के ट्रस्टी हैं। परगना बोर्ड के सदस्य तथा को-ऑपरेटिव बैंक के डायरेक्टर हैं। जमींदारी तथा लेन-देन का काम करते हैं। नीमच के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं। आपके माताजी की स्मृति में एक ५–६ हजार का भवन स्थानीय वाचनालय को भेंट किया है। सार्वजनिक प्रवृत्तियों में भी आप उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। आपकी शादी माडलगढ निवासी ऊँकारसिंहजी की पुत्री रतनकँवर बाई के साथ हुई।

८५ श्री कन्हैयालालजी भटेवड़ा, विजयनगर

आपके पिता श्री का नाम सुआलालजी है। आपकी जन्मभूमि जालिया है। हगामीलाल कन्हैयालाल फर्म के मालिक आप ही हैं। आप काफी सचाई से व्यापार करते हैं। आप टाउन कांग्रेस कमेटी विजयनगर के अध्यक्ष हैं। समाज-सुधारक तथा धर्मप्रेमी हैं। सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय तथा

आपके चारों बड़े भाई व्यापारकुशल व धर्मप्रेमी सज्जन हैं। बीपन में आपका सब परवाना है। आपकी दुकान मद्रास में रावतमल करणीदान एण्ड को० नाम से है।

आपने प्रथम दो वर्ष ब्यावर में ही 'वीराश्रम' में संस्कृत की पढ़ाई की व बाद में ४ वर्ष तक श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में विद्याध्ययन किया। आप गुरुकुल, ब्यावर के सर्वप्रथम छात्र हैं। आपने अपना विवाह अपनी गुरुकुल प्रतिज्ञा के मुताबिक १८ वर्ष की वय (उम्र) में सादगी व नये तरीके से एवं कम खर्च में किया है।

आपने विशारद की परीक्षा (Second Devision) में उत्तीर्ण की। छात्रों को धार्मिक में अच्छी योग्यता प्राप्त कराने पर पाथर्डी (अहमदनगर) की तरफ से आपको 'पदक' के साथ 'जैनधर्म कोविद' का सार्टीफिकेट प्रदान किया गया है।

आपका जीवन सादा व सरल है। आप अभी करीब ११॥ वर्ष से सादड़ी (मारवाड़) में श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल में प्रधानाध्यापक के पद पर सेवा दे रहे हैं।

३९ श्री चम्पालालजी पन्नालालजी चालीजार, ब्यावर

आप मूल निवासी बिराँटिया (मारवाड़) के हैं। श्री चम्पालालजी यहाँ गोद आये। आपकी फर्म सिकन्दराबाद में चलती है। आप बहुत ही सरल स्वभावी तथा उदारचित्त युवक हैं। अक्सर टीपें आपसे यहां से प्रारम्भ होती हैं। आये हुये का इन्कार तो आप करते ही नहीं। यहां की धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख हाथ होता है। आपके छोटे भाई का नाम श्री पन्नालालजी है। अच्छे राष्ट्रीय भावनाओं के युवक हैं। सामाजिक तथा राष्ट्रीय कामों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। स्थानीय श्री जैन गुरुकुल ब्यावर तथा पूल मर्चेन्ट्स असोसियेशन के सेक्रेटरी हैं। प्रसिद्ध फर्म गणेशराम जुगराज के मालिक हैं। दोनों भाइ होनहार युवक हैं।

४० श्री गुलाबचन्दजी मुणोत, ब्यावर

श्री गुलाबचन्दजी मुणोत के पिता श्रीमान मिश्रीमलजी मुणोत थे। आप बहुत ही सरल स्वभाव के श्रावक थे। साधु-सन्तों की सेवा में हमेशा तत्पर रहते थे। गरीबों की सेवा तथा सहायता का भी अच्छा शौक था। सार्वजनिक प्रवृत्तियों में हमेशा भाग लेते थे तथा यथाशक्ति सहायता देते थे। मूल निवासी पाली के थे किन्तु व्यापार तथा रहना आदि बहुत वर्षों से यहीं पर है। यहां के प्रमुख मटीरिय थे। यहां के प्रमुख श्रावकों में से एक थे। आपके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियां हैं। आपके पीछे श्री गुलाबचन्दजी मुणोत भी सामाजिक तथा धार्मिक कामों में काफी रस लेते हैं। अभी आपकी सराफी तथा कपड़े की दुकानें हैं। श्री लक्ष्मीचन्दजी सराफी तथा कंवलचन्दजी कपड़े की दुकान का काम सम्भालते हैं। राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में भी अच्छा रस लेते हैं। श्री मुणोतजी की मातु श्री बहुत धर्मनिष्ठ श्राविका है। धार्मिक संस्कार का आपका गुण प्रमुख है।

४१ श्री मूलचन्दजी मुणोत, ब्यावर

श्री मूलचन्दजी मुणोत कशतीमलजी के सुपुत्र हैं। श्री कशतीमलजी पाली के निवासी थे। यहीं व्यापार किया करते थे। उनके स्वर्गवास के बाद में ब्यावर आ गये और उनके बड़े पिता श्री मिश्रीमलजी के साथ ही रहते थे। आप गणेशराम मूलचन्द फर्म के मालिक हैं। अभी आपने पाली में [illegible] की दुकान खोली है। अच्छी चलती है। आपके एक सुपुत्री है। धार्मिक कामों में अच्छा रस

लेते हैं। आपके पिता श्री केशरीमलजी का स्वर्गवास छोटी उम्र में ही हो गया। आपने गुरुकुल ब्यावर में विशाल सामायिक भवन बनाया है।

६२ श्री बिरदीचन्दजी भंसाली, ब्यावर

आपके दादा श्री मेघराजजी भंसाली गिरी से ब्यावर आये। यहा की प्रसिद्ध फर्म पूनमचन्द पेमराज के यहा मुनिमात करने लगे। आप बहुत प्रसिद्ध मुनीम थे। बाजार में अच्छा प्रभाव था। मेघराजजी के छः पुत्र—श्री रामचन्द्रजी, पूनमचन्दजी, केशरीचन्दजी, कन्हैयालालजी, धनराजजी तथा सिवराजजी। धनराजजी के दो सुपुत्र श्री बिरदीचन्दजी तथा चन्दनमलजी। बिरदीचन्दजी अभी धनराज बिरदीचन्द फर्म के मालिक हैं। कपडे के व्यवसायी हैं। आपने अपने परिश्रम से अच्छा पैसा कमाया। बिरदीचन्दजी के एक पुत्र श्री भँवरलालजी। दोनों पिता पुत्र अपने व्यवसाय को सम्भालते हैं।

६३ श्री रामचन्द्रजी भंसाली, नानणा

रामचन्द्रजी के पिता का नाम मेघराजजी था। मूल निवासस्थान गिरि था, किन्तु बाद मे नानणा आईदानजी के वहां गोद चले गये। १२-१३ वर्ष की अवस्था में ही व्यापार को सम्भाल लिया। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया तथा खर्च किया। बहुत उदार तथा दयालु श्रावक थे। राज्य में भी आपका अच्छा सम्मान था। केलडी तथा गिनती टेक्स आज तक भी माफ है। आपके सुपुत्र श्री अमरचन्दजी भी अपने पिता श्री की तरह ही दयालु सज्जन हैं। अमरचन्दजी के तीन पुत्र हैं—श्री सुगनचन्दजी, मीठालालजी तथा जौहरीलालजी। चारो पिता पुत्र अपने कारोबार को कुशलता-पूर्वक सम्भाल रहे हैं।

६४ श्री मांगीलालजी राठौड़, नीमच सिटी

श्री मागीलालजी राठौड़ के पिता का नाम मुन्नालालजी राठौड़ था। आप ५-६ पीढी से यही रहते हैं। फर्म का नाम चौथमल मन्नालाल है।

आप अच्छे सुधारक, शिक्षाप्रेमी तथा निर्भीक हैं। पर्दा प्रथा के आप बहुत विरोधी हैं। अभ्यास करने वाले गरीब छात्रों को पढाई के लिए बिना व्याज लोन देते हैं। चौरडिया कन्या गुरुकुल के ट्रस्टी हैं। परगना बोर्ड के सदस्य तथा को-ऑपरेटिव बैंक के डायरेक्टर हैं। जमींदारी तथा लेन-देन का काम करते हैं। नीमच के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं। आपके माताजी की स्मृति में एक ५-६ हजार का भवन स्थानीय वाचनालय को भेंट किया है। सार्वजनिक प्रवृत्तियों में भी आप उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। आपकी शादी माडलगढ निवासी ऊँकारसिंहजी की पुत्री रतनकँवर बाई के साथ हुई।

६५ श्री कन्हैयालालजी भटेवड़ा, विजयनगर

आपके पिता श्री का नाम सुआलालजी है। आपकी जन्मभूमि जालिया है। हगामीलाल कन्हैयालाल फर्म के मालिक आप ही हैं। आप काफी सचाई से व्यापार करते हैं। आप टाउन कांग्रेस कमेटी विजयनगर के अध्यक्ष हैं। समाज सुधारक तथा धर्मप्रेमी हैं। सामाजिक, धार्मिक, राष्ट्रीय तथा

परोपकार के प्रत्येक कार्य में आप काफी उत्साह से भाग लेते हैं। मानक जैन-विद्यालय, गुलाबपुरा की भी आप तन मन से सेवा करते हैं। विजयनगर की सार्वजनिक प्रवृत्तियों के आप प्राण हैं।

४५ श्री कालूरामजी कोठारी, ढाणकी

कुड़की मारवाड़ से मौजीरामजी कोठारी के सुपुत्र श्री थानमलजी भगरचन्दजी ढाणकी आये और खेती तथा व्यापार प्रारम्भ किया। ये जिस जमाने में आये थे, उस जमाने में रेल तथा मोटरों का अभाव था। थानमलजी के पुत्र उदयराजजी ने व्यापार को काफी बढ़ाया। उदयराजजी बहुत धर्मनिष्ठ श्रावक थे। आपने सद्धर्मबोध तथा जैनतत्त्वप्रकाश जैसी आवश्यक पुस्तकों का प्रकाशन करवाया। श्री उदयरामजी के दो पुत्र हुए। श्री कालूरामजी और बच्छराजजी जो अभी उक्त फर्म के मालिक हैं। श्री कालूरामजी अभी ४३ वर्ष के हैं। आपके एक पुत्र हुआ जिनका नाम भीष्मचन्द्रजी है। श्री भीष्मचन्द्रजी की मातु भी बहुत सुशील एवं धर्मनिष्ठ थीं। आपका अवसान छोटी उम्र में ही हो गया। दूसरी शादी की, जिनसे दो पुत्र व एक पुत्री हुए। मांगीलाल, चम्पालाल और कमलाबाई।

श्री भीष्मचन्द्रजी कोठारी एक शिक्षित होनहार युवक हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में काफी भाग लेते हैं। उच्च विचार रखते हैं। अपना छोटा सा पुस्तकालय बना रक्खा है। अनेक पत्र-पत्रिकायें मंगवाते हैं। काफी उदार हैं। इस छोटी सी अवस्था में कई छात्रवृत्तियां देते हैं। उग्र कांग्रेसी तथा सुधारक हैं। रूढ़ियों के शत्रु हैं। आपके काफी जमीन है। आप नवीन प्रयोगों के आधार पर कृषि का काम भी कर रहे हैं।

४६ श्री बच्छराजजी कोठारी, ढाणकी

श्री बच्छराजजी उदयराजजी कोठारी के सुपुत्र हैं। चञ्चल समझदार तथा कुशल युवक हैं। व्यापार में आपकी बुद्धि काफी काम करती है। घोड़े की सवारी का आपको पूरा शौक है। आपकी फर्म उधर बहुत प्रसिद्ध है। बच्छराजजी के एक पुत्र है। नाम उत्तमचन्दजी है। होनहार प्रतीत होते हैं। फर्म का सब काम श्री बच्छराजजी साहब तथा उत्तमचन्दजी ही संभालते हैं।

४८ श्री जवरीलालजी रांका, ढाणकी

श्री जंवरीलालजी का जन्म वि० सं० १९६१ में हुआ। संवत् १९८१ में आप ढाणकी आये। यहां किराना तथा कपड़े का व्यापार करने लगे। आपकी फर्म का नाम मांगीलाल जवरीलाल है। श्री जौंवरीलालजी एक धर्मनिष्ठ तपस्वी श्रावक हैं। आप पुष्कर के श्री पामीरामजी के वंशज हैं। आपके तीन पुत्र तथा दो पुत्रियां हैं। एक पुत्री श्रीमती केशरबाई ने दीक्षा ले ली।

४९ श्री चन्दनमलजी शिवलालजी भंडारी, ढाणकी

श्री गम्भीरमलजी भंडारी बड़ी रीयां के पास पिरोतवासनी से संवत् १९१२ में ढाणकी आये और व्यापार प्रारम्भ किया। आपके पुत्र श्री चन्दनमलजी और शिवलालजी साथ में थे। १९४८ में गम्भीरमलजी का स्वर्गवास हो गया। दोनों भाइयों पर कार्यभार आ पड़ा। १९८० में चन्दनमलजी का स्वर्गवास हो गया। चन्दनमलजी के एक सुपुत्र श्री पूनमचन्दजी।

श्री शिवलालजी का जन्म १६३० विक्रमी मे हुआ। आपके सुपुत्र का नाम वंसीलालजी है। पूषरामजी बहुत परिश्रमी युवक हैं। वंसीलालजी ने मैट्रिक तक अभ्यास किया। आप अच्छे सुधारक विचारों के होनहार युवक हैं। आपके दो सन्तानें हैं। श्री भाग्यचन्दजी व कौशल्याबाई। अभी फर्म का अधिकतर कार्य आप ही संभालते हैं।

५० श्री गुलाबचन्दजी भंवरीलालजी, ढाणकी

श्री कनीरामजी साहब बोहरा पालडी मारवाड से यहा व्यापारार्थ आये। कनीरामजी के पुत्र श्री गुलाबचन्दजी थे। गुलाबचन्दजी के पुत्र श्री भंवरलालजी हैं। आप ही फर्म का सब काम करते हैं। आपके माताजी श्री झमकूबाई अच्छी तपस्विनी धर्मनिष्ठा स्त्री हैं। उम्र करीबन ५० वर्ष है। फर्म का कारोबार अच्छा चलता है।

५१ श्री पापालालजी मिश्रीलालजी कुचेरिया, ढाणकी

बडू मारवाड से मेघराजजी, धनराजजी, मगनीरामजी व्यापारार्थ जालना आये। जालना में आडत, किराणा तथा लेन देन का व्यापार करने लगे। धनराजजी के सन्तान नहीं थी, अत. बगतावरमलजी को गोद लिया। बगतावरमलजी के दो पुत्र पापालालजी उर्फ गोटूलालजी व मिश्रीलालजी। दोनों सवत १६६५ में ढाणकी आये। पापालालजी के दो पुत्र वंसीलालजी व नौरतमलजी। मेघराजजी मगनीरामजी के वशज अभी तक जालना मे ही रहते हैं। दोनों जगह खेती तथा व्यापार ठीक चलता है।

५२ श्री पन्नालालजी बनेचन्दजी, यवतमाल

श्री पन्नालालजी और बनेचन्दजी दोनों भाई हैं। मूल निवासी बाबूल गांव येवतमाल के हैं। श्री बनेचन्द भाई बाबूल गाव में कृषि कार्य करते हैं। श्री पन्नालालजी यहा टोपियों का व्यवसाय करते हैं। दूर २ तक आपकी टोपिया जाती हैं। अच्छी धार्मिक लागणी वाले हैं।

५३ श्री लक्ष्मणदास टी. शाह, आकोला

आप घालापुर के निवासी हैं। बाल्यकाल में माता का स्वर्गवास हो गया। आपने आयुर्वेद विशारद तथा A L. I M की उपाधियां प्राप्त की हैं। आपने वैद्यक के सम्बन्ध में अनेक प्रमाण-पत्र तथा पदक पाये हैं। १६३२ के राष्ट्रीय आन्दोलन में आप जेल भी गये हैं। अभी आकोला में आपका बडे पैमाने पर दवाखाना चालू है।

आप धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

५४ श्री खूबचन्दजी मेघराजजी, कारंजा

राघनमाल में दुर्गादासजी रहते थे। पटवारी पद से रिटायर होने पर वैद्यक द्वारा ग्रामीणों की सेवा करते थे। आपके तीन पुत्र तथा दो पुत्रिया थीं। हजारीमलजी, हमीरमलजी, मेघराजजी, छगनीबाई तथा रूपी बाई। हजारीमलजी के पुत्र तिलोकचन्दजी के दो पुत्र मोहनलालजी व हीरालालजी।

हमीरमलजी दक्षिण में आये। खामगांव और कारंजा में व्यापार किया। इसके बाद शोलापुर और मद्रास में व्यापार किया। बहुत निर्भीक तथा साहसी पुरुष थे। स्वर्गवास ६० वर्ष की उम्र में शोलापुर में हो गया। मेघराजजी, सुखचन्दजी के गोद गये। आपकी पत्नी बहुत पतिव्रता रही हैं। सन २१ से आप खादी धारण करते हैं तथा खादी का ही व्यवसाय करते हैं। आपके तीन पुत्र हैं। रतनलालजी, सन्तोषचन्दजी तथा नेमीचन्दजी।

८५ श्री मंगलचन्दजी सेठिया, पारसिवनी

श्री मंगलचन्दजी सेठिया के पिता श्री मानमलजी सेठिया हैं। श्री मानमलजी के पिता श्री मूलचन्दजी पिपारोद से पारसिवनी आये और व्यापार प्रारम्भ किया।

मूलचन्दजी के दो लड़के। मानमलजी और तिलोकचन्दजी। मानमलजी के तीन लड़के, मंगलचन्दजी, सूरजमलजी और पीरचन्दजी।

मंगलचन्दजी के एक पुत्र और एक पुत्री। श्री ज्ञानचन्द और सुखाबाई। पीरचन्दजी श्री रतनलालजी के गोद चले गये। सूरजमलजी के पुत्र का नाम जीवनलालजी। फर्म का नाम मानमल मंगलचन्द है। अनाज, किराना तथा लेन-देन का व्यवसाय होता है। श्री मंगलचन्दजी का जन्म सं० १९६० भादवा सुद ४ का है। आपके यहां कृषि का काम भी होता है। प्रसिद्ध फर्म है।

८६ श्री भींवराजजी किरतमलजी, उस्मानाबाद

श्रीमान् प्रेमराजजी मूल निवासी मंडाल मारवाड़ के हैं। आपके दादा भींवराजजी तथा पिता किरतमलजी व्यापार के निमित्त इधर आये। इस फर्म का सारा काम श्री प्रेमराजजी ही संभालते हैं। आप उस्मानाबाद के प्रमुख तथा प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। आजकल साहूकारी का धन्धा चलता है। राज्य कर्मचारियों तक आपका सम्मान है। भींवराजजी और सोभागमलजी दो पुत्र हैं। प्रेमराजजी तथा उनकी पत्नी साधु सन्तों की खूब सेवा करते हैं। दोनों ने अठाई की तपस्या भी की है। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में काफी उत्साह से भाग लेते हैं।

८७ श्री किशनलालजी हीरालालजी ठेहठना

श्री किशनलालजी हीरालालजी, बंसीलालजी तथा मदनलालजी चार भाई हैं। मूल निवासी खाखाप मारवाड़ के हैं। आपके पिता श्री का नाम गुलाबचन्दजी तथा दादा का नाम चन्द्रभानजी तिलोकचन्दजी है। सब से पहिले आपके परदादा रवीचन्दजी ठेहठना आये और व्यापार प्रारम्भ किया। हीरालालजी के चार पुत्र हैं। चम्पालालजी सुवालालजी जगनलालजी तथा कन्हैयालालजी। चम्पालालजी तथा सुवालालजी परभणी दुकान का काम सम्भालते हैं। गंगाखेड़ आपकी जागीरी का गांव है, वहां भी आपकी दुकान है। आपने परभणी में एक अच्छा स्थानक बनवा कर श्री संघ को भेंट किया। चम्पालालजी के कसरीमलजी और कचरूमलजी दो पुत्र हैं तथा सुवालालजी के अमोलकचन्दजी। श्री बंसीलालजी के सात पुत्रियां हैं। मदनलालजी के तीन पुत्र और एक पुत्री है। आशारामजी पन्नालालजी चम्पालालजी और मैनाबाई। व्यापार का निरीक्षण मुख्यतः किशनलालजी व हीरालालजी करते हैं। आपके पास चार हजार एकड़ जमीन है। सात हजार रुपया करीबन तो निजाम सरकार को मालगुजारी के देते हैं। यह कुटुम्ब धार्मिक कामों में खूब भाग लेता है।

५८ श्री दुर्लभजी नारायणजी वोरा, लातूर

श्री दुर्लभजी भाई सरधार राजकोट स्टेट के वतनी हैं। आपके पिता श्री का नाम नारायणजी वोरा है। अभी आप लातूर में व्यापार करते हैं। पहिले आप शोलापुर में नरोत्तमजी मुरारजी की मिल के एजेन्ट थे। अभी आपने एक जिनिंग प्रेस भी खरीदा है। आप लातूर के धर्मनिष्ठ प्रमुख श्रावक हैं। वृद्ध होते हुए भी हर काम में काफी उत्साह से भाग लेते हैं।

५९ श्री नन्दलालजी जैन व कुन्दनलालजी

दोनों भरतपुर के उत्साही युवक हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में उत्साहपूर्वक भाग ही नहीं लेते, अपनी सारी शक्ति जुटा देते हैं। इधर साधु-मुनिराजों का आगमन बहुत ही कम होता है। अतः धार्मिक प्रेम कायम रखने के लिये समय २ पर धार्मिक आयोजन भी करते रहते हैं। चातुर्मास में कुन्दनलालजी शास्त्र वांचन भी करते हैं।

६० श्री धूलचन्दजी हीरालालजी जैन, हातोद

आप सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों मे उत्साह से भाग लेते हैं। धार्मिक कामो में खर्च उदारतापूर्वक करते है। आप धनचन्द्रजी महाराज के भक्त हैं। हातोद के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं।

६१ श्री जसराज कालाभाई पीपलिया काठियावाड़

विलखा स्टेट के पीपलिया गाव में त्रिकमजीभाई रहते थे। उनके तीन पुत्र थे। कालाभाई, कल्याणजीभाई, कपूरचन्दभाई। कालाभाई के दो पुत्र जीवनभाई और जसराजभाई। जसराजभाई अपने भतीज अभयचन्द को लेकर मूर्तिजापुर आये और अनाज का व्यापार प्रारम्भ किया। आपकी फर्म यहा सब से बडी फर्म है।

जसराजभाई के दो पुत्र माणकचन्द और मोहनलाल। मूर्तिजापुर केन्द्र स्थान होने पर भी स्थानक का अभाव था। यह अभाव जसराजभाई के प्रयत्न से दूर हुआ। स्टेशन तथा शहर में दो अच्छे स्थानक बन गये। सब से बडी रकम आपकी थी। आपका कुटुम्ब बहुत धर्मपरायण रहता आया है।

६२ श्री माणकचन्दजी बैताला, बागलकोट

सेठ खूबचन्दजी और रतनचन्दजी सोमणा (नागोर) से व्यापारार्थ यहा आये और कपड़ा तथा किराने का व्यवसाय शुरू किया। खूबचन्दजी के दो पुत्र थे। जड़ावमलजी और रंगलालजी। रतनचन्दजी के पुत्र नहीं होने से जड़ावमलजी को गोद लिया। जडावमलजी और रंगलालजी हिस्से में व्यापार करते रहे। संवत् १९८१ में दोनों भाई अलग हो गये। जडावमलजी का स्वर्गवास १९८६ में हो गया। जडावमलजी के सुपुत्र श्री माणकचन्दजी। माणकचन्दजी का जन्म स० १९६१ में हुआ। आपकी फर्म जडावमल माणकचन्द के नाम से प्रसिद्ध है। आप यहा नवयुवक मण्डल तथा वाचनालय का सचालन करते हैं। आपने एक धर्मशाला भी बनवाई। आपके पुत्र का नाम हसराजजो है। आप यहा के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं।

५३ श्री गुलाबचन्दजी आसमचन्दजी, मनमाड़

श्री गुलाबचन्दजी के दादा कस्तूरचन्दजी मराठी वाल् आनन्दपुर से व्यापारार्थ यह और किराने का धन्धा प्रारम्भ किया। कस्तूरचन्दजी का स्वर्गवास ८४ वर्ष की अवस्था में हुआ बाद आसमचन्दजी ने काम सम्भाला। आसवाल नासिक सभा के सभासद थे। आसमचन्दजी गुलाबचन्दजी। आपने व्यापार को काफी बढ़ाया। किराने के साथ, सराफी काम भी करते हैं का भी व्यापार करते रहते हैं।

आपके चार सुपुत्र हैं। श्री कंवरलालजी धनराजजी सूरजमलजी और शान्तिलालजी। श्री गुलाबचन्दजी यहां के प्रमुख कार्यकर्ता हैं।

५४ श्री भीखचन्दजी ललवाणी, मनमाड़

श्री भीखचन्दजी के दादा हिन्दूमलजी बड़ी पादू मारवाड़ से व्यापार करने इधर आए मिमून में व्यापार प्रारम्भ किया। यहां से मनमाड़ में आ गये और साहूकारी का धन्धा करने लगे मुनि-भक्त हैं। चातुर्मास कराने में आप काफी भाग लेते हैं। यथाशक्ति द्रव्य भी खर्च हैं। व्यापार में आपने लाखों रुपया कमाया। १२०० एकड़ के करीब जमीन है। आप कृषि के करते हैं। आपके पिता श्री नासिक प्रान्त के प्रमुख श्रावक थे। आपकी धर्मपत्नी का नाम तीजाब

५५ श्री सेठ पूनमचन्दजी नारायणदासजी, मनमाड़

श्री लीवराजजी के दादा श्री ओपराजजी व्यापारार्थ मनमाड़ आये और साहूकारी का प्रारम्भ किया। मूल निवासी बड़ी पादू मारवाड़ के हैं। ओपराजजी के दीपचन्दजी और पूनम दो भाई और थे। दीपचन्दजी के सुपुत्र लीवराजजी और लीवराजजी के सुपुत्र माणकचन्दजी चन्दजी का स्वर्गवास २० वर्ष की अवस्था में ही हो गया। अतः व्यापार सम्बन्धी भार श्री पूनम पर आ पड़ा। श्री पूनमचन्दजी ने व्यापार में काफी तरक्की की। धर्म के प्रति आपकी अटल श्रद्धा आपने मनमाड़ में कई चातुर्मास भी करवाये। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में काफी पैसा भी करते हैं। आपका स्वर्गवास ७४ वर्ष की अवस्था में हुआ। अभी फर्म के मालिक श्री लीवराजज आपकी धर्मपत्नी का नाम रतनबाई है। काफी तपस्या करती रहती हैं। यह फर्म मनमाड़ जिले में प्रसिद्ध फर्म है।

५६ श्री पुखराजजी ओस्तवाल, डींगणघाट

सेठ राजमलजी ओस्तवाल का जन्म रूपनगढ़ मारवाड़ में हुआ। १० वर्ष की अवस्था डींगणघाट आये और व्यापार प्रारम्भ किया। व्यापार के साथ खेती भी करते थे। इनकी पत्नी बाई भी बहुत धर्मपरायण कुशल स्त्री थी। पुत्र न होने से श्री सुगनचन्दजी को गोद लिया। छोटी ही सुगनचन्दजी की मृत्यु हो गई। मृत्यु के बाद इनकी पत्नी सोनाबाई ने कार्य भार सम्भाला और पुखराजजी को गोद लिया। पुखराजजी का विवाह २१-४-१२ को हुआ। पुखराजजी अच्छे धार्मिक भावना के युवक हैं। आपके तीन सुपुत्र हैं। श्री तिलोकचन्द कस्तूरचन्द और तेजराज। कन्या है जिसका नाम सुन्दरबाई है।

९६ श्री माणकचन्दजी चम्पालालजी, हींगणघाट

श्री केसरीमलजी रूपनगढ से यहा व्यापारार्थ आये, व्यापार किया तथा मालगुजारी भी हासिल की। इनकी मृत्यु के समय उनके पुत्र माणकचन्दजी ५ वर्ष के थे। माणकचन्दजी ने छोटी उम्र मे व्यवसाय हाथ में लिया। बहुत सचाई के साथ व्यापार करते थे। माणकचन्दजी के पुत्र का नाम चम्पालालजी है। आप बडी कुशलता से व्यापार करते हैं। उत्साही युवक हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कामों मे अच्छा रस लेते हैं। आपकी पत्नी का नाम जीवणबाई है। आपके पुत्र का नाम ओंकारमल है।

९८ श्री हस्तीमलजी कनकमलजी, हींगणघाट

आपका मूल निवास स्थान मुदियार मारवाड है। आपके दादाजी का नाम मुल्तानमलजी है। उनके दो पुत्र—बख्तावरमलजी और जवाहरमलजी। बख्तावरमलजी के पाच पुत्र—शिवदानमलजी, विजयराजजी, सुगनचन्दजी, हस्तीमलजी और हीरालालजी। जवाहरलालजी के तीन पुत्र—जेंवतमलजी, मुकनचन्दजी और चादमलजी। विजयराजजी हींगणघाट आये और व्यापार शुरू किया। कुछ समय बाद हस्तीमलजी आये। आपने थोक किराने का तथा सर्राफी काम शुरू किया।

विजयराजजी मुकनचन्दजी ने कानगाव मे तथा चांदमलजी हीरालालजी ने अलीपुर मे दुकान शुरू की। हस्तीमलजी के चार लडके—कनकमलजी, ताराचन्दजी, माणकचन्दजी व जवरीलालजी।

हींगणघाट मे हस्तीमल कनकमल की फर्म एक प्रतिष्ठित फर्म है। सुगनचन्दजी के दो लडके—पन्नालालजी प्रेमराजजी। प्रेमराजजी के लडके का नाम हसराजजी। चांदमलजी के एक पुत्र श्री मोहनलालजी। हीरालालजी के दो पुत्र—श्री मदनलालजी व लालचन्दजी।

९९ श्री मन्नालालजी मोतीलालजी ओस्तवाल, हींगणघाट

श्री जवारमलजी रूपनगढ से हींगणघाट व्यापारार्थ आये। जवारमलजी के दो पुत्र श्री बींजराजजी व पन्नालालजी। बींजराजजी के सुपुत्र श्री मोतीलालजी। मोतीलालजी के सन्तान नहीं थी अत धनराजजी को गोद लाये। धनराजजी ने छोटी अवस्था में ही व्यापार को अच्छी तरह सभाल लिया। धनराजजी ही अभी उक्त फर्म के मालिक हैं। आपका विवाह हीरालालजी सुराणा की सुपुत्री अचरजकँवर के साथ हुआ है। आपकी पुत्री का नाम आनन्दीबाई है।

१०० श्री सुवालालजी जंवरीलालजी रांका, हींगणघाट

आप मूल निवासी नरवर किशनगढ के हैं। आपके काकाजी व्यापारार्थ यहा आये। आपके दो भाई कन्हैयालालजी व सुवालालजी। ५ भाई स्वर्गवासी हो चुके। दानमलजी, मानमलजी, रूपचन्दजी, जंवरीलालजी व सुगनचन्दजी। मानमलजी के लडके भागचन्दजी तथा जंवरीलालजी के तीन सन्तान। हुकमचन्द, मेघराज तथा जतनीबाई। आपके जमींदारी, अनाज तथा आडत का व्यवसाय है। आपकी एक दुकान भानोरा में भी है। जहा नाम कन्हैयालाल बालचन्द पडता है।

आप अच्छे धर्मनिष्ठ श्रावक हैं।

श्री भवानीदासजी चुन्नीलालजी, हींगणघाट

चुन्नीलालजी के सुपुत्र बंसीलालजी । बंसीलालजी रुयासी गांव वाले मगनमलजी के यहां से गोद आये । बंसीलालजी का विवाह राळ गांव निवासी रतनचन्दजी मुणोत के यहां हुआ । बंसीलालजी के दो लड़के और एक लड़की । माणकचन्द अभीरचन्द तथा मायरबाई । आपके यहां मालगुजारी, काश्तकारी तथा लेन-देन का व्यापार है । यहां की तथा मंडारे की दुकान पर नाम भवानीदास चुन्नीलाल ही पड़ता है । आप स्थानीय स्थानकवासी जैन संघ के प्रेसीडेन्ट हैं । बंसीलालजी की धर्मपत्नी का नाम जड़ावबाई तथा चुन्नीलालजी की धर्मपत्नी का नाम सोनीबाई । सोनीबाई ने मरते समय एक ७०००) की लागत का मकान स्थानक के भेंट किया । आपकी यहां एक धर्मशाला भी है ।

७२ श्री शोभाचन्दजी कटारिया, हींगणघाट

श्री शोभाचन्दजी के दादा नेमीदासजी हरसोर मारवाड़ से यहां आये । नेमीदासजी के लड़के भैरूदासजी ने ताराचन्दजी के सीर में व्यापार किया । भैरूदासजी के लड़के भवानीदासजी के पुत्र नहीं था अतः चुन्नीलालजी को गोद लाये । कुन्दनमलजी के भी कोई सन्तान नहीं थी अतः उनके दत्तक पुत्र के रूप में शोभाचन्दजी को रक्खा । शोभाचन्दजी चुन्नीलालजी के पास ही रहते थे । उन्हीं ने इन्हें योग्य बनाया । आपने सोना चांदी तथा सराफी का व्यवसाय प्रारम्भ किया । आपकी फर्म का नाम कुन्दनमल शोभाचन्द है । यहां के प्रमुख श्रावकों में से आप एक हैं । आप्के सेवाभावी तथा मुनिसेवक हैं ।

आपके छोटे भाई भींवराजजी के सुपुत्र रूपचन्दजी आपके पास ही रहते हैं ।

७३ श्री कन्हैयालालजी कोठारी, बीकानेर

आपके पिता का नाम श्री मघराजजी साहिब था । वे अपने समय के एक सफल व्यापारी और धर्मानुरागी व्यक्ति थे । उन्होंने अपनी जन्मभूमि बीकानेर से बाहर जाकर सिलहट और कलकत्ता में फर्में खोलकर मारवाड़ी समाज के सामने एक नया आदर्श रक्खा था । योग्य पिता के सुयोग्य पुत्र श्री कन्हैयालालजी कोठारी ने उनके काम को अच्छे ढंग से और भी वृद्धिगत किया ।

आपका जन्म संवत १९५८ चैत्र शुक्ला पञ्चमी को हुआ था । बचपन से ही आप बुद्धिमान एवं विनयवान थे । आपके पिता श्री ने आपकी शिक्षा-दीक्षा अपने हाथ में ली और कुछ ही वर्षों में आपको हिन्दी, बंगला, वाणिका अंग्रेजी धर्म आदि विषयों का अच्छा अभ्यास करा दिया । होनहार की बात १४ वर्ष की अवस्था में ही आपके पिता श्री का स्वर्गवास हो गया । अब आपकी माता ने आपकी प्रगति की ओर विशेष ध्यान दिया । आपकी माता बहुत ही धर्मपरायण परोपकारी और विदुषी स्त्री थीं । आपकी माता श्री ने संवत १९९९ आषाढ़ सुदि २ को लाखों रुपयों की जायदाद त्याग कर दीक्षा ले ली । आपने साहस नहीं खोया और लिखते हुए आश्चर्य होता है कि गत तीन वर्षों में आपने असाधारण उन्नति कर ली । निम्न लिखित स्थानों पर आपकी दुकानें बहुत ही सफलता से चल रही हैं —

१—सिलहट	मेसर्स मघराज बालकिशन बन्दर बाजार	कपड़ा चावल की दुकान
२—कलकत्ता	मेसर्स लक्ष्मीराम कन्हैयालाल १० नम्बर आरमेनी स्ट्रीट	कमीशन एजेन्ट
३—बोलपुर	कन्हैयालाल कोठारी	किराणा गल्ला की दुकान
४—हाथरस	रतनलाल सुगनचन्द चांदे मनन	आढ़त गल्ला किराणा

यह तो है आपकी व्यापारिक प्रगति, परन्तु जहा आप कुशल व्यापारी हैं वहि' कई आप में ऐसे सद्गुण भी हैं जो दूसरों को आकर्षित किये बिना नहीं रह सकते। 'सादा रहना और उच्च विचार रखना' आपके व्यवहारिक जीवन का एक मात्र आदर्श है। आप धर्मानुरागी, दानी, मृदुभाषी, मिलनसार, सहनशील, हँसमुख तथा शिक्षा-प्रेमी नवयुवक हैं। आपने अपनी माता के दीक्षा उपलक्ष्य में हजारों रुपये लगाये। रु० १४००) जावद के उपाश्रय में, रु० १०००) जीवदया खाते में, रु० ५००) पचकूला गुरुकुल में तथा हजारों रुपये अन्य उपयोगी संस्थाओं में भी प्रदान किये हैं।

आपके एक छोटे भाई भी हैं जिनका नाम भँवरलालजी है। इसका जन्म संवत १९८९ आषाढ वदि १२ को हुआ था।

८४ श्री ईश्वरदासजी छल्लाणी, देशनोक

आप देशनोक में एक प्रतिष्ठित उदार एवं खुशदिल सज्जन हैं। आपका शुभ जन्म स० १९५३ में बीकानेर प्रात के गुडा नामक ग्राम में हुआ है। आपके माता पिता एक साधारण स्थिति के सद्गृहस्थ थे, परन्तु आपने अपने बुद्धि-कौशल से व्यापारिक लाइन में इतनी अच्छी उन्नति की है कि आज कल आपका नाम प्रतिष्ठित सज्जनों में गिना जाता है। आपका कलकत्ता शहर में ईश्वरदास तारकेश्वर नाम से सुप्रसिद्ध फर्म है। आपकी वृत्ति मिलनसार होने की वजह से हजारों मनुष्य हृदय से आपको चाहते हैं। इस युद्धकालीन समय में जहा अच्छे २ आदमी भी पैसे की चाह से 'चोर बाजार' से दूर न रह सके वहा आप इस अन्याय-पूर्ण कार्य में न फसे। सामाजिक कार्य में आपको बड़ा प्रेम रहता है। 'श्री जैन जवाहिर मण्डल' के आप सभापति हैं। सहनशीलता व नम्रता का गुण आपमें विशेष रूप से पाया जाता हैं।

८५ श्री केशरीमलजी डूंगरचन्दजी सिवाना

सेठ राजमलजी का मूल निवास स्थान सिवाना है। आप यहा के प्रसिद्ध श्रावक हैं। आप कुशल व्यवसायी हैं। लाखों रुपया अपने हाथों से कमाया है। आपकी तीन दुकानें चलती है। आपकी प्रमुख फर्म शाह पूनमचन्द राजमल कडपा के नाम से प्रसिद्ध है। आपकी तीनों दुकानों पर इस वर्ष से सदाव्रत चलता है। राजकीय कामों में भी आपकी सलाह ली जाती है। आपके तीन पुत्र व पुत्रिया हैं। बसीलालजी, केसरीमलजी, डूँगरचन्दजी। बंसीलालजी का स्वर्गवास होचुका। शेष दोनों पुत्र उत्साही तथा उदार हैं। आपकी द्वितीय पुत्री ने कस्तूराजी महासतिजी के पास दीक्षा ली है।

८६ शा० मघराज वन्नाजी बादणवाड़ी

आप एक उदार चित्त उत्साही युवक हैं। आपके वहा गया हुआ कोई खाली हाथ कभी नहीं जाता। आपकी फर्म बैंगलोर में शा० ताराचन्द पूनमचन्द के नाम से चलती है। आप ताराचन्दजी के सुपुत्र हैं बाद में वन्नाजी के गोद गये। पिताजी की मृत्यु के बाद सारा व्यवसाय आप ही करते हैं।

श्री सेठ माणेकलालभाई अमोलकभाई घाटकोपर

श्री अमोलकभाई के तीन सुपुत्र श्री नगीनदास भाई प्रेमचन्द भाई तथा माणेकलाल भाई। नगीनदास भाई ने गांधी शिक्षण के तेरह भाग प्रकाशित करवाये। सब भाई पूर्ण राष्ट्रवादी होते हुए धर्मवादी भी पक्के हैं। हर धार्मिक कार्य में भाग रहते हैं। महात्मा गांधीजी को एक मुश्त एक लाख रुपया भेंट किया। बम्बई की राष्ट्रीय तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका मुख्य हाथ रहता है। आपकी ओर से जैन स्थानक में एक अच्छा पुस्तकालय है, जिसका प्रत्येक वर्ग तथा धर्म वाला लाभ ले सकता है। साथ में सुन्दर वाचनालय भी है। श्री माणेकलाल भाई के सुपुत्र का नाम रतनलाल भाई है बहुत होनहार युवक है। श्री माणेकलाल भाई कान्फ्रेन्स के जनरल सेक्रेटरी भी हैं।

श्री बालारामजी रामचन्द्रजी पूना

आपके दादाजी ने कुचेरा से फूलगांव में आकर व्यापार प्रारम्भ किया। श्री बालारामजी फूलगांव से यहां आगये और किराने का धन्धा करते हैं। यहां न तो साधु सन्तों का आगमन था न कोई स्थानक आदि। आपके प्रयत्न से सबकी पूर्ति हुई। आपने ३२ ही शास्त्रों का अध्ययन किया है। आप अपना अधिकांश समय धर्म-ध्यान में ही लगाते हैं। व्यापार न्याय-नीति पूर्वक करते हैं। वृद्ध होते हुए भी सुधारक हैं। आपके पुत्र नहीं है। एक पुत्री है उसे तथा अपने जामाता को साथ ही रखते हैं। अपना सारा काम धन्धा भी उनके सुपुर्द कर रक्खा है। जामाता का नाम श्री धनराजजी कांकरिया है। गरीब तथा अनाथ को शादी के लिये रकम की जरूरत हो तो आप उत्साह से उनकी व्यवस्था करते हैं।

श्री देवीचन्दजी उत्तमचन्दजी पूना

आपके दादा सवारामजी सोजत से रूइ गांव में आये और धन्धा शुरू किया। सवारामजी के दो पुत्र। श्री गम्भीरमलजी और सरदारमलजी। गम्भीरमलजी के तीन पुत्र बगदूमलजी, प्रेमराजजी तथा देवीचन्दजी। सरदारमलजी के उत्तमचन्दजी।

पूना व्यापार के लिये सरदारमलजी और बगदूरामजी आये। यहां कपड़ा और अनाज का धन्धा करते हैं। धर्म के काम में हमेशा आगे रहते हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों में सहायता भी उत्साहपूर्वक देते हैं। आपकी सहायता से यहां एक स्थानक बनवाया गया है। सरदारमलजी के पुत्र उत्तमचन्दजी और गम्भीरमलजी। सब दुकान का काम सम्भालते हैं। बगदूमलजी के तीन पुत्र हैं।

श्री चुन्नीलालजी जसराजजी, पूना

आपके दादाजी जसमलजी मारवाड़ मारवाड़ से पूना आये और सर्राफी धन्धा शुरू किया। आप पोरवाल जाति के हैं। मारवाड़ में स्थानकवासी समाज में पोरवालों के ४-५ घर ही हैं। आपके तीन पुत्र जसराजजी रतनचन्दजी और जीतमलजी। सब भाई धार्मिक कामों में काफी रस लेते हैं। आप कई वर्षों तक आयम्बिल की ओलियां करवाते रहे। राज्य की ओर से आपको सेठ की पदवी है तथा सब रकम माफ है। अभी रतनचन्दजी के सुपुत्र श्री लालचन्दजी सब काम सम्भालते हैं। जसराजजी के श्री मोहनमलजी को गोद लाये। आपने कई धार्मिक पुस्तकों का प्रकाशन करवाया।

८१ श्री मोतीचन्दजी भगवानजी, पूना

आपकी फर्म ४० वर्ष से पूना में है। भगवानजी के पुत्र मोतीचन्दजी राजनगर से गोद लाये गये। आप बम्बई में सर्राफी धन्धा करते थे। मोतीचन्दजी का स्वर्गवास हो जाने के बाद श्रीचन्दजी को गोद लाये। आपने व्यापार को अच्छा सम्भाला। गोद के पुत्र होते हुए भी माताजी तथा दादीजी की खूब सेवा करते हैं। छोटी अवस्था में ही स्त्री का देहान्त हो जाने पर भी दूसरी शादी करने से इन्कार कर दिया। आपके सुपुत्र का नाम मोहनराजजी तथा पौत्र का नाम हेमराजजी है। जाति वैदमूथा है।

८२ श्री सेठ लालचन्दजी मूथा, गुलेजगढ़

आपके पिता श्री सिरेमलजी यहां व्यापारार्थ आये। कपडे का व्यापार शुरू किया। सिरेमलजी के कोई सन्तान नहीं थी, अतः लालचन्दजी गोद लाये गये। आपकी मातु श्री का नाम जेठीबाई है। आपकी फर्म कर्नाटक प्रान्त में सब से अधिक प्रसिद्ध है। आप राय साहब हैं तथा कई वर्ष तक ओनरेरी मजिस्ट्रेट तथा स्थानीय म्यूनीसिपल कमेटी के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। आप स्थानकवासी समाज मे काफी प्रसिद्ध सज्जन हैं। प्रति वर्ष चातुर्मास में १–२ माह मुनि सेवा करते हैं। सम्वत् १६६७ मे आपने जैनाचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी महाराज का चातुर्मास यहां कराया। कर्नाटक प्रान्तीय जैन सेवा-सघ के आप अध्यक्ष हैं। आपके सुपुत्र का नाम श्री जौहरीलालजी है। आपकी एक फर्म अहमदनगर में लाल-चन्द जवरीलाल के नाम से चलती है।

८३ श्री पूनमचन्दजी दगडूमलजी भंडारी, अहमदनगर

आपके परदादा श्री पनराजजी पीपाड से पीपर गाव आये और व्यापार प्रारम्भ किया। नगर में श्री दगडूमलजी आये और कपड़ा, गल्ला तथा साहूकारी का व्यवसाय प्रारम्भ किया। दगडूमलजी के सुपुत्र श्री पूनमचन्दजी एक राष्ट्र प्रेमी सज्जन हैं। आपके वहा अमलनेर धूलिया मिल्स की एजेन्सी है। लिपटन टी तथा थाना मैच के भी आप एजेन्ट हैं। ग्रामोद्योग सघ आदि प्रत्येक राष्ट्रीय प्रवृत्ति में आपका प्रमुख भाग होता है। आपके एक सुपुत्र श्री बसन्तलाल तथा चार पुत्रिया हैं। सामाजिक तथा तथा धार्मिक विचार भी आपके बहुत अच्छे हैं।

८४ श्री किशनदासजी माणकचन्दजी मूथा, अहमदनगर

किशनदासजी स्था० समाज के ख्यातिप्राप्त श्रावक हो गये हैं। आप ३२ ही शास्त्रों के जानकार थे। अजमेर सम्मेलन के कार्य में भी आपका काफी सहयोग था। अनेक मुनियों तथा महासतियों को आपने शास्त्राभ्यास कराया है। सन्तों के अभाव में व्याख्यान भी आप ही फरमाते थे। आपके दो सुपुत्र—श्री माणकचन्दजी और प्रेमराजजी। माणकचन्दजी भी अपने पिता श्री की तरह धार्मिक कार्यों में काफी रस लेते हैं। चातुर्मास कराने, मेहमानों की सेवा करने में आप कभी पीछे नहीं रहते। जैन निराश्रित फण्ड, जीवदया फण्ड तथा धर्मशाला ट्रस्ट के आप अध्यक्ष हैं तथा सघ के सेक्रेटरी। प्रेम-राजजी म्यूनीसिपल काउन्सिलर है। नगर डिस्ट्रिक्ट आरबन को ओपरेटिव बैंक के डायरेक्टर हैं। प्रेमराजजी के भगवानदास तथा शान्तिलाल दो पुत्र तथा दो पुत्रिया हैं।

यहा की प्रत्येक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में इस फर्म का प्रमुख हाथ होता है।

श्री भानुदासजी हिम्मतमलजी, अहमदनगर

आपके दादा श्री हुकमीचन्दजी मिरियारी से यहाँ आये और किराणे का व्यापार प्रारम्भ किया हुकमीचन्दजी के दो पुत्र—देवीचन्दजी और पूनमचन्दजी। देवीचन्दजी के पाँच पुत्र—चुन्नीलालजी भानुदासजी, रतनचन्दजी, हिम्मतमलजी और रामचन्द्रजी। भानुदासजी के लड़के—पीरचन्द और मेनसुख। रतनचन्दजी के दो पुत्र—सूरजमलजी और हरखचन्दजी। हिम्मतमलजी के धनराज, सीताराम, हीरालाल और कान्तिलाल।

देवीचन्दजी और पूनमचन्दजी नियमपालन तथा क्रियाकाण्ड में बहुत दृढ़ हैं। अभी यहाँ कपड़े का व्यापार करते हैं।

श्री प्रेमराजजी लालचन्दजी मूथा, अहमदनगर

श्री लालचन्दजी और भालमचन्दजी मूथा यहाँ के मुखिया श्रावक थे। दोनों का स्वर्गवास छोटी उम्र में ही हो गया। लालचन्दजी के पुत्र श्री प्रेमराजजी। आपने १६ वर्ष की अवस्था में ही व्यापार को सम्भाल लिया। जीवदया मण्डल तथा कपड़ा असोसियेशन के आप सेक्रेटरी हैं। म्यूनीसिपल कमिश्नर अक्सर निर्विरोध होते हैं। आप अच्छे उत्साही, धर्मप्रेमी तथा राष्ट्रीय विचारों के युवक हैं। आपके माताजी सदाबाई बहुत धार्मिक लागणी की भी थीं। स्थानीय प्रत्येक राष्ट्रीय तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख भाग होता है। आप मूल निवासी पीपाड़ मारवाड़ के हैं।

श्री नरसिंहदासजी खींवराजजी, नागपुर

आपके बड़े पिता श्री सूरजचन्दजी व्यापारार्थ मोमासा से कामठी आये। वहाँ से फिर खींवराजजी सा० नागपुर आये और कपड़े का व्यापार शुरू किया।

खींवराजजी के पुत्र भोमराजजी। आप सदर के एक मुखिया तथा साहूकार श्रावक हैं।

नरसिंहदास खींवराज फर्म के आप मालिक हैं। धार्मिक लागणी अच्छी है। धार्मिक कामों में सोत्साह भाग लेते हैं।

श्री माईदानजी रामचन्द्रजी, बेंगलोर

श्री माईदानजी लगभग एक शताब्दी पूर्व मरिया मारवाड़ से सिकन्द्राबाद आये और फिर बेंगलोर। यहाँ साहूकारी का धन्धा शुरू किया। माईदानजी के तीन पुत्र—रामचन्द्रजी हीराचन्दजी तथा प्रेमचन्दजी। रामचन्द्रजी के सुपुत्र ताराचन्दजी गुजर गये अतः फूलचन्दजी को गोद लाये। हीराचन्दजी के दुलाजी, मिश्रीलालजी तथा पूनमचन्दजी तीन पुत्र। प्रेमचन्दजी के मिट्ठूलालजी। मिश्रीलालजी के पुत्र भंवरीलालजी तथा पूनमचन्दजी के शान्तिलालजी। उक्त फर्म यहाँ बहुत पुरानी तथा प्रतिष्ठित फर्म है। यहाँ आकर लाखों रुपया कमाया। धार्मिक कार्यों में श्री मिश्रीलालजी आदि उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं।

श्री फतेहलालजी मालू, मालेगाँव

आज से ६० वर्ष पूर्व बीकानेर से गुमानचन्दजी व्यापारार्थ मालेगाँव आये और [illegible] मल चगनमल के नाम से फर्म का काम शुरू किया। यहाँ से धनराजजी व फतेहलालजी माल

गांव शहर मे आगये। यहा कपडा तथा साहूकारी का काम शुरू किया। मालेगांव की फर्म का नाम जवाहिरमल फतेहलाल रक्खा। फतेहलालजी के चार पुत्र—पन्नालालजी, किशनलालजी, पृथ्वीराजजी तथा गणेशमलजी। पन्नालालजी २२ वर्ष की अवस्था में स्वर्गवासी हो गये। शेष तीनों दुकान पर काम करते हैं। फतेहलालजी ने व्यापार को खूब बढाया। काफी द्रव्य उपार्जन किया। आस-पास के गांवों में पाडों तथा बकरों का बेहद बलिदान होता था, वह आपके पुरुषार्थपूर्ण प्रयत्न से बिल्कुल बन्द हो गया। आप धर्म के मामलो में बहुत कट्टर थे।

८० श्री नथमलजी बोहरा, धूलिया

नथमलजी के पिता श्री का नाम खींवराजजी था। आपके वडेरे श्री डांवरजी १०० वर्ष पूर्व बडू से व्यापारार्थ अम्बोड़े होते हुए धूलिया आये।

उम्मेदमलजी के चार पुत्र—श्री कस्तूरचन्दजी, खींवराजजी, सूरजमलजी और वीरमलजी। खींवराजजी के पुत्र श्री नथमलजी तथा पुत्री पाराबाई। नथमलजी के दो पुत्र श्री नेमीचन्दजी, केशरीमलजी यहां कपड़ा तथा साहूकारी का धन्धा करते हैं।

८१ श्री हीरालालजी नाहटा, धूलिया

रतनचन्दजी से सुपुत्र श्री दलपतजी तथा उदयचन्दजी बावडी जोधपुर से १०० वर्ष पहिले धूलिया आये। अभी फर्म के मालिक बालारामजी के पुत्र हीरालालजी हैं। आप लेन-देन तथा कपडे का व्यापार करते हैं। आपके दो पुत्र हैं। कन्हैयालालजी व मोहनलालजी। कन्हैयालालजी अपने काका श्री नथमलजी के गोद गये। आपका व्यापार अच्छा चलता है। धार्मिक क्रिया काण्ड में पक्के हैं। धार्मिक तथा सामाजिक कामों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं।

८२ श्री सेठ पन्नालालजी ओश्रीमाल

पन्नालालजी के पिताजी का नाम शिवलालजी था। आज से लगभग १०० वर्ष पूर्व श्री गंगारामजी कुड़की मारवाड से यहां आये और कपड़ा व साहूकारी का धन्धा शुरू किया। शिवलालजी के पुत्र श्री पन्नालालजी सोजत से गोद आये। शिवलालजी की पत्नी जड़ावबाई ने अपने पति की स्मृति में दस हजार का दान किया। उक्त रकम श्री तिलोक जैन पाठशाला को दी तथा ५ हजार और निकाल कर जैन बोर्डिङ्ग कड़ा को दिये। इनके सिवाय कन्याशाला धूलिया को ५ हजार, टोकली धर्मशाला बनाई जिसमें ६ हजार खर्च किये और भी आपने जैन गुरुकुल ब्यावर तथा ऋषि श्रावक समिति आदि को सहायताएँ दीं।

८३ श्री ऊंकारदासजी हजारीमलजी, अमलनेर

हजारीमलजी, जवानमलजी और रूपचन्दजी तीन भाई थे। जवाहरमलजी हजारीमलजी का परिवार उत्तरान खानदेश में है। हजारीमलजी के तीन पुत्र—ऊंकारदासजी, छोटमलजी व चुन्नीलालजी। जवाहरमलजी के सुपुत्र किशनदासजी। रूपचन्दजी खेड़गाव में रहते हैं। तीन सुपुत्र—मोतीरामजी, बच्छराजजी और गोविन्दरामजी। मूल निवासी भगवानपुरा मेवाड़ के हैं। उक्त वंश ने मेवाड़ बावसा

की। पाचोरा में जैन पाठशाला स्थापित की। आपका कुटुम्ब बहुत बड़ा है। आपकी फर्म इधर बहुत प्रसिद्ध है।

८६ श्री लालचन्दजी जेठमलजी, अमलनेर

श्री मगनीरामजी के ५ पुत्र—श्री हीराचन्दजी, सुजानमलजी चन्दनमलजी आसकरणजी तथा माणकलालजी। श्री सुजानमलजी ने मद्रास में मगनीराम सुजानमल के नाम से दुकान खोली। साहूकारी का धन्धा प्रारम्भ किया। संवत् १९८३ में अमलनेर में कपड़ा तथा साहूकारी का धन्धा चालू किया।

सुजानमलजी के तीन पुत्र—लालचन्दजी जेठमलजी व जसराजजी। लालचन्दजी के तीन सुपुत्र—पुखराजजी, हंसराजजी व मोहनराजजी। जसराजजी के दो पुत्र—कस्तूरचन्दजी और गणेशमलजी। जेठमलजी अच्छे उत्साही युवक हैं। धार्मिक क्षेत्र में अच्छा स्थान है।

८७ श्री लाला चन्दनमलजी अछरूमलजी, अहमदगढ़ मंडी

लाला अछरूमलजी का जन्म सं० १९५२ का है। आपके पूर्वजों को राज दरबार का खिताब था। आपका नाम पंजाब भर में मशहूर है। श्री जैनेन्द्र गुरुकुल पंचकूला के अध्यक्ष हैं। गुरुकुल को १०००) एक मुश्त दिये तथा समय २ पर सहायता देते रहते हैं। आपके तीन पुत्र हैं—केसीराम, प्रकाशचन्द्र और राजचन्द्र। शिक्षा प्रेम आपका स्तुत्य है।

८८ श्री लाला घमण्डीलालजी पलटूमलजी, कांधला

रा० सा० केशरीमलजी का वंश बहुत प्रतिष्ठित कुटुम्ब है। लाला घमण्डीलाल पलटूमल यहाँ के प्रसिद्ध व्यापारी हैं। पूज्य श्री काशीरामजी महाराज तथा कई धर्म्म मुनिराजों की दीक्षा में भी आपका प्रमुख हाथ रहा है। आपको समाज-सेवा का अच्छा शौक है। लाला मित्रसेन होनहार युवक हैं। पलटूमल का जन्म सन् १९१४ का है। पलटूमल के चार पुत्र हैं। ईश्वरप्रसाद अजीतप्रसाद जगतप्रसाद तथा जिनेशप्रसाद। सोहनलाल जैन पाठशाला के व्यवस्थापक आप ही हैं। आप हिन्दू धर्मकी संस्कृत हाई स्कूल के कई वर्षों तक सेक्रेटरी रहे हैं।

८९ श्री लाला सोहनलालजी लक्ष्मीचन्दजी नाहर, अम्बाला

लाला बालामलजी पंजाब के एक प्रसिद्ध श्रावक हुए हैं। आपके पौत्र मोहनलालजी हैं। अभी सारा कारोबार आप ही चलाते हैं। स्थानीय जैन संघ के आप सेक्रेटरी भी थे। आपके पुत्र का नाम भोलानाथ है। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में इस कुटुम्ब का प्रमुख हाथ रहता है। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में यथाशक्ति द्रव्य खर्च भी करते हैं।

९० श्री इन्द्रचन्द्रजी बिरदीचन्दजी मेहता, हरमाड़ा

मूल निवासी रूपनगढ़ के हैं। अभी आप हरमाड़ा में रहते हैं। आपका व्यापार हरमाड़ा तथा किशनगढ़ में है। आप हरमाड़ा के प्रसिद्ध श्रावक हैं। इन्द्रचन्द्रजी के पुत्र श्री बिरदीचन्दजी हैं तथा चार

पुत्रियां हैं। आपकी फर्म का नाम नथमल इन्द्रचन्द है। अभी फर्म का काम श्री गिरदीचन्दजी सम्भालते हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में सोत्साह भाग लेते हैं।

९९ श्री सुल्तानसिंहजी अमोलकचन्दजी, बड़ौत

आप मूल निवासी कुमहेड़ा मेरठ के हैं। फर्म का नाम लाला सुल्तानसिंहजी सम्भालते हैं। लाला सुल्तानसिंहजी के पुत्र का नाम अमोलकचन्दजी तथा पौत्र का नाम प्रेमचन्दजी है। लाला सुल्तानसिंहजी स्थानीय म्युनीसिपल बोर्ड के चेअरमैन हैं। आपके यहां सदाव्रत चलता है। काफी उदार श्रावक हैं। बड़ौत में सब से बड़ी फर्म आपकी ही है। मुनिभक्त हैं। स्थानीय प्रवृत्तियों का केन्द्र यह कुटुम्ब है।

१०० श्री सोहनराजजी कुन्दनमलजी, सिवाना

आप मूल निवासी सिवाना के हैं। अभी आपकी दूकान धनजी स्ट्रीट बम्बई में है। कुनणमलजी का जन्म सं० १९५० का है। आपके चार पुत्र हैं—केशरीमलजी, सोहनराजजी, तेजराजजी तथा नेनमलजी। आप सब दुकान पर ही काम करते हैं। अच्छे धर्मनिष्ठ श्रद्धालु श्रावक हैं। ओसवाल समाज में आपका अच्छा प्रभाव है।

१०१ श्री गुलराजजी मेहता, हरमाड़ा

आप मूल निवासी रूपनगढ के हैं। १९५० की साल में हरमाडा आकर रहे। अभी आपका व्यौपार किशनगढ में है। गुलराजजी के दो लडके—पूनमचन्दजी और कालूरामजी। गुलराज पूनमचन्द फर्म के मालिक उक्त दोनों बन्धु हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कार्यों में उत्साह रखते हैं। हरमाड़ा में आपका अच्छा प्रभाव है।

१०२ श्री रावतमलजी, बाडमेर

श्री जोधराजजी के पुत्र का नाम रावतमलजी है। आप सर्राफी धन्धा करते हैं। आपका जन्म संवत १९५१ श्रावण सुद ६ का है है। आपके पुत्र का नाम माणकचन्दजी है तथा छः पुत्रियां हैं। आप अच्छे उत्साही युवक हैं। गौ सेवा आदि परोपकारी कार्यों में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं।

१०३ श्री सेठ छगनलाल भाई तुरखिया करांची

आपका मूल निवासस्थान जेतपुर काठियावाड़ है। अभी कराची में चाय का व्यापार करते हैं। आपकी फर्म एम. एन. पारख के नाम से प्रसिद्ध है। स्थानीय स्था० सघ के प्रमुख कार्यकर्त्ता हैं। धार्मिक श्रद्धा स्तुत्य है। आपके दो पुत्र तथा चार पुत्रिया हैं। भायलाल भाई तथा रसीकलाल भाई। आपने अपने हाथ से अच्छा पैसा कमाया है तथा खर्च भी किया है तीनों पिता पुत्र सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में उत्साह पूर्वक भाग लेते रहते हैं।

१०४ श्री प्रेमराजजी गणपतराजजी बोहरा, पीपलिया

इस परिवार में श्री सेठ उदयचन्दजी के बाद क्रमशः खूबचन्दजी बच्छराजजी और साहबचन्दजी हुए। साहबचन्दजी के पुत्र मगराजजी व केशरीमलजी हुये। केशरीमलजी के पुत्र प्रेमराजजी सा० हुये। प्रेमराजजी ने मद्रास, विल्लीपुरम् आदि में व्यापार किया। अभी आपकी फर्म अहमदाबाद

में बड़े पैमाने पर चल रही है। जयपुर में भी आपने दुकान खोली है। मेमराजजी सा० ने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया। आप सामाजिक—धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रत्येक काम में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं। काफी उदार हैं। शुद्ध खद्दर धारण करते हैं। आपने समाज की अनेक संस्थाओं को सहायतायें दी हैं। आपके तीन पुत्र हैं। गणपतराजजी मोहनलालजी तथा मन्नालालजी, अहमदाबाद दुकान का काम श्री गणपतराजजी संभालते हैं। चतुर कुशल तथा उदार विचारों के युवक हैं। प्रत्येक सुधार के काम में आप आगे रहते हैं। आप दवाखानों तथा शिक्षणसंस्थाओं में काफी खर्च करते हैं। होनहार युवक हैं। आपके दोनों भाई व्यापार में आपकी मदद करते हैं। मूल निवासी पीपलिया मारवाड़ के हैं।

१०६ श्री सेठ ओंकारलालजी मिश्रीलालजी बाफणा, मन्दसौर

उक्त फर्म यहां की पुरानी तथा प्रसिद्ध फर्म है। पहिले फर्म का नाम कुन्दनजी कालूराम पड़ता था। श्री ओंकारलालजी एक प्रतिष्ठित, नम्र निष्ठ तथा उदार भावक हो गये हैं। आपका न सिर्फ मन्दसौर या मालवा में बल्कि दूर २ तक अच्छा नाम था। राज्य की मजलिस आम के सभासद थे आपकी ओर से श्री गजराज प्रसूति गृह मन्दसौर में चल रहा है। आपने २० हजार का एक ट्रस्ट बनाया। आपकी ओर से बाफणा जैन कन्या शाला भी चल रही है। मृत्यु के समय आपने २० हजार रुपये और निकाले। आपके पुत्र श्री मिश्रीलालजी भी आप ही की तरह उदार तथा योग्य हैं। कुशल व्यापारी हैं। सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अच्छा सम्मान है। आपने यहां बाफना कोटन प्रेस जीनिङ्ग फेक्टरी तथा मन्दसौर इलेक्ट्रिक सप्लाई कंपनी लिमिटेड कायम की। आप दोनों के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। स्थानीय म्युनिसिपल कमेटी के वाइस चेयरमैन भी रह चुके हैं। मन्दसौर डिस्ट्रिक्ट बैंक के डायरेक्टर हैं। गुरुकुल ब्यावर के प्रधान मंत्री भी अभी आप ही हैं।

१०७ श्री चांदमलजी नाहर मन्दसौर

उक्त परिवार वाले वि० सं० १८०० में मारवाड़ नाहरशील से मालवे में आये और तभी से नाहर कहलाने लगे। इस वंश के पूर्व पुरुष लालजी हुए हैं। आपके पुत्र बापूजी अम्बालालजी लालचन्दजी फूलचन्दजी व कस्तूरचन्दजी। किस्तूरचंदजी का प्रभाव स्थानकवासी समाज में काफी रहा है। भारत के अधिकांश सन्तों की आपने सेवा की है। जीव दया के आप प्रखर प्रचारक थे। आपके पांच पुत्र। श्री निहालचन्दजी अच्छे सेवाभावी हैं। दूसरे श्री चांदमलजी नाहर जो सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में सब जगह भाग लेते हैं। समाज के प्रसिद्ध युवक हैं। सेवा करने का शौक है। साधु सम्मेलन अजमेर, ओसवाल सम्मेलन मन्दसौर आदि में काफी भाग लिया। मन्दसौर में हिन्दू अधिकारों के लिये ११ दिन की हड़ताल हुई, उसमें प्रमुख हाथ आपका था। मन्दसौर में कई संस्थाओं के आप सेक्रेटरी हैं। आपके तीन छोटे भाई हैं। धर्मदासलालजी अमोलकजी व बापूलालजी। व्यापारिक क्षेत्र में भी आपका अच्छा सम्मान है।

१०८ श्री सेठ सौभाग्यमलजी पोरवाल, धामनोद

आप मूल निवासी सविराज मारवाड़ के हैं। आपके पिताजी का नाम चुनीलालजी है। आपकी फर्म का नाम पेमाजी कोदाजी है। सेठ सौभाग्यमलजी अच्छे विचारों के उदार कार्यकर्ता हैं। आपने अपने हाथों से अनेक कार्य किये हैं। स्थानीय श्री धर्मदास जैन विद्यालय को १०५) रु० माहवार देकर चलाते रहे। जिसमें अनेक बालक-बालकों ने शिक्षा पाई है। आपने अपने पिता श्री के पीछे अच्छी रकम

निकाल कर ट्रस्ट बना दिया है। अभी उसमे पांच हजार अवशेष हैं। आप दो चार जेल भी जा चुके हैं। श्री शोभाग्यमलजी अच्छे धर्मनिष्ठ श्रावक हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं तथा तन मन धन से सहायता भी देते हैं। आपके भाई मालूरामजी व चचेरे भाई रिषब० दासजी आपके कार्यों में अच्छा सहयोग देते हैं।

१०८ श्री डाक्टर राजमलजी नांदेचा, पीपलौदा

आप बहुत उत्साही नवयुवक हैं। छोटी अवस्था मे ही आपने डाक्टरी पास कर ली है। इस समय आप पीपलौदा में चीफ मैडीकल व हैल्थ ऑफीसर तथा जेल सुपरिन्टेन्डेन्ट हैं। जैन पाठशाला के अध्यक्ष भी रह चुके हैं। इतने ऊँचे ओहदे पर होते हुये भी आप सामाजिक व धार्मिक प्रवृत्तियों में अच्छा रस लेते हैं। आपके पिता श्री का नाम नेमीचन्दजी है। डाक्टर सा० पढ़ाई में हमेशा तेज रहे हैं। सरजरी में आपने पदक भी प्राप्त किया है। आप इधर के बहुत प्रसिद्ध डाक्टर हैं। सरजरी में आप सर्व प्रथम आये, अत दरबार की ओर से इनाम प्राप्त किया। आपके तीन भाई हैं—तेजमलजी दीवानमलजी, यशवन्तसिंहजी। आपका कुटुम्ब कट्टर स्थानकवासी है।

१०९ श्री चौधरी दशरथसिंहजी, मन्दसौर

आपका मूल निवासस्थान देहली है। इस कुटुम्ब के पूर्व पुरुष श्री मजलिसरायजी २२६ वर्ष पूर्व मन्दसौर आये। यहा गावों के बसाने का काम करते थे। इस कला में निपुण थे। उक्त कला से प्रसन्न होकर बादशाह ने आपको १८००) सालाना तथा एक मौजा जमींदारी इनायत कर सम्भावित किया। श्री चौधरी दशरथसिंहजी इसी कुटुम्ब में हुये हैं। आप यहां ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। आपके पुत्र का नाम कचरसिंहजी है। आप यहां के प्रसिद्ध वकील हैं। आप ग्वालियर की मजलिस आम के सदस्य तथा कोऑपरेटिव बैंक के डायरेक्टर भी हैं। आपके पुत्र का नाम अमरसिंहजी है। उक्त कुटुम्ब बहुत पुराना तथा प्रसिद्ध है। नगर में अच्छा सम्मान है।

११० श्री केशरीमलजी मेहता, पेटलावद

श्री केशरीमलजी मेहता एक उत्साही, धर्मनिष्ठ युवक हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियो में बहुत रस लेते हैं। महावीर मण्डल के प्रेसीडेन्ट हैं। जनता ने आपको म्युनीसिपल कमिश्नर भी चुना है। लेन-देन तथा आसामियों का धन्धा है। आपकी ओर से सदाव्रत भी चलता है। भीलों की शिक्षा में आप अच्छा उत्साह बतलाते हैं। आपके तीन पुत्र हैं—रिषभचन्दजी, झमकलालजी तथा तेजमलजी।

१११ श्री कस्तूरचन्दजी जैन, हातोद

श्री कस्तूरचन्दजी का मूल निवास देवगढ मेवाड़ है। आपके पिता श्री का नाम कनीरामजी था। उनके तीन पुत्र थे। किन्तु अभी मौजूद सिर्फ कस्तूरचन्दजी ही है। नवलरामजी हजारीमलजी का स्वर्गवास हो चुका। संवत १९५६ से यहा रहते हैं, आप यहां के प्रमुख श्रावक तथा कार्य कर्त्ता हैं। आपके तीन पुत्रियां व एक पुत्र है। पुत्र का नाम शान्तिलाल है। आपके कपड़े का तथा लेन देन का व्यवसाय है। अच्छे उदार सज्जन हैं।

११२ श्री धूलचन्दजी बापूलाल, हातोद

श्री हीरालालजी के दो पुत्र धूलचन्दजी व बापूलालजी। धूलचन्दजी के तीन पुत्र जवाहिरलाल मथुरालाल व सोहनलाल। हीरालालजी का सरकारी महकमों तथा पंचायती में काफी मान था। आपने अपनी मृत्यु से पहिले चार हजार दान में दिये। अच्छे उदार गृहस्थ थे। यहां अच्छे पढ़ते हैं, जो आपही के परिश्रम का फल है। अभी सब काम दोनों भाई करते हैं। यहां के प्रमुख व्यापारी हैं। प्रत्येक धार्मिक प्रवृत्ति में आपका प्रमुख भाग रहता है।

११३ श्री चांदमलजी गांधी, रतलाम

आप मूल निवासी रतलाम के ही हैं। आपके पिता श्री का नाम नाथाजी था। अभी व्यापार का सब काम चांदमलजी ही संभालते हैं। आप धर्मदास जैन-मित्र मण्डल के प्रमुख कार्यकर्ता हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। आपने धर्मदास मित्र-मण्डल को १००१) रु० भेंट किया तथा और भी समय २ पर तन मन धन से सहायता करते रहते हैं। अच्छे उदार हृदय सद् गृहस्थ हैं। रतलाम के प्रमुख श्रावकों में से एक हैं।

११४ श्री कालूरामजी बोथरा, जयपुर सिटी

आप मूल निवासी बीकानेर के हैं। अभी जयपुर में रहते हैं। सब से पहिले सवाईसिंहजी यहां आये। सवाईसिंहजी के पीछे गुमानसिंहजी नवलसिंहजी तथा चिम्मनलालजी उनके पीछे नेमीचन्दजी लछमणदासजी गीगालालजी छोटमलजी धरमसुखजी मन्नालालजी ईश्वरलालजी, सुखारमलजी चांदमलजी, नथमलजी चौथमलजी हुए। ईश्वरलालजी के कस्तूरीचन्दजी, मोहनलालजी, गोपालजी तथा कालूरामजी हुए। सुखारमलजी के हरखचन्दजी। अभी श्री कालूरामजी आदि जवाहिरात का व्यापार करते हैं। आपका व्यापार मद्रास बम्बई तथा गुजरात तक होता है। समाजसेवा की भावना रखते हैं।

११५ श्री हरखगसजी जैन, कोटा

श्री हरखगसजी मूल निवासी बूंदी के पास सहनूर बड़ाढिया के हैं। १६१८ में यहां आकर बस गये। श्री गोकलचन्दजी के दो पुत्र—हरखगसजी व सुन्दरलालजी। सुन्दरलालजी के तीन पुत्र भंवरलालजी रतनचन्दजी तथा नेमीचन्दजी। भंवरलालजी के पुत्र इन्दरमलजी। श्री हरखगसजी के पंसारी की दुकान है। आप यहां के प्रमुख श्रावक हैं। मुनि भक्त हैं।

११६ श्री शिवचन्दजी अमोलकचन्दजी कोचेटा, शिवपुरी

इस वंश का मूल निवासस्थान मेड़ता मारवाड़ है। सेठ ज्ञानमलजी इस वंश में प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। आपके पुत्र कस्तूरीचन्दजी। कस्तूरीचन्दजी के पुत्र लालचन्दजी। लालचन्दजी का राज्य में भी अच्छा सम्मान था। सेठ लालचन्दजी के दो पुत्र—शिवचन्दजी व नेमीचन्दजी। दोनों ने व्यापार को खूब बढ़ाया। आप समाज की शिक्षण संस्थाओं को यथाशक्ति सहायता देते रहते हैं। अभी व्यापार का सारा काम श्री अमोलकचन्दजी सम्भालते हैं। आप पंचायती बोर्ड के सरपंच हैं। समाज में खूब मान है। अमोलकचन्दजी के चार पुत्र हैं। कमलचन्दजी, विनयचन्दजी वीरचन्दजी विमलचन्दजी। कमलचन्दजी के पुत्र पदमचन्दजी हैं। आप यहां के प्रसिद्ध व्यापारी हैं।

११८ श्री सन्तोषचन्दजी ओस्तवाल, मुरार

आप मूल निवासी हर्षालाव मारवाड़ के हैं। आपके पूर्वज सेठ प्रेमराजजी प्रसिद्ध व्यक्ति हो गये हैं। प्रेमराजजी के पुत्र लक्ष्मीचन्दजी तथा इनके पुत्र सन्तोषचन्द्रजी हुये हैं। संतोषचन्द्रजी यहां के बहुत प्रतिष्ठित तथा उदार सज्जन हैं। धार्मिक कामों में अगुआ रहते हैं। आप यहां के प्रसिद्ध व्यापारी भी हैं। आप ठेके का काम भी करते हैं। राज्यविभाग में भी आपका अच्छा सम्मान है। आपके पुत्र का नाम प्रश्नचन्द्रजी है। सामाजिक संस्थाओं में समय २ पर यथाशक्ति सहायता भिजवाते रहते हैं।

११८ श्री मिश्रीलालजी कनकमलजी, अजमेर

आपकी फर्म का नाम मिश्रीलाल हरखचन्द है। मूल निवासी टाटोटी के हैं। श्री चुन्नीलालजी के दो पुत्र—मिश्रीलालजी और कनकमलजी। कनकमलजी के चार पुत्र—हरखचन्दजी, दीपचन्दजी, रूपचन्दजी, पारसमलजी तथा दो पुत्रियां हैं। हरखचन्दजी के तीन पुत्र—ताराचन्दजी, धर्मीचन्दजी, नेमीचन्दजी। आप बर्तनों के थोक व्यापारी हैं। धार्मिक कामों में अच्छा भाग लेते हैं। आप बर्तनो के प्रमुख व्यापारी हैं।

११९ श्री रतनचन्दजी बांठिया, पनवेल

श्री रतनचन्दजी बांठिया पनवेल के एक धर्मनिष्ठ, उदार तथा कुशल व्यापारी हैं। श्री बांठिया बैंक लिमिटेड के मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। आपकी सर्राफी तथा साहूकारी की दुकान है जो पनवेल भर में सब से बड़ी है। आपकी सुन्दर रतन टॉकी भी है। आपने अपने हाथो से हजारों रुपया दान में दिया है। आनन्दऋषिजी म० सा० आदि सन्तो के चातुर्मास में भी आपका प्रमुख हाथ रहा है। अनेक संस्थाओं के अध्यक्ष व ट्रस्टी हैं। ऊची पढाई करने वाले छात्रों को अक्सर छात्रवृत्तिया देते रहते हैं। आप बिना साम्प्रदायिक भेदभाव के सन्तों की सेवा करते हैं। स्थानीय पाजरापोल के अध्यक्ष आप रह चुके हैं। छात्रों के लिये उपयोगी फिल्म छात्रों को फ्री दिखाते हैं। सार्वजनिक कामों के लिये टॉकी भवन हमेशा देते हैं। चिकनेर जंगल सत्याग्रह के समय भी आपने काफी आर्थिक सहायता की। सार्वजनिक प्रवृत्तियो का केन्द्र स्थान उक्त फर्म है।

१२० श्री केसरीचन्दजी आणन्दरामजी, पनवेल

केशरीचन्दजी के पुत्र पन्नालालजी व हीरालालजी। बिरदीचन्दजी के एक पुत्र—बापूलालजी। आशकरणजी के दो पुत्र—अमोलकचन्दजी व माणकचन्दजी। अमोलकचन्दजी के दो पुत्र—जीतमलजी व हुक्मीचन्दजी। आपकी फर्म यहा की प्रमुख फर्म है। मुनिराजों की सेवा में, संस्थाओं की सहायता आदि में काफी खर्च करते हैं। श्री रतनचन्दजी के साथ आप भी हर कार्य में सहायता करते रहते हैं। केशरीचन्दजी पाथर्डी बोर्ड के संरक्षक हैं। बिरदीचन्दजी पांजरापोल के अध्यक्ष हैं। मृत्युभोज आदि कुरिवाजों के कट्टर विरोधी हैं। चिरनेर जगल सत्याग्रह के समय आपने अच्छी सहायता दी थी। सार्वजनिक प्रवृत्तियों में इस फर्म की ओर से अच्छा सहयोग मिलता रहता है।

१२१ श्री खींवराजजी मा० पनवेल

आप पाथर्डी बोर्ड के संरक्षक हैं। अच्छे धर्मप्रेमी श्रावक हैं। स्थानीय स्थानक आपके पिता श्री की देखभाल में बना था। आपका जन्म १९६४ मार्गशीर्ष शुक्ला ४ का है। आपके एक पुत्र तथा एक

पुत्री है। नाम पदमा बाई तथा शान्तिबाई है। धार्मिक प्रवृत्तियों में आप आगे रहते हैं। फर्म का नाम बीरराजजी भानन्दरामजी है। आपके यहाँ सर्राफी का धन्धा है। दुकान का सारा कार्य श्री बीरराजजी करते हैं। आपके साथ आपके भाणेज हीरालालजी काम करते हैं जो काफी उत्साही हैं।

१२२ श्री अमोलकचन्दजी बांठिया पनवेल

आपकी फर्म आशकरण मंगराज के नाम से चलती है। आपका यहाँ पर राइस मिल भी है। व्यवसाय भी मुख्यतः चावल का करते हैं। आपके पिता श्री आशारामजी यहाँ के प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्ता थे। आप म्युनीसिपल कमेटी के सदस्य वर्षों रहे हैं तथा चेयरमैन भी। स्थानीय पांजरापोल की तरक्की में आपका प्रमुख हाथ रहा है। आपके विचार बहुत उच्च थे। पूरे सुधारक भी थे। जंगल सत्याग्रह में आपका प्रमुख हाथ था। श्री अमोलकचन्दजी महावीर जैनसभा के सेक्रेटरी हैं। फर्म का कार्य इस समय श्री अमोलकचन्दजी ही संभालते हैं। उत्साही युवक हैं।

१२३ श्री चांदमलजी बरमेचा नासिक

आप मूल निवासी पैजर मारवाड़ के हैं। आपके दादाजी साहेबरामजी व्यापारार्थ यहाँ आये। यहाँ किराणा का व्यापार शुरू किया। साहेबरामजी के तीन लड़के—मगनीरामजी बिरदीचन्दजी छगनीरामजी। मगनीरामजी के लड़के लालचन्दजी। बिरदीचन्दजी के पुत्र शिवरामजी व चांदमलजी। शिवरामजी के पुत्र मोहनलालजी। चांदमलजी के दो पुत्र—लक्ष्मीचन्दजी और शान्तिलालजी। फर्म का नाम साहेबराम बिरदीचन्द है। व्यापार साहूकारी व आढ़त है। आप यहाँ के प्रमुख श्रावक हैं। आपने स्थानक के लिए एक मकान भेंट किया है। स्थानीय जैन बोर्डिंग में एक हजार तथा स्थानक में तीन हजार प्रदान किये।

१२४ श्री हुंसराजजी साहब, नासिक

मूल निवासी बीजवाड़ा मारवाड़ के हैं। आपके पिता श्री सूरजमलजी १०० वर्ष पूर्व सिन्निया आये और साहूकारी व्यापार शुरू किया। सन् २१ में हंसराजजी यहाँ आ गये और किराना का व्यापार शुरू किया। हंसराजजी के चार पुत्र। पूनमचन्दजी दुकान का कार्य सम्भालते हैं। चंपालालजी वकालत करते हैं। इनके दो पुत्र—स्वरूपचन्द और समनचन्द हैं। तीसरे पुत्र मोहनलालजी दुकान का काम करते हैं। चौथे पुत्र श्री फतहचन्दजी डाक्टर हैं। मोहनलालजी के दो पुत्र व तीन पुत्रियाँ हैं। हंसराजजी निरन्तर सामायिक तथा धर्मध्यान में रत रहते हैं। स्थानीय स्थानक में १२०१) रु० दिये। प्रतिमास दस पौषध करते हैं। यहाँ के प्रतिष्ठित श्रावकों में से एक हैं।

१२५ श्री मोहनलालजी धोखा शोलापुर

आप मूल निवासी मुसालिया मोडल के हैं। श्री लालचन्दजी धोखा व्यापारार्थ शोलापुर आये। बाद एक भाई करमाला के पास शेलगांव गये।

लालचन्दजी के चार पुत्र—जीतमलजी हीराचन्दजी मगनमलजी प्रेमराजजी। जीतमलजी के दो पुत्र—प्रेमराजजी व झूमरलालजी। झूमरलालजी के पांच पुत्र—माणकचन्दजी, मोहनलालजी पन्नालालजी धनराजजी पृथ्वीराजजी। फर्म का नाम मोहनलाल झूमरलाल है। फर्म का सारा कार्य श्री मोहनलालजी ही करते हैं। सदर बाजार के प्रमुख व्यापारियों में से एक हैं। पति-पत्नि दोनों धर्मप्रेमी हैं। अनेक बार अठाईयां कर चुके हैं। आपके यहाँ थोक किराने का व्यापार होता है। बहुत उदारवृत्ति के भावक हैं।

१२६—) सेठ चिम्मनलाल पोपटलाल शाह, घाटकोपर (—

श्री चिम्मनलाल भाई घाटकोपर बम्बई के एक समाज-धर्म तथा राष्ट्र-प्रेमी कार्यकर्त्ता हैं। आप शुद्ध खद्दर धारण करते हैं। अच्छे वक्ता हैं। आवाज इतनी बुलन्द है कि ५-७ हजार आदमी तो बिना लाउड स्पीकर के आसानी से सुन सकते हैं। सस्थाओं की अपील के लिये तो आपके व्याख्यान बहुत ही उपयोगी होते हैं। व्यापार का काफी भार होते हुये भी सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में काफी भाग लेते हैं।

आपका जन्म गोधावी गाव मे अच्छे श्रीमत कुटुम्ब में सन् १८८६ के १६ मार्च को हुआ। आपके दादा उम्मेदराम भवानजी बहुत प्रतिष्ठित सज्जन थे। आपने मैट्रिक तक अभ्यास करके व्यापार में प्रवेश किया। आप चिम्मनलाल कल्याणदास के नाम से कोट बाजार में मील स्टोर्स तथा मशीनरी सप्लायर्स का काम करते हैं। टेक्स टाईल स्टोर्स एण्ड मशीनरी एसोसियेशन की कार्यकारिणी के सदस्य हैं। सन् २१ से आप राष्ट्रीय जीवन में आये। महात्माजी की अपील पर घाटकोपर ने ६४२३२) रुपये इकट्ठे करके दिये, उसमें आपका प्रमुख हाथ था। आप घाटकोपर कांग्रेस के सभापति भी रह चुके हैं। सन् ३० में आपने एक वर्ष की जेलयात्रा की थी। यहा की म्युनिसिपल कमेटी के प्रथम चेयरमैन पब्लिक की तरफ से आप हुये। स्थानीय कन्याशाला को हाई स्कूल बनाने तथा सम्पन्न करने में भी प्रमुख हाथ आपका है।

श्री घाटकोपर सार्वजनिक जीवदया खाता की स्थापना पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० के उपदेशों से हुई। उसके सस्थापक, ट्रस्टी तथा उप प्रमुख भी आप ही हैं। घाटकोपर उपाश्रय तथा पौषध-शाला के सस्थापकों में से आप एक हैं।

अ० भा० स्था० जैन कान्फ्रेंस के दसवें अधिवेशन के स्वागत मन्त्री के रूप में आपने अच्छी सेवा की। आप सन् ४२ से कान्फ्रेंस के जनरल सेक्रेटरी के रूप में कार्य कर रहे हैं। पूना बोर्डिंग के भी आप महामन्त्री हैं। कान्फ्रेंस के लिये आपने ५० हजार रु० का फड प्रवास करके किया। घाटकोपर सार्व-जनिक दवाखाने के सचालक आप चुने गये हैं।

इसके सिवाय आप दर्जनों सस्थाओं के पदाधिकारी तथा सभ्य के रूप में सेवा कर रहे हैं।

घाटकोपर सावजनिक कार्यों के आप कन्द्र हैं। शायद ही कोई सार्वजनिक काम ऐसा हो, जिसमें आपका प्रमुख हाथ न हो। स्थानकवासी समाज में तो आपका बहुत सम्मान है। इतनी सेवा करने वाले का सम्मान क्यों नहीं हो। घाटकोपर के अतिरिक्त बम्बई के भी प्रत्येक सार्वजनिक कामों में आपका भाग होता है।

१२७—: श्रीमान् मोहनलालजी लूणावत, शोलापुर :—

सेठ अबीरचन्दजी के दो पुत्र—तिलोकचन्दजी और आईदानजी। तिलोकचन्दजी के दो पुत्र मोतीलालजी और मोहनलालजी। मोहनलालजी आईदानजी के दत्तक गये। मोतीलालजी के सुपुत्र कन्हैयालालजी। फर्म का नाम तिलोकचन्द मोतीलाल है। इस फर्म पर साहूकारी का व्यापार होता है। फर्म का कार्य श्री कन्हैयालालजी सम्भालते हैं। मोहनलालजी व कन्हैयालालजी बहुत धर्म-परायण श्रावक हैं। प्रति वर्ष मुनि दर्शनार्थ बाहर जाया करते हैं। शोलापुर में मुनिराजों की सेवा करने वाला यह प्रमुख कुटुम्ब है। यहा धर्म स्थानक बना, उसमें सब से अधिक श्रेय आपको ही है। मूल निवासी जोधपुर के हैं। व्यापारार्थ सब से पहिले लगभग १०० वर्ष पूर्व श्री अबीरचन्दजी आये। श्री कन्हैया-लालजी ने अपने हाथों से हजारों रुपया शुभ कार्यों मे लगाया है।

१२८— श्री नानालालजी भट्टा, नीमच .—

आप मूल निवासी चित्तौड़ के हैं। आपके पिता श्री जोगचन्दजी व्यापारार्थ नीमच गये। वहां किराणा का व्यापार प्रारम्भ किया। आप दो भाई हैं। भंवरलालजी व नानालालजी। आप गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी के स्नातक हैं। व्यायाम-विशारद तथा व्यायाम-पटु की उपाधियां प्राप्त की हैं। अच्छे व्यायाम-कुशल हैं। करीब ७-८ साल से आप समाज की सुप्रतिष्ठित संस्था श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के गृहपति हैं। राजनांद गांव जैन-पाठशाला के संचालक के रूप में भी आप सेवा कर चुके हैं। अभी आपकी आयु ३१ वर्ष की है। राष्ट्रीय विचारों के उत्साही तथा भावुक युवक हैं।

१२९—. श्री दीपचन्दजी पोरवाड़, उज्जैन .—

आप दृढ़धर्मी स्व० सेठ रतनलालजी शाजापुर निवासी के सुपुत्र हैं। आप अच्छे सेवाभावी एवं कुशाग्र-बुद्धि हैं धार्मिक दृढ़ता भी आपकी स्तुत्य है। आप अच्छे व्यवसायी भी हैं। बीमा तो एक तरह का व्यापार है, किन्तु आपने बीमा की तरह ही एक कम्पनी स्थापित की है जिससे गरीब तथा मध्यम श्रेणी के गृहस्थ काफी लाभ उठा सकते हैं। कम्पनी का नाम "दी फेमिली रिलीफ सोसायटी लिमिटेड, उज्जैन" है। आप इसके मैनेजिंग एजेन्ट (संचालक) हैं। आप में गुरु भक्ति भी काफी है। बिना साम्प्रदायिक भेदभाव के आप सब जगह जाते हैं। राज्य तथा समाज दोनों में आपका अच्छा सम्मान है।

१३०— श्री उदय जैन धर्मशास्त्री, कानोड़ '—

संवत् १९७० के श्रावण कृष्णा ११ को प्रतापमलजी की धर्मपत्नी सौभाग्य बाई की कुक्षि से आपका जन्म हुआ। आप श्री गोदावत जैन गुरुकुल छोटी सादड़ी के स्नातक हैं आपने धर्मशास्त्री सिद्धान्त-शास्त्री हिन्दी विशारद आदि उपाधियां प्राप्त की हैं। आपके एक पुत्र तथा तीन पुत्रियां हैं। आपको लेखन वक्तृत्व तथा कविता बनाने का भी अच्छा शौक है। देश-धर्म तथा समाज सेवा में उत्साह पूर्वक भाग लेते रहते हैं। आपने कई स्थानों पर पाठशालायें तथा मण्डल स्थापित किये हैं। सन् ४२ में आप ४॥ माह की जेलयात्रा भी कर आये हैं। अभी आप जैन विद्यालय के प्रधानाध्यापक हैं। साधारण वेतन लेकर सेवा करते हैं। निस्वार्थभाव से कान्फ्रेंस की सेवा भी करते रहते हैं। अच्छे विचारों के युवक हैं।

१३१ — शाह भोमराज आसकरण धमतरी —

उक्त फर्म धमतरी की प्रसिद्ध फर्म है। आपके यहां कपड़ा, सोना, चांदी, सूत आदि का थोक व्यापार होता है। आप लक्ष्मी बैंक लिमिटेड तथा पब्लिक इन्शोरेंस कम्पनी के डायरेक्टर भी हैं। आप धमतरी के अच्छे बैंकर भी हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका अग्र भाग होता है। अच्छे क्रियाकाण्डी हैं। आप यहां के उदार तथा प्रमुख श्रावक हैं।

१३२— श्री फूलचन्दजी सारीवाल देवली —

आप देवली (मद्रास) के निवासी हैं। आपके पिताजी का नाम श्री चुन्नीलालजी तथा माता का नन्दूबाई है। आप मद्रास में गिरवी का व्यापार करते हैं। आपके छः भाई और एक बहन है।

आप अच्छे व्यवसायी व उत्साही युवक है। रूढ़ियों के आप विरोधी हैं। सामाजिक प्रवृत्तियों में अच्छा रस लेते हैं।

१३३ —: श्री मिश्रीलालजी कटारिया देवली :—

आप देवली (चडावल) के निवासी हैं। आपके पिता श्री का नाम नथमलजी है। आप तीन भाई हैं। लालचन्दजी, चुन्नीलालजी तथा मिश्रीलालजी। आप नवीन तथा उदार विचारों के उत्साही कार्यकर्त्ता हैं। आपके एक पुत्र तथा दो पुत्रिया है। राष्ट्रीय विचार भी आपके अच्छे हैं। साम्प्रदायिकता से हमेशा दूर रहते हैं।

१३४ —: श्री मोहनलालजी खारीवाल देवली :—

आपके पिता श्री का नाम मिश्रीलालजी खारीवाल है। श्री मिश्रीलालजी बहुत सरल स्वभावी, सेवाभावी गृहस्थ हैं। श्री मोहनलालजी, श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के आदर्श स्नातक हैं। उच्च राष्ट्रीय विचार रखते हैं। रूढियों के घोर विरोधी हैं। आपने अपनी शादी में प्रत्येक रूढि का बहिष्कार किया। शुद्ध खद्दर धारी उत्साही युवक हैं। समाज को आपसे काफी आशा है। आपके छोटे भाई का नाम मूलचन्दजी हैं।

१३५ —: हस्तीमलजी देवड़ा औरंगाबाद :—

आपकी फर्म औरगाबाद में जसराज हस्तीमल के नाम से है। आपके वहां आड़त का व्यवसाय होता है। आपकी एक कपडे की दुकान भी है। नाम जसराज पारसमल पड़ता है। आप मूल निवासी बगड़ी के हैं। आप अच्छे उच्च विचारों के समाज तथा धर्म प्रेमी उदार युवक हैं। धार्मिक प्रवृत्तियों में भाग लेने का पूरा व्यसन है। औरगाबाद की धार्मिक तथा सामाजिक प्रवृत्तियों के प्राण हैं। आप अधिकतर औरगाबाद ही रहते हैं।

१३५ —: श्री निहालचन्द भाई सिद्धपुर :—

श्री निहालचन्द भाई का जन्म सं० १९६४ के फागण वद ४ को सिद्धपुर तालुका के नाग वाशणा में हुआ। आपके पिता श्री के स्वर्गवास के समय आप मात्र ६ वर्ष के थे। आपका अभ्यास यद्यपि कम है। किन्तु आप पूरे पुरुषार्थी तथा व्यवसायी हैं। आपने अपनी योग्यता तथा पुरुषार्थ से काफी पैसा कमाया। अभी सिद्धपुर में श्री जवाहिर पल्स मिल चल रहा है। इसके सिवाय दो दुकानें सिद्धपुर तथा एक दुकान जोरावर नगर में चल रही है। आप गज बाजार ग्रेन मरचेंट असोसियेशन के प्रमुख, जनरल ट्रेड असोसियेशन, महसाणा प्रान्त दाल एसोसियेशन आदि के डायरेक्टर हैं। एक सूत मिल के ब्रोकर हैं। सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय विचार भी आपके अच्छे हैं। आपके पिता श्री के नाम से आपने जोरावर नगर में एक पुस्तकालय खोला है।

१३६ —: गम्भीरमलजी बापूलालजी पेटलावद :—

आप कपड़े के व्यापारी हैं, यहा के प्रमुख श्रावक हैं। प्रवर्त्तक मुनि श्री ताराचन्दजी म० सा० के अनन्य भक्त हैं। आपकी दुकान काफी पुरानी है। सामाजिक व धार्मिक कार्यों में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं। पक्के स्थानकवासी हैं।

श्री मनोहरलालजी पोखरना चित्तौड़ —

आप स्व० श्री फूलचन्दजी सा० पोखरना के सुपुत्र हैं। आपके पिता श्री का देहान्त संवत् १९८८ में हुआ था। आपके पिता श्री धर्म प्रेमी तथा गुप्त दानी थे। साधु सन्तों की सेवा-का भी पूरा २ अनुराग था। अपने पिता के योग्य पुत्र श्री मनोहरलालजी भी अपने पिता के मार्ग का ही अनुकरण कर रहे हैं। आप भी नये विचारों के सुधारक नवयुवक हैं। ओसवाल समाज को आप से बड़ी आशायें हैं।

श्री हरखलालजी खरूपरिया चित्तौड़

आपका जन्म वि० सं० १९७० की फागुन कृष्णा द्वितीया को अच्छे सम्पन्न कुटुम्ब में हुआ। आपके पिता श्री मगनलालजी आपको ४ वर्ष का छोड़ कर स्वर्ग सिधार। आपका पालन पोषण आपके मातु श्री तथा दादाजी रिखबदासजी न किया। आप अच्छे होनहार युवक हैं। जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० के अनन्य भक्त रहे हैं। स्थानीय प्रत्येक प्रवृत्ति में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं। अब तो कोन्फ्रेंस आदि बाहर की प्रवृत्तियों में भी भाग लेने लगे हैं। विचार भी आपके काफी उदार हैं।

श्री ईश्वरचन्दजी डागा बक्सी हाट बंगाल —

आपका जन्म स्थान रामसर का है। पीछे गंगा शहर बीकानेर में रहने लगे। व्यापार बक्सी हाट में होता है। आप यहां के प्रमुख व्यापारी हैं। फर्म पर नाम मेघराज रतनमल डागा पड़ता है।

हनुवंतमलजी मगनीरामजी खामगाव —

उक्त फर्म खाम गांव की प्रसिद्ध फर्म है। इसके चार पुत्र हैं। हगडूमलजी उत्तमचन्दजी, सुगनचन्दजी और रतनलालजी। आपके सर्राफी व्यापार है। आपने अपनी ओर से एक विशाल होल बनवाया। उत्साही युवक हैं। काफी अच्छे जमींदार हैं। २ ० एकड़ जमीन है। आपका कुटुम्ब नवीन विचारों का कुटुम्ब है। सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में सोत्साह भाग लेते हैं।

सेठ विजयराजजी मूथा, बलून्दा

बलून्दा का मूथा परिवार मारवाड़ का प्रसिद्ध परिवार है। सेठ विजयराजजी भी एक अच्छे उदार तथा धार्मिक श्रद्धा वाले सद्गृहस्थ हैं। इतने श्रीमन्त होते हुये भी धार्मिक क्रियाकाण्ड में बहुत दृढ़ हैं। हमेशा सामायिक आदि नियमित करते हैं। बलून्दा में मूथा विद्यालय चल रहा है, जिसका खर्चा आप देते हैं और सनवाड़ आदि में आपकी ओर से संस्थायें चल रही हैं। बलून्दा औषधालय में भी आपकी अच्छी सहायता है। समाज की अनेक संस्थाओं में आपने यथाशक्ति सहायतायें दी हैं। आपके दो सुपुत्र हैं—श्री सज्जनराजजी तथा मदनराजजी। दोनों व्यापार सम्भालते हैं। श्री सज्जनराजजी तो ऑनरेरी मजिस्ट्रेट भी रह चुके हैं। श्री मदनराजजी अच्छे विचारों के युवक हैं। आपकी धर्मपत्नी अच्छी धर्म-श्रद्धा रखती हैं। तपस्या भी करते रहते हैं। इसी वर्ष आपने अठाई की। आतिथ्य सत्कार काफी अच्छा करते हैं। जिमाने तथा आये गये के सत्कार में तथा विवाह शादियों में आप बड़े उल्लास से खर्च करते हैं। आपका झुकाव धार्मिक कार्यों की ओर काफी रहता है। आपका मद्रास में बैंक है। इसके सिवाय बैंगलोर आदि और स्थानों पर भी साहूकारी व्यापार चलता है।

१८३ श्री हीरालालजी ढाबरिया विजयनगर

आपके पिता श्री का नाम पन्नालालजी सा० था। आपके तीन पुत्र हैं। श्री हीरालालजी, मोतीलालजी तथा माणकचन्दजी। श्री हीरालालजी B. A. विशारद तथा प्रभाकर हैं। अभी आप विजय-शूगर मिल के मैनेजर हैं। लगभग १० वर्ष तक आपने श्री जैन गुरुकुल ब्यावर अ० हैड मास्टर के रूप में काम किया है। आप एक कुशल परिश्रमी तथा कर्मठ युवक हैं। परिश्रम से आप कभी नहीं घबराते। आप मूल निवासी भिणाय के हैं। आपके सामाजिक तथा धार्मिक विचार भी सुधार पूर्ण हैं। श्री मोतीलालजी नानक जैन श्रावक समिति में काम करते हैं। श्री माणकचन्दजी भीलवाड़ा में प्रेस चला रहे हैं। घर का सारा काम काज श्री हीरालालजी संभालते हैं। आपकी मातु श्री अच्छी धार्मिक प्रवृत्ति की स्त्री है।

१८४ प्रो० बालचन्दजी महता ब्यावर

आपने सन् ३१ से ज्योतिष की पढ़ाई प्रारम्भ की तथा ३६ से प्रेक्टिस शुरु की। पाश्चात्य तथा पूर्वीय ज्योतिष शास्त्र का अच्छा अभ्यास है। आप रोयल एशियाटिक सोसायटी के मेम्बर हैं। ज्योतिष के प्रसिद्ध पत्र एस्ट्रोलोजीकल मेगजीन के तीन वर्ष से सलाहकार हैं तेजी मन्दी की रिपोर्ट भी आप प्रकाशित करते हैं, जिसे ब्यापारी बडे चाव से मगाते हैं। आपके पिता श्री का नाम हीराचन्दजी है। आपके कुटुम्बी १०० वर्ष से ब्यावर में रहते हैं। अच्छा पुराना प्रतिष्ठित कुटुम्ब है। आपने ज्योतिष संबंधी रिसर्च भी किये हैं। ब्यावर म्युनिसिपल कमेटी के सदस्य भी रह चुके हैं। सार्वजनिक कामों में उत्साह पूर्वक भाग लेते हैं।

१८५ श्री फूलचन्दजी बनवट, आष्टा

आप आष्टा के प्रमुख सज्जन हैं आप प्रतापमल फूलचन्द फर्म के मालिक हैं। आष्टा में ही क्या भोपाल स्टेट में आपका तथा आपकी फर्म का काफी प्रभाव है। आप अच्छे जमींदार हैं। धार्मिक लागणी आपकी अच्छी है। सुधारक विचार रखते हैं। आपके पुत्र नहीं था, अतः आपने जाति-गोत्र की परवाह न करके योग्यता को महत्व दिया और श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के सुयोग्य, विद्वान स्नातक तथा झलक सम्पादक श्री चन्दनमलजी कोचर को दत्तक पुत्र के रूप में रक्खा। श्री चन्दनमलजी एक अच्छे विद्वान् लेखक तथा कवि हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय विचार काफी क्रांतिकारी एवं सुधारपूर्ण हैं। ब्यावर की प्रत्येक धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख भाग होता था, अब आष्टा चले जाने के बाद वहा की प्रत्येक प्रवृत्तियों के केन्द्र स्थान हो गये हैं। वहा आपके प्रयत्न से व्यायामशाला तथा वाचनालय आदि भी चलते हैं। श्री चन्दनमलजी एक कर्मठ कार्यकर्त्ता हैं। आपसे समाज को बहुत कुछ आशायें हैं। श्री चन्दनमलजी मूल निवासी फलौधी के हैं। आप तीन भाई थे। बड़े भाई का नाम लूणकरणजी है। छोटे भाई श्री जयकुमारजी का स्वर्गवास हो गया। आपके मातु श्री बहुत धार्मिक स्त्री हैं। जीवन का अधिक भाग धार्मिक कार्यों में ही जाता है।

१८६ श्री जैन गुरुकुल शिक्षण-संघ, ब्यावर

(Registered under Society Act XXI of 1860)

स्थापना—वि० सं० १९८५ की विजयादशमी के दिन हुई।

ध्येय—जैन सस्कृति के समर्थ रक्षक, धर्म और समाज के अभ्युदय में हाथ बँटाने वाले, सदाचारी, त्यागशील, तन-मन से स्वस्थ, आदर्श नागरिक तैयार करना है।

साधन—उक्त ध्येय-पूर्ति के लिये विविध प्रवृत्तियां हो रही हैं।

(अ) विद्या मन्दिर—गुरुकुल के ब्रह्मचारियों को संस्कृत में बनारस की 'मध्यमा' न्याय में 'न्याय-तीर्थ', हिन्दी में 'विशारद', इंगलिश में 'मैट्रिक', महाजनी में 'मुनीमी' धार्मिक में 'धर्म प्रभाकर' और उच्च धार्मिक ज्ञान प्राकृत भाषा द्वारा आगमों का ज्ञान और इस ज्ञान के प्रचार हेतु लेखन व वक्तृत्व कला खास तौर पर सिखाई जाती है।

(ब) ब्रह्मचारी मन्दिर—हर एक प्रान्त के और समाज के ८ से १२ वर्ष की उम्र के स्वस्थ, बुद्धिमान, अविवाहित बालकों को सात्विक भोजन, शुद्ध भावना और पवित्र वातावरण से पाला जाता है। शारीरिक बौद्धिक और आत्मिक उन्नति की तालीम दी जाती है।

(स) उद्योग-मन्दिर—स्वाश्रय के सिद्धान्त को सामने रखकर बुनाई, सिलाई, परफ्युमरी आदि उद्योगों की शिक्षा दी जाती है।

(द) सिद्धान्तशाला—साधु-साध्वियों को अभ्यास कराने के लिये ब्यावर में विराजित साधु साध्वियों के शिक्षणार्थ पंडित भेजे जाते हैं और गुरुकुल भूमि में विराज कर पढ़ने वाले साधु-साध्वियों का सर्व प्रकार का उपयोगी शिक्षण दिया जाता है।

(इ) बाल-शिक्षा मन्दिर—नागरिक बच्चों को मोन्टीसरी पद्धति से शिक्षण देने को प्रारम्भ किया है। जिसकी व्यवस्था मुख्यतः ब्यावर के प्रतिष्ठित सज्जनों के हाथ में है।

(फ) शिक्षण-प्रचार—शिक्षण-संघ द्वारा विभिन्न स्वतन्त्र जैन शिक्षण-संस्थाओं की व्यवस्था परीक्षण, निरीक्षण होता है।

(ग) प्रकाशन-विभाग—जैनत्व के प्रचार हेतु विविध साहित्य प्रकाशन 'आत्मजागृति-कार्यालय' द्वारा हो रहा है।

इसके अतिरिक्त ब्रह्मचारियों की विविध तालीम और विकास के लिये विशाल पुस्तकालय, वाचनालय, व्यायामशाला, संगीतशाला, गोशाला, कृषि-विभाग, औषधालय आदि विभाग भी चल रहे हैं।

पोस्टऑफिस की ब्रांच भी जैन गुरुकुल के नाम से है। गुरुकुल का पाठ्यक्रम ८ वर्ष का है। शिक्षण मकान, व्यायाम खेल रोशनी, नाई औषधालय आदि फ्री दिया जाता है। भोजन खर्च संरक्षक की शक्ति अनुसार लिया जाता है। कपड़े और पुस्तक खर्च ब्रह्मचारियों का निजी होता है।

प्रबन्ध—गवर्नमेन्ट सोसायटी एक्ट नं० २१ सन् १८६० के अनुसार यह संस्था 'रजिस्टर्ड' कराई गई है। संस्था की चल अचल संपत्ति की व्यवस्था "बोर्ड ऑफ ट्रस्टीज" के सुपुर्द है। कार्य-व्यवस्था २१ सदस्यों की व्यवस्था समिति की आज्ञानुसार कुलपति और अधिष्ठाता करते हैं। ट्रस्टी मंडल और व्यवस्था समिति विभिन्न प्रान्तों के प्रतिष्ठित सज्जनों द्वारा संचालित है।

इस प्रकार श्री जैन गुरुकुल शिक्षण-संघ, ब्यावर विविध उपायों द्वारा यथाशक्य समाज में ज्ञानज्योति जगाने की सत्प्रवृत्ति कर रहा है। शहर के विषैले वातावरण से दूर एकान्त शान्त पवित्र वातावरण में नवयुग के स्वप्नों को नवचेतन के पत्थर की चेष्टा हो रही है। इसको समाज का जितना सहयोग मिलता रहेगा उतना ही समाज में नवजीवन नया प्राण नई चेतना नई स्फूर्ति, नई जागृति पैदा होकर साहित्य प्रचार के लिये धर्मप्रचार के लिये समाजसुधार के लिये समाज को शक्ति-सम्पन्न बनाने के लिये अनेक कार्यकर्ता तैयार होकर जैन समाज का मुख उज्ज्वल होगा।

१४५–: श्री धीरजलालजी के. तुरखिया लोया :–

आप मूल निवासी लोया के हैं। आपके पिता श्री का नाम केशवलालजी है। आप लोया में ही व्यापार करते हैं। आपके तीन सुपुत्र हैं श्री धीरजलालजी, श्री शातिलालजी तथा शरद्चन्द्रजी। श्री धीरजलालजी जैन ट्रे० कालेज रतलाम के स्नातक हैं। आप श्री जैन गुरुकुल व्यावर के जन्म काल से ही अधिष्ठाता हैं। गत कई वर्षों से तो आप गुरुकुल की ऑनरेरी सेवा कर रहे हैं। वाहर प्रवास करके हजारों रुपया प्रतिवर्ष भी आप लाते रहे हैं। साधु-सम्मेलन अजमेर के भी मत्री के रूप में आपने काफी सेवा की। पू० दुर्लभजी भाई की एक भुजा के रूप में थे। कई महीनों तक अथक् परिश्रम करके सम्मेलन को सफल बनाया। कान्फ्रेंस की भी अनेक प्रवृत्तियों में आपका हाथ रहता है। अभी भी कान्फ्रेंस की प्रमुख प्रवृत्ति साधु समिति तथा साहित्य समिति के प्रमुख कार्यकर्त्ता आप ही हैं। कान्फ्रेंस के मारवाड प्रान्तीय मन्त्री भी आप ही हैं। ऋषि श्रावक समिति के मन्त्री के रूप में भी आप कई वर्षों से सेवा दे रहे हैं। कान्फ्रेंस की ओर से ट्रे० कालेज भी शीघ्र आपकी देख रेख में प्रारम्भ होने वाला है। ट्रे० कालेज बीकानेर के आप गृहपति थे। आपकी धार्मिक लागणी अच्छी है। स्नातक सघ श्री जैन गुरुकुल ने आपको २१ हजार की थैली भेंट की। समाज में शायद यह सर्व प्रथम थैली थी। उस थैली को आप ने स्नातकों की आगे की पढाई के निमित्त भेंट कर दी, जिससे आजकल स्नातकों को छात्रवृत्तिया दी जा रही हैं। श्री शान्तिभाई तथा शरद्चन्द्र वम्बई में व्यापार करते हैं। आपकी धर्म-पत्नी का नाम कचनबाई है। आपने अपने छोटे भाई श्री शान्तिभाई के सुपुत्र श्री रसिकलाल को दत्तक पुत्र के रूप में रक्खा है। श्री रसिकलाल गुरुकुल में अभ्यास कर रहे हैं।

१४६–: सेठ हीरालालजी नांदेचा खाचरौद :–

सेठ हीरालालजी नादेचा मूल निवासी मुलथान (मालवा) के हैं। अब आप खाचरौद में रहते हैं। खाचरौद में आपकी फर्म बहुत प्रतिष्ठित फर्म है। आप खाचरौद के ही नहीं, अपितु मालवा के प्रसिद्ध श्रावकों में से हैं। जैनाचार्य पूज्य श्री हुक्मीचन्दजी म० सा० के श्री हितेच्छु श्रावक मडल रतलाम के आप कई वर्षों से सभापति हैं। मडल की सेवा तन, मन, धन से कर रहे हैं। आप और भी अनेक सस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्य तथा ट्रस्टी हैं। कान्फ्रेंस के मालवा प्रान्तीय मंत्री के रूप में आप सेवा दे रहे हैं। आप अच्छे उदार तथा धार्मिक लागणी के सज्जन हैं। जैनाचार्य पूज्य श्री गणेशीलालजी म० सा० के प्रमुख श्रावकों में से एक हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में रस लेते हैं। सामाजिक सस्थाओं की उदारता पूर्वक सहायता करते रहते हैं।

१४७:– श्री केसरीमलजी नवलखा खाचरौद :–

आपका जन्म आसोज वद ५ सं० १६४५ को हुआ था। आप गुमानजी लखमीचन्द नामक प्रसिद्ध फर्म के मालिक थे। आपने अपने हाथों से अच्छा पैसा कमाया। आप अच्छे कुशल कार्यकर्त्ता थे। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में उत्साहपूर्वक भाग लेते थे। आप जिस काम में आगे आ जाते, उस काम को पूरा करके ही छोडते थे। श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल खाचरौद की इतनी तरक्की का श्रेय आपको ही है। आप समाज के एक रत्न थे। जनता में आपका अच्छा सम्मान था। आपका स्वर्गवास सवत ६७ की आषाढ सुदी १० को हो गया। आपके दो पुत्र व अनेक पौत्र हैं। पुत्रों के नाम श्री रतन-लालजी व उम्मेदमलजी हैं। अब दोनों अलग २ व्यापार करते हैं। बड़े भाई गुमानजी लिखमीचन्द फर्म के तथा छोटे श्री केसरीमल उम्मेदमल फर्म के मालिक हैं। दोनों का प्रधान व्यापार कपड़े का है।

५५०— श्री सरदारमलजी मा० छाजेड़, शाहपुरा —

श्री सरदारमलजी शाहपुरा के निवासी हैं। आपने बी. ए. तक अभ्यास किया है। कई वर्ष तक आप शाहपुरा में न्यायाधीश का कार्य करते रहे। शाहपुरा स्टेट के प्रमुख राज्य-कर्मचारियों में से एक रहे हैं। मरुधर श्रावक-सम्मेलन, बगड़ी के आप अध्यक्ष थे। अजमेर साधु-सम्मेलन के मन्त्री के रूप में आपने खूब काम किया था। दुर्लभजी भाई की एक भुजा के रूप में आप थे। श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के कुलपति आप गत ७-८ वर्षों से हैं। साल में कई बार आकर संभालते हैं। कई बार तो एक-एक दो-दो माह लगातार रहकर गुरुकुल की सेवा करते हैं। आप काफी राष्ट्रवादी हैं। धार्मिक संस्कार अच्छे हैं। चार-पाँच हरी के सिवाय सब का त्याग कर रक्खा है। आपके सुपुत्र श्री मानमलजी हैं। आप अच्छे विचारों के युवक हैं। श्री छाजेड़जी आजकल रिटायर्ड लाइफ ही व्यतीत करते हैं।

५५१—. श्री अमोलकचन्दजी लोढ़ा, बगडी —

आप मूल निवासी बगड़ी के थे। आपके पिताजी का नाम हीरालालजी था। आपके दो पुत्र थे—श्री शोभागमलजी तथा अमोलकचन्दजी। श्री शोभागमलजी के तीन पुत्र हैं। श्री मिश्रीलालजी अच्छे राष्ट्रीय विचारों के युवक हैं। श्री शोभागमलजी साहब बहुत सरल उदार, धर्मनिष्ठ तथा साधर्मीप्रिय सज्जन हैं। श्री अमोलकचन्दजी बगड़ी के एक कर्मठ कार्यकर्त्ता थे। राष्ट्रीय, सामाजिक तथा धार्मिक सभी तरह के विचार बहुत अच्छे थे। शक्ति से ज्यादा उदार थे। आपकी उदारता सर्वतोन्मुखी थी। आत्मार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० सा० तथा चैतन्य मुनिजी के उपदेश से श्री जैन गुरुकुल ब्यावर की स्थापना का बीड़ा आपने ही उठाया। इस कार्य में आपके मित्रों ने अच्छा सहयोग दिया। श्री अमोलकचन्दजी बगड़ी तथा आस-पास के लोगों के मार्ग प्रदर्शक थे। बगड़ी के दवाखाने के भी मूल संस्थापक आप ही थे। अनेक कार्यकर्त्ताओं की गुप्त सहायता करते थे। बगड़ी ठाकुर के अत्याचारों के सामने आपने ही आवाज उठाई और उनके समस्त राजकीय अधिकारों को जब्त करवाये। आप बगड़ी के ही नहीं अपितु मारवाड़ के एक रत्न थे। आपका बहुत छोटी अवस्था में ही स्वर्गवास हो गया। आपकी धर्मपत्नी का नाम सुन्दर बहन है। आप अपना अधिकांश समय धार्मिक प्रवृत्तियों में ही व्यतीत करती हैं। सोजत रोड पर आपका सुन्दर बंगला है।

५५२— श्री भैरूंलालजी बरडिया, जोधपुर —

आप एसे जोधपुर के रहने वाले हैं किन्तु आपका व्यवसाय मुख्यतः अहमदाबाद में होने से ज्यादातर अहमदाबाद ही रहते हैं। आप अच्छे व्यवसायी हैं। धार्मिक लागणी अच्छी है। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में यथाशक्ति व्यय भी करते हैं। सार्वजनिक प्रवृत्तियों में भी भाग लेते हैं। जोधपुर में सर्राफा बाजार में आपका निवासस्थान है। सरल तथा उदार मनोवृत्ति के सज्जन हैं। मारवाड़ में काफी आना जाना रहता है।

५५३ — श्री आणन्दराजजी सुराणा, जोधपुर —

आपके पिताजी का नाम चांदमलजी सुराणा था। आप बड़े दिलेर तथा निर्भीक कार्यकर्त्ता थे। जोधपुर स्टेट में राजनैतिक विचारों का बीजारोपण करने का सर्वप्रथम श्रेय आपको ही है। आपको स्टेट ने स्टेट से बाहर निकलवा दिया था। आपकी तरह ही आपके पुत्र श्री आणन्दराजजी सुराणा दिलेर

तथा निर्भीक है। आपका जीवन काफी संघर्षमय रहा है। राजनैतिक, सामाजिक तथा धार्मिक प्रत्येक क्षेत्र में आपकी सेवायें तथा उदारता अनुकरणीय रही हैं।

जोधपुर स्टेट में एक बार तो लगभग ३-३॥ वर्ष तक आप एकान्त किले में नजरबन्द रहे। बाहर आपका लाखों रुपयों का व्यवसाय था, कोई खास आदमी सम्भालने वाला नहीं था, फिर भी दृढ रहे। सरकार ने अपने आप ही छोडा। सन् ४२ में भी आपको दिल्ली से बाहर काफी समय तक रहना पडा। आपका खास व्यवसाय दिल्ली में है और दिल्ली में ही रहते हैं। आपके यहां बडे-बड़े नेता-गण तक आकर मेहमान रह चुके हैं। अजमेर साधु-सम्मेलन के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से एक रहे हैं। समाज की बहुत कम संस्थाएँ ऐसी होंगी कि जहा आपकी उदारता का श्रोत न पहुँचा हो। उदार तथा भावुक इतने हैं कि अपील के समय जो जेब में होता है, निकाल कर फैंक देते हैं। यदि कुछ न हो या कम हो तो घडी, बींटी या जो कुछ होता है, निकाल फैंकते हैं। आपने अपने हाथों से काफी कमाया और संस्थाओं को काफी दिया। अनेक राजनैतिक कार्यकर्त्ताओं के घरों पर गुप्त सहायता भी पहुँचती रहती हैं। श्री जैन गुरुकुल, व्यावर को हमेशा सहायता देते रहे हैं। एक बार तो एक मुश्त दस हजार की बीमा पोलिसी दी। आप जबान के पक्के तथा मिलने वाले की मदद करने वाले हैं। आपके व्यवसाय को आजकल आपके भाणेज श्री शेरसिंहजी मुख्यतः सम्भालते हैं। आपके छोटे भाई श्री बच्छराजजी सा० जोधपुर ही रहते हैं तथा बीमे का काम करते हैं। अच्छे उत्साही युवक हैं। श्री सुराणाजी समाज के एक रत्न हैं।

१५८ —: सेठ कन्हैयालालजी भंडारी, इन्दौर :—

सेठ कन्हैयालालजी भण्डारी के पिता श्री का नाम सेठ नन्दलालजी भंडारी था। सेठ नंदलालजी धार्मिक वृत्ति के सरल स्वभावी श्रावक थे। आपने लाखों रुपया अपने हाथों से कमाया। सेठ नन्द-लाल भण्डारी मिल आपका ही था। आपके स्वर्गवास के बाद सारा कार्यभार सेठ कन्हैयालालजी ने सभाला। आपके अन्य भाई आपके काम में सहायक हैं। सेठ कन्हैयालालजी का राज्य तथा प्रजा दोनों में अच्छा सम्मान है। अपूर्व व्यापारकुशल हैं। इन्दौर स्टेट के सिवाय अन्य अनेक स्टेटों में आपका अच्छा सम्मान है। आप रायबहादुर तथा राज्यभूषण आदि कई उपाधियों से विभूषित किये गये हैं। आपने अपने व्यापार को बहुत बढाया। स्टेट मिल को आपने ले लिया और कन्हैयालाल भंडारी मिल नाम रख दिया। बाहर भी आपने व्यापार को काफी बढ़ाया। आपने पैसा कमाना ही नहीं सीखा, खर्च करना भी सीखा है। आपने अपने हाथों मे काफी रुपया दान किया है। श्री जैनेन्द्र गुरुकुल, पच-कूला तथा श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर के सभापति बन चुके हैं। अध्यक्ष-पद के समय जो रकमें आपने दी, उतनी उनसे पहिले कभी नहीं मिली होगी। आप अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी ट्रस्टी तथा सदस्य हैं। आपको योगासनों का भी काफी शौक है। श्री जैन गुरुकुल के उत्सव के समय आपने आसनों का प्रदर्शन किया था, जिससे दर्शकगण काफी प्रभावित हुए। आप अनुशासन के पूरे हामी हैं। जरा भी Discipline भग होता है तो आपको असह्य होता है। आपकी ओर से एक हाई स्कूल तथा अन्य अनेक छोटी-मोटी संस्थायें चलती हैं। आप समाज को संगठित देखने के लिए बहुत उत्सुक हैं। इसके लिए काफी प्रयत्न भी किये हैं तथा कर रहे हैं। आपकी ओर से अनेक योग्य तथा असहाय छात्रों को छात्रवृत्तिया भी दी जाती हैं। आप भारत के प्रसिद्ध उद्योग पतियों में से एक हैं। अच्छे तथा योग्य आचार्यों तथा मुनिराजों की सेवा तथा व्याख्यानादि का जरूर लाभ लेते हैं। साधु-सम्मेलन समिति के आप सदस्य थे। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आप उत्साह-पूर्वक भाग लेते रहते हैं। मध्यप्रांतीय

स्था० जैन कान्फ्रेंस के सभापति भी आप ही थे। आप समाज के अच्छे प्रतिभासम्पन्न, प्रभावशाली तथा योग्य नेता हैं। शिक्षा तथा शिक्षण संस्थाओं के प्रति आपकी काफी रुचि है।

८५५ — श्री पूनमचन्दजी गांधी हैदराबाद —

आप मूल निवासी बडरोड के हैं। आपका व्यवसाय हैदराबाद में है। आप हैदराबाद के प्रमुख रूपये के व्यवसायी हैं। आपका हैदराबाद में अच्छा प्रभाव है। राज्य तथा जनता में आपका अच्छा सम्मान है। श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल रतलाम के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से आप एक हैं। आपकी ओर से रतलाम में एक पाठशाला भी चल रही है। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया है तथा शक्त्यानुसार खर्च भी किया है। श्री जैनगुरुकुल ब्यावर के अध्यक्ष भी आप बन चुके हैं। उत्सव के समय आपने ११००) रुपये भेंट किये। आपका भाषण पठनीय तथा मननीय था। हैदराबाद की सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों के आप केन्द्र स्थान हैं। आप अच्छे विचारों के ठोस कार्यकर्ता हैं। आप अवस्था में वृद्ध होते हुए भी काफी नवीन विचार रखते हैं। आपकी धर्मपत्नी अच्छी धर्मपरायण स्त्री हैं। आपने समाज की अनेक संस्थाओं को सहायतायें दी हैं।

८५६ — श्री जसराजजी लोढा हैदराबाद —

आप एक मारवाड़ी सज्जन हैं। आपकी शिक्षा भले ही अधिक न हो किन्तु व्यापार कुशल हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। क्रियाकाण्ड में भी दृढ़ हैं। इधर होने वाले चातुर्मासों में आप आगे बढ़कर भाग लेते रहे हैं। आप अच्छे उदार सज्जन हैं। आप सूरजमल जसराज फर्म के मालिक हैं। आपके यहाँ गिरवी तथा लेन देन का व्यापार होता है।

८५७ — श्री मुल्तानमलजी वरमेचा हैदराबाद —

आप मुल्तानमल पन्नालाल फर्म के मालिक हैं। आप हैदराबाद के प्रतिष्ठित व्यापारी हैं। दुकान का काम श्री मुल्तानमलजी तथा पन्नालालजी दोनों संभालते हैं। आप दोनों बन्धु अच्छी धार्मिक लागणी वाले हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में अच्छा रस लेते हैं। दोनों बन्धु अच्छे उत्साही हैं। आपने अपने हाथों से अच्छा पैसा कमाया है तथा शक्त्यानुसार खर्च भी करते रहते हैं। हैदराबाद में चातुर्मास आदि कार्यों में आपका भी प्रमुख भाग होता है। दुकान का काम अब श्री मासकचन्दजी भी करने लगे हैं।

८५८ — सेठ बहादुरमलजी बांठिया भीनासर —

बहादुरमलजी बांठिया भीनासर के रहने वाले थे। श्री बांठियाजी के पितामह श्री हजारीमलजी ने एक लाख इकतालीस हजार रुपये का उदार दान किया था। श्री बांठियाजी ने भी अपने जीवनकाल में करीब डेढ़ लाख का दान किया है। भीनासर में आपकी ओर से एक औषधालय चलता है। संवत् ६६ में आपने २५०००) स्थायी रूप से प्रदान करके उसे स्वतन्त्र बना दिया। आपने अपने अन्तिम समय में बत्तीस हजार रुपये अपने नाम से तथा ५७०१ अपने स्वर्गीय पुत्र श्री बंसीलालजी के नाम से निकाले पींजरापोल के लिये एक मकान दिया। पचायत के लिये मकान और जमीन दी। गंगासर से भीनासर तक पक्की सड़क बनवाने में आधा खर्च तथा परिश्रम आपने किया। जैनाचार्य पूज्य श्री जवाहिरलालजी

म० सा० के आप अनन्य भक्त थे। पूज्य श्री की बीमारी में समय २ पर आपने खूब सेवा की थी। पूज्य श्री को भीनासर लेजाने में आपका प्रमुख हाथ था। स० ६६ में आप लकवा से ग्रस्त हो गये। फिर भी एक विशेष गाडी बनवा कर जैसे तैसे दर्शनार्थ जरूर जाते थे। बांठियाजी के धार्मिक विचार स्तुत्य थे। क्रियाकाण्ड में भी दृढ थे। ३६ वर्ष की अवस्था में आपकी धर्मपत्नी का स्वर्गवास हो गया, लोगों के आग्रह करने पर भी आपने दूसरी शादी नहीं की। आप ब्रह्मचर्य के प्रबल समर्थक थे। आप अच्छे साहित्य रसिक थे। अपनी ओर से अनेक पुस्तकें प्रकाशित करवाई तथा मुफ्त तथा आधे मूल्य में प्रचार करवाया। आपका व्यापार विशेषतया कलकत्ता तथा मन्मुखे (आसाम में) है। सिवपुरा पजाब में आपकी विशाल जमींदारी है। कलकत्ते में आपका छतरी का विशाल कारखाना है।

आपके सुपुत्र श्री तोलारामजी तथा श्यामलालजी बडे सेवाभावी, धर्मानुरागी तथा सरल हृदय हैं। श्री श्यामलालजी अधिक कलकत्ता रहते हैं और अपने व्यवसाय को संभालते हैं। श्री बांठियाजी के स्वर्गवास पर अनेक संस्थायें बंद रहीं। आपके शोक में कलकत्ते का छाता बाजार बद रहा।

१५४ —: रा० ब० सेठ चांदमलजी नाहर बरेली :—

रा० ब० सेठ चांदमलजी नाहर देशभक्त सेठ गोविन्ददासजी मालपाणी की दुकान पर हैड मुनीम थे। दुकान की बहुत बडी जिम्मेवारी आपके सिर पर थी। सरकारी क्षेत्र में भी आपका काफी सम्मान था। आप बहुत सरल स्वभाव के थे। धार्मिक श्रद्धा काफी दृढ थी। जैनाचार्य पूज्य श्री हस्तीमलजी म० सा० के अनन्य भक्त थे। ऐसे सेवा सभी सन्तों की करते थे। आप प्रतिवर्ष चातुर्मास का एक माह मुनि सेवा में व्यतीत करते थे। आपके छोटे भाई श्री नगराजजी, जुगराजी तथा रतनलालजी आदि मय अपने बाल-बच्चों के मुनि सेवा में साथ रहते थे। श्री नगराजजी व जुगराजजी बहुत सरल प्रकृति के सज्जन थे। श्री रतनलालजी एक कुशल तथा व्यवहारिक व्यापारी हैं। धार्मिक लागणी भी अच्छी है। आप बरेली के अच्छे जमींदार तथा व्यापारी हैं, हजारों एकड़ जमीन है। घरु कृषि करवाते हैं। श्री बाबूलालजी व्यापार सम्भालते हैं। श्री रतनलालजी के एक सुपुत्र इन्जीनियरिंग में पढ रहे हैं तथा दूसरे विद्याभवन, उदयपुर में।

बरेली के अतिरिक्त भोपाल, पीपलिया आदि में भी आपका व्यापार है। संस्थाओं मे आप काफी सहायता देते हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय विचार आपके मजे हुए हैं।

१५० — श्री पन्नालालजी नाहर, अजमेर —

श्री पन्नालालजी नाहर मूल निवासी अजमेर के हैं। आप अजमेर के अच्छे सम्पन्न तथा मुखिया सज्जन हैं। आपके पिता श्री जौंहरीलालजी नाहर अजमेर के सुप्रतिष्ठित श्रावक थे। श्री जौंहरीलालजी ने लाखों रुपया अपने हाथों से कमाया। अच्छे धर्मनिष्ठ श्रद्धालु श्रावक थे। श्री पन्नालालजी आपके सुपुत्र हैं। आपका व्यापार प्रमुखतः अजमेर में ही है, किन्तु साधारण व्यापार किशनगढ़ आदि में भी है। आप गोटे के प्रसिद्ध व्यापारी हैं। आपकी दूकान पर पारसमल अभयमल नाम मडता है। श्री पारसमलजी व अभयमलजी आपके सुपुत्र हैं। दोनों आज्ञाकारी तथा विनयी हैं। अजमेर साधु-सम्मेलन में आपकी भी काफी मदद थी। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में भी रस लेते हैं। किशनगढ में अभयमल हंसराज के नाम से फर्म चल रही है। वहाँ कपड़ा, गोटा तथा आडत का काम होता है। आपके चार पुत्र व तीन सुपुत्रिया हैं। अजमेर में आपका कुटुम्ब एक प्रतिष्ठित कुटुम्ब है।

१५१ — श्री गुलाबचन्दजी बनवट खारवा —

श्री गुलाबचन्दजी बनवट खारवा के मूल निवासी हैं। यहां आपकी जमींदारी भी है। यहां की प्रसिद्ध फर्म चुन्नीलाल लखीचन्द की फर्म की देखरेख भी आप ही करते हैं। आप अच्छे विचारों के सज्जन हैं। खारवा के आसपास आपका अच्छा प्रभाव है। आपको इधर के लोग राजा साहब के नाम से पुकारते हैं। आपने सन्तान न होने से गोत्रादि का ध्यान न रखकर मानवता को मद्देनजर रखते हुए श्री प्रेमराजजी को गोद लिया। श्री प्रेमराजजी एक सुयोग्य होनहार तथा अच्छे विचारों के युवक हैं। श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में ४-५ साल तक अध्ययन किया था। श्री गुलाबचन्दजी बनवट हैं, जब कि पुत्र बम्ब परिवार से हैं। दोनों पिता पुत्र समान विचारों के हैं। एस गोद के पुत्र ही कुटुम्ब को आगे बढ़ा सकते हैं।

१५२ — श्री जयकुमारजी कोचर, खारवा —

श्री जयकुमारजी मूल निवासी फलौदी मारवाड़ के थे। आपके पिताश्री का नाम श्री बाबूरामजी था। आपने ४-५ वर्ष तक श्री जैन गुरुकुल ब्यावर में अभ्यास किया। बहुत उच्च विचारों का नवयुवक था। करीब १६ वर्ष की अवस्था में श्री लखीचन्दजी के नाम पर खारवा गोद गये। गोद से आने का सारा श्रेय श्री गुलाबचन्दजी बनवट को था। यहाँ दो वर्ष करीब रहे। बहुत दिलचस्पी से प्रेमपूर्वक माता तथा बूढ़ी दादी की सेवा करते रहे। व्यापार तथा जमींदारी को भी अच्छी तरह संभाल लिया। इस छोटी उम्र में ही आसपास में सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय क्षेत्र में काफी ख्याति प्राप्त कर ली थी। अच्छी चीज को कोई नहीं छोड़ता, काल को भी ईर्ष्या हुई। बुखार आया और ४-५ रोज में इस करात काल द्वारा ग्रस लिए गये। श्री जयकुमारजी के पिता श्री का नाम लखीचन्दजी तथा दादाजी का नाम चुन्नीलालजी था। अब आपके स्थान पर आप ही के परिवार में से श्रीयुत फलौदी से एक बालक गोद आ गये हैं। वह भी होनहार तथा योग्य प्रतीत होता है। श्री जयकुमार जी चन्दनमलजी के छोटे भाई थे।

१५३ — श्री किशनलालजी चौधरी शुजालपुर —

श्री किशनलालजी चौधरी यहां के प्रतिष्ठित तथा धार्मिक आगेवान श्रावक हैं। धार्मिक कामों में आपका प्रमुख हाथ होता है। यहां के अच्छे व्यापारी हैं। बहुत सरल तथा मिलनसार हैं। घर पर आये हुए का मान करते हैं। आपके मातुश्री बहुत धर्म परायण स्त्री हैं। साधु सन्तों की सेवा में भी इस कुटुम्ब का मुख्य हाथ रहता है।

१५४ — दी० ब० केशरीसिंहजी कोटा —

आप कोटा के प्रसिद्ध सज्जन हैं। आप बहुत बड़े व्यापारी जमींदार तथा बैंकर हैं। आपका व्यापार कोटा के अतिरिक्त रतलाम आदि अनेक स्थानों पर है। आप बहुत मिलनसार तथा धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन हैं। आप घर पर आये हुए का अवश्य मान रखते हैं। काफी उदार हैं। राजकीय क्षेत्र में भी आपका बहुत सम्मान है। राजकीय कार्यों में आपको सलाह मशवरे के लिए भी याद किया जाता है। अनेक संस्थाओं के सदस्य ट्रस्टी भी हैं। आपके अनेक मकान सार्वजनिक कामों में काम आते हैं। धर्मशालायें भी बनवाई हैं। आपके सुपुत्र कंवर पूनमचन्दजी अच्छे होनहार प्रतीत होते हैं। विचार भी उदार हैं।

१५४ — सेठ कंवरलालजी बाफणा —

आप मूल निवासी फलौधी मारवाड के हैं। आपका व्यापार सिरधाना खानदेश में है आपके चार भाई और हैं। आप आजकल अधिकतर धूलिया में रहते हैं। सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय कामों में आप बहुत उत्साहपूर्वक भाग लेते है। आपके विचार बहुत उदार तथा क्रांतिकारी हैं। अच्छे सुधारक हैं। राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में भाग लेने के कारण कृष्ण मन्दिर की मेहमानी भी किये हुए हैं। धूलिया जिले के प्रमुख कांग्रेस कार्यकर्त्ताओं में आपका भी स्थान है। सिरधाना में आपकी काफी जमींदारी है। स्वयं कृषि करवाते हैं। वहां दूकान भी है जहा सब तरह का व्यापार तथा लेन-देन का काम होता है।

१५५ — नगर सेठ श्री तखतराजजी लोढ़ा, शिवगंज —

आप मूल निवासी पाली मारवाड के हैं। आपका कुटुम्ब पाली का एक बहुत प्रतिष्ठित कुटुम्ब है। आपके बुजुर्ग सिरोही जाकर बसे थे और उन्होंने ही शिवगज बसाया। तब से आपके कुटुम्बियों को नगर सेठ की उपाधि है। आपको शिवगज की आमदनी का १६ वा भाग भी मिलता है। शिवगंज तथा पाली में काफी जमीन जायदाद है। सेठ तखतराजजी बहुत सरल प्रकृति के अत्यन्त उदार सज्जन हैं। घर पर आए हुये को खाली हाथ नहीं जाने देते। गरीबों को पुडी तथा चने आदि की चिट्ठिया देते हैं। आप शिवगंज की अनेक सस्थाओं के पदाधिकारी तथा सदस्य हैं। राज्य मे आपके कुटुम्ब का बहुत मान रहता आया है। आपके सुपुत्र श्री प्रकाशचन्द्रजी इन्दौर मे बी० ए० मे पढते हैं। बहुत अच्छे विचारों के युवक हैं तथा बुद्धिमान भी। आपके बुजुर्गों ने बडी २ लड़ाइया तक लडी हैं।

१५६ —: सेठ हीराचन्दजी कटारिया, बैंगलोर :—

आप मूल निवासी देवली मारवाड के हैं। आपके पिता श्री ने केवरली बाजार बैंगलोर में लेन-देन तथा गिरवी का व्यापार प्रारम्भ किया। आपके पिता श्री का नाम श्री धनराजजी कटारिया था। आप धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन थे। आपके बडे सुपुत्र का नाम हीराचन्दजी है। आप केवरली बाजार के ही नहीं, अपितु बैंगलोर स्थानकवासी समाज के मुखियाओं में से एक हैं। धार्मिक तथा सामाजिक प्रवृत्तियों में काफी भाग लेते हैं। शुद्ध खादी धारण करते हैं। बैंगलोर की ह्यूमेनिटेरियन लीग के प्रमुख कार्यकर्त्ताओं में से एक हैं। ह्यूमेनिटेरियन लीग ने बैंगलोर तथा उसके आस-पास काफी जीवरक्षा के काम किये हैं। श्री हीराचन्दजी कटारिया उक्त संस्था के जन्मकाल से सहायक रहे हैं। सामाजिक सस्थाओं में यथाशक्ति सहायता भी देते रहते हैं। मुनिसेवा आदि धार्मिक कामों मे आप अगुवा रहते हैं। आप वहा के प्रमुख व्यापारी भी हैं। आपके छोटे भाई भी अच्छे व्यापार कुशल हैं। आपके साथ ही व्यापार करते हैं।

१५८ —: श्री सोमचन्दजी तुलसीदासजी, रतलाम :—

जन्म सवत् १६४४ मगसर सुद ८। आपका जन्मस्थान राजकोट काठियावाड है। हाल आप रतलाम में रहते हैं। आप बर्मा शेल कम्पनी के एजेन्ट हैं। आपने अपनी बुद्धिमानी से अपने व्यापार को अच्छा चमकाया और अच्छा लाभ उपार्जन किया। आपकी धार्मिकभावना अच्छी है। साधु मुनिराजों की सेवा का लाभ अच्छी तरह से लेते हैं। पूज्य श्री जवाहिरलालजी म० सा० व प्रसिद्ध व्याख्यानी श्री किशनलालजी म० सा०, प्रसिद्ध वक्ता श्री सौभाग्यमलजी म० सा० का काठियावाड ले जाने के लिए

आपने खूब परिश्रम किया। अभी काठियावाड़ में पूज्य श्री घासीलालजी म० सा० के द्वारा जो आगमोद्धार का कार्य हो रहा है उसकी व्यवस्था-कमेटी के आप ही सेक्रेटरी हैं। आपने सन् १६४८ में पूरी होने वाली १००००) दस हजार की बीमा पालिसी को धर्मार्थ अर्पण कर दी है। उसके लिए आपने तीन ट्रस्टी मुकर्रर कर दिये हैं। आपके पुत्र का नाम शान्तिलाल भाई है।

१५८— श्री धूलचन्दजी भण्डारी, रतलाम :—

आपका जन्म एक साधारण से कुटुम्ब में हुआ था। किन्तु आपने अपनी योग्यता से करीब १-१॥ लाख रुपया कमाया। आपका शास्त्रीय ज्ञान भी काफी गहरा था। अनेक थोकड़े जबान पर थे। साधु-सन्त तथा महासतियाँ तक शास्त्र सम्बन्धी शंका में आपके सामने रखते थे। श्री धर्मदास जैन मित्र-मण्डल को आपने ही बढ़ाया। भवन पुस्तकालय तथा कोष आदि सब आप ही के परिश्रम तथा प्रयत्नों के फल हैं। आपने मंडल को हर तरह से सम्पन्न करके समाज के सुपुर्द किया। पू० धर्मदासजी म० सा० की सम्प्रदाय के आप प्रमुख श्रावक थे। साम्प्रदायिक प्रत्येक मामले के निराकरण के पहिले आपकी सलाह अनिवार्य होती थी। आपने मृत्यु से पहिले काफी उदारता बताई। ६६ ००) का ट्रस्ट बनाकर समाज को भेंट किया। आप अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी, सदस्य तथा ट्रस्टी थे। मालवा प्रान्त में तो आपका काफी सम्मान था। साधु सन्त तक आपको सम्मान की दृष्टि से देखते थे। आपके स्वर्गवास से धर्मदास मित्र मण्डल ने एक अमूल्य रत्न खो दिया है।

१६०— श्री लाला नन्दलालजी, हैद्राबाद —

आप मूल निवासी भिवाना (जयपुर) के हैं। आपके दादाजी श्री गुलाबमलजी ने हैद्राबाद में आकर कपड़े का परचूरण व्यापार प्रारम्भ किया। आपके पिता श्री जमनादासजी ने जवाहिरात का व्यापार प्रारम्भ किया। आपने छोटीसी अवस्था में ही कपड़े का व्यापार सम्भाला। उसे खूब बढ़ाया। काफी धनोपार्जन किया। आपने भिवाने में सुन्दर धर्मशाला बनवाई। यात्रियों की सुविधा के लिए सब तरह का सामान भी रक्खा। आप जन्म से अग्रवाल हैं। पं० मुनि श्री शोभाचन्दजी म० सा० के उपदेशों के प्रभाव से आपने सम्यक्त्व धारण की। आप नियम तथा धुन के पक्के हैं। आपके विचार काफी नये तथा सुधरे हुए हैं। आपके सुपुत्र श्री जयकरणदासजी बहुत व्यापारकुशल तथा योग्य कार्यकर्त्ता हैं। क्लोथ मर्चेन्ट एसोसियेशन तथा अग्रवाल सभा के अध्यक्ष हैं। प्रत्येक सार्वजनिक प्रवृत्तियों में आपका अग्रभाग रहता है। क्रियाकांड में भी दोनों पिता पुत्र दृढ़ हैं।

१६१— श्री जीवराजजी कठारिया, हैद्राबाद —

आप मूल निवासी पीपलिया मारवाड़ के हैं। किन्तु आपका व्यवसाय डबीरपुरा हैद्राबाद में है। आपके लेन-देने तथा गिरवी का व्यापार है। धर्म में दृढ़ हैं। जो विचारते हैं उस करके रहते हैं। धार्मिक तथा समाजिक कार्यों में उदारतापूर्वक खर्च करते हैं। मुनिभक्त पक्के हैं। आपने अपने हाथों से काफी धनोपार्जन किया। आपके पुत्र श्री रतनलालजी हैं। आपके साथ व्यापार में आपके पौत्र श्री सोहनलालजी तथा सम्पतलालजी का अच्छा सहयोग है। दोनों बालक होनहार मालूम पड़ते हैं। हैद्राबाद में आपका अच्छा सम्मानपूर्ण स्थान है।

१६२ —: श्री चुन्नीलालजी जसरूपजी पनवेल :—

श्री चुन्नीलालजी मूल निवासी पीपाड़ मारवाड़ के हैं। लम्बे समय से आप पनवेल (कोलाबा) में ही रहते हैं। आप यहा के प्रमुख व्यापारी हैं। आपका यहां चावल का मिल भी है। बांठिया बैंक के हिस्सेदार भी हैं। आप अच्छे विचारों के धर्मनिष्ठ श्रावक हैं। सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। अच्छे शिक्षित तथा परिस्थिति को समझने वाले हैं। पनवेल के व्यापारिक क्षेत्र में तथा समाज में आपका अच्छा स्थान है। अनेक संस्थाओं में आपकी सेवाएं चालू हैं। आपके पिता श्री अच्छे धार्मिक वृत्ति के श्रावक थे।

१६३ —: श्री जौहरीलालजी ओस्तवाल, मेड़ता :—

श्री जौहरीलालजी ओस्तवाल मेड़ता के एक समझदार तथा पढ़े लिखे युवक हैं। आप यहां कृषि-कार्य तथा लेन-देन का व्यापार करते हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख हाथ होता है। आप अच्छे नये तथा सुधारक विचारों के युवक हैं। मुनिसेवा आदि कार्यों में भी आप पीछे नहीं रहते। आपके पिता श्री यहां के सुप्रतिष्ठित तथा प्रमुख श्रावक थे।

१६४ —: श्री शम्भूमलजी चौरड़िया, मद्रास :—

आपके पिता श्री का नाम नवलमलजी था। आप मूल निवासी भगवानदासजी का गुडा (नागौर) के हैं। आप ६० वर्ष पूर्व पैदल बैंगलोर गये और नौकरी की। वहा से मद्रास आकर नौकरी की फिर व्यापार शुरू किया। व्यापार में लाखों रुपया कमाया। आपके चार पुत्र—जेंवतराजजी जेठमलजी शम्भूमलजी तथा धनराजजी। सन् २६ में सब भाई अलग हो गये। पिता श्री का स्वर्गवास ३५ में हुआ। मरते समय तीन हजार का दान किया। आपके वहा सदाव्रत भी चालू है। आप पक्के मुनि भक्त तथा श्रद्धालु श्रावक हैं। प्र० मुनि श्री ताराचन्दजी म० सा० मद्रास पधारे तब आपने सैंकड़ों मील पैदल बिहार किया। आप बहुत सरल स्वभाव के हैं। आपने भी व्यापार को काफी बढ़ाया तथा धनोपार्जन किया।

१६५ —: किशनलालजी लूणिया बैंगलोर :—

आप मूल निवासी पीपलिया मारवाड़ के हैं। आपका व्यवसाय प्रमुख रूप से बैंगलोर सीटी में है। यहा विशेषकर कपड़े का व्यापार होता है। इसके सिवाय बम्बई ब्यावर आदि में भी आपकी दुकानें चल रही हैं। आप बहुत पुरुषार्थी तथा कठोर परिश्रमी हैं। काम से कभी घबराते नहीं। हर महीने दुकानों का निरीक्षण स्वय करते हैं। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया। धार्मिक प्रवृत्ति भी अच्छी है। यथाशक्ति धार्मिक कामों में द्रव्य का उपयोग भी करते हैं। बैंगलोर के प्रमुख व्यापारियों में से आप एक हैं। आजकल आप अधिकतर बाहर ही रहते हैं। अतः व्यापार का कार्यभार आपके दत्तक पुत्र श्री फूलचन्दजी पर है। श्री फूलचन्दजी भी व्यापार कुशल हैं। सामाजिक तथा धार्मिक कामों में यथाशक्ति भाग लेते हैं तथा खर्च भी करते हैं। कूप्पल तथा बैंगलोर की गौशालाओं में भी आपकी अच्छी सहायता रही है। बेंगलौर प्रान्त के प्रमुख स्थानकवासियों में से आप एक हैं।

१६६ —: श्री सुन्दरलालजी बागरेचा नाथद्वारा :—

आपके पिता श्री का नाम हमीरमलजी बागरेचा है। आप मूल निवासी नाथद्वारा के हैं। यहा आपकी कपड़े की दुकान है। इसके सिवाय सनवाड़, फतेहनगर आदि में भी आपका व्यापार है। आप

उत्साही नवयुवक हैं। सनवाड़ में चलने वाली जैन पाठशाला के मन्त्री का काम भी आप कर रहे हैं। आप अधिकतर सनवाड़ तथा फतेहनगर में ही रहते हैं। इधर की सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख भाग होता है। वहां के प्रमुख व्यापारी हैं। अच्छे सुधारक विचार रखते हैं।

१८८ —. पं० जोधराजजी सुराणा मद्रास .—

पं० जोधराजजी मूल निवासी चित्तोड़ के हैं। आपके पिता श्री का नाम पन्नालालजी था। आप जैन ट्रे० कालेज के स्नातक हैं। अच्छे विचारों के युवक हैं। आप इस समय मद्रास के जैन हाई स्कूल में काम कर रहे हैं। मद्रास के छोटे से स्कूल को हाई स्कूल तक पहुँचाने तथा विशाल छात्रालय कायम करने में खास श्रेय आपको है। आप मद्रास की सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों के केन्द्र हैं। आपकी सेवाओं की वहां के मुखिया मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करते हैं। बाहर से आई हुई पार्टियों में भी आपका अच्छा सहयोग रहता है। चित्तोड़ में भी आपने काफी जागृति के काम किये हैं। श्री सुराणाजी के प्रति वहां के कार्यकर्त्ताओं के अच्छे सम्मानपूर्ण विचार हैं।

१८८ —. सेठ सेंहसमलजी बालिया, पाली '—

श्री सेंहसमलजी बालिया मूल निवासी सादड़ी मारवाड़ के हैं। छोटी उम्र में ही आप पाली गोद आ गये। पाली की प्रमुख फर्म शेरमल सुल्तानमल के मालिक आप ही थे। आपने अपने माता-पिता तथा कुटुम्बियों को सेवा द्वारा सतुष्ट किया। थोड़े ही दिनों में आप शहर के प्रमुख लोगों में गिने जाने लगे।

धीरे २ आगे आकर संघ के मुखिया बन गये। श्री संघ सम्बन्धी प्रत्येक काम में आपकी सलाह अनिवार्य मानी जाने लगी। पाली का विशाल न्याति नोहरा आप ही के परिश्रम एवं प्रयत्नों का फल है। श्री शांतिजैन पाठशाला तथा छात्रालय पाली के कई वर्षों तक अध्यक्ष आप ही रहे। आप एक तरह से पाली के संघपति थे। पाली के जैनसमाज में ही नहीं अपितु सारे नगर में आपका महत्वपूर्ण स्थान था। नागरिक लोग आपका काफी सम्मान करते थे। आपके स्वर्गवास के बाद दूकान का कार्यभार उनके ज्येष्ठ सुपुत्र श्री सज्जनराजजी पर आ पड़ा श्री सज्जनराजजी ने छोटी सी अवस्था में ही श्री रतनचन्दजी के सहयोग से काम को काफी समक्ष लिया है।

१८८ — श्री गजेन्द्रकुमारजी ढाबरिया, गुलाबपुरा —

आप मूल निवासी टांटोटी के हैं। आपके पिता श्री का नाम अमोलकचन्दजी है। आपकी फर्म का नाम भूरालाल अमोलकचन्द है। आपके विचार बहुत सुधारक तथा क्रांतिकारी हैं। अच्छे लेखक वक्ता तथा कवि हैं। गुलाबपुरा प्रजामण्डल शाखा के सभापति भी रह चुके हैं। प्रत्येक सार्वजनिक काम में आपका प्रमुख हाथ होता है। गुलाबपुरा की सामाजिक, धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्तियों के केन्द्र स्थान हैं। गुलाबपुरा की क्लोथ एसोसियेशन के आप मन्त्री हैं। स्वावलम्बी शिक्षाकुटीर के उपाध्यक्ष हैं। आप अच्छे होनहार युवक हैं। समाज को आपसे बड़ी २ आशायें हैं।

१८० — श्री केशरीमलजी सनावदिया, जमुनिया —

आपके पिता श्री का नाम नानालालजी हैं। दोनों पिता-पुत्र सरल स्वभाव के हैं। धार्मिक विचार भी अच्छे हैं। श्री केशरीमलजी श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के स्नातक हैं। होनहार युवक हैं। ब्यावर तीर्थ धाम हैं।

१८१ – श्री कन्हैयालालजी कोठारी चौपड़ा –

श्री कन्हैयालालजी कोठारी मूल निवासी खांगटा मारवाड के हैं।' आपके पिता श्री का नाम पूनमचन्दजी है। आप छोटी अवस्था में ही चौपडा निवासी मूलचन्दजी के गोद चले गये। आप गुरुकुल के स्नातक हैं। छोटी अवस्था में ही आपने व्यापार को काफी सम्भाल लिया। चौपड़ा में आपके कपड़े की दूकान है। सामाजिक तथा धार्मिक विचार अच्छे हैं।

१८२ – श्री भंवरीलालजी धाड़ीवाल, त्रिवलूर –

आपके पिता श्री का नाम बींजराजजी धाडीवाल है। ऐसे आप जेंवतराजजी के सुपुत्र श्री मिश्रीलालजी के पुत्र हैं। किन्तु श्री बींजराजजी के पुत्र न होने से आपने गोद रूप में रख लिए हैं। श्री बींजराजजी बहुत सरल, धर्मनिष्ठ तथा उदार श्रावक हैं। आप मूल निवासी बगड़ी के हैं। आपका व्यापार त्रिवलूर मे है। आप अपना काफी समय धार्मिक कार्यों मे भी लगाते हैं। श्री भंवरलालजी अच्छे होनहार प्रतीत होते हैं।

१८३ – श्री मदनसिंहजी नाहर, आगरा –

आप लाला अयोध्याप्रसादजी के सुपुत्र हैं। किन्तु आपके बडे पिताजी के दत्तक हैं। आप बी. कॉम हैं। विद्याध्ययन पूरा करते ही आप बीमा क्षेत्र में कूद पडे। थोड़े वर्षों में ही आपने बीमे के कार्य मे अच्छी योग्यता प्राप्त कर ली। आपने अपने पुरुषार्थ तथा परिश्रम से दो-तीन बीमा कम्पनियों को आगे बढ़ाया है। अब तो आपने अपनी निजी कम्पनी कायम कर ली है। जिसका नाम अजेय बीमा कोरपोरेशन लिमिटेड आगरा है। अभी हैडऑफिस मानपाड़ा में है। आपने बीमा के कार्य में काफी कुशलता प्राप्त कर ली है। अब आपका विचार उद्योग क्षेत्र में आगे बढने का है। आप ऐसे उद्योग स्थापित करना चाहते हैं जिसमें काफी जैन शिक्षित युवक काम कर सकें। आपके पिता श्री ला० दुर्गाप्रसादजी अच्छे सुधारक तथा धर्मप्रेमी हैं। आपके ताऊजी श्रीमान् किस्तूरचन्दजी तो दिन रात धार्मिक क्रियाकाण्डों में ही रत रहते हैं। बा० मदनसिंहजी ने दो शादिया की। दोनों की मृत्यु होने पर तीसरी शादी के लिए कुटुम्बियों तथा रिश्तेदारों ने काफी आग्रह किया, सगाईया भी आईं किन्तु साफ इन्कार कर गये और कह दिया कि मैं अब विधवा-विवाह करूँगा। अन्त में वैसा ही किया। वर-वधू के कुटुम्बियो ने भी पूरा साथ दिया। आपके छोटे भाई बा० गुणवन्तसिंहजी बीमा के काम में काफी सहयोग दे रहे हैं। वे भी बीमा के काम में कुशल हैं। आपके सामाजिक तथा राष्ट्रीय विचार काफी अच्छे हैं।

१८४ – श्री बच्छराज त्रिदोषी, पंचगनी –

आपका जन्म जूनागढ राज्य के भेसाणा गाव में हुआ। शिक्षा जूनागढ़ में प्राप्त की। आर्थिक स्थिति कमजोर होने से धनोपार्जन के लिए देशावर जाना पड़ा। १६२१ से कांग्रेसभक्त हैं। पूज्य श्री जवाहरलालजी म० सा० के घाटकोपर चातुर्मास में सर्वप्रथम भाषण लिखने का काम आपने किया। आप काफी धार्मिक प्रवृत्ति के सज्जन हैं। सेवाभावना भी अच्छी है। १६२६ से पंचगनी रहते हैं। सन् ३१ के सत्याग्रह आन्दोलन में जेल गये। आपके आग्रह पर सन् ४४ तथा ४५ में पूज्य गाधीजी पचगनी पधारे। अभी आप स्थानकवासी जैन डाईरेक्ट्री तैयार कर रहे हैं।

१८७ — श्री धूलचन्दजी लूकड, पाली —

श्री धूलचन्दजी सोजत के रहने वाले थे। फिर पाली आ गये और वहीं रहने लग गये। वहीं पर जमींदारी लेनदेन का व्यापार करने लगे। आपके तीन पुत्र हैं—श्री पुखराजजी फूलचन्दजी तथा चम्पालालजी। श्री पुखराजजी गोद चले गये। अब घर का कामकाज मूलचन्दजी सम्भालते हैं।

१८८ श्री धर्मदास जैन मित्र मंडल रतलाम

स० १९७७ में उक्त मण्डल की स्थापना बड़े उत्साह के साथ हुई। समाजोन्नति के प्रत्येक क्षेत्र में इसने अपनी प्रवृत्ति की है। इसने सिवाय अपनी सम्प्रदाय की उन्नति व संगठन के अपना कार्यक्षेत्र विशाल रक्खा है। मंडल की उन्नति का श्रेय प्र० मुनि श्री ताराचन्दजी म० सा०, प्र० व० प० मुनि श्री किशनलालजी म० सा० तथा सरल स्वभावी प० मुनि श्री शामागमलजी म० सा० आदि को है। मण्डल की ओर से कई संस्थायें चल रही हैं। जैसे धर्मदास पूनमचन्द बाल पाठशाला, श्री धर्मदास चन्द्रावती कन्या शाला, इसके सिवाय बाहर भी कई संस्थायें ऐसी हैं जिनकी देख रेख मण्डल की है। साहित्य प्रकाशन के क्षेत्र में भी मण्डल ने अच्छा काम किया है। अनेक पुस्तकें प्रकाशित की हैं।

मण्डल का पुस्तकालय अच्छा विशाल पुस्तकालय है। हजारों की तादाद में छपे हुए तथा हस्त लिखित प्राचीन व अर्वाचीन ग्रन्थ हैं। नवीन साहित्य भी काफी बढ़ाया गया है। स्थानीय जनता तथा साधु मुनिराज पुस्तकालय का काफी लाभ लेते हैं।

साधु मुनिराजों की पढ़ाई के लिये सिद्धान्त शाला भी चल रही है। जिसमें व्यवस्थित व्यवस्था है। योग्य अध्यापक है।

धर्मोपकरण का भी अच्छा स्टोक रहता है। जिसका उपयोग साधु मुनिराज तथा वैरागी आदि भी कर सकते हैं।

इसका एक वाचनालय भी है, जिसमें अनेक पत्र आते हैं। जनता काफी लाभ लेती है।

मण्डल की तरक्की में श्री सेठ पूनमचन्दजी भण्डारी का भी प्रमुख हाथ था। रतलाम तथा बाहर के श्रावक उत्साह पूर्वक सहयोग दे रहे हैं।

१८९ —श्री जैन वीर मण्डल केकड़ी

इसकी स्थापना शास्त्रार्थी मुनि श्री मोहनऋषिजी म० सा० के उपदेश से सं० १९८८ में हुई थी। मण्डल के कुछ उत्साही युवकों का अच्छा संगठन है। मंडल ने सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अच्छा काम किया है। मंडल के आधीन प्रवर्तक मुनि श्री पन्नालालजी म० सा० के उपदेश से एक शिक्षण-शाला की स्थापना की गई। जिसमें काफी छात्र अध्ययन कर रहे हैं। जिसमें हिन्दी अंग्रेजी धार्मिक तथा महाजनी पढ़ाई की अच्छी व्यवस्था है। श्री देवकीनन्दनजी परिश्रम के साथ सेवा कर रहे हैं।

शिक्षणशाला के साथ ही शीघ्र छात्रालय स्थापित होने वाला है। छात्रालय के लिए जमीन खरीद ली गई है। भवन-निर्माण का कार्य प्रारम्भ होने वाला है।

मंडल की देख-रेख में एक सुन्दर पुस्तकालय है। इस समय पुस्तकालय में करीब ४५०० पुस्तकें हैं। धार्मिक साहित्य का तो अच्छा संग्रह है। अभी २ प्र० मुनि श्री फतेहचन्दजी म० सा तथा पं० रत्न

मुनि श्री कन्हैयालालजी म० सा० ने करीब २००० हस्त लिखित ग्रन्थ पुस्तकालय को देकर तो पुस्तकालय की शोभा को और भी बढ़ा दिया है। पुस्तकालय में कुछ पत्र भी आते हैं, जिसका स्थानीय युवक तथा छात्र अच्छा लाभ लेते हैं।

मण्डल सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अच्छा काम कर रहा है। मण्डल के कुछ ऐसे स्वार्थ त्यागी कार्यकर्त्ता भी हैं जो मंडल के काम के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। मण्डल के मन्त्री का कार्य श्री धनराजजी योग्यता पूर्वक कर रहे हैं।

१८ श्री धर्मदास जैन मित्र मण्डल खाचरौद

समाज में जीवन व जागृति लाने के हेतु इस संस्था की स्थापना आसोज सुदी १० सवत १९९२ को हुई। यह संस्था ग्वालियर राज्य में रजिस्टर्ड है। संस्था ने सामाजिक तथा धार्मिक क्षेत्र में अच्छा काम किया है। इस समय इसकी ओर से कन्या शाला चल रही है। जिसमें अनेक छात्रायें लाभ ले रही है। वाचनालय तथा पुस्तकालय चल रहे हैं। पुस्तकालय में पुस्तकों का अच्छा संग्रह तथा वाचनालय में अनेक दैनिक साप्ताहिक तथा मासिक पत्र आते हैं। जनता काफी लाभ उठाती है। मडल की ओर से एक बालक पाठशाला भी चल रही है। जिसका काफी संख्या में छात्र लाभ ले रहे हैं।

संस्था की ओर से समय २ पर व्याख्यानों एव सामाजिक सभाओं का भी आयोजन किया जाता है। जिससे समाज में जीवन व जागृति का प्रसार हो। मडल समाज संगठन तथा समाज सुधार के लिये भी हमेशा प्रयत्नशील रहता है। मडल का निजी भवन है। समाज इसकी तरक्की में उत्साह पूर्वक भाग लेता रहा है।

१९ गोड़वाड़ में गुरुकुल

श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल सादड़ी (मारवाड़) का संक्षिप्त परिचय

लोंकाशाह गुरुकुल की स्थापना स० २००० के माघ शुक्ला १० गुरुवार को सादड़ी (मारवाड़) में हो चुकी है। स्कूल के साथ २ बोर्डिङ्ग का कार्य भी सुचारु रूप से चल रहा है। अभी यहां चार अध्यापक कार्य कर रहे हैं। प्रधानाध्यापक का कार्य श्री लालचन्दजो जैन 'विशारद' खींचन निवासी कर रहे हैं। बाहर के छात्रों के लिए अच्छी सुविधाएँ हैं। अभी ५३ छात्र बोर्डिङ्ग में निवास करते हैं। यहा एक सुयोग्य व सद्-चरित्र गृहपति के सहवास में छात्र अपना सर्व दैनिक कार्य करते हैं। पढ़ाई का सम्बन्ध सरकारी मिडिल स्कूल से रखा गया है। व्यायाम आदि का अच्छा प्रबन्ध है। अभी सिर्फ छात्रों से ७) मय दूध व भोजन के लिये, लिए जाते हैं। स्वनाम धन्य सादडी निवासी श्रीमान् नथमलजी राज-मलजी बलदोटा ने गुरुकुल का सुचारु रूप से सचालन करने के लिए रु० ३१०००) प्रदान किये हैं तथा साथ में गुरुकुल भवन के लिए स्थान भी दे दिया है। सभव है चन्द रोज में मकान बनने का कार्य भी चालू कर दिया जायगा।

सादड़ी की आबहवा (Climate) स्वास्थ्य के लिए अत्युत्तम है। इसलिए प्रत्येक माता पिता का कर्तव्य है कि अगर वे अपनी सतान को बुद्धिमान्, विनयी, सभ्य और चतुर बनाना चाहते हैं तो उन्हें श्री लोंकाशाह जैन गुरुकुल सादड़ी में भेजें, क्योंकि यहा बाल विकास के लिए सुन्दर साधन हैं।

१९०—: श्री टी० जी० शाह बम्बई :—

श्री टी० जी० शाह के नाम से स्थानकवासी समाज अच्छी तरह से परिचित है। आपने स्थानकवासी समाज तथा स्था० जैन कोन्फ्रेंस की काफी सेवा की है। आप कई वर्षों से कान्फ्रेंस के अधिवेशन के समय स्वयंसेवक दल के कप्तान के रूप में सेवा देते रहे हैं। आपने अपने हाथों से लाखों रुपया कमाया। पायधुनी के नुक्कड़ पर आपने विशाल टी० जी० शाह भवन बनवाया। इसी में कान्फ्रेंस का दफ्तर है। आपके सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय विचार अच्छे मंजे हुए हैं। आप अभी रिटायर्ड जीवन व्यतीत कर रहे हैं। बहुत अच्छे सेवाभावी हैं। कोई भी दुर्व्यसन तो आपको छूने तक नहीं पाया। आपकी पुत्री को अच्छी शिक्षा दे रहे हैं। आपकी धर्मपत्नी भी अच्छी सेवाभावी तथा धार्मिक लागणी वाली हैं। आपका व्यापार बम्बई में था। अभी अ० भा० स्था० जैन कोन्फ्रेंस के मन्त्री हैं।

१९१—: श्री नटवरलाल के० शाह वढवाण शहर —

श्री नटवरलालजी के पिता श्री का नाम कपूरचन्द भाई था। आप एक अच्छे धार्मिक लागणी के सज्जन थे। आपने वर्षों धार्मिक पाठशालाओं का सञ्चालन किया है। आपके ५ पुत्र हैं। इनमें चौथे नम्बर के श्री नटवरलाल शाह हैं। आप श्री जैन गुरुकुल ब्यावर के सर्व प्रथम स्नातक हैं। आपने अंग्रेजी में B E हिन्दी में प्रभाकर तथा दर्शन शास्त्र में न्याय तीर्थ तक का अभ्यास किया है। आप अच्छे सुधारक ठोस कार्यकर्ता तथा उग्र विचारों के युवक हैं। आप अ० भा० स्था० जैन कोन्फ्रेंस तथा काठियावाड़ बैंक के मैनेजर रह चुके हैं। अभी आप श्री चिनयचन्द्र भाई जौहरी की बम्बई शाखा का कार्य कर रहे हैं। आप हिन्दी के तथा गुजराती के अच्छे मिलनसार सज्जन हैं। आपकी धर्मपत्नी भी अच्छी शिक्षित तथा समझदार स्त्री है। होनहार जोड़ी है।

१९२— लाला कबूलसिंह जैन जालन्धर —

आप जालन्धर के एक सुप्रतिष्ठित गृहस्थ हैं। धार्मिक प्रेम स्तुत्य है। मुनि सेवा में हमेशा तत्पर रहते हैं। सामाजिक तथा धार्मिक प्रवृत्तियों में आपका प्रमुख भाग होता है। आपके विचार उदार एवं नवीन हैं। अच्छे शिक्षित तथा समाज सुधारक हैं।

१९३— श्री महावीर जैन पुस्तकालय देहली —

उक्त पुस्तकालय देहली का विशाल पुस्तकालय है। इसके संस्थापकों में प्रमुख स्थान श्री गोकुलचन्दजी नाहर का था। आपने इसकी तरक्की में काफी परिश्रम किया। पुस्तकालय का देहली के चांदनी चौक में विशाल एवं दर्शनीय भवन है। इस भवन में बड़े २ चातुर्मास हो चुके हैं। मुनिराजों के ठहरने के लिए बहुत सामाचारी मकान है। पुस्तकालय में हजारों की तादाद में धार्मिक सामाजिक तथा नवीन राष्ट्रीय पुस्तकें हैं। अनेक पाठक लोग इसका लाभ ले रहे हैं। पुस्तकालय में अनेक सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय दैनिक साप्ताहिक पाक्षिक तथा मासिक पत्र आते हैं। जिनका सैंकड़ों साहित्य तथा समाचार पत्र रसिक लोग लाभ लेते हैं। इसकी व्यवस्था इस समय लाला कपूरचन्दजी जैन कर रहे हैं। लालाजी एक कर्मठ युवक हैं और उत्साह पूर्वक सेवा कर रहे हैं। पुस्तकालय का निरीक्षण बड़े २ राष्ट्रीय नेताओं तक ने कर के पूर्ण सन्तोष प्रकट किया है। पुस्तकालय दिल्ली की एक बहुत उपयोगी तथा सार्वजनिक संस्था है।

१९ लाला ज्वालाप्रसादजी, महेन्द्रगढ

राजा बहादुर सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसादजी का नाम स्थानकवासी समाज में काफी ख्याति प्राप्त है। आप मूल निवासी महेन्द्रगढ पटियाला स्टेट के थे। आपका व्यवसाय कलकत्ता तथा हैदराबाद में विशेष रूप से है। लाला सुखदेवसहायजी का जनता तथा राज्य दोनों में काफी सम्मानपूर्ण स्थान था। लाला ज्वालाप्रसादजी अत्यन्त सरल, धर्मपरायण मुनिभक्त तथा उदार श्रीमन्त थे। जैनाचार्य पूज्य श्री अमोलकऋषिजी म० सा० की बत्तीसी का प्रकाशन आपने बहुत प्रेमपूर्वक कराया, जो आज भी पुस्तकालयों की शोभा को बढा रही हैं। इससे जनता ने काफी लाभ लिया। आपकी उदारता का समाज की छोटी-बडी अनेक संस्थाओं ने लाभ लिया है। आप इतने बडे श्रीमन्त होते हुए भी काफी सहिष्णु थे। साधु-सम्मेलन को सफल बनाने में आपका भी प्रमुख भाग था। आपने काफी प्रवास किया था। सर्दी गर्मी या वर्षा की परवाह किए बिना पाडों तक की गाडियों में बिना झिझक के बैठकर आपने मारवाड़ की रेतीली भूमि में प्रवास किये हैं। साधु-सम्मेलन के समय आप एक डेढ माह तक सहकुटुम्ब अजमेर में रहे। अतिथियों के लिये द्वार खुले थे। काफी खर्च किया तथा अतिथियों को शाता पहुँचाई।

आपका लीलवाह बगाल में रबड मिल चल रहा है। आपकी प्रमुख फर्म हैदराबाद में है।

आपके दो सुपुत्र हैं। श्री माणकचन्दजी तथा महावीरप्रसादजी। दोनों पुत्र पिता की भाति उदार तथा धर्मप्रवृत्ति में रस लेने वाले हैं। अच्छे उदार तथा मुनिभक्त भी हैं।

मिल का नाम R. B S. Jain Rubber Mills Company Leluah है।

आपने अनेक चातुर्मास, दीक्षायें तथा पदमहोत्सव कराये हैं या उनमें प्रमुख भाग लिया है। पचकूला गुरुकुल को उन्नत बनाने में भी आपका प्रमुख हाथ था। श्री जैन गुरुकुल, ब्यावर को भी आपने समय २ पर सहायतायें दी थीं।

१९५ सेठ कालूरामजी कोठारी, ब्यावर

श्री कालूरामजी कोठारी काफी वर्षों से ब्यावर में रह रहे थे। प्रारम्भ में साधारण वेतन पर नौकरी की। उसके बाद आपने श्री किशनलालजी शर्मा के हिस्से में किशनलाल कालूराम के नाम से ऊन तथा आड़त का व्यापार प्रारम्भ किया। आपने व्यापार में काफी धनोपार्जन किया। आप जैनाचार्य पूज्य श्री मुन्नालालजी म० सा० तथा उनकी सम्प्रदाय के प्रथम श्रेणी के श्रावक थे। वर्षों जैनोदय पुस्तक प्रचारक समिति, रतलाम के अध्यक्ष रहे हैं। ब्यावर क सामाजिक, धार्मिक तथा व्यापारिक क्षेत्र में आपका अच्छा सम्मानपूर्ण स्थान था। मोहनऋषिजी म० सा० तथा चैतन्य मुनिजी की सेवा आपने काफी की थी और तभी से आपके विचारों में काफी परिवर्तन हो गया था और करीब ६ सामायिक प्रतिदिन करने लगे थे। काफी तपस्या करते थे। ४० हजार से अधिक सम्पति न रखने का नियम ले लिया था। अच्छे उदार थे। अपने हाथों से हजारों रुपया शुभकार्यों मे खर्च किया था। आपका छोटी अवस्था में ही हृदयगति रुकने से स्वर्गवास हो गया। आपक कोई पुत्र न होने से एक बच्चे को दत्तक रूप में रक्खा है। आपके स्वर्गवास के बाद भी फर्म बाकायदा चल रही है और श्री प० किशनलालजी सारा काम सम्भाल रहे हैं।

१९६ सेठ रामचन्द्रजी श्रीश्रीमाल, ब्यावर

आपके पिता श्री का नाम मेघराजजी श्रीश्रीमाल है। आप संवत् १९९९ में श्रीमान् किशन श्रीश्रीमाल के यहां दत्तक पुत्र के रूप में आये। आप मैट्रिक तक अभ्यास करके व्यवसाय में लग आप अच्छे व्यवसायकुशल हैं। आपने एक फैक्टरी मय मशीनरी तथा जमीन के खरीदी। जमीन प्लॉट बनाकर बेचे और अपने पिता श्री के नाम से किशनगञ्ज बसाया। वहां अभी अनेक नये बगले तथा मकानात हैं। इसमें अच्छा पैसा पैदा किया तथा पिता श्री का नाम अमर बनाया। आढ़त की दूकान है। नाम गणेशदास रामचन्द्र है। आप सामाजिक धार्मिक तथा राष्ट्रीय प्रवृत्ति यथाशक्ति भाग लेते हैं। कांग्रेस टिकिट पर म्युनिसिपल कमेटी की सदस्यता के लिए खड़े हुये सफल हुए। आपको कृषि का भी अच्छा शौक है। आप श्री जैन गुरुकुल की व्यवस्था समि सदस्य हैं।

१९७ श्री मेघराजजी लोढ़ा, ब्यावर

आपके पिता श्री का नाम मांगीलालजी लोढ़ा हैं। आपके आठ सुपुत्र हैं। श्री मेघराजजी चिम्मनसिंहजी, श्री इन्दरचन्दजी, श्री मोहनमलजी, श्री प्रेमचन्दजी, श्री बाबूलालजी श्री सुन्दरला श्री टीकमचन्दजी। आपके कपड़े की दूकान है, महावीर प्रिंटिंग प्रेस है तथा स्वीय विशाल बगीचे प हरीफाम भी है। श्री मांगीलालजी ब्यावर के प्रथम पुरुष हैं जिन्होंने ब्यावर के हिन्दू समाज में व्य का प्रचार किया। जैन दादाबाड़ी व्यायामशाला के व्यवस्थापक श्री मघराजजी हैं। व्यापार के रिक्त घर कृषि भी करते हैं। आपको पशुपालन का अच्छा शौक है। हमेशा ५०-६० पशु तो रहते हैं

१९८ श्री गणेशमलजी चादरमलजी लातूर

आप लातूर के प्रमुख व्यापारी हैं। लातूर निजाम स्टेट का एक अच्छा कस्बा है। व्या वासियों की भी काफी दूकानें हैं। आप सामाजिक, धार्मिक तथा सार्वजनिक प्रवृत्तियों में उत्साह भाग लेते हैं। राष्ट्रीय प्रेम भी सराहनीय है। धार्मिक विचार आपके अच्छे हैं। सामाजिक तथा धा प्रवृत्तियों में यथाशक्ति व्यय भी करते हैं।

१९९ सेठ लखमीचन्दजी पूनमिया, मादड़ी

आप मादड़ी के एक प्रख्य प्रतिष्ठित धार्मिकवृत्ति के सज्जन हैं। आपने अपने हाथों से क कमाया तथा खर्च किया। आप यहां के धार्मिक कार्यों में काफी आगे बढ़कर भाग बँटाते हैं। प्र श्रावकों में से एक हैं।

२०० श्री चुन्नीलालजी धरडिया मादडी

आप मादड़ी के एक प्रमुख युवक कार्यकर्ता हैं। कुशल व्यवसायी हैं। धार्मिक सामाजिक सार्वजनिक प्रवृत्तियों में उत्साहपूर्वक भाग लेते हैं। स्थानीय श्री लौंकाशाह जैन गुरुकुल में भी यथा सहयोग देते हैं।

चिम्मनसिंह लोढ़ा के प्रबन्ध से श्री महावीर दादाशाला, ब्यावर में मुद्रित तथा प्रकाशित।